जुर्म और सज़ा

(दोस्तोवस्की के उपन्यास Crime and Punishment
का सम्पूर्ण हिन्दी रूपान्तर)

अनुवादक
शिवदानसिंह चौहान
श्रीमती विजय चौहान



रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
चाँदनी चौक, दिल्ली।

प्रकाशक
रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
४८७२, चाँदनी चौक, दिल्ली—६

मूल्य दस रुपये

मुद्रक
निरंजनस्वरूप सक्सैना
डिलाइट प्रेस
चूड़ीवालान, चावड़ी बाजार
दिल्ली—६

भूमिका

फ्योदोर माइखेलोविच दोस्तोवस्की (१८२१—१८८१ ई०) की महानता के बारे में दो मत नही हैं। कुछ आलोचको का विचार है कि विश्व के उपन्यास-साहित्य की विशाल परम्परा का काल-विभाजन दोस्तोवस्की को प्रमाण मानकर किया जाना चाहिये, अर्थात् 'पूर्व-दोस्तोवस्की उपन्यास' तथा 'दोस्तोवस्की परवर्ती उपन्यास' के रूप में। ये आलोचक दोस्तोवस्की को एक उपन्यासकार के रूप में तॉलस्तॉय और बाल्ज़क से भी ऊपर रखते हैं और विश्व-साहित्य में उसका दरजा होमर और शेक्सपियर के साथ घोषित करते हैं। जो लोग दोस्तोवस्की की कला के समर्थक नही है या जो उसके प्रतिक्रियावादी धार्मिक विचारो से क्षुब्ध है, वे भी एक यथार्थवादी उपन्यासकार के रूप मे उसकी महानता से इन्कार नही करते। नीत्शे ने कहा था कि दोस्तोवस्की ही एक ऐसा मनोवैज्ञानिक है जिससे उसने कभी कुछ सीखा है। दोस्तोवस्की एक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार है और योरपीय उपन्यास की अधुनातन मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों—विशेषकर ज्वायस-वर्जीनिया वुल्फ आदि द्वारा प्रवर्तित चेतना-प्रवाह का अंकन करने वाली औपन्यासिक धारा—को दोस्तोवस्की से प्रेरणा मिली है, कि वह ही इन प्रवृत्तियो का आदि-स्रोत है, यह धारणा आज भी व्यापक है। लेकिन दोस्तोवस्की स्वय अपने को मनोवैज्ञानिक नहीं समझता था। उसने एक बार लिखा—"लोग मुझे मनोवैज्ञानिक कहते हैं। यह बात सत्य नही है। मै केवल एक

यथार्थवादी हूँ, लेकिन एक उच्च-स्तर का यथार्थवादी। मै मानव-आत्मा की अंतरतम गहराइयो का चित्रण करता हूँ।"

दरअसल, दोस्तोवस्की की महानता इसी मे है कि वह मानव-आत्मा की अन्तरतम गहराइयो का 'चित्रण' करने मे विश्व-साहित्य मे अद्वितीय है। उसके पात्र काम नही करते—किसी प्रकार का काम करते हुए नही दीखते या दिखाये जाते, चाहे अमीर हो या गरीब, पूँजीपति, जमीदार, मजदूर, किसान, क्लर्क या विद्यार्थी। लेकिन इन सामाजिक-जीवन की विषमताओ से आक्रात और अभिशप्त इन्सानो की आत्मा मे अच्छाई और बुराई, पाप और पुण्य, मानवीय और पाशविक प्रवृत्तियो के बीच जो चिरन्तन द्वन्द्व और सघर्ष चलता है और उससे व्यावहारिक स्तर पर प्रेम और घृणा, आस्था और अनास्था, सनक, जुर्म और पापाचार, दुख और दर्द के रूप में जो दुर्दमनीय और प्रचण्ड प्रतिक्रियाएँ होती है, उनका वर्णन वह ऐसी यथार्थ सचाई से करता है कि सारे समाज का ढाँचा उसमे रूपायित हो जाता है। उन्नीसवी शताब्दी मे जारशाही के रूप मे, जब एक ओर दास-प्रथा टूट रही थी और पूँजीवाद अपने पजे फैला रहा था, साधारण लोगो का जीवन कितना अभिशप्त और पीडित था, इसका सजीव और यथार्थवादी चित्रण दोस्तोवस्की की रचनाओ मे इतनी मार्मिकता से हुआ है कि रूस मे समाजवाद की स्थापना से पहले तक वहा की जनता उसे अपनी पीडा-वेदना और नये जीवन की आकाक्षाओ को अभिव्यक्ति देने वाले महान गद्य-कवि के रूप मे पूजती थी। उसकी रचनाओ 'मुर्दों का घर' और 'जुर्म और सजा' ने जारशाही की निरकुशता और सामन्ती समाज के विरुद्ध लोगो के मन मे विद्रोह की आग भडका दी थी। लेकिन अपने यौवन-काल का यह क्रातिकारी लेखक, जिसने साइबेरिया मे चार साल कारावास में बिताये थे और जिसे मृत्यु-दण्ड दिया गया था, अपने अन्तिम दिनो मे सामाजिक क्राति और समाजवाद में आस्था खोकर धार्मिक अन्ध-विश्वासो मे मनुष्य के उद्धार का मार्ग खोजने

लगा। शायद इसी कारण, क्राति के प्रारभिक दिनो मे सोवियत आलोचको ने दोस्तोवस्की को 'पराजयवादी' और 'प्रतिक्रियावादी' घोषित किया। लेकिन अन्तिम दिनो की इन प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियो के बावजूद वह रूसी-जीवन के यथार्थ-चित्रण से कभी विमुख नही हुआ और वह अपने युग की समस्याओ का प्रगतिशील समाधान सोचने मे चाहे असमर्थ रहा हो, लेकिन साधारण जनो के दुख-दर्द के प्रति उसका कलाकार-हृदय अन्त तक उतना ही सहानुभूति-पूर्ण और सवेदनशील बना रहा, जितना यौवन-काल मे था। यह मूल-भूत सत्य सामयिक उत्तेजनाओ से हमेशा के लिए ढँका नही रह सकता था, और मैने मास्को और लेनिनग्राद मे जाकर देखा है कि वहा के विद्वान और साधारण पाठक दोस्तोवस्की का नाम अब कितने आदर से लेते है और उसकी कृतियो को कितने चाव से पढते है।

भारतीय पाठक दोस्तोवस्की के नाम और उसकी कृतियो से उतने ही परिचित है, जितने टॉलस्टॉय, चेखव, तुर्गनेव या गोर्की की कृतियो से। दरअसल रूस के ये पाचो महान लेखक हमारे देश मे एक समान ही लोक-प्रिय है। दोस्तोवस्की के एक महान उपन्यास 'महामूर्ख' को हम दो-तीन साल पहले हिन्दी-पाठको की सेवा मे प्रस्तुत कर चुके है। आज हम उसके दूसरे महान उपन्यास 'जुर्म और सजा' को हिन्दी पाठको के हाथो में देते हुए गौरव का अनुभव कर रहे है। आजकल एक हिन्दी-फिल्म चल रही है, 'जब सुबह होगी'। इसके निर्माताओ का दावा है कि यह दोस्तोवस्की के इसी महान उपन्यास 'जुर्म और सजा' पर आधारित है। यह फिलम भारतीय दर्शको को काफी पसन्द आयी है। लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा (और यह उपन्यास पढ कर तो यकीन भी हो जायेगा) कि इस फिल्म की कहानी 'जुर्म और सजा' की महान कहानी की एक विकृत पैरोडी-मात्र है। 'जुर्म और सजा' मे भावना की जो गहराई है, जुर्म के मनोविज्ञान का जो दार्शनिक विवेचन है, मारमेलेदोव और रास्कोल निकोव परिवारो के अभिशप्त जीवन की जो हृदय-विदारक दारुणता

व्यक्त हुई है, उसका शताश भी क्या फिल्म मे व्यक्त हो सका है ? रास्कोलनिकोव के द्वैत-ग्रस्त चरित्र की वह आध्यात्मिक वेदना, जिसने उसे अनजाने मे ही हत्या का अपराध करने के लिए विवश कर दिया था, सीधी-सादी सोनिया के चरित्र की वह पवित्रता, जिसे परिस्थितियो ने वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर कर दिया था, किन्तु जो अन्त मे रास्कोलनिकोव के 'पुनरुज्जीवन' मे उसकी प्रेरणा बनी, बूढे मारमेलेदोव—सोनिया की रुग्ण माँ का पति—के चरित्र की डान क्विग्जोट् जैसी विलक्षणता, जो अपनी शराबखोरी, हास्यास्पद हरकतो और स्मृतियो को अतिरजित करके डीग मारते रहने की आदत के बावजूद जैसे मनुष्य की समस्त पीडा, व्यथा और आतरिक शालीनता का प्रतीक है, और स्वाभिमानी कैटेरीना (सोनिया की माँ), भोली-भाली, उदात्त दूनिया (रास्कोलनिकोव की प्यारी बहन) धूर्त स्वीद्रीगाईलोव (दूनिया का मगेतर) और अन्तर्भेदी दृष्टि-सम्पन्न पोर्फैरी (पुलिस इन्सपेक्टर)—यह सब कद्दावर किरदार 'फिर सुबह होगी' में कहाँ है ? चरित्र-चित्रण की वह मासलता, वह बौद्धिकता, वह आध्यात्मिकता, वह कलात्मक मार्मिकता और गहराई कहाँ है ? यानी 'जुर्म और सजा' का सारा रक्त-मास निकालकर केवल कहानी का ककाल ही 'फिर सुबह होगी' मे पेश किया गया है—वह भी काफी भोडे ढग से तोड-मरोड कर। फिर भी दर्शकों को यह फिल्म अच्छी लगी है, तो मूल उपन्यास कितना रोचक होगा ? इसका अनुमान आप स्वय लगा सकते है और उसे अब हिन्दी मे ही पढकर इस बात की तस्दीक भी कर सकते है।

'जुर्म और सजा' मे और क्या खूबियाँ है, इसका विवेचन हम यहाँ नही करेगे, क्योकि आप पढकर पहले यह तस्दीक कर ले। यों, पढने पर और खूबियाँ अपने आप ही नजर आ जायेगी, इसमे हमे सदेह नही है।

विजय चौहान
शिवदानसिंह चौहान

११-३-५९

१

जुलाई का आरम्भ था। बेहद गर्मी पड रही थी। एक दिन शाम के समय एक युवक 'स' स्थान पर स्थित अपनी कोठरी मे से निकल कर हिचकिचाते कदमो से नीचे उतरा और धीमी चाल से 'क' नाम के पुल की ओर चल पडा।

युवक ने इस मकान की पाँचवी मजिल पर एक कोठरी किराये पर ले रखी थी। उसे कोठरी की बजाय अल्मारी कहना अधिक उपयुक्त होगा। जिस मकान-मालकिन ने उसे यह कोठरी दी थी और जो उसे खाना पकाकर देती थी और उसके अन्य काम भी करती थी, वह निचली मजिल मे रहती थी। इसलिए उस युवक को बाहर जाते समय हर बार मकान-मालकिन के रसोईघर के सामने से गुजरना पडता था, जिसका दरवाजा हमेशा खुला रहता था। वहाँ से गुजरते समय उस युवक मे भय और आशका की भावना पैदा होती थी, जिससे उसे बडी शर्म का अनुभव होता। मकान-मालकिन के कर्ज के भार से वह आकठ डूबा हुआ था और उसके सामने पडने से डरता था।

इसलिए नही कि वह डरपोक अथवा कमीना था, बल्कि कारण इससे ठीक विपरीत था। पिछले कई दिनो से वह विक्षिप्त-सा हो रहा

था। वह अपने विचारो मे लीन था और उसे दीन-दुनिया की खबर तक न थी। वह दरिद्रता से पीडित था, लेकिन अब वह चिन्तामुक्त हो चुका था। उसे मकान-मालकिन की या किसी और की परवाह नही रही थी। लेकिन जीने के बीचोबीच रुककर मकान-मालकिन की अनर्गल, क्षुद्र बकवास सुनने और तकाजो और धमकियो के जवाब मे कोई बहाना सोचने की जलालत से बचने के लिए वह बिल्ली की तरह दबे कदमो से नीचे उतरना कही बेहतर समझता था।

आज शाम को सडक पर पहुँचते ही उसे अपने मन मे व्यापे भय का आभास हुआ।

वह सोचने लगा, "इधर मै ऐसा काम करने जा रहा हूँ, उधर मुझे छोटी-छोटी बातो से डर लग रहा है। हूँ ... लोग ठीक कहते है कि इन्सान के हाथ मे सब कुछ है लेकिन वह डरकर सब कुछ गँवा बैठता है। भला लोग सबसे अधिक किस बात से डरते है? मेरा ख्याल है, नया कदम उठाने या किसी नये शब्द के उच्चारण से ...... लेकिन मै इस बकवास मे ही अपनी सारी शक्ति नष्ट कर रहा हूँ—इसलिए तो मुझसे कुछ करते नही बनता। या मै कुछ कर नही पाता, इसीलिए बकवास करता हूँ। इस बीच कोठरी मे बन्द रहकर मैने बहुत सोचा है। हवाई किले बनाये है, इसीलिए मै बकवास सीख गया हूँ। मै उधर भला किसलिए जा रहा हूँ? क्या सचमुच मै वह काम कर सकता हू? नही, यह तो मन को बहलाने की एक कल्पना मात्र थी। हो सकता है यह कोरी कल्पना हो।"

सडक पर बेहद गर्मी थी, उमस भी। सडक के शोरगुल, ईट-पत्थरो, धूल और बदबू ने युवक के थके हुए स्नायुओ को और भी थका दिया। पीटर्सबर्ग के उस इलाके मे शराब के भभको की बडी बदबू रहती है, सडक पर मटरगश्ती करते हुए शराबियो को देखकर युवक का मन वितृष्णा से भर उठा। उसके सुसस्कृत चेहरे पर ग्लानि की एक रेखा

दौड़ गई। यहाँ यह बताना अनुचित न होगा कि युवक असाधारण रूप से सुन्दर और सुडौल था। उसकी आँखे और बाल गहरे भूरे रंग के थे, अगले ही क्षण वह किसी गहरी सोच मे पड गया, या यूँ कहे कि उस का मन शून्यता से भर उठा। वह बिना देखे-समझे आगे बढ रहा था। बीच-बीच मे वह कुछ बुदबुदाता जाता था। उसे अपनी मानसिक उलझन का आभास था। पिछले दो दिनो से उसने कुछ नही खाया था।

उसके कपडे इतने फटे थे कि फूहड से फूहड आदमी को भी इन कपडो मे बाहर निकलने मे सकोच होता, लेकिन शहर के इस हिस्से मे लुच्चे-लफगो, दुकानदारो और मजदूरो की सख्या इतनी अधिक थी कि इस भीड मे विलक्षण से विलक्षण व्यक्ति भी दर्शको की दृष्टि बचाकर निकल सकता था। युवक के हृदय मे इस समय इतनी कटुता भरी थी कि उसे यौवन के तमाम नखरो के बावजूद भी अपने फटे कपडो की रत्ती भर परवाह नही थी। फिर भी उसे परिचितो और भूतपूर्व सहपाठियो से इस फटे-हाल मे मिलना बर्दाश्त नही होता। इसी समय एक घोडा-गाडी उसके पास से निकली और एक शराबी जोर से चिल्लाया, "वाह रे तेरा जर्मन टोपा।" युवक ने फौरन सर पर से अपना हैट उतार लिया, यह हैट सचमुच जर्मन फैशन का था और पुराना होने की वजह से टेढा-मेढा हो गया था। युवक को लज्जा की बजाय आतक का अनुभव हुआ।

वह बुदबुदाया, "मै जानता था कि ऐसी ही किसी बेहूदगी से मेरी स्कीम का सत्यानाश हो जायेगा। सचमुच मेरा हैट [illegible] और बेहूदा है ·· · ··· ··इन चिथडो के साथ मुझे कोई किश्तीनुमा टोपी पहननी चाहिये थी, न कि यह भोडा हैट, जिसे कोई एक मील दूर से भी पहचान ले और मेरी जान आफत मे आ जाये, ऐसे मौको पर आदमी को सीधे-सादे कपडो मे जाना चाहिये··· · ··यह छोटी-छोटी बाते बडा महत्व रखती है—इन्ही की वजह से तो सत्यानाश होता है ··।

उसे कही दूर नही जाना था, वह आँख मूँदकर बता सकता था कि उसके घर से वह जगह कितनी दूर है,—पूरे सात सौ तीस कदम। एक बार विक्षिप्ति की अवस्था मे उसने इस फासले को नाप डाला था। तब उसे अपने दु साहस मे विश्वास नही था। लेकिन एक महीने बाद आज अपनी समस्त व्यगभरी बुदबुदाहट और सदेह के बावजूद उसे इस 'घिनौने' दु साहस मे आस्था हो गई थी। उसका ख्याल था कि वह केवल 'रिहर्सल' के लिए वहाँ जा रहा था। हर कदम पर उसकी उत्तेजना बढती जा रही थी।

उसका दिल डूबने लगा। काँपते हुए कदमो से वह नहर के किनारे पर बने एक विशाल मकान मे दाखिल हुआ। इस मकान मे बहुत से किरायेदार रहते थे, जिनमे दर्जी, ताले बनाने वाले, रसोइये, जर्मन मजदूर गरीब क्लर्क सभी तरह के लोग रहते थे, जिनका आना-जाना दोनो आँगनो और फाटको मे बना रहता था। इस मकान की रखवाली के लिये तीन-चार चौकीदार भी रहते थे। सयोगवश इस समय वहाँ कोई चौकीदार न था, इसलिये युवक दाहिने दरवाजे के जीने मे घुस गया। वह हर सीढी से परिचित था, लेकिन अँधेरे मे तेज से तेज आँखे भी उसे नही पहचान सकती थो।

चौथी मजिल पर पहुँचकर उसने सोचा, "मै अभी से डर के मारे अधमरा हो रहा हूँ—उस वक्त न जाने मेरा क्या हाल होगा!" एक फ्लैट मे से कुछ कुली फर्नीचर बाहर निकाल रहे थे। उसे मालूम था कि वहाँ एक जर्मन सरकारी क्लर्क रहता था जो अब मकान छोडकर जा रहा था। "अब चौथी मजिल पर सिवा उस बुढिया के कोई नही होगा—चलो अच्छा हुआ!" उसने मन ही मन सोचा और बुढिया के फ्लैट की घटी का बटन दबाया। भीतर एक भोडी-सी आवाज हुई। ऐसे घरो मे घटियो की ऐसी ही आवाज आती है। इस आवाज को सुनकर युवक को कुछ याद आया...... वह घबरा गया। थोडी देर में

दरवाजा जरा-सा खुला। दराज मे से झाँककर बुढिया सदिग्ध नजरो से आगन्तुक की ओर देखने लगी। अंधेरे मे उसकी दोनो आँखे चमक रही थी। लेकिन बहुत से लोगो की आवाजें सुनकर वह आश्वस्त हो गई और उसने दरवाजा खोल दिया। युवक एक अँधेरे कमरे मे दाखिल हुआ जिसकी दूसरी तरफ रसोई थी। बुढिया चुपचाप खडी युवक को घूरने लगी। वह साठ बरस की खूसट बुढिया थी तीखी नाक, नाटा कद और कुटिल दृष्टि। उसके रूखे बाल तेल से चुपडे थे और उसका सर नगा था। उसकी मुर्गी की टाग जैसी लम्बी, पतली गर्दन पर फलालैन की एक चिदी बधी थी, और गर्मी के बावजूद भी वह एक फटा दुशाला ओढे थी। वह बार-बार खाँस रही थी। युवक के रग-ढग मे जरूर कोई विलक्षणता रही होगी, क्योकि बुढिया सदिग्ध नजरो से उसे घूर रही थी।

युवक ने लडखडाती जबान मे कहा, "मेरा नाम रास्कोलनिकोव है। मै पिछले महीने यहा आया था।" उसे याद आया कि उसे बुढिया से शिष्टतापूर्वक पेश आना चाहिये।

"जी जनाब! मुझे अच्छी तरह याद है कि आप पिछले महीने यहाँ तशरीफ लाये थे।" बुढिया ने तीखे स्वर मे कहा। वह अब भी युवक को घूर रही थी।

"आज भी ··· मै उसी काम से आया हूँ," युवक घबराये स्वर मे बोला। उसे बुढिया के सन्देह पर आश्चर्य हो रहा था। वह सोचने लगा, "शायद इसका मिजाज ही ऐसा है। पिछली बार मैने ध्यान नही दिया होगा।"

बुढिया कुछ हिचकिचा कर एक ओर खडी हो गयी और सामने वाले कमरे की ओर इशारा करते हुए बोली, "जनाब, वहाँ तशरीफ़ ले जाये!"

कमरे की दीवारो पर पीले रग का कागज चिपका था। एक फूल-

दान मे जिरेनियम के फूल सजे हुए थे। खिडकियो पर मलमल के पर्दे लटके थे। सारा कमरा सूर्यास्त की लाली से आलोकित हो रहा था।

"क्या उस समय भी ऐसी ही लाली होगी?" युवक के मन मे सहसा विचार उठा। वह कमरे की हर चीज को गौर से देखने लगा। लेकिन वहाँ पुराने फर्नीचर के सिवा कुछ न था। सोफा, गोल मेज, शृंगार की मेज, दीवारो पर दो-तीन सस्ते चित्र--बस। एक कोने मे ईसा की मूर्ति के आगे एक मोमबत्ती जल रही थी। सब चीजे साफ-सुथरी थी। फर्श और फर्नीचर पर पालिश की चमक थी। धूल का कही एक कण भी नही दिखाई देता था।

युवक सोच रहा था, "ऐसी खूसट विधवा बुढियो के यहाँ ही इतनी सफाई रहती है।" उसकी नजर साथ वाले कमरे पर पडी, जिसमे बुढिया का पलग और कपडो की अलमारी थी। उस फ्लैट मे दो ही कमरे थे।

इसी समय बुढिया उसके सामने आकर खडी हो गई और कठोर स्वर मे बोली, "कहो, क्या चाहते हो?"

"मै गिरवी रखने के लिए कुछ चीजे लाया हूं," कहकर उसने जेब मे से पुराने फैशन की एक घडी निकाली, जिसकी पीठ पर 'ग्लोब' अंकित था। घडी की चेन फौलाद की बनी हुई थी।

"लेकिन अभी तो तुमने पिछला सूद भी नही चुकाया। महीना तो परसो ही पूरा हो गया।"

"कुछ दिन की मोहलत दीजिए, मै दो महीने का सूद एकसाथ अदा कर दूँगा।"

"लेकिन यह तो अब मेरी मर्जी पर है कि मै तुम्हारी चीज को रखूं या बेच डालूं।"

"आप इस घडी के बदले मे कितना देगी?"

"तुम हर बार कूडा-कचरा उठा लाते हो। पिछली बार मैने

तुम्हारी अगूठी पर तुम्हे दो रूबल दिये थे। ऐसी अगूठी जौहरी के यहाँ से डेढ ही रूबल मे मिल सकती है।"

"इस घडी पर मुझे चार रूबल दे दीजिए। मै इसे जरूर छुडा लू गा। यह मेरे पिता की आखिरी निशानी है।"

"डेढ रूबल* मिलेगा और सूद पेशगी।"

"सिर्फ डेढ रूबल ?"

"जैसी तुम्हारी मर्जी," कहकर बुढिया ने युवक को घडी लौटा दी। युवक क्रोध से तमतमाता वापस जाने लगा, लेकिन उसे याद आया कि उसके यहाँ आने का एक और भी प्रयोजन है।

"लाइये," वह मुडकर कठोर स्वर मे बोला।

बुढिया ने चाबियाँ तलाश करने के लिये अपनी जेब टटोली और वह दूसरे कमरे मे चली गई। युवक अकेला रह गया। उसे दूसरे कमरे मे से दराज खोलने की आवाज सुनाई दी।

"जरूर यह सब से ऊपर वाला दराज होगा।" युवक ने सोचा। "अच्छा, तो बुढिया दायी जेब मे चाबियाँ रखती है। सभी चाबियाँ एक छल्ले में होगी ... सब से बडी चाबी किस ताले की होगी! दराज मे तो यह चाबी नही लग सकती... तब कोई न कोई बडा सदूक होगा—यह जानना जरूरी है। सिर्फ मजबूत सदूको मे ही इतने बडे ताले लगाये जाते है। उफ, मै कितनी नीच बातें सोच रहा हूँ।"

इसी समय बुढिया लौट आई और बोली, "जनाब, दस कोपेक† प्रति रूबल सूद देना होगा, इसलिये मै एक महीने का सूद पेशगी काट रही हूँ। पिछले दो रूबलो पर भी आपको बीस कोपेक सूद देना है। कुल जमा पैंतीस कोपेक हुए। उन्हे काटकर बाकी रकम आपको दे रही हूँ। यह लीजिये।"

* रूबल—रूसी सिक्का जिसकी कीमत लगभग एक रुपया होती है।

† कोपेक—रूबल का सौवाँ हिस्सा, लगभग नये पैसे के बराबर।

"क्या सिर्फ एक रूबल पन्द्रह कोपेक!"

"सिर्फ इतना ही।"

युवक ने चुपचाप रकम ले ली, लेकिन वह जाने की बजाये वही खडा रहा जैसे अभी उसे बुढिया से कोई और काम हो। लेकिन वह काम क्या था, यह वह स्वय भी नही जान पा रहा था।

"एकाध दिन मे शायद मै एक कीमती चीज लाऊ, एल्योना इवानोव्ना—चाँदी का एक सिगरेट बॉक्स, जो मेरे एक मित्र के पास है···" कहकर वह रुक गया।

"आगे की आगे देखी जायेगी।"

"अच्छा गुडबाई! क्या आप हमेशा घर मे अकेली रहती है? आपकी बहन शायद बाहर गई हुई है?" युवक ने अनासक्त भाव से पूछा।

"आपको मेरी बहन मे क्या दिलचस्पी है?"

"कुछ नही, मैने तो ऐसे ही पूछा था। आप बडी शक्की है··· अच्छा गुडबाई एल्योना इवानोव्ना!"

रास्कोलनिकोव की घबराहट बढती गई। जीने से उतरते हुए वह दो-तीन बार रुक गया, उसे कोई बात याद आ गई थी। सडक पर पहुँचकर वह बुदबुदाया, "हे ईश्वर! कितना घृणित विचार है। भला मै···मै···नही यह बकवास है। मेरे दिमाग मे इतनी खौफनाक बात कैसे आई! मुझे ऐसी गदी बाते सूझने लगी है। गदी, घृणित, पूरे एक महीने से मै···" लेकिन उसकी ग्लानि इस सीमा तक पहुँच गई थी कि वह अपनी परेशानी से बचने का कोई रास्ता नही पा रहा था। वह पियक्कडो की तरह लोगो से टकराता हुआ सडक की पटरी पर चल रहा था। सहसा उसने अपने आपको एक शराबखाने की सीढियो पर खडा पाया। दो शराबी एक दूसरे की बाँहो का सहारा लिये और गाली-गलौज करते हुए सीढियाँ चढने लगे। रास्कोलनिकोव

भी फौरन भीतर चला गया। इससे पहले वह कभी किसी शराबखाने मे नही गया था। लेकिन इस समय उसका सर चकरा रहा था और उसे तीव्र प्यास लग रही थी। वह ठडी शराब पीने के लिये व्याकुल हो उठा। वह सोचने लगा कि भूख के कारण ही उसे इतनी कमजोरी महसूस हो रही है। वह एक अधेरे, गन्दे कोने मे एक चिपचिपाती मेज के सामने बैठ गया। उसने बीयर मँगवाई और एक ही घूँट मे पूरा गिलास पी गया। फौरन उसके दिल का बोझ हल्का हो गया और उसके दिमाग मे छायी हुई धुँध छँटने लगी।

"चिन्ता की कोई बात नही। मुझे कोई शारीरिक रोग नही है। एक गिलास बीयर, डबल रोटी का एक सूखा टुकडा और फौरन दिलो-दिमाग ताजा हो गया। छि, यह कितनी मामूली-सी बात है।"

उसके प्रसन्न चेहरे से मालूम होता था कि उसके दिल पर से कोई भारी बोझ उतर गया है। वह अपने आस-पास बैठे लोगो को सद्भावना की दृष्टि से देखने लगा। लेकिन उसे मन ही मन आभास हुआ कि यह उसकी आकस्मिक मन स्थिति भी स्वाभाविक नही है।

शराबखाने मे बहुत थोडे लोग रह गये थे। शराबियो की वह टोली, जिसमे पाँच-सात मर्द और एक लडकी भी शामिल थी, वहाँ से जा चुकी थी। कमरे मे सिर्फ दो व्यक्ति रह गये थे, जिनमे से एक मजदूर मालूम होता था और दूसरा उसका लम्बा, भरकम साथी था, जो नशे मे धुत होकर बैंच पर ही लुढक गया था। बीच-बीच मे वह दोनो बाहे फैलाकर अपनी उँगलियाँ चटखाता था और किसी अनर्गल गीत की पक्तियाँ बुदबुदाता जाता था—

"अपनी बीवी को उसने सालभर तक प्यार किया,
प्यार किया, बीवी को साल भर तक प्यार किया।"

और फिर वह उठकर गाने लगा—

"भीड भरी सडक पर जाकर

उसे परिचित एक दिखायी दिया ।"

लेकिन किसी ने उसके इस उन्माद की ओर ध्यान नही दिया । उसका साथी क्रुद्ध भाव से यह सब हरकते देख रहा था । कमरे मे एक और आदमी भी था जो शक्ल-सूरत से एक रिटायर्ड क्लर्क मालूम होता था । वह बीयर की चुस्कियाँ लेते हुए सबकी ओर देखता जाता था । वह भी किसी कारण से उद्विग्न था ।

२

रास्कोलनिकोव को भीड-भाड पसन्द न थी । विशेषकर पिछले कई दिनो मे उसने अपने परिचितो से मिलना-जुलना तक बद कर दिया था। लेकिन आज अचानक उसे साथियो की जरूरत महसूस हुई। उसे न जाने क्या हो गया कि वह लोगो से मिलने के लिए व्याकुल हो उठा था। एक महीने से दरिद्रता और चिन्ताओ मे डूबा रहने के बाद आज वह क्षण भर के लिए किसी दूसरी दुनिया मे जाना चाहता था, चाहे वह कैसी भी दुनिया क्यो न हो। इसलिए गन्दगी के बावजूद भी उसे शराबखाने का वातावरण सुखकर लग रहा था।

शराबखाने का मालिक किसी दूसरे कमरे मे था, लेकिन बीच-बीच मे वह अपने लम्बे, बेढब बूटो से खट-खट करता हुआ बडे कमरे मे भी आ निकलता था। ओवरकोट के नीचे उसने काले साटन की वास्कट पहन रखी थी, जिसमे सैकडो चिकनाई के दाग थे, और उसका चेहरा भी लोहे के ताले की तरह तेल से पुता मालूम देता था। काउन्टर पर पन्द्रह बरस का एक लडका खडा था। एक और लडका शराब और खाने की चीजे परस रहा था। काउन्टर पर कटे हुए खीरे, सूखी, काली रोटी के टुकडे और बदबूदार मछली की एक प्लेट रखी थी। सारे

वातावरण मे शराब की गन्ध छायी थी, जिससे किसी भी व्यक्ति को पाँच मिनट के अन्दर नशा चढ सकता था।

कई बार कुछ अजनबी लोगों को देखते ही हमारे मन मे उनके प्रति दिलचस्पी पैदा हो जाती है। उस क्लर्कनुमा आदमी को देखते ही रास्कोलनिकोव के मन मे कुछ ऐसे विचार उठे जिनको बाद मे उसने पूर्व-चेतना की सज्ञा दी। वह बार-बार उसकी ओर घूरने लगा। मालूम होता था कि वह व्यक्ति भी रास्कोलनिकोव से बातचीत करने के लिए उत्सुक है। वह बाकी लोगो की ओर इस तरह देख रहा था, जैसे वे सब उसके पुराने परिचित हो, और उससे घटिया दर्जे के लोग हो। उस व्यक्ति की उमर पचास से ऊपर थी। सर गजा और देह गठीली थी। लगातार पीने से उसके चेहरे पर नीली रेखाये खिच गई थी और उसकी आँखे लाल और सूजी हुई थीं। लेकिन उसकी आँखो मे एक विचित्र चमक थी। शायद यह कुशाग्र बुद्धि की निशानी थी। लेकिन उन आँखो मे पागलपन की झलक भी थी। वह एक फटा-पुराना काले रग का कोट पहने था, जिसमे एक के सिवा सभी बटन टूट गये थे, कुलीनता की अन्तिम निशानी के रूप मे। वास्कट के भीतर से एक मैली-कुचैली कमीज बाहर निकल रही थी। सभी क्लर्कों की तरह उसने भी दाढी-मूँछ मुडा रखी थी, लेकिन कई दिन से हजामत न करने के कारण उसकी ठुड्डी किसी सख्त, सफेद बालो वाले ब्रुश की तरह दिखायी दे रही थी। उसमे कुछ अफसराना अन्दाज भी था, लेकिन वह किसी कारण से परेशान नजर आ रहा था। वह बार-बार अपने बालो में उगलियाँ फेरता और निराश भाव से अपनी कुहनिया मेज पर टेक रहा था। आखिर उसने रास्कोलनिकोव की ओर देखकर ऊँची आवाज मे कहा

"श्रीमान्, क्या मै आपसे बातचीत कर सकता हूँ? हालाकि आपके हुलिये को देखकर मन मे आदर नही उपजता, लेकिन मै अपने

अनुभव से बता सकता हूँ कि आप शिक्षित व्यक्ति है और शराब पीने के आदी नही है। मै पढे-लिखो का आदर करता हूँ, विशेषकर सभ्य लोगो का। मै काउसलर के पद पर हूँ। मुझे मारमेलेदोव कहते है,— क्या मै जान सकता हूँ कि आप क्या काम करते है ?"

"जी मैं अभी पढ रहा हूँ" युवक ने मारमेलेदोव की बेतकल्लुफी और लच्छेदार भाषा से चकित होकर उत्तर दिया। अभी एक क्षण पहले वह किसी साथी की तलाश मे था, लेकिन एक अपरिचित द्वारा बातचीत का निमन्त्रण पाकर उसका मिजाज फिर चिडचिडा हो गया।

"पढ रहे है, या किसी जमाने मे पढते थे ?" मारमेलेदोव ने पूछा, "मेरा भी यही अनुमान था। जनाब, मै आखिर तजुर्बेकार आदमी हूँ" उसने आत्म-प्रशसा के लिये अपना माथा थपथपाया "मै बता सकता हूँ कि आपने किसी अच्छी सस्था मे शिक्षा पाई है · ·· लेकिन अगर आप बुरा न मनाये तो ···" कहकर उसने अपना गिलास उठाया और युवक के करीब आकर बैठ गया। वह नशे मे धुत था और अनर्गल प्रलाप कर रहा था। वह रास्कोलनिकोव पर इस तरह झपटा, जैसे वह भी हफ्तो से किसी से बातचीत करने के लिये तरस रहा हो।

उसने सजीदा ढग से कहा, "जनाब, गरीब होना कोई पाप नही है। किसी ने सच ही कहा है। लेकिन शराब पीना भी तो कोई नेक काम नही। असली पाप है भीख माँगना। गरीबी मे इन्सान की आत्मा ऊँची रहती है, लेकिन भीख से आत्मा गिर जाती है। भीख माँगने वाले को झाडू मारकर सभ्य समाज से खदेड दिया जाता है और उसके अपमान में कोई कसर नही रखी जाती। यह स्वाभाविक है। खुद भिखारी भी तो अपने को कितना बेइज्जत समझता है। इसीलिए लोग शराबखानो मे जाते है। जनाब, पिछले महीने मिस्टर लिब्निजियानिक ने मेरी घरवाली को खूब पीटा। खैर, वह तो घरवाली जाने। आप समझ गये ? मै कौतूहलवश आपसे एक सवाल पूछता

हूँ। क्या कभी आपने नेवा नदी मे एक रात भूसे से लदे बजरे मे बैठ कर गुजारी है ?"

"जी नही, मुझे ऐसा मौका कभी नही मिला। लेकिन मैं आपका मतलब नही समझा।"

"मतलब यह है कि पिछली पाँच राते मैने वही गुजारी है " उसने शराब का गिलास खाली करते हुए जवाब दिया। सचमुच उसके कपडो और बालो मे अब भी भूसे के तिनके लगे हुए थे। शायद पिछले पाँच दिनो से उसे नहाने और कपडे बदलने का मौका भी नही मिला था। उसके हाथ बे द गन्दे हो रहे थे। मोटी और लाल उँगलियो पर काले नाखून बहुत ही भद्दे मालूम देते थे।

उसकी विलक्षण बातचीत को सुनने के लिए शराबखाने के नौकर-चाकर, और यहाँ तक कि मालिक भी नजदीक आकर बैठ गये। स्पष्ट है कि मारमेलेदोव यहाँ अक्सर आता था और प्रतिदिन तरह-तरह के अजनबियो से मिलते रहने के कारण उसे लच्छेदार भाषा बोलने का अभ्यास हो गया था। कुछ पियक्कडो मे यह एक व्यसन बन जाता है, खासकर उनमे, जिनकी घरेलू जिन्दगी मे कडा नियन्त्रण होता है। इसलिये शराबियो की सोहबत मे ऐसे लोग लच्छेदार भाषा द्वारा औरो का आदर पाने का यत्न करते है।

शराबखाने के मालिक ने उससे कहा, "तुम भी अजब आदमी हो। अपने काम पर क्यो नही जाते ?"

"हुजूर जानना चाहते है कि मै काम पर क्यो नही जाता, यही न ? लेकिन अपने जीवन की व्यर्थता को देखकर क्या मेरा दिल नही फटता ? पिछले महीने मिस्टर लिब्जियानिक ने जब मेरी बीवी को पीटा, तो उस समय मै नशे मे था, लेकिन क्या मुझे इस पर दुख नही हुआ ? माफ करना, मेरे नौजवान दोस्त, क्या कभी तुमने किसी से उधार माँगा है ?" मारमेलेदोव ने रास्कोलनिकोव को लक्ष्य करके कहा।

"क्यो नही, लेकिन मै आपका मतलब नही समझा ।"

"मतलब यह है कि, जब आदमी को पहले से ही मालूम हो कि उसकी याचना ठुकरा दी जायगी और उसे निश्चित्त रूप से मालूम है कि अमुक सभ्रान्त, आदरणीय महोदय किसी सूरत मे उधार नही देगे तो उसे कैसा लगेगा ? लेकिन मै आपसे पूछता हूँ कि वह कर्ज क्यो दे, जब कि वह जानता है कि मै उसे यह कर्ज अदा नही करूँगा ?

"तो क्या वह दया से द्रवित हो जाये ? लेकिन मिस्टर लिब्नि-जियानिक, जो आधुनिक विचारो के व्यक्ति है, फर्माते है कि साइस (विज्ञान) दया-माया को नही मानती । पर इगलैण्ड मे, जहाँ अर्थ-शास्त्र का बोलबाला है, ऐसा नही होता । मै फिर पूछता हूँ कि वह मुझे कर्ज क्यो दे ? यह जानते हुए भी कि वह नही देगा, मै उसके पास जाता हूँ • • "

"तो क्यो जाते है ?" रास्कोलनिकोव ने पूछा ।

"इसलिए कि जब आदमी का कोई सहारा न हो तो वह क्या करे ? उसे कही न कही तो जाना ही पडेगा । कई बार तो इतनी सख्त जरूरत आ पडती है कि बिना जाये गुजारा नही होता । जब मेरी सगी बेटी पहली बार वेश्या का लाइसेन्स लेकर घर से बाहर निकली तो मुझे भी जाना पडा •• (मेरी बेटी के पास पीला लाइसेन्स है) •• कोई बात नही, कोई बात नही ।"

यह सुनकर सब लोग मुस्करा पडे, लेकिन वह सजीदा स्वर मे बोला, "मै लोगो को हँडिया-सा सर हिलाते देखकर अब नही घबराता । फिर लोगो से क्या छिपाये ? छिपी हुई चीज को खोलने मे क्या बुराई है ? मै इन सब बातो पर खीजता नही । विनयपूर्वक इन्हे स्वीकार करता हूँ । यह सब हुआ करे, मेरी बला से ! माफ करना, मेरे नौजवान दोस्त, क्या तुम•• नही मै इसे और ज्यादा साफ ढग से कहूँगा—क्या मुझे देखकर तुम्हे यह कहने की जुर्रत हो सकती है कि

मै एक घिनौना सूअर नही हूँ ।"

रास्कोलनिकोव चुप रहा । कमरे मे एक कहकहा लगा । वक्ता का स्वर और भी उदात्त हो गया ।

"मान लीजिए, मैं सूअर ही सही । मेरी शक्ल जगली जानवरो जैसी है—चलिए यह भी मान लिया । लेकिन मेरी पत्नी कैटेरीना इवानोव्ना तो एक सभ्रान्त महिला है । वह एक अफसर की बेटी है और पढी-लिखी भी है । मान लिया, मान लिया कि मै लम्पट हूँ, लेकिन वह तो एक नेक-दिल औरत है । काश · · काश उसे मेरा ध्यान होता । बन्दानवाज, आप भी जानते है कि दुनिया मे कोई न कोई जगह तो ऐसी होनी चाहिए, जहाँ आदमी को प्रेम और आदर मिले । लेकिन कैटेरीना इवानोव्ना सहृदय होते हुए भी मुझ पर अन्याय करती है ·· मै जानता हूँ कि जब वह मेरे बाल नोचती है ··· हाँ, मेरे नौजवान दोस्त, मुझे यह बताने मे सकोच नही कि अक्सर मेरे बाल नोचे जाते है । लेकिन वह मुझ पर गुस्सा नही करती, सिर्फ तरस खाती है ।" श्रोताओ की हँसी ने उसे जरा भी विचलित नही किया । उसने दुगने उत्साह से कहना जारी रखा, "हे भगवान्, अगर वह एक बार, सिर्फ एक बार· · ··नही, नही, यह सब बकवास है, क्योकि अनेक बार मेरी इच्छा पूरी हुई है और उसने मेरी कामना भी की है, लेकिन······ लेकिन बदकिस्मती से मेरा स्वभाव जगली जानवरो जैसा है ।"

"किबला आप ठीक फरमा रहे हैं ।" शराबखाने के मालिक ने उबासी लेते हुए कहा । मारमेलेदोव ने जोर से मेज पर मुक्का मारा और गरजकर बोला, "मैं बदकिस्मत हूँ, सुना जनाब ! मैने शराब पीने की खातिर उसके मोजे तक बेच डाले है । उसके जूते नही—उनकी बारी भी अपने समय पर आ जायेगी—अभी तो सिर्फ उसके मोजे ही वेचे है, शराब पीने की खातिर ! उसका शाल तो मै पहले ही बेच आया था—वह उसका अपना था, मेरा दिया हुआ नही । और अब

हम एक ठडे कमरे मे रहते है। इन सर्दियो मे उसे शीत लग गया है और वह खाँसने लगी है और उसकी खखार मे खून भी आने लगा है। हमारे तीन छोटी-छोटी लडकियाँ है और कैटेरीना इवानोव्ना को सुबह से शाम तक काम करना पडता है। वह दिन भर बच्चो को नहलाती-धुलाती रहती है, क्योकि वह बच्चो को साफ-सुथरा देखने की आदी है। लेकिन उसके फेफडे कमजोर है और वह यक्षमा से पीडित है और मुझे यह देखकर क्लेश होता है। आप क्या सोचते है कि मुझे क्लेश नही होता ? मै जितनी ही ज्यादा शराब पीता हूँ, मेरा क्लेश उतना ही ज्यादा बढता जाता है। · · मै पीता भी इसी खातिर हूँ कि मेरा दु ख दुगना हो जाय।" और फिर जैसे यातना से तिल-मिला कर उसने मेज़ पर अपना सिर रख लिया।

"नौजवान," उसने सिर उठाकर कहना शुरू किया, "तुम्हारे चेहरे को देखकर मुझे लगता है कि तुम्हारे दिमाग में कोई भयकर चिन्ता समाई हुई है। तुम्हे देखते ही मुझे उस चिन्ता का आभास मिल जाता है, और इसीलिए मैने तुम से यह सब बाते की है। तुम्हे अपने जीवन की कहानी सुनाकर मैं इन सुस्त और निकम्मे श्रोताओ के आगे अपने को हास्यास्पद नही बनाना चाहता—सच तो यह है कि ये लोग इस कहानी को पहले भी सुन चुके है—बल्कि मै एक ऐसे व्यक्ति की तलाश मे हूँ जो पढा-लिखा और सवेदनशील हो। तो फिर जान लो कि मेरी बीवी ने कुलीन घरानो की लडकियो के स्कूल मे शिक्षा पायी थी, और स्कूल छोडते समय उसने गवर्नर और दूसरे विशिष्ट व्यक्तियो के आगे शॉल-नृत्य किया था, जिसके लिए उसे सोने का एक पदक और योग्यता का सर्टिफिकेट मिला था। सोने का पदक · हाँ, वह पदक तो खैर बेच दिया गया—बहुत दिन पहले ही, हूँ · · · लेकिन योग्यता का सर्टिफिकेट अभी तक उसके बक्स मे सुरक्षित रखा हुआ है और कुछ दिन पहले ही मेरी बीवी ने उसे मकान-मालकिन को दिखाया

भी था। हालाँकि मकान-मालकिन से वह हमेशा झगडती रहती है, लेकिन वह किसी न किसी से अपने अतीत गौरव और खोये हुए सुख के दिनो का बखान करना चाहती थी। इसके लिए मै उसकी निन्दा नही करता, न उसे दोषी ही ठहराता हूँ, क्योकि अतीत की स्मृतियो के अलावा उसके पास बचा ही क्या है? और सब तो धूल और राख है। हाँ, हाँ, तो वह बडी ओजस्वी स्त्री है, गर्वीली और दृढ सकल्प वाली। फर्श को वह अपने हाथो से रगड-रगड कर साफ करती है। उसे काली रोटी ही खाने को नसीब होती है, लेकिन वह अपमान बर्दाश्त नही करती। इसीलिए लिब्निजियानिक ने उसका जो अपमान किया है, हमे उसकी उपेक्षा नही करनी चाहिए। उसने जब उस बेचारी को पीटा तो उसे इतनी चोट नही लगी थी, जितनी उसकी भावनाओ को आघात पहुँचा था, जिससे उसने चारपाई पकड ली। मैने जब उससे विवाह किया, उस समय वह विधवा थी। उसके तीन बच्चियाँ थी, एक-दूसरे से छोटी। उसने अपने पहले पति से, जो पैदल सेना का अफसर था, प्रेम के कारण अपने पिता के घर से भागकर शादी की थी। उसे अपने पति से अगाध प्रेम था, लेकिन उसे ताश और जूआ खेलने की लत पड गई और इससे वह आफत मे फँसकर अत में मर गया। अपने अन्तिम दिनो में वह कैटेरीना इवानोव्ना को पीटने भी लगा था, और हालाँकि बदले मे वह भी उसको पीटती थी, जिसका मेरे पास लिखित सबूत मौजूद है, फिर भी उसका स्मरण करते समय उसकी आँखे आँसुओं से तर हो जाती है। वह रोज मुझे ताने मारती है—मुझे खुशी है कि चलो कम से कम जिन्दगी मे एक बार तो उसे सुख मिला था। पति के मरने के बाद वह तीन बच्चो के साथ गरीबी मे दिन काट रही थी। मैने ऐसा करुण दृश्य कभी नही देखा। उसके रिश्तेदारो ने उसकी खोज-खबर लेना छोड दिया था, फिर वह कितनी स्वाभिमानिनी थी'''' जनाब, उन दिनो मै भी विधुर था। मेरी पन्द्रह बरस

की एक बेटी थी। मै उसे इस हालत मे नही देख सकता था, इसलिए मैने उससे शादी का प्रस्ताव किया। आप स्वय कल्पना करें कि मुझसे शादी करने मे उस जैसी पढी-लिखी महिला को कितनी व्यथा हुई होगी। लेकिन वह लाचार थी। उसे और कौन सहारा देता। जनाब, आपकी समझ मे आया कि जब इन्सान का कोई सहारा नही होता तो उसकी क्या हालत होती है ? नही, आप अभी भी नही समझे ··· एक बरस तक मैने ईमानदारी से अपना फर्ज निभाया और इसे (उसने शराब की ओर इशारा किया) छूआ तक नही। मेरे सीने मे भी दिल है। लेकिन इस पर भी मै उसे खुश न कर सका। इस बीच मेरी नौकरी भी छूट गई —फिर मैने पीना शुरू कर दिया। इस ऐतिहासिक नगर मे आये हमे डेढ बरस हो गये है। यहाँ आकर मुझे एक नौकरी मिली, जो मेरी अपनी गलती से छूट गई लोगो को मेरी कमजोरी का पता चल गया। आजकल हम एमीलिया फ्योदोरोवना लिपवेशेल के यहाँ आधा कमरा किराये पर लेकर रहते है। किराये के लिये, और जिन्दा रहने के लिये पैसा कहाँ से आता है, यह बताना मुश्किल है। हमारे अलावा वहा और किरायेदार भी रहते है। चारो तरफ गन्दगी फैली रहती है, निरा पागलखाना है अरे हाँ · इस बीच मेरी लडकी भी जवान हो गई है। उसे अपनी सौतेली माँ से कितना दुर्व्यवहार मिला है, इसकी चर्चा मै नही करूँगा, क्योकि कैटेरीना इवानोव्ना सहृदय होते हुए भी चिडचिडे स्वभाव की औरत है लेकिन इस प्रसग से क्या फायदा। मेरी बेटी सोनिया पढी-लिखी नही है। चार बरस पहले मैने उसे भूगोल और इतिहास पढाने की कोशिश की थी, लेकिन मुझे स्वय इन विषयो का विशेष ज्ञान नही था, फिर हमारे पास किताबे भी नही थी। जो किताबे बच रही थी · खैर, हमारी तालीम बीच मे ही रह गई। हम ईरान के बादशाह से आगे न बढ सके। लेकिन सोनिया ने ढेरो रोमांटिक उपन्यास पढे है। हाल ही मे मिस्टर लिबिनजियानिक

से माँगकर उसने शरीर-विज्ञान की एक पुस्तक पढी थी। आपने तो पढी होगी। उसने कुछ परिच्छेद हम लोगो को भी पढकर सुनाये। बस उसकी तालीम यही तक है। अब जनाब, मै आपसे एक व्यक्तिगत सवाल पूछना चाहूँगा। आपके ख्याल मे क्या कोई शरीफ लडकी ईमानदारी से काम करके अपना पेट भर सकती है? जी नही! अगर वह असाधारण रूप से गुणवती हो, और चौबीसो घन्टे काम करे, तो भी दिन मे वह पन्द्रह फार्दिग* से अधिक नही कमा सकती। क्या आपने इवान इवानिव् क्लौपस्टोक का नाम सुना है? वे कितने बडे अफ़सर हैं। लेकिन उन्होंने अभी तक सोनिया को आधी दर्जन कमीजो की सिलाई नही दी, बल्कि उसे यह कहकर दुत्कार दिया कि उसने कमीजो के कालर दिये गए नमूनो के मुताबिक नही बनाये। घर मे भूखे बच्चे है   कैटेरीना इवानोव्ना के गाल अक्सर लाल रहते है, जैसा कि इस बीमारी मे होता है। वह सोनिया से कहती है, 'तुम इस घर मे रहती हो, खाती पीती हो, लेकिन एक तिनका तक नही तोडती' ज़रा सोचिये, जब तीन दिन से घर मे रोटी का एक टुकडा न हो तो सोनिया कहाँ से खायेगी। मै उस वक्त नशे मे धुत था—मैने सोनिया की आवाज सुनी (उसकी आवाज मे मिठास है, उसके बाल सुनहरी है जो उसके पीले नाजुक चेहरे पर बडे अच्छे लगते है) वह कह रही थी, 'कैटेरीना इवानोव्ना, क्या मुझे सचमुच ऐसा कदम करना होगा!' मुहल्ले की बदमाश औरत दारया फ्रात्सोव्ना ने कई बार मकान-मालकिन की मार्फत सोनिया पर डोरे डलवाये थे। कैटेरीना इवानोव्ना ने ताना देकर कहा था, 'क्यो नही, वैसे ही तुम्हारे शरीर मे कौन से हीरे जवाहिरात लगे है जो छिन जायेगे?' लेकिन जनाब, मेरी बीवी को दोष बिल्कुल मत दीजिये। वह उस समय आपे मे नही थी। बीमारी और भूखे बच्चो के रोने ने उसके दिल को जख्मी कर दिया था   जब बच्चे

*फार्दिग—लगभग एक पैसे के बराबर का सिक्का।

भूख से रोते है, तो वह फौरन उन्हे पीटने लगती है। उसका स्वभाव ही ऐसा है। छ बजे मैने सोनिया को अपना दुशाला ओढकर बाहर जाते देखा। नौ बजे के करीब वह लौट आई और उसने चुपचाप कैटेरीना इवानोव्ना के हाथ मे तीस रूबल थमा दिये। इसके बाद वह एक फटा-पुराना कबल ओढकर, दीवार की ओर मुँह करके लेट गई। उसका शरीर काँप रहा था मै वही लेटा रहा फिर, नौजवान दोस्त, मैने कैटेरीना ईवानोव्ना को घुटने टेककर सोनिया के पैर चूमते देखा—इसके बाद दोनो एक-दूसरे से लिपटकर सो गई और मै नशे मे धुत पडा रहा।"

मारमेलेदोव की आवाज भर्रा गई थी। उसने शराब पीकर फिर अपना गला तर किया और कुछ रुककर बोला

"तभी से, दारया फ्रात्सोव्ना ने कुछ लोगों को सिखा-पढाकर मुहल्ले मे तूफान खडा कर दिया और मेरी बेटी सोनियाँ को वेश्या की पीली टिकिट लेनी पडी। अब वह हमारे साथ नही रह सकती क्योकि हमारी मकान-मालकिन और मिस्टर लिब्निजियानिक ने सोनिया के साथ रहने मे इन्कार कर दिया (हालाकि मकान-मालकिन ने कुटनी दारया की बहुत मदद की थी,) मिस्टर लिब्निजियानिक का आत्म-सम्मान न जाने कैसे सहसा जागृत हो उठा और उन्होने साफ शब्दो मे कह दिया, 'भला मुझ जैसा पढा-लिखा आदमी ऐसी लडकी के साथ एक ही मकान में कैसे रह सकता है।' इस पर कैटेरीना इवानोव्ना ने सोनिया का पक्ष लिया और दोनो मे झगडा हो गया। सोनिया अधेरा होने पर हमारे पास आती है, अपनी सौतेली माँ को तसल्ली देती है और भरसक हमारी मदद करती है—दर्जी कापरनोमोव के यहाँ वह एक कमरा लेकर रहती है। कापरनोमोव लगडा है। उस के परिवार मे सभी लूले-लगडे है। वे सब एक ही कमरे मे रहते है। लेकिन सोनिया ने पर्दा डालकर अपना कमरा अलग कर लिया है ·· हाँ, वे लोग बडे गरीब है। तो मै कह रहा था कि अगले दिन सुबह उठ-

कर मैने चिथडे पहने, हाथ जोडकर ईश्वर से प्रार्थना की और हिज़-एक्सीलेन्सी इवान एफनेसीविच के घर के लिए रवाना हो गया। तुम उन्हे जानते हो ? नही ? वे निरे मोम के बने हुए है। उस मोमवत्ती के मोम की तरह जो ईसा की मूर्ति के आगे जलती है। उनका दिल बहुत नरम है मेरी कहानी सुनकर उनकी आँखे गीली हो गयी। वे बोले, 'मारमेलेदोव, इससे पहले एक बार तुम मेरी आशाओ को मिट्टी मे मिला चुके हो। चलो एक बार मै फिर तुम्हारी जिम्मेवारी उठाये लेता हूँ। अब तुम जा सकते हो।' मैने कृतज्ञ भाव से उनके पैरो तले की मिट्टी चूम ली—कल्पना मे ही। वे आधुनिक विचार के राजनीतिज्ञ ठहरे, वे भला सचमुच मुझे ऐसा कैसे करने देते ? घर लौटकर जब मैने ऐलान किया कि मुझे फिर नौकरी पर बहाल कर दिया गया है और अब मै हर महीने तनख्वाह घर लाया करूँगा तो घर में वह उछल-कूद मची कि · · · "

आवेश के कारण मारमेलेदोव का गला फिर भर्रा गया। इसी समय पियक्कडो की एक टोली शोरगुल मचाती हुई कमरे मे दाखिल हुई। सात बरस का एक बच्चा भद्दी, बेसुरी आवाज़ मे गीत गा रहा था। शराबखाने का मालिक और नौकर नये अतिथियो की खातिर-दारी मे लग गये। किन्तु मारमेलेदोव ने अपनी कहानी पूर्ववत् जारी रखी। इस समय वह बहुत क्षीण दिखायी दे रहा था, लेकिन शराब का एक गिलास पीते ही वह पहले से भी अधिक बातूनी हो गया। उसकी नयी नौकरी ने उसके उत्साह को फिर से गरम कर दिया और उसका चेहरा एक विचित्र आभा से चमकने लगा। रास्कोलनिकोव ने उसकी बाते ध्यान से सुनी।

"यह पाँच हफ्ते पहले की घटना है। कैटेरीना इवानोव्ना और सोनिया ने जब यह खबर सुनी तो घर मेरे लिए जैसे स्वर्ग बन गया। अब मुझे सोया देखकर दोनो पजो के बल चलती और बच्चो को डाँटती

'शि शि चुप ! सेम्योन जहारोविच अभी दफ्तर से लौटे है, खबरदार जो उनकी नींद खराब की !' सुबह ऑफिस जाने से पहले मुझे मलाई डली हुई कॉफी मिलती । वे बाजार से मेरे लिए शुद्ध मलाई खरीदकर लाती थी · सुना तुमने ? पूरे साढे ग्यारह रूबल देकर उन्होने मेरे लिए बढिया कपडे भी बनवा लिए थे । जूते, कलफ लगे कॉलर और यहाँ तक कि एक बढिया वर्दी भी । पूरे साढे ग्यारह रूबल ! पहले दिन जब मैं दफ्तर से लौटा तो देखता हूँ कि घर मे एक की बजाय दो सब्जिया पकी है, शोरबा और मूली वाला गोश्त, जिसे चखे हुए मुझे एक युग बीत गया था । कैटेरीना इवानोव्ना के पास एक भी नयी पोशाक नही थी, लेकिन वह इस तरह बनी-ठनी बैठी थी, जैसे कही बाहर जा रही हो । बनने-ठनने के लिए उसके पास क्या था ? बेचारी ने सिर्फ बालो मे अच्छी तरह कघी फेरकर अपनी पुरानी पोशाक मे साफ कॉलर और कफ लगा लिए थे और इस रूप मे वह पहले से कही अधिक छोटी और सुन्दर लग रही थी । मेरी बेटी सोनिया ने पैसो से कुछ मदद की थी । उसने कहा था, 'अब मै आपसे मिलने कभी-कभी ही आया करूँगी । वह भी अँधेरा होने पर, ताकि कोई मुझे देख न ले ।' सुना तुमने ? रात के खाने के बाद जब मै बिस्तर मे लेटा तो कैटेरीना इवानोव्ना फट से मकान-मालकिन को कॉफी पीने का न्यौता दे आयी, हालॉकि पिछले ही हफ्ते दोनो मे झगडा हुआ था । दो घटो तक दोनो बैठी फुसफुसाती रही—'सेम्योन जहारोविच अब फिर दफ्तर जाने लगे है । हिज़ एक्सीलेन्सी के यहाँ जब वे गये तो हिज़ एक्सीलेन्सी खुद उठकर बाहर आये और सब के सामने सेम्योन जहारोविच को हाथ पकडकर अन्दर ले गये ।' सुना तुमने, सुना तुमने ? हिज एक्सीलेन्सी ने कहा, 'सेम्योन जहारोविच, निश्चय ही तुम्हारी पुरानी सेवाओ का स्मरण करके, और तुम्हारी उस मूर्खतापूर्ण कमज़ोरी के बावजूद, मै तुम्हारे वचन पर विश्वास करता हूँ—तुमने वचन दिया है और इसके अलावा तुम्हारे बिना हमारे काम मे काफी

हर्ज हुआ है ।' सुना तुमने ? सुना तुमने ? मै यह सब इसलिए 'बना रहा हूँ कि यह सब बाते मेरी बीवी ने अपने मन से गढ ली थी, डीग हाँकने के इरादे से । इतना ही नही, अब तो वह इन मनगढन्त बातो पर विश्वास भी करने लगी है और उनमे आनन्द लेती है । कसम से यह सच है ! और मै इसके लिए उसे दोष नही देता, कतई दोष नही देता !

छै दिन पहले जब मैने अपने वेतन के सारे पैसे उसके हाथ मे दिये—तेईस रूबल और चालीस कोपेक—तो उसने मुझे प्यार से अपना गुड्डा कहकर पुकारा । उसने कहा, 'मेरा नन्हा-सा गुड्डा !' और जब हम अकेले मे मिले, तो जानते हो ? तुम मुझे सुन्दर तो नही कहोगे, न मुझे किसी काम का पति ही सोचते होगे ? फिर भी उसने मेरे गाल पर चुटकी लेकर कहा 'मेरा नन्हा-सा गुड्डा ।'

मारमेलेदोव सहसा चुप हो गया । उसने मुस्कराने की कोशिश की, लेकिन उसका चेहरा आवेश से काँप रहा था । फिर भी उसने अपने ऊपर काबू पाने की कोशिश की । शराबखाने का वातावरण, वक्ता का हुलिया, शराब का नशा और मारमेलेदोव का अपनी पत्नी और बच्चो के प्रति प्रेम देखकर रास्कोलनिकोव के मन मे एक विचित्र खीज उठी । उसे अपने वहाँ आने पर पश्चात्ताप हुआ ।

"जनाब, शायद सब लोगो की तरह आपको भी यह सब हँसी-मजाक मालूम हो रहा होगा और आप मेरी घरेलू जिन्दगी की क्षुद्र बातो को सुनकर तग आ गये होगे, लेकिन मेरे लिए यह हँसी-मजाक का विषय नही है क्योकि मैं इन बातो को महसूस कर सकता हूँ · · · उस दिन सारी शाम मैने भविष्य के सपनो मे बिता दी । मै सोच रहा था कि अपनी उजडी गिरस्ती को फिर से बसाऊँगा । सब बच्चो के शरीर पर बढिया कपडे होगे, बीवी की ज़िन्दगी आराम मे कटेगी और मेरी बेटी अपने उस नरकमय जीवन से निकलकर हमारे परिवार मे फिर लौट आयेगी और भी बहुत कुछ यह सब क्षम्य है । फिर

जनाब!" यह कहकर मारमेलेदोव ने गौर से श्रोता की ओर देखा—"फिर उससे अगले ही दिन, यानी आज से ठीक पाँच दिन पहले मैंने चोर की तरह कैटेरीना इवनोवना के सन्दूक की चाबी उठाकर सारे पैसे निकाल लिए। सही रकम तो मुझे याद नही। अब सब लोग मेरी ओर देखिए ··· पूरे पाँच दिन हो गये मैं घर से लापता हूँ। चारो तरफ मेरी खोज हो रही है और मेरी नौकरी भी छूट गयी। मेरी वर्दी एक शराबखाने मे पडी है। उसके बदले मे ये कपडे ले आया हूँ, जो इस समय पहने हूँ ··इस तरह सारा किस्सा खत्म हुआ।"

मारमेलेदोव ने अपना माथा पीटा और दाँत भीचकर मेज के सहारे झुक गया। लेकिन एक मिनट बाद ही उसके चेहरे का भाव बदल गया और उसने बनावटी शेखी बघारते हुए हँसकर कहा —

"आज सुबह मै सोनिया से मिलने गया था। मैंने उससे पैसे माँगे थे · ही, ही, ही!"

"क्या सचमुच, उसने तुम्हे पैसे दे दिए?" नवागन्तुकों मे से एक ने ज़ोर का ठहाका मारते हुए पूछा।

"जी, यह अद्धा उसी के पैसो से खरीदा गया है," मारमेलेदोव ने सिर्फ रास्कोलनिकोव को सम्बोधित करते हुए कहा, "उन बेचारी के पास कुल तीस कोपेक बचे थे। उसने सारे मुझे दे दिए। वह चुपचाप मेरे मुँह की ओर देखे रही थी ··जमीन की ओर नही, ऊपर मेरे चेहरे की ओर····· यह औरते मर्दो की नालायकी पर दुखी होती है, रोती है, लेकिन वे उन्हे दोष नही देती लेकिन इससे तो मन को और भी ज़्यादा चोट लगती है। तीस कोपेक, जी हाँ, शायद उसे खुद पैसों की जरूरत हो। कैसे नही होगी? अब उसे बन-सँवर कर रहना पडता है और इस ढग के बनाव-सिगार मे पैसो की जरूरत पडती है, समझे? उसे कलफ लगे पेटीकोट चाहिए, बढिया रगीन जूते ताकि लोग उसके नाज़ुक पाँवो को देखे। अब आप बनाव-सिगार का मतलब समझ

गये ? और इधर मै उसका बाप, उसका सगा बाप, उससे तीस कोपेक छीन लाया, पीने के लिए, या यो कहिए कि उन्हे मैं कभी का पी चुका। अब बताइये कि मुझ जैसे आदमी पर कौन तरस खायेगा ? आपको मेरी हालत पर तरस आ रहा है या नही, जल्दी बताइये ? ही-ही-ही !"

उसने अपना गिलास फिर भरना चाहा लेकिन शराब की बोतल खाली हो चुकी थी।

"तुम पर कोई तरस क्यो खाये ?" शराबखाने का मालिक ज़ोर से बोला।

इस पर एक जोर का कहकहा लगा। कुछ लोगो को तो सिर्फ मारमेलेदोव की सूरत देखकर ही हँसी आ रही थी।

"तरस ? मुझ पर कोई तरस क्यो खाये ?" मारमेलेदोव ने बाहें फैलाकर पूछा, जैसे वह इस सवाल की प्रतीक्षा ही कर रहा था।

"सचमुच मै तरस के काबिल नही हूँ। मुझे तो सूली पर चढा देना चाहिए। मुझे सूली पर बेशक चढा दो, लेकिन ऐ जज, मुझ पर कुछ तरस खाओ। मै खुद सूली पर चढने के लिए तैयार हूँ, क्योकि मै राग-रग की बजाय गम और आँसुओ की तलाश मे हूँ। क्या तुम शराब बेचने वाले जानते हो कि तुम्हारी शराब की इस बोतल ने मेरे जीवन मे कितनी मिठास भर दी है ? दरअसल मै गम की तलाश मे था। वह मैंने पा लिया है। लेकिन वह जो सब पर दया करता है, मुझ पर भी दया करेगा। वह सब के दिल का हाल समझता है। वह भी तो आखिर जज है। आखिर एक दिन ऐसा भी आयेगा, जब वह पूछेगा, "कहाँ है वह बेटी जिसने अपनी तपेदिक की मरीज सौतेली माँ और उसके बच्चो के लिए अपना शरीर बेचा था ? कहाँ है वह बेटी, जिसने अपने गलीज शराबी बाप पर तरस खाया था ? मेरे पास आओ। मैंने तुम्हारे गुनाहो को माफ कर दिया है · · · क्योकि तुमने जीवन में प्रेम किया है · · · वह मेरी सोनिया को माफ कर देगा, यह मै जानता

हूँ ... ...वह सबको माफ कर देगा, अच्छे, बुरे, बुद्धिमान, मूर्ख सभी को ... सबसे अन्त मे हमारी पुकार होगी, 'अरे ओ, शराबियो, बेशर्मो ! तुम भी चले आओ ।' हम बिना किसी शर्म के एक साथ उसके सामने जाकर खडे हो जायेगे । वह फिर कहेगा, 'तुम इन्सान के भेष मे सुअर हो' इस पर बुद्धिमान लोग कहेगे, 'ऐ परवरदिगार ! इन लोगों को यहाँ क्यो बुलाया है ?' वह जवाब देगा, 'क्योकि इनमे से हर एक जानता है, कि वह यहाँ बुलाये जाने के काबिल नही है,' वह अपना हाथ उठाकर हमे आशीर्वाद देगा और हम उसके कदमो मे गिर जायेगे, ... रोयेगे ... तभी सबको अपनी गलतियाँ मालूम हो जायेगी ... ...कैटेरीना इवान्नोव्ना भी समझ जायेगी .... हे ईश्वर, वह दिन कब आयेगा ।"

मारमेलेदोव थककर बेंच पर लेट गया, वह किसी गहरी सोच मे डूबा हुआ था । कुछ देर तक कमरे मे चुप्पी छाई रही । लेकिन जल्द ही मजाक और फब्तियों की बौछार शुरू हो गई ।

"इस आदमी के विचार देखे ।"

"बकवासी ।"

"कैसा क्लर्क है यह ।"

आदि आदि ।

मारमेलेदोव ने अपना हैट उठाकर रास्कोलनिकोव से कहा, "आओ चले—मुझे कैटेरीना इवानोव्ना से मिलने जाना है ।"

रास्कोलनिकोव भी बहुत देर से उठना चाहता था । मारमेलेदोव के कदम लडखडा रहे थे । वह रास्कोलनिकोव का सहारा लेकर कुछ दूर तक चला, लेकिन घर के नजदीक पहुँचते ही उसकी बदहवासी बढ गई ।

"कैटेरीना इवानोव्ना मुझे देखते ही मेरे बाल नोचेगी, इस बात का मुझे बिल्कुल डर नही । उससे क्या होता है—आखिर बाल ही तो

है न—मुझे डर लगता है उसकी आँखो से—उसके सुर्ख गाल और उसकी साँस – क्या तुमने तपेदिक के मरीजो की साँस सुनी है ? ···· मुझे डर लगता है, बच्चो के रोने से · अगर सोनिया ने उनके खाने का प्रबध न किया होगा · पता नही क्या होने वाला है · मुझे मार खाने से डर नही लगता—मुझे दर्द की बजाए उसमे खुशी मिलती है । सच पूछो तो बिना मार खाये मुझसे रहा भी नही जाता · उस बेचारी के दिल का बोझ हल्का हो जाता है वह रहा मकान ··· जर्मन बढई कोजेल का मकान · तुम आगे चलो ।"

दोनो ज़ीना पार करके चौथी मजिल पर पहुँचे। ज़ीने मे अधेरा था हालाँकि गर्मी के मौसम मे पीटर्सबर्ग मे इतना अधेरा नही होता। रात के ग्यारह का वक्त था ।

एक छोटी अधेरी कोठरी मे मोमबत्ती टिमटिमा रही थी । कोठरी का सामान अस्त-व्यस्त था । बच्चो के कपडे और गदे चिथडो के ढेर लगे थे । एक कोने मे फटी चादर का पर्दा लटक रहा था । शायद उसके पीछे एक चारपाई बिछी थी । कमरे मे दो कुर्सियाँ, एक टूटा हुआ सोफा और बिना मेजपोश की एक पुरानी मेज थी, जिसपर मोमबत्ती रखी थी । मालूम होता था कि यह कोठरी सार्वजनिक रास्ते का काम भी देती थी, क्योकि इस मकान की बनावट अल्मारी जैसी थी । सामने की कोठरी का दरवाजा आधा खुला था और भीतर मे शोरगुल सुनाई दे रहा था । मालूम होता था कुछ लोग चाय पी रहे थे और ताश खेल रहे थे । बीच-बीच मे एकाध अश्लील शब्द भी सुनाई दे जाता था ।

रास्कोलनिकोव ने कटेरीना इवानोव्ना को देखते ही पहचान लिया। वह छरहरे बदन की लम्बी औरत थी । उसके बाल गहरे ब्राउन रग के थे, और उसके गालो पर एक विचित्र रक्तिम आभा थी । वह अपने दोनो हाथ सीने पर रखकर कोठरी मे चहल-कदमी कर रही थी, उसके ओठ सूख गये थे और उसे सास लेने मे दिक्कत हो रही थी । मोमबत्ती की

रोगनी मे उसका रुग्ण चेहरा और भी करुण दिखाई दे रहा था। उसकी उम्र तीस के करीब मालूम होती थी। उसने इन लोगो को कोठरी में घुमते नही देखा, क्योकि वह किसी गहरी सोच मे डूबी हुई थी। ज़ीने मे से सीलन की बदबू आ रही थी, लेकिन उस तरफ का दरवाजा कभी बन्द नही किया जाता था। भीतर कोठरी मे से सिगरेट का धुआ आ रहा था, जिससे वह बार-बार परेशान होकर खास रही थी। छ बरस की एक बच्ची फर्श पर बैठी सोफे का सहारा लेकर सो गई थी। कोने मे सात बरस का एक लडका रो रहा था, शायद उसे अभी-अभी मार पडी थी। उसके पीछे नौ बरस की एक लडकी फटी बनियान के ऊपर पुराना शाल ओढकर खडी थी। उसकी पतली सींक जैसी बाहे अपने भाई की गर्दन मे लिपटी थी, और वह उसे सान्त्वना दे रही थी, साथ ही वह भयभीत आँखो से माँ की ओर देख रही थी। मारमेलेदोव ने कोठरी की दहलीज़ पर घुटनो के बल बैठकर रास्कोलनिकोव को आगे कर दिया। एक अजनबी को देखकर गृहस्वामिनी पहले तो स्तब्ध रह गई, फिर उसने सोचा शायद वह अगली कोठरी मे जाना चाहता होगा। उसने आगे बढकर दरवाज़ा बन्द करना चाहा, लेकिन पति को दहलीज पर बैठे देखकर वह जोर से चिल्लाई

"आह! तुम वापिस लौट आये! बदमाश राक्षस!.........पैसे कहाँ है? अपनी जेब दिखाओ! अरे, तुम्हारे कपडे कहाँ गये! बोलो! वह पति की जेबो की तलाशी लेने लगी। मारमेलेदोव ने आज्ञाकारी ढग से दोनो बाहे ऊपर उठा दी। लेकिन जेबों मे कानी कौडी तक न निकली।

"पैसे कहाँ गये? तुमने फिर शराब मे उडा डाले होगे? अभी सन्दूक में बारह रूबल बचे थे न!" वह ज़ोर से चिल्लाई और पति को बालो से घसीटती हुई कोठरी मे ले गई। मारमेलेदोव ने विरोध करने की बजाय पत्नी की सहायता की।

वह ज़मीन पर सर पटककर कहने लगा, "जनाब, इस मार से

मुझे दर्द नही होता, बल्कि खुशी होती है।" शोरगुल सुनकर सोई हुई लडकी जाग उठी और जोर-जोर से रोने लगी। कोने मे खडा हुआ लडका चीखता हुआ अपनी बहन से चिपक गया। सबसे बडी लडकी पत्ते की तरह काँपने लगी।

पत्नी ने दु खभरे स्वर मे कहा, "इसने सारी रकम पी डाली है—कपडे भी कही गिरवी रख दिये है। इधर बच्चे भूखे है—आग लगे ऐसी ज़िन्दगी मे। तुम्हे, तुम्हे शर्म नही आती ! क्या तुम भी शराबखाने से आ रहे हो ? तुम दोनो ने मिलकर पी होगी, चले जाओ यहाँ से।"

युवक चुपचाप वहाँ से खिसकने लगा। साथ की कोठरी मे से लोग झाँकने लगे। कई तो ड्रेसिग गाउन पहने ही बाहर निकल आये। कुछ के हाथ मे सिगरेट, पाइप और ताश के पत्ते थे। जब मारमेलेदोव की पत्नी उसके बाल पकडकर घसीट रही थी, उस समय मारमेलेदोव की विलक्षण बाते सुनकर उन लोगो का कौतूहल और भी बढ गया। वे पास आकर तमाशा देखने लगे। भीतर से किसी के डाटने-डपटने की आवाज आई। मकान-मालकिन शायद सौवी बार इस अभागे परिवार को कोठरी खाली करवाने की धमकी दे रही थी। बाहर जाते वक्त रास्कोलनिकोव ने जेब में हाथ डालकर ताबे के कुछ सिक्के निकाले और उन्हे चुपचाप खिडकी पर रख दिया। बाद मे जीने पर पहुँच कर उसे बडा अफ़सोस हुआ।

"मैने कितनी बडी बेवकूफी कर डाली है। उन लोगो को तो सोनिया कमाकर खिला सकती है, मुझे कौन खिलाने वाला है ?" लेकिन वापिस जाना असभव जानकर वह नीचे सडक पर आ गया। वह सोचने लगा, "सोनिया को बन-ठनकर रहने की जरूरत है हूँ किसी न किसी दिन वह दिवालिया हो जायेगी फिर सिर्फ मेरे पैसे उनके पास रह जायेगे शाबाश सोनिया ! लडकी है या सोने की खान ! पहले कुछ दिन सब रोये-धोये—अब आदी हो गये है—इन्सान हर चीज का

आदी हो जाता है—बदमाश, लफंगा।"

फिर वह किसी गहरी सोच में डूब गया। "हो सकता है—इन्सान, अर्थात् समूची मानव-जाति बदमाश न हो, हो सकता है यह मेरी कल्पना मात्र हो।"

३

रात को उसे अच्छी तरह नींद नही आई। अगले दिन सुबह जब वह सोकर उठा तो उसका मिज़ाज चिडचिडा हो रहा था। उसने नफरत भरी दृष्टि अपने डिबियानुमा कमरे की ओर डाली। दीवार से चिपका पीला कागज़ धूल से भरा था और कई जगह से उतर आया था। छत इतनी नीची थी कि कोई भी लम्बा व्यक्ति सर टकराने के डर से सीधा नही खडा हो सकता था। फर्नीचर भी कमरे के मुताबिक ही था। दो-तीन टूटी-फूटी कुर्सियाँ और किताबो से भरी एक मेज़। सब चीजो पर धूल की मोटी परत जमी थी। एक फूहड से सोफे ने आधा कमरा घेर रखा था। उसके ऊपर चिथडे लटक रहे थे, जो किसी जमाने में छीटदार कपडे थे। रात को रास्कोलनिकोव इसी पर सोता था, बिना किसी बिस्तरे के। वह अपना ओवरकोट ओढकर ही सो जाता था। तकिये के नीचे उसके साफ और मैले सभी कपडे रहते थे।

जीवन मे इससे अधिक विश्रृंखलता दूसरी क्या होगी? लेकिन रास्कोलनिकोव की वर्तमान मानसिक स्थिति कुछ ऐसी थी कि उसे यह सब ठीक दिखाई देता था। वह आजकल कछुए की तरह अपने ही खोल मे सिमट-सिकुडकर रहता था, बाहरी दुनियाँ से उसने सारा

सम्पर्क तोड लिया था। यहा तक कि नौकरानी को देखते ही वह बौखला उठता था। वह पागलपन की उस अवस्था मे था, जब व्यक्ति की समूची शक्तियाँ एक बिन्दु पर केन्द्रित हो जाती है। पिछले पन्द्रह दिनो से उसकी मकान-मालकिन ने उसे खाना भेजना बन्द कर दिया था, फिर भी उसने कभी इस बारे मे कोई बातचीत नही की। किराये-दार की इस मन स्थिति का लाभ उठाकर नौकरानी नस्तास्या ने कमरे को झाडना-बुहारना सब बन्द कर दिया था। हफ्ते मे केवल एक बार वह उसके कमरे मे आती थी। उस दिन आकर उसने रास्कोलनिकोव को जगाया।

"उठो! अभी तक सो रहे हो! नौ बज चुके है। मै तुम्हारे लिये चाय लाई हूँ। एक प्याला पीओगे? मेरा ख्याल है, इन दिनो तुम्हे फाका-कशी करनी पडती है।"

रास्कोलनिकोव ने आँखे खोली। नौकरानी को देखकर वह चौक गया।

"मकान-मालकिन ने तुम्हे भेजा है?", उसने सोफे पर बैठते हुए पूछा।

"वाह! मकान मालकिन क्यो तुम्हे चाय भेजेगी?" नौकरानी ने अपनी टूटी हुई चायदानी आगे बढाते हुए कहा। बासी चाय में उसने पीली शक्कर के दो टुकडे डाल दिये।

रास्कोलनिकोव ने जेब मे से कुछ सिक्के निकालते हुए कहा, "नस्तास्या, मेहरबानी करके मुझे एक डबलरोटी और थोड़ा-सा गोश्त ला दो। कसाई के यहाँ से सस्तेवाला लाना।"

"डबलरोटी तो अभी ला दूँगी, लेकिन गोश्त की बजाय, गोभी का शोरबा क्या अच्छा नही रहेगा? कल शोरबा बहुत शानदार बना था। मैने तुम्हारे लिये थोडा-सा, बचाकर रखा था, लेकिन तुम बहुत देर से आये। बडा स्वाद बना है।"

नस्तास्या ने शोरबा लाकर मेज पर रख दिया और खुद सोफे पर बैठकर गप्पे लडाने लगी। वह देहातिन थी और बडी बातूनी थी।

"मालकिन तुम्हे पुलिस मे देने की सोच रही है।"

"पुलिस मे ? किस लिये ?"

"तुम उसे न किराया देते हो न कोठरी खाली करते हो।"

रास्कोलनिकोव ने दाँत पीसकर कहा, "राक्षसी बुढिया—मै आज जाकर उससे बात करूँगा। वह बेवकूफ है।"

"बेवकूफ तो मै भी हूँ। लेकिन तुम तो अक्लमन्द हो न ! फिर इस कोठरी मे पडे क्यो सड रहे हो ? पहले तुम बच्चो को पढाते थे। आजकल कुछ क्यो नही करते ?"

"मै कर रहा हूँ" ... रास्कोलनिकोव ने चिढकर जवाब दिया।

"क्या कर रहे हो ?"

"काम ... "

"कैसा काम ?"

"मै कुछ सोच रहा हूँ।" रास्कोलनिकोव के स्वर मे सजीदगी थी।

नस्तास्या हँसी से लोटपोट हो गई।

"अच्छा, तो सोचने से तुम्हे कितनी आमदनी हुई ?"

"कोई भी आदमी बिना जूते पहने बच्चो को पढाने नही जा सकता। मै इस काम से तग आ गया हूँ।"

"अपनी रोजी पर इस तरह लात क्यो मारते हो ?"

"वे लोग बहुत कम पैसे देते है। इतने कम मे गुजारा कैसे चले ?"

"तो तुम एकदम लखपति बनना चाहते हो ?"

रास्कोलनिकोव ने विचित्र ढग से नौकरानी की ओर देखा और दृढ स्वर में जवाब दिया

"हाँ—मैं लखपति होना चाहता हूँ।"

"ना बाबा ! तुम्हारी जल्दबाजी देखकर मुझे डर लग रहा है। मैं

जाकर तुम्हारे लिये डबलरोटी ले आऊँ !"

"जैसी तुम्हारी मर्जी।"

"अरे मै तुम्हे बताना भूल गई कि कल तुम्हारा एक खत आया था।"

"खत ! मेरे लिये ! कहाँ से आया है ?"

"यह तो मुझे नही मालूम। कल मैने डाकिये को अपनी जेब से तीन कोपेक दिये थे। वह तो तुम मुझे लौटा दोगे न !"

"ईश्वर के लिये जल्दी वह खत मुझे दो !" रास्कोलनिकोव ने आवेश भरे स्वर मे कहा।

एक मिनट बाद खत उसके हाथो मे था—उसकी माँ का खत, र—प्रान्त से भेजा गया खत देखते ही रास्कोलनिकोव का चेहरा पीला पड गया। बहुत दिनो से उसके पास कोई खत नही आया था। किसी अज्ञात आशका से उसका दिल धडकने लगा।

"नस्तास्या, यह रहे तुम्हारे तीन कोपेक, मेहरबानी करके यहा से चली जाओ।"

उसके हाथ काँप रहे थे। वह नौकरानी के सामने खत नही खोलना चाहता था। वह एकान्त चाहता था। नस्तास्या के जाते ही उसने खत चूम लिया, इसके बाद वह लिफाफे की लिखावट देखने लगा—वही छोटे, ढुलमुल अक्षर, उसकी माँ की चिर प्रिय लिखाई, माँ जिसने कभी उसे अक्षर-ज्ञान सिखाया था। एक अज्ञात भय उसके मन मे व्याप गया। आखिर उसने काँपते हुए हाथो से लिफाफा फाडा। पत्र वजन मे भारी था—पूरे दो सफ़े।

उसकी माँ ने लिखा था—

"मेरे प्यारे रोद्या, दो महीने पहले मैने खत के जरिये तुमसे बात-चीत की थी, जिसकी वजह से मै बहुत चिन्तित रही—मुझे रात को भी नीद नही आती। आशा है तुम इस चुप्पी के लिए मुझे दोष नही दोगे। तुम जानते हो, मै तुम्हे कितना चाहती हूँ। तुम ही हमारे एक-

मात्र सहारे हो। मेरे और दुनिया के सहारे. यह सुनकर कि तुमने पैसे के अभाव मे अपनी पढाई छोड दी है और तुम्हारा काम भी छूट गया है, मुझे बडा दुःख हुआ। एक सौ बीस रूबल सालाना की पेन्शन मे से तुम्हारी मदद करना मेरे लिए कितना मुश्किल था। चार महीने पहले मैने शहर के व्यापारी बेसिली इवानोविच वारुशिन से पन्द्रह रूबल उधार लेकर तुम्हे भेजे थे। वह बडा दयालु व्यक्ति है और तुम्हारे पिता का दोस्त भी रह चुका है। पिछला कर्जा अब कही जाकर चुका है, इसलिए मै तुम्हे इस बीच कुछ नही भेज सकी। लेकिन ईश्वर की कृपा से अब हमारी हालत सुधरने वाली है, यही खबर देने के लिए मै तुम्हे यह खत लिख रही हूँ। प्यारे रोद्या, तुम्हे जानकर खुशी होगी कि तुम्हारी बहन की मुसीबते कट गई है। मै तुम्हे बारी-बारी से सारी बाते लिखूँगी, जो अभी तक हमने तुमसे छिपा रखी थी। दो महीने पहले तुमने पूछा था कि क्या यह सच है कि स्वीद्रीगाईलोव परिवार मे दूनिया के साथ दुर्व्यवहार होता है ? मै भला इसका क्या उत्तर देती ? अगर मैं तुमसे सच बोलती तो निश्चय ही तुम सब छोड-छाडकर यहा चले आते, क्योकि मैं तुम्हारी आदतो और भावनाओ को अच्छी तरह समझती हूँ। तुम अपनी बहन का अपमान कभी नही बर्दाश्त कर सकते थे। मै खुद भी इस बात से दुखी थी, लेकिन मै क्या कर सकती थी ? इसके अलावा तब तक मुझे पूरी सच्चाई का पता भी तो नही चला था। सबसे बडी दिक्कत यह थी कि नियुक्त होने से पहले दूनिया को एक सौ रूबल पेशगी दिये गए थे, इसलिए उसके लिए नौकरी से इस्तीफा देना सम्भव नही था। प्यारे रोद्या, तुम्हे याद होगा कि पिछले साल तुम्हे पैसो की सख्त जरूरत थी, इसलिए दूनिया ने उन सौ रूबलो मे से साठ रूबल तुम्हे भेज दिए थे। उस समय हमने तुमसे यह कहकर झूठ बोला था कि वे साठ रूबल दूनिया ने बचाकर रखे थे। वह झूठ था, लेकिन ईश्वर की कृपा से हमारे अच्छे दिन आ रहे है।

पहले तो मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव ने दूनिया को बडा तग किया ..
लेकिन उन बातों की चर्चा से मै तुम्हारा दिल नही दुखाना चाहती।
अब वे दिन बीत गए है। मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव की पत्नी मार्फा पैत्रोव्ना
के दयालु स्वभाव के बावजूद भी दूनिया को बडी मुसीबते सहनी पडी।
विशेषकर जब मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव अपने पुराने फौजी व्यसनो मे
डूबकर शराब के नशे मे चूर हो जाते थे। लेकिन तुम सोचोगे कि फिर
यह चमत्कार कैसे हुआ? प्यारे रोद्या, उन्हे पहली नजर मे ही दूनिया से
मुहब्बत हो गई थी, जिसे छिपाने के लिए ही वे दूनिया को इतना डॉटते
फटकारते थे। शायद अपनी उमर और सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण वे
शर्मिदा होगे। अपने कठोर व्यवहार द्वारा वे लोगो से अपनी मुहब्बत
छिपाना चाहते थे। लेकिन उनके सयम का बॉध एक दिन टूट गया और
उन्होने साहस करके दूनिया से प्रणय-याचना की। तरह-तरह के वायदे
भी किए, यहाँ तक कि यह भी कहा कि वे उसे लेकर अपनी किसी
और जायदाद पर या विदेश चले जायेगे। इससे दूनिया के दिल पर
क्या बीती होगी, यह तो तुम समझ ही सकते हो। एकदम नौकरी से
इस्तीफा देना उसके लिए असम्भव था, क्योकि इससे मार्फा पैत्रोव्ना
को जरूर सन्देह हो जाता और उसकी गृहस्थी टूट जाती। जरा सोचो
तो सही कि इसमे दूनिया की कितनी बदनामी होती? इसके अलावा
कई और कारण भी थे, जिससे दूनिया को डेढ महीना और वहीं रुकना
पडा। तुम जानते हो वह कितनी सयानी लडकी है। इतनी मुसीबते
सहने के बाद भी उसका स्वाभिमान ज्यो का त्यो है। उस बेचारी ने तो
इस सारे काण्ड के बारे में मुझे एक शब्द भी नही लिखा। एक दिन
मार्फा पैत्रोव्ना ने अचानक अपने पति को बाग मे दूनिया से प्रणय-
याचना करते हुए सुन लिया। पति को दोष देने की बजाय उसने सारा
दोष दूनिया के सिर मढ दिया। दोनो मे वही तू-तू मैं-मैं हो गई।
मार्फा पैत्रोव्ना ने दूनिया को पीटा भी। वह एक घटे तक गाली-गलौज

करती रही, फिर उसने नौकरो को हुक्म दिया कि वे फौरन दूनिया को एक बैलगाडी मे बैठाकर मेरे पास भेज दे। बेचारी दूनिया मूसलाधार बारिश मे मेरे पास पहुँची। तुम्ही बताओ, मै तुम्हारे खत का क्या जवाब देती? मै दुखी थी, इसलिए तुम्हे भी दुखी नही करना चाहती थी। इसके सिवा तुम कर भी क्या सकते थे? दूनिया ने मुझे तुम्हे खत लिखने ही नही दिया। सारे शहर मे दूनिया की बदनामी फैल गई थी। हम माँ-बेटी गिर्जाघर भी नही जा सकती थी, क्योकि लोग खुलेआम हमे ताने सुनाते थे। हमारे परिचित हमसे नजरे चुराने लगे और कुछ दुकानदारो और क्लर्कों ने हमारी बेइज्जती करने के लिए हमारे घर के दरवाजो पर कालिख पोतने का फैसला कर लिया था। बदनामी के भय से हमारे मकान-मालिक ने हमे नोटिस देने की धमकियाँ देनी शुरू कर दी। इस सबके पीछे मार्फा पैत्रोव्ना का हाथ था। घर-घर जाकर वह दूनिया की बदनामी करने लगी। वह हमारे आस-पडोस के सभी लोगो को जानती थी। और तुम जानते हो कि वह कितनी बातूनी औरत है। उसे इस तरह अपने पति की बदनामी नही करनी चाहिये थी। धीरे-धीरे यह चर्चा सारे शहर मे फैल गयी। मै तो भय और चिन्ता से बीमार पड गयी, लेकिन दूनिया ने बडी बहादुरी से लोक-निंदा का सामना किया। वह मुझे ढाढस बधाँती रही। वह सचमुच देवी है। ईश्वर की कृपा से मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव के मन मे पश्चात्ताप हुआ। शायद दूनिया की दुर्दशा उनसे देखी नही गयी, इसलिए उन्होने दूनिया की निर्दोषिता प्रमाणित करने के लिए मार्फा पैत्रोव्ना को एक पत्र दिखाया। इस पत्र मे दूनिया ने उनकी प्रणय-याचना को ठुकराया था और उन्हे याद दिलाया था कि वे अपनी पत्नी से विश्वासघात कर रहे है और एक असहाय लडकी पर जुल्म कर रहे है। प्यारे रोद्या, सचमुच वह खत इतनी सुन्दर और मार्मिक भाषा मे लिखा गया था कि आज भी उसे पढकर मेरी आँखो मे आँसू आ जाते है। घर के नौकरो

ने भी दूनिया का पक्ष लिया। उन्होने अपनी आखो से मिस्टर स्वीद्री-गाईलोव की हर हरकत को देखा था, जैसा कि नौकर करते है। मार्फा पैत्रोव्ना पहले तो पत्र पढकर दग रह गयी, लेकिन बाद मे उसे दूनिया की निर्दोषिता पर विश्वास हो गया। अगले दिन इतवार को वह सीधी बडे गिरजे मे पहुँची और मा मरियम के आगे घुटने टेककर क्षमा माँगने लगी। इसके बाद वह हमारे घर आयी और दूनिया को गले से लगाकर फूट-फूटकर रोने लगी। उसने अपने दुर्व्यवहार के लिए दूनिया से माफी माँगी और वह उसे अपने साथ सब परिचितो के घर ले गई, जहाँ उसने दूनिया की सच्चरित्रता की प्रशसा की। उसने सबको दूनिया का लिखा खत दिखाया, यहाँ तक कि उसकी कई नकले भी बँटवा दी—मेरा ख्याल है, इसकी कोई जरूरत नही थी। इससे शहर मे हगामा मच गया। कुछ लोग इसलिए मार्फा पैत्रोव्ना से नाराज थे कि वह सबसे पहले उनके घरो मे क्यो नही आई। घर-घर मे मार्फा पैत्रोव्ना की सफाई सुनने के लिए लोगो की भीड जमा होने लगी। भला इतने तूमार की क्या जरूरत थी। लेकिन मार्फा पैत्रोव्ना का स्वभाव ही ऐसा है। खैर, जो भी हो सबके आगे दूनिया की निर्दोषिता साबित हो गई और सब मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव पर थूकने लगे। मुझे उस बेचारे पर बडा तरस आता है। कई परिवारो ने दूनिया को अपने बच्चो की शिक्षिका नियुक्त करना चाहा, लेकिन दूनिया ने ना कर दी। सारे शहर मे दूनिया की इज्जत होने लगी। इसी बीच एक ऐसी घटना हुई जिसने आकर हमारे भाग्य को पलट दिया। प्यारे रोद्या, तुम्हे यह जानकर खुशी होगी कि दूनिया की शादी होने वाली है। हम इस मामले मे तुम्हारी स्वीकृति नही ले सके, इस वजह से तुम नाराज मत होना, क्योकि हम इतनी देर मामले को उलझाये नही रखना चाहते थे। तुम्हारा भावी बहनोई प्योत्र पत्रोविच लूजिन काउसलर के पद पर नियुक्त है। वह मार्फा पैत्रोव्ना का रिश्तेदार है—सच पूछो तो मार्फा

पैत्रोव्ना की कृपा से ही यह रिश्ता पक्का हो सका। एक दिन उसने हमारे घर आने की इजाजत माँगी। हमने भरसक उसकी खातिर की, उसे काफी पिलाई। अगले ही दिन उसने खत लिखकर शादी का प्रस्ताव किया। वह किसी जरूरी काम से पीटर्सबर्ग जाने वाला है, इसलिए उसका एक-एक मिनिट कीमती है। पहले तो हम दोनो खत पढ कर दग रह गई, फिर हमने इस प्रस्ताव पर सजीदगी से सोचा। वह ऊचे ओहदे पर है और धनी भी है। पैंतालीस बरस का होने पर भी वह देखने में छोटा मालूम होता है। सिर्फ उसमे एक ही कमी है, वह गुमसुम रहता है। हो सकता है वह हमारी गलतफहमी हो। इसलिए प्यारे रोद्या, जब वह पीटर्सबर्ग आकर तुमसे मिले तो तुम उसके बारे मे कोई ऐसी-वैसी धारणा मत बना लेना, जैसी तुम्हारी आदत है। मुझे विश्वास है कि उससे मिलकर तुम्हे हार्दिक खुशी होगी। हमेशा दूसरे आदमियो को सहानुभूतिपूर्वक समझने की कोशिश करनी चाहिए। उनके बारे मे पहले से ही कोई अप्रिय धारणा नही बनानी चाहिए, क्योकि बाद मे इससे मन में कटुता पैदा होती है। फिर प्योत्र पैत्रोविच तो बडा सभ्रान्त और प्रतिष्ठित व्यक्ति है। पहली बार ही उसने हमे बताया कि वह पक्का व्यावहारिक प्रवृत्ति का आदमी है और जमाने के साथ चलता है। उसे अपनी क्षमताओ पर बडा गर्व है — लेकिन यह कोई दोष नही। दुनिया का कहना है कि वह बहुत पढा-लिखा नही है, लेकिन वह व्यवहार-कुशल है। तुम अपनी बहन के स्वभाव को जानते ही हो, वह कितनी सहृदय और सयानी है, लेकिन अभी अल्हड है। दोनो तरफ से गहरा प्रेम नही दिखाई देता, लेकिन मुझे विश्वास है कि शादी के बाद वे दोनों एक-दूसरे को सुखी रखने की कोशिश करेगे — हालाँकि यह रिश्ता बहुत जल्दबाज़ी मे हुआ है। इसके अलावा प्योत्र पैत्रोविच व्यावहारिक आदमी है, उसे ज़रूर इस बात का ऐहसास हो जायेगा कि दुनिया को खुश रखने मे ही वह खुश हो सकता है। वैसे तो सुखी से सुखी दम्पति

मे भी किसी न किसी बात पर मतभेद हो ही जाता है। दूनिया को विश्वास है कि वह नई परिस्थितियो के अनुकूल अपने को ढाल सकेगी—बशर्ते उसके साथ धोखा न किया गया। पहले पहल तो प्योत्र पैत्रोविच मुझे सनकी मालूम हुआ, लेकिन हो सकता है इसका कारण उसकी ईमानदारी हो। मिसाल के तौर पर दूनिया की स्वीकृति पाने के बाद जब वह दूसरी बार हमारे घर आया तो बातचीत के दौरान मे उसने बताया कि दूनिया को देखने से पहले उसने प्रण किया था कि वह किसी गरीब और सच्चरित्र लडकी से शादी करेगा क्योकि पति को कभी भी पत्नी का अहसानमद नही होना चाहिये। मुझे ठीक से उसके शब्द याद नही, लेकिन मेरा ख्याल है कि उसने यह बात जानबूझ कर हमे छोटा दिखाने के इरादे से नही कही थी, बल्कि अनायास ही उसके मुँह से निकल गई थी, जिस पर बाद मे उसने अफसोस भी जाहिर किया। मैने जब दूनिया से इस बात की चर्चा की तो वह बोली, "बातों से कुछ नही होता।" उसका कहना ठीक ही था। दूनिया ने रातभर जागकर शादी के प्रस्ताव पर गौर किया था। वह कमरे मे रातभर चहलकदमी करती रही। फिर उसने ईसा की मूर्ति के आगे घुटने टेक कर बहुत देर तक प्रार्थना की। अगले दिन सुबह उसने मुझे अपना निश्चय सुनाया।

"मै तुमसे अभी प्योत्र पैत्रोविच के पीटर्सबर्ग आने का जिक्र कर चुकी हूँ। वहाँ पर वह अपना दफ्तर खोलना चाहता है। वह पुराना वकील है, हाल ही मे उसने एक मशहूर केस जीता है। पीटर्सबर्ग भी वह बडी कचहरी मे पेश होने जा रहा है। प्यारे रोद्या, मुझे और दूनिया को विश्वास हो गया है कि तुम्हारा भविष्य बडा उज्ज्वल है। काश! यह शादी जल्द ही हो जाये। दूनिया भी दिन-रात इसी के सपने देखती है। हमने एक बार प्योत्र पैत्रोविच से तुम्हारा जिक्र भी किया था। उसने जवाब दिया कि उसे एक सैक्रेटरी तो हर हालत मे रखना

ही है, फिर किसी पराये आदमी की बजाय अपने ही रिश्तेदारों को तनख्वाह क्यों न दी जाये ? लेकिन रिश्तेदार काबिल होने चाहिये (भला तुम्हारी काबलियत मे भी किसी को शक हो सकता है ?) फिर उसने कहा, हो सकता है तुम्हे पढाई से फुर्सत ही न मिले। लेकिन दूनिया पिछले कई दिनो से तुम्हारे भविष्य की योजनाये बना रही है—वह तुम्हे प्योत्र पेत्रोविच का साझीदार बनाकर छोडेगी—तुम कानून के विद्यार्थी हो न ! मै भी उसकी राय से सहमत हूँ। जरूर उसके सपने किसी दिन पूरे होगे। प्योत्र पैत्रोविच ने हालाँकि इस बारे मे कोई वादा नही किया, (तुमसे मिले बगैर यह हो भी कैसे सकता है ?) लेकिन दूनिया को विश्वास है कि वह शादी के बाद पति से सब कुछ करा लेगी। खैर, हम प्योत्र पैत्रोविच से तुम्हारे भविष्य के बारे मे अधिक चर्चा नही करते। वह व्यावहारिक बुद्धि का आदमी है, हो सकता है उसे यह बात बिल्कुल पसद न आये। हमने अभी तक उसे यह भी नही बताया कि हम उससे तुम्हारी पढाई का खर्च उठाने की उम्मीद भी रखते है। हमे विश्वास है कि वह खुद ही यह प्रस्ताव रखेगा। (भला दूनिया की इच्छा को वह कैसे ठुकरा सकेगा ?) मुझे उम्मीद है कि तुम अपनी काबलियत से उसके विश्वासपात्र बन जाओगे। हम लोगो ने तुम्हारे भविष्य की यही योजना बनाई है। मै चाहती हूँ, तुम उससे बराबरी के स्तर पर मिलो। जब दूनिया ने बडे उत्साह से तुम्हारी प्रशसा की तो उसने जवाब दिया कि बिना किसी को देखे वह किसी के बारे मे कोई राय बनाने का आदी नही है। इसका अर्थ स्पष्ट है। वह तुमसे मिलने के बाद ही अपनी राय कायम करेगा। प्यारे रोद्या, मै सोचती हूँ (शायद यह मेरे बुढापे की सनक हो) कि दूनिया की शादी के बाद मेरा उन लोगो के साथ रहना उचित नही होगा, मै जानती हूँ कि वे मुझे साथ रखने के लिए उत्सुकता अवश्य दिखायेगे। इसीलिए प्योत्र ने अभी तक यह सवाल नही उठाया। लेकिन वे बुलायेगे तब भी मै

नही जाऊँगी । मैने जिन्दगी मे अक्सर देखा है कि दामादो की अपनी सासो से बिल्कुल नही पटती । चाहे जो भी हो, मै किसी के रास्ते का काँटा नही बनना चाहती । जब तक मेरी पेन्शन और तुम्हारे जैसा लायक बेटा है तब तक मुझे किसी का मोहताज होने की जरूरत नही है । अगर हो सका तो मै तुम्हारे ही पास आकर रहूँगी । मेरे प्यारे बेटे, मैने अभी तक तुम्हे सबसे बडी खुशखबरी तो सुनायी ही नही । वह यह है कि मै और दूनिया शायद एक हफ्ते के भीतर ही पीटर्सबर्ग आयेगे । तीन साल बाद मै तुम्हे देखूँगी । अन्तिम फैसला तो प्योत्र पैत्रोविच के हाथो मे ही है । वह अपनी सुविधा के लिए माँ मरियम के व्रत से पहले ही शादी चाहता है । अगर तब तक तैयारी न हो सकी तो व्रत के फौरन बाद ही शादी होगी । ओह ! तुम्हे देखकर मेरे कलेजे को कितनी ठडक पहुँचेगी ? दूनिया तुमसे मिलने के लिये बेचैन हो रही है । एक दिन उसने मजाक मे कहा कि वह सिर्फ पीटसबर्ग जाकर तुमसे मिलने की खातिर ही प्योत्र पैत्रोविच से शादी कर लेगी । वह कितनी भोली है ! वह आकर तुम से दिल खोल कर बाते करेगी, इसीलिये वह तुम्हे खत नही लिख रही । उसका प्यार स्वीकार करो । मैं एकाध दिन मे तुम्हे कुछ पैसे भेज रही हूँ । यह सुनकर कि प्योत्र पैत्रोविच मेरा दामाद बनने वाला है, लोग मुझे आदर की दृष्टि से देखने लगे है, और मेरी साख बहुत ऊँची हो गई है । मेरा ख्याल है कि अफनेसी इवानोविच मुझे पचहत्तर रूबल तक कर्ज दे देगे, जिनमे से तुम्हे मै पच्चीस या तीस रूबल भेज सकूँगी । इससे अधिक भेजना मेरे लिए इस समय सभव नही होगा, क्योकि हमे रेल के किराये के लिये पैसे चाहिये, हालाकि प्योत्र पैत्रोविच ने हमारा सामान मुफ्त ले जाने का आश्वासन दिया है । पीटर्सबर्ग पहुँचकर भी हमारा कुछ न कुछ तो खर्च होगा ही । लेकिन मैने और दूनिया ने बैठकर खर्च का हिसाब लगा लिया है । एक छकडेवाला कम किराया लेकर हमे स्टेशन तक छोड आयेगा, और

हम दोनो थर्ड क्लास का टिकट लेगी। हो सकता है कि मैं तुम्हे पच्चीस की बजाय, तीस रूबल ही भेज सकू। खत बहुत लम्बा हो गया है। इसलिये प्यारे रोद्या, मै तुम्हे हार्दिक आशीर्वाद भेजती हूँ। दूनिया से खफा न होना। वह तुम्हे अपने प्राणो से भी अधिक चाहती है। प्यारे रोद्या, तुम ही हमारे सर्वस्व हो। तुम्हारी खुशी मे ही हमारी खुशी है। तुम नियमपूर्वक सर्वशक्तिमान ईश्वर के आगे प्रार्थना करते हो न! मुझे डर है कही तुम भी ज़माने की हवा खाकर नास्तिक न बन जाओ। प्यारे बेटे, अपने बचपन के उन दिनो को सदा याद रखना जब तुम्हारे पिता थे और तुम मेरी गोद मे बैठकर प्रार्थना सीखा करते थे। वह कितने खुशी के दिन थे। अच्छा, हम जल्द मिलेगे। मेरे असख्य प्यार।

आजीवन तुम्हारी,

पुलकेरिया रास्कोलनिकोव"

पहले रास्कोलनिकोव का चेहरा आँसुओ से भीग गया था। लेकिन खत पढने के बाद उसके ओठो पर एक कडवी और क्षोभ भरी मुस्कान छा गई। वह अपने तारतार मैले तकिये पर सर रखकर बहुत देर तक कुछ सोचता रहा। उसका दिल जोर से धडक रहा था, और उसके दिमाग मे हलचल मच गई थी। उस डिबियानुमा कमरे मे उसकी साँस घुटने लगी। उसकी आँखे आकाश के खुले विस्तार को देखने के लिए व्याकुल हो उठी। वह अपना हैट उठाकर सीढियो से नीचे उतर आया। लगता था कि उसे कोई जरूरी काम याद आगया है। वह वैसीलेस्की ऑस्त्रोव की तरफ चल दिया। वह अब भी कुछ बड़बडाता हुआ अधाधुध चल रहा था। लोगो ने समझा, कोई शराबी जा रहा है।

४

माँ के पत्र ने उसे बहुत उद्विग्न कर दिया था, लेकिन सबसे महत्व-पूर्ण समस्या पर वह अपनी निश्चित राय कायम कर चुका था। पत्र पढते समय उसने अपने मन मे कहा था, "जब तक मै जिन्दा हूँ तब तक यह शादी नही हो सकती, यह पत्थर की लकीर की तरह अमिट बात है।" उसके ओठो पर दुर्भावना से भरी एक विषैली मुस्कान आगयी और वह बडबडाया, "नही, नही, माँ और दूनिया तुम दोनो मुझे धोखा नही दे सकोगी। मेरी राय लिए बिना ही यह रिश्ता पक्का कर दिया। खूब ! तुम्हारा ख्याल है कि अब इसे कोई नही तोड सकता। मै भी देखूगा ! कैसा बहाना बनाया है 'प्योत्र पैत्रोविच इतना काम-काजी है कि उसकी शादी झटपट ही हो जानी चाहिए।' नही, दूनिया, मै सब समझता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम रात भर जागकर क्या सोचती रही थी। माँ मरियम की मूर्ति के आगे तुमने क्या प्रार्थना की होगी। अच्छा, तो तुमने तै कर लिया है कि तुम एक धनी व्यापारी से शादी करोगी, जो अत्यन्त व्यावहारिक बुद्धि का आदमी है और जमाने की रफ्तार के साथ चलता है। जो देखने मे दयालु प्रकृति का लगता है। क्या कहने है 'देखने' के ? इसीलिए दुनिया उससे शादी कर रही है, क्या खूब है !

"……लेकिन मैं पूछता हूँ कि माँ ने मुझे 'जमाने की हवा' का डर क्यो दिखाया ? बहनोई साहब का रौब गाँठने के लिए ? ये लोग भी कितने चालाक है। मै एक बात और जानना चाहता हूँ। भला एक दिन मे वे एक-दूसरे को कितना जान पाये होगे ? दोनो अपने हृदय की भावनाओ को भाषा मे कैसे व्यक्त कर पाये होगे ? या दोनो को ही सारी स्थिति मालूम थी इसलिए कुछ कहने-सुनने की जरूरत न पडी होगी। माँ के पत्र से तो कुछ ऐसा ही मालूम होता हे। मा का कहना है कि उसे भी प्योत्र पैत्रोविच थोडा-सा दम्भी मालूम हुआ था। उसने जरूर यह बात दूनिया से भी कही होगी, तभी तो दूनिया ने इतना बिगडकर जवाब दिया। बिगडती क्यो न ? जब सारी स्थिति साफ है, तो इस तरह की पूछताछ से क्या फायदा ? भला माँ ने यह क्यो लिखा है, 'दूनिया से खफा मत होना, वह तुम्हे प्राणो से भी अधिक चाहती है।' अपने बेटे के भविष्य के लिए बेटी की कुर्बानी देते हुए माँ की आत्मा को तकलीफ तो हुई होगी। 'तुम्हीं हमारे सर्वस्व हो।'—आह माँ, यह सब तुमने क्यो लिखा ?"

रास्कोलनिकोव के मन की कटुता और भी बढ गयी। इस समय अगर प्योत्र पैत्रोविच उसके सामने पड जाता तो वह फौरन उसकी हत्या कर डालता।

उसके दिमाग मे विचारो का बवडर उठ रहा था। "सब जानते है कि किसी आदमी को पहिचानने मे काफी देर लगती है। लेकिन प्योत्र पैत्रोविच पहली ही मुलाकात मे इन लोगो को सज्जनता की मूर्ति दिखाई देने लगा, क्योंकि उसने माँ-बेटी का सामान पीटर्सबर्ग तक मुफ्त पहुँचाने का वायदा किया था, इसलिए न ? बहुत खूब ! दूल्हा तो सफर करेगा फर्स्ट क्लास मे और दुल्हन और दुल्हन की मा जायेगी थर्ड क्लास मे। मै भी जानता हूँ, थर्ड क्लास का सफर कैसा होता है। माँ-बेटी दोनो घर से सस्ते किराये के छकडे मे बैठकर

स्टेशन पहुँचेगी। खैर, इसमे कोई पाप नही। आदमी को अपनी हैसियत के मुताबिक ही चलना चाहिए। लेकिन बहनोई साहब, आप ? दुनिया तो आपकी दुल्हन है न ? आपको अच्छी तरह मालूम होगा कि आपकी सास कितनी कम पेन्शन मे गुजारा करती है। लेकिन आप ठहरे पक्के व्यापारी। आप तो बराबर साझे-पत्ती मे विश्वास करते है न ? खाना और सामान मुफ्त, किराया अपनी जेब से खर्चो ! माँ-बेटी भी कौन कम सौदेबाज है ? उनका सामान मुफ्त मे जायगा। मजे ही मजे है। लेकिन क्या वे इस बात को अच्छी तरह से समझती है, या समझना ही नही चाहती ? उन्हे तो बस चारो ओर खुशी ही खुशी नजर आती है। फिर अभी तो शुरुआत है, आगे देखिए क्या होता है। लेकिन मुझे उस आदमी की कजूसी और कमीनापन इतना नही अखरता जितना कि उसका तौर-तरीका। शादी के बाद भी वह यही तरीका अपनायेगा। यह तो भूमिका मात्र है। लेकिन माँ को दरियादिली किस लिए सूझी ? पीटर्सबर्ग पहुँचते-पहुँचते उसके पास क्या बच जायगा ? बुढिया की सनक .....ऊँह, पीटर्सबर्ग आ कर वह कैसे गुजारा करेगी ? इतना तो वह भी समझ गयी है कि शादी के बाद वह दुनिया के साथ नही रह सकती। उस नेक आदमी ने बात-चीत मे इसका सकेत जरूर कर दिया होगा। तभी तो बुढ़िया कहती है—'वह मुझे बुलायेगे, मै ना कर दूँगी।' फिर उसे आखिर किसका भरोसा है, अपनी पेन्शन का ? वह ऊनी शाल बुनकर और कमीजो की आस्तीनो पर कढायी करके अपनी आँखे फोड रही है। लेकिन उससे कितनी आमदनी होती है ? साल में सिर्फ बीस रूबल। मै जानता हूँ, वह किस लिए इतने हवाई महल बना रही है। उसे अपने दामाद की सहृदयता पर भरोसा है। हम भी देखेगे, वह तुम्हे कितना सुख देता है। ऐसे शायर-दिल भोले लोग हमने बहुत देखे है। दूसरे की परिस्थितियो को अच्छी तरह जानते हुए भी वे अन्त तक भोले बने रहते है। जब तक उनकी आँखो मे

उगनी डालकर सच्चाई न दिखायी जाय, तब तक वे देखते ही नही। जब देखते है तो उनकी कँपकँपी छूट जाती है, और वे सच्चाई को दूर धकेल देते है। दूसरा आदमी बेवकूफ बनकर उनका मुँह ताकता रहता है। मुझे विश्वास है कि बहनोई साहब ठेकेदारो और व्यापारियो की दावतो मे जाते हुए अपने कोट पर तमगा भी जरूर लगाते होगे। देख लेना, शादी के रोज भी वह तमगा उनके कोट पर शोभा देगा। ऐसे आदमी से शैतान समझे।

"खैर, माँ बेचारी से मुझे कोई गिला नही। वह तो है ही ऐसी। लेकिन दूनिया ने ऐसा क्यो किया ? प्यारी दूनिया, मुझ से बनने की कोशिश मत करो। तुम बीस बरस की थी, जब तुम्हे छोडकर मै पीटर्सबर्ग आया था। मै तब भी तुम्हारी नस-नस को पहचानता था। माँ ने लिखा है कि तुम मे बहुत सहनशक्ति है। पिछले ढाई साल से मुझे भी तुम्हारी सहनशक्ति पर ताज्जुब हो रहा था। जब तुमने मि० स्वीद्रीगाईलोव के साथ गुजारा करना सीख लिया तो दुनिया मे किस के साथ गुजारा नही कर सकती ? माँ का विचार है कि तुम मिस्टर लूजिन के साथ भी गुजारा कर सकती हो, जिसने पहली मुलाकात मे ही तुम्हे बताया कि वह किसी गरीब अनाथ लडकी से शादी करना चाहता है, क्योकि ऐसी लडकियाँ सुशील होती है। माँ का कहना है कि यह बात गलती से उसके मुँह से निकल गई—(मेरा ख्याल है कि यह बात उसने जानबूझ कर तुम लोगो का दिमाग साफ करने के लिए कही थी)। लेकिन दूनिया उसे अच्छी तरह समझती है, वह उसके साथ जिन्दगी काटने को तैयार है—वही दूनिया जो सूखी रोटी पर गुजारा कर सकती थी, लेकिन दुनिया की सारी दौलत जिसकी आत्मा और नैतिक स्वतन्त्रता को नही खरीद सकती थी, मिस्टर लूजिन के पैसे की तो बिसात ही क्या ? नही-नही, दूनिया अब भी नही बदली। स्वीद्रीगाईलोव परिवार की बात दूसरी है। मै जानता हूँ कि छोटे शहर

मे एक गवर्नेस (आया) की जिन्दगी कितनी कठिन होती है। लेकिन मै यह भी जानता हूँ कि दूनिया क्रीत हब्शी दास की तरह मजदूरी कर लेगी, लेकिन अपने ऐशो-आराम के लिये किसी ऐसे व्यक्ति से शादी नही करेगी, जिसके लिये उसके मन मे आदर नही है। मिस्टर लूजिन भले ही ठोस सोने या हीरे के बने होते, लेकिन दूनिया उनकी विवाहित रखैल कभी न बनती। फिर उसने ऐसा क्यो किया ? इसका क्या जवाब है ? निश्चय ही उसने अपने लिये ऐसा नही किया होगा, वह अपनी बूढी माँ और भाई के लिये अपने शरीर का सौदा कर रही है। उनके लिये वह क्या कुछ नही बेच सकती ! ऐसी परिस्थितियो मे 'नैतिक-अनैतिक' का सवाल नही उठता। स्वतन्त्रता, शान्ति और अन्तरात्मा सब बाजार मे बिकने आ जाती है। इन्सान सोचता है, 'मेरे सगे-सम्बन्धी सुखी रहे, मेरे प्राण भले ही चले जाये'। अपने मन को तसल्ली देने के लिये हम जेस्विट दर्शन[1] मे आस्था रखने लगते है और कहते है, अच्छे काम की सिद्धि में कुछ भी बुरा नही। दूनिया भी यही कर रही है, यह साफ है। वह बेचारी अपने भाई रोदियोन रोमनोविच रास्कोलनिकोव को सुखी बनाने के लिये यह सब कर रही है—उसकी पढाई जारी रखने के लिये, उसे अपने पति का साझीदार बनाने के लिये, और उसके भविष्य की सुरक्षा के लिये। वह सोचती है कि हो सकता है किसी दिन उसका लाडला भाई लखपति बन जाये, और दुनिया में उसकी शोहरत फैले। और मा ! मा के लिये रोद्या, उसका बेटा ही सब कुछ है। ऐसे बेटे के लिये वह अपनी बेटी की कुर्बानी क्यो न दे ! आह, ये लोग प्रेम मे कितने अधे हो जाते हैं। दूनिया का बस चले तो वह भी सोनिया बन सकती है, सोनिया मारमेलेदोव ! जब तक दुनियाँ रहेगी तब तक न जाने कितनी सोनियाँ पैदा होती रहेगी। पर मै पूछता हूँ, दूनिया, क्या तुम यह सब सह सकोगी ?

१. जेस्विट दर्शन—रोमन

इस कुर्बानी से क्या फायदा होगा ? सच पूछो तो इस तरह की शादी में और सोनिया की जिन्दगी मे कोई विशेष अन्तर नही। क्या तुमने कभी अपनी कुर्बानी की पैमायश की है ? माँ लिखती है कि तुम मि० लूजिन से प्रेम नही करती। इसलिए आदर का भी सवाल नही उठता, बल्कि वहाँ तो घृणा, अपमान और क्षुद्रता ही मिलेगी। क्या यही सब पाने के लिए तुम अपनी सहनशीलता का परिचय दोगी ? जानती हो कि इसका क्या मतलब है ? तुम क्या कभी समझ सकोगी कि तुममे और सोनिया में कोई अन्तर नही रहेगा। बल्कि सोनिया की कुर्बानी तुमसे ऊँचे दर्जे की कुर्बानी है, क्योकि उसका उद्देश्य है, परिवार को भूखो मरने से बचाना, और तुम्हारा उद्देश्य है भोग-विलास के साधन पा लेना। लेकिन याद रखो दूनिया, तुम्हे इसकी पूरी कीमत चुकानी होगी। मान लो तुमसे यह अपमान बर्दाश्त न हुआ, तब क्या करोगी ? तुम मार्फा पैत्रोव्ना नही हो, इसलिए तुम समाज के सामने रोकर हमदर्दी नही पा सकोगी। उस समय तुम्हारी माँ पर क्या बीतेगी ? अब भी वह तुम्हारे भविष्य के बारे मे आशकित है। लेकिन जब उस के सामने सारी स्थिति प्रत्यक्ष हो जायगी, तब वह क्या सोचेगी ? और मै ? मुझे तुमने क्या समझ रखा है ? दूनिया, मुझे तुम्हारी यह कुर्बानी मजूर नही है। और माँ, तुम भी सुन लो—जब तक मैं जिन्दा हूँ, यह सब नही होने दूँगा।"

सहसा वह सोचते-सोचते ठिठक गया।

"नही होने दूँगा ? लेकिन मुझे क्या अधिकार है ? मै उन्हे क्या सान्त्वना दे सकता हूँ—यही न कि पढाई खत्म करने के बाद नौकरी करूँगा और उनकी सेवा मे अपनी जिन्दगी लगा दूँगा ? लेकिन यह सब रटे-रटाये खोखले शब्द है। अगर कुछ करना है तो अभी करना होगा। मगर मै क्या कर सकता हूँ ? मै तो खुद उनका मोहताज हूँ ? वे स्वीद्रीगाईलोव से कर्ज लेकर मुझे पढा रही है। मै उन्हे क्या

दे सकता हूँ ? वे दोनो सुखी जीवन के सपने देख रही है। दस साल, बाद ? तब तक तो माँ शाल बुनते-बुनते और रोते-रोते अधी हो जायगी और दूनिया ये दस साल कैसे काटेगी ?"

ये प्रश्न रह-रहकर उसे पीडित कर रहे थे। लेकिन ये कोई नये प्रश्न नही थे। इस पीडा का परिचय उसे बहुत पहले से ही मिल चुका था। लेकिन आज इन यत्रणाओ ने एक भयकर प्रश्न का रूप धारण कर लिया, जिसका जवाब उसे फौरन ही देना था। माँ के पत्र ने उस के मन मे प्रलय मचा दी थी। उसके आगे यह स्पष्ट हो गया था कि उन पुराने अनसुलझे प्रश्नो से माथा-पच्ची करना व्यर्थ है। उसे तत्काल कुछ करना चाहिए, नही तो

"नही तो जीवन मे अपमान और घुटन के सिवा क्या रहेगा ? जीवन और प्रेम की मृत्यु हो जायगी।"

सहसा मारमेलेदोव का यह वाक्य उसके कानो मे गूँजने लगा—'जानते है जनाब, जब आदमी का कोई सहारा न हो तो आदमी कितना लाचार हो जाता है ? कोई न कोई आदमी तो ऐसा होना ही चाहिए, जिसका मुसीबत मे इन्सान सहारा ले सके ।'

सहसा वह चौक उठा। उसके मन मे एक दूसरा विचार चक्कर काटने लगा। यह कोई नया विचार नही था। पिछले एक महीने से वह इसी विषय में सोच रहा था। लेकिन तब यह एक आकाक्षा मात्र था, हृदय के एक कोने में सहमी, सिमटी एक आकाक्षा। पर आज इस आकाक्षा ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया उसके सर को जैसे कोई हथौडे से पीटने लगा था। उसकी आँखो के आगे अधेरा छा गया।

उसने घबराकर चारो ओर देखा। वह किसी बैठने की जगह की तलाश मे था। सौ कदम की दूरी पर बैठने की जगह थी। वह तेजी से आगे बढा, लेकिन रास्ते मे एक घटना ने उसका ध्यान अपनी ओर खीच लिया। उसने देखा कि उससे बीस कदम आगे एक औरत जा रही

है। पहले तो उसने उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया, क्योंकि वह भुलक्कड प्रकृति का था। लेकिन उस औरत मे एक ऐसी विचित्र चीज थी, जिसने धीरे-धीरे उसका ध्यान अपनी ओर बरबस खीच लिया। वह यह जानने के लिये उत्सुक हो उठा कि आखिर वह 'विचित्र' चीज क्या है। देखने में वह कमउम्र लडकी मालूम होती थी। वह बिना छाते और दस्तानो के हाथ लटकाती हुई चल रही थी। उसके बदन पर हल्के रेशम की पोशाक थी, जिसके बटन ठीक से बन्द नही किये गये थे। स्कर्ट कमर के पास से फट गई थी, गले में रुमाल बँधा हुआ था। वह लडखडाती चाल से जाकर बेंच पर बैठ गई। थकान से उसकी आँखे मुँदी जा रही थी। रास्कोलनिकोव ने पास जाकर देखा कि वह लडकी शराब के नशे में बेसुध हो रही थी। कैसा बीभत्स दृश्य था? रास्कोलनिकोव को पहले अपनी आँखो पर विश्वास न हुआ। उसके सामने सुनहरी बालो वाली एक लडकी, जिसकी उम्र मुश्किल से पन्द्रह-सोलह वर्ष की होगी, अपना सूजा चेहरा लेकर बैठी थी। उसकी फूहड हरकतो से साफ जाहिर था कि उसे अपने इर्द-गिर्द का कोई ख्याल नही है।

रास्कोलनिकोव ने बैठने की बजाय लडकी के सामने खडा रहना ही उचित समझा। दोपहर के दो बजे थे और बेहद गर्मी पड रही थी, इसलिए पार्क मे भीड-भाड नही थी। रास्कोलनिकोव से पन्द्रह कदम की दूरी पर सडक की पटरी के पास एक भद्र व्यक्ति खडा था। शायद वह भी उस लडकी का पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा था और रास्कोलनिकोव को देखकर ठिठक गया था। वह अधीरता से इस फटे-हाल युवक के चले जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। रास्कोलनिकोव उसकी इस इच्छा को भाँप गया था। उस व्यक्ति की उम्र तीस के करीब होगी। उसका शरीर गठीला था और उसके होठो पर लाली थी। उसके छैलापन को देखकर रास्कोलनिकोव के तन-मन मे आग

लग गई। उसके मन में आया कि एक क्षण मे वह उसकी सारी हेकडी निकाल दे। उसने आगे बढकर कहा, "क्या मै पूछ सकता हूँ कि आप यहाँ क्या कर रहे है ?" उसकी मुट्ठियाँ गुस्से से तन गयी थी।

"तुमसे मतलब ?"

"मै कहता हूँ, फौरन यहाँ से चले जाओ !"

"तुम जैसे कमीने की इतनी हिम्मत ?" कहकर उसने अपना बेत उठाया। रास्कोलनिकोव ने अपने प्रतिद्वन्द्वी के मज़बूत गठीले शरीर का ध्यान किये वगैर ही उससे मुक्केबाजी शुरू कर दी। लेकिन इसी समय पीछे से किसी ने आकर उसके दोनो हाथ पकड लिए। वह आदमी एक पुलिस कान्स्टेबल था।

"महाशय, यह सार्वजनिक पार्क है। भद्रपुरुषो का इस तरह लडना शोभा नही देता। आखिर माजरा क्या है ?" सहसा कान्स्टेबल की दृष्टि रास्कोलनिकोव के फटे कपडो पर पडी। उसने पूछा, 'क्यो जी, तुम कौन हो ?"

रास्कोलनिकोव ने कान्स्टेबल के सफेद दाढी-मूछो वाले चेहरे को गौर से देखते हुए उत्तर दिया, "अच्छा हुआ, आप आ गये। मै भी किसी पुलिस मैन को ही बुलाना चाहता था। मै विद्यार्थी हूँ, रास्कोलनिकोव। इधर आइये, मै आपको एक चीज दिखाऊँ।" पुलिस कान्स्टेबल की बाँह पकडकर वह उसे सामने वाली बेंच पर ले गया। "देखिये, यह लडकी नशे मे धुत है। यह कैसी लडकी है, यह बताने की ज़रूरत नही। लेकिन यह पेशावर वेश्या नही मालूम देती। मेरा ख्याल है, किसी ने इसको शराब पिलाकर धोखा दिया है पहली बार आप समझ गये न ? ज़रा इसकी तार-तार पोशाक की ओर देखिए। साफ जाहिर है कि इसने अपने हाथो से कपडे नही पहने, किसी फूहड आदमी ने इसे कपडे पहनाये है। अब जरा उधर देखिये। मैं इस शोहदे को नही जानता, लेकिन वह इस लडकी को इस हालत में यहाँ बैठा

देखकर किसी नेक इरादे से यहाँ नही आया। वह इसे अपने चंगुल मे फाँसना चाहता है। यकीन कीजिए, मैने अपनी आँखो से उसे इस लडकी का पीछा करते हुए देखा हैं। वह मेरे यहाँ से जाने के इन्तजार मे खडा था। आपको देखकर वह जरा दूर चला गया है और सिगरेट पीने का बहाना कर रहा है• अब बताइये इस लडकी की रक्षा किस तरह की जाय और कैसे इसको अपने घर पहुँचाया जाय ?"

पुलिस कान्स्टेबल पलक झपकते ही सब कुछ समझ गया। वह समझदार और अनुभवी व्यक्ति था। उसने गौर से लडकी के चेहरे का निरीक्षण किया और वह करुणा से द्रवित स्वर मे बोला—

"अरे, यह तो निरी बच्ची है। ज़रूर बेचारी को किसी ने धोखा दिया है।" और उसने लडकी से पूछा, "बेटी, तुम्हारा घर कहाँ है ?" लडकी ने थकान भरी शून्य आँखो से पुलिस मैन की ओर ताका और चुप रही।

रास्कोलनिकोव ने अपनी जेब टटोल कर बीस कोपेक निकाले और पुलिस मैन से कहा, "एक घोडागाडी मगवाकर, इसे इसके घर भिजवा दीजिए। लेकिन इसका पता तो मालूम कर लें।"

— पुलिस मैन ने फिर पूछा, "बेटी, मै तुम्हे घर पहुँचा आऊँगा, बोलो तुम्हारा घर किधर है ?"

"जाओ मेरा सर मत खाओ," लडकी बडबडायी।

"छि छि ! बेटी जरा सोचो, यह कितने शरम की बात है ? तुम्हे कोई इस हालत मे देखेगा तो क्या कहेगा ?" पुलिस मैन के स्वर मे सहानुभूति के साथ क्षोभ भी था।

"इसे समझाना टेढी खीर है," पुलिस मैन ने रास्कोलनिकोव को सर से पाँव तक दुबारा देखते हुए कहा। उसे इस फटे हाल युवक की उदारता का रहस्य समझ मे नही आ रहा था।

"तुम्हे यह लडकी कहाँ मिली ?"

"बता तो चुका हूँ कि यह अभी-अभी चौराहे पर से आकर यहाँ बैठी है।"

"आह! दुनियाँ मे कितनी बेहयाई फैल गई है। अब ईश्वर ही मालिक है। जरा सोचो तो, लोग एक अबोध बच्ची को शराब पिला कर इस तरह धोखा देते है। बिचारी के कपडे किस तरह फट गए है

हे ईश्वर, दुनियाँ मे इतना पाप? देखने मे किसी शरीफ लेकिन गरीब घर की मालूम होती है' आजकल ऐसे परिवारो की सख्या बढ गई है।" उसने एक बार फिर झुककर लडकी के चेहरे का निरीक्षण किया।

शायद उसके अपने घर मे ऐसी ही जवान बहू-बेटियाँ होगी। "देखने मे भले घर की "

रास्कोलनिकोव ने फिर कहा, "जैसे भी हो, इस बेचारी को इस बदमाश के पजे से बचाना होगा। वह अभी तक अपनी जगह से हिला नही, जगली जानवर!" रास्कोलनिकोव ने उँगली उठाकर उस फैशनेबल युवक की ओर इशारा किया। युवक का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। लेकिन वह दस कदम दूर जाकर फिर खडा हो गया।

कान्स्टेबल ने सजीदा स्वर मे कहा, "लडकी को बचाना इतना मुश्किल नही, लेकिन यह अपने घर का पता बताये तभी न ' बेटी सुनो तो।"

लडकी ने आँखे खोली। वह बेच से उठ खडी हुई और चौराहे की ओर चल पडी। "बेशर्म, कम्बख्त! नाहक मुझे परेशान करते है।" लडकी के कदम अब भी लडखडा रहे थे। फैशनेबल युवक अब भी दूसरे रास्ते से उसके पीछे-पीछे जा रहा था।

"घबराओ नही, मै लडकी को उस बदमाश के चगुल में नही जाने दूँगा," कहकर कान्स्टेबल भी लडकी के पीछे जाने लगा। बूढे ने फिर दोहराया, "दुनियाँ मे पाप कितना बढ गया है?"

इसी समय रास्कोलनिकोव के मन मे न जाने कौनसा फितूर उठा कि उसने कान्स्टेबल को पीछे से आवाज़ दी।

"सुनो तो !"

कान्स्टेबल ने पीछे मुडकर देखा।

"उन दोनो को जाने दो। हमे उनसे क्या लेना-देना है ? उस शोहदे को मजा लूटने दो।"

कान्स्टेबल आँखे फाडकर रास्कोलनिकोव की ओर देखने लगा और फिर तिरस्कारपूर्ण ढग से "अच्छा !" कहकर उस लडकी के पीछे चला गया। शायद उसे विश्वास हो गया था कि रास्कोलनिकोव पागल है।

रास्कोलनिकोव अकेला बडबडा रहा था, "बूढे ने मुझसे बीस कोपेक ले लिए, शायद वह उस लफगे से भी बीस कोपेक लेकर लडकी को उसके साथ जाने की इजाज़त दे देगा। भला मुझे इस मामले मे दखल देने की क्या ज़रूरत थी ? किसी की मदद करने वाला मैं कौन होता हूँ ? वह एक-दूसरे को फाडकर खा जाये, मेरी बला से। मैंने बूढे को बीस कोपेक क्यो दिये ? क्या वह मेरे थे ?"

उसका मन ग्लानि से भर गया और वह बेच पर बैठकर अजब-अजब बाते सोचने लगा ... । वह अपने आपको भूल जाना चाहता था, और सब कुछ भूलकर नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करना चाहता था।

"बेचारी लडकी, जब उसका नशा उतरेगा तो वह कितना रोयेगी ? उसकी माँ को जब पता चलेगा तो वह मार-मारकर उसकी खाल उधेड देगी, और शायद घर से बाहर निकाल देगी ... । अगर न भी निकाले तो दारया फ़ात्सोव्ना जैसी कोई कुटनी यह खबर पाकर उसके पास पहुँचेगी और वह लडकी लुक-छिपकर बाहर जाया करेगी। उसके बाद अस्पताल जाने की बारी आयेगी (शरीफ घरो की लडकियो

की यही तो मुसीबत है।) दुबारा फिर अस्पताल शराब और शराबखानो के चक्कर फिर अस्पताल दो या तीन साल मे ही उसकी जिन्दगी धूल मे मिल जायेगी, अठारह-उन्नीस साल की उम्र तक पहुँचने से पहले ही न जाने कितने लोगो का मैने ऐसा अन्त होते देखा है। उँह, लेकिन इससे क्या ? लोगो का कहना है कि यह सब स्वाभाविक है, ऐसा होना ही चाहिए। हर साल कुछ फीसदी औरते इसी तरह बरबाद होती रहे, तभी तो बाकी औरतो की पवित्रता बनी रह सकती है। कुछ फीसदी ! कितना शानदार शब्द है। देखता हूँ, लोगो का दृष्टिकोण आजकल बहुत वैज्ञानिक हो गया है। एक बार 'फीसदी' शब्द कह देने के बाद फिर किसी बात की चिन्ता नही रहती। इसी को अगर हम दूसरे शब्दो मे कहते तो शायद हमे घबराहट होती अगर दूनिया भी इन्ही 'कुछ फीसदी' औरतो मे आ जाय तो क्या होगा ? आखिर वह न होगी तो कोई और होगी।"

अचानक उसे ध्यान आया, "अरे मै कहाँ जा रहा हूँ ? खत पढने के बाद मैं किसी विशेष काम से बाहर निकला था मै वैसीलेव्स्की ओस्त्रोव की ओर जा रहा था। हाँ, मुझे ठीक याद आया। लेकिन किस लिए ? राजुमिहीन के घर जाने का ख्याल मुझे क्यो आया, ताज्जुब है।"

राजुमिहीन यूनीवर्सिटी मे उसका सहपाठी था। रास्कोलनिकोव मिलनसार व्यक्ति नही था, जिसके परिणाम-स्वरूप उसके सहपाठियो ने उसमे दिलचस्पी लेनी छोड दी थी। उसने विद्यार्थियो के किसी समारोह, मनोरजन या वार्तालाप मे कभी हिस्सा नही लिया था। परिश्रमी होने के कारण सब उसका आदर करते थे, लेकिन उससे किसी को स्नेह न था। वह बहुत गरीब था और उसमे एक अनोखी उद्दण्डता और स्वाभिमान था। उसके सहपाठियो का ख्याल था कि वह उन्हे मूर्ख और क्षुद्र समझता है, और अपने आपको अत्यन्त प्रतिभाशाली और सिद्धान्त का पक्का मानता है।

राजुमिहीन के साथ न जाने उसकी कैसे पट गयी। बात यह थी कि राजुमिहीन बडा हँसोड और बातूनी युवक था, और उसकी विनोद-प्रियता के पीछे उसका स्वाभिमान और गहराई छिपी हुई थी। उसके सभी दोस्त उसे बहुत चाहते थे। वह प्रखर बुद्धि का व्यक्ति था, लेकिन अक्सर वह बुद्धुओ जैसी बेसिर-पैर की बाते भी कर बैठता था। उसका हुलिया भी बडा विचित्र था। लम्बा कद, काले स्याह बाल और बिना हजामत की हुई दाढी। कई बार तो वह इतना ऊधम मचाता कि लोग तग आ जाते। उसके शरीर मे अद्भुत बल था। एक रात जब वह दोस्तो के साथ उत्सव मना रहा था, उसने एक ही मुक्के मे एक दैत्याकार पुलिस मैन को धराशायी कर दिया था। शराब पीने मे उसका मुकाबला कोई नही कर सकता था, लेकिन वह शराब छुए बिना भी सारी जिन्दगी गुजार सकता था। कई बार उसका ऊधम सीमा का अतिक्रमण कर जाता, लेकिन चाहता तो वह शान्तिपूर्वक भी रह सकता था। राजुमिहीन मे एक शानदार बात यह थी कि वह किसी भी असफलता से निराश नहीं होता था। प्रतिकूल परिस्थितियाँ उसकी आत्मा को कुचल नही सकती थी। वह किसी भी हालत मे रहकर भूख और ठड का मुकाबला कर सकता था। वह गरीब था, और छोटे-मोटे काम करके अपना गुज़ारा चलाता था। पैसा कमाने के अनगिनत ढग उसे आते थे। एक साल उसने सर्दियो के मौसम मे एक बार भी बुखारी नही जलायी, क्योकि उसका कहना था कि ठडे कमरे मे बहुत गहरी नीद आती है। रास्कोलनिकोव की तरह उसे भी आर्थिक मजबूरियो के कारण पढाई छोड देनी पडी थी, लेकिन वह बडी मेहनत से काम करके पैसे जमा कर रहा था, ताकि अपनी पढाई फिर से जारी कर सके। पिछले चार महीनो से दोनो दोस्तो की मुलाकात नही हुई थी, न ही उसे रास्कोलनिकोव का पता मालूम था। दो महीने पहले एक दिन अचानक सडक पर दोनो का सामना हो गया, लेकिन

रास्कोलनिकोव आँख चुराकर कतरा गया था। राजुमिहीन ने उसे देख लिया, लेकिन वह चुप रहा।

५

रास्कोलनिकोव सोच रहा था, "पिछले कई दिनो से मै राजुमिहीन के यहाँ जाने की सोच रहा था, ताकि उसकी मदद से एकाध ट्यूशन पा जाऊँ ·····लेकिन वह अब मेरी क्या मदद कर सकेगा ? मानलो उसने मुझे ट्यूशन ले भी दी और मुझे नये जूते खरीद भी दिये, ताकि मै भलामानस दीखने लगूँ, तो उससे क्या होगा ·····ऊँह, मुझे अब ताँबे के सिक्के नही चाहिए । राजुमिहीन के यहा जाना बडी बेवकूफी होगी···"

वह राजुमिहीन के यहाँ क्यो जा रहा है, इस सवाल ने उसे असाधारण रूप से उत्तेजित कर दिया । वह किसी रहस्यमय कारण की तलाश मे था ।

वह बडी देर तक अपना सर खुजलाता रहा, सहसा उसके दिमाग मे एक विलक्षण बात आई—

"हूँ—मै राजुमिहीन के यहा जरूर जाऊँगा, लेकिन अभी नही । जब मेरी जिन्दगी नये सिरे से शुरू होगी, तब ··"

सहसा उसे अपने विचार की निरर्थकता का आभास हुआ ।

"तब ! लेकिन क्या यह सब होने जा रहा है ? क्या यह सभव

है ?" वह बेंच से उठकर तेज़ी से घर की ओर चल पडा, लेकिन घर जाने की कल्पना से ही उसका मन ग्लानि से भर उठा। वह घर था या डिबिया! पिछले एक महीने से यह विचार उसके मन मे जड पकड गया था। वह अँधाधुँध चलने लगा।

उसकी स्नायुविक उत्तेजना ने बुख़ार का रूप धारण कर लिया था, लेकिन अब भी उसका शरीर ठड से काँप रहा था। उसने ध्यान बँटाने के लिये अपने सामने की हर चीज को गौर से देखने की कोशिश की, लेकिन वह फिर गहरी सोच मे डूब गया। इसी मानसिक उलझन मे वह वैसीलेव्स्की आस्त्रोव मे से गुजर कर छोटी नीवा नदी के पुल पर आ गया। पुल पार की हरियाली को देखकर उसकी थकी आँखो को ठडक मिली और मन का बोझ कुछ हल्का हुआ। नदी पार के इस इलाके मे न कोई शराबख़ाना था, न तग बदबूदार गलियाँ थी, न बडी-बडी इमारते ही। लेकिन कुछ देर बाद ही यह नयी अनुभूति भी चिडचिडेपन मे बदल गयी। एक बार उसने फूलो और लताओ से घिरे एक बँगले के आगे खडा होकर बरामदों और बारजो मे बैठी फैशनेबल औरतो और बाग में खेलते हुए बच्चो को देखा। वह बडी देर तक फूलो को देखता रहा। उसने शानदार फिटन-गाडियो और घोडे की सवारी करते हुए आदमियो और औरतो को भी देखा, लेकिन वे उसकी कल्पना में अधिक देर तक न टिक सकी। उसने एक बार जेब मे से निकाल कर तीस कोपेक गिने। "बीस कान्स्टेबल को दिये, तीन नौकरानी को। इसका मतलब यह कि कल मारमेलेदोव के घर मे पचास कोपेक छोड आया था," उसने सोचा, और जल्दी ही वह इस हिसाब को भी भूल गया। एक रेस्त्रा के सामने से गुजरते हुए उसे ध्यान आया कि वह भूखा है। भीतर जाकर उसने वोद्का के एक गिलास के साथ एकाध टिकिया खायी। वोद्का ने फौरन उस पर असर किया, यद्यपि उसने एक ही गिलास पी थी। उसकी टागो मे भारीपन आ गया और उसे

नींद आने लगी। वह घर जाना चाहता था, लेकिन पैत्रोव्स्की आस्त्रोव तक पहुँचते-पहुँचते वह थकान से चूर हो गया और घास पर लेटकर सो गया।

ऐसी अस्वस्थ मानसिक दशा मे व्यक्ति जो सपने देखता है, वे यथार्थ मालूम होते है। कई बार बडे खौफनाक दृश्य दिखाई देते है, लेकिन उनमे पूर्ण कलात्मक सामजस्य होता है, और इतना सूक्ष्म सौन्दर्य होता है, कि पुश्किन और तुर्गनेव जैसा कलाकार होने पर भी कोई व्यक्ति जागृत अवस्था मे उस सौन्दर्य की कल्पना नही कर सकता। ऐसे रुग्ण सपनो की स्मृति देर तक बनी रहती है, और थके हुए स्नायुओ पर और अधिक दबाव डालती है।

रास्कोलनिकोव ने एक भयकर सपना देखा। उसने देखा कि वह फिर सात बरस का बालक बन गया है और अपने पिता के साथ छुट्टी मनाने गाँव मे गया है। दिन बडा उदास था, और गाँव का दृश्य उसकी स्मृति मे फिर से ताजा हो गया था। गाँव का समतल सपाट मैदान जिसमे एक झाडी तक न थी, केवल क्षितिज के नजदीक एक काली रेखा दिखाई देती थी। बाजार से थोडी दूर एक शराबखाना था, जिस के सामने से गुज़रते वक्त रास्कोलनिकोव का मन भयभीत और आत-कित हो उठता था। शराबखाने के बाहर लोगो की भीड लगी रहती थी, और हर वक्त फूहड हँसी और अश्लील गाने गूँजते रहते थे। कई बार मारपीट भी हो जाती थी। शराबियो को देखते ही वह अपने पिता की टाँगो से लिपट जाता था। शराबखाने की धूल भरी सडक बायी ओर मुडकर कब्रिस्तान की ओर जाती थी। कब्रिस्तान के बीचो-बीच पत्थर का बना एक गिर्जा था, जहाँ रास्कोलनिकोव अपनी स्वर्गीय दादी की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने साल मे दो या तीन बार जाया करता था। ऐसे मौको पर उसके माँ-बाप घर से एक तश्तरी में चावल का बना हलुआ एक रुमाल मे बाँधकर लाते थे, जिसमे किश-

मिश के दानो से सलीव की शक्ल बनी होती थी। उसे उस प्राचीन गिर्जे, बिना सजावट की मूर्तियो और बूढे पादरी से बहुत प्रेम था, जिस का सर काँपता रहता था। उसकी दादी की कब्र के पास ही उसके छोटे भाई की नन्ही कब्र थी, जो छ महीने का होकर मर गया था। रास्कोलनिकोव को अपने छोटे भाई की याद नही थी, लेकिन वह कब्रि-स्तान मे आकर अत्यन्त श्रद्धापूर्वक अपने शरीर पर सलीब का निशान बनाता और अपने भाई की कब्र को चूमता। सपने मे उसने देखा कि वह अपने पिता की उँगली पकडे शराबखाने के आगे से गुजर रहा है। सहसा उसका ध्यान शराबखाने के सामने एकत्रित लोगो की भीड की ओर गया, जिसमे किसान औरते, मर्द और गाँव के शोहदे भी थे, और जो नशे में धुत होकर बेहूदे ढग से गा रहे थे। शराबखाने के फाटक के आगे एक बडी-सी गाडी खडी थी। ऐसी गाडियो मे अक्सर शराब के पीपे लदे रहते थे। रास्कोलनिकोव को घोडो की गर्दन के बाल और पतली टाँगे देखने मे बडा मजा आता था। लगता था कि घोडो को भार ढोने मे जरा भी तकलीफ नही होती। लेकिन इस गाडी मे एक मरियल-सी घोडी जुती थी, उसने बचपन मे ईधन से लदी कई गाडियाँ देखी थी, जिनके पहिए जब कीचड मे धँस जाते थे तो उनके गाडीवान नीचे उतरकर घोडो को बडी बेदर्दी से पीटते थे। ऐसे दृश्य देखकर नन्हे रास्कोलनिकोव की आँखो में आँसू भर आते थे और उसकी माँ उसे खिडकी से उठा ले जाती थी। सहसा उसे शोरगुल सुनायी दिया और नशे मे धुत हट्टे-कट्टे किसानो का एक दल शराबखाने से बाहर निकला। वे रगबिरगी कमीजे पहने हुए थे और उन्होने लापरवाही से कोट अपने कन्धो पर डाल रखे थे।

"सब लोग गाडी मे बैठ जाओ। मै सबको ले चलूँगा" मोटी गर्दन वाले एक युवक ने कहा। उसका चेहरा गाजर की तरह लाल था।

इस पर भीड ने एक कहकहा लगाया।

"इसी मरियल घोडी के बूते हम सब को ले जाओगे ?"

"अरे मिकोल्का, तुमने ऐसी अडियल घोडी गाडी मे क्यो जोती ? पागल हो गये हो क्या ?"

"दोस्तो, यह घोडी कम से कम बीस साल की तो जरूर होगी।"

मिकोल्का ने गाडी में खडे होकर घोडी की रास पकड ली और जोर से चिल्लाया, "घोडे को मार्वे ले गया है, और यह कम्बख्त मेरे पल्ले पड गयी है। जी मे आता है, इसका भुस बना दूँ। मैं कहता हूँ सब लोग बैठ जाओ। मैं इसे सरपट दौडाऊँगा। तुम देखना तो सही!" यह कहकर उसने चाबुक उठाली और घोडी को पीटने के लिये तैयार हो गया।

लोग फिर हँस पडे। "कुछ सुना ? सब जने आकर बैठ जाओ। यह सरपट भागेगी!"

"क्या कहने है इसकी सरपट चाल के! पिछले दस साल से यह एक बार भी जो सरपट दौडी हो।"

"देख लेना, कदम-कदम पर अडेगी!"

"दोस्तो, घबराओ नही, अपनी-अपनी चाबुक साथ लेते आओ। आओ भी।"

"अच्छी बात है, घोडी की शामत आयी दीखती है!"

छँ किसान एक साथ गाडी मे चढ गये। लेकिन गाडी मे अब भी जगह खाली थी, इसलिए उन्होने सुर्ख गालो वाली एक मोटी स्त्री को सहारा देकर ऊपर खीच लिया। वह लाल सूती पोशाक पहने थी, उस की नोकीली टोपी पर मोती टके थे और वह हँसती हुई अखरोट खा रही थी। सब लोग मारे हँसी के लोट-पोट हो रहे थे। उस मरियल घोडी को देखकर भला किसकी हँसी रुकती ? दो युवक मिकोल्का की सहायता के लिए चाबुक तैयार कर रहे थे। घोडी ने आगे बढने की कोशिश की लेकिन उसकी हिम्मत ने जवाब दे दिया। उस पर सडासड चाबुक

पडने लगे। गाडी मे बैठे लोगो ने एक ठहाका मारा। मिकोल्का ने गुस्से मे आकर घोडी की दुगुनी पिटाई की। शायद उसे अब भी भरोसा था कि घोडी सरपट दौड सकती है।

"दोस्तो, मुझे भी गाडी मे अपने साथ बिठा लो" भीड मे से एक तमाशबीन युवक ने मजाक किया।

"तुम भी आ जाओ। देखना यह कैसी सरपट भागती है, वरना मै मारते-मारते इसका दम निकाल दूँगा।"

नन्हा रास्कोलनिकोव जोर से चीख पडा, "पिता जी, देखो ये लोग क्या कर रहे है! बेचारी घोडी को बेरहमी से पीट रहे है।"

"आओ चले, ये लोग इस वक्त नशे मे है, उनकी ओर मत देखो," कहकर पिता ने बच्चे का हाथ पकडना चाहा, लेकिन वह हाथ छुडा कर घोडी की ओर भागा। बेचारी घोडी पीडा से छटपटा रही थी।

मिकोल्का कह रहा था, "आज इसकी मौत आ गई मालूम होती है। मै इसे मजा चखाऊँगा।"

"अरे शैतान, तुम ईसाई हो या कसाई!" भीड में से एक बूढे ने डाँटकर कहा।

"देखा! भला कोई मरियल जानवर इतना बोझा ढो सकता है!" दूसरे ने टिप्पणी की।

"क्यो गरीब जानवर की जान लेने पर तुले हो?" तीसरे ने कहा।

"चुप रहो! मै इसका मालिक हूँ, जो चाहूँगा, करूँगा। आओ, तुम भी आकर बैठ जाओ, मैं इसे आज सरपट दौडा कर रहूँगा।"

इस पर ज़ोर का कहकहा लगा। चाबुक की मार से उत्तेजित हो कर घोडी दुलत्ती फेंकने लगी। उस बूढी मरियल घोडी की जुर्रत देख-कर लोगो को हँसी आ गई।

भीड मे से दो छोकरे चाबुक लेकर घोडी को पीटने के लिए आगे बढे।

"कम्बख्त की आँखे फोड दो !" मिकोल्का चिल्लाया।

"आओ दोस्तो ! एक गाना हो जाये !" इस पर सबने मिलकर एक फूहड गाना गाया। लाल पोशाक वाली औरत अब भी अखरोट खा रही थी और हँस रही थी।

...घोडी की आँखो पर सडासड चाबुक पडते देख नन्हा रास्कोलनिकोव बिलख-बिलख कर रोने लगा। अनजाने मे एक चाबुक उसके माथे को भी छू गया, लेकिन वह चीखता हुआ उस बूढे के पास पहुँचा जो क्षोभ से सारे दृश्य को देख रहा था। एक औरत ने नन्हे रास्कोलनिकोव का हाथ पकडकर अपने पास खीचना चाहा, लेकिन वह फिर भागकर घोडी के पास चला गया। घोडी बुरी तरह हॉफ रही थी, फिर भी उस ने दुलत्ती मारना न छोडा।

मिकोल्का ने गुस्से मे दाँत पीसकर कहा, "मै तुम्हे दुलत्ती मारना सिखाऊँगा !" उसने चाबुक फेककर गाडी मे से एक लाठी उठा ली और घोडी पर पिल पडा।

"अरे, अरे, घोडी को मार डाला" चारो तरफ से आवाजें सुनाई दी।

"मै इसका मालिक हू," मिकोल्का ने गुस्से में जवाब दिया।

"रुक क्यो गये, उसकी हड्डियां तोड डालो !" भीड मे से कुछ आवाज़े आई।

मिकोल्का ने पूरे जोर से अभागी घोडी की पीठ पर लाठी चलाई। पहले तो वह अचेत-सी होकर गिरने लगी, लेकिन अगले ही क्षण उस ने गाडी खीचने की कोशिश की। लेकिन बेचारी पर छ चाबुक एक साथ बरस रहे थे। मिकोल्का ने फिर लाठी उठाई। उसे अफसोस था, कि वह एक ही बार मे घोडी का काम तमाम क्यो नही कर सका।

"बडी ढीठ घोडी है", किसी ने आवाज़ कसी।

"फिक्र न करो, अभी इसका खात्मा होने वाला है।" एक दर्शक ने दिलासा दिया।

रहा था। उसके माथे पर पसीने की बूँदे चमक रही थी। वह घबराकर उठ खड़ा हुआ।

"शुक्र है, यह केवल सपना था। लेकिन इसका मतलब क्या है ? क्या मै बीमार पडने वाला हूँ ? कैसा भयानक सपना था !"

वह बहुत थक गया था। उसकी आत्मा मे अधकार छा रहा था। वह घुटनो मे सिर छिपाकर सोचने लगा

"हे ईश्वर ! क्या यह सभव है कि मै एक कुल्हाडी से उस बुढिया की गर्दन काट सकता हूँ······उसके चिपचिपे गर्म खून पर कदम रख कर, क्या मै काँपते हुए हाथो से ताला खोलूंगा ? फिर खून मे लथपथ ······कुल्हाडी समेत कही जा छिपूँगा ? हे ईश्वर, क्या मै ऐसा कर सकता हूँ ?"

उसका शरीर पत्ते की तरह काँप रहा था।

"लेकिन मै यह बाते क्यो सोच रहा हूँ ? मै जानता हूँ कि मै हरगिज ऐसा काम नही कर सकता, फिर मैने अपने मन को इतनी यन्त्रणा क्यो दी ? कल, कल जब मै ··· परीक्षण करने वहाँ गया था, तो मैंने जान लिया था कि यह काम मेरे बस का नही है····· फिर मै किस सोच मे पड गया हूँ। हिचकिचाहट कैसी ? कल बुढिया के जीने से नीचे उतरते वक्त मैने स्वीकार किया था कि यह नीच और घृणित कार्य है······इसकी कल्पना से ही मेरा जी मिचला उठा था।

"नही, मै ऐसा हरगिज नही कर सकता। माना कि मेरे तर्क मे कोई गडबडी नही ····· वह गणित की तरह साफ है ··· हे ईश्वर ! मै क्या सोच रहा हूँ ? मै ऐसा हरगिज ····हरगिज नही कर सकूँगा। तो क्या मै अभी तक सोच रहा हूँ "

वह उठकर खडा हो गया और आखे फाडकर अपने चारो ओर देखने लगा। उसका चेहरा पीला पड गया था और सारा शरीर थकान से चूर था, लेकिन सहसा उसे लगा कि उसके दिल का बोझ हल्का हो

गया है, उसकी आत्मा मे अपूर्व शान्ति छा गई। वह बुदबुदाया, "हे ईश्वर मुझे सन्मार्ग दिखाओ। ...मै इस घृणित विचार का त्याग करता हूँ।"

पुल पार करके वह नदी के किनारे खडा हो गया। रक्तिम आकाश मे सूर्य अस्त हो रहा था। कमज़ोरी के बावजूद उसे थकान महसूस नही हो रही थी। उसे लगा कि जो फोडा उसके दिल मे पिछले एक महीने से पक रहा था, वह अचानक फूट गया है। अब उसकी आत्मा उस घृणित विचार से मुक्त हो गई थी।

बाद मे जब उसने सारी घटना पर गौर किया तो एक बात ने उसके मन पर बडा असर डाला, हालाकि वह कोई महत्वपूर्ण बात नही थी। वह कभी नही समझ सका कि जब वह इतना थका हुआ था, तो सीधा घर लौटने की बजाय, वह घास मडी के रास्ते से क्यो लौटा था, जब कि वहाँ जाने का कोई कारण नही था। यह सच है कि वह अँधाधुँध चाल से सडके नापता हुआ घर लौट रहा था, लेकिन घास मडी मे वह उस समय क्यो पहुँचा, जबकि अचानक बुढिया से उसकी मुलाकात होनी थी। क्या इसमे भाग्य का इशारा नही था? क्या यह सब उसी समय होना था?

नौ बजे के करीब जब वह घास मडी मे से गुजरा, तो सब दुकान-दार दुकाने बद करके घर जा रहे थे। सब ठेले वाले और भिखारी शराबखानो के इर्द-गिर्द जमा हो रहे थे। रास्कोलनिकोव को यह स्थान बहुत पसद था और वह बडी देर तक तग बदबूदार गलियो मे आवारा-गर्दी करता रहा। इस इलाके मे किसी का ध्यान उसके फटे चिथडेदार कपडो की ओर नहीं जाता था। गली के नुक्कड पर एक बिसाती फीतो, धागो और रुमालो से सजी एक मेज़ को दुकान के भीतर रख रहा था और उसकी पत्नी एक स्त्री से बाते कर रही थी। यह स्त्री लिजावेता इवानोव्ना थी, जिसे सब लोग केवल लिजावेता कहकर

पुकारते थे—वह सूदखोर बुढिया एल्योना इवानोव्ना की बहन थी, जिसके घर कल रास्कोलनिकोव परीक्षण के लिये घडी लेकर गया था। वह लिजावेता को थोडा-सा जानता था। वह पैंतीस बरस की लम्बी फूहड, डरपोक और मूर्ख औरत थी, जो सौ फीसदी अपनी बडी बहन की मुट्ठी मे थी। बडी बहन उससे नौकरानी की तरह काम लेती थी, और अक्सर उसे पीटती भी थी। इस समय लिजावेता उस बिसाती और उसकी पत्नी के साथ बडी आत्मीयता से बाते कर रही थी। उसे देखते ही रास्कोलनिकोव को आश्चर्य हुआ, हालाकि इसमे आश्चर्य की कोई बात नही थी।

बिसाती जोर से कह रहा था, 'लिजावेता इवानोव्ना, तुम खुद ही अपना मन पक्का क्यो नही करती ? कल सात बजे के करीब यहाँ आ जाना। वे लोग भी यही रहेगे।"

"कल ?" लिजावेता फिर असमजस मे डूब गई।

"मै कसम खाकर कहती हूँ, तुम एल्योना इवानोव्ना के सामने भीगी बिल्ली बन जाती हो। तुम कोई दूध पीती बच्ची तो हो नही, न ही वह तुम्हारी सगी बहन है। फिर वह तुम पर इतना रौब क्यो गाँठती है ?" बिसाती की पत्नी ने पूछा।

पति ने बीच मे टोककर कहा, "इस बार तुम एल्योना इवानोव्ना से पूछे बगैर ही चली आना। इसमे तुम्हारा ही फायदा है। तुम्हारी बहन को खुद-ब-खुद पता चल जायेगा।"

"तो मै आऊँ ?"

"हाँ, कल ठीक सात बजे। वे लोग भी यही रहेगे। तुम खुद ही फैसला कर लेना।"

"सबकी चाय भी यही होगी।" बिसाती की पत्नी ने कहा।

"अच्छा, मै कल आऊँगी।" लिजावेता ने उत्तर दिया और वह शिथिल कदमो से चलने लगी।

रास्कोलनिकोव सिर्फ इतना ही सुन सका था। सहसा उसके रोम-रोम मे एक विचित्र सिहरन दौड गई। उसे मालूम हुआ था कि कल सात बजे बुढिया की बहन घर से बाहर होगी, और बुढ़िया उस समय घर पर अकेली होगी।

वह घर के करीब पहुँच गया था। वह फाँसी की सजा पाये अपराधी की तरह घर मे दाखिल हुआ। इस समय उसका दिमाग बिल्कुल बेकार हो गया था, लेकिन उसे आभास हुआ कि अब उसकी इच्छाशक्ति और विचार स्वतन्त्र नही रहे। उसके भाग्य का फैसला हो चुका था।

निश्चय ही बरसो तक प्रतीक्षा करने के बाद भी इतना बढिया मौका उसके हाथ मे नही आ सकता था, जो अनमाँगे, अनायास ही उसके हाथो मे आ गया था। कल उसका शिकार अमुक समय घर में अकेला रहेगा, यह मालूम हो जाना क्या कम था? फिर यह जानने मे उसे कोई जोखिम भी तो नही उठाना पडा था।

६

बाद में रास्कोलनिकोव को मालूम हो गया कि बिसाती और उस की पत्नी ने लिजावेता को क्यो अपने यहाँ बुलाया था। बात बडी साधारण सी थी। एक गरीब परिवार अपने घर के सारे कपडे-लत्ते बेचना चाहता था। और किसी खरीददार की तलाश मे था। लिजावेता का यही कारोबार था, वह बहुत कम बोलने वाली और ईमानदार औरत थी, और जैसा हम पहले बता चुके है, दब्बू और डरपोक भी थी।

लेकिन पिछले कुछ दिनो से रास्कोलनिकोव बडा वहमी हो गया था। उसे लगा, हो न हो इस बात के पीछे कोई रहस्य छिपा है। पिछले जाडो मे पोकोरेव नाम के एक विद्यार्थी ने बातचीत के दौरान मे उसे एल्योना इवानोव्ना का पता बताया था और कहा था कि अगर कभी वह कोई चीज़ गिरवी रखना चाहे तो इस बुढिया के पास जा सकता है। बहुत दिनो तक तो रास्कोलनिकोव को गिरवी रखने की जरूरत ही नही हुई, क्योकि वह ट्यूशने करके किसी तरह अपना काम चला रहा था। डेढ महीने पहले उसे ज़रूरत पडी और वह अपने पिता की चाँदी की घडी और सोने की एक अगूठी लेकर, जो उसकी बहन ने पीटर्सबर्ग

आने से पहले उसे भेंट दी थी, बुढिया के पास गया तो बुढिया की सूरत देखते ही उसके मन में असीम ग्लानि पैदा हुई। बुढिया ने उसे दो रूबल दिये, जिन्हे लेकर वह एक शराबखाने में गया, और उसने चाय मँगवाई। वह किसी गहरी सोच मे डूब गया था, कोई विचित्र विचार उसके दिमाग को रह-रहकर परेशान कर रहा था, जैसे अडे के भीतर चूजा चक्कर काटता है।

उसके सामने की मेज़ पर एक विद्यार्थी और एक अफसर बैठे थे। दोनो अभी बिलियर्ड की एक बाजी खत्म करके आए थे और चाय पी रहे थे। सहसा रास्कोलनिकोव ने सुना कि वह विद्यार्थी अफ़सर को एल्योना ईवानोव्ना का पता बता रहा था। यह भी विचित्र बात थी। अभी वह उसके घर से लौटा था, और लौटते ही उसे बुढिया का नाम सुनाई दिया था। रास्कोलनिकोव के वहमी मन मे इस घटना की बडी रहस्यमय प्रतिक्रिया हुई। विद्यार्थी अपने दोस्त को एल्योना इवानोव्ना के बारे मे बताने लगा।

"बुढिया मालदार है। वह किसी भी समय पाँच हज़ार रूबल तक उधार दे सकती है। पूरी यहूदिन समझो। हमारे बहुत से सहपाठियों ने उसके यहाँ चीजे गिरवी रखी है। लेकिन वह है बडी घाघ।"

इसके बाद उसने बताया कि वह कितनी कठोर और शक्की मिजाज की औरत है। अगर कर्ज़ चुकाने मे एक दिन की भी देरी हो जाये तो चीज़े जब्त कर लेती है। चीजो की कीमत की सिर्फ एक चौथाई रकम ही उधार देती है और वसूल करती है पाँच फीसदी—इत्यादि। विद्यार्थी ने यह भी बताया कि बुढिया की एक बहन है जिसे वह हर वक्त डाँटती-डपटती रहती है, हालाँकि बहन का कद कम से कम छ फ़ीट लम्बा है।

"वह तुम्हारे काम की औरत है", विद्यार्थी ने मज़ाक किया।

इसके बाद लिजावेता की चर्चा शुरू हुई। विद्यार्थी ने मज़े ले-ले

कर उसकी बातें सुनाई। अफसर ने कहा कि वह भी लिजावेता को घर बुलाकर कपड़ो की मरम्मत करवायेगा। रास्कोल्निकोव ने ध्यान लगाकर सारी बात सुनी। उसे मालूम हो गया कि लिजावेता बुढ़िया की सौतेली बहन है, और उसकी उम्र पैंतीस बरस है। वह घर का सारा काम करती है। इसके अलावा लोगो के कपड़े सीती है और सफाई करती है। वह अपनी सारी कमाई बड़ी बहन के हवाले कर देती है। बहन की इजाजत के बग़ैर वह किसी का काम नही कर सकती। बुढ़िया ने हाल ही मे अपना वसीयतनामा लिखा है, जिसमे उसने लिजावेता के लिए एक कौड़ी भी नही छोड़ी। सारी नकदी वह न—प्रान्त के एक मठ को दे जायेगी, ताकि मठ मे उसकी आत्मा की शान्ति के लिए सदा प्रार्थनाये होती रहे। लिजावेता को मिलेंगी घर की बस टूटी-फूटी कुर्सियाँ। लिजावेता ने अभी तक शादी नही की और हद से ज्यादा फूहड़ है। उसके लम्बे बेडौल पैरो में फटे हुए जूते रहते है लेकिन वैसे वह साफ-सुथरी है। विद्यार्थी ने बताया कि लिजावेता हमेशा गर्भवती रहती है।

"तुमने कहा कि वह देखने में फूहड़ है?" अफसर ने पूछा।

"हाँ, वह साँवली है और देखने में फौजी सिपाही मालूम होती है। लेकिन वह बदसूरत बिल्कुल नहीं। उसकी आँखें बड़ी हँसमुख है। लोग उसकी आँखो पर मरते है। वह बड़ी सीधी और सहनशील औरत है, उसकी मुस्कान बहुत मीठी है।"

"मालूम होता है, तुम उस पर फिदा हो।" अफसर ने हँसकर कहा।

"नही, ऐसी बात नही। अगर मुझे मौका लगे तो मै उस बुढ़िया को कत्ल कर दूँ और उसकी सारी नकदी लेकर भाग जाऊँ। मेरी आत्मा मे इस पाप के लिये रत्ती भर भी खेद नहीं होगा।" दोनो जने हँस पड़े। रास्कोलनिकोव के शरीर में सिहरन-सी उठी।

विद्यार्थी ने अफसर से कहा, "मै तुमसे एक गम्भीर सवाल पूछना चाहता हूँ। पहले मै मजाक कर रहा था। लेकिन एक ओर एक मूर्ख, बेकार, दुष्ट और बीमार बुढिया है, जिसके दिमाग मे सिवा नीचता के और कोई विचार नही आता, और जो दुनियाँ में कुछ ही दिनो की मेहमान है। समझ मे आया ?"

"समझ गया" अफसर ने विद्यार्थी के उत्तेजित चेहरे को गौर से देखते हुए उत्तर दिया।

"तो सुनो ! दूसरी ओर हजारो मासूम जिन्दगियाँ पैसे के अभाव मे तबाह हो जाती है। बुढिया के पैसे से उन्हे सन्मार्ग पर लाया जा सकता है। न जाने कितने परिवारो को गरीबी, पाप और जेलो से बचाया जा सकता है। बुढिया को कत्ल करके उसके पैसे से मानवता की कितनी सेवा की जा सकती है। क्या इतने बडे पुण्य से एक छोटा-सा अपराध धुल नही सकेगा ? एक की जिन्दगी लेकर हम हजारो जिन्दगियो को तबाही से बचा सकते है। एक मौत के बदले में सौ जिन्दगिया—सीधा गणित का सवाल है। इसके अलावा ससार में उस मूर्ख, कर्कश बुढिया के अस्तित्व की क्या कीमत है ? उससे अधिक कीमती तो एक जूँ है—बुढिया लोगो को नुक्सान पहुँचा रही है—औरो की जिन्दगी दूभर कर रही है। अभी हाल ही की बात है कि उसने गुस्से मे आकर लिजावेता की उँगली काट खाई थी। उँगली कटवाने तक की नौबत पहुँच गई थी।

"निश्चय ही बुढिया को जीना नही चाहिये, लेकिन यह कुदरत के खेल है।"

"मेरे भाई, हमें कुदरत की गलतियों को सुधारना है, वरना दुनियाँ मे एक भी महान पुरुष पैदा न होता। लोग कर्त्तव्य और अन्तरात्मा की बातें बघारते है। ठीक है, लेकिन मै पूछता हूँ, इन शब्दो का क्या अर्थ है ? मै तुमसे एक और सवाल पूछना चाहता हूँ।"

"नही, मै तुमसे एक सवाल पूछूँगा।"

"पूछो ।"

"तुमने लम्बा-चौडा लेक्चर तो झाड दिया, लेकिन मैं पूछता हूँ, क्या तुम अपने हाथो से बुढिया को कत्ल कर सकते हो ?"

"नही · ·· मै तो न्याय की बात कर रहा था · इसमे मेरा व्यक्तिगत स्वार्थ कतई नही है।"

"जिस काम को तुम खुद नही कर सकते वह उचित कैसे हो सकता है। छोडो इस चर्चा को।"

रास्कोलनिकोव इस बातचीत को सुनकर अत्यन्त उत्तेजित हो उठा। ऐसी बहुत-सी बातें उसने पहले भी सुनी थी, लेकिन ऐसे मौके पर जब स्वय उसके दिमाग में भी ठीक यही बाते आ रही थी · यह चर्चा क्यो शुरू हुई ? इस विचार का बीज तो वह बुढिया के घर से अपने दिमाग मे लाया था। इस अद्‌भुत सयोग पर उसे बडा आश्चर्य हुआ। शराबखाने की वह मामूली बातचीत बाद में जाकर रास्कोलनिकोव के कार्य की प्रेरणा बनी, जैसे वह भाग्य का इशारा हो ·

घर लौटकर वह बडी देर तक कुछ सोचता रहा, अधेरा बढ चला था। उसके कमरे मे मोमबत्ती नही थी, न ही उसे रोशनी करने का ख्याल ही आया। वह इस बीच क्या सोचता रहा, यह उसे खुद भी मालूम नही था। उसे अपनी सिहरन का ख्याल आया और वह निश्चिन्त मन से सोफे पर लेट गया और उसे गहरी नीद आ गई।

उस रात वह बहुत देर तक सोया। उसने कोई सपना नही देखा। सुबह दस बजे जब नौकरानी नस्तास्या चाय लेकर उसके कमरे मे आई उस समय भी वह सो रहा था। इस बार नस्तास्या फिर अपनी चायदानी में बासी चाय की पत्तियो को उबाल कर ले आई थी।

"अरे इस आदमी को जब देखो नीद आई रहती है," वह गुस्से से चिल्लाई।

रास्कोलनिकोव ने बड़ी मुश्किल से आँखें खोली। दर्द के मारे उसका सर फट रहा था। उसने उठने की कोशिश की लेकिन फिर सोफे पर लेट गया।

"लो फिर नीद आ गई। तुम्हारी तबियत खराब है क्या ?"

वह चुप रहा।

"चाय पीयोगे ?"

"अभी नही" उसने दीवार की ओर करवट बदलकर आँखे बन्द कर ली।

"शायद बीमार है।" कहकर नस्तास्या चली गई। दो बजे शोरबा लेकर जब वह लौटी तो उसने देखा चाय ज्यो की त्यो पडी है और रास्कोलनिकोव अभी भी सोया पडा है। नस्तास्या जल-भुनकर खाक हो गई और उसने रास्कोलनिकोव को जोर से झकझोरा।

"उठो ! लाश की तरह क्यो पडे हो ?"

वह उठकर चुपचाप फर्श की ओर ताकने लगा।

"मै पूछती हूँ क्या तुम बीमार हो ? जाकर ताज़ी हवा में टहल आओ। खाना खाओगे ?"

"अभी नही—तुम जा सकती हो," क्षीण स्वर मे उत्तर मिला।

नस्तास्या सहानुभूतिपूर्वक उसकी ओर देखती रही, और वहाँ से चली गई।

रास्कोलनिकोव ने सामने रखी चाय और शोरबे को देखा, फिर उसने रोटी का एक टुकडा उठाया और चम्मच से शोरबा पीने लगा।

बडी मुश्किल से उसने तीन-चार चम्मच पीये। उसे कतई भूख नही थी। खाने से उसके सर का दर्द कुछ हल्का हो गया और वह फिर सोफे पर लेट गया। लेकिन इस वक्त उसे नीद नही आ रही थी।

वह तकिये मे सर छिपाकर पडा रहा । उसे विचित्र दिवास्वप्न दिखाई दे रहे थे, उसे लगा कि वह अफ्रीका या मिश्र के किसी नखलिस्तान मे पहुँच गया है । उसका कारवाँ आराम कर रहा है । ऊँट मजे से बैठे हुए है । उसके आस-पास खजूर के पेडो का झुण्ड है । उसके साथी खाना खा रहे है, लेकिन वह पास के एक चश्मे से पानी पीने चला गया है । पानी कितना ठडा और साफ था ! रेत धूप मे सोने की तरह चमक रही थी सहसा घडी की टनटन सुनाई दी । उसने चौककर खिडकी मे बाहर देखा और फौरन सोफा छोडकर उठ खडा हुआ । पजो के बल खडे होकर उसने दरवाजा खोला और कान लगाकर सुनने लगा । उसका दिल जोर से धडकने लगा । लेकिन जीने मे कोई आहट नही थी—सारा घर जैसे सो रहा था • वह सोच रहा था—वह इतनी देर बेखबर होकर क्यो सोया ? उसने अभी तक कोई तैयारी नही की • क्या पता शायद छ बजने वाले हो उसकी सुस्ती फौरन जल्दबाजी मे बदल गई । लेकिन उसे कोई लम्बी-चौडी तैयारी नही करनी थी । वह अपनी समस्त शक्ति से योजना के हर पहलू के बारे मे सोच रहा था । उसका दिल और ज़ोर से धडकने लगा । सबसे पहले उसे एक फदा बनाकर ओवरकोट के साथ सीना था---यह एक मिनट का काम था । उसने तकिए के भीतर हाथ डालकर एक मैली घिसी हुई कमीज निकाली और उसे फाडकर सोलह इच लम्बी और दो इच चौडी एक पट्टी बनाई । फिर इस पट्टी को दुहरा कर ओवरकोट की बाई आस्तीन के नीचे सी लिया । सीते समय उसके हाथ काँप रहे थे, लेकिन सुई-धागा पहले से ही मेज पर तैयार पडा था, इसलिए फदा तैयार करने में देरी नही लगी । यह फदा कुल्हाडी को बाधने के लिए तैयार किया गया था, क्योकि हाथ मे कुल्हाडी लेकर सडक पर चलना उसके लिए उचित नही था । अब वह कुल्हाडी को आसानी से अपने ओवरकोट मे छिपाकर ले जा सकता था । कोट क्या

था, पूरी बोरी थी, अगर वह जेब मे हाथ डालकर कुल्हाडी के हत्थे को पकडे रहता, तब भी किसी को शक नही हो सकता था। यह योजना उसने पन्द्रह दिन पहले ही सोच ली थी।

ऐसा करने के बाद उसने सोफे के नीचे हाथ डालकर लकडी का एक टुकडा निकाला जो चाँदी के सिगरेट केस के आकार का था। यह टुकडा उसे एक वर्कशाप के पिछवाडे मे पडा मिला था। उसने लोहे की एक पतरी उसके ऊपर धागे से कसकर बाँध दी थी। फिर उसने एक सफेद कागज मे एक पार्सल बनाया, ताकि जब बुढिया गाठ खोलने लगे उस समय उसे मौका मिल जाये। लोहे का टुकडा सिर्फ लकडी को वज़नदार बनाने के लिए रखा गया था। यह सब चीज़े उसने पहले से ही सोफ़े के नीचे जमा कर छोडी थी। इसी समय नीचे आँगन मे से किसी की आवाज सुनाई दी

"छ. तो कभी के बज चुके।"

"कभी के ? हे ईश्वर।"

रास्कोलनिकोव ने जल्दी से अपना हैट उठाया और बिल्ली की तरह दबे कदमों से नीचे उतरने लगा। अभी उसे रसोईघर मे से कुल्हाडी चुरानी थी। उसने बहुत पहले से ही फैसला कर लिया था कि वह उसी कुल्हाडी को इस्तेमाल करेगा। उसके पास एक फल काटने का चाकू था, लेकिन चाकू की धार इतनी तेज न थी। रास्कोल-निकोव के फैसले जितने दृढ होते जाते थे, उतनी ही उनके प्रति उसके मन मे ग्लानि बढती जाती थी। अपने तमाम फैसलो के बावजूद उसे अपनी योजना की सफलता मे विश्वास नही था।

निस्सदेह अगर उसकी योजना पूर्ण रूप से तैयार हो गई होती तो वह इसे घृणित समझ कर फौरन त्याग देता। लेकिन उसके मन मे अब भी कई सदेह बाकी थे। कुल्हाडी प्राप्त करने मे उसे कोई विशेष कठिनाई नही हुई, क्योकि नौकरानी नस्तास्या शाम के वक्त किसी

पड़ोसी के यहाँ या बाज़ार चली जाती थी, और रसोईघर का दरवाज़ा हमेशा खुला रहता था। मालकिन उसे इस बात पर बहुत डाँटती थी। रास्कोलनिकोव ने सोचा था कि वह चुपचाप जाकर कुल्हाडी उठा लेगा और एक घटे बाद (जब उसकी योजना पूरी हो जायेगी) उसे लाकर वही रख देगा। लेकिन मान लो अगर एक घटे बाद नस्तास्या रसोई-घर में मौजूद हुई, तब क्या होगा ? उसे रसोई के बाहर प्रतीक्षा करनी पडेगी। मानलो नस्तास्या ने देख लिया कि कुल्हाडी अपनी जगह से गायब है, तो सदेह का क्या एक कारण पैदा नही हो जायेगा ?

लेकिन वह इस समय इन छोटी-छोटी बातो को छोडकर असली बात के बारे में सोच रहा था। उसे विश्वास नही हो रहा था कि वह यह सब कर सकेगा। वह कल्पना मे भी नही सोच सकता था कि वह मन की दुविधाओ को त्याग कर वहाँ जा सकेगा······उसका हाल ही का प्रयोग (जब वह बुढिया के घर का निरीक्षण करने गया था) प्रयोग मात्र था। यह वैसे ही था, जैसे कोई कहे, 'चलो, सोचने की बजाय, वहाँ चलकर देखें।' वहाँ जाकर उसका साहस छिन्न-भिन्न हो गया था और वह अपने को कोसता हुआ वहाँ से लौटा था। लेकिन शायद इस बीच उसकी तर्क-शक्ति चाकू की धार की तरह तेज़ हो गई थी, और उसके मन मे योजना के विरुद्ध कोई एतराज़ बाकी नही बचा था। फिर भी इस समय उसमें आत्मविश्वास नही रहा था, और वह अपनी योजना के पक्ष में मन टटोल-टटोल कर तर्क तलाश कर रहा था, जैसे कोई दूसरा व्यक्ति उसे इस अपराध के लिए प्रेरित कर रहा हो।

शुरू-शुरू मे—बहुत दिन पहले उसके दिमाग मे एक सवाल उठा था, अपराधी अपराध के सुराग क्यो पीछे छोड जाते है ? वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि अपराध छिपाना असभव नही है, बशर्ते अपराधी का दिमाग ठीक रहे। जहाँ सबसे अधिक समझदारी और सावधानी बरतनी चाहिये, अपराधी वही लापरवाही दिखाते है, और

उनकी इच्छा-शक्ति कमजोर पड जाती है। उसे विश्वास था कि अपराध से कुछ क्षण पहले ही अपराधी का विवेक लुप्त हो जाता है, और हत्या के बाद भी यह विवेक-शून्यता बनी रहती है। वह इसको एक मानसिक रोग समझता था। वह अभी तक यह निश्चय नही कर पाया था कि अपराध का कारण वह रोग है या उस अपराध की वजह से ही वह रोग पैदा होता है।

लेकिन उसने सोचा कि उसके विवेक के लुप्त होने का प्रश्न ही नही उठता, क्योकि उसकी योजना 'अपराध' नही है। वह कैसे इस नतीजे पर पहुँचा, इसका वर्णन यहाँ बेकार होगा। यहाँ पर इतना ही बताना पर्याप्त होगा कि योजना के व्यावहारिक पहलू और दिक्कते उसके आगे गौण थे। उसके विचार मे जरूरत थी सिर्फ "इच्छा-शक्ति और तर्क को प्रबल बनाने की, बाकी चीजे तो खुद ही ठीक हो जाती है" लेकिन अनजाने मे ही उसने कई ऐसे फैसले कर डाले, जिनकी सफलता मे उसे पहले सदेह हुआ करता था।

घर से निकलने से पहले ही एक छोटी, अप्रत्याशित घटना ने उसका सतुलन बिगाड दिया। सीढियो से नीचे उतरकर उसने देखा कि रसोईघर का दरवाजा न सिर्फ खुला है, बल्कि नस्तास्या रसोईघर मे एक टोकरी मे से कपडे निकालकर रस्सी पर लटका रही है। उसने रास्कोलनिकोव को घूर-घूरकर देखा। रास्कोलनिकोव ने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया। अब उसे कुल्हाडी कैसे मिलेगी? उसके इरादे धूल मे मिल गये।

फाटक पार करते समय वह सोचने लगा, "भला मैने यह कैसे सोच लिया था कि नस्तास्या इस समय रसोई में नही होगी।"

उसने अपने को अपमानित अनुभव किया··पाशविक क्रोध से उसका हृदय जलने लगा।

वह फाटक से बाहर निकलकर ठिठक गया। सिर्फ दिखावे के लिए

सडक पर चहल-कदमी करना उसे अप्रिय मालूम हो रहा था। अपने कमरे में वापिस जाना तो उससे भी अधिक अरुचिकर था। वह चौकीदार की कोठरी के पास खडा होकर बडबडाने लगा, "आह! कितना बढिया मौका मेरे हाथ से निकल गया।" सहसा वह चौक पडा। चौकीदार की कोठरी मे बेच के नीचे उसने एक चमकदार चीज रखी देखी ··उसने चारो ओर देखा—कोई वहाँ न था। वह दबे कदमो से कोठरी मे घुसा और उसने चौकीदार को आवाज दी, "शायद वह दरवाजा खुला छोडकर भीतर गया है" वह बुदबुदाया, और उसने बेच के नीचे से कुल्हाडी उठा ली और पट्टी मे बाँधकर कोट मे छिपा ली। उसे किसी ने नही देखा था। वह जेब में दोनो हाथ डालकर बाहर निकल आया और गर्व-भरी मुस्कान के साथ सोचने लगा, "जब तर्क काम नही देता, तब शैतान मदद करता है।" इस बात से उसकी हिम्मत बढ गई।

वह सडक पर धीमी चाल से चलने लगा, ताकि किसी के मन में सदेह न पैदा हो। वह आने-जाने वालो की नजरो मे नही आना चाहता था। सहसा उसे ख्याल आया, "यह क्या हो गया? परसो मेरी जेब में पैसे थे, फिर मैने नयी टोपी क्यो नही खरीदी?" वह मन ही मन अपने को कोसने लगा।

उसने सामने की एक दुकान में लगी घडी मे देखा—सात बजकर दस मिनट हुए है। उसने जल्दी-जल्दी किसी दूसरे रास्ते से बुढिया के मकान मे दाखिल होने का निश्चय किया।

उसका ख्याल था कि ऐसे मौके पर वह भयभीत हो जायेगा, लेकिन इस वक्त उसके मन मे रत्ती भर भी डर नही था। इधर-उधर की छोटी-छोटी बातें उसके दिमाग मे आ रही थी। युसुपोव बाग के पास से गुजरते हुए वह फव्वारो और शानदार इमारतो के बारे मे सोच रहा था। उसे विश्वास था कि अगर ग्रीष्म उद्यान को बडा करके

मिहाईलोव्स्की महल से मिला दिया जाये तो नगरवासियो को बडा फायदा हो। फिर वह सोचने लगा कि बडे-बडे शहरो मे न जाने लोगो को हरे बागो और फव्वारो से दूर गदे, बदबूदार मुहल्लो मे रहना क्यो अच्छा लगता है ? सहसा उसे घास-मण्डी मे अपनी आवारागर्दी की याद आ गई और उसने कहा, "यह सब बकवास है। मुझे इस वक्त कुछ नही सोचना चाहिये।"

बिजली की तरह उसके दिमाग मे यह विचार कौध गया, "शायद फासी के तख्ते पर पहुँचने से पहले अपराधी भी हर छोटी-मोटी चीज़ के बारे मे इसी तरह सोचते होगे••" लेकिन उसने फौरन इस विचार को दिमाग से बाहर खदेड दिया। अब वह बुढिया के मकान के करीब आ गया था। इसी समय किसी घर मे घडी की टन-टन सुनाई दी। "क्या इतनी जल्दी साढे सात हो गये ? नही-नही, यह घडी आगे होगी !"

सयोगवश इमारत के फाटक मे इसी समय एक विचित्र भूसे से लदी एक गाडी घुसी, जिसके पीछे-पीछे वह भी सहन मे चला गया। उसे कुछ लोगो के लडने-झगडने की आवाजे सुनाई दी, लेकिन उसे कोई आदमी नज़र नही आया। सामने के कई कमरो की खिडकियाँ खुली थी, लेकिन रास्कोलनिकोव ने सर ऊपर उठाकर देखने का साहस नही किया। बुढिया के घर का जीना फाटक के दायी ओर था। वह सीढियो तक पहुँच गया था•••

एक लम्बी सास लेकर उसने एक हाथ से अपने धडकते हुए दिल को दबाया और दबे कदमो से सीढियाँ चढने लगा। उसका हाथ कोट मे छिपी कुल्हाडी को टटोल रहा था। सीढियो मे उस वक्त कोई नही था। आस-पास के सभी दरवाजे बन्द थे। पहली मजिल के फ्लैट में कुछ रोगनसाज काम कर रहे थे। उनमे से किसी ने उसकी ओर नही देखा। वह कुछ देर ठिठककर सोचने लगा, "अगर ये लोग इस वक्त यहाँ न

होते तो अच्छा होता, लेकिन · दो मजिल ऊपर के घर मे · ·।"

वह चौथी मज़िल पर आ गया था। एक ओर का फ्लैट आजकल खाली था। शायद निचले फ्लैट मे भी कोई किरायेदार नही रहता था, क्योकि किसी के नाम की तख्ती वहाँ नही थी। वे लोग वहाँ से चले गये थे · वह घबरा गया। उसने क्षण भर के लिये सोचा, "क्या मेरा लौट जाना ठीक रहेगा ?" लेकिन अगले ही क्षण वह बुढिया के दरवाज़े के साथ कान लगाकर सुनने लगा· · फिर उसने ज़ीने से कान लगाकर सुना· · फिर अपने चारो ओर देखते हुए एक बार फिर हाथो से कुल्हाडी को टटोला और मन ही मन सोचने लगा, "मुझे इतना उत्तेजित नही होना चाहिये। बुढिया बडे शक्की-मिजाज की है। मेरे चेहरे की पीली रगत से · ·जब तक मेरे दिल की धुक-धुक धीमी नही होती मुझे यही रुकना चाहिये।"

लेकिन उसके दिल की धुक-धुकी कम होने की बजाय, शायद उसे चिढाने की खातिर और भी तेज हो गई। अब उसके लिये धीरज रखना मुश्किल था। उसने जोर से घण्टी का बटन दबाया।

भीतर से किसी ने जवाब न दिया। बार-बार घण्टी बजाते जाना बेकार था। साफ जाहिर था कि बुढिया घर पर ही थी और अकेली होने की वजह से बाहर नही निकलना चाहती थी। रास्कोलनिकोव बुढिया के शक्की-मिजाज से अच्छी तरह परिचित था· · ·उसने दरवाज़े से कान लगाकर सुना· · या तो इस समय उसकी श्रवण-शक्ति तेज हो गई थी (यह निश्चित रूप से कहना कठिन है), या सचमुच ही किसी की स्कर्ट की सरसराहट सुनाई दी थी, और कोई दरवाजे के पास कान लगाये खडा था · ·रास्कोलनिकोव ने फिर घण्टी का बटन दबाया। बाद मे यह क्षण उसकी स्मृति मे सदा के लिये ताज़ा बन गया। उसे समझ मे नही आता था कि उसे इतनी चालाकी कहाँ से आ गई थी, जबकि उसे अपने शरीर तक की सुध न थी· · ·इसी समय किसी ने दरवाज़े की कुण्डी खोली।

७

दरवाजा ज़रा-सा खुला। दराज मे से दो तीक्ष्ण और सन्दिग्ध आँखे घूरकर उसकी ओर देख रही थी। रास्कोलनिकोव घबराहट में एक भारी गलती करने ही वाला था।

बुढिया के एकान्त मे भयभीत हो जाने के डर से उसने दरवाजा कसकर पकड लिया ताकि वह उसे बन्द न कर सके। बुढिया ने अभी भी दरवाजे का हैण्डल कसकर पकड रखा था और वह उसका रास्ता रोके खडी थी। रास्कोलनिकोव ने दरवाजा इतनी जोर से अपनी ओर खीचा कि बुढिया चौककर पीछे हट गई और आँखे फाड-फाडकर उसकी ओर देखने लगी।

"गुड ईवनिग एल्योना इवानोव्ना! मै एक चीज लाया हूँ··· मै ··आओ भीतर चले··" उसकी आवाज उसे धोखा दे रही थी।

फिर वह अपने आप ही कमरे मे अन्दर चला गया। बुढिया उसके पीछे भागती हुई गयी। "अरे तुम कौन हो, और इस तरह भीतर क्यो घुस आये हो?"

"मै हूँ ··रास्कोलनिकोव। आपने मुझे पहचाना नही? अभी

परसो मैंने आपसे वायदा किया था कि मै कोई न कोई चीज लेकर आऊँगा।" उसने कागज मे बँधा पैकेट आगे बढाया।

बुढ़िया इस बिना बुलाये आगन्तुक की ओर घूर-घूरकर देखने लगी। उसकी दृष्टि मे अविश्वास और सन्देह छिपा था। रास्कोलनिकोव को लगा कि वह उसकी ओर देखकर इस तरह मुस्करा रही है जैसे उसने सब कुछ भाँप लिया हो। भय से उसका सर चकराने लगा। उसे लगा कि वह वहाँ और अधिक नही ठहर सकेगा। सहसा वह रोषपूर्वक बोला, "आप तो मुझे इस तरह घूर रही है जैसे मुझे कभी देखा ही न हो। अगर आपको इस चीज की जरूरत हो तो रख लीजिए नही तो मै और कही जाऊँ। मुझे जल्दी है।" यह बात अकस्मात् ही उसके मुँह से निकल गई थी। बुढिया यह सुनकर कुछ आश्वस्त हो गई।

"क्यो जी, इतनी जल्दी क्यो पडी है···यह क्या लाये हो?"

"चाँदी का सिगरेट केस, जिसका पिछली बार मैंने आपसे जिक्र किया था।

बुढिया ने हाथ आगे बढाया।

"अरे, तुम्हारा चेहरा कितना पीला पड गया है?··और तुम्हारे हाथ क्यो काँप रहे है? क्या अभी-अभी नहाकर आये हो?"

"मुझे तेज बुखार है··चेहरे का रग पीला क्यो न पडे· जब खाने को नसीब न होता हो।" शब्द उसके गले में अटक रहे थे। वह अपने को अशक्त महसूस कर रहा था, लेकिन उसके जवाब मे सच्चाई मालूम होती थी। बुढ़िया ने पैकेट हाथ मे लेते हुए फिर पूछा—

"इसमे क्या है?" वह रास्कोलनिकोव के चेहरे की ओर गौर से देख रही थी।

"चाँदी का सिगरेट केस···इसे खोलकर देखिये।"

"यह चाँदी तो नही मालूम होती। अरे, यह कितना कसकर लिपटा हुआ है।"

सुतली खोलने के लिये वह खिडकी के पास गई, जहाँ बत्ती जल रही थी। (गर्मी के बावजूद घर की सब खिडकियाँ बन्द थी। बुढिया उसकी तरफ पीठ करके खडी हुई थी। रास्कोलनिकोव ने कोट के बटन खोलकर कुल्हाडी को अपने दाये हाथ मे सभाल लिया। उसके हाथो को सहसा जैसे लकवा मार गया था। उसे डर था, कही कुल्हाडी उसके हाथो से गिर न पडे • उसका सिर चकराने लगा।

"लेकिन तुमने सुतली इतनी कसकर क्यो बाँधी है?" बुढिया बडबडाती हुई उसकी ओर आने लगी।

अब रास्कोलनिकोव के पास सोचने के लिये और अधिक समय नही था। उसने कुल्हाडी को दोनो हाथो से ऊपर उठाकर यन्त्रवत् बुढिया के सिर पर दे मारा—ऐसा करने मे उसे विशेष जोर नही लगाना पडा, लेकिन पहले वार के बाद उसकी शक्ति लौट आई।

सदा की तरह बुढिया का सिर आज भी नगा था। उसके सफेद, तेल से चुपडे बालो मे एक टूटी कघी लगी थी और चूहे की दुम की तरह उसकी चुटिया गर्दन के पीछे लटक रही थी। बुढिया का कद नाटा था, इसलिये वार उसकी खोपड़ी पर लगा। वह चीख पडी, लेकिन मद्धम आवाज मे और धम से फर्श पर गिर गई। उसके दोनों हाथ ऊपर उठ गये। एक हाथ मे वह अब भी सिगरेट केस को मजबूती से पकडे हुए थी। रास्कोलनिकोव ने कुल्हाडी के कुन्द सिरे से खोपडी पर दो-तीन वार और किये। फर्श पर खून की धार बह चली, जैसे कोई गिलास औंधा गया हो। रास्कोलनिकोव ने झुककर बुढिया के चेहरे को देखा। वह मर गई थी। उसकी आँखे बाहर निकली-सी मालूम होती थी, और माथे और चेहरे पर सिकुडन आ गई थी।

रास्कोलनिकोव ने कुल्हाडी वही फर्श पर रख दी और बुढिया की जेब टटोलने लगा, दायी जेब को जिसमे वह अपनी चाबी रखती थी। इस समय रास्कोलनिकोव के होश-हवास बिल्कुल दुरुस्त थे, लेकिन उसके हाथ अब भी कॉप रहे थे। बाद मे उसे याद आया कि उसने उस समय कितनी सावधानी से काम लिया था•• चाबियो का गुच्छा उसे फौरन मिल गया और वह सोने के कमरे की ओर भागा, जहॉ बहुत-सी धार्मिक मूर्तिया रखी हुई थी। दीवार के पास एक बडा-सा पलग था जिस पर रगबिरगी रेशमी टाकियो से बनी रजाई बिछी थी। सामने एक दराजो वाली अलमारी थी। ज्योही उसने चाबियो की खनखन सुनी, उसके सारे शरीर मे सिहरन दौड गई। उसके मन मे आया कि फौरन वहाँ से भाग जाये, लेकिन जो होना था, वह हो चुका था। सहसा उसके मन मे एक और खौफनाक ख्याल आया। उसने सोचा हो सकता है, बुढिया अभी भी जिन्दा हो। वह चाबियो के गुच्छे को अलमारी के साथ लटकता छोडकर फिर दूसरे कमरे मे वापिस आया। उसने कुल्हाडी उठाई, लेकिन उसे विश्वास हो गया कि बुढिया सच-मुच मर चुकी है। उसने नीचे झुककर देखा कि उसकी खोपडी कई जगह से फट गई थी। उसने उगली से टटोलकर देखना चाहा, लेकिन इसकी जरूरत न पडी। फर्श पर खून की धार बह निकली थी। सहसा उसका ध्यान बुढिया के गले में लिपटी एक जजीर की ओर गया। उसने झटका देकर उसे तोडने की कोशिश की लेकिन डोरी मजबूत थी। इसके अलावा वह खून से गीली हो गई थी। उसने सामने की तरफ से जजीर को खीचने की कोशिश की, लेकिन जजीर किसी दूसरी चीज मे उलझी हुई थी। बेसब्र होकर उसने जजीर काटने के लिये कुल्हाडी उठाई, लेकिन उसकी हिम्मत न पडी। फिर उसने बडी मुश्किल से लाश को स्पर्श किये बगैर जजीर को काटा, जिसके परिणामस्वरूप उसका हाथ और कुल्हाडी की धार खन में सन गई। उसका अनुमान

सही निकला। जजीर मे एक बटुआ लटक रहा था। जजीर मे दो क्रॉस बने हुए थे, एक लकडी का दूसरा ताँबे का। उनके बीचोबीच चाँदी की एक मूर्ति थी। उसके नीचे चमडे का एक चिपचिपा बटुआ था। रास्कोलनिकोव ने बटुआ बिना देखे ही जेब मे डाल लिया और दोनो क्राँसो को बुढिया की लाश पर पटककर दूसरे कमरे में चला गया। इस बार वह कुल्हाडी भी अपने साथ ले गया।

वह जल्दी में था। उसने अलमारी के ताले मे बारी-बारी से सब चाबियाँ लगायी, लेकिन ताला न खुला, फिर भी वह ताला खोलने की कोशिश करता रहा। इसी समय उसे याद आया कि सबसे बडी चाबी अलमारी के ताले की नही हो सकती, बल्कि किसी बडे सदूक के ताले की होगी, (पिछली बार जब वह यहाँ आया था तो उसने इस बात पर गौर किया था) अलमारी छोडकर उसने पलग के नीचे टटोलना शुरू किया, क्योकि उसे मालूम था कि बूढी औरते आमतौर पर अपने सन्दूक पलग के नीचे रखती है। उसका अनुमान सही था। पलग के नीचे लाल चमडे का एक बडा-सा सन्दूक रखा था, जिस पर सफद कील जडे थे। बडी चाबी ताले मे फौरन लग गई और उसने सन्दूक खोला। सबसे ऊपर सफेद चद्दर के नीचे लाल जरी का एक कोट रखा था, जिसका अस्तर खरगोश की खाल का था। उसके नीचे कुछ रेशमी कपडे और एक दुशाला था—मालूम होता था कि उस सन्दूक मे कपडो के सिवा कुछ नही है। उसने सबसे पहले अपना खून से सना हाथ लाल कोट से पोछा, "लाल रग पर लाल खून का दाग नही नजर आयेगा।" फिर उसने आतकित मन से सोचा, "हे ईश्वर! क्या मै पागल हो गया हूँ!"

इसी समय कोट की तह मे से एक सोने की घडी बाहर गिर पडी। उसने बाकी कपडो की तहे भी खोल डाली। उनमे से सोने के ब्रेसलेट, हार, इयरिग और पिने निकली। शायद वे सब लोगो के गिरवी रखे

गहने थे । उनमे से कुछ डिब्बियो मे बद थे और कुछ अखबार के कागज़ो मे सावधानी से रखे गए थे । उसने जल्दी से गहने अपनी पतलून और ओवरकोट की जेबो मे डाल लिए । इससे अधिक चीज़े ले जाने का उसके पास वक्त नही था ।

सहसा उसे किसी के कदमो की आहट सुनाई दी । उसका शरीर सुन्न पड गया । उसने सोचा शायद यह उसका भ्रम होगा, लेकिन उसे एक धीमी चीख सुनाई दी । वह सन्दूक के पास पजो के बल साँस रोके बैठा था । वह फौरन उछल खडा हुआ, और कुल्हाडी लेकर बाहर निकला ।

कमरे के बीचोबीच लिजावेता हाथ मे एक बडी-सी गठरी लिए अपनी मृत बहन की ओर शून्य-दृष्टि से देख रही थी । उसका रग सफेद पड गया था, और उसमे चीखने तक की शक्ति नही बची थी । रास्कोल-निकोव को देखकर वह पत्ते की तरह काप उठी । उसने अपना हाथ उठाया और कुछ कहने के लिए मुँह खोला लेकिन उसके गले से आवाज न निकल सकी । वह भयभीत होकर पीछे हट गई । रास्कोल-निकोव कुल्हाडी लेकर उस पर झपटा । लिजावेता का चेहरा सहमे हुए बच्चे की तरह मासूम दिखाई दे रहा था । वह इतनी सीधी थी कि उसने सिर्फ अपना बाया हाथ ऊपर उठाकर जैसे उसे वापिस चले जाने का इशारा किया । कुल्हाडी के एक वार से उसकी खोपडी का ऊपरी हिस्सा अलग हो गया और उसकी मृत देह फर्श पर लुढक गई । रास्कोलनिकोव का दिमाग चकरा गया । उसने लिजावेता की गठरी उठाली, फिर उसे फेककर बाहर भाग गया ।

इस दूसरी आकस्मिक हत्या के बाद वह भय से आक्रान्त हो उठा । वह जल्द से जल्द वहाँ से भाग जाना चाहता था । अगर उस वक्त उसमे ज़रा भी तर्कशक्ति होती, तो उसे फौरन इसके अलावा इन हत्याओ की वीभत्सता का आभास होता, और वह भागकर घर जाने की बजाय, थाने मे जाकर आत्मसमर्पण कर देता—भय के कारण नही,

बल्कि आत्मग्लानि के कारण। उसे अब भी रह-रहकर अपने प्रति ग्लानि अनुभव हो रही थी। अब उसके लिये बुढिया के कमरे मे वापिस लौटना या सदूक को छूना असभव था।

लेकिन इसी समय एक विचित्र स्वप्निल शून्यता उसके मन मे फैल गई थी। वह अपने अस्तित्व से बेख़बर हो गया था, और उसका ध्यान छोटी, व्यर्थ की बातो मे उलझने लगा था। रसोई मे पानी से भरी एक बाल्टी को देखकर वह भीतर चला गया और उसने लहू से सनी कुल्हाडी को बाल्टी मे डुबो दिया। खिडकी पर एक टूटी तश्तरी मे साबुन का एक टुकडा रखा था, उससे उसने रगडकर अपने हाथ साफ किए और तीन मिनट तक वह कुल्हाडी की हत्थी के दागो को साफ करता रहा। फिर उसने रस्सी पर लटकते हुए कपडो से कुल्हाडी पोछी और उसे गौर से देखता रहा। खून के सारे धब्बे धुल गए थे, सिर्फ हत्थी की लकडी अभी भी गीली थी। उसने कुल्हाडी अपने ओवरकोट में छिपाली और अपनी पतलून, कोट और जूतो का निरीक्षण करने लगा। जूतो पर खून के दाग देखकर उसने एक कपडा गीला किया और उन्हे साफ कर दिया, लेकिन उसे डर था कि शायद कोई दाग अब भी उसकी आखो से छिपा न रह गया हो। वह कमरे के बीचोबीच खडा, किसी गहरी सोच मे डूब गया। उसके मन मे आतकपूर्ण विचार उठने लगे। उसे लगा कि वह पागल हो गया है, और अपनी आत्मरक्षा करने मे सर्वथा असमर्थ है। उसे उस समय कुछ और करना चाहिए था। "हे ईश्वर! मै क्या कर रहा हूँ—मुझे यहाँ से फौरन भागना चाहिए।" वह बुदबुदाया और बाहर खुली छत की ओर भागा—लेकिन वहाँ पहुँचते ही उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

उसने देखा कि सीढियो का दरवाजा खुला हुआ था। उसकी कुडी तक बन्द न थी। शायद बुढिया ने सावधानी बरतने के लिए

जान-बूझकर दरवाजा खुला रखा था। लेकिन बाद मे लिजावेता भी तो भीतर आई थी। हे ईश्वर! उसे यह क्यो नही याद रहा। उसने आगे बढकर साकल चढा दी।

"नही, मै फिर गलती कर रहा हूँ। मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये।"

साकल खोलकर वह जीने से कान लगाकर खडा हो गया।

दूर, शायद फाटक के पास दो आदमियो के लडने झगडने की आवाजे सुनाई दे रही थी। वह अविचलित खडा सुनता रहा। कुछ देर बाद आवाजें शान्त हो गई। वह जीने से नीचे उतरने ही वाला था कि निचली मजिल से दरवाजा खुलने की आवाज आई, और कोई गुन-गुनाता हुआ सीढियो से नीचे उतरने लगा। रास्कोलनिकोव सोचने लगा, "सब लोग कितना शोर मचाते है।" उसने दरवाजे की साकल चढा दी। जब जीने मे सन्नाटा छा गया तो वह साकल खोलकर जीने मे आने को ही था कि उसे फिर किसी के कदमो की आहट सुनायी दी।

आहट अभी बहुत नीचे थी, लेकिन न जाने क्यो उसे सदेह हो गया कि कोई ऊपर बुढिया से मिलने आ रहा है। यह सदेह कैसे हुआ? क्या कदमो की आहट मे ऐसी कोई विशेषता थी? कोई भरकम बूट पहने पहली मजिल पार करके दूसरी मजिल तक आ पहुँचा था, कदमो की आवाज नजदीक आ गई थी। जरूर कोई ऊपर आ रहा है। रास्कोलनिकोव पत्थर का बुत बना खडा था। उसे लग रहा था जैसे सपने मे कोई उसका पीछा कर रहा है, और वह अभी पकडा जायेगा। वह अपनी बाँहे तक नही हिला सकता था।

आखिर जब कदमो की आहट नजदीक आ गई तो वह चौकन्ना हो गया। उसने जल्दी से साकल चढाकर उसमे लोहे की कील फँसा दी और कमरे मे चला गया। अज्ञात आगन्तुक भी दरवाजे के करीब

आ पहुँचा था । रास्कोलनिकोव ने कान लगाकर सुना । आगन्तुक हाँप रहा था । रास्कोलनिकोव ने सोचा, "ज़रूर कोई मोटा आदमी होगा ।" उसने कुल्हाडी कसकर पकड ली । उसे लगा, वह सपना देख रहा है । आगन्तुक ने जोर से घटी बजायी ।

रास्कोलनिकोव को कमरे मे कोई चीज चलती सी मालूम हुई । कुछ सैकिण्ड वह चुपचाप खडा रहा । आगन्तुक ने दुबारा घटी बजायी और कोई जवाब न पाकर जोर-जोर से दरवाजा खटखटाने लगा । रास्कोलनिकोव ने भयभीत दृष्टि से हिलती हुई साकल को देखा । उसे लगा कि साकल फौरन टूटकर गिरने वाली है । उसका सर चकराने लगा । आगन्तुक जोर से बडबडाया

"न जाने इन लोगो को क्या हो गया है । सो रही है या मर गई है । शैतान इनसे समझे, ओ एल्योना इवानोव्ना, अरी ओ जादूगरनी ! लिजावेता इवानोव्ना ! मेरी परी, दरवाजा खोलो । क्या तुम दोनो सो रही हो ?"

आगन्तुक ने गुस्से मे आकर एक दर्जन बार घटी का बटन दबाया । निश्चय ही वह कोई रोबदार आदमी था ।

इसी समय जीने पर किसी और के आने की आहट सुनाई दी । दूसरे आगन्तुक ने प्रफुल्ल स्वर मे कहा, "गुड ईवनिग कोश, सचमुच ये लोग घर नही है क्या ?"

रास्कोलनिकोव ने आवाज सुनकर अनुमान लगाया कि नया आगन्तुक तरुण व्यक्ति है ।

कोश ने उत्तर दिया, "शैतान जाने इन औरतो को साप सूँघ गया है या क्या ! मै तो इतनी देर से दरवाजा खटखटा रहा हूँ । लेकिन तुम्हे मेरा नाम कैसे मालूम है ?"

"वाह ! अभी परसो ही तो मैने तुम्हे तीन बार बिलियर्ड में हराया था ।"

"ओह !"

"ये औरतें घर से बाहर कहाँ गई होंगी ? बड़ी विचित्र बात है। मुझे उनसे कुछ काम था।"

"मै भी काम के सिलसिले में ही आया था।"

"तो फिर क्या करे ? मेरा ख्याल है वापिस लौट चले। हाय, मैं तो पैसे लेने की उम्मीद से यहाँ आया था।"

"वापिस तो जाना ही पडेगा, लेकिन उस चुडैल बुढिया ने जानबूझ कर मुझे इस वक्त क्यो बुलाया था ? मै इतनी दूर मे आया हू, और वह खुद न जाने कहाँ गायब हो गई। कई सालो से बुढिया घर से बाहर नही निकली, आज ही कम्बख्त को सैर करने का शौक चर्राया था।"

"चलो चलकर चौकीदार से पूछ ले।"

"क्या ?"

"यही कि बुढिया कहा गई है और किस वक्त लौटेगी।"

"हूँ··जहन्नुम में जाये बुढिया··हम पूछ सकते है··लेकिन तुम जानते ही हो कि वह घर से बाहर कभी नही निकलती।"

उसने एक बार फिर दरवाजे को जोर से हिलाया।

"जहन्नुम में जाये ये बुढियाँ, आओ लौट चले।" सहसा युवक बोला।

"ठहरो, ज़रा दरवाजे के भीतर झाँककर देखो।"

"क्या बात है ?"

"अरे, तुमने देखा नही कि भीतर से साकल चढी हुई है। इसका मतलब है कि एक जनी घर मे है। अगर दोनो बाहर होती, तो दरवाजे मे ताला लगा होता। तुमने देखा नही, साकँल में लोहे की कील फँसी हुई है। ज़रूर दोनो चुडैले भीतर है, और जानबूझ कर दरवाज़ा नही खोल रही।"

कौश ने गुस्से से दरवाजा धकेलते हुए कहा ·

"अच्छा ! दोनो भीतर बैठी क्या कर रही है ?"

"ठहरो, दरवाजे को धकेलो नही—मामला कुछ गंडबड मालूम होता है—तुम इतनी देर से घंटी बजा रहे हो और किसी ने दरवाजा नही खोला। या तो दोनो बेहोश हो गई है या ••"

"क्या कहा ?"

"आओ चलकर चौकीदार को बुला लाये। वह आवाज देकर दोनो को जगा देगा।"

"अच्छा।"

दोनो नीचे उतरने लगे।

"तुम यहीं रुको, मै नीचे जाकर चौकीदार को बुला लाता हू।"

"मै क्यो ठहरू ?"

"मै कहता हूँ तुम ठहरो।"

"अच्छा।"

"जानते हो, मै कानून का विद्यार्थी हूँ। साफ ज़ाहिर है कि मामला गडबड है।" कहकर युवक नीचे उतर गया।

कौश ने फिर आहिस्ता से घंटी का बटन दबाया, और सतर्कता से चारो तरफ देखकर दरवाजा धकेला। फिर निराश होकर वह छेद मे से झाँकने लगा, लेकिन उसे कुछ दिखाई न दिया।

अन्दर रास्कोलनिकोव हाथ मे कुल्हाडी थामे खडा था। उसके सर पर पागलपन सवार हो गया था। उसने फैसला किया था कि अगर कोई भीतर आयेगा, तो वह डटकर मुकाबला करेगा। जब बाहर से दरवाज़ा खटखटाया जा रहा था, तब उसके मन में कई बार आया कि वह दरवाज़ा खोलकर अपने आपको उनके हवाले कर दे। उसकी इच्छा हुई कि वह उन्हे गालिया दे और उनका मज़ाक उडाये। लेकिन अब उसके मन मे सिर्फ एक ही विचार आ रहा था—"जल्दी से भाग चलो।"

उधर कोश अधीर होकर बडबडा रहा था, "न जाने उसने इतनी देर क्यो लगा दी ?" वह अपने भरकम बूटो को चरमराता हुआ नीचे उतर गया ।

"हे ईश्वर ! अब मै क्या करूँ ? मेरा क्या होगा ?"

उसने साकल खोलकर चारो तरफ देखा । वहाँ कोई न था । फिर बिना सोचे-बिचारे वह दरवाजा खोलकर सीढियो से नीचे उतरने लगा ।

अभी वह तीसरी मजिल पर ही पहुचा था कि उसे नीचे से शोर-गुल सुनायी दिया । छिपने की कोई जगह नही थी । वह क्या करता ? वापिस ऊपर जाने के सिवा और कोई चारा न था, इसलिए वह नीचे उतरता गया ।

"आ गया ! पकडो बदमाश को !"

कोई निचले फ्लैट मे से बाहर निकलकर जोर से चिल्लाया ।

"मित्का ! मित्का ! मित्का ! अरे कहाँ जाकर मर गया ?"

नीचे दालान मे कोई चीख रहा था । इसी समय बहुत से आदमी बातचीत करते हुए जीने मे दाखिल हुए । उसने युवक की करारी आवाज़ को पहचान कर कहा, "लो यह आ गये !"

रास्कोलनिकोव हताश होकर सोचने लगा, "अगर उन्होने मुझे रोक लिया तो मै कही का न रहूँगा । अगर उन्होने मुझे चुपचाप गुजर जाने दिया, तो भी मै कही बचकर नही जा सकूँगा क्योकि उन्हे मेरी शक्ल याद रहेगी ।" वह लोग करीब आ गये थे । सहसा उसे मुक्ति का मार्ग दिखायी दिया । दाहिनी ओर खाली फ्लैट का दरवाजा खुला था, जहाँ रगसाज काम कर रहे थे । शायद उसे शरण देने के लिए ही वे दरवाजा खुला छोड गये थे । दरवाज़े का रोगन अभी गीला था और कमरे मे रग फेरने वाले ब्रुश और खाली डिब्बे पडे थे । वह फौरन जाकर दरवाज़े के पीछे छिप गया । वे लोग बाते करते हुए ऊपर चले गये । रास्कोलनिकोव दबे पाँव नीचे उतर गया ।

सीढियो में कोई न था, यहाँ तक कि चौकीदार भी फाटक से गायब था। वह बाहर निकलकर बायी ओर की गली मे घुस गया।

उसे अच्छी तरह मालूम था कि वे लोग बुढ़िया के फ्लैट का दरवाजा खुला देखकर हैरान रह गये होगे और फिर भीतर जाकर दोनो लाशो को देखेगे। फौरन ही उन्हे ख्याल आयेगा कि हत्यारा अभी तक फ्लैट मे छिपा बैठा था और शायद कुछ क्षण पहले ही निकलकर भागा है। और वे यह अनुमान भी कर लेगे कि हत्यारा उन्हे ऊपर आते देखकर खाली फ्लैट मे छिप गया था। उधर उसे अपनी चाल तेज करने का साहस नही हो रहा था। "क्या मुझे किसी अनजान गली में जाकर छिप जाना चाहिए ? नही। क्या मुझे कुल्हाडी फेंक देनी चाहिए ? घोडा गाडी में बैठकर भाग जाना चाहिए ?… सब बेकार है, बेकार।"

गली के मोड तक पहुँचते-पहुँचते थकान से वह अधमरा हो गया। अब वह सुरक्षित स्थान मे पहुँच गया था, क्योकि सडक पर बडी भीड-भाड थी और समुद्र मे पानी की बूँद की तरह वह अपने को उस जन-सागर में विलीन कर सकता था। लेकिन हाल की घटना ने उसे इतना अशक्त बना दिया था कि उससे हिला-डुला नही जा रहा था। उसकी गर्दन पसीने से भीग गयी थी। जब वह नहर के किनारे आकर खडा हुआ तो पीछे से किसी ने फब्ती कसी, "कसम से इसने छककर पी है !"

इस समय वह अपनी सुध-बुध खो चुका था और उसकी हालत प्रतिक्षण बिगडती जा रही थी। सहसा उसे याद आया कि नहर के किनारे बहुत थोडे लोग है, इसलिए वह शीघ्र ही सब के आकर्षण का केन्द्र बन जायगा। थकान से चूर होने पर भी वह नये रास्ते से घर की ओर चल पडा।

फाटक के भीतर घुसते समय भी उसके होश-हवास ठिकाने नही थे। सीढियाँ चढते समय उसे कुल्हाडी का ध्यान आया। लोगो की

नजर बचाकर चौकीदार की कोठरी मे कुल्हाडी को वापस रख आना आसान काम न था। वह कुल्हाडी को किसी और के बराम्दे मे भी रख सकता है, यह बात उसके दिमाग मे आई ही नही। सयोगवश चौकीदार की कोठरी का दरवाजा तो बन्द था लेकिन उसमे ताला नही लगा था। रास्कोलनिकोव ने सीधे जाकर दरवाजा खोल दिया। इस बदहवासी मे अगर चौकीदार उससे पूछता, "तुम क्या चाहते हो?" तो जवाब मे वह कुल्हाडी उसके हाथ मे पकडा देता। लेकिन चौकीदार कोठरी में नही था। रास्कोलनिकोव ने कुल्हाडी बेच के नीचे रख दी। लौटते समय उसे कोई नही मिला। मकान-मालकिन का दरवाजा बन्द था। अपने कमरे मे पहुँचकर वह धम से सोफे पर लेट गया। उसे नीद नही आई। उसके मन मे शून्यता भर गई थी। अगर इस समय कोई उसके कमरे मे आ जाता, तो वह भय से चीख उठता। विचारो के भग्न तन्तु उसके मस्तिष्क मे चक्कर काट रहे थे, लेकिन वह किसी भी एक विचार को पकड नही पा रहा था। अपनी तमाम कोशिशो के बावजूद भी उसका मन बेहद उचाट हो रहा था…।

दूसरा भाग

१

बहुत देर तक वह इसी तरह पडा रहा। बीच मे तन्द्रा टूटने पर उसने देखा कि रात काफी बीत चुकी है, लेकिन वह उसी तरह श्लथ लेटा रहा। पौ फटने पर नीचे गली मे से शराबियो का शोरगुल सुनकर उसकी तन्द्रा टूट गई। हर रोज वह यह शोरगुल सुनता था।

"पियक्कडो की यह टोली शराबखानो से आई है। दो कभी के बज चुके होगे।" वह चौककर उठ बैठा। "क्या सचमुच दो बज चुके है?"

उसने कुछ याद करने की कोशिश की और एक ही क्षण मे शाम की सारी घटना उसकी आँखो के सामने फिर गई।

उसे लगा कि वह पागल होने वाला है। उसके शरीर मे कँपकँपी-सी दौड गई। लेकिन यह कँपकँपी हरारत की वजह से थी। सहसा उसके दाँत भी बजने लगे। उसने दरवाजे से कान लगाकर सुना। घर में निस्तब्धता छायी थी। चकित दृष्टि से उसने कमरे मे नजर दौडाई। उसे विश्वास न आया कि वह दरवाजे की सिटकनी चढाये बगैर किस तरह लेटा रहा, और उसने अपने सर से हैट तक नही उतारा।

उसका हैट नीचे फर्श पर तकिए के पास गिरा पडा था।

"कोई भीतर आकर मुझे देखता तो क्या सोचता ? यही न कि मै नशे मे धुत हूँ, लेकिन ··" वह भागकर खिडकी के पास गया और सुबह के धुँधलके मे अपने कपडो का निरीक्षण करने लगा। लेकिन ऐसी सरसरी नजर से खून के दाग कैसे दिखाई देते ? इसलिए जाडे मे ठिठुरते हुए भी उसने सब कपडे उतार दिये और कपडो का एक-एक तार देख डाला, एक बार नही तीन बार। लेकिन उसकी पतलून के फटे पौचे के सिवा, जहाँ खून की कुछ बूँदे जम गयी थी, और कही कोई दाग न था। उसने चाकू लेकर उस जगह के धागो को निकाल दिया। सहसा उसे याद आया कि बुढिया के सन्दूक से बरामद हुए गहने और बटुआ अभी तक उसकी जेब मे था। अभी तक उसने इन चीजो को क्यो नही छिपाया ? कपडे उतारते समय भी उसे यह ख्याल क्यो नही आया ? अब क्या होगा ? उसने फौरन जेबो से सब चीज़े निकालकर मेज़ पर पटक दी और अपनी जेबो को अच्छी तरह उलट-पलट कर देखने के बाद वह उन्हे उठाकर कमरे के एक कोने में ले गया, जहा दीवार की एक उखडी ईंट के ऊपर का वॉल-पेपर फट गया था। उसने चीजे वहा छिपा दी और सोचने लगा, "लो, अब इन पर किसी की नजर नही पडेगी। लेकिन यह जगह कुछ उभरी हुई-सी दीखने लगी है।" सहसा आतक से उसका रोम-रोम सिहर उठा और वह बुदबुदाया, "हे ईश्वर, मेरी अक्ल को क्या हो गया है ? क्या चीज़े इस तरह छिपाई जाती है ?"

उसने पहले कभी नही सोचा था कि गहने भी उसके हाथ लगेगे। इसलिए गहने छिपाने की जगह का उसने इन्तजाम नही किया था। वह सोचने लगा, "मेरी बुद्धि मेरा साथ नही दे रही, मै क्या करूँ ?" वह थककर सोफे पर बैठ गया और उसे फिर कँपकँपी छूटने लगी। यंत्रवत् उसने पास पडी कुर्सी पर लटका कोट उठाकर अपने शरीर

पर डाल लिया और फिर चेतनाशून्य हो गया। पाँच मिनट बाद ही वह फिर चौककर खडा हो गया और अपने कपडो की तलाशी लेने लगा।

"सारा इन्तज़ाम अधूरा पडा है। मुझे बीच मे ही नीद कैसे आ गयी ? अरे हाँ, अभी तो मैंने कोट के नीचे से फन्दा तक नही बाहर निकाला। इतनी जरूरी बात मुझे कैसे भूल गई ? इतना बडा सबूत !"

उसने फन्दे को फौरन चाकू से काट दिया और कतरनो को सिरहाने के नीचे पडे मैले कपडो में छिपा दिया।

"फटे चीथडो को देखकर किसी को सन्देह नही हो सकना, हर्गिज नही !" वह कमरे के बीचोबीच खडा सोच रहा था। उसने कमरे मे फिर एक बार नजर दौडायी। उसकी सभी मानसिक शक्तियाँ, यहाँ तक कि स्मृति और साधारण विवेक भी, उसे धोखा दे रही है, यह देख कर उसे असह्य यत्रणा हुई। "क्या मेरा पागलपन अभी से शुरू हो गया ? कही यह मेरी सजा तो नही है ? शायद यही है।"

उसकी पतलून के पौचे की कतरने अभी तक फर्श पर बिखरी थीं, जिन पर किसी की दृष्टि पड सकती थी। "मुझे क्या हो गया है ?" वह भयभीत होकर चिल्लाया। इसी समय एक अनोखा विचार उसके मन मे आया। उसे लगा कि शायद उसके कपडो पर रक्त के अनगिनत धब्बे लगे है जो उसे नजर नही आ रहे, क्योकि उसकी ज्ञान-शक्ति लुप्त हो गयी है···सहसा उसे याद आया कि बटुए के ऊपर भी खून के दाग थे। "तब तो जेब के भीतर भी दाग लग गये होगे, क्योकि मैंने खून से सना बटुआ जेब में डाल लिया था।" उसने फौरन जेब उलट कर देखी। सचमुच उसकी जेब के भीतर खून के दाग चमक रहे थे। अपनी इस विजय पर प्रसन्न होते हुए वह सोचने लगा, "साफ ज़ाहिर है कि मेरी अक्ल अभी तक गुम नही हुई, क्योकि मेरा अनुमान ग़लत

नही निकला। सिर्फ बुखार के कारण मुझे थोडी-सी कमजोरी आ गयी है।" उसने पतलून की बायी जेब का सारा अन्दरस काटकर फेक दिया। इसी समय सूरज की एक किरण उसके बाये बूट पर आकर चमकी। उसे लगा कि उसके मोजो के ऊपर भी खून के दाग है। उसने अपने जूते उतार फेके। मोजे का ऊपरी हिस्सा सचमुच खून मे सना हुआ था। शायद अनजाने मे उसका पैर खून की धार के नीचे आ गया था। "लेकिन अब इन सब चीजो का क्या किया जाय ?"

रक्त मे सनी चीजो को हाथ मे उठाकर वह सोचने लगा, "इन्हे अगीठी मे छिपा दूँ ? लेकिन सबसे पहले तो अँगीठी की तलाशी ली जायगी। जला दूँ ? लेकिन किस चीज़ से जलाऊँ ? मेरे पास तो दियासलाई तक नही है। क्यों न लेजाकर इनको कही फेक आऊँ, इसी समय • ।" वह उठकर बाहर जाना चाहता था, लेकिन वह तकिए पर सर रखकर वही लुढक गया। उसे फिर कँपकँपी आने लगी और उसने कोट ओढ लिया।

वह बहुत देर तक, लगातार कई घटो तक सोचता रहा कि उसे फौरन उठकर सब चीजे कही रख आनी चाहिए, लोगो की नजर से दूर। उसने कई बार सोफे से उठने की कोशिश की, लेकिन न उठ सका। इतने मे किसी ने ज़ोर से दरवाजा खटखटाया और उसकी तन्द्रा टूटी।

"दरवाजा खोलो ! जीते हो या मर गये हो ? अभी तक सोये पडे हो ! देखा, पिछले कई दिनो से यह लडका कुत्ते की तरह सोया रहता है। है भी तो कुत्ता ही! मै कहती हूँ दरवाजा खोलो ! दस कभी के बज चुके है।"

"हो सकता है, वह घर पर न हो•।" किसी मर्द की आवाज सुनायी दी।

"अरे यह तो चौकीदार की आवाज है•••वह यहाँ किस लिए आया है ?"

रास्कोलनिकोव सोफे से उठकर खडा हो गया। हृदय की तेज धडकन से उसके सीने मै टीसें उठने लगी।

"घर न होता तो भीतर से सिटखनी कैसे बद होती?" नस्तास्या ने चौकीदार को उत्तर दिया।

"अच्छा तो अब जनाब कमरा बद करके बैठने लगे है? इसके पास क्या रखा है जो चोर यहा फटकेगा! अबे अहमक, दरवाजा खोल!"

"यह लोग किस लिए आये है? क्या चाहते है? चौकीदार क्यो आया है? मालूम होता है, सारा भेद खुल गया है। दरवाजा बद रखूँ या खोल दूँ? जो भी हो मै पूरा मुकाबला करूँगा..."

उसने उठकर सिटखनी खोल दी। कमरा इतना छोटा था कि उसे दरवाजा खोलने के लिए सोफे से उतरने तक की जरूरत न पडी। बाहर चौकीदार के साथ नस्तास्या खडी थी।

नस्तास्या उसे विचित्र ढग से घूरने लगी। उसने क्रुद्ध दृष्टि से चौकीदार की ओर देखा। चौकीदार ने एक मुहरबन्द लिफाफा उसके हाथ मे पकडाते हुए कहा, "यह दफ्तर से आया है।"

'कौन से दफ़्तर से?"

"पुलिस के दफ्तर से सम्मन आया है। दफ्तर तो तुम जानते ही हो।"

"पुलिस के दफ्तर से · किस लिए? ··"

"मुझे क्या मालूम? तुम्हे बुलाया है, सो जाना पडेगा।"

चौकीदार ने गौर से उसके चेहरे की ओर देखा और फिर कमरे की ओर नजर फेंककर जाने लगा।

"यह तो सख्त बीमार है," नस्तास्या ने रास्कोलनिकोव को घूरते हुए कहा। "कल से इसे तेज बुखार है।"

रास्कोलनिकोव ने लिफाफा अभी तक न खोला था। उसे सोफे से उतरते देखकर नस्तास्या दुलार से बोली, "रहने दो मत उठो, तुम्हारी तबियत ठीक नही। इतनी जल्दी क्यो करते हो? अरे, तुम्हारे हाथ में

क्या है ?"

रास्कोलनिकोव ने देखा कि उसके दाएँ हाथ मे पतलून का कटा हुआ पौंचा, मोजा और जेब की कतरने थी जिन्हे वह हाथ मे लेकर ही सो गया था।

"जरा देखो तो सही, यह लडका फटे चीथडो को इस तरह सीने से लगाकर सोता है, जैसे कोई भारी खजाना हो !" नस्तास्या मारे हँसी के लोट-पोट हो गयी।

रास्कोलनिकोव ने फौरन सब चीज़े अपने ओवरकोट मे छिपा ली और आँखें फाड-फाडकर नस्तास्या की ओर देखने लगा। बुद्धि-सगत बात करने की अवस्था में वह इस समय नही था, इसलिए उसने घबरा कर पूछा, "लेकिन पुलिस ••।"

"तुम यही बैठो, मै तुम्हारे लिए बची हुई चाय लाती हूँ।"

"नही, मै जा रहा हूँ, अभी।" वह उठकर खडा हो गया।

"इस हालत मे क्या तुम सीढियो से नीचे उतर सकोगे ?"

"हाँ, उतर सकूँगा।"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," कहकर नस्तास्या चौकीदार के साथ चली गई।

रास्कोलनिकोव रोशनी मे खडा होकर चिथडो को गौर से देखने लगा।

"दाग तो है, लेकिन वे नज़र नही आते। धूल से उनका रग हल्का पड गया है। सरसरी नज़र से देखने पर किसी को कुछ पता न चलेगा। शुक्र है कि नस्तास्या का ध्यान इस ओर नही गया।" फिर काँपते हुए हाथो से उसने लिफाफा खोला और खत पढना शुरू किया। पहले तो उसकी समझ मे कुछ न आया। बार-बार पढने के बाद उसे मालूम हुआ कि जिला सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उसे सुबह साढे नौ बजे अपने दफ्तर मे बुलाया था।

"लेकिन पुलिस का मुझसे क्या वास्ता ? मुझे आज ही क्यो बुलाया है ? हे भगवान्, मुझे इस मुसीबत से बचाओ।" वह घुटनो के बल बैठकर प्रार्थना करना चाहता था, लेकिन उसे अपने आप पर हँसी आ गयी।

उसने जल्दी से कपडे पहनने शुरू कर दिए। "अगर मुझे बर्बाद होना है तो बर्बादी ही सही। तो फिर मोज़े भी क्यो न पहन लूँ ! अच्छा है और धूल पडने से दाग छिप जायेंगे।" लेकिन पैर मे मोज़ा चढाते ही उसका मन असीम ग्लानि से भर उठा। उसने मोजा उतार कर फेक दिया। अगले क्षण उसे याद आया कि उसके पास दूसरे मोजे नही है। उसने फिर वही मोज़े उठाकर पहन लिए। उसे हँसी आ गयी।

"यह सब अपने-अपने दृष्टिकोण की बात है। मै यही मोज़े पहन कर जाऊँगा।" लेकिन यह विचार केवल उसके मन की ऊपरी सतह पर ही मडला रहा था। अगले ही क्षण उसकी हँसी विषाद मे बदल गयी।

उसकी टाँगे काँपने लगी। "मुझे डर लग रहा है । मै यह सब बर्दाश्त नही कर सकूँगा··· । उन्होने जानबूझ कर मुझ से सब कुछ बकवाने के लिए मुझे वहाँ बुलाया है। मुसीबत तो यह है कि तेज बुखार से मेरा सर चकरा रहा है।·· मैं कोई न कोई बेवकूफी की बात जरूर कर बैठूँगा।"

सीढियो पर पहुँचकर उसे याद आया कि वह बटुआ और जेवर दीवार के छेद मे छोड़े जा रहा है। "हो सकता है कि वे मेरी ग़ैर-हाजिरी मे मेरे कमरे की तलाशी ले।" यह सोचकर उसके कदम रुक गए, लेकिन चिन्ता और भय ने उसमें एक विचित्र-सी लापरवाही ला दी थी और वह 'मन का बोझ' हल्का करने के लिए वहाँ से चला गया।

सडक पर बेहद गर्मी थी। पिछले कई दिनो से मेह की एक बूँद न गिरी थी। सड़क पर चिर-परिचित धूल, ईट और गारे के ढेर,

शराबखानो की गँध, शराबियो की टोलियाँ, फेरीवाले और टूटी-फूटी घोडा-गाडियाँ मौजूद थी। धूप सीधी आकर आँखो मे चुभ रही थी उसका सर चकराने लगा।

जब वह रात वाली गली के पास से गुजरा तो उसने सहमी दृष्टि से 'उस' मकान की ओर देखा और आँखे नीची कर ली।

"अगर मुझसे पूछ ताछ की गयी तो शायद मै सब कुछ बक दूँगा।"

पुलिस स्टेशन अभी दो फर्लांग दूर था। हाल ही में पुलिस का दफ्तर एक बडी इमारत की चौथी मजिल पर ले जाया गया था। बहुत दिन पहले वह एक बार किसी काम से पुराने थाने मे गया था। उसने सामने की इमारत के जीने मे एक देहाती को हाथ मे किताब लिए देखकर सोचा, "यह चौकीदार होगा। इसका मतलब है कि दफ्तर यही है।" बिना किसी से पूछताछ किए वह सीढियाँ चढने लगा।

"मै सीधा भीतर जाकर घुटनो के बल गिर पडूँगा और सब कुछ स्वीकार कर लूँगा...।" चौथी मज़िल के पास पहुँचकर उसने सोचा।

जीना तग और गदा था। सब किरायेदारो के रसोईघर जीने से सटे हुए थे। दिन भर उनमे से गध और धुआँ उठता रहता था। जीने मे लोगो की भीड थी। बहुत से मर्द और औरते आ-जा रहे थे। दफ्तर का दरवाजा खुला था, जिसके आगे देहातियों की कतार खडी थी। कमरो मे हाल ही मे ताज़ा रौगन किया गया था, जिसकी गध आ रही थी।

कुछ देर इन्तजार करने के बाद उसने अगले कमरे में जाने का निश्चय किया। एक विचित्र अधीरता उसे आगे जाने के लिए प्रेरित कर रही थी। अगले कमरे में कुछ क्लर्क बैठे लिख रहे थे। उनके कपडे भी रास्कोलनिकोव की तरह फटे और मैले थे। किसी ने उसकी ओर

ध्यान न दिया। वह एक क्लर्क के पास जाकर खडा हो गया।

"कहो, क्या बात है ?"

उसने लिफाफा दिखाया।

"तुम विद्यार्थी हो ?" क्लर्क ने खत पर एक नजर डालते हुए पूछा।

"हॉ, कुछ दिन पहले मै विद्यार्थी था।"

• क्लर्क ने उसकी ओर बिल्कुल ध्यान न दिया। वह सनकी-सा दिखाई देता था।

रास्कोलनिकोव ने सोचा, इस आदमी को मुझ मे कोई दिलचस्पी नही, इसलिए इससे कोई बात मालूम न हो सकेगी।"

"सामने हैडक्लर्क का कमरा है, वहाँ जाओ"—क्लर्क ने कहा।

रास्कोलनिकोव ने जाकर देखा कि वहाँ और कमरो से ज्यादा भीड है और बहुत से भद्र व्यक्ति वहा बैठे हुए है। उनमे दो महिलाये भी थी। एक महिला मातमी पोशाक मे बैठी कुछ लिख रही थी। दूसरी महिला स्थूल-काय और बडी फैशनेबल थी। उसके सीने पर तश्तरी जितना बडा जडाऊ ब्रोच टँका हुआ था। वह कोने मे खडी किसी का इन्तजार कर रही थी। रास्कोलनिकोव ने किसी तरह हैडक्लर्क का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर ही लिया। हैडक्लर्क ने उसे प्रतीक्षा करने के लिए कहा और मातमी पोशाक वाली महिला को फिर कुछ लिखवाने लगा।

रास्कोलनिकोव ने चैन की साँस लेकर सोचा, "लगता है मुझे किसी और बात के लिए बुलाया गया है।"

धीरे-धीरे उसका खोया आत्मविश्वास लौट आया और वह अपने को शान्त और निर्भय रखने की कोशिश करने लगा। "अगर मेरे मुँह से एक भी मूर्खतापूर्ण या व्यर्थ शब्द निकला तो सारा भेद खुल जायगा, हुँ · यहाँ हवा बिल्कुल नही, दम घुटा जा रहा है··ऐसी जगह

आकर दिमाग चकरा जाता है · दिल भी· · "

वह अपने अन्दर चलने वाले द्वन्द्व से परिचित था। उसे डर था कि कही पुलिस अधिकारियो के सामने वह अपना आत्म-सयम न खो बैठे। वह किसी क्षुद्र और अनर्गल विचार मे अपने मन को उलझाये रखना चाहता था, लेकिन वह ऐसा न कर सका। उसे अब भी उम्मीद थी कि हैडक्लर्क उसके चेहरे को गौर से देखकर जरूर भाँप जायगा।

हैडक्लर्क बाईस वर्ष का एक साँवला युवक था, जिसके फैशनेबल कपडो से ओछापन टपक रहा था। बालो मे सुगन्धित पोमेड लगा था और माँग बीच से कढी थी। उसकी उँगलियो में बहुत-सी अँगूठियाँ थी और वास्कट की जेब मे से सोने की चेन लटक रही थी। उसने कमरे मे बैठे एक विदेशी से फ्रेंच मे दो शब्द कहे और फैशनेबल महिला को सम्बोधित करके कहा, "लुइज़ा इवानोव्ना, तुम बैठ सकती हो।"

"धन्यवाद," कहकर वह स्त्री अपनी रेशमी पोशाक को सभालती हुई कुर्सी पर बैठ गयी। उसके हल्के आसमानी रग के स्कर्ट ने जिसके किनारो पर लेस लगी हुई थी, फूले हुए गुब्बारे की तरह आधे कमरे को घेर रखा था। महिला के कपडो में से तेज सेट की महक आ रही थी, जिसके कारण वह मन ही मन लज्जित हो रही थी।

दूसरी महिला ने लिखना बद कर दिया और वह उठकर खडी हो गयी। इसी समय अकड-चाल से एक अफसर ने कमरे मे प्रवेश किया। उसने आते ही अपनी टोपी मेज़ पर फेक दी और धम से आराम-कुर्सी पर बैठ गया। अफ़सर को देखते ही फैशनेबल महिला आदरपूर्वक खडी हो गयी और बार-बार सर झुकाकर नमस्कार करने लगी। लेकिन अफसर ने उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया। वह असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट था। उसकी लाल रग की घनी मूँछो और लाल चेहरे से अहकार टपक रहा था। उसने रास्कोलनिकोव की ओर एक क्रोध भरी दृष्टि डाली, क्योकि फटे कपडो के बावजूद भी वह अफसर से आँखे

मिलाकर देखने का दुस्साहस कर रहा था। अफसर को आश्चर्य हुआ कि एक मामूली युवक उसकी क्रुद्ध दृष्टि की अवहेलना कैसे कर सका। उसने डाटकर पूछा, "तुम क्या चाहते हो ?"

"मुझे आपने·· सम्मन भेजा था।"

"तुम से पैसे वसूल करने के लिए," हैडक्लर्क ने उसकी ओर एक कागज फेंकते हुए कहा, "इसे पढो।"

"पैसे ? कैसे पैसे ?" रास्कोलनिकोव सोचने लगा। "इसका मतलब ··मुझे ··उस बात के लिए नही बुलाया गया ?" उसका शरीर खुशी से सिहर उठा। उसे लगा जैसे उसके दिल पर से मनो बोझ हट गया है।

"यह तो बताइए हजरत कि आपको यहाँ कितने बजे बुलाया गया था ? नौ बजे की बजाय आप बारह बजे क्यो तशरीफ लाये है ?" असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट न जाने क्यो रास्कोलनिकोव से और भी ज्यादा चिढ गया था।

"मुझे तो अभी पन्द्रह मिनट पहले आपका नोटिस मिला था। इतने तेज बुखार में भी मै यहाँ चला आया हू, यह क्या कम है ?" अपनी इस धृष्टता से रास्कोलनिकोव मन ही मन बडा प्रसन्न हुआ।

"मेहरबानी करके चिल्लाओ मत।"

"मै चिल्ला नही रहा, तहजीब से बात कर रहा हू। चिल्ला तो आप रहे है। मै विद्यार्थी हू किसी की धौस बर्दाश्त नही कर सकता।"

क्रोध से अफसर के ओठ फडकने लगे। वह उछलकर कुर्सी से खडा हो गया।

"चुप रहो ! तुम सरकारी दफ्तर में हो। यहाँ कोई गुस्ताखी से पेश नही आ सकता। समझे ?"

"आप भी तो इस वक्त सरकारी दफ्तर में है। सिगरेट पीकर और चिल्लाकर हम सब के प्रति गुस्ताखी से पेश आ रहे है," यह

कहने मे रास्कोलनिकोव को एक विचित्र सतोष प्राप्त हुआ।

हैडक्लर्क मुस्कराया। अफसर की बौखलाहट और भी बढ गयी। उसने चिल्लाकर कहा, "मुझसे तुम्हारा कोई सरोकार नही। अलैक्जाण्डर ग्रीगरोविच, जरा वह कागज तो इसे दिखाना। तुम्हारे खिलाफ शिकायत है कि तुम अपना कर्ज नही अदा करते। यही तुम्हारी शराफत है?"

लेकिन रास्कोलनिकोव कागज पढने मे तल्लीन था। जब दो-तीन बार पढने के बाद भी उसकी समझ मे कुछ न आया तो उसने हैड-क्लर्क से पूछा, "यह मामला क्या है?"

"यह आप पर जारी की गई एक हुडी है। या तो आप अभी इसका भुगतान कीजिए, नही तो लिखकर दीजिए कि आप किस तारीख तक यह सारी रकम अदा कर देगे। इस बीच आप न शहर छोडकर जा सकते है, न अपना सामान कही छिपा सकते है या बेच सकते है, क्योकि लेनदार अब आपके खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर सकता है।"

"लेकिन मैने ··मैने तो किसी से कर्ज नही लिया।"

"इससे हमें कोई मतलब नही। एक सौ पन्द्रह रूबल का यह प्रोनोट आपने जारनित्सिन की विधवा को नौ महीने पहले दिया था और अब मिस्टर चैबारोव के पास है। इसीलिए तुम्हे बुलाया गया है।"

"लेकिन वह तो मेरी मकान-मालकिन है।"

"तो इससे क्या?"

हैडक्लर्क ने मुस्कराकर उसकी तरफ देखा। उस मुस्कान में सहानुभूति के साथ विजय की भावना भी थी, क्योंकि एक अनुभवहीन युवक उसकी पकड मे आ गया था। वह रास्कोलनिकोव से पूछना चाहता था, "कहो, गुस्ताखी का मज़ा मिल गया न?" लेकिन रास्कोलनिकोव को भला एक मामूली प्रोनोट की क्या परवाह थी?

वह चुपचाप खडा रहा और यन्त्रवत् सब प्रश्नो का उत्तर देता रहा। उसके मन मे एक गर्व-मिश्रित सुरक्षा की भावना व्याप रही थी। जिसके आगे उसे तर्क, भविष्य की चिन्ताएँ और सवाल-जवाब सब फीके मालूम दे रहे थे। इसी समय दफ्तर में एक ऐसी घटना घटी जिससे रास्कोलनिकोव का दिल दहल गया। असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट अपने आहत गर्व की रक्षा के लिए उस फैशनेबल महिला पर पिल पडा, जो न जाने कितनी देर से उसके चेहरे की ओर टकटकी लगाये बैठी थी।

"अरी ओ बेहया, छिनाल !" वह जोर से गरजा (मातमी कपडो वाली महिला दफ्तर से जा चुकी थी)। "कल रात तुम्हारे घर मे कैसा शोर-गुल मच रहा था ? तुमने सारे मोहल्ले का नाम बदनाम कर दिया है। पीना-पिलाना और मारपीट फिर शुरू हो गयी ? तुम जाकर ही मानोगी ? मै तुम्हे कम से कम दस बार चेतावनी दे चुका हूँ। लेकिन तुम बाज नही आयी। इस बार तुम · तुम ·"

रास्कोलनिकोव के हाथ से कागज नीचे गिर पडा और वह भौचक्का होकर उस फैशनेबल महिला की ओर देखने लगा, जिसका खुलेआम अपमान किया जा रहा था। लेकिन जल्द ही सारी बात उसकी समझ मे आ गयी और उसका कौतूहल बढ गया। उसके मन मे आया कि वह जोर-जोर से हँसे।

"इल्या पैत्रोविच" हैडक्लर्क कुछ कहने ही वाला था, लेकिन वह आगे न कह सका। वह अपने अनुभव से जानता था कि उसके अफसर को जब गुस्सा आता है तो उसे भगवान भी नही रोक सकते।

फैशनेबल महिला पहले तो भय से काँपती रही, लेकिन ज्यो-ज्यों अफसर की गालियो की रफ्तार बढती गयी, त्यो-त्यो उसके चेहरे पर चचल मुस्कान फैलती गयी। वह चुपचाप सारी बाते सुनने के बाद बोली, "कप्तान साहब, मेरे यहाँ किसी किस्म का कोई झगडा नही हुआ।" उसके उच्चारण मे जर्मन का लहजा था। "मै सच कहती हूँ,

कप्तान साहब ! मै खुद बदनामी से बहुत डरती हूँ । लेकिन हिज औनर शराब के नशे मे मेरे यहाँ आये । आते ही उन्होने तीन बोतले और माँगी और एक पैर से प्यानो बजाने लगे । उनकी यह अशिष्टता मुझे बहुत बुरी लगी और मैने उन्हे डाँट दिया । उन्होने एक बोतल उठायी और सबको पीटना शुरू किया । इस पर मैने चौकीदार को आवाज दी । कार्ल भी आ गया । कार्ल और हेनरियट की आँखो में चोट लगी । उन्होने मेरे गाल पर भी पाँच थप्पड लगाये । कप्तान साहब, आप ही बताइये, किसी शरीफ घर मे क्या ऐसी बेहूदगी की जाती है ? उन्होने सडकवाली खिडकी खोल दी और सूअर की तरह चिल्लाने लगे । छि छि कार्ल नें उनका कोट पकडकर खीचा तो उन्होने और जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया कि कार्ल ने उनका कोट फाड दिया है । और इसके बदले मे उन्होनें पन्द्रह रूबल हर्जाना माँगे । मैनें उन्हे पाँच रूबल देकर पिण्ड छुडाया । कप्तान साहब, सिर्फ़ उनकी ही वजह से यह शोर-गुल मचा । उन्होने जाते समय धमकी दी कि वे सारे अखबारो में हमारी मिट्टी पलीद करके ही दम लेगे ।"

"अच्छा तो यह वह लेखक था ?"

"हाँ कप्तान साहब, ऐसे बदमाशो को शरीफ घरो में बिल्कुल नही जाना चाहिए।"

"अच्छा, अच्छा, बस करो । मै तुम्हे कई बार कह चुका हूँ ।"

"इल्या पैत्रोविच !" हैडक्लर्क ने समझाया, अफसर ने गुस्से से उसकी ओर देखा, हैडक्लर्क चुप रह गया ।

"मै तुम्हे आखिरी बार चेतावनी दे रहा हूँ, शरीफजादी लुइज़ा इवानोव्ना, कान खोलकर सुन लो ! अगर फिर तुम्हारे यहाँ कभी शोरगुल हुआ तो सबसे पहले तुम्हे जेल की हवा खानी पडेगी । सुना ? और यह लेखक भी खूब था, जिसने तुमसे पाँच रूबल ले लिए । क्या साहित्यिक ऐसे होते हैं ?"

उसने रास्कोलनिकोव पर एक क्रोधभरी नज़र डालते हुए कहा, "अभी कुछ दिन पहले एक रेस्तरा मे भी ऐसी ही घटना हुई थी। एक लेखक महोदय ने खाना तो खा लिया लेकिन पैसे नही चुकाये, और फरमाने लगे, 'मुझे तग किया तो मै एक लेख लिखकर इस रेस्तरा की धज्जियाँ उडा दूँगा।' पिछले हफ्ते एक लेखक स्टीमर मे सफर कर रहा था। उसने एक बडे प्रतिष्ठित अफसर की पत्नी और बेटी से गाली-गलौज़ शुरू कर दी। अभी हाल ही मे एक लेखक को हलवाई की दुकान मे से धक्के देकर बाहर निकाला गया। ये लेखक, विद्यार्थी, मुनादीवाले सब इसी तरह के होते है ·· श्रीमती जी, आप यहा से तशरीफ ले जाये, मैं खुद किसी दिन आपके यहा आकर तहकीकात करूँगा। सुना ?"

लुइजी इवानोव्ना आदरपूर्वक सब लोगो को अभिवादन करके बाहर चली गई—लेकिन दरवाज़े मे उसकी टक्कर ज़िला पुलिस के सुपरिन्टेन्डेट निकोदिम फोमिच से हो गई जो सुनहरी मूँछो वाला खूबसूरत आदमी था। लुइज़ी ने फर्श तक झुककर सलाम किया और बाहर चली गई।

निकोदिम फोमिच ने अपने सहकारी से मैत्रीपूर्ण स्वर में कहा, "देखता हूँ, तुम फिर किसी पर बरस रहे हो। सीढियो में मैने तुम्हारी गर्जना सुनी थी।"

इल्या पैत्रोविच ने शिष्टतापूर्वक उत्तर दिया, "तो फिर क्या हुआ?" वह हाथ मे एक फाइल लेकर दूसरी मेज पर चला गया और बोला, "ज़रा इधर इस विद्यार्थी की ओर देखिये, शायद यह लेखक भी है। इसने मकान-मालकिन को न किराया दिया है, न यह मकान खाली करता है। इसके खिलाफ बहुत-सी शिकायते आ चुकी हैं। इसने अभी मेरे सिगरेट पीने पर भी ऐतराज़ किया था। जनाब की सूरत तो देखिये, कितने खूबसूरत है आप!"

"गरीब होना कोई जुर्म नही है, दोस्त, तुम्हारे मिजाज का पारा एकदम चढ जाता है। तुम जरा-सी बात से चिढ जाते हो, फिर तुम्हे आगे-पीछे का ध्यान नही रहता।" फिर निकोदिम फोमिच ने रास्कोलनिकोव की ओर देखा और कहा, "इल्या पैत्रोविच गुस्सैल जरूर है मगर उसका गुस्सा दूध के उफान की तरह है—फौरन चढता है और फौरन उतर जाता है। लेकिन दिल मे मैल नही रहता। रेजीमेट मे इसके साथी इसे बारूदी लैफ्टीनेट कहकर पुकारते थे ••"

"वह रेजीमेट भी खूब थी!" इल्या पैत्रोविच ने इस मजाक से प्रसन्न होकर कहा।

रास्कोलनिकोव इस मौके पर कोई खुशी की बात करना चाहता था। उसने निकोदिम फोमिच को सबोधित करते हुए कहा, 'आप मेरी हालत का अन्दाज नही लगा सकते • • अनजाने मे अगर मुझसे कोई बदतमीजी हो गई हो, तो उसके लिये मै माफी चाहता हूँ। मै गरीबी का मारा हुआ एक विद्यार्थी हूँ—पैसे की तगी की वजह से मैने पढाई छोड दी है। लेकिन मुझे कुछ ही दिनो मे पैसे मिल जायेगे। • मेरी माँ ने लिखा है कि वह मुझे पैसे भेजेगी—तभी मैं अपना कर्ज चुका दूँगा। मेरी मकान-मालकिन बडी दयालु स्त्री है, लेकिन पिछले चार महीनो से उसे किराया नही मिला। मेरी ट्यूशने भी छूट गई है, इसलिये उसने मुझे खाना भेजना भी बद कर दिया है मुझे इस प्रोनोट की बात समझ में नही आई। आप ही बताइये इस हालत मे मै कैसे कर्ज चुका सकता हूँ • • ?"

"इससे हमे कोई सरोकार नही," हैडक्लर्क ने टिप्पणी की।

"माना कि आपको कोई सरोकार नही, लेकिन मुझे पूरी बात तो कह लेने दीजिये," रास्कोलनिकोव ने निकोदिम फोमिच, और विशेष-रूप से इल्या पैत्रोविच की ओर देखते हुए कहा, जो जानबूझ कर व्यस्तता का अभिनय कर रहा था, "मै पिछले तीन सालो से उसी

मकान मे रह रहा हूँ · सच पूछिये तो शुरू मे मैने उसकी लडकी से शादी करने का वायदा किया था सिर्फ जबानी वायदा मुझे उस लड़की से प्रेम नही था · इसे आप जवानी की उमग कह सकते है। मेरे कहने का मतलब यह है कि उन दिनो मेरी मकान-मालकिन दिल खोलकर मुझे कर्ज देती थी और मै बडी लापरवाही से खर्च करता था · उन दिनो मै · ''

"हमे तुम्हारे निजी मामलो मे कोई दिलचस्पी नही," इल्या पैत्रोविच ने विजेता के गर्व से कहा। लेकिन रास्कोलनिकोव ने उसकी बात सुने बगैर ही अपना कहना जारी रखा।

"माफ कीजिए, अपनी स्थिति को मै ही जानता हूँ यह सब कैसे हुआ ? मै आपसे सहमत हूँ कि यह बाते निजी और फिजूल है। पिछले बरस उस लडकी को टाइफस हो गया और वह चल बसी। मै पहले की तरह मकान मे रहता रहा। मकान-मालकिन ने स्नेह-पूर्वक मुझ से कहा कि उसे मुझ पर पूरा विश्वास है, फिर भी बेहतर होगा अगर मै उसे एक सौ पन्द्रह रूबल का प्रोनोट लिखकर दे दूँ। उसने मुझे विश्वास दिलाया था कि इसके बाद वह मुझे कभी तँग न करेगी, और न उस प्रोनोट का इस्तेमाल ही करेगी। अब · जब मेरे पास ट्यूशने नही रही और मुझे खाना तक नसीब नही होता, उसने मेरे विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की है। आप ही बताइए मै क्या करूँ ?"

इल्या पैत्रोविच ने उसे बीच मे टोककर कहा, "इन सब किस्सो से हमे कोई मतलब नही। तुम्हे लिखकर वायदा करना होगा। तुम्हारे प्रेम-सबन्धो और दूसरी करुण कहानियो से हमे क्या सरोकार ?"

"बस-बस तुम बडे कठोर हृदय हो," निकोदिम फोमिच ने लज्जित स्वर मे कहा।

"लिखो," हैडक्लर्क ने रास्कोलनिकोव को आदेश दिया।

"क्या लिखूँ ?"

"मै जो बोलू वही लिखो।"

रास्कोलनिकोव को लगा कि हैडक्लर्क उसे अत्यन्त क्षुद्र समझकर उसका अपमान कर रहा है। लेकिन अगले ही क्षण उसे अपने मान-अपमान की कोई चिन्ता न रही। उसे दुख हुआ कि उसने अपनी कहानी उन लोगो को क्यो सुनायी। अगर उस समय कमरे मे पुलिस अधिकारियो की बजाय उसके नजदीकी रिस्तेदार मौजूद होते तब भी वह उनसे अपने मन की बात न कह सकता। उसके मन मे एक विचित्र निराशा और अन्यमनस्कता भर गयी थी। इसका कारण इल्या पैत्रोविच का अपमानजनक व्यवहार या अपनी दरिद्रता का वर्णन नही था। ओह, अब उसे अपनी दुर्दशा, लोगो के अहकार, अफसरो, औरतो और कर्जों से क्या सरोकार रह गया था! इस समय अगर उसे जिन्दा जलाये जाने की सज़ा भी सुनायी जाती तो वह चुपचाप बैठा रहता। न जाने उसे क्या हो रहा था। उसे विश्वास हो गया कि वह पुलिस के अफसरो को अपनी भावुकता से प्रभावित नही कर सकता। अगर पुलिस अफसर न होकर वे उसके सगे भाई-बहन भी होते तो उन्हे समझाना भी उतना ही कठिन होता। ऐसे विचित्र सवेदन उसके मन मे कभी नही पैदा हुए थे—ऐसे यन्त्रणाजनक सवेदन जो विचार के रूप मे नही बल्कि तीव्र अनुभूति के रूप में उत्पन्न हुए थे।

हैडक्लर्क ने उससे लिखवाया कि वह अभी कर्ज़ अदा नही कर सकता और अमुक तारीख तक शायद कर सकेगा। इस बीच वह शहर छोडकर कहीं नही जायगा और न अपनी सम्पत्ति बेचेगा, आदि-आदि।

"लेकिन तुम तो कलम तक ठीक से हाथ में नही पकड सकते। क्या तुम्हारी तबियत ज्यादा खराब है?"

"हाँ, मेरा सर चकरा रहा है। और क्या लिखना होगा?"

"बस, अब अपने दस्तखत कर दो।"

हैडक्लर्क ने उससे कागज़ ले लिया और दूसरे काम मे व्यस्त

हो गया।

रास्कोलनिकोव ने कलम लौटा दिया, लेकिन दफ्तर से जाने की बजाय वह मेज पर कोहनियाँ टेंककर बैठ गया। उसे लगा जैसे उसकी खोपडी मे कीले ठोकी जा रही है। उसके मन मे एक विचित्र इच्छा उत्पन्न हुई। उसने चाहा कि निकोदिम फोमिच से जाकर कल की सारी घटना बता दे और उसे अपने कमरे मे ले जाकर सारी चीजे दिखा दे। वह सचमुच उठकर निकोदिम फोमिच के पास जाने लगा। वह अपने मन का भार हल्का करना चाहता था। लेकिन निकोदिम फोमिच और इल्या पैत्रोविच की बातचीत सुनकर उसके कदम ठिठक गये।

"देख लेना वे दोनो साफ छूट जायेगे। सारी कहानी असगतियो से भरी पडी है। अगर यह उनकी करतूत होती तो वे चौकीदार को क्यो बुलाते ? क्या अपनी जान आफत मे डालने के लिए ? नही, इतनी चालाकी आसान नही है। इसके अलावा विद्यार्थी पेस्त्र्याकोव को दोनो चौकीदारो ने अपने तीन साथियो के साथ फाटक मे घुसते देखा था। उस बेचारे को तो बुढिया के फ्लैट का रास्ता तक मालूम नही था। भला ऐसा इरादा होता तो वह चौकीदार से पूछता ? रही कौश की बात, सो वह पूरे पौने आठ बजे तक नीचे सुनार की दुकान मे था। जरा सोचकर देखो··"

"लेकिन माफ कीजिए। आप मुझे सिर्फ एक बात बताइए। उन दोनो का कहना है कि जब वे दोनो ऊपर पहुँचे, उस समय दरवाजा भीतर से बद था। फिर तीन मिनट बाद जब वे चपरासी को लेकर लौटे तो दरवाज़ा कैसे खुला हुआ मिला ? यह तो साफ बात है कि हत्यारा अन्दर छिपा होगा, और अगर कौश बेवकूफी करके नीचे न चला जाता तो हत्यारा ज़रूर पकडा जाता। मौका पाकर हत्यारा वहाँ से खिसक गया होगा। कौश बार-बार अपने शरीर पर क्रॉस का चिन्ह बनाकर कहता है, 'अच्छा हुआ, ईश्वर ने मेरी जान बचा दी, नही तो

वह जरूर कुल्हाडी से मेरा सर काट देता।' वह अपनी जान बचने की खुशी मे गिरजे मे विशेष प्रार्थना का आयोजन कर रहा है · हा, हा, हा !"

"लेकिन किसी ने हत्यारे को नही देखा !"

"मुमकिन है, न देखा हो, क्योकि वह मकान निरी भूल-भुलैया है," हैडक्लर्क ने राय दी।

"अब तुम्हारी समझ मे बात आ गयी ?" निकोदिम फोर्मिच ने पूछा।

"जी नही, बात बिल्कुल साफ नही हुई," इल्या पैत्रोविच अपनी बात पर अडा रहा।

रास्कोलनिकोव अपना हैट उठाकर बाहर जाने लगा, लेकिन रास्ते में ही ··।

जब उसे होश आया तो उसने देखा कि वह एक कुरसी पर बैठा है और उसके इर्द-गिर्द कई लोग खडे है। उसे गिलास से पीले रग की दवाई पिलाई जा रही थी। निकोदिम फोमिच उसके सामने खडा गौर से उसके चेहरे की ओर देख रहा था। रास्कोलनिकोव कुरसी से उठ खडा हुआ।

"क्या तुम बीमार हो ?" निकोदिम फोमिच ने तेज आवाज में पूछा।

"लिखते समय भी इसके हाथ बुरी तरह काँप रहे थे," हैडक्लर्क ने अपना काम शुरू करते हुए कहा।

"क्या तुम बहुत दिनो से बीमार हो ?" इल्या पैत्रोविच ने ऊँची आवाज में पूछा। रास्कोलनिकोव को होश मे आया देखकर वह उससे कुछ दूर हट गया था।

"मै कल से बीमार हूँ," रास्कोलनिकोव बुदबुदाया।

"कल तुम घर से बाहर निकले थे ?"

"हाँ।"

"इस बीमारी की हालत मे भी?"

"हाँ।"

"किस वक्त?"

"सात बजे के करीब।"

"मै पूछ सकता हूँ कि तुम कहाँ गये थे?"

"सडक पर टहलने।"

"कैसा सीधा और सक्षिप्त जवाब है।"

रास्कोलनिकोव का चेहरा एकदम सफेद पड गया। उसने अपनी बुखार से जलती हुई आँखो से इल्या पैत्रोविच की ओर देखकर कुछ कहा।

"यह बेचारा ठीक से खडा भी नही हो सकता, और तुम ••," निकोदिम फोमिच ने अपने सहकारी को समझाया।

"इसमे कोई हर्ज नही," इल्या पैत्रोविच ने विचित्र ढग से उत्तर दिया।

निकोदिम फोमिच प्रतिवाद में शायद कुछ और भी कहता, लेकिन हैडक्लर्क के चेहरे का भाव देखकर वह चुप हो गया। कमरे मे एक विचित्र चुप्पी छा गई।

"अच्छी बात है, तुम जा सकते हो। हम तुम्हे और अधिक यहाँ नही रोकना चाहते।"

रास्कोलनिकोव उठकर बाहर आ गया। उसने सुना कि उसके बाहर निकलते ही निकोदिम फोमिच ऊँची आवाज़ मे उसके बारे मे कोई सवाल पूछ रहा था।

गली मे पहुँचते ही उसकी कमजोरी काफूर हो गई।

"तलाशी—अब फौरन मेरे कमरे की तलाशी होगी। उन ज़ालिमो को शक हो गया है।" इस विचार के साथ ही उसके मन पर आतक छा गया।

२

मान लो, कही मेरे पहुँचने से पहले ही अगर वे वहाँ पहुँच गये, तब क्या होगा ?" रास्कोलनिकोव रास्ते मे सोच रहा था ।

लेकिन कमरे में पहुँचकर उसने देखा कि सब चीजे पूर्ववत् अस्त-व्यस्त पडी है, यहाँ तक कि नस्तास्या भी कमरे की सफाई करने नही आई थी । लेकिन वह सोचने लगा, उसने सब चीजें दीवार के छेद में छिपाने की मूर्खता क्यो की थी ?

उसने कोने मे जाकर सब चीज़े निकाली । कुल जमा आठ अदद थे, दो इयरिंग की डिबियाँ और चार छोटी चमडे की डिबियाँ, बाकी चीज़ें अखबार के कागज़ मे लिपटी थी, जिन्हे बिना देखे ही उसने कोट की जेबो में डाल लिया और फिर बटुआ उठाकर वह कमरा खुला छोड़कर बाहर चला गया । थकान के बावजूद भी वह तेज़ कदमो से चल रहा था । उसे विश्वास था कि आध घटे के भीतर ही पुलिस उसका पीछा करने पहुच जायेगी, इसलिए उसे फौरन सारी चीजे कही छिपा देनी चाहियें, और डिबियो को कहीं फेंक देना चाहिये । लेकिन कहाँ··?

इसका फैसला वह बहुत दिन पहले से ही कर चुका था । "नहर में फेकने से किसी को पता तक न चलेगा ।" यह बात उसने रात को

भी सोची थी, लेकिन उन चीजो को रफा-दफा करना आसान न था। वह आध घटे तक नहर के किनारे चक्कर काटता रहा, लेकिन चीजे फेकने का साहस उसे न हुआ, क्योकि किनारे पर किश्तियाँ खडी थी और सीढियो पर कुछ औरते बैठी कपडे धो रही थी। चारो तरफ से लोगो की नजरे उस पर पड सकती थी और उसे नहर में चीजे फेकते देखकर लोगो के मन मे सदेह होना स्वाभाविक था। मान लो अगर डिबियाँ डूबने की बजाय, सतह पर तैरने लगे, तब क्या होगा ? उसे लगा, सब लोग उसकी ओर मुड-मुडकर देख रहे है, जैसे लोगो को इसके अलावा और कोई काम ही न हो। "हो सकता है यह मेरी कल्पना मात्र हो" उसने मन ही मन सोचा।

अन्त मे उसे ख्याल आया कि नेवा नदी के किनारे जाना अधिक उपयुक्त होगा। वहा भीडभाड भी कम होती है, और लोगो की नजरे भी उस पर नही पडेगी। उसे इस बात पर गुस्सा आया कि उसने इतना समय व्यर्थ ही सोच-विचार मे क्यो नष्ट कर डाला। वह इस समय भुलक्कड और उदासीन हो गया था। साथ ही वह यह भी जानता था कि उसे और अधिक समय न खोकर फौरन अपनी योजना पूरी करनी चाहिए।

वह नदी की ओर चल पड़ा, लेकिन रास्ते मे वह सोचने लगा, "नदी किनारे इस वक्त जाने से क्या फायदा ? क्यो न नहर के किनारे वापस जाकर किसी झाडी के नीचे सब चीजे छिपा दूँ और उस जगह पर निशान भी लगा दूँ।" वह कोई स्पष्ट निर्णय करने मे असमर्थ था, फिर भी उसे यह योजना बहुत पसद आयी। लेकिन उसकी किस्मत मे लौटकर जाना नही लिखा था। नदी के किनारे उसे दो इमारतो के बीच एक खाली जगह दिखायी दी, जहाँ हर तरह की गन्दगी का ढेर लगा हुआ था। कोने में पत्थर का बना हुआ एक टूटा-फूटा ओसारा था, जो शायद किसी वर्कशॉप के पिछवाडे का हिस्सा था। सारी जगह

कोयले की छान से काली हो रही थी। उसने सोचा, इससे अच्छी जगह कहाँ मिलेगी। आसपास कोई न था। उसने फाटक के पास एक गड्ढा देखा। आमतौर पर गाडीवानो और मजदूरो के बाडो मे अक्सर ऐसे गड्ढे होते है। दीवार के ऊपर खडिया से लिखा था, "यहाँ पर खडा होना सख्त मना है।" उसने सोचा, "अच्छा है, किसी को मुझ पर शक नही होगा। मै सब खाली डिबिया यहा फेककर जा सकता हूँ।" उसने जेबो मे हाथ डालकर एक बार फिर चारो ओर नजर दौडायी। गड्ढे और दीवार के बीच मे एक खुरदरा पत्थर रखा था जिसका वजन मन भर के करीब होगा। दीवार के पार गली थी, जिसमे से आने-जाने वालो की आवाज उसे साफ सुनायी दे रही थी। उसने निश्चय किया कि उसे जल्द ही अपना काम करके वहाँ से चल देना चाहिए।

उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर पत्थर को एक ओर सरकाया। पत्थर के नीचे जमीन मे एक गड्ढा था। उसने फौरन सारी डिबियाँ जेबो से निकालकर उस गड्ढे मे भर दी। सब से ऊपर बटुआ रखकर उसने पत्थर को फिर अपनी जगह पर सरका दिया। अब उसकी चीजे बिल्कुल सुरक्षित थी।

इसके बाद वह सडक पर चला आया। इस समय वह प्रसन्नता से गद्गद हो रहा था। सुबह पुलिस के दफ़्तर मे भी शुरू मे उसे ऐसी ही प्रसन्नता हुई थी। 'अब किसी के पास क्या सबूत हो सकता है? भला पत्थर के नीचे झाककर देखने का ख्याल किसे आएगा? शायद जब से यह इमारत बनी है, तब से वह पत्थर वहाँ ज्यो का त्यो पडा है और न जाने कब तक यो ही पडा रहेगा। अगर यह चीजे बरामद हो भी गई तो मुझ पर शक किसे होगा? मैने सारे सबूत नष्ट कर दिए हैं।' उसे मन ही मन अपनी जीत पर हँसी आ गयी, और वह मुस्कराता हुआ आगे बढने लगा। लेकिन जब वह पार्क के नजदीक पहुँचा, जहाँ उसने परसो उस अभागी लडकी को देखा था, तो उसकी हँसी रुक गयी और

कई तरह के विचार उसके मन मे उठने लगे। उसे लगा कि वह कभी उस बेच के निकट से नही गुजर सकेगा, जहा वह परसो बैठा था और न उस मूँछो वाले कान्स्टेबल की सूरत देख सकेगा, जिसे उसने बीस कोपेक दिए थे। वह पार्क की ओर एक क्षोभ-भरी दृष्टि डालकर आगे चल पडा। इस समय उसे लगा कि उसकी विचारधारा किसी विशेष बिन्दु पर केन्द्रित होती जा रही है। दो महीने बाद आज पहली बार उसे इस बात का अनुभव हुआ कि उसके विचारो का भी कोई केन्द्र हो सकता है।

"भाड मे जाय यह सब," उसे गुस्सा आगया, "जो होना था सो हो चुका, अब मेरी जिन्दगी नए सिरे से शुरू हो गयी। हे ईश्वर ·· मैने आज कितने झूठ बोले है। बेचारे इल्या पैत्रोविच से बिना कारण ही मै उलझ पडा। लेकिन इससे क्या बनता-बिगडता है। मुझे उनकी क्या परवाह है, और उन्हे मेरी क्या परवाह हो सकती है? नही, यह बात नही है। मै तो कोई और बात सोच रहा था।"

सहसा वह ठिठक गया। एक अत्यन्त सीधा-सादा और अप्रत्याशित प्रश्न उसे परेशान करने लगा।

"अगर मैने यह सब पागलपन मे नही, बल्कि जानबूझकर किया है, अगर सचमुच मेरे सामने कोई निश्चित उद्देश्य था तो फिर मैने बटुए को खोलकर भी क्यो नही देखा? क्या इसी लिए मैने इतनी मानसिक यत्रणाये सही है और इतना जघन्य कार्य किया है? अभी कुछ देर पहले तो मै सारी की सारी चीजो को बिना सोचे-समझे नदी मे फेकने के लिए तैयार हो गया था · ऐसा क्यो हुआ?"

लेकिन यह सब तो हुआ ही था और यह सब उसे पहले से ही मालूम था। यह कोई नयी समस्या नही थी। परसो रात को निश्चय करते समय भी उसे मालूम था कि यह सब होने वाला था ·· वह सब कुछ जानता-समझता था, यहाँ तक कि कल सन्दूक मे से गहने

निकालते समय भी यह बात उसके मन मे उठी थी। यह सब सच था।

"शायद मै बहुत बीमार हूँ, और अत्यधिक चिन्ता ने मेरा मानसिक सन्तुलन गडबडा दिया है। मुझे पता नही मैं क्या कर रहा हूँ परसो से, शायद उससे भी पहले से सिर्फ एक ही बात के बारे मे सोचता रहा हूँ• जब मै स्वस्थ हो जाऊँगा तो शायद इन चिन्ताओ से भी मुक्ति मिल जाएगी ••लेकिन अगर मेरी हालत न सुधरी तब ? हे ईश्वर! इस सारे कांड से मेरे मन मे कितनी ग्लानि पैदा हो गई है। वह लगातार चलता जा रहा था। उसे अपना ध्यान बँटाने के लिए किसी चीज़ की सख्त जरूरत थी, लेकिन किसकी, यह वह स्वय भी नही जानता था। एक विचित्र और तीव्र अनुभूति ने उसे जकड लिया था। अपने आस-पास की हर चीज को देखकर उसके मन मे भयकर ग्लानि हो रही थी। आने-जाने वाले हर आदमी की सूरत और चाल से उसके मन मे घृणा उत्पन्न हो जाती थी। अगर इस समय कोई उससे बात करना चाहता तो वह निश्चय ही उसके मुँह पर थूक देता या उसे काट खाता।

वैसीलेव्स्की ओस्त्रोव के पुल के पास आकर उसके कदम रुक गए और वह सोचने लगा • "अरे राजुमिहिन भी तो यही रहता है••• मै जानबूझ कर इस ओर आ निकला हूँ•या मेरी टाँगे मुझे बरबस इधर खीच लायी है ? कोई हर्ज नही। परसो मैने निश्चय किया था कि मै आज के रोज आकर उसे मिलूँगा। अच्छा हुआ, मैं आगया। अब मै और आगे नही चल सकता।"

पाचवी मजिल पर पहुँचकर उसने एक दरवाजा खटखटाया।

राजुमिहिन उस समय अपनी कोठरी•मे बैठा कुँछ लिख रहा था। उसने उठकर दरवाजा खोला। पिछले चार महीनो से दोनो दोस्तो में मुलाकात नही हुई थी। राजुमिहिन ने एक फटा-पुराना ड्रेसिग गाउन पहन रखा था। उसके पैरो में मोजे तक न थे। बिना हजामत के उसकी

दाढी बढ आयी थी ।

"अरे तुम !" उसने चकित दृष्टि से रास्कोलनिकोव को सर से पाँव तक देखा । फिर ख़ुशी से सीटी बजायी । "तुम्हारा हुलिया क्या से क्या हो गया है । तुमने मुझ से मिलना-जुलना एकदम छोड रखा है, आखिर क्यो ? बैठ जाओ, तुम बहुत थके मालूम देते हो ।"

रास्कोलनिकोव टूटे हुए सोफे पर बैठ गया । उसके दोस्त ने कहा, "तुम बहुत ज्यादा बीमार हो ।" और वह उसकी नाडी देखने लगा । रास्कोलनिकोव ने झटककर अपना हाथ अलग कर लिया ।

"घबराने की कोई बात नही है । मै इसीलिए तुम्हारे पास आया हूँ । इन दिनो मेरे पास कोई ट्यूशन नही है ··· मै चाहता था लेकिन अब मै ट्यूशने नही चाहता ।"

"अरे तुम्हे तो सरसाम हो गया मालूम होता है," राजुमिहिन ने घबराकर कहा ।

"नही, मै बिल्कुल ठीक हूँ," कहकर रास्कोलनिकोव उठकर खडा हो गया । राजुमिहिन के घर की सीढियाँ चढते हुए उसने कल्पना न की थी कि सचमुच उन दोनो की मुलाकात होगी । इस समय वह किसी से भी बातचीत करने की मूड मे नही था । उसे रह-रहकर अपने ऊपर क्रोध आ रहा था ।

"गुडबाई," वह सहसा उठकर दरवाज़े की ओर चल दिया ।

"ठहरो, ठहरो ! तुम बडे सनकी हो ।"

"मैं नही ठहरना चाहता," कहकर उसने अपना हाथ छुडा लिया ।

"तो फिर तुम यहाँ आये किसलिए थे ? पागल तो नही हो गये ? ··· इसमे तो मेरा अपमान है ! मै तुम्हे इस तरह हर्गिज़ नही जाने दूँगा ।"

"मै तुम्हारे पास इसलिए आया था कि तुम्हारे सिवा कोई मेरी मदद नही कर सकता ··· क्योंकि तुम हमदर्द हो । मेरा मतलब है कि

समझदार हो। तुम्हारा दिमाग तेज है · लेकिन अब मै सोचता हूँ कि मुझे कुछ नही चाहिए, सुना तुमने ? कुछ नही चाहिए न किसी की मदद और न किसी की हमदर्दी। मै अकेला ही सब समझ लूँगा · अकेला। बस बस, मेरा हाथ न पकडो।"

"अमा, एक मिनट रुको तो सही ! इस समय तुम बिल्कुल पागल दिखायी दे रहे हो। इन दिनो मेरे पास भी कोई ट्यूशन नही है, लेकिन मै इसकी परवाह नही करता। मुझे पुस्तक-विक्रेता हैरूवीमोफ का बड़ा सहारा है। वह आजकल विज्ञान की पुस्तके छाप रहा है और वे धडा-धड बिक रही है। किताबो के शीर्षक भी बडे आकर्षक है। तुम मुझे हमेशा मूर्ख समझते रहे। लेकिन ईश्वर की कसम, दुनिया मे मुझ से बडे मूर्ख भी है। सच पूछो तो इस योजना मे मेरा बडा हाथ रहा है। यह देखो, दो जर्मन पुस्तको के शीर्षक। कितने बेहूदा है। लेखक ने प्रश्न पूछा है कि क्या स्त्री इन्सान होती है और साबित किया है कि हाँ वह इन्सान होती है। हैरूवीमोफ नारी-स्वातन्त्र्य के प्रचार के बहाने इस पुस्तक को छापेगा और मैं इसका अनुवाद करूँगा। हम इसके शीर्षक को और भी लम्बा-चौडा करके छापेगे और कीमत रखेगे सिर्फ आधा रूबल। फिर तुम देखना ! मुझे इसकी भूमिका का अनुवाद करने के छै रूबल मिल चुके है। इस पुस्तक के बाद ह्वेल मछलियो के बारे मे एक पुस्तक का अनुवाद छपेगा। उसके बाद रूसो की पुस्तक 'कन्फेशन्स' मे से चटपटे परिच्छेद हमने पहले से ही चुन रखे है। किसी ने हैरूवीमोफ के दिमाग मे यह बात बैठा दी है कि रूसो दूसरा रैंडीशेव था। भला मै क्यो इस बात का खडन करता ? भाड मे जाय प्रकाशक। अच्छा तो यह बताओ तुम 'क्या औरत इन्सान है ?' की भूमिका के दूसरे भाग का अनुवाद कर दोगे ? अगर करना चाहो तो फौरन कागज-कलम लेकर बैठ जाओ ! कागज़-कलम प्रकाशक की ओर से मुफ्त मिलता है और यह लो तीन रूबल। मुझे छै रूबल पेशगी मिले थे, आधा

हिस्सा तुम्हारा सही। भूमिका पूरी करने के बाद तुम्हे तीन रूबल और मिलेगे। यह मत सोचना कि मै तुम पर मेहरबानी कर रहा हूँ। सच पूछो तो मै किसी सहयोगी की तलाश मे था। मेरी लिखावट बडी अशुद्ध है और मेरा जर्मन भाषा का ज्ञान भी पर्याप्त नही है। इस समय किसी न किसी तरह गुजारा तो करना ही है। शायद कभी अच्छे दिन भी आयेगे। तो तुम अनुवाद करोगे न ?"

रास्कोलनिकोव ने चुपचाप पुस्तक और तीन रूबल ले लिए और वहाँ से चला आया। राजुमिहिन भौचक्का होकर उसकी ओर ताकता रहा लेकिन दूसरी गली के पास पहुँचकर रास्कोलनिकोव फिर लौट आया और उसने जर्मन पुस्तक और तीन रूबल मेज पर रख दिए।

राजुमिहिन ने गुस्से मे भरकर कहा, "यह क्या नाटक खेल रहे हो ? तुम सचमुच पागल हो गये हो क्या और अपने साथ मुझे भी पागल बनाना चाहते हो ? तुम यहाँ किस लिए आये थे ?"

"मै अनुवाद नही चाहता।" रास्कोलनिकोव सीढियो से नीचे उतरते हुए बुदबुदाया।

"आखिर तुम चाहते क्या हो ?" राजुमिहिन ने चिल्लाकर पूछा।

रास्कोलनिकोव ने कोई उत्तर न दिया। वह नीचे उतरने लगा।

"अरे सुनो तो, तुम रहते कहाँ हो ?"

इसका भी कोई उत्तर न मिला।

"तो जाओ जहन्नुम मे !"

लेकिन रास्कोलनिकोव गली मे आ पहुँचा था। निकोलाईव्स्की पुल से गुज़रते समय एक अप्रिय घटना हुई। एक गाडीवान् ने उसे दो-तीन बार चिल्लाकर एक ओर हट जाने के लिए कहा, लेकिन रास्कोलनिकोव ने उसकी आवाज़ नही सुनी। इस पर गाडीवान ने सडाक से उसकी पीठ पर एक चाबुक दे मारी। रास्कोलनिकोव क्षुब्ध होकर रेलिग के पास जा खडा हुआ (किसी अज्ञात कारण से वह अभी

तक भीड के बीचोबीच चल रहा था) वह क्रोध से दात पीसने लगा। उसे देखकर लोग फब्तियाँ कसने लगे। "अब बच्चू की अक्ल ठिकाने आयी !"

"ज़रूर यह कोई जेबकतरा है !"

"जानबूझकर गाडी के नीचे आना चाहता था, जी ! शराबी बनने की कोशिश कर रहा है !"

"कई लोगो ने यह पेशा बना रखा है !"

लेकिन जब वह रेलिग के पास खडा अपनी पीठ सहला रहा था तो उसे लगा कि किसी ने उसकी हथेली पर कुछ सिक्के रख दिये है। उसने मुडकर देखा, एक बुढिया और उसकी बेटी, जिसके हाथ मे हरे रग का छाता था, उसके पीछे खडी थी।

"लो यह लो, प्रभु यीशु तुम्हारा भला करेगे।"

रास्कोलनिकोव ने सिक्के ले लिए और दोनो औरते आगे निकल गयी। उसके फटे हुए कपडो को देखकर उन्होने उसे भिखारी समझा था और उसकी पीठ पर चाबुक पडते देखकर उन्हे दया आ गयी थी। इसलिए वे उसे बीस कोपेक दे गयी थी।

रास्कोलनिकोव जोर से मुट्ठी भीचकर नेवा नदी के किनारे आ कर खड़ा हो गया और राजमहल की ओर देखने लगा। आकाश मे एक भी बादल न था। नदी का पानी भी गहरे नीले रंग का था। धूप में गिरजे की गगनचुम्बी नुकीली मीनार चमक रही थी और निर्मल आकाश मे उस पर की गयी पच्चीकारी साफ दिखायी दे रही थी। रास्कोलनिकोव की पीठ का दर्द कम हो गया था और वह किसी नये अज्ञात विचार में डूबा हुआ शून्य दृष्टि से नदी के पार देख रहा था। अपने विद्यार्थी-जीवन में वह सैकड़ो बार इस स्थान पर आकर खडा हुआ था, और उस शानदार दृश्य को देखकर उसके मन में असख्य रहस्यमयी भावनाएँ उठी थी। यहाँ पहुँचते ही वह गुमसुम हो

जाता था। यह वैभवशाली सौन्दर्य उसे न जाने क्यो निर्जीव मालूम देता था—इस पहेली का वह कभी अर्थ नही समझ पाया था। वही पुराने विचार आज भी उसके मर्न मे उठ रहे थे। उसे यह विचित्र मालूम हुआ कि वह कैसे अनजाने मे ही अपने चिरपरिचित स्थान पर आकर खडा हो गया और कैसे वही विचार फिर उसके दिमाग मे आने लगे, जो पहले भी आया करते थे ··· सिर्फ कुछ दिन पहले। उसका हृदय कचोट उठा। उसका सारा अतीत, पुराने विचार, समस्याएँ और सवेदन उसकी स्मृति मे ताजे हो गये, सब चीज़े···। उसे लगा कि वह आकाश मे उडा जा रहा है और पुरानी तस्वीरे एक-एक करके मिटती जा रही है। सहसा उसे अपनी मुट्ठी मे बद सिक्को का स्पर्श अनुभव हुआ। उसने सिक्के नदी मे फेक दिए और घर की ओर चल पडा। उस क्षण उसे लगा जैसे उसने सारे ससार से अपना नाता तोड लिया हो। छै घटे आवारागर्दी के बाद शाम को वह कैसे और किस रास्ते से घर पहुँचा, इसका उसे होश नही था। घर पहुँचते ही उसने कपडे उतारे और थके-मादे घोडे की तरह सोफे पर गिर पडा। ओवर-कोट ओढकर वह स्मृतियो मे विलीन हो गया ··। अँधेरा होने पर किसी की चीख सुनकर उसकी नीद खुल गयी। हे ईश्वर, कैसी भयानक चीख थी वह! नीचे से किसी के रोने-चिल्लाने, गाली बकने और मारपीट की आवाजे आ रही थी।

रास्कोलनिकोव ने ऐसी खौफनाक आवाजे कभी नही सुनी थी। ये आवाज़े और भी तेज होती गयी। इनमे मकान-मालकिन की आवाज़ भी शामिल थी। वह ऊँचे स्वर मे अनाप-शनाप बक रही थी। उसके सारे शब्द तो सुनायीं नही दे रहे थे, लेकिन यह स्पष्ट था कि कोई ज़ीने में खड़ा होकर उसे पीट रहा था और वह मिन्नत-चिरौरी कर रही थी। एक खौफनाक मर्दानी आवाज़ भी सुनायी दे रही थी। सहसा रास्कोलनिकोव पत्ते की तरह काँपने लगा। उसने मर्दानी

आवाज को पहचान लिया था । वह आवाज इल्या पैत्रोविच की थी । इल्या पैत्रोविच उसी घर मे आकर मकान-मालकिन को पीट रहा था, और बार-बार बुढिया का सर सीढी पर पटक रहा था ! यह कैसे हुआ ? दुनिया मे कैसा अँधेर मचा है ! आस-पास के मकानो के लोग भी वहाँ जमा हो गये थे और उसे दरवाजे खडखडाने, जीनो मे लोगो के आने-जाने और उनकी आवाजे सुनायी देने लगी । "लेकिन यह सब क्या हो रहा है ?" वह सोच रहा था । उसे लगा कि वह सचमुच पागल हो गया है । नही, यह उसका भ्रम नही था । "अगले ही क्षण सब लोग ऊपर आ जायेंगे, निश्चय ही · यह सारा शोरगुल कल वाली घटना · हे ईश्वर ।" वह शायद उठकर दरवाजे की सिटखनी बद कर लेता, लेकिन उसके हाथो मे हिलने-डुलने तक की शक्ति नही रही थी । फिर ऐसा करना व्यर्थ भी तो होता । आतक से उसका हृदय बरफ की तरह ठडा हो गया · · लेकिन यह सारा शोरगुल दस मिनट के बाद धीमा पडने लगा । मकान-मालकिन अब भी कराह रही थी । इल्या पैत्रोविच गालियाँ बके जा रहा था कुछ देर बाद वह भी चुप हो गया । "क्या वह सचमुच यहाँ से चला गया ?" हाँ, मकान-मालकिन भी रोती-बिलखती हुई चली गयी थी· उसके कमरे का दरवाजा बद होने की आवाज आयी थी । लोग भी ऊँचे स्वर मे बहसे करते हुए और कुछ फुसफुसाते हुए अपने घरो में लौट रहे थे । शायद सारे ब्लॉक के लोग वहाँ जमा हो गये थे । "लेकिन यह सब कैसे हुआ ? वह यहाँ क्यो आया था ? क्यो ? क्यो ?"

रास्कोलनिकोव थकान से चूर होकर फिर सोफे पर लेट गया । लेकिन वह अपनी आँखे न बन्द कर सका । एक घटे तक उसके मन मे आतक छाया रहा । सहसा उसके कमरे मे तेज़ रोशनी फैल गयी । नस्तास्या हाथ मे मोमबत्ती और शोरबे का प्याला लेकर उसके कमरे मे आयी । उसकी ओर गौर से देखते हुए नस्तास्या ने खाने की चीज़ें मेज़

पर रख दी।

"मै जानती हूँ कि तुमने कल से कुछ नही खाया। आज दिन भर तुम भटकते फिरे हो और अब बुखार से कॉप रहे हो।"

"नस्तास्या ·· वे लोग मकान-मालकिन को किस लिए पीट रहे थे ?"

"मकान-मालकिन को कौन पीट रहा था ?"

"अभी ··आध घटे पहले। असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट इल्या पैत्रोविच जीने मे खडा था वह मकान-मालकिन को इस तरह क्यो सता रहा था ? वह यहाँ क्यो आया था ?"

नस्तास्या चुपचाप उसके चेहरे की ओर ताकती रही। उसे अपनी ओर इस तरह घूरते देखकर रास्कोलनिकोव भयभीत हो उठा।

"नस्तास्या, तुम बोलती क्यो नही ?" उसने क्षीण स्वर मे पूछा।

"इसकी वजह खून है," उसने धीरे से उत्तर दिया।

"खून ? कैसा खून ?" रास्कोलनिकोव का चेहरा सफेद पड गया और उसने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया।

नस्तास्या चुपचाप उसकी ओर ताकती रही।

"मकान-मालकिन को तो किसी ने नही पीटा," उसने अत मे दृढ स्वर मे कहा।

वह भौचक्का हो गया। उसकी साँस फूलने लगी।

"मैने खुद सारी बाते सुनी है · मै सोया नही था मै बैठा था," सहसा उसका स्वर क्षीण हो गया। "मै बहुत देर तक सुनता रहा जब असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट आया आस-पडोस के फ्लैटो के सब लोग जीनो से उतरकर जमा हो गये थे।"

"यहाँ तो कोई नही आया। तुम्हारे सर मे खून चढ गया है जिससे तुम्हारे कान बजते है। जब सर मे खून जम जाता है, तब आदमी इस तरह की कल्पनाएँ करने लगता है। तुम कुछ खाओगे न ?"

वह चुप रहा। नस्तास्या उसके पास खडी उसको ध्यान से देखती रही।

"मुझे प्यास लगी है · नस्तास्या!"

नस्तास्या नीचे जाकर सफेद मिट्टी की सुराही मे पानी ले लायी। रास्कोलनिकोव ने ठडे पानी का एक घूँट पिया। कुछ पानी उसने अपनी गर्दन पर गिरा लिया और इसके साथ ही विस्मृति के गर्त मे खो गया।

३

वह बेहोश नही हुआ था, लेकिन तेज बुखार के कारण उसे सर-साम हो गया था। बीच-बीच मे जब उसे होश आता था तो उसे लगता था जैसे बहुत से लोग उसे घेरे खडे है और उसे कही ले जाना चाहते है। उसे लगता कि कमरे मे बहसे छिडी है और फिर सब लोग उसे अकेला छोडकर बगल के कमरे मे चले गये है और वहाँ उसके खिलाफ षड्यत्र रच रहे है। उसे धमका रहे है और उसका मजाक उडा रहे है। उसने नस्तास्या को अपने सिरहाने बैठा देखा। उसके साथ एक व्यक्ति और भी था, जिसे वह अच्छी तरह जानता था, लेकिन पहचान नही पा रहा था। इस बात से क्षुब्ध होकर उसे रोना आ गया। कभी उसे लगता कि वह एक महीने से बीमार है। लेकिन उस 'बात' की उसे कोई याद न थी हालाँकि उसने महसूस किया था कि कोई जरूरी बात उसे भूल गयी है जिसे वह याद करना चाहता है। उसने समस्त शक्ति से उस बात को स्मृति मे लाने की कोशिश की और वह गुस्से मे आकर चीखने-चिल्लाने लगा और आतकित हो उठा। फिर उसने चारपाई से उठकर भागने की भी कोशिश की, लेकिन किसी ने उसे जोर से पकड लिया। वह फिर अशक्त होकर विस्मृति के गर्त में

खो गया। आखिर उसे होश आया।

सुबह के दस बजे थे। सुहावने मौसम के दिनो मे उसके कमरे मे धूप आ जाती थी। इस समय उसने नस्तास्या को एक अपरिचित युवक के साथ अपने सिरहाने खडा देखा। युवक की दाढी बढी हुई थी। और वह एक ऊँची-सी वास्कट पहने हुए था। मकान-मालकिन अधखुले दरवाजे के पीछे से झाँक रही थी। रास्कोलनिकोव उठकर बैठ गया।

"नस्तास्या, यह आदमी कौन है ?"

"इसे होश आ गया ?"

"हाँ," अपरिचित युवक ने उत्तर दिया।

उसे होश मे आया देखकर, मकान-मालकिन दरवाजा बन्द करके चली गयी। वह शर्मीले स्वभाव की स्त्री थी और वह बातचीत और बहस से बहुत घबराती थी। वह चालीस बरस की हृष्ट-पुष्ट स्त्री थी। उसकी आँखे काली थी। मुटापे और आलस्य ने उसे हँसमुख बना दिया था। बात करते समय उसका मुँह रह-रहकर शर्म से लाल हो जाता था।

"तुम कौन हो ?" रास्कोलनिकोव ने सामने खड़े युवक से पूछा। इसी समय कमरे का दरवाजा खुला और राजुमिहिन भीतर दाखिल हुआ।

"बाप रे ! कितनी तग कोठरी है। मेरा सर छत मे टकरा रहा है। इसी को तुम आदमी के रहने की जगह कहते हो ? पूरा सूअर का दरबा है। अच्छा हुआ, तुम्हे होश आ गया। मुझे अभी पाशेन्का ने बताया।"

"हाँ, इसे होश तो अभी-अभी आया है,"-नस्तास्या ने समर्थन किया।

"जी हाँ," अपरिचित युवक ने मुस्कराकर कहा।

राजुमिहिन ने युवक को अपना परिचय दिया, "मेरा नाम

वराजुमिहिन है, लेकिन लोग गलती से मुझे राजुमिहिन कहते है । मै विद्यार्थी हूँ और एक शरीफ आदमी हूँ। यह मेरा दोस्त है। आप कौन है ?"

"मै व्यापारी शेलोपेव की फर्म मे काम करता हूँ और किसी काम से यहाँ आया था ।"

"मेहरबानी करके बैठ जाइए। आपने आकर बडी कृपा की ।" फिर राजुमिहिन ने रास्कोलनिकोव से कहा, "चार दिन से तुमने कुछ खाया-पीया नही है। हम लोग चम्मच से तुम्हे चाय पिलाते रहे है । जोसीमोव भी दो बार तुम्हे देखने आया था। डा० जोसीमोव को जानते हो न ? वह कहता था कि घबराने की कोई बात नही, कोई चिन्ता तुम्हारे मन मे समा गयी थी। इस बीच तुमने ठीक से खाया-पीया नही, खासकर बियर और मूलियाँ तुम्हे नही मिली। चिन्ता की कोई बात नही । तुम ठीक हो जाओगे। जोसीमोव बडा शानदार आदमी है। आजकल उसने बडा नाम पा लिया है ।" फिर उसने अपरिचित युवक से पूछा, "कहिए, आप किस काम से आये हैं ? आप के दफ्तर से पहले भी एक आदमी आया था ।"

"जी हाँ, परसो अलैक्सी सेम्युनोविच आये थे। वे भी हमारे दफ्तर मे काम करते है ।"

"लेकिन आपको मानना पडेगा कि वे आप से कही ज्यादा अक्लमन्द है ।"

"जी हाँ, वे मुझ से बडे भी तो है ।"

"ठीक है ।"

"आपकी माँ के आग्रह पर अफैन्सी इवानोविच वैरुशिन ने हमारे दफ्तर से आपको कुछ रकम भिजवाई है," युवक ने रास्कोलनिकोव से कहा । "अगर आपकी तबियत ठीक हो तो आप पैंतीस रूबल मुझ से ले सकते है। आप अफैन्सी इवानोविच को जानते है न ?"

"हाँ, जानता हूँ ··वैरुशिन," रास्कोलनिकोव ने स्वप्निल ढग से कहा।

"अब तो आपने इसकी सुधरी हुई हालत देख ली। आपकी अक्ल-मन्दी की बातें सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है," राजुमिहिन ने युवक को डाँटा।

"आप ठीक समझे है, वैरुशिन ने ही आपकी माँ के अनुरोध को सदा की तरह स्वीकार करते हुए सेम्योन सेम्योनोविच को आदेश भेजा है कि वे आपको पैंतीस रूबल दे दे। उन्होने और रकम भेजने की आशा भी दिलायी है।"

"और भी भेजेगे ? बहुत खूब, यह बात मुझे पसन्द आयी। लेकिन क्या आपको रोद्या की तबियत अच्छी दिखाई दे रही है ?"

"कोई हर्ज नही। ये अगर इस रसीद पर दस्तखत कर सके तो रकम मैं इनके हवाले कर सकता हूँ।"

"बेचारा किसी तरह मरते-गिरते दस्तखत तो कर ही देगा। रसीद बुक तुम्हारे पास है ?"

"जी हाँ, यह रही।"

"लाओ। लो रोद्या, ज़रा उठकर बैठ जाओ। ठहरो, मै तुम्हे सहारा देकर बैठाता हूँ। मेरे भाई, सिर्फ कलम हाथ मे पकडकर 'रास्कोलनिकोव' लिख दो, क्योकि इस वक्त पैंतीस रूबल हमारे लिए शहद से भी ज्यादा मीठे है।"

"मुझे नही चाहिए," रास्कोलनिकोव ने कलम दूर सरका दी।

"नही चाहिए' क्या मतलब ?"

"मै दस्तखत नही करूँगा।"

"दस्तखत किए बगैर कैसे चलेगा ?"

"मुझे यह रकम ··नही चाहिए।"

"नही चाहिए—यह सब निरी बकवास है। लाइये साहब, मै

इसकी साक्षी देता हूँ। चिन्ता न करे, इसका दिमाग हमेशा खराब रहता है • आप अक्लमन्द है, लाइये जबरदस्ती इसका हाथ पकडकर दस्तखत करवा ले।"

"रहने दीजिए, मै फिर कभी आ जाऊँगा।"

"नही, नही, हम आपको दुबारा तकलीफ क्यो दे? आप कामकाजी आदमी ठहरे ••अमा रोद्या, टालमटूल मत करो, इन्हे देर हो रही है।" राजुमिहिन ने रास्कोलनिकोव का हाथ पकडने की कोशिश की।

"रहने दो, मै खुद ही कर लूँगा," रोद्या ने कलम लेकर रसीद पर दस्तखत कर दिए। युवक ने उसे पैंतीस रूबल दे दिए और चला गया।

"शाबाश! बताओ अब तुम्हे भूख लगी है?"

"हाँ," रास्कोलनिकोव ने उत्तर दिया।

"क्या कुछ शोरबा रखा है?"

"हाँ, रात का कुछ बचा रखा है," नस्तास्या ने कहा।

"उसमे आलू और चावल भी है न?"

"हा, है।"

"मै पहले से ही जानता था। जाओ शोरबा ले आओ और हमारे लिए चाय भी।"

रास्कोलनिकोव चकित और आतंकित भाव से यह सारा दृश्य देख रहा था। "शायद यह सब सच है। देखूँ अब आगे क्या होता है," उसने सोचा।

नस्तास्या शोरबा लेकर आ गयी और उसने आकर बताया कि चाय तैयार हो रही है। शोरबे के साथ वह दो चम्मच, दो तश्तरिया और नमक-मिर्च भी लाई थी। मेज पर नया मेजपोश बिछाकर उसने सब चीजे करीने से सजा दी। मुद्दतो बाद मेज इस तरह सजाया गया था।

"जाओ नस्तास्या जाकर प्रास्कोव्या पाव्लोव्ना से कह दो कि वे अगर हमे दो बोतले बियर की भेज दे तो कोई अनर्थ नही हो जायगा। हम दोनो को खाली कर देगे।"

"सो तो जानती हूँ," कहकर नस्तास्या नीचे चली गयी। रास्कोलनिकोव चकित दृष्टि से उसे देखने लगा। राजुमिहिन ने सोफे पर बैठकर रास्कोलनिकोव को सहारा देकर ऊँचा किया और चम्मच मे ठडा करके उसे शोरबा पिलाना शुरू किया। शोरबा अधिक गरम नही था। रास्कोलनिकोव गटागट कई चम्मच पी गया। राजुमिहिन ने सहसा रुककर कहा कि अब वह जोसीमोव से पूछकर उसे और शोरबा देगा। इसी समय नस्तास्या बियर की बोतले लेकर आ गयी।

"चाय पिओगे, दोस्त ?"

"हाँ।"

"जाओ नस्तास्या, भागकर चाय ले आओ। बियर की बाद मे देखी जायगी।"

फिर उसने अपनी कुर्सी मेज के पास खिसकाली और मरभुखे की तरह शोरबे और गोश्त पर टूट पडा।

"जानते हो रोद्या, मै यहाँ रोज़ इसी तरह डटकर खाना खाता रहा हूँ। तुम्हारी मकान-मालकिन मुझ पर बडी मेहरबान है। बिना माँगे ही मुझे खाना भेज देती है। इसमे मुझे कोई ऐतराज नही। लो, नस्तास्या चाय लेकर आ गयी। बड़ी फुर्तीली लडकी है। प्यारी नस्तास्या, तुम बियर पिओगी ?"

"बको मत !"

"खैर, एक प्याली चाय तो पिओगी ?"

"चाय पी सकती हूँ।"

"तो लो चाय बनाओ। नही, तुम बैठो, मैं बनाता हूँ।"

उसने चाय के दो प्याले बनाये और फिर रास्कोलनिकोव को

सहारा देकर चम्मच से इस तरह चाय पिलाने लगा जैसे इससे ही वह स्वस्थ हो जायगा। रास्कोलनिकोव के शरीर मे अब उठकर 'बैटने की ताकत आगयी थी। सभवत वह चल-फिर भी सकता था। लेकिन किसी विलक्षण चालाकी से प्रेरित होकर उसने अपने को अशक्त दिखाना ही उचित समझा। वह सारी स्थिति को अच्छी तरह समझ लेना चाहता था। दस-बारह चम्मच पीने के बाद उसने मचलकर चम्मच दूर फेंक दिया और तकिए पर सर रखकर लेट गया। उसने देखा कि उसके सर के नीचे साफ गिलाफ चढे नरम तकिए लगे थे।

"पाशेन्का से जाकर कहो कि रोद्या की चाय मे डालने के लिए थोडा-सा रसभरी का मुरब्बा भेजे," राजुमिहिन फिर खाने पर टूट पडा।

"भला तुम्हारे लिए मुरब्बा कहाँ से आयेगा ?" नस्तास्या ने तश्तरी मे से चाय की चुस्की लेते हुए पूछा।

"मुरब्बा किसी भी दुकान से मिल जायगा। रोद्या, तुम्हारे बीमार होने के बाद से अब तक कई घटनाएँ हो चुकी है। जब तुम उस दिन मुझसे बद्तमीजी करने के बाद यहाँ भाग आये थे, तब गुस्से मे आकर मैने तुम्हे सजा देने का निश्चय कर लिया। मै तभी से तुम्हारी तलाश मे निकल पडा। इस मकान का पता मुझे कभी याद नही रहा। इतना ज़रूर मालूम था कि पहले तुम हार्लेमोव के घर के पास रहते थे। मैं हार्लेमोव का घर ढूँढता फिरा। बाद मे मालूम हुआ कि तुम उसके यहाँ नही बुश के यहाँ रहते हो। इन्सान के दिमाग में अक्सर नाम गडबडा जाते है। गुस्से मे आग-बबूला होकर जब मैं अगले दिन पुलिस के दफ्तर गया तो उन्होने दो मिनट के अन्दर तुम्हारा पता बता दिया। तुम्हारा नाम-पता उनके रजिस्टर मे दर्ज है।"

"मेरा नाम ?"

"हाँ, तुम्हारा नाम ढूँढने में उन्हे कोई दिक्कत नही हुई जब कि जनरल कोबेलेव का पता खोजने मे उन्हे बडी देर लगी। खैर, यह

तो लम्बी कहानी है, लेकिन यहाँ आते ही मुझे तुम्हारी कैफियत का पता चल गया। मेरे भाई, मैं सब कुछ जान गया हूँ। नस्तास्या से पूछ कर देख लो। मै निकोदिम फोमिच और इल्या पैत्रोविच से भी मिल आया हूँ। चौकीदार, मिस्टर जेमेतोफ और हैडक्लर्क अलैक्जान्डर ग्रीग्रोविच से मेरी अच्छी-खासी दोस्ती हो गई है, और सबसे ज्यादा तुम्हारी मकान-मालकिन से। नस्तास्या को सब कुछ मालूम है। . ."

"यह मकान-मालकिन के मुँह चढ गये है," नस्तास्या ने रहस्य भरी मुस्कान दबाते हुए कहा।

"नस्तास्या निकीफरोव्ना, तुमने अपनी चाय में चीनी क्यो नही डाली ?"

"आप भी खूब है। मेरा नाम निकीफरोव्ना नही, पैत्रोव्ना है।"

"मै इस बात को नोट कर लूँगा। खैर दोस्त, सारी बात का साराश यह है कि मै तुम्हारे मोहल्ले के वातावरण को एक ही दिन मे ठीक कर देता, लेकिन पाशेन्का के सामने मेरी एक न चली। मै नही जानता था कि वह इतनी . .रौबीली औरत है। तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

रास्कोलनिकोव ने कोई उत्तर नही दिया। वह विस्मित भाव से अपने दोस्त के चेहरे की ओर देख रहा था।

"इस घर मे जो चाहो मिल जाता है," राजुमिहिन ने अपनी बात जारी रखी।

"तुम बडे मक्कार हो जी !" नस्तास्या ने हँसकर कहा। इस बातचीत से वह मन ही मन पुलकित हो रही थी।

"मेरे दोस्त, तुम्हे मकान-मालकिन से सलूक करना नही आता। वैसे तो वह बडी विलक्षण स्त्री है, लेकिन उसके चरित्र की चर्चा हम बाद मे करेगे। भला तुमने ऐसी नौबत आने ही क्यो दी, जिससे उसने तुम्हे खाना तक भेजना बद कर दिया ? और वह प्रोनोट—तुमने उस

प्रोनोट पर दस्तखत क्यो किए जब कि उसकी बेटी नताल्या यगोरोव्ना अभी जिन्दा थी ? तुम पागल तो नही हो गये थे ? मै अच्छी तरह जानता हूँ कि ऐसे मामले बडे नाजुक होते है और यह भी जानता हूँ कि मै बेवकूफ हूँ, लेकिन प्रास्कोव्या पाव्लोव्ना क्या इतनी मूर्ख है जितनी तुम उसे समझते हो ?"

"नही," रास्कोलनिकोव बुदबुदाया। वह अपना ध्यान बँटाये रखने के लिए इस बातचीत को जारी रखना चाहता था।

"वह मूर्ख नही है न?" राजुमिहिन प्रसन्नता से उछलकर बोला, "वैसे है वह बडी विलक्षण स्त्री। सच पूछो तो मै भी उसे अच्छी तरह से नही समझ पाया ··वह चालीस बरस की होगी, लेकिन वह अपने को छत्तीस बरस की बताती है। खैर, ऐसा कहने का उसे अधिकार है। लेकिन मै कसम खाकर कह सकता हूँ कि उसमे मुझे सिर्फ बौद्धिक और आध्यात्मिक दिलचस्पी है। हम दोनो के बीच एक प्रतीकात्मक बीजगणित का-सा संबध पैदा हो गया है। मै खुद नही समझ सका कि यह सब क्या खुराफात है। यह देखकर कि तुम्हारी पढाई के साथ तुम्हारी ट्यूशने भी बद हो गई है और बेटी की मृत्यु के कारण अब तुम उसके दामाद भी नही बन सकोगे, वह तुमसे खौफ खाने लगी है। उधर तुम भी अपनी माद मे बद पडे रहे और उससे बोलना तक छोड बैठे। तभी तो वह तुमसे पिण्ड छुडाने की कोशिश करने लगी। वह खुद तुम्हारे प्रोनोट को हाथ से नही जाने देना चाहती थी, क्योकि तुमने वचन दिया था कि तुम्हारी माँ सारी रकम चुका देगी।"

"वह मेरी बेवकूफी थी · मेरी माँ तो खुद दाने-दाने की मोहताज है ··मैने यहाँ रहने की इजाजत पाने के लिए ही यह झूठ बोला था।" रास्कोलनिकोव ने ऊँचे स्वर मे उत्तर दिया।

"खैर, यह तो तुम्हारी अक्लमन्दी थी, लेकिन दुर्भाग्य से यह

हूँ कि दुबारा बेवकूफ मै ही बना। मेरा ख्याल था कि मै हँसी-मजाक से तुम्हारा दिल बहला सकूँगा, लेकिन तुम इससे और भी ज्यादा चिढ गए हो।

"जब मुझे सरसाम हुआ था, तब क्या तुम मुझे देखने आये थे ?" रास्कोलनिकोव ने पूछा।

"हाँ, मुझे और जेमेतोफ को देखकर तुम गुस्से से आग-बबूला हो गए थे।"

"जेमेतोफ ? हैडक्लर्क ? उसे तुम यहाँ क्यो लाये थे ?"

"तुम्हे क्या हो गया है ? इसमे बुरा मनाने की क्या बात है ? मैने उसके सामने तुम्हारी चर्चा की थी, इसलिए वह तुम्हारा परिचय पाना चाहता था। वह बडा शानदार आदमी है, दोस्त ! अपने ढग का एक है। वह मेरा पक्का दोस्त बन गया है। तकरीबन रोज ही हमारी मुलाकात हो जाती है। जानते हो, मै भी इसी मोहल्ले मे आकर रहने लगा हूँ। उसके साथ मै एकाध बार लुइजी इवानोव्ना के यहाँ भी हो आया हूँ ... लुइजी इवानोव्ना की याद है न ?"

"क्या मै बुखार मै अट-सट बक रहा था ?"

"जहा तक मुझे याद है, तुम गुस्से से बेकाबू हो रहे थे।"

"मै कह क्या रहा था ?"

"भई वाह ! तुम कह क्या रहे थे ? लोग भला तेज बुखार मे क्या कहते है ? अच्छा दोस्त मैं चला। मुझे बहुत काम है।" उसने उठकर टोपी हाथ मे ले ली।

"तुमने बताया नही, मैं बुखार मे क्या बक रहा था ?"

"तुम तो जिद करने लगे। भला तुम्हे किस भेद के खुल जाने का डर है ; अपने दिमाग पर ज्यादा बोझ मत डालो। तुमने किसी शहजादी की चर्चा नही की, तुम तो बक रहे थे शिकारी कुत्तो, चेनो, ईयरिगो और किसी चौकीदार के बारे मे। तुमने निकोदिम फोमिच

और असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट इल्या पैत्रोविच का नाम भी लिया था। तुम बार-बार चिल्ला रहे थे, 'मेरा मोज़ा मुझे दे दो।' ज़ेमेतोज ने बडी मुश्किल से तुम्हारा मोजा तलाश किया और अपने सुवासित, अगूठियो से सने हाथो से तुम्हारा चिथडानुमा मोजा तुम्हारे हाथ मे पकडा दिया। उसके बाद तुम शान्त हो गये और पूरे चौबीस घण्टो तक मोजा अपने हाथो मे पकडे रहे। तुम उसे छोडते ही न थे। शायद अब भी वह मोजा तुम्हारे सिरहाने पडा हो। इसके बाद तुमने मिन्नत की, 'मेरी पतलून के पौचे लाओ।' हमारी समझ मे कुछ न आया। लो अब मै चल दिया। यह रहे पैंतीस रूबल। इनमे से दस मै रखे लेता हूँ। एक-दो घन्टो के भीतर ही लौटकर तुम्हे इनका हिसाब दे दूँगा। बारह बजने वाले है। जोसीमोव न जाने क्यो नही आया। अच्छा नस्तास्या, मेरे दोस्त का ध्यान रखना। बाकी बाते मै पाशेन्का से कहता जाऊँगा।"

"यह मकान-मालकिन को पाशेन्का कहकर बुलाता है। बडा गहरा आदमी है," नस्तास्या ने कहा और ज़ीने से कान लगाकर सुनने लगी। वह मकान-मालकिन से राज़ुमिहिन की बातचीत सुनने के लिए आतुर हो रही थी। साफ ज़ाहिर था कि वह ख़ुद भी उस पर रीझ गयी थी।

एक क्षण बाद वह भी नीचे चली गयी।

नस्तास्या के जाते ही मरीज पागल की तरह बिस्तर से उठ खडा हुआ। वह बडी देर से एकान्त की प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन वह किस लिए एकान्त चाहता है, यह उसे याद न रहा।

"हे ईश्वर, मुझे सिर्फ एक बात बता दो। इन लोगों को मेरा भेद मालूम है या नही ? हो सकता है कि इन्हे सब कुछ मालूम हो और ये लोग झूठमूठ मुझे तसल्ली देने के लिए यह सारा काण्ड रच रहे हो और मेरे स्वस्थ होते ही सब कुछ··मै अब क्या करूँ ? अभी कुछ देर

पहले मै जानता था मै किस लिए उठा हूँ, लेकिन अब मुझे कुछ याद नही रहा।"

वह चकित दृष्टि से चारो तरफ देखने लगा। फिर उसने दरवाजे से कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश की। लेकिन वह यह नही चाहता था। सहमा उसे कुछ याद आया। वह उठकर दीवार के छेद मे हाथ डालकर कुछ टटोलने लगा। अगीठी मे उसकी पतलून के पौचे और जेब की कतरने पडी थी। जाहिर है कि अभी तक किसी का ध्यान इन चीजो की ओर नही गया था। उसे याद आया कि अभी राजुमिहिन उसके मोजों की चर्चा कर रहा था। मोजे अब भी सिरहाने के नीचे पडे थे, लेकिन उन पर इतनी गर्द जमी हुई थी कि जेमेतोफ को बिल्कुल सन्देह नही हो सकता था।

"वाह रे जेमेतोफ।"

"पुलिस का दफ्तर! मुझे भला वहाँ किस लिए भेजा जा रहा है? और वह नोटिस कहाँ गया? मेरा दिमाग फिर गडबडा गया है। वह तो तब की बात थी। लेकिन अब · यह सब बाते मेरी बीमारी मे हुई, लेकिन जेमेतोफ यहाँ क्यो आया? राजुमिहिन उसे किस लिए यहाँ लाया था?" उसने सोफे पर बैठकर फिर बडबडाना शुरू कर दिया। "आखिर माजरा क्या है? क्या अभी भी मुझे सरसाम है? या यह सब सच है? हाँ, यह जरूर सच होगा · हाँ अब याद आया। मुझे भाग जाना चाहिए। फौरन भाग जाना चाहिए, हाँ · लेकिन कहाँ? मेरे पास कपडे और जूते नही है। उन लोगो ने मेरी चीजे न जाने कहाँ छिपा दी है। मै समझ गया। यह रहा मेरा कोट। लगता है वे इसको देखना भूल ही गये। मेज पर पच्चीस रूबल रखे है। प्रोनोट भी सामने पडा है। मै यहाँ से जाकर कही और कोठरी किराये पर ले लूँगा। उन्हे मेरा पता भी नही चलेगा। लेकिन पुलिस दफ्तर ·· राजुमिहिन किसी न किसी तरह मेरा पता जरूर मालूम कर लेगा।

मुझे कही दूर भाग जाना चाहिए···अमरीका मे। फिर ये लोग जो चाहे करते रहे। इस प्रोनोट को भी साथ लेता चलूँ, मेरे काम आयेगा ··और कौन-कौन-सी चीज़े ले जानी चाहिये ? वे सोचते है कि मै बीमार हूँ। उन्हे नही मालूम कि मै चल-फिर सकता हूँ, हा, हा, हा ! उनकी आँखो से ही मै भाँप गया था कि उन्हे सब कुछ मालूम हो गया है। बस, सीढियो से नीचे उतरने की देर है। लेकिन अगर उन्होने नीचे पुलिसमेन को तैनात कर रखा हो, तब ? यह चाय कैसी पडी है ? साथ मे आधी बोतल बियर भी है। एकदम ठडी।"

उसने बोतल उठाकर मुँह मे उँडेल ली। लगता था जैसे उसके कलेजे मे भयकर ज्वाला जल रही हो। बीयर पीते ही उसके शरीर मे एक सुखद स्पन्दन हुआ। वह रजाई ओढकर लेट गया। उसके रुग्ण और असगत विचार और भी बिखर गये। उसे नीद-सी आने लगी। उसने तकिए पर सर रखकर नरम रेशमी रजाई को और भी कसकर अपने चारो ओर लपेट लिया। उसके फटे-पुराने ओवरकोट की जगह यह नर्म रजाई न जाने कहाँ से आ गई थी। वह गहरी सुखद नीद में सो गया।

किसी के आने की आहट सुनकर उसने आँखे खोली। देखा कि राजुमिहिन दहलीज पर खडा है। उसे भीतर आने मे सकोच हो रहा था। रास्कोलनिकोव उठ बैठा और खोयी-खोयी आँखो से उसकी ओर ताकने लगा।

"अरे, तुम्हे नीद नही आयी ? लो मै लौट भी आया। नस्तास्या, ज़रा वह बडल तो लाना। तुम्हे अभी सारा हिसाब समझाता हूँ।"

"कितने बजे है ?" रास्कोलनिकोव ने बेचैनी से पूछा।

"भाई, तुम जी भरकर सो लिए हो। शाम के छै बजने वाले है। पूरे छै घटे सोये हो।"

"हे ईश्वर, क्या यह सच है ?"

"क्यो नही, सोने मे तुम्हारी तबियत सुधर जायगी । उठने की जल्दी भी क्या है ? तुम्हे किसी प्रेमिका से मिलने जाना है ? इसके लिए अभी तो सारी जिन्दगी पडी है । मै पिछले तीन घटो से तुम्हारे जगने का इन्तजार कर रहा हूँ । इस बीच दो बार जोसीमोव के यहाँ हो आया हूँ । वह घर पर नही था । खैर, कोई बात नही, वह आ जायगा, इस बीच मैने अपना काम भी कर डाला है । आज मै अपने चाचा को भी ले आया हूँ । वे अब मेरे साथ ही रहेगे । नस्तास्या, यह बडल मुझे दे दो । कहो भाई, तुम्हारी तबियत कैसी है ?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ । क्या तुम्हे यहाँ आये बहुत देर हुई ?"

"मैने तुम्हे बताया तो कि पिछले तीन घटो से मै तुम्हारे जागने का इन्तजार कर रहा हूँ ।"

"नही, उससे पहले ?"

"क्या मतलब ?"

"तुम कितने दिनो से यहाँ आते रहे हो ?"

"यह बाते तो मैं तुम्हे सुबह ही बता चुका हूँ । तुम भूल गये क्या ?"

रास्कोलनिकोव सोच मे पड गया । सुबह सिर्फ एक सपना-मात्र थी । उसे कुछ भी याद न था । उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से राजुमिहिन की ओर देखा ।

"तुम सब कुछ भूल गये हो । पहले मेरा ख्याल था कि तुम पागल-से हो गये हो । लेकिन सोने से तुम्हारी तबियत सुधर गयी है, एकदम ठीक । आओ काम-काज की बाते करे । जरा इधर तो देखो ।"

उसने बडल को खोलना शुरू किया ।

"यकीन करो, इसमे मेरी खास पसन्द की चीजे है । हम लोग तुम्हे इन्सान बनाना चाहते है । लाओ, सर से शुरूआत करे । तुमने यह टोपी देखी ? लाओ तुम्हारे सर पर पहनाकर देखूँ ।" उसने बडल

मे से एक मामूली, सस्ती-सी टोपी निकाली।

"जरा ठहर जाओ," रास्कोलनिकोव ने चिढकर टोपी दूर हटाते हुए कहा।

"अमा रोद्या, न मत करो, नही तो बाद मे पछताओगे। मुझे रात भर नीद नहीं आयेगी, क्योकि यह टोपी बिना नाप के अन्दाज से ही ले आया हूँ। लेकिन भई, यह तो बिल्कुल फिट आई है। अच्छी पोशाक के साथ अच्छी टोपी जरूरी है। मेरा दोस्त तॉल्मत्य।कोव जब भी कही सार्वजनिक सभा मे जाता है तो अपनी चिलमची जैसी टोपी उतार लेता है। लोग इसे शिष्टाचार समझते है, लेकिन दरअसल उसे सिर पर रखने से शर्म महसूस होती है। नस्तास्या, रोद्या की पुरानी टोपी से इस नई टोपी का मुकाबला करके देखो। बिल्कुल लार्ड पामर्स्टन के जैसी टोपी है न यह? और इस नई टोपी को देखो! भला कितने दाम की होगी!"

रास्कोलनिकोव चुप रहा। नस्तास्या ने उत्तर दिया—

"अधिक से अधिक बीस कोपेक।"

"बीस कोपेक! बेवकूफ कही की, पूरे अस्सी कोपेक दिये है। इसलिये कि यह बिलकुल नई नही है। मैने दूकानदार से वायदा ले लिया है कि जब यह टोपी फट जायेगी तो वह तुम्हे अगले साल दूसरी टोपी दे देगा। अपनी कसम! आओ, जरा अब इन ब्रीचिज की ओर देखो। स्कूल मे हम इन्हे युनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका कहते थे।" यह कहकर उसने बडल मे से भूरे रग की हल्की ऊनी पतलून निकाली और कहा "इसमे न कोई दाग है, न छेद, जरा सी घिसी हुई जरूर है, मगर पहनकर भले आदमी नजर आओगे। साथ मे पहनने के लिये नये फैशन की वास्कट भी है। घिसी होने की वजह से यह बहुत नर्म हो गई है। रोद्या, मेरा विचार है कि इन्सान को मौसम के साथ-साथ चलना चाहिये। अगर जनवरी के महीने मे एस्पेरेगस[1] न खाया, तो

[1] एस्पेरेगस—एक प्रकार का नर्म कुकुरमुत्ता।

जिन्दगी का क्या लुत्फ ? इसी लिये मै तुम्हारे लिए गर्मियो के कपडे लाया हूँ। सर्दियो तक तो ये वैसे भी चल बसेगे, तुम्हारी ऐय्याशी के कारण नही । बताओ, इन कपडो का दाम क्या होगा ? जनाब सिर्फ दो रूबल पच्चीस कोपेक, और याद रखो, इनके फटते ही तुम्हे और कपडे मिल जायेगे। फेदेयेव की दुकान का यही रिवाज है। एक बार वहा से आप चीजे खरीदिये, तो फिर कभी वहाँ जाने की तबियत नही होगी । अब जरा इन बूटो पर गौर फरमाये, यह भी इस्तेमालशुदा है, लेकिन कम से कम दो महीने तो निकल ही जायेगे । आखिर अंग्रेजी चमडा है, कोई मजाक नही। अंग्रेजी दूतावास के सैक्रेटरी ने अभी पिछले हफ्ते इन्हे बेचा है . सुनते है, उसने यह बूट सिर्फ छ: दिन पहने है—उसे पैसो की सख्त जरूरत पड गई थी। कीमत सिर्फ डेढ रूबल। शानदार सौदा है न !"

"लेकिन शायद ये फिट नही होगे।" नस्तास्या ने टिप्पणी की।

"फिट क्यो नही होगे ? इधर देखो !" उसने जेब मे से रास्कोलनिकोव का धूल से भरा जूता निकालकर दिखाया। "मै इस दैत्याकार जूते को साथ लेकर गया था । बाकी कपडो का इन्तजाम तुम्हारी मकान-मालकिन ने किया है। यह रही तीन कमीजे, कपडा घटिया है लेकिन डिजाइन बढिया है अच्छा तो अस्सी कोपेक की टोपी, दो रूबल पच्चीस कोपेक का सूट, डेढ रूबल बूटो का जोड लो— कुल जमा चार रूबल पचपन कोपेक हुए—पॉच रूबल तुम्हारे बाकी कपडो लत्तो पर खर्च हुए—थोक मे खरीदे जाने के कारण इतने कम दाम लगे । ये हुए नौ रूबल पचपन कोपेक और यह लो बाकी के पैतालीस कोपेक । लो रोद्या, तुम्हारा साजो-सामान तैयार हो गया। रहा तुम्हारा ओवरकोट, सो शार्मर की दुकान से लिया गया है, अभी कुछ दिन और चलेगा। अब हमारे पास पच्चीस रूबल बच गये है। उनमे से अगर चाहो तो मोजे वगैरह पर कुछ खर्च कर लेना। किराये-

भाडे की चिता करने की जरूरत नही है। पाशेन्का को अब तुम पर भरोसा हो गया है। आओ दोस्त, तुम्हारी कमीज बदल दूँ—मैली कमीज उतारने से बीमारी भी भाग जायेगी।"

"मुझे इसी तरह रहने दो। मै कपडे नही बदलना चाहता।" रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा।

"अमा, दोस्त, आओ तो सही, मै फिर किसलिये बाजार मे इतनी देर तक झख मारता रहा। नस्तास्या, शर्माओ नही, आकर मेरी मदद करो। शाबाश !" उसने रास्कोलनिकोव की चूँ-चपड की परवाह न करते हुए उसके कपडे बदल दिये। रास्कोलनिकोव तकिये पर सर रख कर चुपचाप लेट गया।

थोडी देर बाद उसने दीवार की ओर देखते हुए पूछा, "ये कपडे तो अभी बहुत दिनो तक चलेगे। इन्हे खरीदने के लिये पैसा तुम्हे कहाँ से मिला है ?"

"तुम्हारी मा ने तुम्हे जो रकम भिजवाई थी, उसी मे से। अरे क्या वह भी भूल गये।"

"हाँ मुझे अब याद आया," रास्कोलनिकोव ने कहा। राजुमिहिन चिढकर उसकी ओर देखने लगा।

इसी समय कमरे का दरवाजा खुला और एक लबा, बलिष्ट आदमी भीतर दाखिल हुआ। रास्कोलनिकोव को उसका चेहरा परिचित-सा लगा। राजुमिहिन ने खुशी से उछलकर कहा, "अरे जोसीमोव ! तुम आखिर पहुँच ही गये।"

४

जोसीमोव की आँखो पर चश्मा चढा था और उसकी मोटी उगलियो मे सोने की अगूठी थी। उसकी आयु सत्ताईस बरस के करीब होगी। वह भूरे रग का ढीला फ़ेशनेबल सूट पहने हुए था। उसकी कमीज़ के कालर सफेद थे और घडी की चेन भारी थी। वह व्यवहार मे अपने बडप्पन को छिपाने का यत्न करता था, लेकिन वह हर बात मे जाहिर हो जाता था। उसके मित्र और परिचित उससे तग आ जाते थे, लेकिन उनका कहना था कि वह अपने काम मे अत्यन्त कुशल है।

राजुमिहिन ने उससे कहा, "भाई, मै दो बार तुम्हारे घर जा चुका हूँ। मरीज को होश आ गई है।"

जोसीमोव ने सोफे पर आराम से बैठकर रास्कोलनिकोव से पूछा, "कहिये अब कैसी तबियत है?"

"तबियत अभी भी सुधरी नही है, हमने अभी जब इसके कपडे बदले तो यह चीख़ने लगा।"

"यह तो स्वाभाविक ही था, तुम्हे इनकी मर्जी के खिलाफ कुछ नही करना चाहिये। इनकी नब्ज़ तो बिल्कुल ठीक है। कहिये सर मे क्या अभी भी दर्द है?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा। वह सबकी ओर घूरकर देख रहा था। अचानक उसने लेटकर मुँह दूसरी ओर फेर लिया। जोसीमोव ने गौर से उसे देखकर कहा

"इनकी तबियत" बिल्कुल ठीक है, कुछ खाने को दिया ?"

नस्तास्या ने उत्तर दिया और पूछा कि मरीज़ को खाने के लिए क्या मिलना चाहिए।

"जो चाहे दे सकते है, शोरबा, चाय। लेकिन खीरे और गुच्छी मत देना। जहाँ तक हो सके गोश्त भी नही यह सब तो आप भी जानते होगे। और अधिक दवाई की ज़रूरत नही है। मै कल आकर इन्हे फिर देख जाऊँगा · शायद आज ही। लेकिन चिन्ता की कोई बात नही है।"

"कल शाम को मै रोद्या को यासुपोव गार्डन मे सैर कराने ले जाऊँगा। फिर हम शीशमहल देखने भी जायेंगे।"

मै आपको ऐसा करने की राय नही दूँगा, लेकिन शायद·· अच्छा देखा जायगा।"

"आह, कैसी मुसीबत है ? आज रात मैं अपने मित्रो को दावत दे रहा हूँ। क्या रोद्या उसमे शामिल नही हो सकता ? वह सोफ़े पर लेटा रहेगा। तुम भी आ रहे हो नै ? तुमने वायदा किया था, भूलना नही।"

"अच्छा आऊँगा, लेकिन शायद देर से। दावत का प्रोग्राम क्या है ?"

"कुछ नही सिर्फ चाय, वोद्का और हैरिंग मछलियाँ। एक केक भी होगी। सिर्फ अपने दोस्त ही वहाँ होगे।"

"और कौन-कौन वहाँ होगा ?"

"सारे पडोसी, लगभग सारे नये दोस्त·· सब दोस्त ही होंगे, सिवाय मेरे बूढे चचा के। वह कल अपने व्यापार के सिलसिले मे

पीटर्सबर्ग आये है। पॉच साल मे हमारी सिर्फ एक बार मुलाकात होती है।"

"तुम्हारे चचा क्या काम करते है ?"

"बेचारे जिन्दगी भर जिला पोस्ट मास्टर के पद पर सडते रहे। अब थोडी-सी पेन्शन मिलती है। पैंसठ साल की उम्र है। छोडो, उनके बारे मे और ज्यादा क्या कहा-सुना जा सकता है। स्थानीय खुफिया पुलिस के इन्चार्ज पोरफेरी पैत्रोविच को जानते हो न, वे भी आयेगे।"

"क्या वे भी तुम्हारे रिश्तेदार है ?"

"हॉ, दूर के रिश्तेदार है। लेकिन तुम नाक-भौ क्यो सिकोड रहे हो ? मुझे मालूम है कि एक बार तुम दोनो मे झगडा हो चुका है। क्या उसके कारण दावत मे आना छोड दोगे ?"

"उसकी मुझे रत्तीभर परवाह नही है।"

"तब ठीक। इसके अलावा कुछ विद्यार्थी भी रहेगे। मेरा परिचित एक टीचर, एक क्लर्क, एक गवैया और एक पुलिस अफसर। जेमेतोफ भी आयेगा।"

"मेहरबानी करके यह तो बताओ कि जेमेतोफ से तुम्हारा क्या सरोकार है ?" उसने रास्कोलनिकोव को लक्ष्य करके कहा।

"अरे भाई, तुम तो सिद्धान्तो से बधे हुए हो। हर बात के बीच मे सिद्धान्त आकर अड जाते है यह कोई बात हुई ? आदमी दिलचस्प होना चाहिए, मै बस इस सिद्धान्त का कायल हूँ। ज़ेमेतोफ बेहद दिलचस्प आदमी है।"

"लेकिन वह रिश्वत लेता है।"

"लेता है तो फिर क्या हुआ ?" राज़ुमिहिन ने चिढकर कहा, "मैने रिश्वतखोरी के लिए तो उसकी प्रशसा नही की। वैसे अपने ढग का वह अच्छा आदमी है। और अगर देखा जाय तो दुनिया मे नेक आदमी है ही कितने ? सच पूछो तो मेरी अपनी हैसियत एक उबली हुई

प्याज़ से ज्यादा नही है, शायद तुम्हे मिलाकर भी ।"

"यह तो बहुत कम है । दो प्याजो के बराबर तो कीमत तुम्हारी अकेले की होगी ।"

"और तुम्हारी एक प्याज से ज्यादा हर्गिज नही हो सकती । खैर, छोडो इस मजाक को । जेमेतोफ निरा बच्चा है । मै चाहूँ तो उसके कान खीच सकता हूँ । लेकिन कान खीचकर किसी को सुधारा नही जा सकता, खासकर बच्चो को । बच्चो को समझाने मे बडी सावधानी बरतनी चाहिए । अरे प्रगति के समर्थको, तुम कभी नही समझोगे कि दूसरे का अपमान करके तुम अपना कितना भारी नुकसान कर रहे हो ? सच पूछो तो हम दोनो मे काफी समानताएँ है ।"

"कौनसी समानताएँ ?"

"बात यह है कि हम एक पेन्टर को मुसीबत से उबारना चाहते है, हालाँकि अब खतरा किसी बात का नही रहा । मामला बिल्कुल साफ है । हम उसकी सहायता भर करना चाहते है ।"

"पेन्टर ?"

"क्या मैने पहले नही बताया कि गिरवी रखने वाली बुढिया की हत्या मे उसे भी फँसा लिया गया था ?"

"अरे हाँ, मैने भी उस हत्या की खबर अखबार मे पढी थी । मुझे भी इस केस में थोडी-सी दिलचस्पी है ।"

"लिजावेता की भी तो हत्या हुई थी," नस्तास्या ने जो अभी तक दरवाज़े के पास खडी सब सुन रही थी, रास्कोलनिकोव की ओर देखते हुए कहा ।

"लिजावेता ··?" रास्कोलनिकोव धीमे स्वर मे बुदबुदाया ।

"तुम लिजावेता को नही जानते ? अरे वही औरत जो पुराने कपडे बेचती थी । वह अक्सर यहाँ आती थी । उसने तुम्हारी कमीज की मरम्मत भी की थी," नस्तास्या ने कहा ।

रास्कोलनिकोव दीवार की ओर मुँह फेरकर गन्दे, पीले वॉल-पेपर में बने सफेद फूल की पखुडियो को गिनने लगा। उसे लगा जैसे उसकी बाँहे और टाँगे किसी ने काटकर दूर फेक दी है। बिना हिले-डुले वह टकटकी बाधे फूल की ओर देखता रहा।

"लेकिन पेन्टर का क्या बना ?" जोसीमोव ने नस्तास्या के बातूनीपन से तग आकर पूछा। नस्तास्या कटकर चुप रह गयी।

"उस बेचारे पर हत्या का इल्जाम लगाया गया है," राजुमिहिन ने उत्तेजित स्वर मे कहा।

"उसके खिलाफ क्या सबूत मिला है ?"

"सबूत ? खूब कहा तुमने ! सबूत खाक मिला है ! जिस तरह शक मे पुलिस ने कौश और पेस्त्र्याकोव को पकड लिया था, उसी तरह इस बेचारे को भी पकड लिया है। उफ्, पुलिस की मूर्खता से जी मिचलाने लगता है। खैर, मुझे इस बात से क्या लेना-देना ? शायद पेस्त्र्याकोव भी रात को आयेगा क्यो भाई रोद्या, तुमने भी तो इस हत्या के बारे मे सुना होगा ? तुम जिस दिन पुलिस के आफिस मे बेहोश हो गये थे, उस दिन वहाँ इसकी ही चर्चा हो रही थी। यह घटना उससे एक दिन पहले की है।"

जोसीमोव ने विचित्र ढग से रास्कोलनिकोव की ओर देखा। रास्कोलनिकोव पूर्ववत् स्थिर लेटा रहा।

"अमाँ राजुमिहिन, तुम भी हर काम मे चौधरी बने फिरते हो," जोसीमोव ने कहा।

"चौधरी ही सही, लेकिन हम पेन्टर को बचा लेगे," राजुमिहिन ने जोर से मेज पर मुक्का मारकर कहा। "मुझे पुलिस के झूठ पर इतना गुस्सा नही आता, क्योकि झूठ तो बडी मजेदार चीज है, और सच्चाई उसी में से निकलती है। मुझे गुस्सा तो इस बात पर है कि पुलिस को अपने झूठ मे खुद भी विश्वास है ··· मै पोरफेरी की इज्जत करता

हूँ ··· लेकिन अगर दरवाजा बद था तो फिर वे जब चौकीदार के साथ लौटे .तब दरवाजा खुल कैसे गया ? इस दलील को लेकर पुलिस ने कौश और पेस्त्र्याकोव को कातिल ठहरा दिया । इन लोगो के सोचने का यही ढग है ।"

"तुम इतने उत्तेजित क्यो हो रहे हो ? पुलिस ने तो उन्हे सिर्फ पूछताछ के लिए रोक रखा था । यह तो लाजिमी था अरे हाँ, सुनो, कौश से मेरी भी मुलाकात हो चुकी है । यह वही आदमी है न जो बुढिया से गिरवी की चीजे खरीदा करता था ?"

"हाँ वही । वह पूरा ठग है । गिरवी रखी हुई चीजो को खरीदना ही उसका पेशा है । कौश जहन्नुम मे जाये, मुझे तो पुलिस की जाँच-पडताल के दकियानूसी ढग पर गुस्सा आता है । इस केस से पुलिस एक नया तरीका सीख लेगी । असली अपराधी को पकडने के लिए मनोवैज्ञानिक तथ्यो का पता लगाना जरूरी है । 'हमारे पास भी तथ्य हैं' पुलिस वाले दावा करते है । लेकिन सिर्फ तथ्यो के होने से क्या होता है ? तथ्यो का आप क्या अर्थ लगाते है, सारी बात तो इस पर निर्भर करती है ।"

"तुमने क्या सही अर्थ लगाया है ?"

"सही या गलत तो मै नही कह सकता, लेकिन अगर मै इस रहस्य को खोलने मे कुछ मदद कर सकता हूं, तो फिर अपनी जबान बन्द नही कर सकता लेकिन वे लोग मेरी राय तुम्हे केस का व्यौरा मालूम है न ?"

"नही तुमने मुझे अभी तक पेन्टर का किस्सा नहीं सुनाया ।"

"अरे हाँ, कहानी यूँ है कि हत्या के तीसरे दिन जब पुलिस कौश और पेस्त्र्याकोव को नाहक तग कर रही थी, तब एक ऐसी घटना हुई जिसकी किसी को आशा न थी । दुश्किन नाम के एक देहाती ने, जिस की दुकान बुढिया के घर के सामने है, पुलिस के दफ्तर मे आकर कुछ

सोने के गहने दिखाये और एक लम्बी चौडी कहानी बयान करने लगा। बोला, 'परसो आठ बजे के बाद'—जरा तारीख और वक्त पर गौर करना—'निकोलाई नाम के पेन्टर ने मुझे गहनो की यह डिब्बी लाकर दी और इनके बदले मे दो रूबल मागे। जब मैने उससे गहनो के बारे मे पूछताछ की तो उसने बताया कि ये गहने उसे गली मे पडे मिले थे। इसके बाद मैने अधिक पूछताछ नही की। मैने उसे एक रूबल दिया, क्योंकि मैंने सोचा कि अगर मैने उसे पैसे न दिए तो वह किसी और को गहने दे देगा। बात एक ही होगी। उसे तो शराब पीने के लिए पैसे चाहिए थे। मैने सोचा कि अगर कोई ऐसी-वैसी बात होगी तो मै पुलिस मे इन गहनो को पेश कर दूँगा।' खैर, मै इस दुश्किन की नस-नस पहचानता हूँ। वह गिरवी के माल के बदले लोगो को कर्ज देता है और चोरी का माल भी खरीदता है। मुझे मालूम है कि पुलिस की नजरो मे नेक बनने के इरादे से उसने एक रूबल के बदले मे तीस रूबल के ये ईयरिंग नही लिए थे। लेकिन उस मक्कार की बाते सुनो! वह कहता है, 'मै पेन्टर निकोलाई को बचपन से जानता हूँ। हम दोनो एक ही जिल के रहने वाले है। निकोलाई को शराब पीने का शौक है। मुझे यह भी मालूम था कि वह पेन्टर दमित्री के साथ सामने की इमारत मे काम कर रहा है। उसने मुझसे एक रूबल लेकर शराब के दो गिलास पिये और बाकी रेजगारी लेकर चलता बना। उस समय दमित्री उस के साथ नही था। अगले ही दिन मैने सुना कि किसी ने एल्योना इवानोव्ना और उसकी बहन लिजावेता इवानोव्ना की कुल्हाडी से हत्या करदी है। मै उन दोनो बहनो को जानता था। इसलिए मुझे उन गहनो पर शक हो गया, क्योकि दोनो बहनें गहने गिरवी रखकर लोगो को कर्ज देती थी। मैने उनके घर मे जाकर पूछा, क्या निकोलाई यहीं है? इस पर दमित्री ने बताया कि निकोलाई सुबह दस बजे वहा आया था और उस समय भी नशे मे धुत था। दमित्री अकेला ही

रोगन करने मे लगा था। ये दोनो दूसरी मंजिल पर काम कर रहे थे। मै चुपचाप वहाँ से चला आया। मेरे मन का सन्देह इस बीच और भी पक्का हो गया। अगले दिन आठ बजे निकोलाई बदहवासी की हालत मे मेरी दुकान पर आया और आकर बेंच पर बैठ गया। मैंने पूछा, क्या तुम दमित्री से मिले थे ? उसने जवाब दिया, नही, मै परसो से इस ओर नही आया। मैंने पूछा, कल रात तुम कहाँ सोये ? उसने कहा, पेस्की मे। मैंने फिर पूछा, तुम्हे वह ईयरिंग कहाँ से मिले ? उसने रहस्यमय ढंग से जमीन की ओर देखते हुए कहा, सडक पर मिले थे। मैंने पूछा, जानते हो परसो जिस जीने मे तुम काम कर रहे थे, वहाँ कैसी भयंकर घटना घटी है ? उसने उत्तर दिया, नही मैंने कुछ नही सुना। जब मैंने उसे सारी घटना सुनायी तो वह अपना हैट उठा कर चलने के लिए तैयार हो गया। मैंने उसे शराब का लालच देकर रोकना चाहा, लेकिन वह फौरन वहाँ से खिसक गया। यह देखकर मेरा शक और भी बढ गया, और मैंने सोचा, हो न हो, यह इसी की करतूत है। "

"मेरा भी यही ख्याल है," जोसीमोव ने राय दी।

"ठहरो, पहले मुझे अपनी बात तो खत्म कर लेने दो। पुलिस ने निकोलाई को ढूँढने के लिए सारा शहर छान मारा। दुश्किन के घर की तलाशी ली और दमित्री को भी गिरफ्तार कर लिया। परसो शहर के एक शराबखाने मे निकोलाई पकडा गया। उसने अपने गले का चादी का क्रॉस गिरवी रखकर शराब का एक अद्धा लिया था। कुछ मिनट बाद शराबखाने की नौकरानी ने दीवार की एक दरार मे से झाककर देखा कि निकोलाई अस्तबल की शहतीर मे अपना गुलूबन्द डालकर अपने को फासी लगा रहा है। औरत का शोर सुनकर बहुत से लोग जमा हो गये। निकोलाई ने उनसे कहा, 'मुझे पुलिस अफसर के पास ले चलो। मै सब कुछ साफ बता दूँगा।' लोग उसे

जाकर थाने मे छोड आये । पुलिस वालो ने उससे इधर-उधर के सवाल पूछे, मस्लन यह कि तुम्हारी उम्र क्या है ? • जब तुम दमित्री के साथ काम कर रहे थे, उस वक्त तुमने किसी को जीने पर आते-जाते तो नही देखा ? • • आदि । निकोलाई ने उत्तर दिया, 'मैंने इस ओर खास ध्यान नही दिया ।' फिर उससे पूछा गया, 'तुमने कोई शोर नही सुना ?' जवाब मिला, ' नही । ' उससे पूछा गया, 'निकोलाई, जानते हो उस दिन अमुक विधवा और उसकी बहन की हत्या की गयी थी ?' उत्तर मिला, 'नहीं' मुझे तो परसो अफेन्जी पाव्लोविच से यह खबर मालूम हुई ।' फिर पूछा गया, 'तुम्हे ये रिग कहाँ से मिले?' उत्तर मिला, 'सडक की पटरी पर ।' 'तुम अगले दिन काम पर क्यो नही गये?' 'मै शराब पी रहा था ।' 'कहाँ शराब पी रहे थे?' ' जगह ।' 'तुम दुश्किन के यहाँ से क्यो भागे?' 'क्योकि मुझे डर लग रहा था ।' 'किस बात का डर?' 'यही कि मेरे ऊपर इल्ज़ाम न लगाया जाय ।' 'अगर तुम निर्दोष थे तो डर किस बात का था ?' जोसीमोव, तुम्हे यकीन नही होगा कि सचमुच उससे ऐसे बेहूदे सवाल पूछे गये थे । अब तुम्ही बताओ, तुम्हारी क्या राय है ?"

"जो भी हो निकोलाई के खिलाफ काफी सबूत मिले है ।"

"मै सबूत की बात नही कर रहा, बल्कि पुलिस के पडताल के ढग की बात कर रहा हूँ । उन्होने उस बेचारे पर इतना दबाव डाला कि उसने तग आकर कह दिया, 'मुझे ईयरिग दूसरी मज़िल के फ्लैट मे पडे मिले थे ।' काम खत्म करके जब हम घर लौट रहे थे, तो दमित्री ने हँसी-हँसी मे मेरे चेहरे पर रोगन लगा दिया । मै उसके पीछे पीछे चिल्लाता हुआ जीने पर आया । जीने मे चौकीदार के साथ मेरी टक्कर हो गई । उसके साथ और भी लोग थे, जिनकी सख्या मुझे याद नही । चौकीदार ने मुझे गाली दी । इसके बाद चौकीदार की बीवी ने भी मुझे गालियाँ दी । बाहर निकलकर मैंने दमित्री के बाल पकड लिए

और उसे पीटने लगा। दोस्तो मे ऐसे मजाक होते ही है। दमित्री मेरे हाथ छुडाकर गली में भाग गया और मै अकेला फ्लैट मे लौट आया और दमित्री के आने का इन्तजार करने लगा। अचानक दरवाजे के पास मेरा पैर एक डिबिया पर पड गया। मैने खोलकर देखा, उसमें ईयरिग थे · ·"

"दरवाजे के पीछे? क्या कहा, दरवाजे के पीछे?" रास्कोल-निकोव सहसा उठकर जोर से चिल्लाया।

"हाँ, लेकिन तुम्हे क्या हुआ?" राजुमिहिन ने कुर्सी से उठते हुए पूछा।

"कुछ नही," रास्कोलनिकोव ने क्षीण स्वर मे उतर देकर मुँह दूसरी ओर फेर लिया।

"शायद सपना देखते-देखते यह चौक गया है," राजुमिहिन ने जोसीमोव की ओर देखकर कहा। जोसीमोव ने सर हिलाकर समर्थन किया।

"आगे क्या हुआ?"

"आगे? वह डिबिया उठाकर दुश्किन के पास आया और उससे झूठमूठ कह दिया कि ईयरिग उसे सडक पर पडे मिले थे। वह इस बयान को बार-बार दुहरा चुका है कि उसने परसो से पहले हत्या की खबर नही सुनी। पुलिस ने पूछा, 'तुम अभी तक थाने मे क्यो नही आये?' उसने जवाब दिया, 'मै डर गया था।' 'तुम गले मे फासी का फन्दा क्यो डाल रहे थे?' 'डर के मारे।' 'किस चीज का डर?' 'यही कि मुझ पर इल्जाम न लगा दिया जाय।'·· बस यही सारी कहानी है। तुम्हारा क्या ख्याल है? पुलिस ने इससे क्या नतीजा निकाला होगा?"

"यही कि इसमे हत्या के रहस्य पर कुछ प्रकाश जरूर पडता है। तुमने पेन्टर को छुडवाया नही?"

"नही, पुलिस को पूरा विश्वास है कि हत्या उसी ने की है।"

"यह समझना हिमाकत है। तुम बेकार ही इतने उत्तेजित हो रहे हो। लेकिन यह बताओ कि ईयरिंग बुढिया के सन्दूक से निकलकर निकोलाई के हाथ मे कैसे आ गए ?" इस बात मे कोई न कोई रहस्य जरूर है।"

"कैसे आ गाये ? तुम डाक्टर हो, तुम्हारा काम मानव-स्वभाव का अध्ययन करना है। तुम पूरी कहानी सुनकर भी निकोलाई के चरित्र को नही समझ पाये ! तुम्हे अभी तक विश्वास नही हुआ कि उसने पुलिस के आगे केवल सच बोला है ? ईयरिंगो के बारे मे उसने जो बताया है, वह सच है। डिबिया उसे दरवाजे के पीछे पडी मिली थी।"

"बिल्कुल सच ? लेकिन क्या उसने यह नही माना कि पहले उसने झूठ बोला था ?"

"जरा ध्यान से मेरी बात सुनो। कौश, पेस्त्र्याकोव, चौकीदार, उसकी बीवी और क्रयूकोव जो उस समय अपनी एक महिला मित्र के साथ घोडागाडी मे से निकलकर आया था, सभी का कहना है कि उन्होने अपनी आँखो से निकोलाई और दमित्री को 'बच्चो की तरह' लडते-झगडते और एक-दूसरे के बाल नोचते देखा है। उन्होने निकोलाई को दमित्री के पीछे गली मे भागते हुए भी देखा था। अब दूसरी बात ध्यान से सुनो, दोनो लाशे गर्म थी—इसका मतलब यह कि हत्या कुछ देर पहले ही की गई थी। अब मै तुमसे एक सवाल पूछता हूँ कि अगर निकोलाई ने हत्या की होती तो क्या वह बच्चो की तरह ऊधम मचाता हुआ दमित्री के पीछे भागता ? क्या वह लोगो का ध्यान इस तरह अपनी ओर खीचता ? एक दर्जन आदमियो ने उसे दमित्री का पीछा करते देखा था।"

"हा, है तो यह असम्भव-सी बात लेकिन ."

"लेकिन-वेकिन कुछ नही। अगर पुलिस निकोलाई के हाथो मे ईयरिंग देखकर सदेह कर सकती है, तो हमे निकोलाई के बयान पर भी विश्वास करना चाहिए, क्योकि उसके बताये हुए तथ्य उसे निर्दोष प्रमाणित करते है। लेकिन मौजूदा कानून को जानते हुए क्या तुम सोच सकते हो कि अदालत इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को स्वीकारकर लेगी? नही, बिल्कुल नही, क्योकि पुलिस ने ईयरिंग की डिबिया बरामद की है और अभियुक्त को गले मे फदा डालते देखा था। 'अगर वह हत्यारा न होता तो ऐसा हर्गिज न करता, पुलिस की यही दलील होगी, जिस की कल्पना करके मुझे गुस्सा आ रहा है, समझे।"

"यह तो मैं देख ही रहा हूँ, लेकिन ठहरो, एक सवाल पूछना तो मैं भूल ही गया। वे ईयरिंग बुढिया के घर से ही चुराये गए थे, यह कैसे साबित हो सकता है?"

"यह तो कभी का साबित हो चुका है।" राजुमिहिन ने चिढकर जवाब दिया, "कौश ने ईयरिगो को पहचान लिया था और जिसके ईयरिंग थे उसका नाम भी सही-सही बता दिया था।"

"अच्छा दूसरा सवाल यह है कि जब कौश और पेस्त्र्याकोव सीढियो पर चढ रहे थे, तो क्या किसी ने निकोलाई को देखा था?"

"नही—किसी ने नही देखा, यही तो सारी आफत है—यहाँ तक कि कौश और पेस्त्र्याकोव ने भी उसे नही देखा। उनका कहना है कि उन्होने फ्लैट का दरवाजा तो खुला देखा था, लेकिन भीतर पेन्टर काम कर रहे थे या नही, इस ओर उन्होने कोई ध्यान नही दिया।"

"हूँ—तो निकोलाई के पक्ष में केवल एक ही सबूत है, वह यह कि वह और दमित्री आपस मे झगड़ रहे थे। माना··लेकिन··इस केस मे तुम्हारी क्या राय है?"

"मेरी क्या राय है? वही जो होनी चाहिए। मामला साफ है—ईयरिगो की डिबिया से स्पष्ट है कि हत्यारा उन्हे दरवाजे के

पीछे छोड आया था। जब कौश और पेस्त्र्याकोव ऊपर पहुँचे, तो हत्यारा उस समय फ्लैट के भीतर था। कौश मूर्खतावश वहाँ से चला आया और हत्यारे को बाहर निकलने का मौका मिल गया। वह नीचे वाले फ्लैट मे आकर छिप गया था, और जब सब लोग ऊपर चले गए तो वह नीचे आ गया। शायद किसी ने उसकी तरफ ध्यान नही दिया होगा, क्योकि बहुत से लोग उस इमारत मे आते-जाते रहते है। जब वह दरवाजे के पीछे छिपकर खडा था, उस समय गलती से ईयरिंग की डिबिया उसके हाथो से गिर गई होगी · क्योकि तब वह किसी और सोच मे डूबा था · साफ जाहिर है कि हत्यारा दरवाजे के पीछे खडा हुआ था · मेरी तो यही राय है।"

"भई मान गए, तुम बहुत तेज आदमी हो—लेकिन यह सब नामुमकिन है।"

"क्यो ?"

"इसलिए कि यह स्थिति बिल्कुल नाटकीय है।"

"आह !" राजुमिहिन कुछ कहने जा रहा था कि इसी समय दरवाजा खुला और एक अपरिचित व्यक्ति कमरे मे दाखिल हुआ।

५

यह व्यक्ति देखने मे रौबीला ग्रौर सतर्क मालूम होता था। उसने भीतर ग्राने से पहले सदिग्ध दृष्टि से चारो तरफ देखा। लगता था, ऐसी जगह ग्राकर वह ग्रपने को ग्रपमानित ग्रनुभव कर रहा था। उसने नाक-भौ सिकोडकर रास्कोलनिकोव के बिखरे बालो ग्रौर मैले चेहरे की ग्रोर देखा, जो टूटे हुए सोफे पर लेटा शून्य ग्राँखो से उसकी ग्रोर ताक रहा था। फिर ग्रागन्तुक की दृष्टि राजुमिहिन के ग्रस्तव्यस्त बालो ग्रौर दाढी-मूँछो वाले चेहरे की तरफ गई। राजुमिहिन बिना कुर्सी से उठे ही ग्रागन्तुक की ग्रोर देखता रहा। कुछ समय तक कमरे मे ग्रातकपूर्ण चुप्पी छाई रही। ग्रागन्तुक ने यह समझकर कि शायद उसका रौब-दाब बेकार गया है, शिष्ट किन्तु ग्रहकार भरे स्वर मे जोसीमोव से पूछा।

"क्या रोद्‌योन रोमेनोविच रास्कोलनिकोव यही रहते है ?"

ज़ोसीमोव के कुछ कहने से पहले ही राजुमिहिन ने उत्तर दिया

"जी हा—सामने सोफे पर लेटे है—कहिये क्या काम है ?"

"क्या काम है ?" सुनकर ग्रागन्तुक के पैरो तले से जमीन खिसक गई। उसने ज़ोसीमोव की ग्रोर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"यही रास्कोलनिकोव है," जोसीमोव ने बताया और मुँह खोल कर उबासी लेने लगा। फिर जेब मे से सोने की घडी निकालकर उसने समय देखा।

रास्कोलनिकोव आगन्तुक की तरफ घूरकर देख रहा था। उसके चेहरे पर विचित्र पीलापन छा गया था, लगता था जैसे वह ऑप्रेशन करवाकर बाहर निकला है, या उसे कोई भारी यत्रणा सहनी पडी है। जोसीमोव के मुँह से अपना नाम सुनकर वह फौरन चौंककर उठ बैठा और क्षीण स्वर मे बोला

"मै ही रास्कोलनिकोव हूँ। कहिये क्या काम है ?"

आगन्तुक ने रौबीले स्वर मे उत्तर दिया, "··मेरा नाम प्योत्र पैत्रोविच लूजिन है। मेरा ख्याल है कि आप मेरे नाम से अपरिचित नही है।"

रास्कोल्निकोव चुपचाप आगन्तुक के चेहरे की ओर देखने लगा। उसने कुछ और ही सोचा था।

"क्या यह सम्भव है कि आपको अभी तक मेरे बारे मे कोई खबर न मिली हो ?" आगन्तुक ने खीझकर पूछा।

रास्कोलनिकोव तकिये पर सिर रखकर लेट गया और छत की ओर ताकने लगा। लूजिन का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। जोसी-मोव और राजुमिहिन अप्रतिभ से हो गये। आगन्तुक ने खिसियाये से स्वर मे कहा—

"मेरा ख्याल था कि पन्द्रह दिन पहले का लिखा गया खत आपको · ।"

राजुमिहिन ने बीच मे टोककर कहा

"आप भीतर तशरीफ क्यो नही लाते ? नस्तास्या, रास्ता छोड दो। आइये · "

राजुमिहिन ने कुर्सी आगे खिसका दी। आगन्तुक को शिष्टतावश कुर्सी पर बैठना ही पड़ा। उसने राजुमिहिन की ओर सन्देह भरी नजर डाली।

'घबराइये नही। रोद्या पिछले पाच दिना से तेज बुखार मे पडा है। लेकिन अब इसकी हालत सुधर रही हे। ये सज्जन डाक्टर है, मै रोद्या का सहपाठी हूँ—और इसकी तीमारदारी करने आया हूं। आप बेतकल्लुफ होकर बाते कीजिये।"

"धन्यवाद, लेकिन मेरी बातचीत से मरीज की हालत बिगडेगी तो नही ?"

"नही-नही—हो सकता है, आपकी बातो से उसका मन बहल जाये।" जोसीमोव ने उबासी लेते हुए कहा।

राजुमिहिन ने आत्मीयता जतलाते हुए कहा, "आज सुबह से तो रोद्या होश मे है।" यह जानकर कि राजुमिहिन सिर्फ विद्यार्थी है, प्योत्र पैत्रोविच का मिजाज कुछ नर्म पड गया और उसने अपनी बात शुरू की।

"आपकी मा · "

"हूँ " राजुमिहिन ने गला साफ किया और कहा, "आगे चलिये।"

"आपकी माँ ने कुछ दिन पहले शायद आपको एक पत्र लिखा था। पीटर्सबर्ग आने के बाद मै जानबूझकर आपसे इतने दिन तक नही मिला—लेकिन मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि · "

"मै जानता हूँ। आप ही दूनिया के भावी पति है ? बस इतना जानना ही काफी है।"

कहने की जरूरत नही कि आगन्तुक के मन पर चोट लगी थी, लेकिन वह चुप रहा।

उधर रास्कोलनिकोव उत्सुक दृष्टि से लूजिन के हुलिये की ओर

देख रहा था। निश्चय ही लूजिन के चेहरे या पहनावे मे कोई ऐसी चीज थी जो रह-रहकर उसके 'भावी पति' होने का सबूत दे रही थी। जाहिर था कि राजधानी मे आकर लूजिन ने बढिया कपडे सिलवाये थे— खैर यह तो क्षम्य था, क्योकि लूजिन दुनिया का 'भावी पति' जो ठहरा। सारी पोशाक से नयेपन की गध आ रही थी, यहा तक कि हैट भी बिल्कुल नया था। लूजिन ने हैट को सम्भाल कर घुटनो पर रख छोडा था। चमडे के दस्ताने भी यही दास्तान कह रहे थे कि उन्हे पहनने की खातिर नही बल्कि लोगो को दिखाने की खातिर ही लाया गया है। लूजिन के कपडो के रग हल्के और युवकोचित थे। वह हल्के बादामी रग की जैकेट, और हल्के रग की रेशमी पतलून पहने था। कमीज बढिया कैमरिक की थी। पैंतालीस बरस का होने पर भी लूजिन बडा आकर्षक और सजीला मालूम दे रहा था। उसकी काली मूँछे भली लग रही थी, और उसके बालो को नाई की दुकान मे घुघराला बनाया गया था, फिर भी उसमे ओछापन नही था। लेकिन लूजिन के दोष कपडो-लत्तो मे नही बल्कि कही और छिपे हुए थे। कुछ देर तक लूजिन को घूरने के बाद रास्कोलनिकोव फिर लेट कर छत की ओर देखने लगा।

लेकिन लूजिन ने भी सहृदय बनने का निश्चय कर लिया था। उसने मौन भग करते हुए कहा

"तुम्हारी हालत देखकर मुझे अफसोस है, अगर तुम्हारी बीमारी की खबर मुझे पहले मिलती तो मै जरूर तुम्हे देखने आता। लेकिन व्यापारियो को कितना काम रहता है, यह तुम जानते ही हो। मै एक जरूरी केस के सिलसिले मे यहाँ आया हूँ। तुम्हारी माँ और बहन भी आती ही होगी।"

रास्कोलनिकोव कुछ कहना चाहता था लेकिन लूजिन ने बीच मे टोककर कहा :

"मैंने उनके ठहरने के लिये एक फ्लैट का इन्तजाम कर दिया है।"

"कहा ?" रास्कोलनिकोव ने क्षीण स्वर मे पूछा।

"बेकालेव के घर मे। पास ही मे है।"

राजुमिहिन ने बताया, "मै जानता हूँ। यूशिन नाम के व्यापारी ने दोमजिला मकान किराये पर चढा रखा है। मै वहा एक बार हो आया हूँ।"

"हाँ, वही मकान · "

"बडी गदी और बदबूदार जगह है। बदनाम लोगो का अड्डा है। एक बार मै वहा किसी काम से गया था। वैसे कोठरियाँ वहा सस्ती है ··"

लूजिन ने उत्तर दिया, "मै पीटर्सबर्ग में नया-नया आया हूँ, मुझे यह सारा वृत्तान्त मालूम नही। लेकिन फ्लैट मे दो साफ-सुथरे कमरे है ··वैसे मैने अपने रहने के लिये नया फ्लैट किराये पर ले लिया है। उसमे रोगन हो रहा है। मैं खुद इन दिनो मैडम लिपवेशल के फ्लैट में टिका हूँ। मेरा दोस्त आँद्री सेम्योनोविच लेब्जियालीकोव वही रहता है। उसीने मुझे बेकालेव के फ्लैट के बारे मे बताया था।"

"लेब्जियालीकोव ?" रास्कोलनिकोव ने पूछा।

"हा, आद्री सेम्योनोविच लेब्जियालीकोव जो सरकारी दफ्तर मे क्लर्क है। तुम उसे जानते हो ?"

"हा · नही," रास्कोलनिकोव ने उत्तर दिया।

"मै कभी उसका गार्जियन था···वह बडा प्रगतिशील नौजवान है। मुझे नौजवानो से मिलने-जुलने का बडा शौक है। उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है।" लूजिन ने समर्थन और प्रशसा पाने की दृष्टि से सबकी ओर देखा।

राजुमिहिन ने पूछा, "मै आपका मतलब नही समझा।"

"मै दस बरस के बाद पीटर्सबर्ग आया हूँ। वैसे तो सब नये बिचार,

सुधार और रीति-रिवाज हमारे प्रान्त मे पहुँच गये है लेकिन पीटर्सबर्ग आकर आँखे खुल जाती है। मेरा विश्वास है कि नयी पीढी को देखकर ही आप भविष्य का अदाजा लगा सकते है। सच पूछिये तो मुझे बडी खुशी हो रही है • ”

“किस बात पर ?”

“आपका सवाल बहुत बडा है। लेकिन आजकल के नौजवानो के विचार बहुत साफ और सुलझे हुए है—विशेषकर उनकी आलोचनाएँ व्यावहारिक • ”

“यह सही है।” ज़ोसीमोव ने टिप्पणी की।

राजुमिहिन ने खीझकर कहा, “यह सब बकवास है। व्यावहारिकता नाम की चीज कही दिखाई नही देती। पिछली दो सदियो से हमारे देश मे व्यावहारिकता का नाम-निशान नही मिलता। विचार जरूर उमडते रहे है। भलाई की भावना जरूर है लेकिन वह भी बचकानी सी। लोगो मे ईमानदारी है लेकिन असख्य लुटेरे भी है। जहा तक व्यावहारिकता का प्रश्न है, हमारे देश मे व्यावहारिकता बिल्कुल नही।”

“मै आपसे सहमत होने के लिये तैयार नही। लोग गलतिया जरूर करते है, लेकिन हमे सहृदय होना चाहिये। ये गलतिया अत्यधिक उत्साह और बाह्य परिस्थितियो से पैदा होती है। थोडे समय मे थोडे सुधार ही हो सकते है। अगर आप मेरी व्यक्तिगत राय जानना चाहे तो मै जरूर यह कहूँगा कि देश मे बहुत तरक्की हो चुकी है। पुराने स्वप्नशील रोमाटिक लेखको की जगह नये विचारशील लेखको की पुस्तके लोकप्रिय हो रही है। हमारे साहित्य मे प्रौढता आ रही है। पुराने अधविश्वास और पूर्वाग्रह मजाक का विषय बन गये है • हम अतीत की जजीरे तोडकर आगे बढ रहे हैं—यह काफी बडी उपलब्धि है • •”

“यह जानबूझकर विद्वत्ता का प्रदर्शन करना चाहता है,” रास्कोल-

निकोव ने कहा ।

"क्या कहा ?" लूजिन ने रास्कोलनिकोव का वाक्य पूरी तरह नही सुना था ।

"आप सही फरमा रहे है ।" जोसीमोव ने बीच-बचाव किया ।

लूजिन ने विजेताभाव से राजुमिहिन की ओर देखा और जोसीमोव से कहा, "मै ठीक कह रहा हूं न ! आपको मानना पडेगा कि देश मे वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति हो रही है ।"

"यह पिटा-पिटाया वाक्य है ।"

'जी नही । मिसाल के लिये अगर कोई मुझसे कहे, 'अपने पडौसी से प्रेम करो' तो उससे क्या होगा ? अगर मै अपना आधा कोट फाड कर पडौसी को दे दूं तो हम दोनो का आधा शरीर ही ढँक पायेगा । एक कहावत है, 'जो बहुत से खरगोशो को पकडना चाहता है, वह एक भी खरगोश नही पकड सकता' । विज्ञान कहता है, सबसे पहले अपने आपसे प्रेम करो, क्योकि ससार स्वार्थ पर अवलबित है । हर व्यक्ति अपनी भलाई स्वय करे तो सबकी भलाई अपने आप हो जायेगी । अर्थशास्त्र कहता है कि व्यक्ति की सुरक्षा मे ही समाज की सुरक्षा है । इसलिये अपने लिये धन पैदा करके शायद मै अपने पडौसी को भी समृद्ध बनाने मे सहायता दे रहा हूँ। इसका कारण मेरी सहृदयता नही बल्कि हमारे युग की विचारधारा है । कितनी सीधी-सादी बात है, लेकिन अपने आदर्शवाद और भावुकता के कारण हम इस विचार-धारा को नही समझ पाते । वैसे देखा जाये, तो इस विचार को समझने मे ज्यादा अक्ल खर्च नही होती ।"

"माफ कीजिये, मै खुद बहुत कम अक्ल रखता हूँ," राजुमिहिन ने बीच मे टोककर कहा । "अच्छा हो अगर हम बहस यही पर बद कर दे, क्योकि पिछले तीन बरसो से मै यही पिटी-पिटाई बाते कहता और सुनता आ रहा हूं । मै जानता हूँ आप अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करने

के लिये उतावले हो रहे है—लेकिन यह कोई बुरी बात नही। मैने सिर्फ यह जानने के लिये कि आप कैसे आदमी है, यह बहस शुरू की थी। आजकल बहुत से बेहया लोग प्रगतिशीलता के हामी बन गये है—और उन्होने हर विचार को अपने सकीर्ण स्वार्थ के लिये सकुचित कर लिया है। बस बहस खत्म कीजिये।"

"माफ कीजिये, क्या आप कहना चाहते है कि मै भी···" लूजिन ने आहत, किन्तु शालीन स्वर मे पूछा।

"जनाब! मै ऐसी बात कैसे कह सकता हू।" राजुमिहिन यह कहकर फिर जोसीमोव से बातचीत करने लगा।

लूजिन ने जल्द वहा से चला जाना उचित समझा। उसने रास्कोलनिकोव से कहा

"मुझे विश्वास है कि भविष्य मे हमारा परिचय और अधिक गहरा हो जायेगा आप जल्दी से स्वस्थ हो जाये ·"

रास्कोलनिकोव मुँह फेरकर लेटा रहा। लूजिन कुर्सी से उठ खडा हुआ। उधर जोसीमोव कह रहा था—"बुढिया के कर्जदारो मे से ही किसी ने उसकी हत्या की होगी।"

"इसमे कोई शक नही। पोरफेरी उन सब लोगो से पूछताछ कर रहा है, जिन्होने बुढिया के पास चीजे गिरवी रखी थी," राजुमिहिन ने उत्तर दिया।

"पूछताछ कर रहा है? रास्कोलनिकोव ने ऊँची आवाज में पूछा।

"हा—क्यो क्या बात है?"

"कुछ नही।"

"उन लोगो का पता कैसे चला? जोसीमोव ने पूछा।

"कौश ने कुछ लोगो के पते बताये है। कुछ लोग खुद वहाँ पहुँचे थे।"

"यह किसी बदमाश का काम मालूम होता है। जरा हत्यारे की हिम्मत देखो।"

राजुमिहिन ने उत्तर दिया, "यही गलतफ़हमी सब लोगो को है। मै कहता हूँ—जिसने यह हत्या की है वह व्यक्ति अनुभवी और चालाक बिल्कुल नही है। शायद यह उसका पहला अपराध है। सयोगवश वह बच निकला। सयोग क्या कुछ नही कर सकता ? उसने शायद सब रुकावटो पर गौर नही दिया था। उस मूर्ख ने बुढिया के सदूक मे से सिर्फ दस या बीस रूबल के गहने निकालकर जेबो मे भर लिए। जबकि पुलिस ने दराज़ मे से नकद पद्रह सौ रूबल बरामद किए है। हत्यारे को चोरी करने की तमीज़ नही थी। मै फिर कहूँगा कि यह उसका पहला अपराध है। न जाने उसे भागने का मौका कैसे मिल गया, वरना..."

"आप कही सूदखोर बुढिया की हत्या की चर्चा तो नही कर रहे?" लूज़िन ने ज़ोसीमोव से पूछा। जाने से पहले वह अपनी बौद्धिकता का पूरा प्रदर्शन करके अपने अहकार को तुष्ट करना चाहता था।

"हाँ, क्या आपने इसके बारे मे सुना है ?"

"हाँ—बुढिया का मकान हमारे पडौस मे ही है।"

"आपको घटना का ब्यौरा मालूम है ?"

"मै अधिक तो नही जानता, लेकिन मुझे अपराध की समस्या मे काफी दिलचस्पी है। पिछले पाँच बरसो से निम्न वर्ग के लोगो मे तो अपराधियो की सख्या बढी ही है। लेकिन ताज्जुब तो यह है कि उच्च वर्ग मे भी चोरो और लुटेरो की सख्या बढ रही है। कभी सुनने मे आता है कि किसी विद्यार्थी ने किसी गाडी पर डाका मारा, कभी सुनते है कि सभ्रान्त परिवार के लोगो ने जाली नोट बनाये। पिछले दिनो मास्को मे एक ऐसा गिरोह पकडा गया है जो जाली लॉटरी के टिकट छापता था। इस गिरोह का मुखिया इतिहास का एक अध्यापक था।

इसके बाद हमारे देश के दूतावास के एक अधिकारी की हत्या की गई। निश्चय ही इस बुढिया की हत्या भी किसी पढ-लिखे व्यक्ति ने ही की होगी, क्योकि गरीब देहाती सोने के गहने गिरवी नही रखते फिरते— समाज के सभ्य वर्ग का इतना नैतिक पतन क्यो हो गया है ?"

"देश मे बहुत से आर्थिक परिवर्तन हुए है।" ज़ोसीमोव ने उत्तर दिया।

"इसका कारण हम कैसे बता सकते है ? इसका कारण शायद लोगो की व्यावहारिकता है," राज़ुमिहिन ने ताना दिया।

"क्या मतलब ?"

"आपके इतिहास के अध्यापक ने जाली नोट बनाने का क्या कारण बताया था ? यही न कि 'सब लोग किसी न किसी तरह धनी बन रहे है, इसलिए मै भी धन जमा करना चाहता हूँ' मुझे उस अध्यापक के सही शब्द तो याद नही, लेकिन उसके कहने का साराश यही था कि वह जल्द से जल्द बिना मेहनत किए, धनी बनना चाहता है। हम आराम से रहने के आदी हो गए है। हम चाहते है, हमारा खाना भी कोई दूसरा आदमी चबाये। इसके बाद देश मे परिवर्तन[1] हुआ और हर आदमी की असलियत प्रकट हो गई।"

"लेकिन नैतिकता · सिद्धान्त ·"

"आपको नैतिकता से क्या। आपके सिद्धान्त भी तो यही कहते है?"

"मेरे सिद्धान्त ?"

"जी आप अभी-अभी व्यावहारिकता का समर्थन कर रहे थे। व्यावहारिकता तो कहती है कि पैसा पाने के लिये लोगो की हत्या करने मे कोई हर्ज नही ··"

"क्या मैने यह कहा था··"लूज़िन चिल्लाया।

"नही, नही, आपका यह मतलब हरगिज़ नही था," जोसीमोव

१ परिवर्तन का अर्थ यहां १८६१ में दास-मुक्ति की घोषणा है।

ने बीच-बचाव किया।

रास्कोलनिकोव का चेहरा सफेद पड गया था। उसका ऊपर वाला ओठ फडक रहा था, और उसे सास लेने में दिक्कत हो रही थी।

लूजिन कह रहा था, "हर चीज की कोई हद भी होती है । किसी के विचारो का अर्थ यह लगा लिया जाये कि वह हत्या का समर्थन करता है, तब तो आप लोग · "

"क्या यह सच है कि आपने अपनी सगाई के एक घण्टे बाद ही अपनी मगेतर से कहा था कि आपकी इच्छा एक अनाथ लडकी से शादी करने की थी, ताकि वह हमेशा आपके अहसानो तले दबी रहे और आपका स्वामित्व बना रहे ?" रास्कोलनिकोव ने जानबूझ कर लूजिन का अपमान करते हुए पूछा।

लूजिन का चेहरा गुस्से और घबराहट से सुर्ख हो गया। उसने उत्तर दिया, "ईश्वर की कसम ! मेरे शब्दो को इस तरह तोडा-मरोडा गया है ? माफ करना, मेरे बारे मे जो रिपोर्ट तुम्हे पहुँची है वह सरासर झूठ है। मै मुझे शक है · कि तुम्हारी माँ इतनी गुणवती स्त्री होते हुए भी बातो को बढा-चढाकर कहने की आदी है · लेकिन मै सपने मे भी नही सोच सकता था कि वह मेरी बात को इस तरह तोडे-मरोडेगी सचमुच ।"

"मै आपको बता देना चाहता हूँ ··· मैं · " रास्कोलनिकोव ने तैश में आकर कहा।

"क्या बताना चाहते हो ?" लूजिन ने चुनौती दी। कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।

"मै बता देना चाहता हूँ कि अगर आपने मेरी माँ के बारे मे एक भी शब्द मुह से निकाला · तो मै आपको सीढियो से नीचे फेंक दूगा।"

"अरे तुम्हे क्या हो गया है ?" राजुमिहिन चिल्लाया।

लूज़िन का चेहरा पीला पड गया। उसने अपने ओठ चबाते हुए कहा, "अच्छा तो यह मामला है ? मै तुम्हे देखते ही समझ गया था कि तुम्हे मुझसे चिढ है। तुम्हारे रग-ढग देखने के लिए ही मै यहा रुका था। तुम बीमार हो और मेरे रिश्तेदार भी हो, इसलिए मै तुम्हे माफ कर सकता हूँ लेकिन इसके बाद कभी भी·· "

'मै बीमार नही हूँ" रास्कोलनिकोव ने जोर से कहा।

"तब तो और भी बुरी बात है।"

"जहन्नुम मे जाओ।"

लेकिन लूजिन बिना कुछ कहे चला गया। राज़ुमिहिन उठकर खडा हो गया। जोसीमोव ने कुछ देर पहले उसे इशारे से समझाया था कि मरीज को तग करना ठीक नही। लूजिन किसी से विदा लिए बगैर ही अपना हैट उठाकर चला गया था।

"यह तुमने क्या किया ?" राज़ुमिहिन ने रास्कोलनिकोव से पूछा।

"मुझे अकेला छोड दो—सब लोग चले जाओ। तुम मुझे हमेशा इसी तरह सताते रहोगे ? मुझे अब किसी का डर नही। चले जाओ यहाँ से। मुझे एकान्त चाहिए।"

"आओ चले" ज़ोसीमोव ने राज़ुमिहिन से कहा।

"लेकिन इसे इस हालत मे कैसे छोड दिया जाए ?"

"आओ भी, कहकर ज़ोसीमोव बाहर चला गया। राज़ुमिहिन उसके पीछे-पीछे भागा।

ज़ीने मे आकर जोसीमोव ने कहा, "अगर हम उसे चिढायेगे तो उसकी तबियत फिर बिगड जायेगी।"

"उसे आखिर हो क्या गया है ?"

"अगर उसके मन को कोई सुखद धक्का पहुँचे तो उसकी हालत सुधर सकती है। बीच में तो वह ठीक हो गया था · लगता है उसके मन पर कोई भारी बोझ है, मुझे डर है · "

"शायद मिस्टर लूजिन के आने से उसकी तबियत बिगड गई है। दोनो की बातचीत से लगता है कि लूजिन की शादी रोद्या की बहन से होने वाली है और बीमारी से पहले उसे कोई ख़त मिला था • "

"इस कम्बख्त लूजिन ने आकर मरीज की हालत बिगाड दी। तुमने गौर किया कि उसे किसी बात मे दिलचस्पी नही, लेकिन हत्या का जिक्र आते ही वह उत्तेजित हो उठता है।"

गाजुमिहिन ने समर्थन किया, "हाँ, हाँ, मैने भी देखा है। जिस दिन बीमारी की हालत मे वह पुलिस के दफ्तर गया था, वहाँ भी हत्या की चर्चा हो रही थी। यह बेचारा बेहोश हो गया था।"

"आज शाम को मुझे उस दिन का किस्सा ब्यौरे से बताना, मै भी तुम्हे एक बात बताऊँगा। यह बडा दिलचस्प मरीज है। आध घटे बाद फिर आकर उसे देखूँगा। सूजन नही रहेगी।"

"धन्यवाद। मै नीचे पाशेन्का के पास बैठूगा और नस्तास्या को भेजकर उसकी हालत का पता करवाता रहूँगा "

रास्कोलनिकोव बेचैनी से नस्तास्या के जाने का इन्तजार कर रहा था, लेकिन नस्तास्या वही बैठी रही।

"चाय पीओगे ?"

"नही, मुझे नीद आ रही है। चली जाओ।"

रास्कोलनिकोव ने मुँह दीवार की ओर फेर लिया। नस्तास्या बाहर चली आई।

६

नस्तास्या के बाहर जाते ही रास्कोलनिकोव ने उठकर दरवाजे की कुंडी चढा ली, और राजुमिहीन के लाये हुए कपडो को गठरी से निकाल कर पहनने लगा। इस समय उसका मन बिल्कुल स्वस्थ था। पिछले दिनो की विक्षिप्ति और भय गायब हो गये थे। उसके मन मे एक विचित्र शान्ति छा गई थी।

उसके सधे हुए हाथो से किसी दृढ निश्चय की झलक मिल रही थी। "आज, आज ही।" वह रह रह कर बुडबुडा रहा था। वह जानता था कि वह अभी कमज़ोर है लेकिन तीव्र मानसिक तल्लीनता से उसमें आत्मविश्वास पैदा हो गया था। उसे विश्वास था कि सडक पर चलते समय उसके कदम नही लडखडायेंगे। कपडे पहनने के बाद उसने मेज पर पडे पच्चीस रूबल और कुछ सिक्के उठाकर अपनी जेब मे डाल लिये। फिर कुंडी खोलकर वह नीचे उतर आया। रसोईघर मे नस्तास्या खडी मालकिन का समावार* सुलगा रही थी। उसने रास्कोलनिकोव को बाहर निकलते नही देखा।

---

*पानी गरम करने का एक विशेष प्रकार का केतली जिसका रूस में प्रचलन है। काश्मीर में भी समावार हर घर में मिलता है।

आठ बजे थे, सूर्य अस्त हो रहा था। गर्मी के मारे दम घुटा जा रहा था, लेकिन रास्कोलनिकोव ने धूल भरी हवा मे लम्बी सास ली। उसका सर चकरा रहा था। उसके कुम्हलाये हुए चेहरे और बुखार से जलती हुई आखो से पाशविक शक्ति का आभास मिल रहा था। वह बिना सोचे-समझे आगे चलता जा रहा था। उसने निश्चय कर लिया था कि जो भी हो, इस मामले को आज ही खत्म हो जाना चाहिये। जब तक यह मामला हल नही होगा, तब तक वह घर नहीं लौटेगा। लेकिन मामला क्या था, यह वह खुद भी नही जानता था, न ही इस बारे मे अधिक सोचना चाहता था। सोचने से उसे यत्रणा होती थी। वह सिर्फ इतना ही जानता था कि आज मामला तय हो जाना चाहिये।

पुरानी आदत के अनुसार वह टहलता हुआ घासमडी की तरफ चला गया। एक बिसाती की दुकान के आगे काले बालो वाला एक युवक आर्गन की धुन पर एक भावुक गीत गा रहा था। साथ मे पन्द्रह बरस की एक लडकी थी, जो सर पर स्ट्रा-हैट लगाये थी। उसके बदन पर फटे-पुराने कपडे थे। बाजारो में गाते गाते उसकी आवाज भारी हो गई थी, और वह ऊँचे स्वर मे गीत गा रही थी। रास्कोलनिकोव भी श्रोताओ मे जाकर खडा हो गया और उसने पाच कोपेक लडकी को दिये। लडकी गीत को अधूरा छोड कर अपने साथी से बोली "आओ चलें"। दोनो जने अगली दुकान पर जाकर खडे हो गये।

"आपको बाजारू गाने अच्छे लगते है ?" रास्कोलनिकोव ने अपने पास खडे एक अधेड अजनबी से पूछा। अजनबी ने कोई उत्तर नही दिया।

रास्कोलनिकोव फिर बोला "गाने के साथ अगर आर्गन हो तो मुझे अच्छा लगता है, विशेषकर पतझड की सीली शामो मे, जब आने-जाने वालो के चेहरे पीलेजर्द दिखाई दे रहे हो, या बर्फबारी हो रही हो,

और सडको की बत्तियो की झिलमिलाहट···मेरा मतलब समझ गये न ?"

"क्षमा कीजिये···मैं नही जानता" कहकर अजनबी सडक के उस पार चला गया ।

रास्कोलनिकोव घासमडी के कोने पर पहुँचा जहाँ उसने एक दुकानदार को लिजावेता से बाते करते हुए देखा था । उसने लाल कमीज वाले एक युवक से पूछा,

"इस कोने मे क्या कोई ऐसी दुकान है, जिसमे दुकानदार की पत्नी भी बैठती है ?"

"यहाँ बहुत सी ऐसी दुकाने है" युवक ने उद्धत दृष्टि से रास्कोलनिकोव को देखते हुए उत्तर दिया ।

"उस दुकानदार का नाम क्या है ?"

"वही जो उसके माँ-बाप ने रखा होगा ।"

"तुम कौन से प्रान्त के रहने वाले हो ?"

युवक ने रास्कोलनिकोव को घूरते हुए उत्तर दिया, "जनाब, प्रान्त नही मुहल्ला पूछिये । जनाब मुझे क्षमा करे···"

"सामने शराब की दुकान है ?"

"जी बिलियर्डरूम और भोजनालय भी है । आपको वहाँ बहुत सी शाहजादियाँ भी मिलेगी · ला-ला ।"

रास्कोलनिकोव चौराहा पार करके आगे बढा । एक कोने मे देहातियो की भीड खडी थी । वह जाकर भीड मे घुस गया । वह किसी से बातचीत करने के लिये व्याकुल हो रहा था, लेकिन किसी ने उसकी ओर ध्यान न दिया । वह खडा होकर कुछ सोचने लगा और फिर व— स्थान की तरफ चल पडा ।

बाजार से सेदोवी स्ट्रीट की तरफ वह अक्सर आया करता था । जब भी उसका मन उदास या चिन्ताग्रस्त होता, वह न जाने क्यो इस

ओर आ निकलता था।

इस समय वह कुछ नही सोच रहा था, इस इलाके में ढाबे और शराबखानो की कतारे थी। औरते नगे सिर इधर उधर घूम रही थी, और शराबखानो के आगे खडी होकर बाते कर रही थी। एक मकान मे से सगीत के स्वर और हसी के कहकहे सुनाई दे रहे थे। कुछ औरते फुटपाथ पर बैठी थी और कुछ मकानो की सीढियो पर। नशे मे धुत एक सिपाही गालियाँ बकता हुआ औरतो के पास से होकर निकला। उसके कदम लडखडा रहे थे। पास ही मे दो भिखारी आपस मे झगड रहे थे और नशे मे धुत एक आदमी सडक के बीचोबीच लेटा था। रास्कोलनिकोव औरतो के झुड के पास जाकर खडा हो गया। उनमे से कुछ अधेड थी और कुछ युवतियाँ मालूम होती थी। सबने सूती कपडे पहन रखे थे। उनकी आँखो मे सुरमा लगा था।

सामने के शराबखाने में कोई नाच रहा था। रास्कोलनिकोव का ध्यान बरबस उधर खिचा जा रहा था। वह कुछ देर तक चुपचाप उदास खडा गाना सुनता रहा और दरवाजे के भीतर झाकता रहा।

कोई बारीक आवाज मे गा रहा था,

"ऐ मेरे मदमस्त सिपाही
मुझे अकारण मत पीटो"

रास्कोलनिकोव गीत की अगली पक्तियाँ भी सुनना चाहता था। उसे लगा जैसे उस गीत में ही सब कुछ छिपा हुआ है। वह सोचने लगा, "क्या मै भी भीतर जाकर कुछ नशा करूँ?"

"आप भीतर तशरीफ नही लायेंगे?" एक युवती ने उससे पूछा। उसकी आवाज मीठी थी और देखने मे भी वह बुरी नहीं थी।

रास्कोलनिकोव युवती के पास आकर बोला, "तुम सुन्दर हो।"

युवती अपनी प्रशसा सुनकर मुस्कराई और बोली, "आप खुद भी तो सुन्दर है।"

"लेकिन देखो तो कितना दुबला है ? क्यो जी तुम किसी हस्पताल से आ रहे हो ?" पास बैठी एक औरत ने मोटी आवाज मे पूछा ।

"ये सब किसी जनरल की बेटियाँ मालूम होती है, लेकिन इनकी नाके कितनी चपटी है । सब खुशमिजाज नजर आती है," नशे मे धुत एक देहाती ने फबती कसी ।

"जाओ अपना रास्ता नापो ।"

"चला जाऊँगा प्यारी ।"

देहाती एक दूसरे शराबखाने मे घुस गया । रास्कोलनिकोव भी आगे चल दिया ।

"जनाब जरा सुनिये तो" पीछे से युवती ने आवाज दी ।

"क्या बात है ?"

युवती हिचकिचाई, "आप जैसे नेक आदमी के साथ मै कभी भी एक घटा गुजारने को तैयार हूँ, लेकिन इस वक्त मुझे शर्म आ रही है । मुझे शराब पीने के लिये छ कोपेक दोगे ? दे दो—बडे अच्छे आदमी हो ।"

रास्कोलनिकोव ने पद्रह कोपेक निकाल कर दे दिये ।

"आह आप कितने नेक दिल है ।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"आप अगली बार जब आये तो दूक्लीदा के पास आईयेगा ।"

"बस बस, बेहयाई की भी हद होती है । मै तो ऐसी बात कहने मे ही शर्म से मर जाऊँ," एक औरत ने हाथ मटकाते हुए कहा । वह तीस बरस की, चेचक के दाग वाली एक फूहड स्त्री थी । उसके शरीर पर खरोचो के निशान थे और उसका ऊपरवाला ओठ सूजा हुआ था । उसकी टिप्पणी सुनकर रास्कोलनिकोव सोचने लगा, "मैने कही पढा था कि कोई आदमी मृत्यु से एक घटा पहले सोच रहा था, कि अगर उसे किसी नोकीली चट्टान पर खडा कर दिया जाये, और उसके चारो

ओर अधेरा, तूफान और गरजता हुआ समुद्र हो, तब भी वह मरने की बजाय, हजार बरस तक उसी चट्टान पर खडा रहना पसद करेगा। किसी भी कीमत पर अगर जिन्दगी मिले·· हे ईश्वर इस विचार मे कितनी सच्चाई है! इन्सान पापी है! 'जो दूसरो को पापी कहता है, वह खुद भी पापी है।"

वह दूसरी गली मे चला गया, "वाह रे शीशमहल! राज़ुमिहीन भी अभी शीशमहल रेस्तराँ की बात कर रहा था। लेकिन मै किसलिये यहाँ आया था ?· अरे हाँ अखबार·· जोसीमोव कह रहा था कि कि उसने अखबारो मे यह खबर पढी है।" सामने के एक साफ सुथरे रेस्तराँ मे, जहाँ लोग चाय और शैम्पेन पी रहे थे, रास्कोलनिकोव ने दर्याफ्त किया "आपके पास अखबार होगे ?" उसे लगा कि शायद जेमेतोफ भी वही बैठा है। "बैठा भी होगा तो क्या है ?" उसने सोचा।

वेटर ने पूछा, "आप वोद्का पीयेंगे।"

"मेरे लिये चाय लाओ और पिछले पाँच दिनो के अखबार भी लाओ—तुम्हे इनाम दूँगा।"

"लीजिये आज का अख़बार। वोद्का नही चाहिए ?"

पुराने अखबार भी आ गये, रास्कोलनिकोव पढने लगा,

इसमें तो रोज़मर्रा की खबरे है, 'सीढियो पर दुर्घटना, शराब से एक दुकानदार का पेट फट गया,' 'पेस्की मे आग लगी'—'पीटर्सबर्ग क्वार्टर में आग'—एक और आग की ख़बर·· मिल गई। वह हत्या की खबर की तलाश कर रहा था। उसके हाथ अधीरता से काँप रहे थे। सहसा उसने देखा, कोई उसके पास आकर बैठ गया था। रास्कोलनिकोव ने देखा कि वह ज़ेमेतोफ था—हाथो मे कीमती अगूठियाँ, बालो मे पोमेड, और चुस्त वास्कट, लेकिन उसका कोट और कमीज गदे थे। शैम्पेन पीने से उसके चेहरे पर खुमारी आ गई थी, वैसे वह खुशमिजाज

नजर आ रहा था ।

"अरे तुम यहाँ कैसे ? राजुमिहीन ने कल ही मुझे बताया था कि तुम बेहोशी की हालत मे हो, जानते हो, मै तुम्हारा हाल पूछने गया था ?"

"हाँ, मैने सुना था···आपने ही तो मेरा मोजा तलाश किया था · राजुमिहीन आपका बडा प्रशसक है । उसका कहना है कि आप उसके साथ लुईजा इवानोवना के यहाँ गये थे । आपने आतिशबाज लैफ्टीनेन्ट को आँख मारी थी, लेकिन वह कुछ न समझ सका । ठीक है न ?"

"कितना अहमक आदमी है ।"

"कौन लैफ्टीनेन्ट ?"

"नही तुम्हारा दोस्त राजुमिहीन ।"

"मिस्टर जेमेतोफ, आपके मज़े ही मज़े है । सब जगह मुफ्त जा सकते है । कहिये आज कौन आपको शराब मे डुबो रहा है ?"

"हमने ज्यादा तो नही पी । डुबोने का क्या मतलब ?"

रास्कोलनिकोव ने हसकर जेमेतोफ के कधो को थपथपा कर कहा, "रिश्वत की जगह शराब, और क्या ? आपके तो मजे ही मज़े है । ऐश करो यार, मै तो मजाक कर रहा हूँ, जिस तरह तुम्हारा पेन्टर दमित्री से मजाक कर रहा था···।"

"तुम्हे यह बात कैसे मालूम है ?"

"शायद मै तुमसे ज्यादा जानता हूँ ।"

"तुम भी अजब आदमी हो · शायद तुम्हारी तबियत अभी भी खराब है । तुम्हे घर से बाहर नही निकलना चाहिए था ।"

"क्या सचमुच मै अजब आदमी हूँ ।"

"हाँ, तुम अखबार पढ रहे हो क्या ?"

"हाँ ।"

"शहर मे बहुत सी जगह आगे लगी है।"

"मैं आगो के बारे मे नही पढ रहा। यार, सच सच कहो कि तुम जानना चाहते हो कि मै क्या पढ रहा हूँ।"

"बिल्कुल नही। लेकिन क्या मै एक सवाल पूछ सकता हूँ—तुम हर वक्त ··?·· "

"तुम पढे-लिखे सभ्य आदमी हो न ?"

"ज़िमनेसियम मे मै छठी जमात मे था।" जेमेतोफ ने शालीन स्वर में कहा।

"छठी जमात मे ? वाह री मेरी चिडिया ! तुम्हारी अगूठियो और टेढी माँग से तो लगता है कि तुम मालदार आदमी हो। वाह रे बाके छोकरे !" रास्कोलनिकोव विचित्र ढग से हसने लगा। ज़ेमेतोफ हैरान होकर पीछे हट गया।

"तुम कितने अजब आदमी हो ? मेरा ख्याल है कि तुम अभी तक सरसाम मे बक रहे हो।"

"मै बक रहा हूँ, वाह री मेरी चिडिया ! क्या कहा, मै अजब आदमी हूँ ?"

"हाँ।"

"बताऊं कि मै अखबार मे कौन्सी खबर पढ रहा था। देखो, मैने ढेरो अखबार मगवाये है। अब तो तुम्हे शक हुआ न ?"

"क्या पढ रहे थे ?"

"क्यो तुम्हारे कान क्यो खडे हो गये ?"

"मेरे कान किस लिए खडे होगे ?"

"यह मै बाद मे बताऊँगा, लेकिन इस समय, मै एलान करता हूँ नही मै स्वीकार करता हूँ ··यह भी ठीक नही है·· मै साक्षी देकर कहता हूँ कि मै जानबूझ कर यहाँ सूदखोर बुढिया की हत्या की खबर पढने आया था।" रास्कोलनिकोव ने अपना चेहरा ज़ेमेतोफ के चेहरे

से सटाते हुए कहा। जेमेतोफ ने कोई ज़वाब न दिया, एक मिनिट के लिए खमोशी छायी रही। दोनो एक दूसरे को गौर से देखते रहे।

आखिर जेमेतोफ ने अधीर स्वर मे कहा, "तुम कौनसी खबर पढ रहे हो, इससे मुझे क्या सरोकार हो सकता है ?"

"उसी बुढिया की हत्या की खबर, जिसकी चर्चा तुम उस दिन पुलिस दफ्तर मे कर रहे थे, जब मै बेहोश हो गया था।...अब कुछ समझ मे आया ?"

"समझ मे आने का क्या मतलब ?" जेमेतोफ ने आशाकित स्वर मे पूछा।

रास्कोलनिकोव के चेहरे का तनाव ढीला पड गया और वह पहले की तरह हसने लगा। उसे याद आया, जब वह कुल्हाडी लिए फ्लैट के भीतर खडा था, तो बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाजें सुन कर उसके जी मे आया था, कि वह ऊँची आवाज मे गालियाँ बके—मुह चिढाये और हँसे हँसता जाये।

"तुम पागल हो गए हो या . " जेमेतोफ आगे कुछ कहना चाहता था लेकिन वह स्वयं अपने मन मे उठने वाले विचार पर सन्न रह गया था।

"रुक क्यो गए ? आगे कहो न ?"

"कुछ नही।" जेमेतोफ ने क्रुद्ध स्वर मे उत्तर दिया।

दोनो चुप रहे। हसी के दौरे के बाद रास्कोलनिकोव सहसा गभीर और उदास हो गया। उसने मेज पर कुहनियाँ टेक कर अपना सर झुका लिया। उसे जेमेतोफ़ की उपस्थिति का आभास तक न रहा। कुछ देर तक चुप्पी छाई रही।

"तुम्हारी चाय ठडी हो रही है। पीते क्यो नही ?" जेमेतोफ ने पूछा।

"चाय ? अरे हाँ" रास्कोलनिकोव ने रोटी का एक टुकडा तोडा

और चाय पीने लगा। सहसा ज़ेमेतोफ की शक्ल देखकर उसे कुछ याद आ गया और उसने अपने आपको सभाल लिया। उसके चेहरे पर वही व्यग्यभरी मुस्कान आ गई।

"आजकल अपराधो की सख्या बढती जा रही है।" ज़ेमेतोफ बोला, "मैने अभी कुछ दिन हुए मॉस्को न्यूज' मे पढा था कि जाली नोट छापने वाला एक गिरोह पकडा गया है।"

"लेकिन यह खबर तो मैने एक महीने पहले पढी थी। तुम ऐसे लोगो को अपराधी समझते हो ?"

"निश्चय ही वे अपराधी है।"

"वे लोग सीधे सादे बच्चे है, अपराधी नही। जरा सोचो, जरा-सी बात के लिए पचास आदमियो के सगठन की क्या जरूरत थी ? अपने ऊपर विश्वास करने की बजाय उन्होने अजनबियो पर विश्वास करके उन्हे जाली नोट भुनाने भेज दिया। मान लो वे मूर्ख सफल हो जाते और हरेक लखपति बन जाता, फिर क्या होता ? जिन्दगी भर सब एक दूसरे के मुँहताज रहते। क्योकि उनमे से किसी को नोट भुनाना नही आता था। जिस आदमी को भुनाने को भेजा, चार हजार रूबल गिनने के बाद ही उसके हाथ कापने लगे, क्योकि वह जल्द वहाँ से चम्पत होना चाहता था। लोगो को सदेह होना स्वाभाविक ही था। एक आदमी की मूर्खता से सारी योजना धूल मे मिल गई। क्या यह सब सभव है ?"

"क्या हाथ काँपना ? हाँ यह बिल्कुल सभव है। कई बार अपराधी खुद अपना अपराध बर्दाश्त नही कर सकता ?"

"इतनी मामूली सी बात भी ?"

"क्या तुम बर्दाश्त कर सकते ? मै तो सिर्फ सौ रूबलो की खातिर इतना जोखिम हरगिज मोल न लेता—फिर जाली नोट लेकर बैक मे जाना खतरे का काम है। तुम ऐसा कर सकते थे ?"

रास्कोलनिकोव के मन मे फिर मुँह चिढाने की इच्छा हुई। उसके शरीर मे सिहरन दौड गई। उसने उत्तर दिया, "मै नोट भुनाने मे इतनी जल्दबाज़ी न करता, बल्कि हर नोट को गिन कर लेता, और एक नोट को रोशनी के पास ले जा कर कहता, "यह नोट जाली तो नही ? मेरे रिश्तेदार को इसी तरह धोखा खाना पडा था।" इसके बाद मै एक मनगढत कहानी सुनाता और तीसरी गड्डी गिनते हुए कहता, "माफ कीजिये दूसरी गड्डी गिनने मे मुझसे भूल हो गई है।" सारे नोट गिनने के बाद मै फिर कुछ नोटो को रोशनी मे ले जाकर देखता और क्लर्क से कहता, 'मेहरबानी करके इन नोटो को बदल दीजिये।' क्लर्क मुझसे तग आ जाता और जरूर मुझसे पिण्ड छुडाने की कोशिश करता। एक बार बाहर जाकर मै फिर लौट आता और नोटो के बारे मे तसल्ली करता।"

"छि छि कैसी बाते करते हो ?" जेमेतोफ ने हँसते हुए कहा। "कहना आसान है लेकिन करने मे कही न कही गडबड हो जाती है। अनुभवी से अनुभवी और साहसी आदमी भी धोखा खा जाते है, हम जैसो की तो बिसात ही क्या ! इस बुढिया की हत्या की ही मिसाल लो। हत्यारा जरूर दु साहसी होगा, जिसने दिनदहाडे ऐसा काम किया—लेकिन उसके हाथ भी काँप गये थे। वह बुढिया की कीमती चीज़े नही ले जा सका—उसे वहाँ अधिक देर रुकना बर्दाश्त ही नही हुआ होगा···· "

रास्कोलनिकोव ने आहत स्वर मे पूछा, "तो फिर तुम हत्यारे को पकडते क्यो नही ?"

"पुलिस उसे पकड लेगी।"

"तुम्हारा ख्याल है कि तुम उसे पकड सकोगे ? तुम्हे तो अगर कोई गरीब आदमी फिजूलखर्ची करता हुआ मिले तो तुम उसी को गिरफ्तार कर लोगे। पुलिस को तो कोई बच्चा भी गुमराह कर

सकता है।"

"अपराधी भी तो यही करते है। हत्या करने के बाद वे शराबखाने मे शराब पीते है और पकडे जाते है। सब तुम्हारी तरह चालाक नही होते। हत्यारे की जगह अगर तुम होते तो क्या ऐसा नही करते ?"

रास्कोलनिकोव के माथे पर त्योरियाँ पड गई। उसने खीझ कर उत्तर दिया, "मालूम होता है तुम्हे इस मामले मे बडी दिलचस्पी है और तुम जानना चाहते हो कि उन परिस्थितियो मे मैं क्या करता ?"

" हा मै जानना चाहता हूँ" जेमेतोफ के स्वर मे सजीदगी थी।

"सच ?"

"हाँ सच।"

"अच्छा तो सुनो" रास्कोलनिकोव ने फिर अपना चेहरा जेमेतोफ के चेहरे के करीब लाते हुए फुसफुसाकर कहा। जेमेतोफ काँप उठा। "मै सारी नकदी और गहनो को ले जाकर किसी एकान्त निर्जन स्थान मे, किसी इमारत के पिछवाडे ले जा कर किसी पत्थर के नीचे गड्ढे में छिपा देता और दो तीन बरस तक गहनो को छूता तक नही—पुलिस तलाशी भी लेती तो मेरी बला से !"

"तुम निरे पागल हो" कहकर जेमेतोफ पीछे हट गया। रास्कोलनिकोव की आँखो मे विचित्र चमक आ गई थी, उसका चेहरा पीला पड गया था, और उसका ऊपर वाला ओठ काप रहा था। वह झुककर जेमेतोफ के कान मे कुछ फुसफुसाने लगा, लेकिन उसके गले मे से आवाज न निकली। उसे अपने ऊपर सयम न रहा था—आखिर उसने कह ही दिया,

"मान लो अगर मैंने ही बुढिया और लिजावेता की हत्या की हो ?"

जेमेतोफ आँखे फाड कर उसकी ओर देखने लगा। उसने पूछा "लेकिन यह कैसे सभव हो सकता है ?"

रास्कोलनिकोव ने क्रुद्ध स्वर मे कहा, "यह क्यो नही कहते कि तुमने मेरी बात पर विश्वास कर लिया है ?"

"बिल्कुल नही— अब तो मुझे बिल्कुल विश्वास नही रहा।"

"मैने चिडिया को पकड लिया ! इसका मतलब तुम्हे पहले विश्वास था, जो अब नही रहा ?"

"नही। क्या तुम इसीलिये मुझे डरा रहे थे ?' जेमेतोफ ने पूछा।

"तो तुम्हे विश्वास नही हुआ ? जब मै दफ्तर से बाहर निकला था, तो मेरे पीछे तुम लोगो मे क्या बाते हो रही थी ? मेरी बेहोशी के बाद मुझसे सवाल क्यो पूछे गये थे ?' फिर उसने वेटर को बुलाकर पूछा, "कितना बिल हुआ ?"

"तीस कोपेक"

"यह लो और बीस कोपेक—जाकर वोद्का पी लेना !" इसके बाद जेमेतोफ को लक्ष्य करते हुए रास्कोलनिकोव ने कहा, "देखा मैं कितना मालदार हो गया हूँ। लाल और हरे नोट, पूरे पच्चीस रूबल है ! ये कहाँ से मिले ? तुम जानते हो, मेरे पास कुछ दिन पहले एक कोपेक तक न था। फिर मेरे पास नये कपडे कहाँ से आये ? तुमने मेरी मकान मालकिन से भी पूछताछ की थी। निश्चय ही·· फिर मिलेगे ?"

रास्कोलनिकोव के सर पर विचित्र पागलपन सवार हो गया था, जो सुखद होते हुए भी गहरी वेदना से भरा था। उसके चेहरे पर ऐंठन सी आ गई थी, और वह बेहद थक गया था। जरा सी बात पर उसे आवेश आ जाता था, आवेश दूर होते ही वह अपने को अशक्त महसूस करता था।

जेमेतोफ किसी गहरी सोच में बैठा था। रास्कोलनिकोव की बातो ने उसके मन में उथल-पुथल मचा दी थी। अत मे वह इस नतीजे पर पहुँचा कि इल्या पैत्रोविच मूर्ख है।

रास्कोलनिकोव बाहर जाने के लिए रेस्तराँ का दरवाजा खोल ही रहा था कि वह राजुमिहीन से टकरा गया। क्षणभर के लिये दोनो एक दूसरे को देखते रहे। राजुमिहीन की आँखे क्रोध से अगारे की तरह दहकने लगी। वह जोर से चिल्लाया, "अच्छा तो तुम यहाँ थे ? मै तुम्हे सोफे के नीचे तलाश करता फिर रहा था ! तुम्हारी वजह से मैंने नस्तास्या की मरम्मत की होती। रोद्या, आखिर माजरा क्या है ? सच सच बताओ ! बोलो !"

"माजरा यह है कि मैं तुम सब लोगो से तग आ गया हूँ और एकान्त चाहता हूँ।" रास्कोलिनिकोव ने उत्तर दिया।

"एकान्त, जबकि तुमसे चला-फिरा भी नही जाता ? तुम्हारा चेहरा सफेद पड़ गया है और सास फूल रही है······अहमक ! तुम यहाँ क्या कर रहे थे ? साफ बताओ !"

"मुझे जाने दो" रास्कोलनिकोव ने बाहर निकलने की कोशिश की। इस पर राजुमिहीन ने कस कर उसे कधो से पकड लिया।

"तुम्हे जाने दू ? तुम्हारी इतनी मजाल ! जानते हो मैं क्या करने वाला हूँ। तुम्हे गठरी मे बाँध कर घर ले जाऊँगा और ताले मे बद कर दूँगा।"

"सुनो राजुमिहीन, तुम देख नही सकते कि मुझे तुम्हारी परोपकारिता की जरा भी जरूरत नही है। तुम जबरदस्ती क्यो मेरे सर पर अहसानो का बोझ लादना चाहते हो ? तुमने मेरी बीमारी मे क्यो दखल दिया ? शायद मरने मे मुझे सुख मिलता। क्या मैने तभी नहीं कह दिया था कि तुम लोगो की उपस्थिति से मेरे मन को यन्त्रणा पहुँचती है ? शायद तुम जानबूझ कर लोगो को सताना चाहते हो ! मै सच कहता हूँ कि तुम्हारी वजह से मेरी तबियत ठीक नही हो पा रही, क्योकि तुम्हे देखकर मै चिढ जाता हूँ। तुमने देखा कि जोसीमोव मुझे देखते ही वापिस चला गया, तुम भी ईश्वर के लिये मुझे अकेला छोड

दो। तुम्हे मुझ पर ज़बरदस्ती करने का क्या अधिकार है ? देखते नही कि अब मै होश में हूँ। मै तुम्हे कैसे समझाऊँ, कि मुझे तुम्हारी हमदर्दी से कितनी पीडा पहुँचती है ! हो सकता है कि मै कृतघ्न और नीच हूँ लेकिन मुझे—मुझे—ईश्वर के लिये, मुझे · ·· ”

वह आगे भी कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसकी सास फूल गई। लूज़िन को देखकर भी उसका यही हाल हुआ था।

राज़ुमिहीन कुछ देर तक खडा सोचता रहा, फिर उसने अपने हाथ खीच लिये और कहा, "जाओ जहन्नुम मे !" रास्कोलनिकोव के जाते जाते गरज कर कहा, "ठहरो ! मै तुम्हे बता देना चाहता हूँ कि तुम लोग निरे अहमक और बकवासी हो ! जरा सी तकलीफ हो जाये तो उसे इस तरह सेने लगते हो जैसे मुर्गी अडो को सेती है। तुम्हारे विचार भी तो तुम्हारे अपने नही औरो से चुराये हुए है। तुम्हारे दिमाग मे मछली का तेल भरा है और धमनियो मे खून की जगह पानी बहता है। मुझे तुममे मे किसी पर भी विश्वास नही। तुम लोग जरा सी बात पर मनुष्यता को तिलाजलि दे बैठते हो !" रास्कोलनिकोव को हिलते-डुलते देखकर राज़ुमिहीन ने फिर डॉटा, "कान खोल कर सुन लो ! तुम जानते हो कि आज रात को मै एक पार्टी दे रहा हूँ—शायद मेहमान अब तक आ भी गये होगे—मै अपने चचा को वहा छोडकर तुम्हे तलाश करने निकला हूँ। अगर तुम अहमक न होते—तुममे जरा सी भी मौलिकता होती तो तुम सडको पर जूते चटखाने की बजाय, मेरी पार्टी मे शरीक होते। मै जानता हूँ तुममे प्रतिभा है, लेकिन हो तुम अव्वल दर्जे के मूर्ख। खैर तुम बाहर निकल ही आये हो तो चलो मेरे यहाँ· ·मै तुम्हे बैठने के लिये आरामकुर्सी दूगा—एक प्याला चाय.. रौनक देखना· ·चाहो तो सोफे पर लेटे रहना · जोसीमोव भी आ रहा है। चलोगे न ?"

"नही"

"वाहियात ! मानलो तुम्हारी तबियत आने को हुई तब ? इन्सान की तबियत का क्या भरोसा ? • हजारो बार मै अपने दोस्तो से रूठ चुका हूँ—फिर जाकर उन्हे मना लेता हूँ। आदमी मे लिहाज भी कुछ होती है। अच्छा याद रखना पोचिन्कोव के मकान मे • तीसरी मज़िल पर•• "

"देखता हूँ, राजुमिहीन कि तुम किसी न किसी दिन अपनी नेकदिली के लिये मार खाओगे !"

"मुझे कौन मारेगा ? कोई ऐसी बात सोचे तो सही, मै उसकी नाक मरोड दूँगा। अच्छा याद रखना, सैतालीस नबर का फ्लैट।"

"राजुमिहीन मै वहाँ नही आऊँगा" कह कर रास्कोलनिकोव चल दिया।

"आओगे कैसे नही ! अगर नही आये तो हमारी दोस्ती खत्म समझो ! सुनो, क्या ज़ेमेतोफ यही है ?"

"हाँ"

"तुम उससे मिले थे ?"

"हा"

"उससे बाते हुई थी ?"

"हा"

"किस बारे मे ? जाओ जहन्नुम में, मै सारा किस्सा नही सुनना चाहता। अच्छा पोचिन्कोव का मकान••याद रखना !"

रास्कोलनिकोव सेदोवी स्ट्रीट की ओर मुड गया। राजुमिहीन खडा उसकी ओर देखता रहा, फिर सीढी पर खडा होकर कहने लगा, "भाड मे जाये। बाते तो होश हवास मे कर रहा था••लेकिन मै भी कितना मूर्ख हूँ ! क्या पागल सही बाते नही करते। जोसीमोव को भी शायद यही डर था !" राजुमिहीन ने अपना माथा ठोक लिया, "मान लो अगर ••मैंने उसे अकेला क्यो जाने दिया। वह नदी मे डूब मरे तब ? आह मुझसे भारी गलती हो गई !" वह रास्कोलनिकोब के पीछे पीछे

भागा, लेकिन रास्कोलनिकोव का कहीं नाम निशान न था। उसे कोसता हुआ वह रेस्तराँ मे लौटकर जेमेतोफ के पास गया।

रास्कोलनिकोव क— पुल की रेलिंग पर दोनो कुहनिया टिका कर खडा हो गया और दूर क्षितिज की ओर देखने लगा। राजुमिहीन से विदा लेने के बाद उसके शरीर मे कमजोरी आ गई थी, और वह बडी मुशकिल से पुल तक पहुँचा था। वह किसी जगह आराम से बैठना या लेटना चाहता था। रेलिग पर झुक कर उसने सूर्यास्त की अतिम लालिमा और सध्या के झुटपुटे मे मकानो की कनारो और नहर के पानी की तरफ देखा। अधेरा बढ रहा था। उसका ध्यान बरबस पानी की ओर आकर्षित हो रहा था। सहसा उसकी आँखो के आगे लाल चक्र दिखाई देने लगे, और पुल पर आने-जाने वाले लोग, घोडागाडियाँ उसे चकराती हुई नजर आई। वह बेहोश होकर गिरने वाला ही था कि अचानक उसकी नजर एक कुरूप चीज़ पर पडी। उसने देखा कि उसके पास एक लम्बी, औरत खडी थी—औरत के सर पर रुमाल बँधा था, उसका चेहरा पीला और निस्तेज था—आखे गालो मे धसी हुई थी। वह टकटकी लगा कर रास्कोलनिकोव की ओर देख रही थी—अगले ही क्षण उस औरत ने रेलिग पर चढ कर नहर मे छलाँग लगा दी। पानी ने उसे निगल लिया, लेकिन थोडी देर बाद वह पानी की सतह पर बहती नज़र आई, उसकी स्कर्ट गुब्बारे की तरह फूल गई थी।

"कोई औरत डूब रही है! कोई औरत डूब रही है!" दर्जनो आवाजे आईं। नहर के किनारो पर दर्शको की भीड लग गई। पुल पर भी बहुत से लोग आ गये।

"हे ईश्वर दया करो! यह तो हमारी एफ्रोसीन्या है! नेकबख्तो बचाओ! उसे बाहर निकालो।" एक बुढिया करुण स्वर मे चीखने लगी।

"नाव लाओ, नाव लाओ !" भीड मे से कोई चिल्लाया, लेकिन नाव लाने की कोई ज़रूरत नही थी। एक पुलिसमैन ने घाट पर आकर अपना कोट और बूट उतार दिये और वह नहर मे कूद पडा। एक हाथ से उसने औरत के कपडो को पकडा और दूसरे हाथ से एक डडे को जो उसका एक साथी पकडे हुए था। औरत को डूबने से बचा लिया गया। जल्द ही उसे होश आ गई और वह बैठ कर छीकने और खासने लगी। फिर अपनी गीली पोशाक को निचोडने लगी।

"यह शराब के नशे मे बावली हो रही है। अभी कुछ दिन पहले इसने अपने गले में फासी लगाने की कोशिश की थी। मैने अपनी छोटी लडकी को इसकी देखभाल के लिये बैठाया था, यह फिर भाग आई। यह मेरी पडौसिन है—सज्जनो वह सामने दूसरा मकान है न!—" बुढिया ने बताया।

भीड तितर-बितर हो गई। पुलिस अभी भी उस औरत को घेरे थी। किसी ने थाने का जिक्र किया। रास्कोलनिकोव उदासीन आँखो से सारा दृश्य देखता रहा। उसे ग्लानि सी हो रही थी। वह अपने से बुडबुडाया, पानी ··छि छि, इन्तज़ार करने से क्या फायदा होगा ? क्यो न पुलिस दफ्तर में जाकर···? ज़ेमेतोफ़ दफ्तर मे क्यो नही होगा ? पुलिस दफ्तर दस बजे तक खुला रहता है···" उसने अपने चारो तरफ देखा।

"अच्छा यही सही," उसने दृढतापूर्वक कहा और वह पुलिस दफ़्तर की ओर चल पडा। उसके हृदय और मस्तिष्क मे शून्य सा भर गया था। उसकी उदासी, और आवेश भी गायब हो चुके थे। इनके बदले मे उदासीनता छा गई थी।

नहर के किनारे चलते हुए उसने सोचा। "छुटकारे का यह भी एक रास्ता है। मै इस परेशानी को खत्म करना चाहता हूँ · लेकिन क्या परेशानी सचमुच खत्म हो जायेगी ? क्या मै सब कुछ बता

सकूगा ?…अहा, मै कितना थक गया हूँ! कही बैठने या लेटने की जगह मिल जाती! मुझे अपनी मूर्खता पर शर्म आती है। लेकिन अब मुझे उसकी भी कोई परवाह नही। इन्सान के दिमाग मे कितनी वाहियात बाते आती है!"

पुलिस दफ्तर पहुँचने के लिये बायी तरफ दूसरे चौरस्ते पर मुडना पडता था। लेकिन रास्कोलनिकोव उधर जाने की बजाय किसी दूसरी गली मे घुस गया और निष्प्रयोजन ही वहाँ चक्कर काटता रहा। सहसा उसे लगा कि कोई उसके कानो मे फुसफुसाकर कुछ कह रहा है। उसने आँखे ऊपर उठाई तो देखा कि वह बुढिया के मकान के फाटक के आगे खडा है। उस शाम के बाद वह आज पहली बार इधर आया था। एक अज्ञात शक्ति उसे भीतर जाने के लिये प्रेरित कर रही थी। वह सहन पार करके जीने पर चढने लगा। जीने मे अधेरा था। वह हर मजिल के बाद रुककर कौतूहलभरी नजरो से अपने आसपास देख रहा था। पहली मजिल की खिडकी का चौखटा अपनी जगह से हटा दिया गया था। "उस दिन तो ऐसा नही था," वह सोचने लगा। दूसरी मजिल के फ्लैट का दरवाजा बन्द था और उस पर ताजा रोगन किया गया था। "यह किराये के लिये खाली है," रास्कोलनिकोव ने मन ही मन कहा और तीसरी मजिल पार करके चौथी मजिल पर पहुँचा। बुढिया के फ्लैट का दरवाजा खुला देखकर वह स्तब्ध रह गया। भीतर से बहुत से लोगो की आवाजे आ रही थी।

उसे भीतर जाने में हिचकिचाहट महसूस हुई लेकिन अगले ही क्षण वह भीतर चला गया। इस फ्लैट मे भी रोगन किया जा रहा था। वहाँ बहुत से मजदूर जमा थे। रास्कोलनिकोव को आशा थी कि घर की सभी चीजे यथास्थान मौजूद होगी, यहाँ तक कि दोनो लाशे भी फर्श पर दिखाई देगी। लेकिन घर को खाली देखकर उसे अजब सा लगा। वह जाकर खिडकी के पास बैठ गया, जहाँ दो युवक मजदूर

दीवार पर नया फूलदार कागज़ चिपका रहे थे। न लाने क्यो रास्कोल-निकोव यह देखकर चिढ-सा गया। उसे नये कागज बिल्कुल पसद नही आये। मजदूरो के जाने का वक्त् हो चुका था और वे जल्दी से कागज़ो के पुलिदो को समेट रहे थे। उन्हे रास्कोलनिकोव की उपस्थिति का आभास तक न था। रास्कोलनिकोव बगलो मे बाँहें डाल कर दोनो की बातचीत सुनने लगा।

"आज सुबह वह बन-ठनकर मेरे पास आई। मैने पूछा 'इतनी सजधज किसलिये ?' वह बोली, 'वैसीलिच, तुम्हे खुश करने के लिये मै कुछ भी कर सकती हूँ। वह साक्षात फैशन बुक मे छपी तस्वीर दिखाई दे रही थी।"

"फैशन-बुक क्या चीज होती है ?" दूसरे ने पूछा। स्पष्ट था कि वह अपने साथी की राय की बहुत कद्र करता था।

"फैशन-बुक मे रगीन तस्वीरे रहती है। हर शनिवार की डाक मे ये किताबे दर्जियो के पास आती है। इनमे बताया जाता है कि मर्दों और औरतो को किस तरह की पोशाक पहननी चाहिये। तस्वीरो मे मर्द अक्सर समूर के कोट पहनते है और औरते झालर वाली पोशाकें। तुम नही जानते, ये तस्वीरें कितनी मजेदार होती है।"

"पीटर्सबर्ग मे सिवा माँ बाप के क्या नही मिल सकता ?"

"हाँ मेरे भाई, सिवा माँ-बाप के सब कुछ मिल सकता है।"

रास्कोलनिकोव उठकर दूसरे कमरे मे चला गया, जहाँ बुढिया का भारी सदूक और अलमारी रखी रहती थी। खाली कमरा बहुत छोटा मालूम हो रहा था। दीवारो पर अभी तक पुराना काग़ज चिपका हुआ था। कोने मे मूर्तियाँ रखी रहती थी। सहसा मज़दूरो मे से एक की नज़र रास्कोलनिकोव पर गई। उसने पूछा,

"क्या चाहते हो ?"

जवाब देने की बजाय रास्कोलनिकोव जीने मे जाकर घटी बजाने

लगा—वही घटी—वही आवाज ! उसने दो-तीन बार घटी बजाई। पुराना भय फिर लौट आया और वह हर बार घटी बजाकर कापने लगा—इसमे उसे एक विचित्र सतोष मिल रहा था।

"तुम कौन हो ? क्या चाहते हो ?" एक मज़दूर ने बाहर निकल कर पूछा। रास्कोलनिकोव भीतर आकर बोला, "मै एक फ्लैट किराये पर लेना चाहता हूँ। मै ज़रा कमरो को भीतर से देख रहा हूँ।"

"कमरो को देखने का यह कोई वक्त नही। तुम्हे चौकीदार को साथ लेकर ऊपर आना चाहिये था।"

"देखता हूँ कि फर्श धुल चुके है, क्या इन पर भी पालिश की जायेगी ? खून के दाग कहाँ गये ?"

"कैसा खून ?'

"जानते नही, बुढिया और उसकी बहन की यही हत्या की गई थी। उस दिन तो यहाँ खून के छप्पड जमा थे।"

"तुम कौन हो ?" मजदूर ने घबराकर पूछा।

"जानना चाहते हो मै कौन हूँ ? आओ मेरे साथ पुलिस स्टेशन। तुम्हे मालूम हो जायेगा।"

दोनो मजदूर विस्मित दृष्टि से उसका मुँह ताकने लगे। एक ने कहा, "हमे देर हो रही है। आओ एल्योश्का चले।"

"अच्छी बात है, आओ चले," कहकर रास्कोलनिकोव सीढियो से उतरने लगा। फाटक के पास जाकर उसने आवाज दी "अरे चौकीदार !"

फाटक के पास बहुत से लोग खडे थे, जिनमे एक औरत भी थी। रास्कोलनिकोव उनके पास जाकर खडा हो गया।

"क्या काम है ?" एक चौकीदार ने पूछा।

"तुम पुलिस दफ्तर मे हो आये हो ?"

"हाँ, मै सीधा वही से लौट रहा हूँ। कहो, क्या काम है ?"

"पुलिस दफ्तर खुला हुआ है ?"

"ज़रूर खुला होगा ।"

"असिस्टैंट सुपरिन्टेन्डेन्ट वही थे ?"

"कुछ देर के लिये आये थे । लेकिन तुम क्या चाहते हो ?"

रास्कोलनिकोव ने कोई उत्तर नही दिया । वह किसी गहरी सोच मे पडा था ।

एक मजदूर ने आगे बढ कर बताया, "यह आदमी अभी ऊपर वाला फ्लैट देखने गया था ।"

"कौन सा फ्लैट ?"

"जहाँ हम लोग काम कर रहें है । इसने कहा 'इस फ्लैट मे दो हत्याएँ हुई है । तुम लोगो ने खून के दाग क्या धो दिये ? मैं इस फ्लैट को किराये पर लेना चाहता हूँ।' इसके बाद इसने कई बार ज़ोर से घटी बजाई, फिर कहने लगा, "चलो मेरे साथ पुलिस थाने, वहाँ सब कुछ बता दूँगा ।" यह हमारा पीछा छोडता ही नही था ।"

चौकीदार ने विस्मित दृष्टि से रास्कोलनिकोव की ओर देखा और रोबीली आवाज में पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मै हूँ रोदियोन रोमेनोविच रास्कोलनिकोव, भूतपूर्व विद्यार्थी । पास ही मे चौदह नबर के फ्लैट मे रहता हूँ । मकान का चौकीदार मुझे जानता है ।" रास्कोलनिकोव ने अलसाये स्वप्निल ढग से कहा । वह गौर से अधेरी सडक की ओर देख रहा था ।

"तुम ऊपर वाले फ्लैट मे किस लिये गये थे ?"

"देखने के लिये ।"

"वहाँ देखने की क्या चीज है ?"

"इसे सीधा पुलिस थाने मे ले जाओ ।" एक लबे कोट वाले व्यक्ति ने कहा ।

रास्कोलनिकोव ने अलसाये स्वर मे कहा, "आइये चले ।"

"हाँ इसे पुलिस के हवाले कर दो। यह ऊपर वाले फ्लैट मे क्या करने गया था ?"

"यह नशे मे तो नही मालूम होता। ईश्वर जाने, माजरा क्या है।" मजदूर बडबडाया।

चौकीदार ने गुस्से से लालपीला होकर पूछा, "तुम यहाँ क्यो रुके हो—तुम्हे क्या काम है ?"

"अच्छा तो पुलिस स्टेशन ले जाने की धमकी झूठी ही थी।" रास्कोलनिकोव ने व्यग्य किया।

"झूठी कैसी ? मै पूछता हूँ तुम यहाँ क्यो खडे हो ?"

"यह कोई बदमाश मालूम होता है," पास खडी देहातिन ने कहा।

"इसके साथ मगजपच्ची करना बेकार है। यह पक्का बदमाश है। चल निकल यहाँ से," दूसरे चौकीदार ने जिसकी पेटी मे से चाबियो का गुच्छा लटक रहा था, रास्कोलनिकोव को धक्का मारते हुए कहा।

रास्कोलनिकोव गिरते-गिरते बंचा। फिर दर्शको की ओर चुपचाप देखता हुआ वहाँ से चल दिया।

"अजब अहमक है।" एक मजदूर बोला।

"आजकल निरे अहमको से वास्ता पडता है।" देहातिन ने टिप्पणी की।

"तुम इसे थाने ले जाते तो अच्छा होता।"

"ऐसे बदमाशो से जहाँ तक हो सके बचना ही चाहिये। एक बार पीछे पड गये तो पिण्ड नही छोडते · हम ऐसो को जानते है।"

रास्कोलनिकोव चौराहे पर खडा सोच रहा था, "मै थाने जाऊँ या न जाऊँ ?" उसने अपने चारो ओर देखा, जैसे वह आने-जाने वालो से फैसला सुनना चाहता हो। लेकिन चारो ओर निस्तब्धता छाई थी—सहसा दो सौ गज़ की दूरी पर उसे एक भीड खडी दिखाई दी। भीड के बीचोबीच एक गाड़ी खडी थी।···रास्कोलनिकोव जाकर भीड़ मे

शामिल हो गया। वह हर चीज मे दिलचस्पी ले रहा था। उसने थाने जाकर आत्मसमर्पण करने का फैसला कर लिया था। वह जानता था कि उसकी मानसिक पीडा का जल्द ही अन्त होने वाला है। उसके चेहरे पर एक फीकी सी मुस्कान छा गई।

७

सडक के बीचोबीच एक शानदार घोडा गाडी खडी थी। गाडी मे कोई नही था—कोचवान नीचे उतर कर खडा हो गया · गाडी के इर्द गिर्द भीड जमा थी, जिनमें पुलिस भी थी—एक पुलिस का आदमी पहियो के पास पडी हुई किसी चीज पर लालटेन की रोशनी फेक रहा था। लोगो मे चर्चा हो रही थी। कोचवान घबरायी आवाज मे कह रहा था,

"हे ईश्वर कितनी बदकिस्मती है!"

रास्कोलनिकोव भीड को धकेलता हुआ आगे बढा। जमीन पर एक आदमी बेहोश पडा था, जिसका शरीर लहू मे तर था। उसके बदन पर मामूली कपडे थे, उसका चेहरा बुरी तरह कुचल गया था। सर मे से खून बह रहा था। उसे बहुत गहरी चोट लगी थी।

कोचवान दुखी स्वर मे बोला, "हे ईश्वर! मुझसे यह क्या हो गया! अगर मै तेजी से जा रहा होता, और उसे आवाज़ न देता तो मेरा दोष था, लेकिन सब देख रहे थे कि मै धीरे धीरे जा रहा था। शराबी आदमी की चाल सीधी नही होती·· मैंने इसे लडखडाती चाल से सडक पार करते हुए देखा था। मैने इसे दो तीन बार आवाज़ दी। फिर मैने गाडी भी रोक दी लेकिन यह आदमी सीधा घोडों की टाप के

नीचे आ गया या तो जानबूझ कर या शराब के नशे में ‥ · घोड़े नौसिखिये है—जल्द ही बिदकते है · आदमी की चीख सुनकर बेकाबू हो गये ।”

“हाँ ऐसा ही हुआ था” भीड मे से एक आवाज आई ।

“यह सच है कि कोचवान ने तीन बार आवाज दी थी ।” दूसरे ने कहा ।

“हाँ, तीन बार” तीसरे ने समर्थन किया ।

लेकिन कोचवान डरा हुआ नही मालूम होता था । निश्चय ही गाडी किसी धनी और प्रभावशाली व्यक्ति की थी । पुलिस गाडी को अधिक देर रोककर गाडी के मालिक को नाराज नही करना चाहती थी । वे जख्मी आदमी को हस्पताल ले जाने लगे । उस व्यक्ति का नाम किसी को मालूम नही था ।

इस बीच रास्कोलनिकोव नजदीक आकर आदमी के चेहरे की ओर देख रहा था । सहसा लालटेन की रोशनी मे उसने जख्मी का चेहरा पहचान लिया ।

“मै इसे जानता हूँ । यह रिटायर्ड सरकारी क्लर्क है । मारमेलेदोव ‥ यह पास ही कोजेल के घर मे रहता है ‘जल्दी से कोई डाक्टर बुलाओ ! फीस मै दूँगा । यह देखो !” उसने जेब मे से नोट निकाल कर पुलिसमैन को दिखाये । वह आवेश में आ गया था ।

पुलिस को जख्मी आदमी का नाम जान कर तसल्ली हो गई । रास्कोलनिकोव ने अपना नाम और पता इस सजीदगी से लिखाया, जैसे वह जख्मी का बाप हो, और उसने पुलिस से अनुरोध किया, ‘ नजदीक ही कोजेल नाम के धनी जर्मन के यहाँ यह रहता है । मालूम होता है, यह घर लौट रहा था । मै जानता हूँ, इसे शराब पीने की आदत है—वैसे यह बीवी-बच्चो वाला है । इसे हस्पताल ले जाने मे देर हो जायेगी, जहाँ यह रहता है—वहाँ कोई न कोई डाक्टर जरूर मिल

जायेगा। फीस मैं दूंगा! घर में कम से कम इसकी देखभाल तो होगी। हस्पताल पहुँचने से पहले ही इसके प्राण निकल जायेंगे।" उसने लोगो की नजरे छिपा कर पुलिसमैन के हाथो मे कुछ सिक्के पकडा दिये, वैसे रिश्वत के बिना भी काम चल सकता था, क्योकि मामला बिल्कुल सीधा या।

कोजेल का घर तीस कदमो की दूरी पर था। रास्कोलनिकोव, मारमेलेदोव का सर थामे हुए चल रहा था।

"इस रास्ते से, इसका सर ऊपर उठा कर जीने मे ले चलो! इधर मुड़ो। तुम्हे इनाम देकर खुश कर दूँगा" वह बुडबुडाया।

कैटेरीना इवानोव्ना अपनी कोठरी मे सदा की भाति खाँसती और बुडबुडाती हुई चक्कर काट रही थी। कई दिनो से वह अपनी दस बरस की बच्ची पोलेन्का के साथ अटसट बाते करने लगी थी। पोलेन्का बातो का पूरा अर्थ न समझते हुए भी, इतना जरूर समझती थी कि उसे माँ की सहायता करनी चाहिए। उसकी बडी बडी आँखो मे समझ-दारी की ज्योति चमक रही थी। पोलेन्का इस समय अपने बीमार भाई को बिस्तर मे सुलाने से पहले कपडे बदलवा रही थी। भाई गुम-सुम-सा टाँगे फैलाये कुर्सी पर बैठा था।

वह मा-बेटी की बाते ध्यान से सुन रहा था। सोने से पहले सब अच्छे बच्चो को कपडे बदलवाने के लिए चुप बैठना पडता है। पर्दे के पास चीथडो मे लिपटी एक छोटी लडकी अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रही थी। साथ वाले कमरे मे से इतना धुँआ आ रहा था कि कैटेरीना इवानोव्ना खासते खाँसते बेदम हो गई। उसने सीढियो वाला दरवाजा खोल दिया। एक हफ्ते मे ही वह इतनी दुर्बल हो गई थी कि उसके रुग्ण चेहरे की लालिमा और भी बढ गई थी।

वह कह रही थी, "पोलेन्का तुम कल्पना भी नही कर सकती कि अपने पापा के यहाँ मैं कितनी सुखी थी। इस शराबी ने मुझे यहाँ लाकर

बरबाद कर दिया है। यह तुम लोगो को भी बरबाद करके छोडेगा। पापा सिविल कर्नल थे। उनका ओहदा सिर्फ गवर्नर से नीचा था। जब लोग उनसे मिलने को आते तब कहते, 'इवान् मिहाईलोविच, हम तो आपको ही अपना गवर्नर समझते है। जब मै,...'' उसे जोर की खाँसी आगई। उसने अपना गला साफ किया और छाती को सहलाने लगी। "जब मार्शल के यहाँ नाच मे राजकुमारी बेजेमेलनी मुझे मिली तो उन्होने पूछा, 'तुम वही सुन्दर लडकी हो न जिसने दुशाले का नाच किया था ?' (मेरा शाल फट गया है। सुई-डोरा लेकर उसे आज या कल रफू कर डालना, जैसे मैने सिखाया था...खो-खो-खो ! कही उस कम्बख्त के हाथ लग गया तो इस शाल का छेद और भी बडा हो जायगा।) प्रिंस शेगाँल्स्की ने मेरे साथ मजुरका डान्स किया था। वह अगले दिन मुझ से शादी का प्रस्ताव करने ही वाला था, लेकिन मैने उसे बताया कि मै किसी दूसरे को अपना हृदय दे चुकी हूँ। वह दूसका तुम्हारा बाप था। मेरे पापा मुझसे सख्त नाराज हो गए। ...क्या पानी गरम हो गया ? कमीज और मोज़े ले आओ। और सुनो लिदा आज रात तुम्हे बिना बनयायन के सोना पडेगा। अपने मोज़े भी बाहर निकाल दो। मै उन्हे भी साथ में धो दूँगी · यह आवारा शराबी अभी तक क्यो नही आया ? उसकी कमीज़ भी चिथडे-चिथडे हो गई है · मै सारी धुलाई एक बार मे ही खत्म करना चाहती हूँ ताकि लगातार दो रातो तक मुझे काम न करना पडे ... खो-खो-खो .. अरे यह क्या है ?" कोठरी के बाहर लोगो की भीड खडी देखकर वह चौंक पडी। "ये लोग किसे भीतर ला रहे है। हे ईश्वर दया करो।"

"इसे कहाँ लिटायें ?" पुलिसमैन ने पूछा।

"सोफे पर सर इस ओर करके सीधा लिटा दो," रास्कोलनिकोव ने बताया।

"गाडी के नीचे आ गया था यह। पीये हुये था," किसी की आवाज़

सुनायी दी।

कैटेरीना इवानोव्ना का चेहरा सफेद पड गया। वह जोर-से हाफने लगी। बच्चे भयभीत हो गये। नन्ही लिदा चीखती हुई पोलेन्का से लिपट गई। उसकी देह पत्ते की तरह काप रही थी।

मारमेलेदोव को सोफे पर लिटा कर रास्कोलनिकोव कैटेरीना इवानोव्ना के पास गया।

"ईश्वर के लिए शान्त रहो। डरने की कोई बात नही," उसने समझाया। "ये सडक पार कर रहे थे कि गाडी के नीचे आ गये। डरो नही, इन्हे होश आ जायगा। मै ही पुलिस से कहकर इन्हे यहाँ ले आया हूँ···मै एक बार पहले भी यहाँ आ चुका हूँ, याद है? इन्हे होश आ जायगा, दवादारू का खर्च मै दूँगा।"

"यह नौबत भी आगई," कैटेरीना इवानोव्ना करुण स्वर मे बोली और अपने पति से लिपट गई। रास्कोलनिकोव ने देखा कि वह आसानी से बेहोश होने वाली औरत नही है। उसने अपने अभागे पति के सर के नीचे तकिया लाकर रख दिया। न जाने पहले किसी को यह बात क्यो नही सूझी। वह अपनी बीमारी की चिन्ता छोडकर पति के सिरहाने बैठकर उसका रक्त से सना चेहरा देखने लगी। बडी मुश्किल से उसने होठ भीच कर अपनी चीख को हृदय मे ही दबा रखा था।

रास्कोलनिकोव ने एक आदमी को डाक्टर बुलाने के लिए भेजा। मालूम हुआ कि उनके पडौस मे ही एक डाक्टर रहता है।

उसने फिर कैटेरीना इवानोव्ना को आश्वासन दिया, "घबराओ नही, मैंने डाक्टर को बुलवा भेजा है। फीस मै दूँगा। क्या थोडा-सा पानी मिल जायगा?··· कोई अगोछा या तौलिया ले आओ, जल्दी से··· इन्हे चोट तो आयी है, लेकिन सगीन नही है। देखे डाक्टर क्या कहता है।"

कैटेरीना इवानोव्ना भागकर खिडकी के पास गई, जहाँ एक टूटी

कुरसी पर मिट्टी के बर्तन मे कपडे धोने के लिए पानी रखा था। हफ्ते मे दो बार वह रात को कपडे धोया करती थी, क्योकि परिवार के पास बदलने के लिए कपडे नही थे। कैटेरीना इवानोव्‌ना सफाई-पसद थी, और वह बच्चो को मैले कपडे पहनाने की बजाय, रात को कपडे धोना पसन्द करती थी। रातभर मे कपडे सूख जाते थे। वह पानी का बर्तन उठा लायी, लेकिन उसका वजन न सभाल सकने के कारण गिर पडी। रास्कोलनिकोव ने पहले से ही एक तौलिया ढूँढ लिया था, जिसे गीला करके वह मारमेलेदोव के रक्त से सने चेहरे को पोछने लगा।

कैटेरीना इवानोव्‌ना बडे कष्ट से सास ले रही थी। उसकी अपनी हालत बहुत ख़राब थी। रास्कोलनिकोव को ख्याल आया कि जख़्मी को वहाँ लाकर उसने अच्छा नही किया। पुलिस का कान्स्टेबल भी इसी दुविधा मे खडा था।

कैटेरीना इवानोव्‌ना ने जोर से कहा, "पोलेन्का, भागकर सोनिया को बुला लाओ। अगर वह घर पर न हो तो वहाँ कह आना कि उसके पिता गाडी के नीचे आगये है, और वह फौरन यहाँ आजाय। जल्दी से शॉल ओढ लो और जाओ।"

"जितनी तेजी से हो सके, भाग कर जाना," छोटे लडके ने कुर्सी पर बैठे-बैठे आग्रह किया। यह कह कर वह फिर गूँगो की तरह गुमसुम हो गया।

इस बीच कोठरी मे इतनी भीड हो गई थी कि तिल रखने की जगह न रही। एक के सिवा पुलिस के सब कान्स्टेबल वापस चले गये थे, लेकिन अडौस-पडौस के सब लोग अपने घरो मे से निकल कर जमा हो गये थे। कैटेरीना इवानोव्‌ना गुस्से मे आग बबूला हो रही थी। "कम से कम, इस बिचारे को शान्ति से मरने तो दो। यहाँ कोई तमाशा हो रहा है जो आँखे फाड-फाड कर देख रहे हो, और सिगरेट भी पीते जा रहे हो?... (खो-खो-खो) जी नही, सर पर हैट भी पहने रहो,

उतार क्यो दी ?···एक तो अब भी पहने है···चले जाओ, कम से कम मरे हुए आदमी की इज्जत तो करनी चाहिए।"

खाँसी से कैटेरीना इवानोव्ना का गला रूँध गया था, लेकिन उसकी डाँठ-फटकार का इतना असर जरूर पडा कि भीड छँटने लगी। आकस्मिक दुर्घटना के मौके पर लोगो को हमदर्दी के बावजूद भी एक विचित्र सन्तोष का अनुभव होता है।

कुछ लोग बाहर कह रहे थे ज़ख्मी को फौरन अस्पताल ले जाना चाहिए और वहाँ शोर नही मचाना चाहिए।

"तुम्हे मरने का कोई अधिकार नही है," कैटेरीना इवानोव्ना जोर से चिल्लाई और दरवाज़े के बाहर खडे लोगो पर अपना गुस्सा उतारना चाहती ही थी कि दरवाज़े के बीच मैडम लिपवेशल से वह टकरा गई, जो दुर्घटना की खबर सुनकर भागती हुई ऊपर आयी थी। वह एक गैर-ज़िम्मेदार और लडाका स्त्री थी।

आते ही मुट्ठियाँ भीचकर वह बोली, "हे ईश्वर, घोडो ने तुम्हारे पति को रौद डाला। इसे फौरन अस्पताल ले जाओ—मैं मकान-मालकिन हूँ।"

"अमेलिया लुद्विगोव्ना, ज़रा सोचो तो, तुम क्या कह रही हो ?" कैटेरीना इवानोव्ना ने गर्व भरे स्वर मे कहना शुरू किया, (वह मकान मालकिन के साथ हमेशा इसी तरह बात करती थी, ताकि उसे अपनी हैसियत का पता चल जाय। इस मौके पर भी वह अपनी कुलीनता का प्रदर्शन किए बिना न रह सकी) "अमेलिया लुद्विगोव्ना·"

"मैं तुम्हे पहले भी कह चुकी हूँ कि मुझे अमेलिया लुद्विगोव्ना मत कहा करो। मेरा नाक अमेलिया इवानोव्ना है।"

"नही तुम अमेलिया लुद्विगोव्ना हो। मैं मिस्टर लेब्ज़ीलीकोव की तरह तुम्हारी चापलूस नही हूँ, जो इस समय दरवाजे के पीछे खडा हँस रहा है (सचमुच ददवाज़े के पीछे से कोई कह रहा था लो ! दोनो

मे फिर चल गई ।) मेरी समझ मे नही आता, कि तुम इस नाम से चिढती क्यो हो । तुम अपनी आँखो से देख रही हो कि सम्योन ज़हारोविच का अत नज़दीक आ गया है, मेहरबानी करके फौरन दरवाजा बद कर दो और किसी को भीतर मत आने दो । कम से कम उस बेचारे को शान्ति से मरने तो दो । वरना मै तुम्हे चेतावनी देती हूँ कि कल गवर्नर जनरल से तुम्हारी शिकायत कर दूँगी । वे मुझे और सेम्योन जहारोविच को अच्छी तरह जानते है और हमारे शुभचितक रहे है ।

सारी दुनिया जानती है कि जहारोविच ने स्वाभिमान की खातिर अपने अनगिनत मित्रो और हितैषियो से नाता तोड लिया है । उनमे यही एक कमजोरी है, लेकिन अब एक सहृदय धनी युवक (रास्कोल-निकोव की ओर इशारा करके) जो सेम्योन जहारोविच का बचपन का साथी है, हमारी मदद के लिए आया है, तुम बेफिक्र रहो, अमेलिया लुद्विगोव्ना "

जल्दी बोलने के कारण कैटेरीना इवानोव्ना को खाँसी आ गई । इसी समय्य मारमेलेदोव को होश आया और वह दर्द से कराहने लगा । उसने आखे खोली और शून्य दृष्टि से रास्कोलनिकोव का मुँह ताकने लगा—उसे सास लेने मे कठिनाई हो रही थी । उसके मुँह से फिर खून बहने लगा और माथे पर पसीने की बूँदे चमकने लगीं । वह घबराकर चारो तरफ देखने लगा । कैटेरीना इवानोवना की आखो से आसू बह रहे थे । वह दुखित स्वर मे बोली,

"हे ईश्वर ! इनका सीना एक दम कुचल गया है । देखो तो कितना खून बह रहा है ! आइये इनके कपडे उतार दे—सेम्योन ज़हारोविच ज़रा करवट बदलने को कोशिश तो करो !"

मारमेलेदोव ने पत्नी को पहचान लिया और भर्राई हुई आवाज़ में कहा,

"पादरी को बुलाओ !"

कैटेरीना इवानोव्ना खिडकी के पास जाकर खडी हो गई और दुखी स्वर मे चिल्लाई, "लानत है इस जिन्दगी पर !"

"पादरी बुलाओ" मारमेलेदोव ने फिर कहा

"लोग पादरी बुलाने के लिये गये है ।" वह जोर से चिल्लाई । मारमेलेदोव उदास और भयभीत आँखो से पत्नी की ओर देखने लगा । कैटेरीना इवानोव्ना उसके सिरहाने आकर खडी हो गई ।

मारमेलेदोव की दृष्टि अपनी लाडली बेटी लिदा पर गई जो एक कोने मे बैठी काँप रही थी और चकित दृष्टि से अपने मरणासन्न पिता को देख रही थी ।

"आह !" उसने इशारे से लडकी को बुलाया ।

"अब क्या चाहते हो !" कैटेरीना इवानोव्ना ने चिल्लाकर पूछा ।

"पैरो मे जूते नही है !" मारमेलेदोव बच्ची के नगे पैरो की ओर देखकर बुदबुदाया ।

"चुप रहो, तुम्हे अच्छी तरह मालूम है, कि बच्ची के पास जूते क्यो नही है !" कैटेरीना इवानोव्ना ने चिढकर कहा ।

"गनीमत है, डाक्टर आ गया," रास्कोलनिकोव ने निश्चिन्त स्वर मे कहा ।

बूढे जर्मन डाक्टर ने सदिग्ध दृष्टि से सबकी ओर देखते हुए कमरे में प्रवेश किया । उसने जख्मी की नब्ज़ देखी और कैटेरीना इवानोव्ना की मदद से उसकी रक्त से सनी कमीज उतारी । मारमेलेदोव की कई पसलियाँ टूट गई थी, और बाई ओर, हृदय के पास पीले रग का बडा सा ज़ख्म था—जहाँ घोडे ने बेदर्दी से टाप जमा दी थी । डाक्टर के माथे पर त्यौरियाँ पड गई । पुलिसमैन ने उसे बताया कि मारमेलेदोव तीस गज़ तक पहिए के साथ घिसटता गया था ।

"मुझे ताज्जुब है कि इस हालत मे ज़ख्मी को होश कैसे आ गया," डाक्टर ने रास्कोलनिकोव के कान मे कहा ।

"आपकी क्या राय है ?"

"यह फौरन ही चल बसेगा।"

"बचने की ज़रा-सी भी उम्मीद नही ?"

"बिल्कुल नही, यह सिर्फ कुछ क्षणो का मेहमान है। सर मे भी गहरी चोट आयी है। अगर आप चाहे तो मै खून निकाल सकता हूँ। लेकिन उससे कुछ नही बनेगा। पाँच या दस मिनट से ज्यादा जीने की उम्मीद नही है।"

"तब तो खून निकालना बेहतर होगा।"

"आप कहते है तो निकाल दूँगा, लेकिन इसका कोई फायदा नही।"

इसी समय बाहर खडे लोगो की भीड पीछे हट गई, और एक बूढा पादरी हाथ मे सलीब लिए कमरे मे दाखिल हुआ। दुर्घटना के बाद ही एक पुलिसमैन उसे बुलाने चला गया था। डाक्टर एक ओर हट कर खडा हो गया। रास्कोलनिकोव ने डाक्टर से कुछ देर रुकने का आग्रह किया।

सब लोग पीछे हट गये। मारमेलेदोव अस्पष्ट स्वर मे बडबडाया। कैटेरीना इवानोव्ना दोनो बच्चो के साथ ज़मीन पर घुटने टेककर बैठ गई। नन्ही लिदा भय से काँप रही थी, लेकिन लडका बार बार सिर झुका कर शरीर पर सलीब का चिन्ह बना रहा था। उसे ऐसा करने में एक विचित्र सन्तोष मिल रहा था। कैटेरीना इवानोव्ना अपने होठ भीच कर आँसू रोकने की कोशिश कर रही थी। वह भी प्रार्थना कर रही थी और बीच बीच मे बच्चो के नगे बदन को ढँकने की कोशिश करती जाती थी। इस बीच बाहर खडी भीड ने कौतूहलवश दरवाजा फिर खोल दिया, लेकिन दहलीज के भीतर आने का साहस किसी मे न था। कोठरी मे सिर्फ एक मोमबत्ती जल रही थी।

इसी समय भीड को धकेलती हुई पोलेन्का आई। भागते भागते उसकी साँस फूल गई थी, उसने अपना रूमाल उतार कर माँ से कहा,

"सोनिया मुझे बाजार मे मिल गई थी वह अभी आ रही है।" वह भी माँ के साथ फर्श पर घुटने टेक कर बैठ गई।

एक लडकी चुपचाप भीड को चीरती हुई आगे बढी। गरीबी, फटेहाली, मृत्यु और आतक के बीच उसका वहाँ आना विचित्र-सा मालूम देता था। यद्यपि वह स्वय सस्ते कपडे पहने थी, लेकिन उसकी बाजारू सजधज और नकली गहनो से बेहयाई टपक रही थी। वह दरवाजे मे खडी होकर शून्य दृष्टि से सबकी ओर देखने लगी, यहाँ तक कि उसे अपनी भडकीली रेशमी घेरेदार पोशाक का भी ध्यान न रहा जिससे सारा दरवाजा भर गया था। रात के समय भी वह अपना छाता साथ लाई थी। उसके सर पर एक विशाल स्ट्रॉ-हैट था, जिसमे गहरे लाल रग के पख खौसे हुए थे। पैरो मे हल्के रग के जूते थे। लेकिन इस बेहूदी सजधज के बीच एक पीला, भयभीत चेहरा था। सोनिया अठारह वर्ष की एक दुबली-पतली युवती थी। सुनहरी बालो और नीली आँखो ने उसे सुन्दर बना दिया था। वह टकटकी बाँधे पादरी और अपने मरणासन्न पिता की ओर देख रही थी। भागने से उसकी साँस फूल गयी थी। सहसा भीड मे से किसी की कानाफूँसी सुनकर वह चौक उठी और दबे कदमो से कोठरी मे दाखिल हुई।

कन्फेशन पूरा हो चुका था। कैटेरीना इवानोव्ना उठकर फिर पति के पास गई। जाने से पहले पादरी ने कैटेरीना इवानोव्ना को भर्त्सना और सान्त्वना के कुछ शब्द कहे।

"इन बच्चो का क्या होगा ?" वह चिढकर बोली।

"ईश्वर दयालु है, वही तुम्हे सान्त्वना देगा," पादरी ने उत्तर दिया।

"आह, दयालु तो है, लेकिन हम पर नही।"

"ऐसा कहना पाप है, श्रीमती जी," पादरी ने समझाया।

"यह क्या पाप नही है ?" कैटेरीना इवानोव्ना ने मरणासन्न पति को लक्ष्य करके कहा।

"जिनकी लापरवाही से यह दुर्घटना हुई है, वे शायद आपको हर्जाना देंगे।"

"आप नही समझते। वे हर्जाना क्यो देंगे? इसने शराब के नशे मे अपने आप को गाडी के नीचे फेक दिया था, कैसी कमाई! इसने सिवाय मुसीबत के हमे कभी कुछ नही दिया। घर की सब चीजे बेच कर यह शराब पीता था। इसने मेरी और बच्चो की जिन्दगी तबाह कर दी। ईश्वर का धन्यवाद है कि यह मर रहा है। एक जने का बोझ तो कम हुआ।"

"श्रीमती जी, यह पापपूर्ण भावनाएँ है। मरणासन्न व्यक्ति को क्षमा कर देना चाहिए।"

कैटेरीना इवानोव्ना पति के चेहरे से खून और पसीना पोछ रही थी और उसे पानी पिला रही रही थी। सहसा वह क्रोध से फुफकार उठी, "धर्म पिता, आपने भी खूब कहा! इसे माफ कर दू? अगर यह दुर्घटना न होती तो यह शराब पीये हुए घर लौटता और बेखबर सो जाता। मैं रात भर इसके और बच्चो के चिथडे धोती रहती। सबेरा होने पर, उन्हे रफू करती। मेरी राते इसी तरह गुजरती है..... इससे बडी माफी और क्या होगी?"

इसी समय उसे जोर की खाँसी आई। उसने मुँह मे रूमाल रख कर दोनो हाथो से सीने को दबा लिया। रूमाल खून से तर हो गया। पादरी ने चुपचाप सिर नीचे झुका लिया।

मारमेलेदोव यत्रणा की अतिम घड़ी मे से गुज़र रहा था। वह टकटकी बाधे अपनी पत्नी के चेहरे की ओर देख रहा था। उसने कुछ कहने के लिए अपने होठ हिलाये, लेकिन कैटेरीना इवानोव्ना ने फौरन कहा, 'चुप रहो! मै जानती हूँ, तुम क्या कहना चाहते हो।" वह जान गई थी कि उसका पति उससे माफी मागना चाहता है। मारमेले-दोव की दृष्टि दरवाजे की ओर गई जहाँ सोनिया खडी थी। अभी तक

सोनिया को उसने नही देखा था।

वह आतंकित हो कर उठ बैठा और हाँफ कर बोला, "वह कौन है ? वह कौन है ?"

"लेट जाओ, लेट जाओ," कैटेरीना इवानोव्ना जोर से चिल्लाई।

किसी अज्ञात शक्ति से प्रेरित होकर मारमेलेदोव कोहनी के बल बैठने मे समर्थ हो गया था। कुछ देर तक तो उसने अपनी बेटी को पहचाना ही नही। इससे पहले सोनिया को उसने ऐसी पोशाक मे नही देखा था। सहसा उसका हृदय अपनी बेटी के अपमानित जीवन की यन्त्रणा और उस सस्ती सजधज के पीछे छिपी क्रूरता से आहत हो उठा। वह विनयपूर्वक पिता को अन्तिम नमस्कार कहने की प्रतीक्षा में खडी थी। मारमेलेदोव के चेहरे पर गहरी व्यथा छा गई।

"सोनिया ? बेटी, मुझे माफ कर दो।" मारमेलेदोव ने अपनी बाँहे फैलानी चाही, लेकिन अपना सन्तुलन खोकर वह मुह के बल फर्श पर गिर पडा। सबने उसे उठाकर सोफे पर लिटा दिया, लेकिन उसकी अन्तिम घडी आ पहुँची थी। सोनिया की बाहो मे उसने प्राण छोड दिए।

"यह तो मुक्ति पा गया, अब क्या होगा ? मै इसे कैसे दफनाऊ गी ? कल बच्चो को खाने के लिए कहाँ से दूगी ?" कैटेरीना इवानोव्ना चिल्लाई।

रास्कोलनिकोव ने उसे समझाया, "कैटेरीना इवानोव्ना, पिछले हफ्ते तुम्हारे पति ने मुझे अपनी परिस्थिति के बारे मे सब कुछ बताया था · विश्वास करो, वह बडे आदर से तुम्हारा नाम ले रहे थे। मुझे उन से ही मालूम हुआ कि वे सारे परिवार मे विशेषकर तुम्हारी कितनी इज्जत करते थे। उसी शाम से · हम दोनो की दोस्ती गहरी हो गई ·· अपनी कमजोरी के बावजूद भी वे · अपने स्वर्गवासी मित्र के लिए मै कुछ करना चाहता हूँ। यह लो बीस रूबल। अगर यह तुम्हारे काम

आ सके तो मै फिर आऊंगा निश्चित रूप से···शायद कल ही गुड बाई।"

वह फौरन भीड को चीरता हुआ जीने से नीचे उतरने लगा। सहसा उसे निकोदिम फोमिच दिखाई दिया जो दुर्घटना की खबर सुन कर पूरी तहकीकात करने वहाँ आया था। पुलिस स्टेशन के बाद दोनो की मुलाकात नही हुई थी, लेकिन निकोदिम फोमिच ने उसे तुरन्त पहचान लिया।

"अरे तुम !"

"मारमेलेदोव चल बसा। डाक्टर और पादरी यहा आये थे। बिचारी बीवी तपेदिक की मरीज है। उसे ज्यादा तग मत करना। हो सके तो उसे ढाढस बँधाने की कोशिश करना · मै जानता हूँ, तुम्हारा हृदय दयालु है" · रास्कोलनिकोव ने मुस्करा कर निकोदिम फोमिच की ओर देखा।

"लेकिन तुम्हारे कपडो पर खून के दाग है," निकोदिम फोमिच ने रास्कोलनिकोव की वास्कट पर ताजा खून के दाग देखकर कहा।

"हा, मै खून मे तर हूँ" ··रास्कोलनिकोव ने विचित्र ढग से कहा, फिर मुस्कराता हुआ वह नीचे चला गया।

वह जानबूझ कर धीरे-धीरे चल रहा था। उसे इस समय भी बुखार था, लेकिन जीवन-शक्ति के ओज से वह अपने अन्दर एक विचित्र स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था। फाँसी की सजा पाये व्यक्ति को अगर रिहाई का हुक्म सुनाया जाय तो उसे भी ऐसी ही स्फूर्ति का अनुभव होता है। जीने मे उसे पादरी भी मिला था। वह नीचे पहुँचने ही वाला था कि जीने पर उसे किसी के कदमो की आहट सुनाई दी। कोई उसके पीछे भागता हुआ आ रहा था। "ठहरो !' ठहरो !" यह पोलेन्का थी।

रास्कोलनिकोव ने मुड कर देखा। आँगन से आती हुई मध्यम

रोशनी में उसे बच्ची का सुन्दर मुस्कराता हुआ चेहरा नजर आया। बच्ची एक सदेश लेकर आयी थी।

"बताइए आपका नाम क्या है ? आप कहाँ रहते है ?" उसने हाँफती हुई आवाज मे पूछा। रास्कोलनिकोव ने बच्ची के कन्धो पर हाथ रख दिये और भावुक दृष्टि से उसके चेहरे की ओर देखने लगा। न जाने क्यो ऐसा करने मे उसे एक अपूर्व आनन्द का अनुभव हो रहा था।

"तुम्हे किसने भेजा है ?"

"सोनिया ने," बच्ची ने मुस्करा कर उत्तर दिया।

"मै जान गया था कि तुम्हारी बहन सोनिया ने ही तुम्हे भेजा होगा।"

"नही, मुझे माँ ने भी भेजा है। जब सोनिया मुझे आपके पास भेज रही थी, तब माँ ने पास आकर कहा, 'पोलेन्का' भाग कर जाना।"

"तुम्हें अपनी बहन सोनिया अच्छी लगती है ?"

"हाँ, मुझे सबसे ज्यादा अच्छी वही लगती है," पोलेन्का की मुस्कराहट मे सजीदगी आ गयी थी।

"क्या तुम मुझे भी दोस्त समझोगी ?"

नन्ही बच्ची ने उसे चूमने के लिए अपना भोला मुह आगे बढाया। उसकी नन्ही पतली बाहो ने रास्कोलनिकोव को कस कर पकड लिया और वह उसके कन्धे से लगकर सुबक-सुबक कर रोने लगी।

थोडी देर बाद हाथो से आँसू पोछती हुई वह बोली, "मुझे पापा का सख्त अफसोस है। अब हम लोगो पर मुसीबते आयेगी।" जब बच्चे बडो की नकल करते है तब इसी तरह बोलते है।

"क्या तुम्हारे पापा तुम्हे प्यार करते थे ?"

वह फिर बडो की तरह सजीदा स्वर मे बोली, "वे लिदा को सब से ज्यादा चाहते थे, क्योकि वह नन्ही है और साथ ही बीमार भी रहती

है। वे हमेशा उसके लिए तोहफे लाया करते थे। लेकिन उन्होने हम सब को पढना सिखाया। मुझे व्याकरण और बाईबल उन्होने ही सिखायी थी।" पोलेन्का के स्वर मे शालीनता आ गई थी। "माँ इस बारे मे कभी कुछ न कहती। माँ चाहती है कि मै अब फ्रेंच सीखू क्योकि अब मेरी पढाई शुरू होनी चाहिए।"

"क्या तुम्हे प्रार्थना आती है?"

"क्यो नही! हमे बहुत पहले ही प्रार्थना सिखायी गयी थी। मै अब बडी हो गयी हूँ, इसलिए अकेली ही प्रार्थना करती हूँ। लेकिन कोल्या और लिदा माँ के पीछे-पीछे प्रार्थना करते है, पहले 'मरियम का गीत' फिर कहते है हे ईश्वर सोनिया को क्षमा कर दो। उसके बाद कहते है प्रभु! हमारे दूसरे पिता के पाप क्षमा कर दो और उन्हे आशीर्वाद दो। हमारे पहले पिता की मृत्यु हो चुकी है, ये हमारे सौतेले पिता है लेकिन हम उनके लिए भी प्रार्थना करते है।"

"पोलेन्का, मेरा नाम रोदियोन है, कभी कभी मेरे लिए भी प्रार्थना क्रिया करना, कहना, "हे ईश्वर अपने दास रोदियोन के पापो को क्षमा कर दो" इससे अधिक कुछ नही।"

"मै आप सबके लिए जीवन भर प्रार्थना करती रहूगी।" पोलेन्का ने आवेश मे आकर कहा और वह फिर रास्कोलनिकोव के गले से लिपट गई।

रास्कोलनिकोव ने उसे अपना पता बताया और कल फिर आने का वायदा किया। बच्ची उससे बडी प्रभावित हुई थी, जब वह वहाँ से चला तो दस बज चुके थे। पाँच मिनट मे वह पुल के उस स्थान पर जाकर खडा हो गया, जहाँ से औरत ने छलाग लगायी थी।

"बस बहुत हो चुका!" उसने दृढ स्वर मे घोषणा की, "अब काल्पनिक भय और मन के वहमो से मैने पिण्ड छुडा लिया है। मै सचमुच जिन्दा तो हूँ! क्या अभी मै जिन्दा नही था! उस खूसट

सुनाया दे रही थी। कोई गरमागरम बहस छिडी थी। राजुमिहीन का कमरा काफी बडा था। दावत मे पन्द्रह मेहमान उपस्थित थे। रास्कोलनिकोव दरवाजे के पास जाकर ठिठक गया। वहाँ मकान मालकिन के दो नौकर पर्दे के पीछे समावार, शराब की बोतले, तश्तरियाँ और मिठाइयाँ रख रहे थे। रास्कोलनिकोव ने राजुमिहीन को बुला भेजा। राजुमिहीन खुशी मे भागता हुआ आया। आमतौर पर राजुमिहीन को अधिक शराब पीने पर भी नशा नही चढता था, लेकिन इस समय शराब ने उसे डाँवाँडोल कर दिया था।

रास्कोलनिकोव ने झट से कहा, "सुनो, मै तुम्हे सिर्फ इतना बताने यहाँ आया हूँ कि तुमने शर्त जीत ली है। मै भीतर नही आऊँगा। मुझे इतनी कमजोरी महसूस हो रही है कि भीतर जाते ही मै गिर पड़ूँगा। गुडबाई। कल आकर मुझे मिलना।"

"चलो मै तुम्हे घर तक पहुँचा आऊँ। तुम कहते हो, तुम्हे कमजोरी महसूस हो रही है। तुम्हे चाहिए · "

"और तुम्हारे मेहमानो का क्या होगा ? और यह घुँघराले बालों वाला आदमी कौन है जो अभी बाहर झाक कर देख रहा था ?"

"वह ? पता नही कौन है। शायद चचा का कोई दोस्त होगा, या बिना बुलाये ही आगया होगा···मेहमानो की देखभाल के लिए चचा को यहाँ छोड कर मै तुम्हारे साथ चलता हूँ। मेरे चचा है शानदार आदमी। काश मै उनसे तुम्हारा परिचय करवा सकता। भाड में जाये सब मेहमान ! मुझे ताजी हवा चाहिए। तुम बडे मौके से आये हो, नही तो मेरी इन लोगो से मारपीट हो जाती। तुम सोच नहीं सकते, ये लोग कितनी खुराफात बक रहे है। लेकिन तुम सोच क्यो नही सकते ? क्या हम लोग खुराफात नही बकते ? उन्हे बकने दो। जरा ठहरो, मै जोसीमोव को बुला लाऊँ।"

जोसीमोव रास्कोलनिकोव को देखते ही तपाक से उसकी ओर

बढा। "तुम यहाँ कहाँ ? जाओ, फौरन बिस्तर मे जाकर सो जाओ और सोने से पहले दवा पी लेना। मैने तुम्हारे लिए यह पाउडर तैयार किया है खाओगे न ?"

"क्यो नही, एक की जगह दो पुडियाँ खा लूँगा," रास्कोलनिकोव ने जवाब दिया।

जोसीमोव ने राजुमिहीन से कहा, "अच्छा है कि तुम मरीज को अपने साथ ले जा रहे हो। मै कल आकर फिर इनकी जाँच करूँगा। वैसे तबियत कुछ सुधरी मालूम होती है। आगे देखो ··"

सडक पर पहुँचते ही राजुमिहीन ने झट से बक डाला, "जानते हो जोसीमोव ने चलने समय मेरे कान मे क्या कहा था। मै तुम्हे सारी बात नही बताऊँगा, क्योकि वे लोग बहुत बेवकूफ है। जोसीमोव ने कहा था कि मै रास्ते मे तुमसे खुलकर बातचीत करूँ। उसका ख्याल है कि तुम · पागल हो गये हो या होने वाले हो। कैसी फिजूल बात है! अव्वल तो तुम उससे तीन गुना ज्यादा दिमाग रखते हो, दूसरे यह कि तुम्हारी अक्ल सही सलामत है। इसलिए बेफिक्र रहो। तीसरे यह कि वह माँस का लोदा, जो सर्जरी (शल्य विद्या) का विशेषज्ञ है, आजकल मानसिक रोगो के पीछे पागल हो रहा है। इसलिए उसने यह नतीजा निकाला है कि तुमने आज जेमेतोफ से जिस तरह की बाते की, वह सिर्फ एक पागल ही कर सकता है।"

"जेमेतोफ ने तुम्हे सब बाते बतायी ?"

"हाँ। अब हम लोग समझ गये है कि माजरा क्या है · रोद्या बात यह है मेरे कहने का मतलब यह है · मै इस वक्त नशे मे हूँ ·· खैर इसमे कोई हर्ज नही। इन लोगो के दिमाग मे अजब खुराफात पैदा हो रही थी · समझ गये ? किसी को खुल्लम-खुल्ला यह बात कहने की हिम्मत नही पडी, क्योकि बात ही ऐसी बेहूदी है और पेन्टर की गिरफ्तारी के बाद सारा भाँडा अपने आप फूट गया। लेकिन ये लोग

इतने मूर्ख क्यो है ? मैने जेमेतोफ की अच्छी खबर ली, लेकिन देखो, भूल कर भी किसी से यह बात न कहना। यह बात लुईजा इवानोव्ना के यहाँ से शुरू हुई थी, लेकिन आज सारा मामला साफ होगया है। यह कम्बख्त इल्या पैत्रोविच ही सारी शरारत की जड है। पुलिस स्टेशन मे तुम्हारे बेहोश होने की बात को लेकर उसने न जाने कितना बडा तूमार खडा कर दिया। लेकिन अब सब ठीक है। मै जानता हूँ कि तुम · "

रास्कोलनिकोव की जिज्ञासा तीव्र हो गयी। राजुमिहीन की जबान नशे मे खुल गई थी।

"वहाँ रोगन की गन्ध आ रही थी और कमरे मे इतनी भीड थी कि मै बेहोश हो गया" रास्कोलनिकोव बोला।

"मुझे यह सब बताने की कोई जरूरत नही। इसके अलावा तुम पिछले एक महीने से बीमार भी तो थे। जोसीमोव भी इसका गवाह है। लेकिन तुम नही जानते कि जेमेतोफ पर अब तुम्हारा कितना रौब पड गया है। वह तुम्हारा लोहा मानने लगा है। आज सुबह शीशमहल रेस्तराँ मे तुमने उसे खूब छकाया। पहले तो तुमने उसे इतना डराया कि वह बेहोश होते होते बचा। फिर तुमने उसके दिमाग मे न जाने क्या खुराफात डाल दी और आखीर मे मुँह चिढाकर तुम उसका मजाक उडाने लगे। भई, तुमने खूब स्वाग रचा। अब जेमेतोफ चूँ तक नही करेगा। खुदा कसम तुमने कमाल कर दिया। इन लोगो को यही सबक सिखाना चाहिए। काश मै भी वहाँ होता। जेमेतोफ दावत मे तुम्हारे आने की राह देख रहा था। पौरफेरी भी तुमसे दोस्ती करना चाहता है··"

"आह ! · वह भी।' 'लेकिन लोगो ने मुझे पागल कैसे समझ लिया ?"

"पागल नही। अरे भाई, मै नशे मे न जाने क्या बक गया हूँ·· उन लोगो को इस बात पर ताज्जुब है कि तुम्हे इस विषय मे इतनी

गहरी दिलचस्पी क्यो है, अब बात साफ हो गई है। तुम बीमार थे ·· लेकिन भाड मे जाय यह जोमीमोव ! वह तो मानसिक रोगो के पीछे पागल हो रहा है। तुम उसकी बातो का बुरा मत मनाना · ”

कुछ देर तक दोनो चुप रहे।

रास्कोलनिकोव ने बात शुरू की, “राजुमिहीन मै तुमसे साफ साफ कहना चाहता हूँ कि मै अभी एक क्लर्क की मौत देख कर आया हूँ · मैने उसके परिवार को अपने सारे पैसे दे दिये। इसके अलावा अभी किसी ने मेरा मुँह चूमा है। अगर मैने किसी की हत्या भी की होती ·· मैने वहाँ किसी और को देखा था जिसकी टोपी मे सुर्ख रग का पख लगा था · लेकिन मै यह क्या बक रहा हूँ ··मुझे कमजोरी महसूस हो रही है। मुझे सहारा देकर ऊपर ले चलो।”

“क्या बात है ? तुम्हे अचानक क्या हो गया ?” राजुमिहीन ने घबराकर पूछा।

“मेरा मन बहुत उदास है ··औरतो की तरह। सामने देखो क्या है ?”

“किधर ?”

“देख नही रहे ? मेरे कमरे मे बत्ती जल रही है · दरार मे से ”

मकान मालकिन के दरवाजे के नजदीक पहुँचकर उन्होने देखा कि सचमुच रास्कोलनिकोव की कोठरी मे बत्ती जल रही थी।

“ताज्जुब है, शायद नस्तास्या होगी,” राजुमिहीन ने कहा।

“वह बहुत जल्द सो जाती है, और रात को इस समय कभी भी मेरे कमरे मे नही आती · लेकिन अब मुझे कोई परवाह नही है। गुडबाई।”

“क्या मतलब ? मै भी तुम्हारे साथ ऊपर आ रहा हूँ।”

“मै जानता हूँ कि तुम मेरे साथ ऊपर आ रहे हो। लेकिन मै यही तुम से हाथ मिलाकर विदा लूँगा। लाओ अपना हाथ, गुडबाई !”

"रोद्या यह तुम्हे क्या हो गया है ?"

"कुछ नही • मेरे साथ आओ•••तुम सब कुछ अपनी आँखो से देख लेना ।"

सीढियाँ चढते समय राजुमिहीन को ख्याल आया कि शायद जोसीमोफ का कहना ठीक था। वह मन ही मन कहने लगा, "मैंने अपनी बकवास से इस बेचारे को परेशान कर दिया है।"

कमरे के भीतर से आवाजे आ रही थी।

"यह क्या ?" राजुमिहीन ने आश्चर्य प्रकट किया।

रास्कोलनिकोव ने आगे बढकर दरवाजा खोल दिया और वह अवाक् दहलीज मे खडा रहा गया।

उसकी माँ और बहन पिछले डेढ घटे से उसकी प्रतीक्षा मे बैठी थी। उन्होने पूछा कि जब उसे उनके पीटर्सबर्ग आने की खबर मिल गई थी तो वह आकर उनसे मिला क्यो नही। पिछले डेढ घटे से वे नस्तास्या से तरह तरह के सवाल पूछं चुकी थी। और यह सुनकर कि वह बीमारी की हालत मे आज निकल कर बाहर भाग गया है, चिन्तित हो रही थी। "हे ईश्वर रोद्या को क्या हो गया," दोनो लगातार रोती रही।

रास्कोलनिकोव के आते ही दोनो स्त्रियाँ खुशी से चीखती हुई उसकी ओर भागी। लेकिन उसकी बाँहो को जैसे लकवा मार गया। वह पत्थर की मूर्ति की तरह अपनी जगह पर खडा था। उसकी माँ और बहन ने उसे अपनी बाँहो मे ले लिया। उसका माथा चूमा, और वे हँसने और रोने लगी। रास्कोलनिकोव के कदम लडखडाने लगे और वह फर्श पर गिरकर बेहोश हो गया।

कमरे से चीखो और सिसकियो की आवाज सुनकर राजुमिहीन भी अन्दर दाखिल हुआ और उसने अपनी बलिष्ठ बाहो से मरीज को उठा कर सोफे पर लिटा दिया।

"चिन्ता की कोई बात नही। अभी डाक्टर ने कहा था कि अब रोद्या बिल्कुल स्वस्थ है। पानी ! देखिए, इसे होश आ रहा है। अब यह बिल्कुल ठीक हे," राजुमिहीन ने दूनिया की बाह इतनी जोर से पकडी कि उमकी हड्डी टूटते-टूटते बची। वह उसे दिखाना चाहता था कि उसका भाई अब बिल्कुल ठीक है। दोनो स्त्रियाँ उसकी ओर कृतज्ञ भाव से देखने लगी। वे नस्तास्या से सुन चुकी थी कि इस 'होशियार नौजवान' ने रोद्या की कितनी सेवा की थी। रास्कोलनिकोव की माँ भी उसे 'होशियार नौजवान' पुकारने लगी।

तीसरा भाग

१

रास्कोलनिकोव उठकर सोफे पर बैठ गया था। उसने हाथ हिलाकर राजुमिहीन को इशारा किया कि वह अपना सान्त्वनापूर्ण भाषण सक्षिप्त कर दें। इसके बाद वह अपनी माँ और बहन के हाथ पकडकर बारी-बारी से चुपचाप दोनो के मुँह की ओर ताकने लगा। उसके चेहरे के भाव को देखकर मा रोने लगी। उस चेहरे मे अतीव व्यथा और एक विचित्र विक्षिप्ति छिपी थी। दूनिया के हाथ कॉपने लगे।

"राजुमिहीन के साथ घर वापस जाओ। कल मिलेंगे, गुडबाई। कल सब बाते तै हो जायेगी ''तुम लोग कब आई ?"

"आज शाम को, ट्रेन बहुत लेट हो गई थी। लेकिन रोद्या तुम्हे छोडकर मै कही नही जाऊँगी। मै रात को यही रहूँगी।"

"मुझे तग मत करो," रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा।

"मै इसके पास ठहरूँगा। अब इसे एक क्षण के लिए भी अकेला नही छोडूगा। मेरे मेहमान जरूर नाराज होगे। लेकिन उन्हे गालियाँ बकने दो। मेरे चचा तो वहाँ है ही," राजुमिहीन बोला।

"मैं किन शब्दो मे तुम्हारा धन्यवाद करूँ," रास्कोलनिकोव की माँ आगे कुछ कहने ही वाली थी कि रास्कोलनिकोव ने बीच में टोककर कहा, "मुझे यह सब नही चाहिए, नही चाहिए ! बस बहुत हो चुका। तुम लोग जाओ !"

दूनिया ने मा के कान मे फुसफुसा कर कहा, "मा,एक मिनट के लिए बाहर आओ। हमारे रहने से रोद्या को खीज हो रही है।"

"तीन बरस के बाद क्या बेटे का चेहरा भी अच्छी तरह न देखूँ ?"

रास्कोलनिकोव ने उसे फिर टोका, "ठहरो, तुम मुझे बीच मे टोक देती हो जिससे मेरा दिमाग चकरा जाता है ··तुम्हे लूजिन मिला है ?"

"नही, लेकिन उसे हमारे आने की खबर मिल चुकी है। रोद्या हमने सुना है कि प्योत्र प्योत्रोविच आज तुमसे मिलने आये थे।"

"हाँ · वे तशरीफ लाये थे। मैने उन्हे कह दिया कि मैं उन्हे उठाकर जीने से नीचे फेक दूँगा ! सुनती हो दूनिया ?"

"रोद्या, तुम यह क्या बक रहे हो ? कही सचमुच ··"रास्कोलनिकोव की मा भयभीत स्वर मे बोली।

लेकिन दूनिया गौर से अपने भाई के चेहरे की ओर देख रही थी। नस्तास्या ने उन्हे जो कुछ भी बताया था उससे वे बहुत परेशान हुई थी।

रास्कोलनिकोव ने कहा, "दूनिया मै इस शादी के हक में नही हूँ, इसलिए तुम कल ही लूजिन से रिश्ता तोड लो, ताकि मै उसका नाम फिर कभी न सुनूँ।"

"हे ईश्वर !" बूढी मा चिल्लायी।

दूनिया ने भी आवेश भरे स्वर में कहा "भाई, ज़रा सोचो तो सही, तुम क्या कह रहे हो। तुम थके हो, इसलिए इस विषय पर फिर बात करना।"

"तुम समझती हो मैं प्रलाप कर रहा हूँ ? नही··तुम मेरी खातिर

ही लूजिन से शादी कर रही हो, लेकिन मुझे तुम्हारा यह त्याग नहीं चाहिए। इसलिए फौरन उसके नाम एक ख़त लिखो। कल सुबह वह ख़त मै ख़ुद पढ़ूँगा। बस किस्सा यही खत्म हो जायगा।"

"मैं ऐसा नही कर सकती। तुम्हे क्या अधिकार है··" दूनिया ने आहत स्वर मे पूछा।

"दूनिया, चुप रहो। कल देखा जायगा। आओ चले," माँ ने उसे समझाया।

राजुमिहीन नशे में बोला, "यह बुखार की तेजी मे बक रहा है। कल यह सब खुराफात दिमाग से निकल जायेगी। सचमुच आज इसने लूजिन का अपमान किया था। इसने लूजिन पर अपनी विद्वता की धाक जमानी चाही। उसने बुरा मनाया और यहाँ से चला गया।"

"तो क्या सचमुच ऐसा हुआ था ?" रास्कोलनिकोव की माँ ने पूछा। दूनिया ने भावुक स्वर मे कहा, "आओ मा चले। गुडबाई रोद्या। कल मिलेंगे।"

रास्कोलनिकोव ने पीछे से पुकार कर कहा, "बहन सुनो। मै होश में बाते कर रहा हूँ। यह शादी करना पाप होगा। मै चाहे बदमाश ही क्यो न बन जाऊँ, लेकिन तुम्हे ऐसा नही करना चाहिए·· घर मे एक बदमाश ही काफी है। ख़ुद बुरा होते हुए भी मै अपनी बहन को बुरा नही बनने दूँगा। तुम लूजिन और मुझ मे से किसी एक को चुन लो। बस जाओ ·····"

"तुम सचमुच पागल हो गये हो, जालिम !" राजुमिहीन चिल्लाया लेकिन रास्कोलनिकोव ने चुपचाप दीवार की ओर मुँह फेर लिया। वह थक गया था। दूनिया गौर से राजुमिहीन की ओर देखने लगी। उसकी काली आँखे चमकने लगी। राजुमिहीन चौक गया।

रास्कोलनिकोव की माँ का हृदय विदीर्ण हो रहा था। वह दुखित स्वर में बोली, "मै यहाँ से हर्गिज नही जा सकती। तुम दूनिया को घर

छोड आओ···मै यही कही सो जाऊँगी।"

राजुमिहीन ने बिगड कर कहा, "तुम्हारे यहाँ रहने से इसकी हालत और भी बिगड जायगी। बाहर तो निकलो! नस्तास्या जरा रोशनी दिखाना।" जीने मे आकर उसने बताया, "सच मानो आज दोपहर वह मुझे और डाक्टर तक को पीटने के लिए उतारू हो गया था। डाक्टर भी उसे उत्तेजना से बचाने के लिए यहाँ से खिसक गया। मै उसकी देखभाल के लिए नीचे रुका रहा। लेकिन यह हजरत फौरन कपडे पहन कर बाहर चल दिए। क्या पता तुम लोगो से तंग आकर यह रात को कही बाहर निकल जाये और कोई अनर्थ कर बैठे।"

"यह तुम क्या कह रहे हो?"

"और जरा सोचो तो सही, जहाँ तुम ठहरी हो, क्या वहाँ अवदोत्या रोमानोव्ना का ठहरना उचित है? क्या वह बदमाश लूजिन तुम्हे किसी और जगह नही ठहरा सकता था?·· लेकिन मै आज नशे मे हूँ, इसलिए अनापशनाप बक रहा हूँ बुरा मत मानिएगा।"

"मै जाकर मकान-मालकिन की मिन्नत करती हूँ कि वह मुझे और दूनिया को रात भर के लिए कोई जगह दे दे। मै रोद्या को इस हालत मे छोडकर नही जा सकती, बिल्कुल नही।"

यह बातचीत मकान-मालकिन के दरवाजे के बाहर ही हो रही थी। नस्तास्या एक सीढी नीचे रोशनी हाथ मे लिए खडी थी। राजुमिहीन इस समय नशे मे गर्क था। आध घटा पहले रास्कोलनिकोव को लेकर जब वह आया था, तब उसका दिमाग बिल्कुल साफ था। लेकिन इस समय वह तेज सरूर की हालत मे था। वह दोनो औरतो के हाथ पकडकर जोर से दबा रहा था और अशिष्ट भाषा का प्रयोग करने लगा था। दूनिया की ओर तो वह लफगो की तरह घूर रहा था। दोनो स्त्रियो ने अपने हाथ छुडाने की कोशिश की, लेकिन उसने उनके हाथ और भी कसकर पकड लिए। अगर इस समय वे उसे सर

के बल नीचे छलाग लगाने को कहती तो वह सहर्ष ऐसा करने के लिए तैयार हो जाता। रास्कोलनिकोव की मॉ सोच रही थी कि राजुमिहीन सनकी आदमी है और सनक मे आकर उसका हाथ दबा रहा है। वह रोद्या के बारे मे इतनी चिन्तामग्न थी कि उसने इन अभद्र हरकतो की ओर विशेष ध्यान नही दिया। लेकिन दूनिया इतनी भोली न थी। वह राजुमिहीन की आखो की चमक को देखकर सहम गई। अगर नस्तास्या ने उसके भाई के विलक्षण दोस्त की तारीफ न की होती तो वह जरूर अपना हाथ छुडाकर वहाँ से भाग जाती और अपनी मॉ को भी ऐसा करने की सलाह देती। लेकिन दूनिया जान गई थी कि उस समय भागना सभव न था। दस मिनट के भीतर वह आश्वस्त हो गई, क्योकि थोडे ही समय मे राजुमिहीन के सपर्क मे आने वाले लोग उसके असली स्वभाव से परिचित हो जाते थे।

राजुमिहीन ने डाटकर कहा, "मकान-मालकिन के यहा जाने का सवाल ही नही उठता। और अगर तुम यहा ठहरी तो वह जरूर पागल हो जायगा। मै बताता हूँ तुम्हे क्या करना चाहिये रोद्या के पास नस्तास्या रहेगी, मै तुम दोनो को घर पहुचा आऊँगा। इस समय तुम्हारा अकेला जाना ठीक नही होगा, पीटर्सबर्ग इस मानी मे बडी भयकर जगह है ··· उसके बाद मै तुम्हे रोद्या की हालत की खबर देने आऊँगा फिर मै अपने घर जाऊँगा—वहाँ से मै जोसीमोव को बुला लाऊँगा—उसे कभी नशा नही चढता—वह रोद्या को आकर देखेगा और तुम्हे रिपोर्ट देगा। समझ गई। खुद डाक्टर के मुँह से तुम्हे सब कुछ मालूम हो जायेगा। मै कसम खाकर कहता हूँ कि अगर कुछ गडबड हुआ तो तुम्हे आकर खबर दूँगा—वरना तुम दोनो निश्चिन्त होकर सो जाना। मै यही बरामदे मे सो रहूँगा। जोसीमोव मकान-मालकिन के यहाँ सो जायेगा। तुम्हारा यहाँ रहना जरूरी है या डाक्टर का। अब घर चलो! मकान-मालकिन के यहाँ ठहरने का

नाम भी मत लेना। मेरी बात दूसरी है। वह तुम्हे हरगिज़ नही ठहरायेगी ·· क्योकि वह मूर्ख है। अवदोत्या रोमानोवना को देखते ही वह ईर्ष्या से जल मरेगी। वह बडी विचित्र औरत है ··· लेकिन मूर्ख तो मै भी हूँ। ·· खैर कोई बात नही। आओ चले। तुम्हे मुझ पर भरोसा है या नही, बोलो।"

"आओ चले माँ, इन्होने अपनी सेवा से रोद्या के प्राण बचाये है, अगर डाक्टर यहाँ रात गुजारने के लिए तैयार हो जाये तो इससे अच्छी बात क्या होगी ?" दूनिया ने समझाया।

"देखा ··· तुम ·· तुम मेरी बात समझती हो, क्योकि तुम देवी हो।" राजुमिहीन ने गद्‌गद् स्वर मे कहा। "नस्तास्या ऊपर जाकर रोद्या के पास बैठो, रोशनी साथ मे रखना—मै पन्द्रह मिनिट मे लौट आऊँगा।"

रास्कोलनिकोव की माँ सोच रही थी, क्या यह सहृदय युवक अपना वादा पूरा कर सकेगा ? इस हालत मे ···"

राजुमिहीन ने फौरन कहा, "आह मै समझ गया, तुम्हे शक है कि मै नशे की हालत मे हूँ।" वह फुटपाथ पर तेज कदमो से चलने लगा, दोनो स्त्रिया पीछे रह गई। वह फिर बोला, "यह बकवास है। मुझे नशा जरूर है, लेकिन यह शराब का नशा नही—तुम्हे देखते ही मुझे कुछ हो गया है ·· लेकिन मै तुम्हारे काबिल नही हूँ—मेरी बकवास पर ध्यान न देना। तुम्हे घर पहुँचाकर मै अपने सर पर दो पानी के घडे डालूँगा—इससे मेरा दिमाग ठीक हो जायेगा। काश तुम जान सकती कि मै तुम दोनो को कितना प्रेम करता हूँ। इसमे हँसने या नाराज़ होने की कोई बात नही। मुझ पर गुस्सा मत करो। मै रोद्या का दोस्त हूँ, इस नाते तुम्हारा दोस्त भी हूँ ··· पिछले बरस मुझे तुम्हारे आने का पूर्वज्ञान हुआ था ··· शायद आज रात भर मुझे नीद नही आयेगी, जोसोमोव को डर था कि रोद्या कही पागल न हो

जाये—इसलिये उसे तग करना ठीक नही।"

"यह तुम क्या कह रहे हो ?" मा चिल्लाई।

दूनिया ने घबराकर पूछा, "क्या डाक्टर ने सचमुच ऐसा कहा था ?"

"हा, लेकिन यह सच नही है, डाक्टर ने उसे खाने के लिये एक पुडिया दी थी · तुम लोग अगर कल आती तो अच्छा होता, एक घटे के भीतर ज़ोसीमोव तुम्हे सब कुछ बता देगा। वह होश मे है। तब तक मेरा दिमाग भी सुस्थिर हो जायेगा। जानती हो, मै किस लिये बदहवास हो गया था। वे कम्बख्त मुझ से बहस करने लगे थे। मैने अब कसम खा ली है कि आगे से कभी बहस नही करूगा, वे सब न जाने क्या-क्या खुराफात बक रहे थे। मैं उन्हे पीटने ही वाला था। इसलिये चचा को वहा छोडकर चला आया। तुम्हे विश्वास नही होगा, वे व्यक्तिवाद के घोर विरोधी है। वे अपने आप से विद्रोह करना चाहते है—इसी को वे प्रगति की चरमावस्था मानते है। यहा तक कि यह बकवास भी उनकी अपनी नही है, लेकिन · "

"सुनो !" रास्कोलनिकोव की माँ ने कुछ कहना चाहा, लेकिन राजुमिहीन पहले से भी ऊँची आवाज मे बोला, "तुम्हारा क्या ख्याल है कि मैं इस खुराफ़ात के लिये उन्हे बुरा भला कह रहा हूँ ? बिल्कुल नही। मै चाहता हूँ वे खुराफात बके। यह तो आदमी का पैदायशी हक है। गलतियो के रास्ते ही इसान सचाई तक पहुँचता है। मै गलतियाँ करता हूँ, इसलिए मै इन्सान हूँ। कम-से कम चौदह गलतियाँ किए बगैर आप सच्चाई को नही पा सकते। हो सकता है कि एक सौ चौदह गलतियाँ भी करनी पडे। लेकिन कई लोगो की गलतिया भी अपनी नही होती है। खुराफात बको, लेकिन वह अपनी होनी चाहिए। इसके लिए तो मै उनका मुँह भी चूम सकता हूँ। दूसरो के सही रास्ते पर जाने से अपना गलत रास्ता ढूँढना कही

बेहतर है। इन्सान पहले रास्ते पर चले तो इन्सान है, दूसरे पर चले तो परिन्दा है। सच्चाई कही भाग कर नही जा सकती, लेकिन जिन्दगी का दम घुट सकता है। इसकी कितनी ही मिसाले है। आज क्या हो रहा है ? विज्ञान, प्रगति, विचारो, ईजादो, आदर्शों, उद्देश्यो, उदारतावाद, विवेक, अनुभव—इन सब चीजो मे स्कूल की पहली जमात के विद्यार्थियो की तरह हमे दूसरो के विचारो से ज़िन्दगी को चलाने की आदत है। क्यो, मै ठीक कह रहा हूँ न ?" राजुमिहीन ने आवेश से दोनो स्त्रियो के हाथ दबाते हुए पूछा।

"हाय, रहम करो, मुझे कुछ नही मालूम," बेचारी बुढिया चिल्लाई।

राजुमिहीन ने दूनिया का हाथ इतनी जोर से दबाया था कि वह दर्द से चिल्ला पडी थी। "मै तुम्हारी हर बात से सहमत नही हूँ, लेकिन तुम ठीक कहते हो।"

"तुम मुझ से सहमत हो··तुम· तुम समस्त अच्छाई, पवित्रता, विवेक और सपूर्णता की मूर्ति हो। तुम दोनो अपने हाथ लाओ, मै यही, इसी वक्त घुटनो के बल बैठकर तुम्हारे हाथ चूमना चाहता हूँ।" सौभाग्य से उस समय फुटपाथ सूना था।

"मेरा हाथ छोड दो, तुम यह क्या कर रहे हो ?" रास्कोलनिकोब की माँ भयभीत स्वर मे बोली।

दूनिया भी घबरा गई थी, लेकिन उसने हँसते हुए कहा, "उठो ! उठो !"

"जब तक मै तुम दोनो के हाथ नही चूम लूँगा, तब तक हर्गिज नही उठूँगा। मै मूर्ख और अभागा हूँ। इस काबिल नही हूँ कि तुम से प्रेम कर सकूँ। लेकिन तुम्हारी इज्जत करना हर इन्सान का फर्ज है, जो निरा वहशी नही है। मै नशे मे हूँ · मुझे शर्म आ रही है··· लीजिए आपका घर आगया। रोद्या ने आपके लूज़िन का अपमान करके ठीक ही किया। इतनी गन्दी जगह मे आपको ठहराने का साहस

उसे कैसे हुआ ? छि छि कैसी शर्म की बात है ! जानती हो यहाँ किस किस्म के लोग रहते है ? फिर उसने अपनी मगेतर को यहाँ पर कैसे ठहराया ? तुम—उसकी मगेतर हो ! अच्छा तो सुनो, तुम्हारा भावी पति बदमाश है।"

"क्षमा करें, मिस्टर राजुमिहीन, आप शायद भूल गये कि "
बुढिया ने कहना शुरू किया।

"हाँ, हाँ, आप ठीक कहती है। मै भूल गया था, माफी चाहता हूँ। लेकिन आप मुझसे क्यो नाराज हो गयी ? क्या इसलिए कि मै सच्चे दिल से बाते कर रहा हूँ। मै ··मै···खैर जाने दीजिए इस बात को······लेकिन आज हम सब ने देख लिया कि लूजिन हम लोगो जैसा नहीं है। इसलिए नही कि वह नाई की दुकान पर जा कर बालो को घुँघराले बनवाकर लाया था, न इसलिये कि वह अपनी हाज़िर जवाबी का प्रदर्शन करने के लिए उतावला रहता है, बल्कि इसलिए कि वह देशद्रोही है, सट्टेबाज है, मक्खीचूस और विदूषक है। यह साफ ज़ाहिर है। तुम उसे होशियार समझती हो ? वह निरा अहमक है। क्या वह तुम्हारे क़ाबिल है ? आप देख रही है ?" उसने सहसा रुकते हुए कहा। "मेरे सब दोस्त इस समय शराब के नशे मे है। लेकिन सबके सब ईमानदार है। यह सही है कि हम लोग काफी ख़ुराफात बकते है, लेकिन किसी न किसी दिन हम ख़ुराफात बकते हुए सचाई तक पहुँच जायेंगे, क्योकि हम सही रास्ते पर है। लेकिन यह लूजिन सही रास्ते पर नही है। मै अभी अपने दोस्तो को गालियाँ दे रहा था लेकिन मै उनकी इज्जत करता हूँ। जेमेतोफ की मै इज्ज़त नही करता, क्योकि वह निरा पिल्ला है। जोसीमोव पूरा बैल है, लेकिन वह ईमानदार आदमी है, और अपने काम में कुशल है। लेकिन जो बात मुँह से निकल गई सो निकल गई। आओ आगे चले। मैं इस बरामदे को अच्छी तरह पहिचानता हूँ। नबर ३ कमरा बदनाम है। आप किस

कमरे में ठहरी हैं। आठ नबर मे ? अच्छा, भीतर से ताला लगा लेना, किसी को आने मत देना, पद्रह मिनट के भीतर ही मै रोद्या की खबर लेकर आऊँगा। एक घटे बाद, देख लेना जोसीमोव भी आयेगा। गुडबाई।"

राजुमिहीन के जाने के बाद वृद्धा माँ भयभीत स्वर में बोली, "दूनिया, अब क्या होगा ?"

"चिन्ता न करो माँ, ईश्वर ने इस भलेमानस को हमारी सहायता के लिये भेजा है। वह नशे मे ज़रूर था, लेकिन उस आदमी पर भरोसा किया जा सकता है। उसने रोद्या की कितनी सेवा की है ·····"

"क्या पता वह आयेगा या नही ? मै रोद्या को अकेला क्यो छोड आई ! आह ! मैने न जाने कैसी कल्पनायें की थी, लेकिन हमे देखकर वह इतना चिढ क्यो गया था ?" वृद्धा की आँखो मे आँसू आ गये।

"नही माँ, ऐसी बात नही है। बीमारी ने उसके दिमाग को अस्थिर कर दिया है। तुम सारा वक्त रोती रही, तुम नही जानती ?"

"हाय अब क्या होगा ? वह तुमसे कैसी बाते कर रहा था दूनिया ?" माँ ने बेटी की ओर आशाभरी दृष्टि से देखते हुए कहा। वह जानती थी कि दूनिया ने अपने भाई के गुस्से को माफ कर दिया है "मुझे विश्वास है कि कल उसे अक्ल आ जायेगी।"

"नही, वह कल भी अपनी बात पर अडा रहेगा।" दूनिया ने जवाब दिया। उसकी माँ इस विषय पर बातचीत करने से डरती थी। दूनिया ने जा कर माँ का माथा चूम लिया। माँ ने उसे स्नेह से गले लगा लिया। इसके बाद दूनिया दोनो बाहे वक्ष पर लपेटे कमरे मे चक्कर लगाने लगी। उसकी माँ समझ गई कि उसकी बेटी किसी गहरी सोच में पड गई है। ऐसे समय मे माँ कुछ कहने से डरती थी।

दूनिया को देखते ही राजुमिहीन क्यो आसक्त हो गया, दूनिया के शान्त सुन्दर चेहरे को देखकर कोई भी इसका कारण समझ सकता

था। दूनिया बहुत सुन्दर थी और उसकी लबी, सुडौल देह से आत्म-विश्वास झलकता था। इससे उसके व्यक्तित्व की सुकुमारता मे कोई अन्तर न आया था। उसका चेहरा अपने भाई से मिलता था। उसके बाल गहरे भूरे रग के थे। उसकी काली आँखो मे स्वाभिमान और दयालुता झलकती थी। उसके चेहरे मे ताज़गी लिये हुए चम्पई आभा थी। उसके नन्हे गुलाबी ओठ और नन्ही सी ठुड्डी कुछ आगे की ओर बढे हुए थे, जिससे उसके चेहरे मे अहकार की मुद्रा आ गई थी। वह हमेशा खोई खोई-सी रहती थी, लेकिन अल्हड मुस्कान उसके चेहरे पर कितनी खिलती थी ! यह स्वाभाविक ही था, कि राज़ुमिहीन जैसा भावुक और सीधा सादा युवक, जिसने जिन्दगी मे कभी ऐसी लडकी नही देखी थी, उसे देखते ही उस पर मोहित हो गया था। सयोगवश उसने दूनिया को भ्रातृप्रेम से पुलकित स्वरूप मे देखा था, लेकिन जब रोद्या उससे धृष्टतापूर्वक पेश आया, तो उसने देखा दूनिया का निचला ओठ आवेश से काप रहा था।

राज़ुमिहीन ने नशे की झोक मे सच ही कहा था कि रास्कोलनिकोव की मकान मालकिन, जो बडी विलक्षण स्त्री थी, इन दोनो स्त्रियो को देखते ही ईर्ष्या से जल मरेगी क्योकि तेतालीस बरस की होने पर भी रोद्या की माँ देखने मे छोटी दिखाई देती थी, और उसके चेहरे पर विगत सौन्दर्य के अवशेष अब भी बाकी थे। जिन स्त्रियो की सवेदन-शीलता और विचारो की पवित्रता बुढापे तक बनी रहती है उनका सौन्दर्य्य अक्षुण्ण रहता है। हम यहाँ यह भी कहेगे कि वृद्धावस्था मे भी सुन्दर रहने का यही एक मात्र तरीक़ा है। उसके बाल सफेद होने शुरू हो गये थे, माथे और आँखो के नीचे झुर्रियाँ पड गई थी, शोक और चिन्ता से गाल भीतर धँस गये थे, फिर भी उसका चेहरा सुन्दर था। वह दूसरी दूनिया थी। माँ बेटी की आयु मे बीस बरस का अतर था। मा भावुक थी, लेकिन छुई-मुई नही। वह ज़िन्दगी से समझौता

कर सकती थी, लेकिन एक हद तक। वह अपनी ईमानदारी और आस्था का उल्लघन नही कर सकती थी।

राजुमिहीन बीस मिनट के बाद ही लौट आया।

"मेरे पास अधिक समय नही है, इसलिए मै भीतर नही आऊँगा। रोद्या गहरी नीद सो रहा है। ईश्वर करे, वह दस घन्टे इसी तरह सोता रहे। मै नस्तास्या से कह आया हूँ कि मेरे लौटने तक उसके सिरहाने बैठी रहे। अब मै जोसीमोव को लेने जा रहा हूँ। वह आप को सब कुछ बता देगा। देख रहा हूँ, आप दोनो बहुत थक गई है," यह कहकर राजुमिहीन तेजी से चला गया।

"कितना होशियार और वफादार लडका है," रोद्या की मा गद्गद् कठ से बोली।

"आदमी शानदार मालूम होता है," दूनिया ने कमरे मे फिर चहल-कदमी शुरू कर दी।

एक घन्टे बाद बरामदे मे फिर किसी के पैरो की आहट सुनाई दी। दोनो औरतो को विश्वास हो गया था कि राजुमिहीन अपना वायदा जरूर पूरा करेगा। जोसीमोव पार्टी मे से उठकर राजुमिहीन के साथ मरीज को देखने चला गया था, लेकिन यहाँ आने मे उसे सकोच लगा था। दोनो स्त्रियो की श्रद्धा और आस्था को देखकर जोसीमोव के अहकार की अपूर्व तुष्टि हुई। उसने रोगी की स्थिति के बारे मे वृद्धा को पूरी तरह आश्वस्त कर दिया। लेकिन वह सिर्फ दस मिनट रुका। उसकी बातचीत मे कोई व्यक्तिगत लगाव न था। कमरे मे घुसते ही दूनिया के सौदर्य को देखकर वह चकित रह गया था, लेकिन बातचीत के बीच उसने दूनिया की ओर आख उठाकर भी नही देखा। वह लगातार माँ से ही बाते करता रहा। उसने बताया कि मरीज की हालत पूरी तरह सन्तोषजनक है। उसकी बीमारी का कारण उसकी आर्थिक दुर्दशा थी, लेकिन इसका एक मनोवैज्ञानिक

और नैतिक कारण भी था, "चिन्ता, घबराहट, मुसीबते, विचार आदि आदि ···।" उसने कनखियो से देखा कि दूनिया उसके हर शब्द को बडे ध्यान से सुन रही है। उसने और दूने उत्साह से माँ को समझाना शुरू किया। माँ ने घबडा कर पूछा, "पागलपन का डर तो नही है ?" जोसीमोव ने मुस्कराकर उत्तर दिया कि उसके शब्दो को अतिरजित करके उन तक पहुचाया गया है, लेकिन निश्चय ही उसके दिमाग मे कोई एक बात चक्कर काट रही है। जोसीमोव ने बताया कि वह आज-कल चिकित्सा शास्त्र के इस दिलचस्प विषय का अध्ययन कर रहा है, लेकिन यह नही भूल जाना चाहिए कि मरीज को कई दिनो मे तेज बुखार है। निश्चय ही परिवार के लोगो की उपस्थिति का अच्छा असर पडेगा और वह जल्द ही ठीक हो जायगा। "लेकिन मरीज के मन को और कोई धक्का नही लगना चाहिए।" यह कहकर उसने जाने की इजाजत माँगी। दोनो स्त्रियो ने उसे हार्दिक धन्यवाद दिया। दूनिया ने कृतज्ञता पूर्वक अपने दोनो हाथ मिलाने के लिए आगे बढा दिए। जोसीमोव मन ही मन खुश होता हुआ बाहर आ गया।

"जाकर फौरन सो जाओ। मै कल तडके ही आकर रोद्या की खबर दूगा," राजुमिहीन ने जोसीमोव के साथ बाहर निकलते हुए कहा।

"अवदोत्या रोमानोव्ना बडी नमकीन लडकी है," जोसीमोव ने चटखारा लेकर कहा।

"नमकीन ? क्या कहा, नमकीन ?" राजुमिहीन ने झपट कर जोसीमोव का गला पकड लिया। "खबरदार जो फिर ऐसा लफ्ज मुँह से निकाला, समझे ? तुम्हारी समझ मे आया ?" उसने जोसीमोव का कॉलर पकड कर उसे दीवार की ओर धकेल दिया।

"मुझे छोड दो, शैतान, शराबी कही के।" जोसीमोव ने अपनी गर्दन छुड़ाते हुए कहा। राजुमिहीन का तमतमाया चेहरा देखकर उसे

हँसी आ गयी। "सचमुच मै निरा गधा हूँ"लेकिन तुम भी गधे से कम नही हो," राजुमिहीन बोला।

"नही भाई, मै तुम्हारी तरह का गधा नही हूँ। मेरे मन मे कोई बुरी भावना नही है।"

दोनो चुपचाप चल पडे। रास्कोलनिकोव के घर के निकट पहुँच कर राजुमिहीन उत्तेजित स्वर मे कहने लगा, 'सुनो, वैसे तो तुम शानदार आदमी हो, लेकिन हो अव्वल दर्जे के बदमाश। तुम्हारी सब कमजोरियो को मै जानता हूँ। तुम मनहूस और सनकी आदमी हो। अपने मन पर काबू नही रख सकते, इसलिए आलसी और मोटे होते जा रहे हो। यह सब चीजे आदमी को पतन के गड्ढे मे गिरा देती हैं। मुझे ताज्जुब है कि तुम अभी तक डाक्टरी मे क्यो नही नालायक साबित हुए। तुम डाक्टर हो, फिर भी नर्म बिस्तर मे सोते हो। रात को मरीजो को देखने के लिये कैसे उठ जाते हो? तीन चार साल बाद तुम ऐसा नही करोगे "लेकिन भाड मे जाय यह सब, बात यह नही है। आज रात तुम यही सोओगे—मैने बडी मुश्किल से मकान मालकिन को राजी किया है। मै रसोईघर मे सोऊगा, तुम्हे मकान मालकिन से परिचय बढाने का अवसर मिल जायगा। तुम जो सोचते हो, बात वह नही है, बिल्कुल नही भाई!"

"लेकिन मैने तो कुछ नही सोचा।"

"भाई वैसे तो यह औरत बडी शर्मीली, शरीफ और हयादार है" लेकिन अन्दर से वह मोम की तरह पिघली जा रही है। ईश्वर के लिए तुम मुझे उसके चगुल से छुडाओ! इसके बदले मे तुम जो कहोगे मै करने को तैयार हूँ।"

जोसीमोव को जोर की हसी आ गई। वह बोला, "देखता हूँ, तुम्हे तीर लग चुका है लेकिन मै उसका क्या करूगा?"

"यह कोई मुश्किल काम नही। बस उसके पास बैठे रहना और

जो मर्जी आये बकवास करते रहना। तुम डाक्टर हो, उसे सभाले रखना। उसके यहाँ एक प्यानो भी है, तुम्हे पता है कि मै थोडा-बहुत बजा लेता हूँ। मैंने एक बार उसे यह गीत सुनाया—'मेरी आखो से गरम आँसू बहते है,' और बस इसी से सारी आफत शुरू हुई। फिर तुम तो बजाने मे उस्ताद हो, दूसरे रूबिन्स्टाइन हो, विश्वास रखो, तुम्हे पछताना नही पडेगा।"

"तुम उससे कोई वायदा तो नही कर बैठे, कही शादी वादी का ?"

"नही, नही, वह इस तरह की औरत नही है। चैबेरोव ने एक बार कोशिश की थी।"

"तो फिर छोडो उसका ख्याल।"

"इस तरह कैसे छूटेगा ?"

"क्यो ?"

"बस, कह जो दिया कि नही छोड सकता। सच बात यह है कि इस घर मे मेरे लिए एक आकर्षण भी है।"

"तो फिर तुमने इस पर क्यो डोरे डाले ?"

"मैंने इस पर डोले नही डाले अपनी बेवकूफी के कारण मै खुद ही इस जाल मे फस गया। लेकिन उसे तो कोई आदमी चाहिए जो उसके पास बैठा रहे। मै तुम्हे ठीक से समझा नही सकता · देखो, तुम तो गणित मे होशियार हो' · उसे गणित पढाना शुरू कर दो। अपनी कसम, मै मजाक नही कर रहा। उसे कोई फर्क नही पडेगा। वह पूरे एक साल तक तुम्हें देखकर ठडी आहे भरती रहेगी। एक बार मैं लगातार दो दिन तक उसे प्रशिया के हाउस आफ लार्डस के बारे मे बताता रहा। वह आहें भरती रही और पसीने से तर हो गयी। देखना, कही प्रेम की चर्चा मत कर बैठना। वह इतना शर्माती है कि उसे हिस्टीरिया का दौरा पडने लगता है। लेकिन एक बार उसे सिर्फ

यह जता देना काफी होगा कि तुम उसके बिना नही रह सकते। उसके लिए बस इतना ही काफी है। फिर देखना उसके घर मे तुम्हे कितना आराम मिलता है। फिर तुम जब चाहो, उसके यहाँ पढ-लिख सकते हो, आराम कर सकते हो, अगर चाहो तो उसे चूम भी सकते हो। लेकिन इसके लिए सावधानी बरतनी पडेगी।"

"लेकिन मेरा इस औरत से क्या सम्बन्ध है ?"

"आह, तुम अभी तक नही समझ पाये। तुम दोनो की आपस मे खूब पटेगी · कभी न कभी तो तुम्हे ऐसा करना ही पडेगा · अरे भाई, यहाँ गुदगुदा बिस्तर है, दुनिया के कोलाहल से दूर शान्त, एकान्त स्थान है। दुनिया की सबसे बडी नियामते—केक—मिठाइया, मछली के कबाब, शाम की चाय, गरम दुशाले और सोने के लिए गरम बिस्तरा। ऐसा मालूम होता है कि आदमी जिन्दगी और मौत दोनो के मजे एक साथ लूट रहा है। मै भी क्या खुराफात बक रहा हूँ। सोने का वक्त हो गया है। सुनो रात को मै कई बार उठता हूँ—मै ही जाकर मरीज को देख आऊगा। तुम चिन्ता न करना। अगर चाहो तो उसे एक बार देख आना। अगर वह तेज बुखार मे हो या प्रलाप कर रहा हो तो मुझे उठा देना। लेकिन ऐसी बात नही होगी ··।"

२

अगले दिन सुबह आठ बजे जब राजुमिहीन की नीद खुली तो उसके मन में एक विचित्र घबराहट और उलझन थी, उसे कल की सारी घटनाये याद आ गयी, और उसे एक अपूर्व अनुभूति हुई, लेकिन वह जानता था, कि उसका सुखद स्वप्न कभी पूरा नहीं हो सकेगा—बल्कि मन ही-मन उसे अपनी मूर्खता पर लज्जा आ गयी और वह और समस्याओ के बारे मे सोचने लगा।

उसे याद आया कि कल वह नशे में आकर कितनी नीचता कर बैठा था, उसने ईर्ष्यावश दूनिया के मगेतर को गालियाँ दी थी, जब कि वह उन दोनो के पारस्परिक सबन्ध के बारे मे कुछ नही जानता था। उसे ऐसा करने का क्या अधिकार था ? किसी ने उसकी राय पूछी थी ? भला कभी अवदोत्या रोमानोव्ना जैसी लडकी धन के लोभ में आकर किसी अयोग्य आदमी से शादी कर सकती है ? उस आदमी में कोई न कोई खूबी जरूर होगी। मकान ? उस बेचारे को क्या पता उस मकान की शोहरत कैसी है ? वह तो नये फ्लैट की सजावट में व्यस्त था · छि छि कैसी ओछी बात है ! फिर कल उसने इतनी ज्यादा क्यो पी थी ? आदमी जो नशे मे कहता है, उसमे सच्चाई रहती

है, और उसके ईर्ष्यालु और बेहूदे मन की सारी गन्दगी कल प्रकट हो गयी थी। भला उसे ऐसे स्वप्न देखने का क्या अधिकार है? उसकी हैसियत ही क्या है, एक शराबी बकबासी आदमी की? वह सोचने लगा, "मैंने यह क्यो कहा था कि मकान मालकिन, अवदोत्या रोमानोवना को देखते ही ईर्ष्या से जल मरेगी। आखिर इस खुराफात का क्या मतलब था?" उसने गुस्से मे आकर रसोईघर की अगीठी पर ज़ोर से हाथ मारा। अगीठी की एक ईंट उखड़ गयी और राज़ुमिहीन का हाथ जख्मी हो गया।

उसने ग्लानि भरे स्वर मे कहा, "यह बुराइयाँ तो कभी नही दूर होगी, इसलिए इनकी चिन्ता करना बेकार है। मुझे चुपचाप अपना कर्तव्य करना चाहिए · माफी माँगने या कुछ कहने की कोई जरूरत नही ·· सारा खेल खत्म हो चुका है।"

लेकिन उसने अपने कपडो को गौर से देखा। उसके पास सिर्फ यही सूट था, अगर दूसरा होता तो शायद वह इसे न पहनता। उसे दूसरो के सामने फूहड बन कर जाने का कोई अधिकार नही था, खास तौर पर जबकि वह उन लोगो से मिलने जा रहा था। उसने कपडो पर अच्छी तरह ब्रुश फेरा। उसकी बनयायन और कमीज हमेशा साफ रहती थी।

इसके बाद उसने नस्तास्या से साबुन लेकर खूब रगड़-रगड कर अपनी गर्दन, बाल, मुँह और हाथो को धोया। अब सवाल उठा कि हजामत की जाय या नही। (मकान मालकिन के पास पति का शेव का सामान रखा था।) लेकिन राज़ुमिहीन ने सोचा, "रहने दो। कही वे लोग यह न सोच बैठे कि मैने उन्हे दिखाने के लिए ही · वे जरूर ऐसा सोचेगी। नही, ऐसा नही होने दूगा।"

"मै हूँ भी तो कितना बेहूदा और फूहड आदमी। मेरा आचरण शराबियो जैसा है···मान लिया कि मुझमे थोडी-सी शराफत भी है··

लेकिन इसमे गर्व की कौन-सी बात है ? हर आदमी को शरीफ तो होना ही चाहिए'' (उसे याद आया)'' 'मैने भी बहुत सी बुरी बाते की हैं, जिन्हे बेईमानी नही कहा जा सकता, लेकिन अवदोत्या रोमानोव्ना से मेरा क्या मुकाबला है ? इसलिए जैसा है रहने दो, मै इसी शक्ल मे उसके सामने जाऊँगा, बल्कि इससे भी ज्यादा गन्दा और फूहड बनकर जाऊँगा'' 'मुझे कोई परवाह नही है ।"

वह इसी उधेडबुन मे था कि जोसीमोव कमरे मे दाखिल हुआ ।

वह जल्दी ही मरीज को देखकर घर जाना चाहता था । राजुमिहीन ने उसे बताया कि मरीज गहरी नीद मे सो रहा है । जोसीमोव ने मरीज़ को न जगाने का आदेश देते हुये कहा कि वह ग्यारह बजे फिर आयगा ।

"मनमाने मरीजो का इलाज भला डाक्टर कैसे करे ? तुम्हे कुछ पता है, वे लोग मरीज से मिलने आयेगी या यह वहाँ जायगा ?"

राजुमिहीन फौरन जोसीमोव का आशय ताड गया । "मेरा ख्याल है वे ही यहाँ आयेगी । यहाँ घरेलू मामलो की चर्चा होगी, इसलिए मेरा रहना ठीक नही । तुम डाक्टर हो तुम्हारी बात दूसरी है ।"

"लेकिन मै कोई पादरी नही हूँ जो लोगो के घरेलू झगडो को सुनता रहूँ । मुझे और भी बडे काम है ।"

राजुमिहीन ने चिन्तित स्वर मे कहा, "कल रास्ते मे मैंने रोद्या से बहुत-सी फिजूल बाते की थी । मैने उसे यह भी बताया था कि तुम्हे डर है कि वह पागल हो जायगा ।"

"तुमने दोनो स्त्रियो को भी यह बात बतायी थी ।"

"यह मेरी बेवकूफी थी । तुम ख़ुशी से इसके लिए मेरी पिटाई कर सकते हो । क्या तुम्हे अब भी डर है कि रोद्या पागल हो जायगा ?"

"मुझे क्या पता ? तुम्ही तो कह रहे थे कि वह विक्षिप्त हो रहा है'' 'तुमने कल पेन्टर की कहानी सुना कर आग में घी डाल दिया । यह

जानते हुए कि उसके दिमाग मे वही बात चक्कर काट रही थी, तुमने उसे यह कहानी सुनायी ही क्यो थी ? अगर मुझे यह मालूम होता कि पुलिस स्टेशन मे उसके ऊपर क्या बीती थी और किसी बेहूदे आदमी ने उस पर सन्देह किया था·· तो मैं ऐसी बात न होने देता। वहमी आदमी तिल का ताड बना लेते है···उन्हे अपनी कल्पना मे ठोस हकीकत नजर आने लगती है। जहाँ तक मुझे याद है जेमेतोफ की बातें सुनकर, मेरे मन के मन्देह दूर हो गये थे। मैने एक ऐसा केस भी देखा है जब एक अधेड आदमी ने एक आठ बरस के बच्चे का गला सिर्फ इसीलिए काट दिया क्योकि उसे बच्चे के मजाक बर्दाश्त नही होते थे। और इस केस मे इसकी फटेहाली, पुलिस अफसर की धृष्टता, बुखार और सन्देह ने मिलकर इसका दिमाग बिगाड दिया है। जो आदमी पहले से ही विक्षिप्त हो और जिसका स्वाभिमान छुई-मुई हो रहा हो, वह भला बीमार क्यो नही पडेगा · हुँ छोडो, इस किस्से को। और सुनो जेमेतोफ अच्छा आदमी है, लेकिन उसे यह किस्सा नही सुनाना चाहिए था। वह बडा बातूनी है।"

"लेकिन उसने तुम्हारे और मेरे सिवाय किसको यह किस्सा सुनाया है ?"

"पौरफेरी को।"

"तो क्या हुआ ?"

"अच्छा यह बताओ कि माँ-बेटी पर तुम्हारा कोई असर है ? उन्हे समझा देना कि आज वे मरीज से कोई ऐसी बात न करे जिससे वह उत्तेजित हो जाय।"

"फिक्र न करो, वे खुद समझदार है।"

"वह लूजिन के खिलाफ न जाने क्यो है। लूजिन अमीर आदमी है और लडकी भी उसे पसन्द करती है··और इन लोगो के पास तो फूटी कौडी भी नही है, क्यो ?"

"तुम्हे इससे मतलब ? उनके पास फूटी कौडी है या नही, यह तुम खुद ही उनसे पूछ लेना, तुम्हे पता चल जायगा।"

"धत्, तुम भी कई बार गधेपन की बाते करने लगते हो। मालूम होता है कल का नशा अभी उतरा नही है ' गुडबाई। अपनी प्रास्कोव्या पाव्लोव्ना को मेरी ओर से धन्यवाद दे देना। वह अपना कमरा भीतर से बद करके सो गई थी। मेरे नमस्कार तक का उसने कोई उत्तर नही दिया। सुबह सात बजे उसने अपने कमरे मे ही मगाकर चाय पी। उससे मुलाकात तक का मौका नही मिला।"

ठीक नौ बजे राज़ुमिहीन बाकालेव के घर पहुँचा। दोनो स्त्रियाँ बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वे तडके ही उठकर तैयार हो गई थी। राज़ुमिहीन नमस्कार करके एक ओर खडा हो गया। उसका ख्याल था कि दूनिया इस समय उसे अकेली खडी मिलेगी। लेकिन बुढिया माँ ने आगे बढकर उसके दोनो हाथ चूम लिए। राज़ुमिहीन ने भीरू दृष्टि से दूनिया की ओर देखा, लेकिन उसकी आँखो मे घृणा और व्यंग्य की जगह कृतज्ञता और आदर का भाव झलक रहा था, जिसे देखकर राज़ुमिहीन की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। दूनिया उसे अगर गालियाँ देती तो उसे इतना ताज्जुब न होता। उसने फौरन मरीज की तबियत के बारे मे बाते करनी शुरू कर दी। यह जानकर कि रोद्या की तबियत ठीक है और वह आराम से सो रहा है, उसकी माँ बडी प्रसन्न हुई, क्योकि वह भी राज़ुमिहीन से 'एक बहुत बहुत जरूरी बात' करना चाहती थी। दोनो स्त्रियो ने उसके इन्तजार में अभी तक नाश्ता नही किया था। दूनिया के घटी बजाने पर गन्दे कपडे पहने एक वेटर आया। दूनिया ने उसे चाय लाने का आदेश दिया। चाय इतनी रद्दी थी कि दोनो औरतो को शर्मिन्दा होना पडा। राज़ुमिहीन ने उस घर के इन्तजाम की खूब निन्दा की, लेकिन लूज़िन का ख्याल आते ही वह सकपका-सा गया। बूढी माँ के प्रश्नो की बौछार से उसकी

झेप कुछ कम हुई ।

वह पौन घटे तक उन्हे रास्कोलनिकोव की परिस्थितियो और बीमारी के बारे में बताता रहा, कई बाते, मसलन पुलिस स्टेशन मे क्या हुआ था, उसने जानबूझ कर नही बतायी । दोनो स्त्रियाँ उत्सुकता-पूर्वक उसकी बाते सुन रही थी । लेकिन उनकी जिज्ञासा अभी शान्त नही हुई थी ।

वृद्धा ने पूछा, "जरा यह बताओ कि · माफ करना, मुझे अभी तक तुम्हारा नाम नही मालूम हुआ ।"

"दिमित्री प्रोकोफिच" राजुमिहीन ने उत्तर दिया ।

"अच्छा तो दिमित्री प्रोकोफिच, मै जानना चाहती हूँ कि रोद्या क्या सोचता है ? मेरा मतलब है, उसकी पसन्द-नापसद के बारे में तुम मुझे कुछ बता सकोगे ? क्या हर वक्त वह ऐसा चिडचिडा बना रहता है ? अपने भविष्य के बारे मे वह क्या सोचता है ? आजकल वह किसके प्रभाव मे है । मै जानना चहती हूँ ··"

"मा ये इतनी सारी बातो का जवाब फौरन कैसे दे सकते है ?" दूनिया ने कहा ।

"हे ईश्वर ! मैं नही जानती थी कि रोद्या इस हालत मे होगा ।"

"आप ठीक कहती है । मेरी मां नही है लेकिन मेरे चचा हर साल जब यहाँ आते है तो मुझे पहचान तक नही सकते। फिर आपने तो रोद्या को तीन साल के बाद देखा है । रोद्या से सिर्फ डेढ साल पहले मेरा परिचय हुआ था । वह निराश, स्वाभिमानी और स्पष्टवादी व्यक्ति है, पिछले कुछ दिनो से वह शक्की मिजाज और रहस्यमय-सा हो गया है । वैसे उसका दिल नेक है, लेकिन वह सबके सामने अपने मन की बात नही कहता । कई बार वह उदासीन और निष्ठुर हो जाता है, लगता है उसके चरित्र के दो पहलू है । कई बार तो वह हम लोगो से बात तक नही करता ! कहता है कि उसे बहुत काम है, लेकिन वह निठल्ला

बिस्तर मे लेटा रहता है। उसका दिमाग बडा तेज है लेकिन वह हसी मजाक नही करता। लगता है, इन छोटी बातो के लिये उसके पास समय ही नही। वह कभी किसी की बात गौर से नही सुनता, न ही उसे किसी दूसरे मे दिलचस्पी है। वह अपने को औरो से अधिक ऊँचा समझता है, शायद यह बात ठीक भी है। इस से अधिक मै आपको और क्या बताऊँ ? मेरा ख्याल है, आपका यहाँ आना उसके लिये कल्याण-कारी सिद्ध होगा।"

"ईश्वर करे ऐसा ही हो!" वृद्धा मा ने अपने रोद्या का हाल सुन कर चिन्तित स्वर मे कहा।

अब राजुमिहीन ने साहस बटोर कर दूनिया के चेहरे पर नजर डाली। दूनिया पहले मेज पर बैठी ध्यान से उसकी बाते सुन रही थी, फिर वह दोनो बाहे सीने पर रख कर कमरे मे चहल-कदमी करने लगी, बीच बीच मे वह एकाध सवाल पूछ लेती थी। अपने भाई की तरह वह भी किसी दूसरे की बात गौर से नही सुनती थी। उसने गहरे रग की महीन पोशाक पहन रखी थी, और उसके गले मे सफेद स्कार्फ बँधा हुआ था। उनके सामान को देखते ही राजुमिहीन को उनकी गरीबी का आभास मिला गया। अगर दूनिया किसी रानीमहारानी की पोशाक मे उसके सामने आती तो वह उससे न डरता, लेकिन उसे गरीबी की हालत मे देखकर राजुमिहीन के दिल मे एक अज्ञात भय समा गया और उसे अपने हर शब्द और इशारे से डर लगने लगा।

"मुझे खुशी है कि आपने निष्पक्ष भाव से मेरे भाई के बारे मे बडी दिलचस्प बाते बताई। मेरा ख्याल था कि आप भी रोद्या के अधभक्त होगे। आपने ठीक कहा है कि उसे किसी स्त्री की देखभाल मे रहने की जरूरत है।" दूनिया ने मुस्करा कर कहा।

"मैने यह नही कहा था, लेकिन आपकी बात सही है···लेकिन···"

"लेकिन क्या!"

"वह किसी स्त्री से प्रेम नही करता, और शायद कभी करेगा भी नही।"

"आपका ख्याल है कि वह प्रेम करने मे असमर्थ है ?"

"अवदोत्या रोमानोव्ना, आप हू-ब-हू अपने भाई जैसी है," राजुमिहीन के मुँह से यकायक निकल गया। अगले क्षण उसे रोद्या के बारे मे कही बाते याद आ गई और उसका चेहरा झेंप से लाल सुर्ख हो उठा। दूनियाँ अपनी हसी न रोक सकी।

वृद्धा माँ ने चिढकर कहा, "रोद्या के बारे मे तुम दोनो गलत सोचते हो। मै इस समय प्योत्र पैत्रोविच के खत और अपनी गलत-फहमी की बात नही कर रही, लेकिन दिमित्री प्रोकोफिच, तुम नही जानते रोद्या कितना मनमाना और जिद्दी है। जब वह पद्रह बरस का था, तब भी मुझे पता नही चलता था कि वह किस दिन क्या कर बैठेगा। अब भी मेरा विश्वास है कि वह कोई न कोई अनहोनी बात जरूर कर सकता है। जानते हो, डेढ बरस पहले उसने कहा था कि वह मकान मालकिन की लडकी से—क्या नाम था उस लडकी का ?—शादी करना चाहता है—यह खबर सुनकर मै अधमरी हो गयी थी।"

"क्या आपने भी यह किस्सा सुना था ?" दूनिया ने पूछा।

"तुम्हारा ख्याल है, कि रोद्या पर भला मेरे रोने-धोने का, मिन्नतो का, बीमारी और गरीबी का, कोई असर पडता ? बिल्कुल नही, मैं मर जाती तब भी वह अपनी मनमानी करता। लेकिन उसके दिल मे हमारे लिये प्रेम न हो, ऐसी बात नही है।" वृद्धा मा ने भावुक स्वर मे कहा।

राजुमिहीन ने उत्तर दिया, "रोद्या ने कभी यह किस्सा मुझे नही बताया, लेकिन उसकी मकान मालकिन से मुझे इस बारे मे कुछ पता चला था।"

"उसने क्या कहा था ?" दोनो औरतो ने एक साथ प्रश्न किया।

"कुछ खास नही। मुझे मालूम हुआ कि लडकी की मा इस शादी के हक मे नही थी—सुना है कि लडकी सुन्दर नही बल्कि बहुत बदसूरत, और बीमार थी।·· लेकिन उसमे कोई न कोई गुण तो जरूर होगा · वरना···निश्चय ही रोदया को धन का लालच नही था,···ऐसे सबधो के बारे मे राय देना जरा मुश्किल होता है।"

"मुझे विश्वास है कि वह अच्छी लडकी थी।" दूनिया ने कहा।

"ईश्वर मेरा अपराध क्षमा करे, मुझे उस लडकी की मौत से बडी खुशी हुई। दोनो मे से कौन ज्यादा एक दूसरे को दुख देता, यह मै नही जानती।" वृद्धा ने कहा। इसके बाद वह कल लूजिन के साथ हुए झगडे के बारे मे पूछताछ करने लगी। बीच बीच मे वह दूनिया की ओर भी देखती जाती थी, जिससे दूनिया चिढ रही थी। रोद्या की माँ को यह झगडा कतई पसद न आया था। राजुमिहीन ने झगडे का सारा ब्योरा सुनाया, और कहा कि रास्कोलनिकोव ने जानबूझ कर लूजिन का अपमान करके भारी गलती की है। उसने बीमारी का कारण बता कर रास्कोलनिकोव का पक्ष लेने की कोशिश नही की।

"लेकिन बीमारी से पहले भी वह लूजिन से खफा था," राजुमिहीन ने कहा।

"मेरा भी यही ख्याल है।" वृद्धा ने निराश स्वर में उत्तर दिया। लेकिन दोनो स्त्रियाँ लूजिन के प्रति राजुमिहीन का आदर भाव देखकर चकित रह गईं।

"प्योत्र पेत्रोविच के बारे मे तुम्हारी क्या राय है?" वृद्धा पूछे बगैर न रह सकी।

"आपकी बेटी के भावी पति के बारे मे मै बुरी राय कैसे रख सकता हूँ? मै नम्रता के कारण ऐसा नही कह रहा··बल्कि इसलिये·· कि अवदोत्या रोमानोव्ना ने अपनी मर्जी से लूजिन को अपना जीवन-साथी चुना है। रात मै नशे मे था इसलिये मेरे मुँह से कुछ अपशब्द

निकल गये थे · मेरा दिमाग खराब हो गया था · मै बहुत शर्मिन्दा हूँ।"

राजुमिहीन का चेहरा फिर सुर्ख हो गया। दूनिया चुप रही। जब से लूजिन की चर्चा शुरू हुई थी, उसने एक शब्द नही कहा था।

बेटी की चुप्पी से वृद्धा ने अपने को असहाय अनुभव किया। लेकिन कुछ देर बाद उसने कहा, "मै दिमित्री प्रोकोफिच से कुछ नही छिपाऊँगी क्यो दूनिया ?"

"हाँ, हाँ, मा जो कहना चाहती हो कहो," दूनिया ने समर्थन किया।

"बात यह है कि आज सुबह हमे प्योत्र पैत्रोविच का एक खत मिला है। हमने उसे अपने आने की खबर भेजी थी। उसने वादा किया था कि वह खुद स्टेशन पर हमे लेने आयेगा, लेकिन खुद आने की बजाय उसने अपना एक नौकर भेजा था, जो हमे यहाँ छोड गया था। उसने नौकर के हाथ कहला भेजा था कि वह आज सुबह हमसे मिलने आयेगा, लेकिन आज सुबह उसने यह खत भेजा है। तुम खुद यह खत पढ कर देख लो···मैं एक बात से बडी परेशान हूँ·· तुम्हे खुद ही वह बात मालूम हो जायेगी ··दिमित्री प्रोकोफिच खत पढ कर मुझे अपनी सच्ची राय देना। तुमसे अधिक रोद्या को कोई नही समझ सकता। सच पूछो तो दूनिया ने तो फौरन अपना फैसला कर लिया था, लेकिन मै अभी तक दुविधा मे हूँ—मै तुम्हारे आने की राह देख रही थी।"

राजुमिहीन ने लिफाफा खोला जिसपर कल की तारीख पडी थी

"प्रिय श्रीमती पुलकोरिया अलैक्जैन्ड्रोव्ना,मै आपको सादर सूचित करना चाहता हूँ कि कल अप्रत्याशित कारणो से मै स्टेशन पर नही आ सका। इसलिए मैने अपने एक विश्वस्त नौकर को भेज दिया था। मुझे अफसोस है कि मै कल सुबह भी आपको मिलने नही आ सकूँगा, क्योकि मुझे सेनेट मे कुछ काम है। इसके अलावा मै आपके पारिवारिक मामलो

मे भी दखल नही देना चाहता। लेकिन कल शाम को ठीक आठ बजे आपके यहाँ हाजिर होऊँगा। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि रोदियोन रोमनोविच इस मौके पर वहाँ मौजूद न हो, क्योकि कल जब मै उसके यहाँ गया था तो उसने मेरा सख्त अपमान किया था। इस बारे मे आपको भी जवाब देना होगा और अपनी स्थिति साफ करनी होगी। मै आपको पहले से ही सावधान कर देना चाहता हूँ कि मेरी प्रार्थना के बावजूद भी अगर रोदियोन रोमनोविच वहाँ आया तो मैं वहाँ एक क्षण भी नही ठहरूँगा। इसकी जिम्मेदारी आप पर होगी। मुझे मालूम हुआ है कि वह मेरे लौटने के दो घन्टे बाद ही बिल्कुल ठीक हो गया था। कल मैने अपनी आँखो से उसे एक शराबी के घर देखा था, जो गाडी के नीचे दब कर मर गया था। उसने शराबी की जवान लडकी को, जो बडी बदनाम है, दफनाने के खर्च के बहाने पच्चीस रूबल भी दिए थे। आपकी आर्थिक स्थिति देखते हुए, यह आश्चर्य की बात है। अपनी बेटी अवदोत्या रोमानोव्ना को विशेष रूप से मेरा सादर नमस्कार कहे।

—विनीत, आपका दास

पी० लूजिन

बूढी माँ रुआँसी होकर बोली, "दिमित्री प्रोकोफिच, बताओ मै क्या करूँ? मैं रोद्या को आने से कैसे मना कर सकती हूँ। कल रोद्या ने मुझे कसम दिलायी थी कि मै प्योत्र पैत्रोविच को साफ ना कर दूँ। उधर प्योत्र पैत्रोविच कहता है कि रोद्या यहाँ न आये। अगर रोद्या को मालूम हो गया तो वह जान बूझ कर यहाँ आयेगा ··फिर क्या होगा?"

"अवदोत्या रोमानोव्ना जो कहे, वैसा ही कीजिए।"

"हाय, मै क्या करूँ। वह तो कहती है···ईश्वर जाने वह क्या-क्या कहती है · वह कहती है कि रोद्या को आठ बजे यहाँ जरूर मौजूद रहना चाहिए ताकि दोनो आमने-सामने बैठकर सुलह सफाई कर सके···

मै तो चाहती थी कि तुम्हारी मदद से किसी तरह रोद्या को यहा आने से रोक सकूँ ··वह इतना चिटचिडा है ··मुझे कल वाला शराबी और उसकी बेटी का किस्सा कुछ समझ मे नही आया। भला उसने पच्चीस रूबल उस लडकी को कैसे दे दिए, जो ··जो · "

"जिनके लिए तुम्हे इतने कष्ट झेलने पडे," दूनिया ने बात पूरी की।

"कल रोद्या अपने आपे मे नही था। आप नही जानती, एक रेस्तरा मे जाकर उसने क्या क्या हरकते की · हूँ, कल उसने किसी की मौत का और किसी लडकी का जिक्र तो किया था, लेकिन मेरी समझ मे कुछ नही आया।"

"मा, अच्छा हो कि हम सब वही चले। मुझे विश्वास है कि हम इस गुत्थी को सुलझाने का कोई न कोई रास्ता निकाल सकेगे। हे ईश्वर दस बज चुके है।" उसने अपने गले की चेन मे लटकी सुनहरी घडी में समय देखते हुए कहा। दूनिया के पुराने और मामूली कपडो के साथ इस घडी का मेल नही बैठ रहा था। राजुमिहीन सोचने लगा, "यह घडी लूजिन ने उपहार मे दी होगी।"

"चलो दूनिया जल्दी चले। रोद्या सोच रहा होगा कि कल की बात से हम उससे नाराज हो गये है।" पुलकेरिया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ने सर पर हैट पहन लिया और दुशाला ओढ लिया। राजुमिहीन ने देखा कि दूनिया के दस्तानो मे कई छेद थे, लेकिन गरीबी और फटेहाली से इन दोनो स्त्रियो मे एक विशेष शालीनता आ गई थी। उन्हे पुराने कपडे भी सलीके से पहनने का ढग आता था। दूनिया को देखते ही उसका मन आदर से भर गया और वह मन ही मन कहने लगा, "अगर किसी रानी को जेलखाने मे कैद कर दिया जाये, तो फटे कपडो में भी वह उतनी ही सुन्दर लगेगी जितनी कि शाही दावतो और उत्सवो मे।"

वृद्धा माँ ने कहा, "हे ईश्वर! क्या मैने कभी सोचा था कि मुझे

अपने बेटे से मिलने में डर लगेगा। मेरा प्यारा रोद्या। दिमित्री प्रोको-फिच, मुझे डर लग रहा है।"

"मा, डरो नही, इन पर भरोसा रखो।" दूनिया ने माँ को चूमते हुए कहा।

"बेटी, मुझे दिमित्री प्रोकोफिच पर पूरा भरोसा है, लेकिन मै रात-भर सो नही सकी।"

तीनो नीचे सडक पर आ गए।

"जानती हो दूनिया, आज सुबह जब कुछ देर के लिए मेरी आँख लगी, तो मैने मार्फा पैत्रोव्ना को देखा था। •• उसने सफेद कपडे पहन रखे थे ••उसने मेरा हाथ पकड कर गुस्से से मेरी ओर देखा, लगता था जैसे वह मुझे दोषी ठहरा रही थी• क्या यह अच्छा शकुन है। आह ! दिमित्री प्रोकोफिच, तुम्हे नही मालूम कि मार्फा पैत्रोव्ना मर गई ?"

"नही, यह मार्फा पैत्रोव्ना कौन है ?"

"अचानक ही उसकी मौत हो गई, जरा सोचो तो सही••"

"माँ ये सब बाते बाद में करना, पहले इन्हे मार्फा पैत्रोव्ना के बारे में बताओ।"

"अरे, तुम नही जानते ? मेरा ख्याल था कि तुम्हे हमारी सारी बाते मालूम है। माफ करना, पिछले कई दिनो से मेरे दिमाग मे अजब सी बाते आ रही है। तुम मुझे देवदूत से मालूम होते हो•• मै तुम्हे अपना समझती हूँ। बुरा मत मानना, हाय ! तुम्हारे दाँये हाथ मे चोट कैसे लग गई ?"

"यह तो मामूली सी खराश है।" राजुमिहीन ने गद्गद् स्वर मे उत्तर दिया।

"कई बार जब मै भावुकता की बाते करने लगती हूँ, तो दूनिया मुझे डाँटती है ••लेकिन रोद्या जहाँ रहता है, वह अलमारी है या कमरा है ? क्या उसकी मकान-मालकिन इस जगह को कमरा समझती है ?

तुम्हारा क्या ख्याल है, मेरी···कमजोरियो को देखकर रोद्या चिढेगा तो नही ? दिमित्री प्रोकोफिच तुम मुझे बताओ, मै उससे किस तरह पेश आऊँ ? मेरा दिमाग तो काम नही कर रहा ।"

"जिस बात पर वह नाक-भौ सिकोडे, उस बात को वही ख़त्म कर दीजिये, और उसकी सेहत के बारे मे पूछताछ न करे, क्योकि इस बात से वह चिढता है ।"

"आह दिमित्री प्रोकोफिच—माँ होना कितना कठिन काम है। लो सीढियाँ आ गई ··· कैसा भयकर जीना है ।"

"माँ, तुम अपने को दुखी मत करो । तुम्हारा चेहरा पीला पड गया है । रोद्या तो तुम्हे देखकर खुश होगा, तुम बेकार अपने मन को कष्ट दे रही हो ।"

"ठहरिये, मै देख आऊँ, वह जागा है या नही ?"

जब दोनो स्त्रिया मकान-मालकिन के कमरे के आगे से गुजरी, तो उन्होने देखा कि दरवाजे मे से दो काली आँखे उन्हे गौर से घूर रही थी । आँखे चार होते ही उसने जोर से दरवाजा बन्द कर लिया ।

३

"अब ये बिल्कुल ठीक है।" जोसीमोव ने प्रफुल्ल स्वर में कहा।

जोसीमोव दस मिनिट पहले ही वहा मौजूद था। रास्कोलनिकोव ने आज साफ-सुथरे कपडे पहने थे और बालो को बडी मेहनत से सवारा था। कमरे मे अब बडी भीड हो गई थी, लेकिन नस्तास्या भी उनकी बाते सुनने के लिये उनके पीछे-पीछे कमरे मे घुस आई थी।

रास्कोलनिकोव की तबियत आज सचमुच सुधर गई थी, लेकिन उसके चेहरे का पीलापन और कमजोरी अभी तक बाकी थी। लगता था जैसे उसे किसी भयकर यातना मे से गुजरना पडा है, या वह बुरी तरह जख्मी हुआ है। उसके ओठ भिचे हुए थे, और आँखो मे अभी तक बुखार की लाली थी —वह बेचैन सा मालूम होता था।

वह बातचीत मे बहुत कम हिस्सा ले रहा था।

अगर उसकी बाह मे या उगलियो मे पट्टी बाध दी जाती तो देखने वालो को निश्चय हो जाता कि या तो उसे भयकर फोडा निकला है या उसकी बाँह टूट गई है। क्षण भर के लिए अपनी माँ और बहन को देखकर उसके चेहरे पर रौनक आ गई, लेकिन फौरन ही उसका चेहरा पीडा से आच्छादित हो गया। जोसीमोव ने जो सब नये डाक्टरो की

तरह मरीज के हर चेहरे के हर भाव को गौर से देख रहा था, रास्को-लनिकोव के चेहरे की कटुता को भॉप लिया। उसने देखा कि रास्कोलनिकोव को अपनी माँ और बहन की बाते सुनकर खीज-सी हो रही है ।

उसके सयम को देखकर जोसीमोव दग रह गया, क्योकि कल तो वह एक भी शब्द नही बर्दाश्त कर पा रहा था और आपे से बाहर हो रहा था ।

उसने अपनी माँ और बहन का माथा चूमा और कहा, "देख लिया, अब मै अच्छा हो गया हूँ, कल की बात दूसरी थी ।" वृद्धा मा का दिल खुशी से खिल गया ।

जोसीमोव दोनो स्त्रियो के आगमन से प्रसन्न हुआ था। उसने कहा, "सचमुच आज इन्हे देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। अगर तीन चार दिन तक इनकी तबियत सुधरती रही, तो ये बिल्कुल पहले जैसे स्वस्थ हो जायेंगे । यह बीमारी काफी दिनो से इनके भीतर थी·· क्यो भई ? इसमें तुम्हारा भी कोई दोष होगा ही, साफ-साफ कह दो ।"

"सभव है कि यह बात ठीक हो ।" रास्कोलनिकोव ने उदासीन भाव से उत्तर दिया ।

जोसीमोव ने उत्साहपूर्वक समझाया, "मै तुम्हे बताना चाहता हूँ कि अब ठीक होना न होना तुम्हारे बस मे है। तुम्हे उन बातो से बचना चाहिये जिनसे तुम्हे उत्तेजना होती है। ये कारण क्या है, मै नही जानता, लेकिन तुम्हे जरूर मालूम होगे । तुम समझदार आदमी हो और अपनी मानसिक दशा को जरूर समझते होगे । मेरा ख्याल है कि युनिवर्सिटी छोडने के बाद से ही तुम्हारी यह हालत शुरू हुई। तुम्हे कभी खाली नही रहना चाहिये, अपने सामने कोई निश्चित उद्देश्य रखकर काम करना तुम्हारे लिये लाभकारी सिद्ध होगा ।"

"हाँ-हाँ, आप बिल्कुल ठीक कहते है ·· मै फौरन युनिवर्सिटी में भरती हो जाऊँगा, फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा ···"

जोसीमोव ने तो दोनो स्त्रियो को प्रभावित करने के लिये यह विद्वतापूर्ण सलाह दी थी—लेकिन मरीज के चेहरे पर व्यग्य के भाव देखकर वह दग रह गया। वृद्धा मा, जोसीमोव को कल रात की सौजन्यता के लिये धन्यवाद देने लगी।

रास्कोलनिकोव चौककर बोला, "क्या ये तुमको कल रात मिले थे ? इसका मतलब, तुम दोनो सफर की थकान के बावजूद भी रात भर जागती रही ?"

"रोद्या हम सिर्फ दो बजे तक जागते रहे, घर मे भी तो हम दो बजे से पहले कभी नही सोते।"

रास्कोलनिकोव ने चिढकर आँखे नीची करली और कहा, "मुझे भी समझ में नही आता कि मैं डाक्टर को कैसे धन्यवाद दूँ। फीस की बात एक ओर रहने दें ··· मुझे समझ नही आता कि आप मुझ पर इतना ध्यान क्यो दे रहे है ··· सच पूछिये तो इस मेहरबानी से मेरे दिल पर एक बोझ सा बैठ गया है।"

जोसीमोव ने हँसने की कोशिश की, "चिढो नही, मानलो कि तुम मेरे पहले मरीज़ हो। हम लोग अपने पहले मरीज को अपने बच्चे की तरह चाहते है। कुछ डाक्टरो को तो मरीज़ से प्रेम भी हो जाता है। फिर मेरे पास मरीजो की भरमार तो नही है।"

"पता नही यह मुझ पर क्यो मेहरबान है। मुझ से इसे सिवा अपमान और मुसीबत के कुछ नही मिला।" रास्कोलनिकोव ने राजुमिहीन की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"क्या खुराफात बक रहे हो ? कही आज भावुकता की 'मूड' मे तो नही हो ?" राजुमिहीन ने डाँटा।

अगर राजुमिहीन गौर से मरीज़ के चेहरे की ओर देखता तो उसे

मालूम हो जाना कि वहाँ भावुकता का नामोनिशान तक न था, बल्कि स्थिति इससे ठीक विपरीत थी। दूनिया ने फौरन यह बात भाप ली। वह बेचैनी से अपने भाई के चेहरे की ओर देखने लगी।

"और माँ, तुम्हारे बारे मे कुछ कहने का साहस मुझ मे नही है। कल यहाँ मेरी इन्तिजार करते समय तुम्हारा मन कितना दुखी हो रहा होगा, इसका कुछ आभास मुझे मिलने लगा है।" रास्कोलनिकोव जैसे कोई रटा हुआ पाठ दुहरा रहा था।

यह कहकर वह मुस्कराया और उसने बिना कुछ कहे बहन की तरफ अपना हाथ बढा दिया। दूनिया ने कृतज्ञ भाव से उसे दबाया। कल झगडे के बाद पहली बार रास्कोलनिकोव ने बहन के प्रति स्नेह दिखाया था। माँ इस मौन सधि को देखकर गद्‌गद् स्वर मे बोली, "इसीलिए तो रोद्‌या मुझे इतना प्यारा लगता है।"

राजुमिहीन बुदबुदाया, "हाँ, यह ऐसा ही है।"

माँ मन ही मन कह रही थी, "रोद्‌या कितना सहृदय है। कितनी जल्दी और भोलेपन से उसने अपनी बहन से सुलह कर ली। बस अपना हाथ आगे बढाया, और उसकी ओर देखने लगा··उसकी आँखे कितनी शानदार है। उसका चेहरा कितना सुन्दर है दूनिया से भी अच्छी है ··· हे भगवान वह कितना रद्दी सूट पहने है। ··· अफँसी इवानोविच की दुकान का चपरासी वास्या, हमारे रोद्‌या से अच्छे कपडे पहनता है। मन मे आता है इसे गले लगाकर रोऊँ, लेकिन मुझे डर लगता है ··· रोद्‌या का स्वभाव कितना विचित्र है। इस समय वह स्नेहभरी बाते कर रहा है लेकिन मुझे डर है ··· भला मुझे किस बात का डर है··?"

वृद्धा ने फौरन कहा, रोद्‌या तुम नही जानते, कल दूनिया को और मुझे कितना दुख हुआ था, हमे खुशी है कि आज सारा मामला साफ हो गया है। जरा सोचो तो सही कल ट्रेन से उतरते ही हम तुम्हें गले

लगाने के लिए यहाँ भागी आई । लो वह औरत फिर आ गई । गुड मौर्निंग नस्तास्या,··· नस्तास्या ने हमे बताया था कि तुम्हे तेज बुखार था और तुम कुछ देर पहले कही भाग गये थे । वे लोग सडको पर तुम्हे ढूँढ रहे थे । तुम नही जानते उस समय हमे कैसा लगा था । मुझे फौरन तुम्हारे पिता के मित्र लेफ्टिनेन्ट पोटेन्चिकोव के जीवन के दुखद अन्त का ख्याल आ गया । तुम्हे उनकी याद नही होगी, रोद्या ! वे भी इसी तरह तेज बुखार मे आँगन के कुएँ मे जा गिरे थे । अगले दिन उनकी लाश कुएँ से निकाली गयी थी । इसमे सन्देह नही कि हम दोनो जरूरत से ज्यादा घबरा गई थी । हम मदद के लिए प्योत्र पैत्रोविच को बुलाने वाली थी·· हम अकेली थी, बिल्कुल अकेली ।" सहसा वृद्धा को ख्याल आया कि प्योत्र पैत्रोविच की चर्चा करना निरापद नही है । उसने ठहर कर कहा, "खैर अब सब ठीक है ।"

"हाँ, हाँ ··सचमुच बडी परेशानी होती है · " रास्कोलनिकोव ने अनमने स्वर मे उत्तर दिया । दूनिया घबराकर उसके चेहरे की ओर देखने लगी ।

'अरे हा, मै तुमसे कुछ कहना चाहता था । माँ, और दूनिया तुम भी, यह मत समझ लेना कि मैं आज तुमसे मिलने नही आने वाला था, और यहा तुम्हारे आने का इन्तजार कर रहा था ।"

"रोद्या यह तुम क्या कर रहे हो ?" वृद्धा ने चकित स्वर मे कहा ।

दूनिया सोचने लगी, "क्या रोद्या कर्तव्यवश हम लोगो से माफी माग रहा है ?"

"मै अभी सो कर उठा हूँ । तुम्हारे पास खुद आना चाहता था, लेकिन कपडो की वजह से देर हो गई । मै कल नस्तास्या को कहना भूल गया······उसने खून के दाग नही साफ किए । मै अभी अभी तैयार हुआ हूँ ।"

"खून ? कैसा खून ?" वृद्धा चौक पडी ।

"कुछ नही—घबराओ नही। कल जब मै तेज बुखार मे बाहर चला गया था, तो मैने एक आदमी को गाडी के नीचे कुचली हुई हालत मे पडा देखा ··एक क्लर्क को..."

"बुख़ार मे ? लेकिन तुम्हे यह सारी बाते कैसे याद है ?" राजुमिहीन ने बीच मे टोककर पूछा।

"हाँ मुझे हर बात पूरी तरह याद है, लेकिन मैने किस जगह जा कर कौन-सी बात कही, यह मैं स्पष्ट नही बता सकता।"

"हाँ इस हालत मे ऐसा ही होता है। मरीज बडे कुशल ढग से काम करता है, लेकिन वह कुछ का कुछ कर बैठता है और उसकी रुग्ण मनोवृत्तियाँ ही उसके कार्य का निर्देशन करती है—ठीक जैसे सपने मे होता है," जोसीमोव ने समझाया।

रास्कोलनिकोव सोच रहा था, "यह मुझे पागल समझ रहा है, यह अच्छी बात है।"

"वाह, अच्छे-भले तन्दरुस्त लोग भी तो ऐसा ही करते है," दूनिया ने जोसीमोव की ओर देखते हुए कहा।

"आपकी बात मे सच्चाई जरूर है। इस दृष्टि से देखा जाय तो हम सब एक हद तक पागल है, लेकिन उस हद को पार करते ही सचमुच के पागल हो जाते है। यह सच है कि पूर्णत स्वस्थ और सतुलित व्यक्ति हजारो मे एक ही होता है।"

जोसीमोव के मुँह से अनायास ही 'पागल' शब्द सुनकर सब के माथे पर त्यौरियाँ पड गई।

रास्कोलनिकोव ने इस बातचीत पर कोई ध्यान नही दिया। वह एक गहरी सोच में डूबा था। उसके पीले ओठो पर एक विचित्र मुस्कान थी।

"अच्छा तो फिर उस आदमी का क्या हुआ, जो गाडी के नीचे आगया था ?" राजुमिहीन ने उतावली दिखाते हुए पूछा।

"क्या ?" रास्कोलनिकोव जैसे नीद मे से चौक कर उठ बैठा।

"ओह ! ··उसे उसके घर तक पहुँचाने मे मेरे कपडे खून से सन गये। सुनती हो माँ, कल मैने एक अक्षम्य गलती कर डाली है। सचमुच मेरा दिमाग खराब होगया था। तुम्हारी भेजी हुई सारी रकम मैने उस क्लर्क की पत्नी को दे दी। वह विधवा हो गई है और बिचारी तपेदिक की मरीज है · तीन नन्हे बच्चे भूख से तडप रहे है घर मे कुछ नही है · उनकी एक और भी लडकी है · अगर तुम उनकी हालत देखती तो जरूर उनकी मदद करती। मै मानता हूँ कि मुझे यह सब करने का कोई अधिकार नही था। तुम्हे पैसे की खुद कितनी सख्त जरूरत है। दूसरो की सहायता करने के लिए इन्सान के पास इसका अधिकार भी होना चाहिए, नही तो

क्यो ठीक है न दूनिया ?" रास्कोलनिकोव हँसकर बोला।

"नही, बिल्कुल नही," दूनिया ने दृढतापूर्वक प्रतिवाद किया।

"वाह ! देखता हूँ, जीवन मे तुम्हारे भी आदर्श है," उसने घृणा और व्यग भरे स्वर मे कहा। "मुझे इस बात को ध्यान मे रखना चाहिए था · खैर आदर्शो का होना प्रशसनीय है, विशेपकर तुम्हारे लिए। एक सीमा तक पहुँचने के बाद अगर तुम आगे न बढी तो तुम्हे दुःख होगा। लेकिन यह भी सभव है कि सीमा पार करने पर तुम्हे और भी ज्यादा दुख हो · खैर यह सब निरी बकवास है," वह अपने आक्रोश पर स्वय चिढ गया था। "मेरे कहने का यह मतलब है कि माँ तुम मुझे माफ कर दो।"

"बस, बस रोद्या, मुझे विश्वास है कि तुम जो भी करते हो ठीक ही करते हो।"

"किसी पर इतना अधिक भरोसा करना ठीक नही है," रास्कोलनिकोव ने एक वक्र मुस्कान के साथ कहा। इसके बाद कमरे मे चुप्पी छा गई।

इस बातचीत, सुलह और क्षमा-याचना ने सबको चुप करा दिया था।

रास्कोलनिकोव अपनी मा और बहन के चेहरे की ओर देखकर सोच रहा था, "लगता है ये दोनो मुझ से बहुत डरती है। लेकिन इनकी अनुपस्थिति मे मै इनको कितना चाहता था।" सचमुच इस खामोशी से वृद्धा और भी भयभीत हो उठी थी। सहसा वह मौन-भग करते हुए बोली, "जानते हो रोद्या, मार्फा पैत्रोवना की मृत्यु हो गई है।"

"कौन मार्फा पैत्रोवना ?"

"ईश्वर भला करे—मार्फा पैत्रोवना स्वीद्रिगाईलोव, मैने उसके बारे मे तुम्हे बहुत कुछ लिखा था।"

"आह, हाँ मुझे याद आया अच्छा तो वह मर गई ? क्या सच ? उसे क्या हुआ था ?" रास्कोलनिकोव जैसे नीद से चौककर उठा था।

बेटे की इस जिज्ञासा से वृद्धा को कुछ उत्साह मिला। "जिस दिन मैने तुम्हे खत लिखा था, उसी दिन बेचारी चल बसी थी। कहते है कि उसके पति ने उसे बुरी तरह पीटा था।"

"क्या उनकी आपस मे बिल्कुल नही पटती थी ?" रास्कोलनिकोव ने बहन से पूछा।

"बात ठीक इससे उल्टी थी। वह मार्फा पैत्रोवना की बडी इज्जत करता था। अपनी शादी के सात सालो मे वह हद से ज्यादा सहनशील बना रहा। अचानक वह अपना धैर्य्य खो बैठा।"

"सात साल तक जो आदमी सहता आया, वह यकायक इतना खूखार कैसे हो गया। कही तुम उसकी हिमायत तो नही कर रही, दूनिया ?"

"नही, नही उससे बडा खूखार आदमी कौन होगा ?" दूनिया ने कॉपती हुई आवाज में उत्तर दिया और किसी गहरे सोच मे डूब गई।

वृद्धा ने जल्दी से समझाया, "झगडा तो सुबह हुआ था। उसके बाद मार्फा पैत्रोवना ने शहर जाने के लिए गाडी जोतने का हुक्म दिया। हर बार झगडा होने के बाद वह शहर चली जाती थी। मैंने सुना है कि उसने खूब पेट भर कर खाना भी खाया था।"

"मारपीट के बाद ?"

"यह तो हमेशा से उसकी ··आदत रही है। खाने के फौरन बाद वह गुसल-खाने मे गई ··उन दिनो वह जलचिकित्सा करा रही थी। उनके घर मे ठडे पानी का चश्मा है और वह रोज उसमे नहाती थी। लेकिन उस दिन पानी मे घुसते ही उसे दौरा पड गया।"

"हो सकता है," जोसीमोव ने राय दी।

"क्या उसके पति ने उसे बहुत मारा था ?"

"उससे क्या होता है ?" दूनिया ने कहा।

"हूँ। लेकिन माँ, न जाने तुम हमें यह खुराफात क्यो सुना रही हो," रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा।

"आह मेरे बेटे, मेरी समझ मे नही आता कि तुमसे क्या बात करूँ।"

"क्यो ? क्या तुम सबको मुझसे डर लगता है ?"

"हाँ, यह सच है," दूनिया ने भाई की ओर सीधी नजरो से देखते हुए कहा, "सीढियाँ चढते समय माँ डर से अधमरी हो रही थी।"

रास्कोलनिकोव का चेहरा क्रोध से विकृत हो गया।

"छि छि दूनिया तुम क्या कह रही हो ? रोद्या मेहरबानी करके नाराज मत होना। दूनिया तुमने यह बात क्यो कही ?" वृद्धा ने सत्रस्तभाव से पूछा, "बात यह है रोद्या कि मै रास्ते भर ट्रेन मे सोचती रही थी कि मै तुमसे किस तरह मिलूँगी और क्या बाते करूँगी ! खुशी में मुझे सफर की थकान तक का ख्याल न रहा था। लेकिन मै

यह क्या कह रही हूँ ? ··अब मै खुश हूँ··दूनिया तुम्हे ऐसी बाते नही कहनी चाहिए थी ··मै खुश हूँ ··तुम्हे देखने से ही, रोद्या······"

"बस बस माँ · हमे दिल खोलकर सारी बाते करने का समय मिलेगा" रास्कोलनिकोव ने माँ के हाथ दबाते हुए कहा।

सहसा वह घबरा गया और उसका चेहरा पीला पड गया। उसकी आत्मा मे एक भयकर सिहरन दौड गई। उसे आभास हुआ कि उसने अभी झूठ बोला था ··वह कभी दिल खोलकर किसी से सारी बाते नही कर सकेगा। इस विचार की यत्रणा मे वह अपने आप को भूल गया और उठकर दरवाजे की ओर बढा।

"तुम यह क्या कर रहे हो ?" राजुमिहीन ने उसकी बाँह पकड ली।

रास्कोलनिकोव चुपचाप अपनी जगह पर बैठ गया। सब चकित भाव से उसकी तरफ देखने लगे।

सहसा रास्कोलनिकोव ने कहा, "तुम सब ठूँठ बने क्यो बैठे हो ? कोई बात क्यो नही करते ? इसत रह बैठने से क्या फायदा? आओ बाते करे हम एक दूसरे को मिलने आये है और चुप बैठे है। ··आओ कोई बात तो करो।"

"ईश्वर की मेहरबानी है, मुझे डर था कि कही कल वाली बात फिर न शुरू हो जाये।" वृद्धा ने शरीर पर क्रॉस का निशान बनाते हुए कहा।

"रोद्या क्या बात है ?" दूनिया ने सदिग्ध ढग से पूछा।

"कुछ नही। मुझे कोई बात याद आ गई थी।"

जोसीमोव सोफे से उठ खडा हुआ, "अच्छा तो तुम्हे कोई बात याद आ गई थी · ठीक है · मै सोचने लगा था कि · अब मेरे जाने का वक्त हो रहा है। मै शायद फिर किसी वक्त आऊँगा ··अगर आ सका ·" सबको अभिवादन करके जोसीमोव चला गया।

"कितना शानदार आदमी है।" वृद्धा ने कहा।

"हाँ, शानदार, सुशिक्षित, प्रतिभाशाली," रास्कोलनिकोव ने तेजी और ज़िन्दादिली से कहना शुरू किया, "बीमारी से पहले न जाने मै उसे कहाँ मिला था मेरा ख्याल है मैने इसे कही देखा है—और यह आदमी भी भलामानुस है" उसने राजुमिहीन को देखकर सर हिलाया और कहा, "दूनिया तुम्हे यह आदमी पसद है ?" न जाने उसे क्यो हँसी आ गई।

"हाँ बहुत पसद है" दूनिया ने कहा।

"हुश ! तुम निरे सूअर हो !" कहकर राजुमिहीन उठ खडा हुआ। उसके गाल शर्म से लाल हो गये थे। वृद्धा मद मद मुस्काने लगी। रास्कोलनिकोव को जोर से हँसी आ गई।

"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"मुझे जाने दो।"

"तुम्हे जाने की कोई जरूरत नही। यही रुको। जोसीमोव चला गया है इसलिये तुम भी जाना चाहते हो ? मत जाओ ! कितने बजे है ? बारह ? दूनिया, तुम्हारी घडी कितनी सुन्दर है ! लेकिन तुम सब फिर चुप क्यो हो गए हो ? अकेला मै ही बके जा रहा हूँ।"

"यह घडी मार्फा पैत्रोवना ने मुझे दी थी।" दूनिया ने जवाब दिया।

"और है भी बडी कीमती।" वृद्धा ने बताया।

"आह ! यह घडी बहुत बडी है। औरते तो ऐसी घडियाँ नही बाँधती।"

"मुझे ऐसी ही पसद है," दूनिया ने कहा।

"अच्छा तो यह मगेतर की भेट नही है ?" राजुमिहीन ने मन ही मन सोचा और उसे खुशी हुई।

"मै समझा था कि यह लूजिन का प्रेजेट है" रास्कोलनिकोव ने कहा।

"नही, उसने अभी तक दूनिया को कोई उपहार नही दिये।"

"आह ! माँ तुम्हे याद है, मुझे एक लडकी से प्रेम हो गया था और मै शादी करना चाहता था।" माँ इस आकस्मिक विषयान्तर से स्तब्ध रह गई। लेकिन उसने कहा,

"हाँ बेटे मुझे याद है।"

वृद्धा, दूनिया और राजुमिहीन एक दूसरे का मुह ताकने लगे।

"हाँ तो मै तुम्हे क्या बताऊँ ?" रास्कोलनिकोव की आँखे स्वप्निल हो उठी, "वह बीमार रहती थी। उसे गरीबो को दान देने का बडा शौक था—वह सन्यासिनी बनने के सपने देखा करती थी। एक बार तो इस विषय पर चर्चा करते हुए उसकी आँखो मे आँसू आ गये थे। हाँ हाँ, मुझे याद है। अच्छी तरह याद है। वह बदसूरत सी लडकी थी ··पता नही मै क्यो उसकी तरफ आकर्षित हुआ था—मेरा ख्याल है इसलिये क्योकि वह हमेशा बीमार रहती थी। अगर वह लगडी या कुबडी होती तो शायद मैं उसे और भी ज्यादा चाहने लगता ···हाँ वह एक किस्म का बसन्ती बुखार था।"

"नही वह बुखार नही था," दूनिया ने स्नेह पूर्वक कहा।

रास्कोलनिकोव ने गौर से बहन की ओर देखा लेकिन उसकी बात का अर्थ वह नही समझ पाया। फिर वह कुछ सोचता हुआ मा के पास गया और उसे चूमकर फिर अपनी जगह पर आ बैठा।

"क्या तुम अब भी उसे चाहते हो" माँ ने आर्द्र स्वर मे पूछा।

"उसे ? अब, हाँ··तुम उसके बारे मे पूछ रही हो ? नही वह अब दूसरी दुनियाँ की बाते थी···बहुत पुरानी। सच पूछो तो यहा की हर घटना अतीत की घटना मालूम होती है। आप लोग · मुझे लगता है, मै आप लोगो को हजारो मील दूर से देख रहा हूँ। लेकिन न जाने हम उसकी चर्चा क्यो कर रहे है—इसका क्या फायदा ?" रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा और वह अपने नाखून चबाने लगा।

"रोद्या तुम कितनी मनहूस कोठरी मे रहते हो। मेरा पक्का ख्याल है कि तुम्हारी आधी निराशा इसी कोठरी से पैदा हुई है।"

"मेरी कोठरी, हॉ कोठरी का भी इस बात से काफी सबध है · मैने भी यह सोचा था ··मा, काश तुम जानती कि तुमने अभी कैसी विचित्र बात कह डाली है।" रास्कोलनिकोव विचित्र ढग से हँसने लगा।

बस जरा सी बात और होती तो रास्कोलनिकोव की सहन शक्ति जवाब दे जाती। लेकिन उसने सुबह उठते ही निश्चय किया था कि आज वह एक जरूरी मसले को तय कर डालेगा। उसे अपना निश्चय याद आ गया और उसने शुष्क और गम्भीर स्वर मे कहा, "सुनो दूनिया। कल के प्रसग के लिये मै तुमसे क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मै तुम्हे अपना फर्ज समझ कर दोबारा बतलाना चाहता हूँ कि मै असली बात पर अभी भी कायम हूँ। घर मे या मै रहूँगा या लूजिन रहेगा। अगर मै बदमाश हूँ तो तुम्हे बदमाश नही बनना चाहिये। एक बदमाश ही बहुत है। अगर तुमने लूजिन से शादी की तो हमारा भाई-बहन का रिश्ता तब ही से खत्म हो जायेगा।"

"रोद्या, रोद्या! तुम फिर कल जैसी बाते करने लगे। तुम अपने को बदमाश क्यो कहते हो! मुझसे यह नही सहा जाता। तुमने यह बात कल भी कही थी।"

दूनिया ने भी शुष्क स्वर मे उत्तर दिया, "भाई इस मामले मे तुम गलती पर हो। मै रात भर सोचने के बाद इस नतीजे पर पहुँची हूँ। तुम्हे यह वहम हो गया है कि मै किसी की खातिर किसी के आगे अपनी कुर्बानी दे रही हूँ। यह बात हर्गिज नही है। मैं सिर्फ अपनी खातिर शादी कर रही हूँ, क्योकि मेरी ज़िन्दगी मे कठिनाइयाँ है। अगर मैं अपने परिवार की कोई सहायता कर सकी तो मुझे खुशी होगी। लेकिन मेरे निश्चय का मुख्य कारण यह नही है · "

रास्कोलनिकोव अपने नाखून चबाता हुआ सोचने लगा, "यह झूठ बोल रही है। घमडी लडकी। यह कभी नही मानेगी कि यह दयावश ऐसा कर रही है। इतनी गुस्ताखी! हाय रे कमीने लोग! ये इस तरह मुहब्बत करते है जैसे नफरत कर रहे हो···। ओह! मुझे इन सबसे कितनी नफरत है!"

दूनिया ने कहा, "दर असल मै दो शैतानो मे से छोटे शैतान को चुनना चाहती थी। इसी लिए मै प्योत्र पैत्रोविच से शादी कर रही हूँ। मै ईमानदारी से उसकी सब आशाओ को पूरा करूगी। मै उसे धोखा नही दे रही··· तुम अभी मुस्कराये क्यो?" क्रोध से दूनिया का चेहरा लाल हो गया।

"सब आशाओ को?"

"हाँ, कुछ हद तक। प्योत्र पैत्रोविच की कोर्ट शिप (प्रणय-याचना) के ढग से ही मै समझ गयी थी कि वह क्या चाहता है। वह घमडी जरूर है, लेकिन मेरा ख्याल है, वह मेरी इज्जत भी करता है···। तुम फिर क्यो हस रहे हो?"

"तुम्हारे गाल फिर क्यो लाल हो गये? तुम झूठ बोल रही हो बहन! जानबूझ कर नारी-हठ दिखा रही हो, सिर्फ अपनी बात रखने के लिये···तुम लूजिन की इज्जत नही कर सकती। मै उससे मिला हूँ और उससे बाते भी कर चुका हूँ। तुम पैसो की खातिर अपने को बेच कर बडा नीच काम कर रही हो। मुझे खुशी है कि तुम्हे इस बात पर शर्म आ रही है।"

"नही मै झूठ नही बोल रही। अगर मुझे विश्वास न होता कि वह मेरी इज्जत करता है, तो मै उससे कभी शादी न करती। अगर मेरे मन मे उसके लिए इज्जत न होती, तो भी शादी न करती। सौभाग्य से मुझे आज इस बात का सबूत भी मिल गया है। इस शादी मे कोई पाप नही है। मान लो अगर मैने कोई बुरा काम करने का

इरादा कर भी लिया है तो तुम्हे मेरे प्रति इतनी निर्दयता दिखाने का क्या अधिकार है ? जो साहस शायद तुममे भी नही है, उसकी आशा तुम मुझसे क्यो करते हो ? यह तुम्हारी निरकुशता और अत्याचार है। मै सिर्फ अपने को ही तो तबाह कर रही हूँ मै किसी की हत्या नही कर रही। मेरी ओर इस तरह क्यो देख रहे हो ? तुम्हारा रग इतना पीला क्यो पड गया है ? रोद्या डार्लिंग, क्या बात है ?"

"हे ईश्वर, तुमने उसे फिर बेहोश कर दिया," माँ जोर से चिल्लाई।

"नही नही यह सब बकवास है। मै बेहोश नही हुआ, जरा-सा सर चकरा गया था। तुम्हारे दिमाग पर तो बस मेरी बेहोशी की बात ही छायी है । हाँ तो मै क्या कह रहा था ··? अरे हाँ, तुम लूजिन की इज्जत कर सकती हो, और वह तुम्हारी इज्जत करता है, जेसा कि तुम्हारा दावा है, इस बात का कौनसा सबूत तुम्हे आज मिला है ?"

"माँ, जरा रोद्या को प्योत्र पैत्रोविच का खत तो दिखाना।" दूनिया ने कहा।

मां ने कापते हुए हाथो से खत निकाल कर रोद्या को दे दिया। रोद्या ने खत को खोलने से पहले चकित दृष्टि से दूनिया की तरफ देखा और कहा—

"कैसी विचित्र बात है। भला मै इतना झगडा क्यो कर रहा हूँ ? तुम जिससे चाहो शादी करो।"

फिर उसने खत खोला और गौर से पढने लगा। सब आशाभरी नजरो से उसकी ओर देख रहे थे।

दो बार खत पढने के बाद रास्कोलनिकोव ने मा को खत लौटाते हुए, जैसे अपने आप से कहा, "वह व्यापारी है, वकील है, उसकी बात-चीत दभपूर्ण है लेकिन मुझे हैरानी इस बात की है कि वह अनपढ

लोगो जैसा खत क्यो लिखता है ।"

सब चौक उठे, वे किसी और बात की उम्मीद लगाये थे।

"जानते हो सब वकील और व्यापारी ऐसे ही खत लिखते है।" राज़ुमिहीन ने कहा ।

"तुमने यह खत पढा है ?"

"हा ।"

"रोद्या, हमने इन्हे यह खत दिखाया था और इनकी राय ली थी।" माँ ने घबरा कर बताया ।

"यह अदालती भाषा है । कानूनी दस्तावेजो की भाषा आज भी इसी तरह लिखी जाती है," राज़ुमिहीन ने समझाया ।

"कानूनी ? हाँ यह कानूनी भाया है—व्यापार की भाषा, अशिक्षितो की—अनपढो की, व्यापार की भाषा ।"

दूनिया ने भाई की बातचीत के ढँग से चिढकर जवाब दिया, "प्योत्र पैत्रोविच ने मामूली शिक्षा पाई है, वे इस बात को कभी नही छिपाते। उन्हे इस बात पर अभिमान है कि वे अपने पैरो पर खडे हो सके है।"

"मै इस बात से इन्कार नही करता कि उसे अभिमान करने का अविकार है। लेकिन बहन तुम मेरी नुक्ताचीनी से नाराज हो गयी हो और समझती हो कि मै जानबूझ कर तुम्हे सताने के लिए इतनी ओछी बाते कर रहा हूँ। लेकिन देखकर ही मैने यह बात कही है, उसके खत मे एक ही बात है "सारी जिम्मेदारी तुम लोगो की होगी" उसने यह धमकी भी दी है कि अगर मै वहाँ आऊगा, तो वह वहाँ से चला जायेगा। जाने का मतलब है कि अगर तुम दोनो ने उसका हुक्म न माना तो वह तुम दोनो को पीटर्सबर्ग लाने के बाद भी, छोडकर चला जायगा। क्यो क्या ख्याल है ? अगर वह इसे (राज़ुमिहीन की ओर इशारा करते हुए) या, ज़ोसीमोव या हम मे से किसी को ऐसी बात

लिखता तो क्या हम बर्दाशत कर सकते ?

"नही नही," दूनिया उत्तेजित होकर बोली, "मै जानती हूँ कि उसने सरल भाव से ही यह बात लिखी है। शायद उसे खत लिखना नही आता। भाई, तुम्हारा यह आक्षेप सही है"··मै नही समझती थी कि · ।"

"यह खत कानूनी शैली मे लिखा गया है और इसमे से बेहूदगी की बू आती है ! लेकिन मै तुम्हारा भ्रम दूर करना चाहता हूँ। खत मे मेरे बारे मे एक नीचतापूर्ण झूठ है। कल रात मैंने एक मुसीबत की मारी विधवा को, जो तपेदिक की मरीज है, पैसे दिये थे, उसके पति को दफनाने के लिये न कि 'दफनाने के बहाने' मैने उसकी 'बदनाम' जवान लडकी को, जैसा कि उसने मुझपर इलजाम लगाया है (मैने उस लडकी को कल पहली बार देखा था)। देखता हूँ, वह मुझे बदनाम करने पर तुला हुआ है और हमारे परिवार मे फूट डालना चाहता है। यह सारी बात उसने साफ-साफ कानूनी भाषा मे लिखी है। वह चतुर आदमी है, लेकिन अक्मद के लिये चतुराई की कोई जरूरत नही होती। कल इन बातो से उसकी असलियत मालूम होती है ··मै नही समझता कि वह तुम्हारी कोई इज्जत करता है। तुम्हे सावधान करने के लिए ही मै ऐसा कह रहा हूँ, क्योकि मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूँ।"

दूनिया चुप रही। वह मन मे फैसला कर चुकी थी, और शाम होने की प्रतीक्षा कर रही थी।

"तो रोद्या, तुम्हारा फैसला क्या है ?" मा ने बेटे की बातचीत के लहजे से परेशान होकर पूछा।

"कैसा फैसला ?"

"प्योत्र पैत्रोविच ने लिखा है कि तुम आज शाम के वक्त वहाँ न आओ, अगर तुम आओगे तो वह वहाँ से चला जायेगा। तो क्या तुम··· आओगे ?"

"यह फैसला मुझे नही बल्कि तुम दोनो को करना होगा। फिर तुम जैसा कहोगी, मै वैसा ही करूँगा।"

"दूनियाँ तो पहले से फैसला कर चुकी है, और मै उसमे पूरी तरह सहमत हूँ।" मा ने बतलाया।

दूनिया बोली, "रोद्या मैने फैसला किया है कि शाम की मुलाकात मे तुम्हारा होना जरूरी है। आओगे ?"

"हाँ।"

दूनिया ने राजुमिहीन को लक्ष्य करके कहा। "आप भी आठ बजे आइयेगा। मा, मै इन्हे निमंत्रित कर रही हूँ।"

"ठीक है दूनिया, तुमने जो तय किया है, वैसा ही होगा। इनके आने से मेरे दिल का बोझ हल्का हो जायेगा। मै दुराव और कपट नही पसद करती। इससे तो पूरी सच्चाई सामने आ जाये वह अच्छा है·· प्योत्र पैत्रोविच चाहे खुश हो या नाराज—बस !"

४

इसी समय आहिस्ता से दरवाजा खोलकर एक युवती ने कमरे में प्रवेश किया। वह भयभीत दृष्टि से चारो ओर देख रही थी। पहले तो रास्कोलनिकोव ने उसे नही पहचाना। यह लडकी मारमेलेदोव की बडी बेटी सोनिया थी। रास्कोलनिकोव ने कल उसे जिन परिस्थितियो मे और जैसी पोशाक मे देखा था, उससे उसके मन मे सोनिया के बारे मे अलग धारणा बन गयी थी। इस समय वह एक सीधी सादी शरीफ लडकी लग रही थी। देखने मे वह बिल्कुल बच्ची-सी लगती थी। उसके सर पर पुराने फैशन का फटा-सा हैट था, लेकिन कल वाला छाता अब भी उसके हाथो मे था। कमरे मे एक साथ इतने लोगो को बैठा देखकर वह नन्ही बालिका की तरह शरमा गयी। वह घबराकर पीछे हटने ही वाली थी कि रास्कोलनिकोव ने कहा, "अरे तुम ?" सोनिया को देखकर वह स्तब्ध रह गया। सहसा उसे याद आया कि लूजिन ने अपने पत्र द्वारा उसकी मा और बहन को 'किसी जवान और बदनाम लडकी' के बारे मे बताया था। उसने अभी लूजिन के इस झूठ का भडा फोड किया ही था कि सोनिया स्वय वहा आ गई। उसे ख्याल आया कि उसने 'बदनाम' शब्द पर ऐतराज क्यो नही किया। सोनिया के अपमानित

चेहरे की व्यथा उससे सही न गयी। जब सोनिया भयभीत होकर वापस लौटने लगी तो रास्कोलनिकोव के दिल मे जैसे किसी ने तीर चुभो दिया।

"मेरा ख्याल नही था कि तुम यहा आओगी। मेहरबानी करके बैठ जाओ। निश्चय ही कैटेरीना इवानोव्ना ने तुम्हे भेजा है। वहाँ नही, इधर आकर बैठो।"

सोनिया के आते ही राजुमिहीन, जो दरवाजे के पास एक कुर्सी पर बैठा था, उठ कर खडा हो गया। रास्कोलनिकोव ने सोनिया से सोफे पर बैठने का आग्रह किया जहाँ जोसीमोव बैठा था। लेकिन उसे ध्यान आया कि जिस सोफे पर वह सोता है, उस पर उसे बिठाना ठीक नही है। उसने सोनिया को राजुमिहीन की कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और राजुमिहीन को अपने पास बुला लिया।

सोनिया कापती हुई कुर्सी पर बैठ गयी और भीरु दृष्टि से दोनो महिलाओ की ओर देखने लगी। भद्र महिलाओ के साथ बैठने की कल्पना से ही वह इतनी भयभीत हो गयी थी कि उसने उठकर घबरायी आवाज मे रास्कोलनिकोव से कहा

"मै मै · सिर्फ एक मिनट के लिए आयी हू। मैने आपकी बात-चीत मे विघ्न डाला है इसके लिए क्षमा करे। कैटेरीना इवानोव्ना के पास इस समय और कोई न था, इस लिए उन्होने मुझे यहाँ भेजा है। उन्होने कहा है कि आप·· सुबह मित्रोफेनिवस्की मे तशरीफ लाये। उसके बाद हमारे यहाँ · आपकी बडी मेहरबानी होगी·· उन्होने कहा था कि मै आप से अनुरोध करू ··" सोनिया अटक-अटक कर बोल रही थी।

"मै आने की पूरी कोशिश करूँगा," रास्कोलनिकोव भी घबराहट मे उठ खडा हुआ था। सहसा उसने कहा "मेहरबानी करके बैठ जाओ। मै तुम से कुछ बाते करना चाहता हूँ। शायद तुम जल्दी मे

हो, लेकिन दो मिनट मेरी खातिर रुक जाओ।" उसने कुर्सी खिसकाकर सोनिया के आगे करली। सोनिया ने फिर भयभीत दृष्टि से दोनो महिलाओ की ओर देखा और आँखे नीची करली। रास्कोलनिकोव के पीले चेहरे पर लाली दौड गयीं और वह सिहर गया। उसकी आँखो मे चमक आ गयी।

"माँ यह है सोफिया सेम्योनोव्ना मारमंलेदोव। मिस्टर मारमैले-दोव की सुपुत्री, जो बेचारे कल गाडी के नीचे आ गये थे और जिनके बारे मे मैं तुम्हे अभी बता रहा था।"

वृद्धा ने घूर कर सोनिया की तरफ देखा। दूनिया चकित दृष्टि से उस अभागी लडकी के चेहरे का निरीक्षण करने लगी। अपना परिचय सुन कर सोनिया ने आँखे ऊपर उठायी, लेकिन इस बार वह और ज्यादा घबरा गई।

"मैं तुमसे पूछना चाहता था कि कल सारा इन्तजाम ठीक हो गया था या नही। पुलिस वालो ने तग तो नही किया ?"

"नही • मृत्यु का कारण तो स्पष्ट ही था • पुलिस ने कुछ नही कहा . लेकिन बाकी किरायेदार हम से नाराज है।"

"क्यो ?"

"क्यो कि लाश अभी तक घर मे ही है। आप जानते है, आजकल कितनी गर्मी हो गई है। वे आज ही ताबूत को कब्रिस्तान ले जाना चाहते है। पहले तो कैटेरीना इवानोव्ना नही मान रही थी, लेकिन अब वे भी समझ गयी है कि ऐसा करना जरूरी है।"

"तो क्या आज ही ले जायेगे ?"

"कैटेरीना इवानोव्ना ने कहा है कि आप कल प्रार्थना के समय गिरजे मे जरूर पधारे। उसके बाद भोज मे भी शामिल हो।"

"वे भोज भी दे रही है ?"

"हा • • मामूली-सा • • कैटेरीना इवानोव्ना ने मुझसे कहा था कि मैं

आपकी सहायता के लिये आपका धन्यवाद करूँ—अगर आप सहायता न करते तो हमारे पास दफनाने के लिये कौडी तक न होती।"

सहसा सोनिया के ओठ और ठुड्डी काँपने लगी, लेकिन उसने अपने ऊपर काबू पा लिया और वह फर्श की ओर ताकने लगी।

बातचीत के दौरान मे रास्कोलनिकोव ने गौर से उसके चेहरे की तरफ देखा। उसका पीला चेहरा पतला और नोकीला था, उसकी नाक और ठुड्डी तीखी थी। उसे सुन्दर तो नही कहा जा सकता था, लेकिन उसकी निर्मल नीली आँखो मे एक अद्भुत प्रकाश था—उसके चेहरे की सरलता और दयालुता से कोई भी आकर्षित हुए बगैर नही रह सकता था। उसके सारे व्यक्तित्व मे एक विशेष प्रकार का भोलापन था। अठारह बरस की होने पर भी वह निरी बच्ची थी—उसके कई हाव-भाव तो निरे बचकाने थे।

रास्कोलनिकोव ने बातचीत जारी रखते हुए कहा, "लेकिन क्या कैटेरीना इवानोव्ना ने इतने कम पैसो मे सारा इन्तजाम कर लिया है? वे भोज भी देना चाहती है?"

"खैर कफन तो सादा होगा· सब चीजे मामूली होगी, इसलिये खर्च ज्यादा नही पडेगा। कैटेरीना इवानोव्ना और मैने बैठकर सारा हिसाब लगा लिया है, हमारे पास काफी पैसे बच रहेगे· कैटेरीना इवानोव्ना की इच्छा थी। आप जानते है इन्सान· उन्हे ऐसा करने से तसल्ली मिलती है उनकी ऐसी आदत है आपको मालूम है· "

"समझ गया, समझ गया क्यो नही तुम मेरे कमरे की ओर इस तरह क्यो देख रही हो? मेरी माँ ने अभी कहा था कि यह कमरा कब्र की तरह है।"

"आपने अपने सारे पैसे कल हमे दे दिए," सोनिया ने जोर से कहा, फिर वह घबराकर फर्श की ओर ताकने लगी। उसका चेहरा काँपने लगा। वह रास्कोलनिकोव की दरिद्रता को देखकर दग रह गई थी।

कमरे मे खामोशी छा गई। दूनिया की आँखे चमकने लगी और वृद्धा भी स्नेहपूर्वक सोनिया की ओर देखने लगी।

"रोद्या खाना तो तुम हमारे साथ ही खाओगे। आओ दूनिया चले और रोद्या तुम जरा थोडी दूर तक घूम आओ। फिर कुछ देर आराम करके हमारे पास आना •शायद हम लोगो ने तुम्हे थका दिया है।" वृद्धा उठकर बोली।

"हाँ, हाँ मैं आऊँगा मगर मुझे कुछ और भी काम है।"

"लेकिन तुम खाना तो इनके साथ ही खाओगे न ?" राजुमिहीन ने हैरानी से पूछा।

"हाँ, हाँ, मै जरूर आऊँगा और तुम एक मिनट यही रुको। माँ तुम राजुमिहीन को साथ तो नही ले जाना चाहती। मै इसे अपने पास रोक लूँ ?"

"नही नही, दिमित्री प्रोकोफ़िच तुम्हे भी हमारे साथ खान। खाना होगा।"

"जरूर आइयेगा," दूनिया ने कहा।

राजुमिहीन का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। क्षण भर के लिए सब असमजस मे खडे रहे।

"गुडबाई रोद्या। मुझे गुडबाई कहना अच्छा नही लग रहा। गुडबाई नस्तास्या! आह, मै दुबारा गुडबाई कह गई!" वृद्धा सोनिया से भी विदा लेना चहती थी लेकिन किसी कारण से ऐसा किए बिना ही वह कमरे से बाहर चली गई। दूनिया ने शिष्टतापूर्वक सोनिया के आगे सिर झुका कर विदा ली। सोनिया ने घबराकर जल्दी से सिर झुका कर अभिवादन किया। लगता था जैसे दूनिया की शिष्टता से वह बेचैन और आहत हो गई थी।

"दूनिया गुडबाई! लाओ अपना हाथ," रास्कोलनिकोव ने बाहर निकल कर कहा।

"अरे भूल गये ! मैंने अभी तो तुम से हाथ मिलाया था।"

"कोई हर्ज नही, दुबारा अपना हाथ लाओ," उसने स्नेहपूर्वक बहन की उगलियो को दबाया। दूनिया ने मुस्कुराकर अपना हाथ छुडा लिया और खुशी खुशी जीने से नीचे उतर गयी।

'आओ यह बडा अच्छा हुआ। ईश्वर मृतको को शान्ति दे। जिन्दा लोगो को तो अभी जिन्दगी काटनी है, ठीक है न ?"

सोनिया उसके चेहरे पर अचानक आलोक फूटते देखकर चकित हो गई। रास्कोलनिकोव चुपचाप कुछ क्षणो तक सोनिया के चेहरे की ओर देखता रहा। एक निमिष मे उसके मृत पिता के जीवन का इतिहास उसकी आँखो मे घूम गया ··

सडक पर पहुँचते ही वृद्धा ने कहा, "अच्छा हुआ मै वहा से चली आयी। मेरा दिल अब हल्का हो गया। कल ट्रेन मे भला क्या मै सोच सकती थी, कि रोद्या के घर से चले आने मे मुझे खुशी होगी ?"

"माँ मै अब भी कहती हूँ कि वह बहुत बीमार है। तुमने देखा नही, शायद हमारी चिन्ता से ही उसकी तबियत बिगड गई हो। अगर हम धीरज रखे तो बहुत-सी बातो को माफ कर सकते है।"

"तो तुमने कौन-सा धीरज दिखाया है ?" वृद्धा ने गुस्से से कहा। "जानती हो दूनिया, मैं तुम दोनो की ओर देख रही थी। तुम दोनो की शक्ल और आदते हू-ब-हू एक जैसी है। तुम दोनो उदास और निराश प्रकृति के हो। दानो तुनक-मिज़ाज, घमडी और सहृदय हो · वह स्वार्थी हर्गिज नही हो सकता दूनिया, क्यो ? · आज शाम को न जाने क्या होगा—इसकी कल्पना करते ही मेरा दिल डूबने लगता है।"

"घबराओ नही माँ, जो होना है, वह होगा ही।"

"दूनिया जरा सोचो तो सही, हमारी स्थिति कैसी है। अगर कही प्योत्र पैत्रोविच ने रिश्ता तोड दिया तो ?" बेचारी वृद्धा के मुँह से अचानक ही निकल गया।

"तोड दिया तो कौन सा आसमान फट जायगा," दूनिया ने घृणा-पूर्वक उत्तर दिया।

"अच्छा हुआ जो हम वहाँ से चले आये, मालूम होता था कि वह किसी बात के लिए जल्दी मे था। काश, वह खुली हवा मे जाकर उसके कमरे मे बडी उमस है · लेकिन यहाँ ताजी हवा कहाँ से आयेगी? यहाँ की गलियाँ भी तो इतनी तग है। हे ईश्वर कैसा शहर है । जरा रुको, सामने से लोग प्यानो उठाये चले आ रहे है ··बाप रे किस तरह धक्का देते है · मुझे उस लडकी से भी डर लगता है।"

'कौन-सी लडकी से, माँ ?"

"अरे वही सोफिया सेम्योनोवना, जो अभी रोद्या के यहाँ बैठी थी।"

"क्यो ?"

दूनिया तुम चाहे विश्वास करो या न करो, उस लडकी को कमरे मे देखते हो मुझे लगा था कि वही सारी आफत की जड है।"

"बिल्कुल नही। तुम्हारे वहम भी कितने वाहियात है, माँ। रोद्या से उस लडकी का परिचय कल ही हुआ है। रोद्या ने तो पहले उसे पहचाना तक नही।"

"अच्छा, अच्छा, तुम देखना · तुम देख लेना·· वह मेरी ओर बुरी तरह घूर रही थी। तुम्हे याद है रोद्या ने कितने तपाक से उस लडकी से हमारा परिचय कराया था ? अजब बात है कि प्योत्र पैत्रोविच ने इस लडकी के बारे मे कैसी बाते लिखी है और रोद्या ने किस ढग से उसका परिचय दिया। निश्चय ही रोद्या के मन मे उसकी बहुत इज्जत होगी।"

"लोग खतो में क्या क्या खुराफात नही लिख सकते ? लोगो ने हमारे बारे मे भी तो कैसी कैसी बाते कही और लिखी थी, तुम भूल गयी ? मुझे विश्वास है कि वह भली लडकी है और यह सारी बाते झूठ हैं।"

"ईश्वर करे ऐसा ही हो।"

"और प्योत्र पैत्रोविच बडा नीच आदमी है जो दूसरो को बदनाम करता फिरता है," दूनिया ने कहा।

वृद्धा माँ हताश होकर चुप रह गयीं।

रास्कोलनिकोव ने राजुमिहीन को खिडकी के पास बुलाकर कहा, "मै तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ।"

सोनिया उठ खडी हुई, "तो मै कैटेरीना इवानोव्ना से कह दूँ कि आप आ रहे है?"

"एक मिनट रुको सोफिया सेम्योनोव्ना। हम कोई गुप्त बात नही कर रहे। तुम यही रुको। मै तुमसे एक बात करना चाहता हूँ।" फिर उसने राजुमिहीन की ओर मुँह फेर कर कहा, "सुनो, तुम उसे जानते हो? · क्या नाम है उसका—पोरफेरी पैत्रोविच?"

"क्यो नही, जानता हूं। वह मेरा रिश्तेदार है। क्यो, क्या बात है?"

"क्या यह केस उसी के हाथ मे है? · यही हत्या वाला केस, जिस की कल तुम चर्चा कर रहे थे?"

"हाँ, क्यो?" राजुमिहीन की आँखे विस्मय से फैल गयी।

"प्योत्र पैत्रोविच बुढिया के ग्राहको के बारे मे पूछ-ताछ कर रहा था। मैने भी उसके यहाँ कुछ छोटी-मोटी चीजे गिरवी रखी थी—बहन की दी हुई चाँदी की अगूठी और पिता की दी हुई चादी की घडी। दोनो मिलाकर पाच या छः रूबल की होगी · लेकिन मेरे लिए वे अमूल्य है। अब मै क्या करूँ? मै उस घडी को किसी कीमत पर नही खोना चाहता। अभी जब दूनिया की घडी के बारे मे बात कर रहे थे, तब मुझे डर लगा कि माँ कही मेरी घडी के बारे मे न पूछ बैठे। हमारे पास पिता की यही एक निशानी बची है। अगर माँ को पता चल गया तो वह दुख से बीमार पड जायगी। तुम जानते हो औरतो का स्वभाव

कैसा होता है। अब तुम्ही बताओ, मुझे क्या करना चाहिए ? मुझे पुलिस स्टेशन जाकर नोटिस देनी चाहिए थी। लेकिन सीधे पोरेफ़ेरी के पास जाना क्या बेहतर नही रहेगा, क्यो तुम्हारी क्या राय है ? इससे मामला जल्दी तै हो जायगा। हो सकता है, माँ खाने से पहले घडी के बारे मे पूछे।"

राजुमिहीन ने उत्तेजित स्वर में उत्तर दिया, "पुलिस स्टेशन नहीं, चलो पोरफ़ेरी के यहाँ ही चले। यहाँ दो कदम पर ही तो है। वह जरूर घर पर मिल जायेगा।"

"अच्छा तो चलो।"

"तुमसे मिलकर पोरफ़ेरी को बडी खुशी होगी। मैने कई बार उस से तुम्हारा ज़िक्र किया है। कल भी तुम्हारी ही बाते हो रही थी । तो तुम भी बुढिया को जानते थे हाँ, तो यह माजरा है। सब बाते साफ़ होती जा रही हैं · अरे हा सोफिया इवानोव्ना · "

"इवानोव्ना नही सेम्योनोव्ना। सोफिया सेम्योनोव्ना, यह मेरा मित्र राजुमिहीन है। बडा भला आदमी है।"

सोनिया घबराहट के मारे राजुमिहीन की तरफ आँख तक न उठा सकी।

"आप लोग जा रहे है ?"

"आओ चलें। सोफिया सेम्योनोव्ना मुझे अपना पता बताओ, मैं आज ही तुमसे मिलने आऊँगा।"

वह घबराया नही था, लेकिन उतावला हो रहा था और सोनिया से आँखे चुरा रहा था। सोनिया ने शरमाते हुए अपना पता दिया। सब एक साथ बाहर निकले।

"तुम कमरे मे ताला नही लगाते ?" राजुमिहीन ने जीने मे आकर पूछा।"

"नही, पिछले दो वर्षों से मै ताला खरीदने की सोच रहा हूँ।

जिन्हे नालो की जरूरत नही होती, वे लोग ही सुखी रहते है," रास्कोलनिकोव ने हँस कर सोनिया की तरफ देखा। तीनो जने फाटक पर आ कर खडे हो गये।

"सोफिया सेम्योनोव्ना, तुम दाँयी तरफ से जाओगी ? यह बताओ तुम्हे मेरा पता कैसे मालूम हुआ ?" वह कुछ और कहना चहता था और सोनिया की नीली आँखो मे झाँकना चाहता था, लेकिन ऐसा करना आसान न था।

"आपने कल पोलेन्का को जो अपना पता दिया था।"

"पोलेन्का • पोलेन्का ? अरे हाँ, पोलेन्का। वह नन्ही लडकी क्या तुम्हारी बहन है ? क्या मैने उसे अपना पता दिया था ?"

"आप भूल भी गये ?"

"नही, मुझे याद है।"

"मैने अपने पिता से आपके बारे मे सुना था, लेकिन हमे आपका नाम नही मालूम था। आज मुझे आपका नाम मालूम हो गया, इस लिए मै चली आई। मैने आकर पूछा, मिस्टर रास्कोलेनिकोव कहाँ रहते हैं ? मुझे नही आलूम था कि आपके पास भी सिर्फ एक ही कमरा है। अच्छा गुडबाई। मै कैटेरीना इवानोव्ना से कह दूँगी।"

वह जल्दी ही वहाँ से जाने के लिए बेचैन हो रही थी और एकान्त मे जाकर, बिना किसी की तरफ देखे आज की घटना के हर पहलू पर सोचना चाहती थी, स्मरण करना चाहती थी। उसे आज एक अपूर्व अनुभूति हो रही थी। उसके अनजाने मे ही एक नये ससार की धुंधली रेखायें उसकी कल्पना मे उभरने लगी थी। सहसा उसे याद आया कि रास्कोलनिकोव आज ही उससे मिलने के लिए आने वाला है। क्या पता अभी आ निकले ?

वह भयभीत बच्चे की तरह बडबडाने लगी, "आज नही, सिर्फ आज का दिन नही। वे उस कमरे मे • "सब कुछ देख लेंगे, हे ईश्वर।"

सोनिया ने नही देखा कि एक अपरिचित व्यक्ति उसका पीछा कर रहा है। जब तीनो फाटक के आगे खडे थे, तब सोनिया के मुँह से 'क्या मि० रास्कोलनिकोव यही रहते है,' सुनकर उस आदमी के कान खडे हो गये थे। उसने तीनो को, विशेषकर रास्कोलनिकोव को गोर से देखा और गर्दन घुमा कर घर का पता भी नोट कर लिया। यह सब क्षण भर मे ही हो गया था। वह अपनी जिज्ञासा को मन मे ही दबाकर धीरे-धीरे सडक पर चहल कदमी करने लगा। वह सोनिया का इन्तजार कर रहा था। उसने सुना कि सोनिया घर जा रही है।

"घर ? किधर ? मैने इस लडकी को पहले कही देखा है। मै जरूर इसका पता लगाऊँगा।"

वह चौराहे पर आकर सोनिया की प्रतीक्षा करने लगा, लेकिन सोनिया ने उसकी ओर ध्यान नही दिया। वह सोनिया के पीछे पीछे चलने लगा। पचास कदम चलने के बाद वह दूसरे फुटपाथ पर चला गया और लगातार सोनिया का पीछा करता रहा।

वह पचास बरस का लम्बा, तगडा आदमी था। पोशाक से वह फैशनेबल और प्रतिष्ठित व्यक्ति लगता था। उसके हाथ मे बेत की बढिया छडी थी जिसे वह बार बार फुटपाथ पर मारता चलता था। उसके दस्ताने दूध की तरह सफेद थे। उसके रग मे ताज़गी थी, ऐसी ताज़गी पीटर्सबर्ग के लोगो मे कम ही दिखायी देती है। उसके गहरे सुनहरी बाल जगह जगह पर सफेद होने शुरू हो गये थे। उसकी दाढी का रग तो और भी ज्यादा भूरा था। उसकी आँखे नीले रग की थी और उसकी दृष्टि मे कठोरता और सजीदगी थी। उसके ओठ गुलाबी थे। वह अपनी उम्र से देखने मे छोटा नजर आता था।

नहर के किनारे वाली पटरी पर सोनिया और वह अकेले रह गये थे। सोनिया अपने दिवास्वप्नो मे डूबी थी। उसने घर पहुँचकर

फाटक खोला और दायी ओर को मुड गई। वह व्यक्ति भी चकित भाव से चारो तरफ देखता हुआ सोनिया के पीछे पीछे सीढियाँ चढने लगा। इस समय सोनिया का ध्यान उसकी ओर गया। तीसरी मजिल पर पहुँचकर सोनिया ने नौ नम्बर के दरवाजे की घटी बजायी। दरवाजे पर खडिया से लिखा था, 'कापर्नोमोव—दर्जी'। उस व्यक्ति ने आठ नम्बर के दरवाजे की घटी बजायी और इस विचित्र सयोग से चकित होकर कहा, "वाह तुम कापर्नोमोव के यहाँ रहती हो ? उसने कल ही मेरी एक वास्कट ठीक की है। मै यहाँ आठ नम्बर मे मैडम रैस्लिश के यहाँ ठहरा हूँ। कैसा विचित्र सयोग है।"

सोनिया गौर से उसकी ओर देखने लगी।

अजनबी व्यक्ति ने हँसते हुए कहा, "इस नाते हम पडौसी है। मै परसो ही इस शहर मे आया हूँ। अच्छा गुडबाई, फिर मिलेगे।"

सोनिया ने कोई उत्तर न दिया। दरवाजा खुलते ही वह भीतर चली गयी। न जाने क्यो वह लज्जित और परेशान हो रही थी।

पोरफेरी के घर के रास्ते मे राजुमिहीन उत्तेजित स्वर मे कह रहा था, "भई खूब ! मुझे बडी खुशी है !"

"तुम्हे किस बात की खुशी है ?" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन पूछा।

"मै नही जानता था कि तुम बुढिया के यहाँ चीजे गिरवी रखते थे, क्या बहुत पहले ? मेरा मतलब है कि क्या तुम बहुत दिनो से वहाँ नही गये ?"

"यह कैसा बेवकूफ आदमी है ?" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन कहा। अगले क्षण वह ठिठक कर खडा हो गया और बोला, "मैं वहाँ कब गया था ? ··मेरा ख्याल है कि शायद बुढिया की मौत से दो या तीन दिन पहले। लेकिन अब मै गिरवी रखी हुई चीजो को नही छुडाऊँगा। मेरे पास तो सिर्फ चाँदी का एक रूबल ही बच रहा है,

कल रात के सरसाम के बाद !'' उसने 'सरसाम' शब्द पर विशेष जोर दिया।

राजुमिहीन ठीक से कुछ न समझ सका, फिर भी उसने कहा, "अच्छा तो इसीलिए तुम · जानते हो, सरसाम मे बार बार तुम अँगूठियो और चेनो का नाम ले रहे थे। हाँ, हाँ · अब सारी बात साफ हो गई।"

रास्कोलनिकोव मन ही मन सोचने लगा, "सब लोगो को इसी बात से शक हुआ होगा। खैर अब इस आदमी की समझ मे आगया कि मैं सरसाम मे अँगूठियो और चेनो की बात कर रहा था। तभी यह इतना खुश हो रहा है। अब यह आदमी मेरी पूरी हिमायत करेगा।"

"चल कर पोरफेरी को ढूढें ?" उसने सहसा पूछा।

'हाँ, चलो।"

"वह आदमी तो अच्छा है, लेकिन फूहड है। मेरा मतलब है कि वैसे तो वह शिष्ट और सलीके वाला आदमी है, लेकिन कई बातो मे फूहड़ भी है। उसका दिमाग बहुत तेज है, लेकिन उसके विचार अपने ही ढग के होते है। वह किसी की बात पर विश्वास नही करता। वह लोगो पर रौब जमाना और उनका मजाक उडाना पसन्द करता है। वह पुलिस के पुराने तरीको पर चलने का आदी है। लेकिन वह अपने काम को पूरी तरह समझता है · पिछले साल उसने एक ऐसे मुकदमे की पैरवी की थी जिसमे पुलिस को हत्यारे का कोई भी सुराग नही मिला था। वह तुम्हारा परिचय पाने के लिए बहुत उत्सुक है।" राजुमिहीन ने कहा।

"आखिर क्यो उत्सुक है ?"

"ओह, जब से तुम बीमार हुए हो, मैने उससे अक्सर तुम्हारा जिक्र किया है। उसने जब सुना कि तुम कानून के विद्यार्थी हो और अपनी पढाई पूरी नही कर पाये, तो उसने कहा, 'कितने दुख की बात

है ?' मैने बात यही खत्म करदी · कल जेमेतोफ · तुम्हे याद है रोद्या, कल रास्ते मे मैने तुम्हारे सामने जब बहुत सी बकवास की थी, उस समय मै नशे मे था मुझे डर है भाई कि तुम कही उन बातो को बढा-चढा कर न सोचने लगो ।" .

"किन बातो को ? यह कि वे मुझे पागल समझते है ? शायद उनका यह विचार ठीक ही है ।" उसने किंचित मुस्करा कर कहा ।

"हाँ, हाँ, यही बात । नही, छि छि ! लेकिन मैने जो भी कहा वह खुराफात थी, नशे की बकवास ।"

"लेकिन तुम माफी क्यो माँग रहे हो ? मै इन बातो से तग आगया हूँ," रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा । इस चिढने मे थोडा-सा अभिनय भी था ।

"मै सब समझता हूँ । सच मानो, मै समझता हूँ । इन्सान को ऐसी बात करते हुए शर्म आती है ।"

"शर्म आती है तो चुप रहो ।"

दोनो चुप हो गये । रास्कोलनिकोव ने देखा कि राजुमिहीन बहुत ज्यादा खुश है, लेकिन पोरफेरी के बारे मे अभी राजुमिहीन ने जो बताया था उससे उसके मन मे खटका पैदा हो गया था ।

उसका चेहरा सफेद पड गया और उसने धडकते हुए दिल से सोचा, "उसके सामने भी मुझे चिढने का अभिनय करना होगा । सब से स्वाभाविक बात तो यह होगी कि मै कुछ भी न करूँ । लेकिन यह भी स्वाभाविक बात नही होगी अच्छा देखेगे, वहाँ क्या होता है · ·देखेगे । वहाँ जाना ठीक है या नही ? पतगा प्रकाश की ओर ही भागता है । मेरा दिल धडक रहा है, यह बुरी बात है ।"

"सामने भूरे रग वाले मकान मे चलो ।"

"क्या पोरफेरी को मालूम है कि मै कल बुढिया के फ्लैट मे गया था और मैने खून के धब्बो के बारे मे पूछताछ की थी ? यह फौरन

जानना जरूरी है। भीतर जाते ही उसका चेहरा देखकर मै यह भॉप लूँगा, नही तो मुझे अपनी बर्बादी का तो पता चल ही जायगा।" रास्कोलनिकोव ने सोचा।

उसने राजुमिहीन की तरफ देखते हुए कुटिल ढग से मुस्कराते हुए कहा, "देखता हूँ भाई, तुम सुबह से उत्तेजित हो। क्यो टीक है न ?"

"उत्तेजित ? बिल्कुल नही," राजुमिहीन ने जैसे चोट खाकर कहा।

"हा भाई, मै सच कहता हूँ, तुम्हारी उत्तेजना साफ जाहिर है। तुम कुर्सी के कोने मे अजब ढग से बैठे थे और अकारण ही उद्विग्न हो रहे थे। एक क्षण तुम नाराज दीखते थे, लेकिन अगले ही क्षण तुम्हारा चेहरा मिठाई की तरह मधुर बन जाता था। जब माँ ने तुम्हे खाने पर बुलाया तब तुम्हारा चेहरा बुरी तरह से लाल होगया था।"

"यह निरी बकवास है।"

"लेकिन तुम स्कूल के विद्यार्थी की तरह झेप क्यो रहे हो ? ईश्वर की कसम, तुम्हारे गाल फिर सुर्ख होगये है।"

"तुम निरे सूअर हो !"

"लेकिन तुम इतना शरमा क्यो रहे हो ? ठहरो मै आज तुम्हारा सारा मजनूपन निकाल दूँगा, हा, हा, हा ! माँ को बडी हसी आयेगी। किसी और को भी··"

"सुनो, सुनो, सुनो ! यह बडी गभीर बात है। तुम पूरे शैतान हो। सच बताओ उनसे क्या कहोगे ? बताओ भी तो। छि तुम सच-मुच निरे सूअर हो।" घबराहट के मारे राजुमिहीन के हाथ-पाँव ठडे पड गये।

"तुम गुलाब के फूल की तरह खिले हुए हो। तुम नही जानते,

इस समय तुम कितने अच्छे लग रहे हो। छै फुट लम्बा मजनू देखा है ? आहा देखता हूँ कि आज तुमने नहा-धोकर अपने नाखून भी साफ किए है। क्यो ? यह तो अनहोनी-सी बात है। मेरा ख्याल है कि तुमने बालो मे पोमेड भी लगाया है।-जरा सर नीचा करो, देखूँ तो सही।"

"सूअर !"

रास्कोलनिकोव ने इस तरह ठहाका लगाया जैसे उसकी हँसी बेकाबू हो गई हो। दोनो हँसते-हँसते पोरफेरी पैत्रोविच के फ्लैट मे घुसे। रास्कोलनिकोव यही तो चाहता था। उनके अट्टहास की आवाज घर के अन्दर तक पहुँच रही थी। राजुमिहीन ने रास्कोलनिकोव का कधा झकझोर कर डाटा, "खबरदार यहाँ इस बारे मे जो एक भी शब्द कहा ! •• मै तुम्हारा भेजा निकाल दूँगा।"

५

कमरे मे घुसते समय रास्कोलनिकोव की शक्ल से ऐसा लगता था जैसे वह बडी मुश्किल से अपनी हँसी रोक पा रहा है। उसके पीछे पीछे राजुमिहीन शर्म से लाल, घबराया और खीजता हुआ भीतर दाखिल हुआ। उस समय सचमुच उसका चेहरा और उसके हाव-भाव हास्या-स्पद दीख रहे थे। रास्कोलनिकोव ने परिचय की प्रतीक्षा के बगैर ही पोरफेरी पैत्रोविच को अभिवादन किया। पोरफेरी पैत्रोविच ने दोनो से हाथ मिलाया और गौर से उनकी ओर देखने लगा। बडी मुश्किल से रास्कोलनिकोव ने हँसी रोककर अपना परिचय देना चाहा। लेकिन उसने गभीरता का उपक्रम किया ही था कि सयोगवश उसकी नजर राजुमिहीन पर जा पडी और उसकी दबी हुई हँसी फिर फव्वारे की तरह फूट निकली। इस अनायास उल्लास से सारा वातावरण हल्का हो गया। राजुमिहीन ने जानबूझ कर इस उल्लास को और भी अति-रजित करने की कोशिश की।

"मूर्ख, शैतान!" राजुमिहीन ने बाहे घुमाते हुए कहा, जिससे पास की मेज पर रखा चाय का गिलास नीचे गिर गया। कमरे मे शीशे के टुकडे बिखर गये।

"भले आदमियो, जार का नुकसान क्यो करते हो ?" पोरफेरी पेत्रोविच ने हँसकर कहा ।

रास्कोलनिकोव अब भी पोरफेरी पैत्रोविच का हाथ थामकर हँस रहा था, और वह अपने अभिनय को सीमा से आगे बढने से रोकने का मौका ढूढ रहा था । राजुमिहीन घबराई हुई नजरो से शीशे के टूटे हुए टुकडो को देखने लगा । सहसा वह चिढकर खिडकी के आगे जा खडा हुआ । पोरफेरी पैत्रोविच अब भी हँस रहा था, लेकिन वह इस उल्लास का कारण जानना चाहता था । जेमेतोफ भी उस कमरे मे था और अब मुस्करा रहा था । उसे भी सारे दृश्य पर विस्मय हो रहा था । वह भौचक्का खडा रास्कोलनिकोव का चेहरा ताक रहा था । जेमेतोफ को देखते ही रास्कोलनिकोव सकपका गया ।

"मुझे अब इस आदमी की उपस्थिति पर गौर करना होगा," उसने सोचा और सकोच का अभिनय करते हुए कहा, "मुझे क्षमा करे, मेरा नाम रास्कोलनिकोव है ।"

"आपसे मिलकर बडी खुशी हुई ।" पोरफेरी पैत्रोविच ने कहा । "आप कितनी खुशी लेकर दाखिल हुए है । राजुमिहीन क्या तुम हमे गुडमार्निंग तक नही कहोगे ?"

'पता नही यह आज मुझ से इतना नाराज क्यो हो गया है । रास्ते मे मैने इससे सिर्फ इतना ही कहा था कि तुम निरे मजनू हो—और यह साबित भी कर दिया था—बस इतनी सी बात है ।"

"सूअर ।" राजुमिहीन ने अपनी जगह पर खडे खडे उत्तर दिया । "कोई-न-कोई कारण ज़रूर होगा जो इन्हे मजनू शब्द पर एतराज है ।" पोरफेरी नें हँसकर कहा ।

"अबे चतुर वकील । " तुम सब जहन्नुम मे जाओ ।" राजुमिहीन ने चिढकर कहा । सहसा उसे जोर की हँसी आ गई और उसका चेहरा इतना प्रफुल्लित हो गया जैसे कुछ हुआ ही न हो । उसने पोरफेरी

से कहा, "बस करो। हम सब के सब अहमक है। अब कामकाज की बाते करो। यह है मेरा दोस्त रोदियोन रोमानोविच रास्कोलनिकोव, इसे आपसे कुछ काम भी है, वाह जेमेतोफ यहाँ कैसे आये ? क्या तुम मेरे दोस्त को जानते हो ? क्या पहले भी कभी तुम दोनो की मुलाकात हुई है ?"

"इस सारी बात का क्या मतलब है," रास्कोलनिकोव ने चिन्तित होकर सोचा।

जेमेतोफ पहले तो स्तब्ध-सा खडा रहा, फिर उसने स्वाभाविक स्वर मे कहा, "अरे कल तुम्हारे फ्लैट मे ही तो हमारी मुलाकात हुई थी।"

"चलो अच्छा हुआ, मेरी मुसीबत टल गई। रोद्या पिछले हफ्ते से ही तुमसे परिचय कराने का आग्रह कर रहा है। सो तुम दोनो मेरी मदद के बिना ही एक-दूसरे से मिल चुके हो। तुम्हारा तमाखू कहाँ है ?"

पोरफेरी पैत्रोविच ड्रेसिग गाउन और साफ-सुथरे कपडे पहने बैठा था। वह पैतीस बरस का नाटा और दुहरे बदन का व्यक्ति था। उसका सर बडा और गोल था। उसके चेहरे का पीलापन रोगियो जैसा था। लेकिन उसकी भाव-मुद्राएँ तेजस्वी और व्यग्यपूर्ण थी। उसके दोहरे शरीर पर तरल प्रकाश से भरी आँखे बडी गम्भीर लगती थी।

जब उसने सुना कि रास्कोलनिकोव को उससे कुछ काम है तो उसने उसे सोफे पर अपने पास बिठा लिया और ध्यानपूर्वक उसकी बात सुनने के लिए तैयार हो गया। उसकी यह गम्भीरता अपरिचित व्यक्तियो को घबरा देती थी। रास्कोलनिकोव ने स्पष्ट और सक्षिप्त भाषा में अपने आने का कारण बताया। उसे अपना अभिनय इतना सतोषजनक लगा कि उसने पोरफेरी से आँखे मिलाने मे भी सकोच नही किया। लेकिन पोरफेरी पैत्रोविच टकटकी बाधकर उसके चेहरे को

घूरता रहा। सामने की मेज के पास बैठा राजुमिहीन बारी-बारी से दोनो के चेहरो की ओर देख रहा था, और इस बात मे गहरी दिलचस्पी दिखा रहा था।

"मूर्ख !" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन कहा।

पोरफेरी ने अफसराना ढग से कहा, "तुम्हे पुलिस को सूचित करना चाहिये कि तुम्हे इस हत्या की खबर मालूम हुई है और तुम अपनी फलॉ-फलॉ चीजे इस केस के इवार्ज से कहकर छुड़ाना चाहते हो · वरना · · लेकिन पुलिस तुम्हे खुद इस बारे मे लिखेगी।"

"यही तो सारी कठिनाई है," रास्कोलनिकोव ने घबराहट का अभिनय करने की कोशिश की। "आजकल मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नही है ·· मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता था कि मेरे पास जब भी पैसे होगे, मै अपनी चीजो को छुडा लूँगा।"

पोरफेरी पैत्रोविच इस स्पष्टीकरण से जरा भी प्रभावित न हुआ। उसने उदासीन स्वर मे उत्तर दिया, "इसमे कोई हर्ज नही, लेकिन अगर तुम चाहो तो तुम अपनी अर्जी मुझे ही सीधे दे सकते हो।"

"मामूली कोरे कागज पर ?" रास्कोलनिकोव ने बीच मे टोक कर पूछा। उसे डर था कि कागज पर पैसे न खर्च करने पडे।

"हॉ, चाहे जिस कागज पर," पोरफेरी पैत्रोविच ने व्यग्यपूर्वक आँखे सिकोडकर उत्तर दिया। रास्कोलनिकोव को न जाने क्यो लगा कि पोरफेरी ने भेद-भरे ढग से उसकी ओर देखकर आख मारी थी। 'इसे सब कुछ मालूम है', यह विचार बिजली की तरह उसके दिमाग मे कौंध गया। लेकिन उसने कहा, "माफ कीजिए, मै छोटी छोटी बातो के लिए आपका समय नष्ट कर रहा हूँ। मेरी चीजो की कीमत कुल पाच रूबल होगी, लेकिन मेरे लिए वे अमूल्य है। सच पूछिए तो जब मैने सुना कि ···

"जब मैने जोसीमोव से कहा था कि पोरफेरी बुढिया के सब

सरका दी, क्योंकि वह कालीन पर लापरवाही से सिग्रेट की राख झाड रहा था । रास्कोलनिकोव काप उठा, लेकिन पोरफेरी का ध्यान उसकी ओर नही था ।

"इन्तजार कर रहे थे ? आपको कसे पता था कि रोद्या वहाँ चीजे गिरवी रखता है ?" राजुमिहीन ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा ।

पोरफेरी पैत्रोविच ने रास्कोलनिकोव को वताया, "तुम्हारी अगूठी और घडी एक ही कागज मे लिपटी थी और उन पर तुम्हारा नाम और गिरवी की तारीख लिखी थी ··"

"आपकी नजर बडी तेज है" रास्कोलनिकोव ने मुस्कराते हुए कहा । उसने पोरफेरी से आँखे मिलाने की कोशिश की, लेकिन साहस न कर सका । सहसा वह बोला, "मैने यह इसलिए कहा, क्योकि शायद वहाँ गिरवी की बहुत सी चीजे रही होगी । उन सबको याद रखना बहुत मुश्किल है · लेकिन आपको उनका पूरा ब्यौरा याद है ··और और··

"मै भी कितना बेवकूफ और डरपोक हूँ," उसने मन-ही मन कहा ।

"बुढिया के यहाँ जिन लोगो ने चीजे रखी थी उन सबको हम जानते है । लेकिन सिर्फ तुम ही ऐसे हो जो अपनी चीजे छुडाने नही आये ।" पोरफेरी ने प्रच्छन्न व्यग से कहा ।

"मै बीमार था ।"

"मैने भी यह सुना था कि तुम्हे किसी वात का सदमा पहुँचा है । तुम्हारे चेहरे पर अब भी पीलापन है ।"

"नही अब मै बिल्कुल ठीक हूँ," रास्कोलनिकोव ने क्रोध से कहा, अगले ही क्षण उसे ख्याल आया, "कही क्रोध के कारण मेरा भेद न खुल जाय । लेकिन ये लोग मुझे सता क्यो रहे है ?"

"अभी ठीक कहाँ हुए हो," राजुमिहीन ने डाट कर कहा, "खूब ! जानते हो पोरफेरी, कल तक यह बेहोशी मे प्रलाप करता रहा, और इससे खडा तक नही हुआ जाता था। लेकिन हमारे पीठ मोडते ही यह हजरत कही खिसक गये और आधीरात तक गायब रहे ! है न विचित्र बात ! मजे की बात यह है कि उस वक्त भी इसे सरसाम था।"

"क्या सचमुच ? नही नही," पोरफेरी ने सिर हिलाकर पूछा।

"यह सब बकवास है। इस पर विश्वास मत कीजिएगा। लेकिन आपको वैसे भी विश्वास कहाँ है ?" रास्कोलनिकोव के मुँह से हटात निकल गया। पोरफेरी पैत्रोविच ने यह बात जैसे सुनी ही नही।

"लेकिन अगर तुम होश-हवास मे होते तो क्या इस तरह बाहर जाते ? तुम्हारे बाहर जाने का क्या मकसद था और छिपकर क्यो गये ? क्या तुम उस समय होश मे थे ? अब खतरा दूर हो गया, इसी लिए मै साफ साफ पूछ रहा हूँ," राजुमिहीन ने गुस्से से कहा।

"मै कल इन लोगो से तग आ गया था, इसलिए इनकी नजरो से दूर कही मकान तलाश करना चाहता था। मेरे पास काफी पैसे थे। मिस्टर जेमेतोफ ने अपनी आँखो से यह सब देखा था। आपही बताइए मिस्टर जेमेतोफ, कल मैं होश मे था या सरसाम की हालत मे था ?"

जेमेतोफ की चुप्पी से रास्कोलनिकोव को इतना क्रोध आया कि उसका गला घोटने के लिए उसकी उँगलियाँ फडकने लगी।

जेमेतोफ ने रूखे स्वर मे उत्तर दिया, "मेरा ख्याल है कि तुम होश हवाश में थे और कुछ चतुराई से बाते कर रहे थे, लेकिन तुम बहुत चिढे हुए दीखते थे।"

"निकोदिम फोमिच ने आज मुझे बताया कि उसने तुम्हे कल आधी रात के समय एक जखमी आदमी के घर मे देखा था" पोरफेरी

पैत्रोविच ने कहा ।

"देख लिया, तुम पागल नही हो रहे थे तो और क्या ? तुमने पच्चीस के पच्चीस रूबल विधवा को जनाजे के लिए दे दिए। भले आदमी उसकी मदद करनी थी तो उसे ज्यादा से ज्यादा पंद्रह बीस रूबल दे देते । कुछ अपने लिए भी तो रखते," राजुमिहीन बोला ।

'तुम्हे क्या पता, शायद मेरे हाथ कोई खजाना लग गया हो, इमीलिए तो मैने कल इतनी उदारता दिखायी ! मिस्टर जेमेतोफ को मेरे खजाने का पता है !" फिर रास्कोलनिकोव ने पोरफेरी पैत्रोविच की ओर देखकर कापते ओठो से कहा, "माफ कीजिएगा, हम व्यर्थ की बातो मे आपका समय नष्ट कर रहे है ।"

"बिल्कुल नही, बिल्कुल नही, तुम नही जानते, मुझे तुममे कितनी दिलचस्पी है । •• मुझे खुशी है कि तुम आखिर सामने आ ही गये ।"

"लेकिन हमारे लिए चाय तो मँगवाओ, मेरा गला सूखा जा रहा," राजुमिहीन बोला ।

'जरूर, जरूर, हम सब एक साथ चाय पीयेगे । लेकिन • चाय से पहले कुछ और नही खाओगे ?"

"जाओ भी तो ।" पोरफेरी पैत्रोविच चाय का आर्डर देने चला गया ।

रास्कोलनिकोव के मन मे भयकर उथल पुथल मची थी । "सबसे बडी मुसीबत तो यह है कि ये लोग कुछ भी तो नही छिपा रहे । खुल्लमखुल्ला शिकारी कुत्तो की तरह मेरा पीछा कर रहे है, और मेरे मुँह पर थूकते है ।" वह गुस्से से कापने लगा । "पोरफेरी पैत्रोविच जब तुम मुझे जानते नहीं थे तो तुमने निकोदिम फोमिच से मेरे बारे मे कैसे बातचीत की ? मुझपर खुलकर वार करो लेकिन यह बिल्ली-चूहे का खेल बन्द कर दो । शायद यह सब मै होने भी नही दूगा ! मै अभी उठकर सारी सच्चाई तुम सब लोगो के बदसूरत

चेहरो पर दे मारुगा। फिर तुम्हे पता चल जायेगा कि मै तुमसे कितनी नफरत करता हूँ।" आवेश से उसकी सास फूल गई। "लेकिन अगर यह मेरी कोरी कल्पना निकली तब ? अगर क्रोध मे आकर मैने अपना अभिनय छोड दिया, तब ? शायद ये बाते अनायास ही मुँह से निकल गयी हो। ये लोग ऐसी ही बातो के आदि है • लेकिन कुछ न कुछ माजरा जरूर है। जेमेतोफ ने यह क्यो कहा कि मै 'चतुराई' से बाते कर रहा था। हाँ उनका लहजा क्या राजुमिहीन अधा है ! इस अहमक को कभी कुछ नजर नही आता ! क्या मुझे फिर बुखार चढने वाला है ? क्या अभी पोरफेरी ने मेरी तरफ देखकर आँख मारी थी ? यह सब बकवास है। वह भला किस लिए आँख मारता ? ये लोग मुझे सता रहे है या जानबूझ कर मेरा मानसिक सतुलन बिगाड रहे है ? या मै वहमी हूँ या इनको सब पता है ? यहाँ तक कि जेमेतोफ भी गुस्ताख़ी दिखा रहा है' • क्या सचमुच उसने गुस्ताखी दिखाई है ? उसने अपना इरादा बदल लिया है। मै पहले से ही भाँप गया था कि वह ऐसा करेगा। मै यहाँ अजनबी हूँ जेमेतोफ़ रोज यहाँ आता जाता है। पोरफेरी भी उसे पराया नही समझता। मेरी वजह से ही इनकी आपस मे इतनी घुट रही है। जरूर ये मेरे बारे मे बाते कर रहे थे। क्या इन्हे फ्लैट का किस्सा मालूम है ? जब मैने कहा कि मै दूसरा फ्लैट किराये पर लेने के लिये बाहर गया था तो इन्होने मुझे टोका नही मैने जानबूझ कर यह बात कही थी बाद मे काम आयेगी • •सरसाम ! खूब ! हा ! हा ! हा ! तो इन्हे कल रातवाली घटना मालूम थी ! लेकिन मेरी मा आई है यह नही जानते। खूसट बुढिया ने आने की तारीख पेंसिल से जो लिखी थी।• •तुम लोग मुझे पकड नही सकोगे।• •तुम्हारे पास सबूत कहाँ है ?• • लाओ सबूत ! फ्लैट की बात भी सच नही, वह मेरी सनक समझी जायेगी। मै जानता हूँ

इनसे कैसी बाते कहनी चाहिए। क्या फ्लैट वाली बात का इन्हे पता है ? यह मालूम किये वगैर मै यहाँ से नही जाऊगा। मै यहाँ किस काम से आया था ! मुझे इतना गुस्सा क्यो आ रहा है ? मै भी निरा मूर्ख हूँ। बीमारी का अभिनय ही ठीक रहेगा • पोरफेरी मुझे भाँप रहा है। जरूर पकड़ना चाहता है। मै यहाँ क्यो आया था ?"

पोरफेरी पैत्रोविच जल्दी वापिस आ गया। उसने हँसकर राजुमिहीन से कहा, "अरे भाई, तुम्हारी पार्टी से आने के बाद मेरा सर• • • और मै परेशान भी हूँ।"

"क्या आपको मजा आया ? कल जब मै चला आया था तो बडी दिलचस्प बहस हो रही थी। कौनसा पक्ष जीता ?"

"जीतता कौन ! वही शाश्वत बाते ! जानते हो रोद्या कल क्या बहस हो रही थी ? अपराध नाम की कोई चीज है या नही ? मैने तुम्हे बताया था कि बोलते बोलते हमारा सर चकरा गया था।"

"इसमे कौनसी विचित्र बात है ! यह तो रोजमर्रा की सामाजिक समस्या है।" रास्कोलनिकोव ने स्वाभाविक स्वर मे उत्तर दिया।

"नही सवाल इस तरह नही पूछा गया था।" पोरफेरी बोला।

राजुमिहीन ने सदा की तरह उत्तेजित होकर कहा, "सुनो रोदियोन मै तुम्हारी राय जानना चाहता हूँ। मै डट कर इन लोगो के मत का खडन कर रहा था, और चाहता था कि तुम भी मेरी मदद करते। मैने इनसे कहा था कि तुम भी पार्टी मे आ रहे हो। • बहस समाजवादी सिद्धान्त से शुरू हुई। तुम जानते हो कि समाजवादी अपराध को कुत्सित समाज विधान के विरुद्ध एक प्रोटेस्ट से अधिक कुछ नही समझते . वे अपराध का और कोई कारण स्वीकार नही करते।"

"यह तुम गलत कह रहे हो।" पोरफेरी ने हँस कर कहा। इस पर राजुमिहीन बीच मे ही टोक कर बोला—

"हाँ मै ठीक कहता हूँ। मै तुम्हे समाजवादियो के पैम्फलेट

दिखाऊँगा। वे हर चीज को 'परिस्थितिजन्य' मानते है। यह उनका प्रिय शब्द है, जिसका अर्थ है कि अगर समाज-विधान ठीक हो जाये तो अपराध फौरन बद हो जायेगा, क्योकि तब क्षणभर मे ही लोग सदाचारी और पुण्यात्मा बन जायेगे। वे मानव-स्वभाव नाम की वस्तु का तो अस्तित्व ही नही मानते। वे नही मानते कि सजीव ऐतिहासिक विकास परपरा से मानवता धीरे-धीरे सदाचरण की ओर बढ रही है, उनका विश्वास हे कि किसी गणितशील दिमाग से निकला हुआ समाज-विधान फौरन सारी मानवता को सगठित करके उन्हे न्यायप्रिय और पुण्यात्मा बना देगा। इसीलिये वे इतिहास से घृणा करते है और कहते है, "इतिहास मे कुरूपता और मूर्खता के सिवा कुछ नही।" इसीलिये उन्हे सजीव जीवन-क्रिया से चिढ है। वे 'सजीव-आत्मा' नही चाहते, क्योकि सजीव आत्मा जीवन की माँग करती है। सजीव आत्मा यात्रिक नियमो को नही मानती। इसीलिये आत्मा पर उन्हे इतना सदेह है और वे आत्मा को निकृष्ट समझते है। वे चाहते है, बदबूदार, रबड की निर्जीव आत्मा, जिसमे इच्छाशक्ति न हो, जो दास रहे और कभी विद्रोह न करे। वे हर चीज को मकान की दीवारो के नक्शे की तरह बेजान समझते है। मकान तो इस तरह तैयार हो जाता है लेकिन मानव स्वभाव अभी इस मकान मे नजरबद होने को तैयार नही है, क्योकि वह अभी जीवित है और कब्रिस्तान मे इतनी जल्दी जाकर नही दफन होना चाहता। आप तर्क से मानव-स्वभाव को नही लाँघ सकते। तर्क मे केवल तीन सभावनाएँ होती है, लेकिन जीवन मे लाखो करोडो सभावनाएँ होती है। आप कहते है, इन करोडो को अपनी आसानी के लिये काट छाँट कर कम कर दो, कैसी सीधी बात है! अधिक सोचने की कोई ज़रूरत नही। सबसे बडी बात है 'सोचो मत!' जीवन का सारा रहस्य छपे हुए दो पृष्ठो मे है।"

"बस! अब ढोल बजना शुरू हो गया। कोई इसे रोको!" पोरफेरी

ने हँसते हुए रास्कोलनिकोव से कहा, "जरा कल्पना कीजिये, हम छः आदमी कल रात शराब के नशे मे इसी तरह की बकझक करते रहे थे। नही भाई, तुम गलती पर हो। अपराध मे सचमुच परिस्थितियो का भारी हाथ रहता है। मै तुम्हे इसका यकीन दिला सकता हूँ।"

"मै जानता हूँ, लेकिन यह बताइये कि एक चालीस बरस का आदमी दस बरस के बच्चे को मारता है। क्या वह परिस्थितियो के कारण ऐसा करता है?"

"हाँ—ऐसे अपराधो के पीछे परिस्थितियो का हाथ रहता है।" पोरफ़ेरी ने गभीरतापूर्वक कहा।

राजुमिहीन गुस्से से पागल हो गया। "जी हाँ, अगर आप चाहे तो मै साबित कर सकता हूँ कि आपकी सफेद बिरौनियो का कारण इवान के गिर्जे का ढाई सौ फुट ऊँचा होना है। मै इस बात को स्पष्ट, नपीतुली, और प्रगतिशील भाषा मे सहृदयतापूर्वक समझा दूँगा। कहिये शर्त लगायेगे?"

"लगा दी। अब जरा सुनूँ तो कैसे साबित करोगे।"

राजुमिहीन उछल कर खडा हो गया और हाथ मटकाता हुआ बोला, "तुमसे बात कहने से क्या फायदा! तुम जानबूझ कर पाखड रचाया करते हो! रोदियोन, तुम इसे नही जानते। कल इसने बाकी लोगो को बेवकूफ बनाने के लिये उनका पक्ष लिया। इसकी बकवास सुनकर वे खुशी से बावले हो रहे थे। यह आदमी लगातार पद्रह दिन तक लोगो को भुलावे मे रख सकता है। पिछले साल दो महीने तक इसने हमे यकीन दिला रखा कि यह सन्यासी बनने जा रहा है। अभी कुछ दिन पहले इसने खबर उडा दी थी कि यह शादी करने वाला है, और इसने सचमुच नये कपडे भी बनवा लिये थे। हम सबने इसे बधाई दी, लेकिन दुल्हिन का नाम निशान आज तक कही नजर नही आया!"

"नही तुम गलत कह रहे हो। पहले मैने कपडे सिलवाये थे, जिससे

मेरे मन मे तुम लोगो को बुद्धू बनाने की इच्छा हुई।"

"आप क्या इतने बडे चालबाज है ?"

"आपने कुछ और ही समझा था क्या ! जरा ठहरिये मै आपको भी बुद्धू बनाता हूँ। नही नही, मैं तुम से सच्ची बात ही कहूँगा, आज की बहस से मुझे तुम्हारा एक लेख याद आ गया जिसका शीर्षक शायद 'अपराध' था। मुझे ठीक से याद नही • दो महीने पहले यह लेख मैने पीरियोडिकल रिव्यू मे पढा था।'

"मेरा लेख ? 'पीरियोडिकल रिव्यू' मे ?" रास्कोलनिकोव ने चकित स्वर मे पूछा "छ महीने पहले मैने एक पुस्तक पर एक लेख लिखा था, लेकिन वह लेख तो मैने 'वीकली रिव्यू' मे भेजा था !"

"मगर वह तो 'पीरियोडिकल रिव्यू मे ही छपा था।"

"वीकली रिव्यू बद हो गया था, इसलिए तुम्हारा लेख इसमे न छप सका।"

"यह सच है, लेकिन बाद मे दोनो पत्रिकाएँ सयुक्त हो गई थी, इसलिए तुम्हारा लेख पीरियोडिकल रिव्यू में ही छपा था। तुम्हे नही मालूम ?"

रास्कोलनिकोव को सचमुच नही मालूम था।

"तुम चाहो तो उनसे अपने लेख का पारिश्रमिक भी माग सकते हो। अरे, तुम भी कैसे अजब फक्कड हो ! तुम्हे अपने फायदे की बातो का भी ख्याल नही रहता। मै तुम्हे यकीन दिलाता हूँ कि यह बात सच है।"

"शाबास रोद्या। मुझे भी इसका पता नही था। मै आज ही रीडिग रूम मे जाकर तुम्हारा लेख पढूँगा। दो महीने पहले छपा था ? किस तारीख को ? खैर कोई बात नही, मै मालूम कर लूँगा। तुमने यह बात हमसे छिपा कर क्यो रखी ?" राजुमिहीन ने प्रसन्न होकर कहा।

"आपको कैसे पता चला कि वह लेख मेरा था ? मैने तो पूरा नाम भी नही दिया था ।"

"कुछ दिन हुए मुझे सम्पादक ने बताया था । मै उसे अच्छी तरह जानता हूँ • उस लेख मे मुझे कुछ दिलचस्पी थी । जहाँ तक मुझे याद है उस लेख मे जुर्म करने से पहले और बाद की मानसिक स्थिति का विश्लेषण किया गया था और तुम्हारा मन्तव्य था कि अपराध और बीमारी हमेशा साथ रहते है । बात बडी मौलिक है, लेकिन अन्त मे तुमने बिना समझे-बूझे एक बात लिखी है—मुझे उसमे ज्यादा दिलचस्पी है । तुम्हे याद होगा, तुमने लिखा है कि कुछ लोगो को अपराध और अनैतिक आचरण करने का पूरा अधिकार है और कानून उन पर लागू नही होना चाहिए ।"

पोरफेरी ने उसके विचारो को जिस तरह अतिरजित करके पेश किया, उससे रास्कोलनिकोव को हँसी आ गई ।

"क्या मतलब ? अपराध का अधिकार ? कही परिस्थियो के कारण तो नही," राजुमिहीन ने चौक कर पूछा ।

"नही," पोरफेरी ने उत्तर दिया । "उस लेख मे लोगो को 'साधारण' और 'असाधारण' की श्रेणी मे बाँटा गया है । साधारण लोगो के लिए नैतिक नियमो का पालन करना जरूरी है । वे कानून की सीमा का उल्लघन नही कर सकते, क्यो कि वे 'माधारण' है, लेकिन असाधारण व्यक्ति जो चाहे कर सकते है, क्यो कि वे 'असाधारण' है । तुम्हारे लेख का यही साराश था न ?"

"क्या मतलव ? क्या सचमुच ऐसा हो सकता है ?" राजुमिहीन ने चकित होकर पूछा ।

रास्कोलनिकोव फिर मुस्कराया । वह समझ गया कि ये लोग उसे किस दिशा मे खदेडना चाहते है । उसने इस चुनौती को स्वीकार करके विनयपूर्वक कहा, "मेरा अभिप्राय यह नही था, लेकिन आपने इसे बडे

उपयुक्त शब्दो मे व्यक्त किया है। फर्क इतना ही है कि मै यह नही समझता कि असाधारण लोगो को हमेशा अनैतिक कार्य करने का अधिकार है। भला ऐसे सिद्धान्त को कौन प्रकाशित करेगा ? मैने तो इस बात का इशारा भर किया था कि एक असाधारण व्यक्ति को अपनी महत्वकाक्षा की पूर्ति के लिए (जो कि सारी मानव जाति के लिए लाभदायक हो सकती है) अधिकार है कि वह अपने रास्ते की बाधाओ को दूर कर सके ''यह अधिकार कानूनी नही है बल्कि उसके अन्त करण के निर्णय पर निर्भर करता है। आप कहते है कि लेख मे यह बात स्पष्ट नही की गई। लीजिए, मैं इसे स्पष्ट किये देता हूँ। अगर केप्लर और न्यूटन के आविष्कारो के लिए एक एक दर्जन या सौ से भी अधिक व्यक्तियो के जीवन के बलिदान की जरूरत पडती तो मानवता की भलाई के लिए उन्हे इस बात का अधिकार था। लेकिन इसका यह अर्थ नही है कि न्यूटन् को अधाधुँध लोगो की हत्या करने या बाजार मे से चोरी करने का भी अधिकार था। मैने लेख मे यह भी लिखा है कि ससार के बडे बडे नेता और राजनीतिज्ञ—लाइकर गस सोलन्, मुहम्मद, नैपोलियन सब के सब अपराधी थे, क्योकि उन्होने अपने पूर्वजो की पवित्र नैतिक मान्यताओ का उल्लघन करके नये सिद्धान्त बनाये। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्हे रक्तपात भी करना पडा, निर्दोष और साहसी विरोधियो का। इस लिए मानवता के ये विलक्षण हित-साधक हत्यारे भी कहे जा सकते है। मेरा यह कहना है कि सब महान व्यक्ति, यहाँ तक कि वे व्यक्ति भी जिनमे जरा-सी असाधारणता है, और जो मानवता को नये विचार दे सकते है, उनमें भी अपराध का कुछ न कुछ अश रहता है, नही तो वे साधारणता की दलदल से नही निकल सकते और न वे उस दलदल मे रहना ही पसन्द करेंगे। मेरा ख्याल है कि उन्हे ऐसा करना भी नही चाहिए, क्यो कि यह उनकी प्रकृति के विरुद्ध होगा। ये विचार नये नही है। यह बात

हजारो बार पुस्तको मे लिखी गयी है । रही मेरी बात सो मै व्यक्तियो को पूर्वनिश्चित श्रेणियो मे बाँटना पसन्द नही करता । मेरा कहना तो सिर्फ यह है कि आमतौर पर प्रकृति के नियमानुसार ससार मे दो तरह के लोग होते है—साधारण कोटि के जो केवल अपनी जाति की ही वृद्धि कर सकते है और दूसरे वे प्रतिभाशाली लोग जो नये शब्द को वाणी देते है । निश्चय ही इन दो श्रेणियो के बीच मे असख्य दूसरी श्रेणियाँ भी है, लेकिन दोनो प्रधान श्रेणियो की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट है । साधारण लोग दकियानूसी और कानून के पाबन्द होते है । वे अनुशासन मे रहना पसन्द करते है । यह कोई अपमानजनक बात नही है, क्यो कि अनुशासन मे रहना उनका कर्त्तव्य और पेशा है । दूसरी श्रेणी के लोग अपनी क्षमताओ के मुताबिक पुरानी रूढियो को तोडते है । इन लोगो के अपराध सापेक्षिक और विविध होते है । उनमे से अधिकतर भविष्य को सुधारने के लिए वर्तमान का विनाश करते है । मेरा विश्वास है कि अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अगर किसी असाधारण व्यक्ति को किसी लाश पर से या रक्त की नदी मे से होकर भी गुजरना पडे तो उसकी अन्तरात्मा उसको इसकी इजाजत दे देगी । लेकिन याद रखिए कि यह सब उद्देश्य की महानता पर निर्भर करता है । इसी दृष्टिकोण से मैने 'अपराध के अधिकार' का प्रतिपादन किया है । आपको याद होगा कि लेख के शुरू मे ही कानूनी सवाल उठाया गया था लेकिन इसमे किसी को परेशान होने की कोई जरूरत नही, क्योकि जनता स्वय इस अधिकार को स्वीकार नही करती, और असाधारण व्यक्तियो को सजा देकर या उन्हे फाँसी पर चढा कर अपने दकियानूसी पेशे का सबूत देती है । लेकिन यही जनता कुछ समय के बाद इन्हीं अपराधियो की मूर्तियाँ बना कर उनकी पूजा करने लगती है । साधारण कोटि का मनुष्य हमेशा 'वर्तमान' की सोचता है, असाधारण व्यक्ति 'भविष्य' की सोचता है । साधारण व्यक्ति ससार का रक्षण करता

है, असाधारण उसे आगे ले जाता है। हर श्रेणी को जिन्दा रहने का समान अधिकार है। मेरी नजरो मे दोनो बराबर है, और कयामत तक दोनो इसी तरह चलते रहेगे, जब तक नया जेरूसलम* नही आता।"

"तब क्या तुम नये जेरूसलम मे विश्वास करते हो ?"

"हाँ" रास्कोलनिकोव ने दृढ स्वर मे उत्तर दिया। वह लगातार कालीन की तरफ देख रहा था।

"और · और तुम ईश्वर मे भी विश्वास करते हो ? मेरी जिज्ञासा को क्षमा करना।"

"हाँ करता हूँ।"

"तुम यह भी मानते हो कि लजारस कब्र मे से उठा था ?"

"हाँ · मानता हूँ, लेकिन आप यह सब किस लिये पूछ रहे है ?"

"तुम इन बातो को अक्षरश मानते हो ?"

"हाँ"

"ऐसा मत कहो · मैने तो कौतूहलवश पूछा था। माफ करना। लेकिन हम जिस सवाल पर बहस कर रहे थे, उसी पर लौट चले। कई असाधारण व्यक्तियो को फाँसी की बजाये · "

"जीवनकाल मे ही विजय मिलती है ? हाँ कइयो के सपने उनके जीवन काल मे ही पूरे हो जाते है और फिर · "

"फिर वे और लोगो को प्राण दड देते है ?"

"हाँ, अगर यह जरूरी हो तो। आपकी टिप्पणी बडी चुटीली है।"

"धन्यवाद लेकिन यह बताओ कि तुम साधारण व्यक्तियों को असाधारण व्यक्तियो से कैसे अलग करोगे ? क्या उनकी कोई जन्मजात विशेषताएँ होती है ? मेरा ख्याल है, उनकी बाह्य परिभाषा भी जरूर होनी चाहिये। एक व्यावहारिक कानून के पाबद नागरिक

*ईसाइयों का सतयुग।

का कौतूहल माफ करना, लेकिन क्या असाधारण लोगो की विशेष वर्दी नही होनी चाहिये ? या उनके शरीर को दाग कर कोई निशान बना देना चाहिये ताकि समाज मे उपद्रव न मचे, और न एक श्रेणी के लोग अपने को दूसरी श्रेणी का समझ कर 'अपने रास्ते की बाधाएं दूर करने' पर उतारू हो जाये, जैसा कि अभी तुमने बडे हर्ष से कहा था ।

"ओह, ऐसा अक्सर होता है । आपकी यह उक्ति पहले से भी अधिक व्यग्यपूर्ण है ।"

"धन्यवाद ।"

"इसकी कोई जरूरत नही । लेकिन याद रखिए, ऐसी गलत-फहमी सिर्फ साधारण श्रेणी के लोगो मे हो सकती है । अपने आज्ञाकारी स्वभाव के बावजूद भी कई बार उनमे प्रकृति-सुलभ चचलता आ जाती है । (ऐसी चचलता अक्सर गाय-भैंसो मे भी रहती है) और वे अपने को अग्रगामी, सहारक और नये 'आन्दोलन' के नेता समझ बैठते है, जबकि सचमुच के 'नये' लोगों को दकियानूस समझ कर उनसे नफरत की जाती है । लेकिन यहाँ भी खतरे का कोई कारण नही, क्योकि ऐसे लोग बहुत ज्यादा आगे नही जाते । कई बार अगर उनकी अच्छी मरम्मत कर दी जाये, तो उनके दिमाग की गर्मी शान्त हो जाती है । इसकी भी जरूरत नही, क्योकि वे खुद-बखुद सुधर जाते है । ऐसे लोग बडे आत्मभीरु होते है और एक-दूसरे को सुधारने मे सहायता करते है या स्वय ही अपने को सजा दे लेते है प्रायश्चित द्वारा सबके सामने अपने को नेक और पवित्र बना लेते है । सच पूछिये तो आपको बिल्कुल नही घबराना चाहिए यह प्रकृति का विधान है ।"

"तुमने मेरी एक शका तो दूर कर दी, लेकिन यह बताओ, ऐसे असाधारण लोगो की, जिन्हे दूसरो को मारने का अधिकार है, कितनी सख्या है ? मै उनके आगे सर झुकाने को तैयार हूँ बशर्ते उनकी सख्या अधिक न हो, ठीक है न ?"

आप इसकी चिता भी न करे। नये विचारो वाले लोगो की सख्या बहुत कम होती है। इसके पीछे निश्चय ही प्रकृति का कोई विधान काम कर रहा है जो किसी न किसी दिन हमे मालूम हो जायेगा, मानवजाति के अधिकाश सदस्य कच्ची धातु है, इन्हे बड़ी मेहनत और प्रयोगो के बाद विभिन्न नस्लो और जातियो के सम्मिश्रण से तैयार किया गया है ताकि हजारो लाखो मे कम से कम एक व्यक्ति तो स्वतन्त्र विचारो वाला पैदा हो। करोडो व्यक्तियो मे 'जीनियस' केवल एक ही होता है और मानव जाति का सिरमौर महान प्रतिभाशाली व्यक्ति अरबो-खरबो मे जाकर शायद एक मिले। मैने इस रहस्यमयी क्रिया के भीतर झाककर तो नही देखा। लेकिन यह सब केवल सयोग नही हो सकता। इसके पीछे जरूर कोई निश्चित सिद्धान्त काम कर रहा है।"

"क्या तुम दोनो मजाक तो नही कर रहे ? एक-दूसरे को बुद्धू बना रहे हो ? रोद्या, क्या सचमुच तुम इन बातो मे विश्वास करते हो ?" राजुमिहीन चिल्लाया।

रास्कोलनिकोव ने अपना पीला, शोकपूर्ण चेहरा ऊपर उठाया, लेकिन वह चुप रहा। राजुमिहीन को इस चेहरे के मुकाबले मे पोरफेरी के चेहरे का अशिष्ट और व्यग्यपूर्ण भाव विचित्र लगा।

"भाई तुम सच ही तो कह रहे हो यह विचार कोई नया नही है। हमने हजारो बार इसे पढा और सुना है। लेकिन तुम अन्तरात्मा का नाम लेकर रक्तपात की इजाजत दे रहे हो। वह भी कट्टरता से—यह बात निश्चय ही मौलिक है . शायद तुम्हारे लेख का यही भावार्थ है · लेकिन मेरी दृष्टि मे अन्तरात्मा के नाम पर रक्तपात को औचित्य देना · सरकारी और कानूनी औचित्य से अधिक भयकर है," राजुमिहीन ने कहा।

"तुम ठीक कहते हो। इसमें अधिक भयकरता है।" पोरफेरी ने

भी समर्थन किया ।

"मै वह लेख जरूर पढ़ूगा । तुमने कही न कही अतिशयोक्ति कर दी होगी । भला तुम ऐसी बाते सोच सकते हो ।"

"लेख मे तो तुम्हे इसका सकेत भर ही मिलेगा ।" रास्कोलनिकोव ने कहा ।

"हाँ अपराध के प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण तो स्पष्ट हो गया, लेकिन इस गुस्ताखी को माफ करना, मै तुम्हे नाहक परेशान कर रहा हूँ • साधारण-असाधारण का भेद भी मेरी समझ मे आ गया, लेकिन यह बताओ कि अगर कोई आदमी या युवक अपने को असाधारण व्यक्ति समझ कर अपने रास्ते की बाधाये दूर करने लगे अपनी महान योजना के लिए उसे धन की जरूरत हो और धन प्राप्त करने के लिए वह तुम समझ गये न ?"

जेमेतोफ ने कहकहा लगाया । रास्कोलनिकोव ने अपनी आखे ऊपर उठाये बिना ही शान्त स्वर मे उत्तर दिया, "यह तो मानना पडेगा कि ऐसी बाते तो होती ही रहेगी । विशेषकर मूर्ख, दम्भी और तरुण लोग इस जाल मे फँसते जायेगे । मेरा भी यही मतलब था ।"

"फिर क्या होगा ?"

"फिर" रास्कोलनिकोव मुस्कराया । "फिर वही होगा जो हमेशा से होता आया है । मेरा इसमे कोई दोष नही ।"

राजुमिहीन ने कहा, "मै रक्तपात का समर्थक हूँ । समाज की रक्षा के लिए जेले, निर्वासन, अपराध की खोज के विभाग, आजीवन कारावास आदि सस्थाये बनी है । इसमे डरने का कोई कारण नही, बस सिर्फ अपराधी को पकडना भर आपका काम है ।"

'और अगर हम अपराधी को पकड ले तब !"

"तब वह अपनी करनी का फल पायेगा," रास्कोलनिकोव ने उत्तर दिया।

"आपका तर्क तो दुरुस्त है लेकिन उसकी आत्मा का क्या होगा ?"

"उससे आपको क्या ?"

"इसानियत के नाते ।"

"अगर उसकी अन्तरात्मा है तो वह अपनी करनी के लिए यन्त्रणा झेलेगा । यही उसकी सही सजा होगी । इसके अलावा कैद भी ।"

राजुमिहीन ने चिढकर पूछा, "लेकिन जिन महान प्रतिभावान व्यक्तियो ने खून बहाया है, क्या उन्हे कोई यत्रणा नही झेलनी चाहिए ?"

"चाहिए·· चाहिए का क्या मतलब ? किसी की आज्ञा या निषेध की यह बात नही है । उसे अगर अपने द्वारा पीडित व्यक्तियो के प्रति सहानुभूति होगी तो उसे जरूर मानसिक यत्रणा होगी । महान प्रतिभा और विशाल हृदय रखने वालो के लिए पीडा और यन्त्रणा का अनुभव करना अनिवार्य है । महान व्यक्तियो को इस पृथ्वी पर महान वेदना भी मिलती है," रास्कोलनिकोव ने मानो कोई स्वप्न देखते हुए कहा ।

अगले क्षण उसने अपनी दृष्टि उठाई और सब की ओर देख कर मुस्कराते हुए वह अपनी टोपी उठाकर चलने के लिए तैयार हो गया । उसके व्यवहार मे एक विचित्र गभीरता आ गई थी । सब लोग उठकर खडे हो गये ।

पोरफेरी पेत्रोविच ने फिर कहा, "मै एक छोटा-सा सवाल पूछे बिना नही रह सकता । तुम चाहे नाराज होकर मुझे गालिया ही क्यो न दो, लेकिन यह सवाल इसलिए जरूरी है कि मै मूल बात को भूलना नही चाहता ।"

'अच्छा तो पूछिए अपना छोटा-सा सवाल," रास्कोलनिकोव ने गभीर स्वर मे कहा ।

"मै अपने सवाल को ठीक शब्दो मे व्यक्त नही कर सकता·· यह एक मनोवैज्ञानिक, उद्धत कौतूहल मात्र है । जब तुमने यह लेख लिखा तब निश्चय ही तुम अपने आपको · असाधारण समझ रहे होगे·· यह

ठीक है या नही ?"

"हो सकता है," रास्कोलनिकोव ने चिढकर जवाब दिया।

राजुमिहीन बेचैन हो गया।

"अगर ऐसी बात है तो क्या तुम आर्थिक कठिनाइयो से या मानवता की भलाई के लिए सब बाधाओ को दूर करने की खातिर डाकाजनी और हत्या कर सकते हो ?"

यह कहकर पोरफेरी ने फिर आँख मारी और मुस्करा दिया।

"अगर ऐसा कर भी सकूँ तो आपको तो नही बताऊँगा," रास्कोलनिकोव ने उद्दण्ड, घृणापूर्ण शब्दो मे कहा।

"नही, मै तो सिर्फ साहित्यिक दृष्टिकोण से तुम्हारे लेख मे दिलचस्पी ले रहा हूँ।"

"छि यह कैसी बदतमीजी है," रास्कोलनिकोव ने मन ही मन क्षुब्ध होकर सोचा। फिर रूखे स्वर मे बोला, "देखिए, मैं अपने को न मौहम्मद समझता हू, न नैपोलियन। इसलिए किसी स्थिति मे मुझे क्या करना चाहिए, यह मै नही बता सकता।"

"अमा यार, जाने दो ? क्या आजकल हम सब रूसी अपने को नैपोलियन नही समझते ?' पोरफेरी पैत्रोविच ने व्यग्य किया।

इस व्यग्य के पीछे कुछ और भी था।

"शायद इन भावी नैपोलियनो मे से ही किसी ने पिछले हफ्ते बेचारी एल्योना इवानोव्ना की हत्या कर दी।" जेमेतोफ कोने मे से बोला।

रास्कोलनिकोव चुप रहा, लेकिन गौर से पोरफेरी के चेहरे की ओर देखने लगा। राजुमिहीन के माथे पर त्योरियाँ पड गई थी। वह चिढकर सबकी ओर देख रहा था। कुछ देर के लिए एक अवसादभरी खामोशी छायी रही। रास्कोलनिकोव उठकर चलने लगा।

पोरफेरी ने अतिशय शिष्टता से अपना हाथ बढाते हुए कहा,

"बस इतनी जल्दी ही चल दिए ? तुम्हारा परिचय पाकर बड़ी खुशी हुई। रही तुम्हारे काम की बात सो बिना किसी झिझक के अर्जी लिख देना या एक दो दिन के भीतर मेरे पास दफ्तर मे चले आना। मै कल ग्यारह बजे वहाँ जरूर रहूँगा। हम सारा मामला तै कर लेगे। तुम बुढिया के आखिरी ग्राहक थे, इसलिए शायद तुम इस हत्या के बारे मे कुछ बता सको।"

"आप पूरे सरकारी ढग से जिरह करना चाहते है ?" रास्कोलनिकोव ने तेजी मे पूछा।

"जिरह किस लिए ? अभी उसकी कोई जरूरत रही। तुम मेरा मतलब नही समझे। मै कोई मौका नही खोना चाहता। और मैने बुढिया के सब ग्राहको से पूछताछ कर ली है। कुछ ने गवाही भी दी है सिर्फ तुम्ही बाकी रहे हो। अरे हाँ मैं क्या पूछना चाहता था ?" सहसा पोरफेरी ने राजुमिहीन की ओर मुडकर कहा। "उस दिन तुम निकोलाई की बातो मे मेरे कान खाये जा रहे थे। मै जानता हूँ, अच्छी तरह जानता हूँ।" फिर उसने रास्कोलनिकोव की ओर मुडकर कहा, "वह बिल्कुल निर्दोष है, लेकिन हम क्या करे ? हमे दिमित्री को भी परेशान करना पडा बस इतनी सी बात है कि जब तुम सीढियो पर गये थे तब सात बज चुके थे न ?"

"हाँ," रास्कोलनिकोव ने उत्तर दिया। तत्काल उसे अपने ऊपर गुस्सा आया कि उसने यह बात स्वीकार क्यो कर ली।

"सात और आठ बजे के दरम्यान क्या दूसरी मजिल के किसी फ्लैट मे तुमने दो रगसाजो को काम करते हुए नही देखा था ? सोचकर जवाब दो, तुम्हारे जवाब पर उन दोनो का भविष्य निर्भर करता है।"

"रगसाज ? नही, मैने उन्हे नही देखा," रास्कोलनिकोव ने विस्मृति का अभिनय करते हुए कहा। लेकिन मन ही मन वह इस चिता से बेहोश हुआ जा रहा था कि कही वह फिर जाल मे न फस

जाये। "नही, मुझे किसी फ्लैट का दरवाजा खुला नही नजर आया था • लेकिन चौथी मजिल पर, (अब उसे जाल का पूरा ज्ञान हो गया था) मुझे याद है, अल्योना इवानोव्ना के सामने वाले फ्लैट मे मे मैने किसी को बाहर निकलते देखा था। अरे हाँ याद आ गया • कुछ मजदूर एक सोफा उठा कर ला रहे थे, वे मुझसे टकरा भी गये थे। लेकिन मैने न किसी रगसाज को देखा, न ही किसी फ्लैट का दरवाजा खुला हुआ था नही बिल्कुल नही।"

राजुमिहीन जैसे कुछ सोचकर चौक उठा, उसने पूछा, "क्या मतलब ? रगसाज तो हत्या के दिन वहाँ काम कर रहे थे। यह तो हत्या से तीन दिन पहले वहाँ गया था। तुम यह कैसी पूछताछ कर रहे हो ?"

"उफ ! मैने सब गडबड कर दिया" पोरफेरी ने अपना माथा ठोक कर कहा, "इस काम ने मेरा दिमाग खराब कर दिया है।" फिर उसने रास्कोलनिकोव से क्षमा-याचना करते हुए कहा, "सात से आठ बजे के दरम्यान किसी ने उन रगसाजो को काम करते देखा था या नही, यह जानना हमारे लिए बडा जरूरी है मैने सोचा शायद तुम इस बारे मे कुछ बता सको मुझसे गडबड हो गई।'

"तुम्हे इसीलिये ज्यादा सावधान रहना चाहिये," राजुमिहीन ने रोषपूर्वक कहा।

पोरफेरी पैत्रोविच शिष्टतापूर्वक दोनो को दरवाजे तक छोडने आया।

दोनो रोष भरे मन से सडक पर आये। कुछ देर तक दोनो चुप रहे। रास्कोलनिकोव ने गहरी साँस ली।

६

'मैं विश्वास नही करता। कभी नही कर सकता।" राजुमिहीन रास्कोलनिकोव के तर्कों का खण्डन करने की कोशिश कर रहा था। दोनो बेकालेव के बोर्डिंग हाउस के नजदीक पहुँच गये थे, जहाँ रास्कोलनिकोव की माँ और बहन उसका इन्तजार कर रही थी। राजुमिहीन बार-बार आवेश मे आकर खडा हो जाता था। आज पहली बार दोनो में 'उस बात की' चर्चा हुई थी।

"विश्वास नही होता तो मत करो। तुम तो सदा की तरह आज भी अधे थे, लेकिन मैं उनके हर शब्द को तोल रहा था," रास्कोलनिकोव ने मुस्करा कर कहा।

"तुम शक्की आदमी हो, इसीलिए तुम उनके शब्दो को तोल रहे थे···हूँ, मैं यह मानता हूँ पोरफेरी की बातो का लहजा कुछ अजब था। वह कम्बख्त जेमेतोफ तो और भी ज्यादा · तुम ठीक कहते हो, दाल मे जरूर कुछ काला था, लेकिन क्यो ?"

"उसने कल रात के बाद अपनी राय बदल ली है।"

"बिल्कुल गलत! अगर ऐसी बेवकूफी उसके दिमाग मे आती तो वे जरूर उसे छिपाते ताकि तुम उनकी चाले न देख सको और वे तुम्हे बाद

मे पकड सके • लेकिन यह सिर्फ उनकी धृष्टता और लापरवाही थी ।"

"अगर उनके पास सबूत होते, या शक का कोई कारण होता तो वे मुझसे जानकारी हासिल करने के लिये अपना सन्देह छिपाते । लेकिन उनके पास एक भी सबूत नही है । यह सब निरी मरीचिका है । एक दिमागी ख्याल है, इसलिये वे मुझे गुस्ताखी से नीचा दिखाना चाहते है । उसे कोई सबूत नही मिला इसलिए चिढकर उसने मेरे सामने अपने मन की परेशानी बक दी • हो सकता है, उसके दिमाग मे कोई और स्कीम हो, क्योकि वह होशियार आदमी मालूम होता है । शायद वह झूठमूठ मुझे डराने की कोशिश कर रहा था । भाई इन लोगो की एक खास मनोवृत्ति होती है--इन बातो पर मुझे ग्लानि आती है । छोडो ।"

"लेकिन यह कितनी अपमानजनक मनोवृत्ति है ! मै सब समझता हूँ । अच्छा हुआ, आखिर आज हमने खुलकर ये बाते कर ली । सच पूछो तो यह विचार उनके दिमाग मे बहुत दिनो से है । विचार भी नही, मामूली शक । उससे क्या होता है ? उनके पास शक का क्या आधार है ? तुम नही जानते इस बात पर मै उनसे कितना नाराज हुआ था ! जरा सोचो तो सही कि गरीबी और मानसिक चिन्ताओ का मारा हुआ एक बिचारा विद्यार्थी, जो पागल होने के करीब है, जो शक्की, स्वाभिमानी और अहकारी है, जिसने पिछले छै महीने से किसी से बात नही की और जो फटे-पुराने कपडे और जूते पहनने के लिए मजबूर है, उससे अगर कोई मनहूस पुलिसमैन गुस्ताखी से पेश आये और कर्जे की हुण्डी उसके मुँह पर दे मारे, विशेषकर जब वह सुबह से भूखा हो और नये रोगन की बू और भीड और गर्मी असह्य हो, तो ऐसी हालत मे उसका बेहोश हो जाना क्या इतनी विचित्र बात है ? मैने उन्हे समझाया कि बुढिया की हत्या की खबर सुनकर तुम्हारे दिमाग पर सदमा पहुँचा था, लेकिन उन्हे तुम्हारी बेहोशी के दिन से ही सन्देह हो गया है । मै जानता हूँ, इससे तुम्हे कितनी परेशानी हो

रही होगी, लेकिन रोद्या अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो उनका खूब मजाक उडाता, उनके बदसूरत चेहरो पर थूकता और अधाधुध मारपीट करता। जहन्नुम मे जाये ये लोग! अपने दिल को कच्चा मत करो। यह बडे शर्म की बात है।"

"यह ठीक ही तो कहता है," रास्कोलनिकोव ने मन ही मन सोचा। लेकिन वह कटु स्वर मे बोला, "जहन्नुम मे जाये? लेकिन कल उन्होने मुझे बुलाया जो है? मुझे क्या फिर उनसे बहस करनी पडेगी? मुझे अभी तक इस बात का रज है कि कल मैंने रेस्तरा मे जमेतोफ को मुँह क्यो लगाया ,"

"अमाँ यार हटाओ। मैं खुद जाकर पोरफेरी से सारी बात निकलवा लूँगा। आखिर मैं उसका रिश्तेदार ठहरा! रही जोमेतोफ की सो "

"अब इसकी समझ मे बात आ गई।" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन सोचा।

सहसा राजुमिहीन ने उसके कधे झकझोर कर कहा, "ठहरो! तुम गलती पर हो, मैने फिर अच्छी तरह सोचा है। भला इसमे उनकी क्या चाल थी? तुम कहते हो कि रोगनसाजी के बारे मे उनका सवाल पूछना एक चाल थी। लेकिन अगर तुमने वह 'काम' किया होता तो क्या तुम कह सकते कि तुमने मजदूरो को देखा था? बल्कि अगर तुम ने देखा भी होता तो साफ मुकर जाते। भला अपने खिलाफ कौन गवाही देगा?"

"अगर मैने 'वह काम' किया होता तो मै जरूर कहता कि मैने खुला हुआ फ्लैट और मजदूरो को देखा था," रास्कोलनिकोव ने ग्लानि पूर्वक उत्तर दिया।

"लेकिन अपने खिलाफ क्यो कोई बात कहो?"

"इसलिये कि सिर्फ देहाती या नौसिखिये लोग ही जिरह में सब

बातो से मुकर जाते है। लेकिन अगर किसी आदमी मे जरा सी भी अक्ल है तो वह सब बाहरी सबूतो को स्वीकार कर लेगा और उनका अलग ही मतलब निकालेगा, और नये ढग से सब बातो को पेश करेगा। पोरफेरी का शायद ख्याल है कि मै अपने को सच्चा साबित करने के लिए ऐसी ही कोई सफाई दूंगा।"

"लेकिन अगर ऐसी बात होती तो वह तुमसे फौरन कहता कि मजदूर हत्या से दो दिन पहले वहाँ नही मौजूद थे, इसलिए तुम हत्या के दिन आठ बजे वहाँ गये थे। इस तरह तो वह फौरन तुम्हे पकड सकता था।"

"उसने तो यही सोचकर मुझ से सवाल किया था। उसका ख्याल था कि मुझे सोचने का वक्त नही मिलेगा और मै जो मुँह मे आया सो कह दूंगा, और भूल जाऊँगा कि मजदूर हत्या से दो दिन पहले वहाँ नही थे।"

"लेकिन तुम कैसे इस बात को भूल सकते थे? इससे आसान बात क्या हो सकती है? इन्ही छोटी-छोटी बातो मे तो चालाक से चालाक आदमी पकडे जाते है। चालाक आदमी को कभी शक नही होता कि वह किसी छोटी बात मे पकडा जा सकता है। पोरफेरी इतना मूर्ख नही है "

"अगर ऐसी बात है तो वह पक्का बदमाश है।"

रास्कोलनिकोव को हँसी आ गई। लेकिन उसे अपनी स्पष्टवादिता पर स्वय ही हैरानी हो रही थी, क्योकि इससे पहले वह जानबूझ कर रोष और ग्लानि का अभिनय करता रहा था।

"मुझे इस बात मे मजा आ रहा है।" उसने मन ही मन सोचा। सहसा किसी अप्रत्याशित विचार ने उसे बेचैन कर दिया। वे बेकालेव के फाटक के पास पहुँच गये थे।

"तुम अकेले भीतर चले जाओ! मै अभी आ जाऊँगा।" उसने

राजुमिहीन से कहा।

"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"मुझे जाना ही होगा•• मै आधा घन्टे बाद लौटूँगा। जाकर उन्हे कह देना।"

"तुम जो मन मे आये कहो, मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा।"

"तुम भी मुझे यत्रणा देना चाहते हो ?" इन शब्दो मे इतना आक्रोश और करुणा थी कि राजुमिहीन के हाथ अपने आप नीचे सरक गये। वह सीढियो पर खडा उदास नजरो से रास्कोलनिकोव को अपने घर की तरफ लौटते देखने लगा। उसने दात भीचकर और मुट्ठी तानकर कसम खाई कि वह आज ही पोरफेरी को निबू की तरह निचोडकर रख देगा। वह सीढिया चढकर ऊपर पहुँचा जहा रास्कोलनिकोव की मा चिन्ता मे बैठी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी।

जब रास्कोलनिकोव घर पहुँचा तो उसके बाल पसीने से तर थे और वह हाफ रहा था। अपने कमरे मे पहुचकर उसने भीतर से साकल बन्द करली और अकारण ही भयभीत होकर वह दीवार के छेद को टटोलने लगा जिसमे उसने चीजे छिपाई थी। अच्छी तरह टटोलने के बाद भी जब उसे वहाँ कुछ न मिला तो उसने खडे होकर एक गहरी सास ली। बेकालेव के घर पहुँच कर उसे ख्याल आया था कि शायद बुढिया के हाथ का लिखा कोई पुर्जा, चेन या बटन गलती से उस दरार मे रह गया हो जो बाद मे उसके खिलाफ पक्का सबूत न बन जाये।

वह किसी गहरी सोच मे खडा था। उसके ओठो पर एक विचित्र बेमानी और अपमानित व्यक्ति की-सी मुस्कान थी। आखिर उसने अपनी टोपी उठाई और स्वप्निल मुद्रा मे फाटक से बाहर निकला। इस समय उसके विचार उलझे हुए थे।

"लो ये खुद ही आ गये।" किसी ने ऊँची आवाज मे कहा।

उसने सर उठाकर देखा, सामने चौकीदार, एक नाटे अजनबी आदमी के साथ खडा था और उ गली से रास्कोलनिकोव की ओर इशारा कर रहा था। वह अजनबी देखने मे औरत मालूम होता था। उसके हाथ मे तेल से चिकनी एक टोपी थी। चेहरे की झुर्रियो से वह पचास से ऊपर मालूम होता था। उसकी आँखे चर्बी से ढँक गई थी, और उनमे से असन्तोष और कठोरता झलक रही थी।

"क्या बात है ?" रास्कोलनिकोव ने चौकीदार से पूछा।

अजनबी ने रास्कोलनिकोव की तरफ गौर से देखा और फिर चुपचाप फाटक के रास्ते बाहर सडक पर चला गया।

"क्या बात है।" रास्कोलनिकोव चिल्लाया।

"यह आदमी अभी आपके बारे मे पूछताछ कर रहा था। मैने आपको आते देखा और आपकी ओर इशारा किया तो वह यहाँ से खिसक गया, कैसी विचित्र बात है ?"

चौकीदार को भी कुछ हैरानी-सी हुई। वह कुछ सोचता हुआ अपनी कोठरी मे चला गया।

रास्कोलनिकोव भागता हुआ अजनबी व्यक्ति को ढूँढने गया। अजनबी नीची नजरो से धीरे-धीरे सडक पर चल रहा था। रास्कोल-निकोव कुछ देर तक उसका पीछा करता रहा, फिर उसके पास जाकर खडा हो गया। अजनबी ने उसकी ओर देखकर फिर आँखे नीची कर ली। दोनो बिना कुछ कहे साथ-साथ चलते रहे।

"तुम चौकीदार से मेरे बारे मे पूछताछ कर रहे थे ?" रास्को-लनिकोव ने शान्त स्वर मे पूछा।

अजनबी चुप रहा। उसने नजर उठाकर देखा तक नही।

"तुमने आकर मेरे बारे मे पूछताछ की और अब तुम चुप हो, आखिर इसका मतलब क्या है ?" रास्कोलनिकोव का गला भर्रा गया था।

अजनबी ने इस बार कुटिल अभियोग पूर्ण आँखो से रास्कोल-निकोव की ओर देखा और शान्त स्वर मे कहा,

"हत्यारा ।"

रास्कोलनिकोव की टाँगे क्षण भर के लिए लडखडा गयी और उसकी रीढ मे ठण्डी सनसनी दौड गयी । उसके हृदय की गति रुक सी गई । अगले क्षण उसे लगा जैसे उसके हृदय से कोई भारी बोझ हट गया हो । सौ कदमो तक दोनो बिना बोले चुपचाप चलते रहे ।

अजनबी ने उसकी ओर देखा तक नही ।

"तुम्हारे कहने का क्या मतलब है ? कौन हत्यारा है ?" रास्कोलनिकोव ने क्षीण स्वर मे पूछा ।

"तुम हत्यारे हो ।" अजनबी ने दृढतापूर्वक कहा, और उसके ओठो पर एक घृणाभरी मुस्कान दौड गई । उसने रास्कोलनिकोव की भयभीत आँखो मे आँखे डालकर देखा ।

चौराहे पर पहुँच कर अजनबी बाई तरफ मुड गया । रास्कोल निकोव खड़ा उसकी तरफ देखता रहा । पचास कदम चलकर अजनबी ने फिर मुडकर रास्कोलनिकोव की तरफ देखा । उसे लगा जैसे अज-नबी के चेहरे पर वही घृणाभरी विजय की मुस्कान थी ।

लडखडाते हुए कदमो से रास्कोलनिकोव अपनी कोठरी मे वापिस आया । उसका शरीर बिल्कुल ठण्डा पड गया था । उसने अपनी टोपी उतार कर मेज पर रख दी और दस मिनिट तक बिना हिले डुले खडा रहा । फिर पीडा से कराहता हुआ वह धम से सोफे पर लेट गया, और आध घण्टे तक इसी तरह लेटा रहा । वह इस समय कुछ सोच रहा था । उसके मन मे विचारो के असम्बद्ध टुकडे तैर रहे थे—बच-पन मे देखे हुए लोगो के चेहरे, गाव के गिरजे का घण्टा, एक रेस्तराँ की मेज पर बिलियर्ड खेलते हुए कुछ अफसर, किसी तहखाने मे बनी तम्बाकू की दुकान की गन्ध, सराय की एक कोठरी, गन्दे पानी और

अडो के छिलको से भरा एक जीना, इतवार की प्रार्थना की घटियाँ—ये तस्वीरे तूफान की तरह उसके मानस पटल पर चक्कर काट रही थी। इनमे से कुछ तस्वीरे उसे इतनी पसन्द आयी कि वह उन्हे मन मे समेटने के लिए आतुर हो उठा। धीरे-धीरे ये तस्वीरे मध्यम पड़ गई और उसके मन मे एक घुटन सी छा गई। लेकिन इस घुटन मे भी आनन्द था। उसकी कॅपकॅपी अब भी जारी थी, लेकिन यह कॅपकॅपी भी उसे सुखद मालूम हो रही थी। राजुमिहीन के कदमो की आहट सुनकर उसने आँखे मूँद ली और सोने का बहाना किया। राजुमिहीन झिझक कर दरवाजे मे खडा रहा, फिर दबे पाँव आकर सोफे पर बैठ गया। उसने नस्तास्या की फुसफुसाहट सुनी, "इन्हे सोने दो, तग मत करो। ये खाना बाद मे खा लेगे।'

"ठीक है," राजुमिहीन दबेपाँव कमरे से बाहर चला गया और दोनो ने दरवाजा बद कर दिया। इसी तरह आधा घटा गुजर गया। रास्कोलनिकोव दोनो हाथ सर के पीछे रखकर सोच रहा था—

"यह आदमी धरती फाड कर कहाँ से निकल आया ? यह उस समय कहाँ था ? जरूर इसने अपनी आँखो से सब कुछ देखा होगा, लेकिन कहाँ से देखा होगा ? यह अभी तक कहाँ छिपा बैठा था ? क्या यह सभव है ? हूँ ·" उसे फिर कॅपकॅपी आने लगी। "निकोलाई को दरवाजे के पीछे गहनो की खाली डिबिया मिली, यह सभव है ? जरा सी असावधानी से आदमी अपने खिलाफ ढेरो सबूत जमा कर लेता है। मक्खियो के भी आँखे होती है। क्या यह सभव है ?" उसे अपनी शारीरिक कमजोरी पर बडी चिढ हुई। "मुझे पहले ही सोच लेना चाहिए था। अपना स्वभाव जानते हुए, मैने कुल्हाडी उठाकर खून क्यो बहाया ? मुझे पहले से मालूम होना चाहिए था। · आह, लेकिन मुझे मालूम तो था," वह दुखी स्वर मे फुसफुसाया। सहसा एक नया विचार उसके मन में उठा।

"नही, असाधारण लोग मुझ जैसे कमजोर नही होते। ऐसे लोग जिन्हे रक्तपात का अधिकार है, तूलोन पर तूफानी हमला करते है, पैरिस मे कत्लेआम करते है, मिश्र मे पूरी फौज को अपने भाग्य पर छोड कर चले आते है, मास्को की चढाई मे पॉच लाख सैनिक बर्बाद कर देते है, विल्ना मे एक मजाक से ही अपनी जान छुडा लेते है और उनके मरने के बाद बडे बडे स्मारक बनाये जाते है। ऐसे लोगो को सब कुछ माफ है। ये लोग हाड मास के नही, बल्कि कासे के बने होते है।"

सहसा एक अनर्गल विचार से उसे हॅसी आगई। "नैपोलियन, पिरामिड, वाटरलू, खूसट-सी सूदखोर बुढिया और उसके पलग के नीचे लाल सन्दूक बकवास! पोरफेरी पैत्रोविच को भी कैसा झूठ हजम करना पडा! एक नैपोलियन किसी खूसट बुढिया के पलग के नीचे घुसे—छि छि, कैसी ग्लानि की बात है!"

उसे लगा, वह उत्तेजना मे फिर प्रलाप करने लगा है। "बुढिया का मुझे कोई अफसोस नही। बुढिया का अस्तित्व गलत था, शायद वह समाज की बीमारी थी, लेकिन इससे क्या॰ मै बाधाएँ दूर करने की जल्दी मे था। मैने किसी इन्सान की हत्या नही, बल्कि एक गलत सिद्धान्त की हत्या की। लेकिन मै हत्या से आगे नही बढ सका। इस पार ही रह गया। शायद हत्या करने की भी मुझ मे सामर्थ्य नही थी··सिद्धान्त? वह बेवकूफ राजुमिहीन समाजवादियो को क्यो गालियॉ दे रहा था? वे मेहनती और व्यवसायी जीव है। 'सबका सुख' ही उनका नारा है। नही, मुझे जिन्दगी दुबारा नही मिलेगी। मै 'सबके सुख' की प्रतीक्षा नही कर सकता। मै अपने लिए जीना चाहता हूँ, नही तो जीने का क्या मतलब? मेरी माँ भूखो मर रही थी, मै कैसे 'सबके सुख' का इन्तजार करता? 'सबके सुख' मे यही मेरा योग है। इसलिए मेरे दिल का बोझ हल्का होगया है। हा, हा, तुमने मुझे

क्यो फिसलने दिया ? जिन्दगी एक बार मिलती है। मेरी भी आकाक्षाएँ है · छि · छि मै सिर्फ एक सौन्दर्यवादी जूँ हूँ हाँ हाँ जूँ !" उसने पागलो की तरह हँसते हुए कहा, "क्योकि मै इस बात को जानता हूँ। इसलिए भी क्योकि पिछले एक महीने से मै भाग्य-देवता को परेशान करता आया हूँ। आओ मेरा कुकृत्य देखो ! आओ मेरे गवाह बनो ! ये कुकर्म मै निजी स्वार्थ के लिए नही, बल्कि किसी ऊँचे आदर्श के लिए कर रहा हूँ, हा, हा, हा ! तीसरा कारण यह है कि मैने यह सब करने से पहले हर पहलू पर सोच-विचार लिया है। सारे जूँओ मे मे मैने सबसे निकम्मी जूँ को चुना है और उसमे से उतना ही खून निकाला है जितना मुझे पहला कदम उठाने के लिए चाहिए था। (उसकी वसीयत के मुताबिक उसकी सम्पत्ति एक मठ को मिलती) हा, हा।" फिर उसने दात किटकिटा कर कहा, "इससे स्पष्ट होगया कि मैने जिस जूँ को मारा है, मै उससे भी अधिक घृणित और निकृष्ट जूँ हूँ। इस बात को मै पहले से ही जानता था कि मेरे मन मे यह सब विचार उठेगे। कैसी वाहियात बात है, कितनी नीचता है ? नगी तलवार लिए घोडे पर सवार पैगम्बर की बात मेरी समझ मे आती है, 'हुक्म अल्ला का है, खिलकत को मानना ही होगा।' पैगम्बर अगर सडक पर बारूद लगाकर मासूम और गुनहगारो को एक साथ उडा देता है, तो भी उसे किसी के आगे जवाब-देह नही होना पडता, क्योकि वह जो भी करता है, सही करता है। दुनिया के लोगो, तुम्हारा काम हुक्म मानना है, ख्वाहिश करना नही · · मै उस बुढिया को कभी माफ नही कर सकता"

उसके बाल पसीने मे तर हो गये थे। उसके काँपते हुए ओठ सूख गये थे। वह टकटकी बाँधे छत की ओर देख रहा था।

"माँ, बहन, मै उन दोनो को कितना चाहता था ! अब मुझे उनसे नफरत क्यो हो गई ? हाँ मुझे उनसे नफरत है। मै उनके स्पर्श,

सामीप्य तक को बर्दाश्त नही कर सकता· मैने माँ का माथा चूमा था उसे गले लगाते वक्त यह सोचना कि कही उसे यह सब मालूम हो जाता,···तो क्या मै उसे बता दू ? शायद मै यही न कर बैठू । हूँ · उस बुढिया की भी यही हालत हो रही होगी । मुझे उससे अब कितनी नफरत हो गई है । अगर वह जिन्दा हो जाये तो मै फिर उसे मार डालू गा । बेचारी लिजावेता । वह बीच मे क्यो आ गई । मुझे उसका कभी ख्याल ही नही आया लगता है मैने उसे नही मारा । लिजावेता । सोनिया । बेचारी कोमल स्त्रियाँ कोमल आँखो वाली · ये लोग रोती क्यो नही ? चीखती-चिल्लाती क्यो नही · हिम्मत हार बैठती है उनकी आखे कोमल है सोनिया ! सोनिया ! मासूम सोनिया ।"

इसके बाद उसकी चेतना लुप्त हो गई । वह कब और कैसे सडक पर पहुँचा, यह भी उसे याद नही रहा । साँझ के झुटपुटे मे पूर्णिमा का चाद उग आया था, लेकिन हवा मे एक अजब बेचैनी थी । मज़दूरो और दुकानदारो की भीड घर लौट रही थी । बहुत से लोग बाहर घूमने के लिए निकले थे । चारो ओर धूल, मिट्टी और सडे हुए पानी की बू आ रही थी । रास्कोलनिकोव यह तो महसूस कर रहा था कि वह किसी विशेष प्रयोजन से कही जारहा है, लेकिन वह प्रयोजन क्या है, यह वह भूल गया था । सहसा सडक के उस पार एक आदमी को देखकर वह ठिठक गया । वह आदमी हाथ के इशारे से उसको बुला रहा था । जब रास्कोलनिकोव सडक पार करके उसके पास पहुँचा तो वह आदमी पीठ मोडकर आगे चल पडा । रास्कोलनिकोव ने सोचा, क्या सचमुच उसने मुझे बुलाया था । लेकिन उसने फिर उस अजनबी का पीछा किया । नजदीक पहुँचकर उसने देखा कि वह तो वही सुबह वाला आदमी था, जिसने उसे हत्यारा कहा था । वह धडकते हुए दिल से अजनबी का पीछा करने लगा । अजनबी ने

एक बार भी मुडकर पीछे नही देखा। "क्या इसे मालूम है कि मै इसका पीछा कर रहा हूँ ?" रास्कोलनिकोव ने सोचा। अजनबी एक मोड के बाद एक बडे से मकान के फाटक मे घुस गया। रास्कोलनिकोव को लगा कि वह फिर उसे इशारा कर रहा है। लेकिन वह आदमी जीने मे गायब होगया था। रास्कोलनिकोव उसके पीछे पीछे दौडा। उसे जीना परिचित-सा लगा। पहली मजिल की खिडकी मे से चॉद का रहस्यमय प्रकाश छन कर भीतर आ रहा था। फिर वह दूसरी मजिल पर पहुचा। वाह ! यह वही फ्लैट था, जिसमे रगसाज़ काम कर रहे थे। लेकिन उसने पहले फ्लेट को क्यो नही पहचाना ? अजनबी के कदमो की आहट रुक गयी थी। "वह ज़रूर कही छिप गया है।" तीसरी मजिल भी आगयी। क्या अब उसे और आगे जाना चाहिए ? जीने मे एक भयकर निस्तब्धता छायी थी लेकिन वह सीढियाँ चढता गया। उसे अपनी पदचाप सुनकर डर लग रहा था "कितना अधेरा ! वह आदमी जरूर यही किसी कोने मे छिपा होगा। आह !" फ्लैट का दरवाजा खुला था। उसे भीतर जाने मे हिचकिचाहट हुई। भीतर अधेरा था। लगता था जैसे सारा सामान वहाँ से हटा दिया गया है। वह पजो के बल चलकर भीतर बैठक मे पहुचा। सब चीजे ज्यो की त्यो रखी थी। कुर्सियाँ, आईना, पीला सोफा और फ्रेम मे जडी तस्वीरे। खिडकियो मे से गोल ताँबे के रग का चाँद झाक रहा था। "इसी चाद ने वातावरण को इतना रहस्य-मय बना दिया है," रास्कोलनिकोव ने सोचा। वह बहुत देर तक खडा इन्तजार करता रहा। उसके दिल की धडकन बढ गयी थी। सहसा उसे कॉच के चटकने की आवाज सुनाई दी। इसके बाद फिर निस्तब्धता छा गई। एक भिनभिनाती हुई मक्खी आकर खिडकी के शीशे पर बैठ गयी। उसी समय रास्कोलनिकोव की दृष्टि खिडकी और अलमारी के बीच लटके हुए लबादे पर गयी। वह सोचने लगा

"यह लबादा यहाँ कैसे आया ? यह पहले तो यहाँ नही था ।" उसने आगे बढकर लबादे को हटा दिया । कोने मे रखी कुर्सी पर बुढिया अपना चेहरा छिपाये बैठी थी । यह वही बुढिया थी । वह उसके सिरहाने खडा सोच रहा था, "बुढिया डर रही है ।" उसने कोट के भीतर से कुल्हाडी निकाली और बुढिया के सिर पर दो वार किए, लेकिन बुढिया हिली-डुली तक नही । रास्कोलनिकोव ने झुककर गौर से उसका चेहरा देखना चाहा । लेकिन बुढिया ने अपना सिर नीचे कर दिया । रास्कोलनिकोव ने कुरसी के नीचे से झाक कर बुढिया के चेहरे की ओर देखा । वह आहिस्ता आहिस्ता हँस रही थी । रास्कोलनिकोव का शरीर आतक से ठडा पड गया । सहसा उसे कमरे का दरवाजा खुलता-सा लगा । भीतर से किसी के हँसने और फुसफुसाने की आवाज आरही थी । उसने विक्षिप्त होकर पूरी ताकत से कुल्हाडी का वार किया । इस पर हँसी और फुसफुसाहट और भी तेज होगई और बुढिया प्रसन्नता से गद्गद् होकर झूमने लगी । वह भागकर बाहर जाने लगा, लेकिन रास्ते मे बहुत भीड जमा होगई थी । सब फ्लैटो के दरवाजे खुल गये थे और हर तरफ लोगो के सर ही सर नजर आते थे । सब लोग चुपचाप किसी बात की प्रतीक्षा कर रहे थे । रास्कोलनिकोव की टाँगे पत्थर की तरह भारी हो गई । उसके दिल को जैसे किसी ने जकड लिया ··एक चीख के साथ वह उठ बैठा ।

उसने एक गहरी सास ली—लेकिन उसका सपना अब भी चल रहा था । सहसा दरवाजा खुला और एक अजनबी उसके सामने आकर खडा होगया । रास्कोलनिकोव आँखे बद करके लेटा रहा ।

"क्या मै अब भी सपना देख रहा हूँ ?" यह सोचकर उसने आखे खोली । अजनबी अब भी खडा उसकी ओर गौर से घूर रहा था ।

अजनबी ने सावधानी से कमरे का दरवाजा बद कर दिया और

दबे पाव आकर सोफे के पास रखी कुरसी पर बैठ गया। उसने अपना हैट उतार कर फर्श पर रख दिया। साफ जाहिर था कि वह कितनी भी देर तक इन्तजार करने का इरादा करके बैठा है। रास्कोलनिकोव ने कनखियो से देखा कि वह दुहरे बदन का अधेड गोरा-चिट्टा आदमी था। इसी तरह दस मिनट बीत गये। कमरे मे अधेरा बढ रहा था। जीने मे निस्तब्धता छायी थी। सिर्फ एक मक्खी की भिनभिनाहट बार बार सुनायी दे रही थी। जब यह खामोशी असह्य होगयी तो रास्कोलनिकोव उठकर सोफे पर बैठ गया।

"बताओ तुम क्या चाहते हो ?"

"मै जानता था कि तुम जानबूझ कर सोने का बहाना कर रहे हो," अजनबी ने विचित्र ढग से हँसते हुए कहा। "मेरा नाम आर्कदी इवानोविच स्वीद्रीगाईलोव है "

चौथा भाग

१

रास्कोलनिकोव ने एक बार- फिर सोचा, "क्या मै सपना देख रहा हूँ ?" उसने सदिग्ध नजरो से आगतुक की तरफ देखा।

"स्वीद्रीगाईलोव ! यह झूठ है। ऐसा कभी नही हो सकता।" उसने विस्मित स्वर मे कहा।

आगतुक ने बिना किसी परेशानी के उत्तर दिया, "मै दो कारणो से यहा आया हूँ। मैने तुम्हारे बारे मे बहुत सी दिलचस्प बाते सुनी है, इसलिये मे तुमसे परिचय करना चाहता था। इसके अलावा मै एक मामले मे तुम्हारी सहायता चाहता हूँ जिसका तुम्हारी बहन अवदोत्या रोमानोवना से सम्बन्ध है। अब शायद वह मुझे पास तक नही फटकने देगी, वह मुझसे सख्त नाराज है, लेकिन तुम्हारी सहायता से मैं ज़रा......'

"तुम्हारा ख्याल गलत है।" रास्कोलनिकोव ने बीच मे टोककर कहा।

"क्या वे लोग कल यहाँ पहुँचे थे ?"

रास्कोलनिकोव चुप रहा।

"मै जानता हूँ, वे कल पहुँचे थे। मै एक दिन पहले आ गया था। सच पूछो तो रोदियोन रोमनोविच, मै अपनी सफाई हरगिज नही देना चाहता, लेकिन इस मामले मे मेरा जो कसूर था, वह तुम्हे बताना चाहूँगा।"

रास्कोलनिकोव चुपचाप आगतुक का मुह ताकता रहा।

"तुम सोचते होगे कि मैने एक आश्रयहीन लडकी पर मिथ्यारोप किया और अपने 'अनैतिक प्रस्ताव' द्वारा उसे अपमानित किया, यही न ? लेकिन मै भी आखिर इन्सान हू। मुझे भी किसी से प्रेम हो सकता है (प्रेम करना न करना किसी के बस की बात तो नही है) सवाल है कि क्या मै राक्षस हूँ या खुद भी परिस्थितियो का शिकार हूँ ? अगर मैने तुम्हारी बहन से अमेरिका या स्विट्जरलैंड जाने का प्रस्ताव किया था, तो उसके पीछे आदर की भावना थी। तुम जानते हो कि विवेक भावुकता का गुलाम है। अगर देखा जाये तो सबसे ज्यादा नुकसान तो मै अपना ही कर रहा था।"

रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा, "तुम अच्छे हो या बुरे—इससे हम लोगो को कोई सरोकार नही है। हमे तुमसे नफरत है, इसलिये हम तुमसे कोई सम्बन्ध नही रखना चाहते। निकल जाओ यहाँ से।"

स्वीद्रीगाईलोव हँसने लगा, "तुम पकड मे आने वाले आदमी नही हो। मेरा ख्याल था कि तुम पकड मे आ जाओगे लेकिन तुमने तो फौरन सीधा रास्ता पकड लिया।"

"फिर तुम मुझे पकडने की कोशिश क्यो कर रहे हो ?"

"इसमे क्या हर्ज है। फ्रासीसी लोग इसी को प्यारी गलतफहमी कहते है···लेकिन तुम बार बार बीच मे मुझे क्यो टोक रहे हो ? अगर बाग वाली घटना न होती तो इतनी कटुता न बढती। मार्फा पैत्रोवना ···"

"सुनते है, तुमने मार्फा पैत्रोवना से भी पिड छुडा लिया है," रास्कोलनिकोव ने उद्दण्डतापूर्वक पूछा।

"अच्छा तो तुम्हे यह खबर भी मिल गई ? • तुम्हारे सवाल के जबाब मे मुझे कुछ नही कहना। मेरी अन्तरात्मा साफ है। यह मत समझो कि मै डर रहा हूँ। डाक्टरी परीक्षा मे मालूम हुआ कि मार्फा पैत्रोवना की मृत्यु खाने के फौरन बाद स्नान करने और शराव की बोतल पीने के कारण हुई थी। लेकिन जानते हो मै ट्रेन मे बैठा सोच रहा था कि इस मामले मे क्या मेरी नैतिक जिम्मेदारी नही थी ? लेकिन मै इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मेरी यह शका निर्मूल है।"

रास्कोलनिकोव को हँसी आ गई।

"देखता हूँ तुम्हे व्यर्थ ही परेशानी हो रही है," उसने कहा।

"लेकिन तुम हँसे क्यो ? मैने सिर्फ दो बार उसे कोडा छुआया था, लेकिन उसके शरीर पर निशान तक नही पडे • मुझे हृदयहीन मत समझना। मै जानता हूँ मैने कितनी वहशत दिखाई है, लेकिन मार्फा पैत्रोवना को मेरी आशिकमिजाजी पर कोई एतराज नही था। तुम्हारी बहन का सारा किस्सा उसे मालूम था। वह शहर मे मुँह दिखाने के काबिल नही रही थी। तुमने सुना ही होगा कि उसने खत दिखाकर लोगो की नाक मे कितना दम किया था। इसके बाद उसने बाहर जाने के लिये गाडी तैय्यार करवाई • कई स्त्रियो को अपना अपमान करवाने मे बडा आनन्द मिलता है और वे झूठमूठ ही क्रोध का अभिनय करती है। क्या तुमने इस बात पर गौर किया है कि सभी इन्सानो मे यह प्रवृत्ति पाई जाती है ? लेकिन विशेषकर औरतो का तो यह एकमात्र मनोरजन है।"

रास्कोलनिकोव के मन मे आया कि वह उठकर बाहर चला जाये लेकिन किसी कौतूहलवश वह वही रुका रहा। "तुम्हे झगडने का शौक है ?" उसने लापरवाही से पूछा।

"खास नही, मार्फा पैत्रोवना मे और मुझ मे बहुत कम झगडा होता था। वह मुझसे खुश थी। सात बरसो मे सिर्फ दो बार मैने कोडा उठाया था। एक बार शादी के दो महीने बाद जब हम देहात से लौटे थे और आखिरी बार जब हमारा झगडा हुआ था। तुम मुझे राक्षस, दकियानूस और जालिम समझते हो ? हा ! हा ! रोदियोन रोमनोविच तुम्हे याद है, कुछ बरस पहले अखबारो मे एक जमीदार के बारे मे खबर छपी थी, जिसने रेलगाडी मे एक जर्मन महिला की पिटाई की थी। (तुम्हे याद है 'मिस्र की राते', 'काली आखे' आदि अखबार ? आह हमारी जवानी के वे सुनहरे दिन कहाँ गये ?) रही उस जमीदार की बात, सो मुझे उससे हमदर्दी नही, लेकिन कई बार ऐसी जर्मन महिलाओ से पाला पड ही जाता है। लेकिन किसी ने इस दृष्टिकोण से समस्या पर विचार नही किया। मै विश्वास दिलाता हूँ कि मात्र केवल यही मानववादी दृष्टिकोण है।"

यह कह कर स्वीद्रीगाईलोव जोर से हंस पडा। रास्कोलनिकोव भाँप गया कि वह अपने निश्चय का पक्का आदमी है। उसने पूछा, "मालूम होता है, कुछ दिनो से तुमने किसी से बातचीत नही की है।"

"शायद ही किसी से की हो। तुम्हे मेरी अवसर के अनुकूल व्यवहार करने की क्षमता पर आश्चर्य हो रहा है ?"

"देख रहा हूँ कि तुम जरूरत से ज्यादा ऐसी क्षमता रखते हो।"

"क्या इसलिये कि मैने तुम्हारे धृष्टतापूर्ण सवालो पर बुरा नही मनाया ? लेकिन इसमे आदमी बुरा क्यो मनाये ?" उसने स्वप्निल स्वर मे कहा, "जिन्दगी मे मेरी अब कोई दिलचस्पी नही रही···तुम सोचते होगे कि मै किसी विशेष स्वार्थ के कारण ऐसा कह रहा हूँ, क्योकि मैने तुम्हारी बहन से मिलने की इच्छा प्रकट की थी। लेकिन सच पूछो तो मै जिन्दगी से ऊब गया हूँ, विशेषकर पिछले तीन दिनो से··रोदियोन रोमनोविच, तुमसे मिलकर मुझे बडी खुशी हुई,

लेकिन तुम कुछ खोये खोये से नजर आते हो। कोई न कोई माजरा ज़रूर है। अच्छा अच्छा चिढो मत! मैं यह चर्चा बद किये देता हूँ। मै इतना वहशी नही हूँ जितना तुम मुझे समझते हो।"

रास्कोलनिकोव ने सजीदा ढग से उसकी ओर देखकर उत्तर दिया, "तुम शायद वहशी कतई नही हो—मेरे ख्याल मे तो तुम बडे सभ्रान्त व्यक्ति हो, कमसे कम तुम्हे इसका अभिनय करना तो खूब आता है।"

स्वीद्रीगाईलोव ने शुष्क और कठोर स्वर मे कहा, "मुझे किसी की राय की परवाह भी नही है। जब बेहूदेपन की आड मे सब कुछ छिप जाता है तो बेहूदा होने मे क्या हर्ज है? विशेषकर जब किसी की स्वाभाविक प्रवृति भी वैसी ही हो?" यह कहकर उसे हँसी आ गई।

"लेकिन तुम यहाँ अकेले तो नही हो। मैने सुना है, यहाँ बहुत लोगो से तुम्हारी जान-पहचान है। बिना प्रयोजन के तुम भला मुझसे मिलने क्यो आने लगे?" रास्कोलनिकोव ने पूछा।

"यह सच है कि मेरे यहाँ बहुत से दोस्त है। कइयो से तो चलते फिरते मेरी मुलाकात भी हो चुकी है। पिछले तीन दिनो से मैं शहर मे घूमता रहा हूँ, यह सब तो स्वाभाविक ही है। मेरी गिनती खाते-पीते लोगो मे होती है। मै बढिया कपडे पहनता हूँ। मेरी जायदाद मे जगल और चरागाहे अधिक है, इसलिये दासो की मुक्ति से मेरी आमदनी मे कोई फर्क नही आया—लेकिन मै उन दोस्तो से मिलने नही जाऊँगा—मेरा मन उनसे कभी का ऊब चुका है।...... यह कैसा बेहूदा शहर है? भला यह शहर अस्तित्व मे कैसे आया, यह तो बताओ! यहाँ अफसरो और सब किस्म के विद्यार्थियो की भरमार है। आठ बरस पहले जब मै यहाँ आया था, तब बहुत सी बातो की तरफ मेरा ध्यान तक नही गया था।.....अब तो सिर्फ शरीर सौन्दर्य मे आशा बाकी है, ईश्वर की सौगध।"

"शरीर सौन्दर्य?"

"रहे दुसात, परेड और प्रोग्रेस आदि क्लब, इनमे मै न भी जाऊँ तो ये चलते रहेगे। इसके अलावा कौन आदमी पत्तेबाज बनना चाहता है ?"

"तो क्या तुम कभी पत्तेबाज भी रहे हो ?"

"रहता कैसे न ! आठ बरस पहले हमारी यहाँ पूरी मडली थी, जिसमे समाज के गिने-चुने आदमी थे—कवि, जायदादो के मालिक, अभिजातवर्ग के लोग। क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है कि हमारे रूसी समाज मे सिर्फ मात खाये लोग ही शिष्ट होते है ! देहात मे जाकर मै अपना व्यक्तित्व गवा बैठा हूँ। मै कर्ज न चुका सकने की वजह से जेल हो आया हूँ—नेजिन के एक नीच यूनानी ने मुझे फँसा दिया था। इसी मौके पर आकर मार्फा पैत्रोवना ने मुझे तीस हज़ार चाँदी के सिक्को मे खरीद लिया (मुझ पर सत्तर हजार का कर्ज़ था) हम दोनो ने शादी करली और वह मुझे देहात मे ले गई। तुम्हे मालूम है कि वह मुझ से उम्र मे पाँच बरस बडी थी। वह मुझे बहुत चाहती थी। सात बरस तक मै गाव से निकला तक नही, जानते हो, उसने तीस हजार रूबल का प्रोनोट जानबूझ कर सभाल रखा था, ताकि अगर मै ज़रा सी भी चूँ-चपड करूँ तो फौरन शिकजे मे जकडा जाऊँ। औरते सब कुछ कर सकती है।"

"अगर प्रोनोट न होता, तो क्या तुम उसे धोखा देते ?"

"मै ठीक से नही कह सकता, लेकिन मेरे सयम का कारण प्रोनोट हरगिज नही था। दरअसल मै खुद कही नही जाना चाहता था, मुझे ऊबा देखकर मार्फा पैत्रोवना ने खुद मुझे विदेश जाने के लिये जोर दिया, लेकिन न जाने क्यो विदेश जाकर मेरा मन खराब हो जाता है। नेपल्स की खाडी मे सूर्योदय देखकर मन मे उदासी छा जाती है। सचमुच की उदासी ! नही, इससे तो घर रहना बेहतर है। कमसे कम दूसरो पर दोषारोपण करके खुद आदमी दोषमुक्त तो हो सकता है।

शायद मुझे उत्तरी ध्रुव की यात्रा करनी चाहिये थी, अब सिवा शराब पीने के कोई शौक बाकी नही रहा। मैने सुना है अगले इतवार को बर्ग पासूपोन गार्डन से गुब्बारा लेकर उडेगा और टिकट लगा कर और यात्रियो को भी साथ ले जायेगा। क्या यह सच है ?"

"क्या तुम भी गुब्बारे मे उडोगे ?"

"मै नही नही," कहकर स्वीद्रीगाईलोव किसी गहरी सोच मे पड गया।

रास्कोलनिकोव सोचने लगा, "क्या यह जो कह रहा है, सच है ?"

स्वीद्रीगाईलोव ने सजीदा स्वर मे कहना शुरू किया, "प्रोनोट की वजह से मै चुप नही था। पिछले बरस मार्फा पेत्रोवना ने वह प्रोनोट मुझे लौटा दिया था, साथ मे एक बहुत बडी रकम भी भेट की थी। तुम जानते हो, वह कितनी धनी थी। वह कहा करती थी, "देखा आर्केदी इवानोविच, मुझे तुम पर कितना भरोसा है !" मै ही उसकी जायदाद की देखभाल करता था। आसपास के इलाको के लोग मुझे अच्छी तरह जानते थे। मै अपने लिये शहर से बहुत ही किताबे मँगवाया करता था। मार्फा पैत्रोवना ने पहले तो स्वीकृति दे दी, बाद मे उसे मेरे अध्ययन से डर लगने लगा।"

"तुम्हे मार्फा पैत्रोवना की बहुत याद आती है ?"

"शायद, हाँ सचमुच आ रही है, लेकिन यह बताओ, क्या तुम्हे भूत-प्रेतो मे विश्वास है ?"

"कौनसे भूत-प्रेत ?"

"साधारण भूत-प्रेत।"

"तुम्हे उनमे विश्वास है ?"

"है भी और नही भी, निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है।"

"तुमने भूत देखे हैं ?"

स्वीद्रीगाईलोव ने विचित्र ढग से मुस्कराते हुए कहा, "मार्फा पैत्रो-

वना मुझसे मिलने आती है ।"

"क्या मतलब ?"

"वह तीन बार आ चुकी है । जब उसे दफनाया गया तो उसके एक घटे बाद ही वह नजर आई । परसो तडके जब मै सफर कर रहा था तो मलाया विशेरा के स्टेशन पर वह नजर आई और अभी दो घटे पहले मैने उसे देखा था ।"

"क्या तुम जाग रहे थे ?"

"हाँ मै एकदम जागा हुआ था । वह हर बार आकर एक मिनट के लिए मुझसे कुछ कहती है और फिर दरवाजे की तरफ निकल जाती है ।"

"न जाने क्यो मै यह बात पहले ही भाँप गया था ।" रास्कोलनिकोव के मुँह से हठात निकल गया । उसे स्वय अपनी बात पर ताज्जुब होने लगा ।

"क्या कहा ? मैने क्या यह नही कहा था कि हम दोनो मे कोई न कोई बात साझी है ।"

"तुमने यह कभी नही कहा ।" रास्कोलनिकोव ने आवेश मे आकर कहा ।

"नही कहा ?"

"नही"

"मेरा ख्याल है कि मैने कहा था । जब मैने यहाँ आकर तुम्हे आँखे मूद कर सोने का बहाना करते हुए देखा तो मैने मन ही मन मे कहा, "यही वह आदमी है ।

" 'यही वह आदमी है,' से क्या मतलब । तुम क्या बक रहे हो ?" रास्कोलनिकोव ने चिल्ला कर पूछा ।

"मतलब तो मै खुद नही जानता," स्वीद्रीगाईलोव ने घबरा कर उत्तर दिया ।

क्षणभर के लिए दोनो चुप रहे। दोनो एक-दूसरे की ओर घूर रहे थे।

"यह सब बकवास है भला मार्फा पैत्रोवना आकर तुमसे क्या कहती है ?" रास्कोलनिकोव ने चिढ़कर पूछा।

"वह आकर फिजूल की बाते करती है, मर्द लोगो का स्वभाव भी विचित्र होता है, मुझे भी गुस्सा आ जाता है। पहली बार जब वह आई (मैं दो घटे पहले उसे दफना कर आया था और थकान से चूर हो रहा था—अपनी लाइब्रेरी मे आकर मैने एक सिगार सुलगाई थी और कुछ सोच रहा था) आते ही उसने कहा, "आर्केदी इवानोविच आज तुम इतने व्यस्त रहे कि खाने के कमरे की घडी मे चाबी देना भी भूल गये।" पिछले सात बरसो से लगातार मै हर हफ्ते घडी मे चाबी देता आया था। जब कभी मै भूल जाता था तो वह मुझे याद दिला देती थी। अगले दिन तडके जब मै सफर कर रहा था तो मैंने देखा कि मार्फा पैत्रोवना ताश के पत्ते हाथ मे लिए मेरे साथ बैठी थी। "आर्केदी इवानोविच, तुम्हारी यात्रा का शकुन अपशकुन बताऊँ" वह ज्योतिष मे बहुत निपुण थी, मुझे अफसोस है कि मैंने उससे राय क्यो नही ली। इसी समय घण्टी बजी और गाडी चल पडी। आज बाजार से खाना खाने के बाद मै बैठा सिगरेट पी रहा था, सहसा मार्फा पैत्रोवना बढिया हरे सिल्क की पोशाक पहन कर आई। आते ही उसने कहा, "नमस्कार आर्केदी इवानोविच तुम्हे मेरी पोशाक पसद आई? अनिस्का ऐसी पोशाक नही तैयार कर सकती" (अनिस्का हमारे गाँव के एक दास की सुन्दर लडकी थी जो मास्को से दर्जी का काम सीखकर आई थी) मैने गौर से उसकी पोशाक की तरफ देखा और कहा, "मार्फा पैत्रोवना तुम जरा-जरा सी बात पर मुझ से मिलने क्यो आती हो ?" उसने उत्तर दिया, "हे ईश्वर ! तुम किसी को अपने पास नही आने दोगे" उसे चिढाने के लिए मैने कहा, "मार्फा पैत्रावना मै फिर शादी करना

चाहता हूँ।" "तुम हो ही ऐसे आर्कॅदी इवानोविच। लेकिन अभी तुम अपनी पहली पत्नी को दफना कर आये हो, अभी से नई दुल्हन की खोज क्या तुम्हे शोभा देगी ? काश तुम कोई अच्छी पत्नी ढूढ सकते ? मै जानती हूँ सारी दुनिया तुम पर हँसेगी और तुम नई पत्नी के साथ सुखी नही रह सकोगे।" यह कहकर वह चली गई। यह खुराफात है न।"

रास्कोलनिकोव ने टिप्पणी की, "कही तुम झूठ तो नही बोल रहे ?"

"मैं बहुत कम झूठ बोलता हूँ।" स्वीद्रीगाईलोव ने सजीदगी से उत्तर दिया।

"क्या इससे पहले भी तुम्हे प्रेत दिखाई दिए है ?"

"हाँ देखे है। सिर्फ एक बार छ बरस पहले मेरा फिल्का नाम का एक दास था। उसे दफनाने के बाद ही मेरे मुँह से निकला, "फिल्का मेरा पाईप लाओ।" उसने आकर अलमारी से मेरा पाईप निकाला। मैने मन ही मन कहा, "वह बदला लेने के लिए आया है।" उसके मरने से कुछ ही पहले हमारा झगडा हुआ था। मैने उसे डाँटा "चले जाओ यहाँ से, बदमाश कही के ! तुम्हारी कोहनी मे इतना बडा छेद है, तुम्हे मेरे सामने आते शर्म नही आती ?" उस दिन के बाद से वह कभी नही आया। मार्फा पैत्रोवना से मैने इस घटना की चर्चा नही की। मै फिल्का की आत्मा की शान्ति के लिए गिर्जे मे गीत गवाना चाहता था, लेकिन मुझे शर्म महसूस हुई।"

"तुम्हे जाकर किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए।"

"मै जानता हूँ कि मेरी तबियत ठीक नही है, लेकिन मै तो तुमसे पाँच गुना ताकतवर हूँ, लेकिन मैने तो तुमसे नही पूछा कि तुम भूत-प्रेतो मे विश्वास करते हो या नही।"

"मै यह हरगिज नही मान सकता।" रास्कोलनिकोव क्रोध से चिल्लाया।

स्वीद्रीगाईलोव बडबडाने लगा, "लोग कहते है कि बीमार आदमी की कल्पना शक्ति बढ जाती है, इसलिए उसे ऐसी चीजे दिखाई देने लगती है। लेकिन यह असगतिपूर्ण युक्ति है। मै मानता हूँ कि सिर्फ बीमार लोगो को ही प्रेत दिखाई देते है, लेकिन इससे सिद्ध होजाता है कि सिवा बीमार व्यक्तियो के कोई उन्हे नही देख सकता। इससे उनका अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है।"

"बिल्कुल नही," रास्कोलनिकोव ने खीजकर कहा।

"नही ? क्या कहा ? लेकिन तुम इस तर्क का क्या जवाब दोगे कि भूत-प्रेत एक अलग दुनियाँ के ताने-बाने है, जिन्हे देखने का एक स्वस्थ आदमी को मौका ही नही मिलता, क्योकि वह इस धरती का वासी है और प्रकृति के विधान के मुताबिक उसे दूसरी दुनियाँ मे कोई सरो-कार नही हो सकता। लेकिन बीमारी के आते ही धरती के बधन टूटने लगते है और व्यक्ति दूसरी दुनियाँ का साक्षात्कार करने लगता है। बीमारी जितनी ही गभीर होती जाती है, उतना ही दूसरी दुनियाँ से सम्पर्क होता जाता है। मृत्यु के साथ ही व्यक्ति सीधा दूसरी दुनियाँ मे पहुच जाता है। मैं यह सब बाते बहुत पहले से जानता हूँ। तुम्हे अगर मृत्योपरान्त के जीवन मे विश्वास है तो तुम इन सब बातो को समझने लगोगे।"

"मुझे मृत्योपरान्त जीवन मे विश्वास नही है" रास्कोलनिकोव ने कहा।

स्वीद्रीगाईलोव फिर किसी सोच मे डूब गया। सहसा उसने कहा, "मान लो अगली दुनियाँ मे सिर्फ मकडे ही मकडे हुए तब ?"

"यह आदमी निरा पागल है," रास्कोलनिकोव ने सोचा।

"हम लोग चिरतन को कल्पना से परे की वस्तु समझते है, जो बहुत बडी है। लेकिन क्या जरूरी है कि वह इतनी विशाल हो ? कई बार मै सोचता हूँ कि चिरतन एक छोटा सा कमरा है, जिसमे अधेरा

और सीलन है, जिसकी दीवारो मे मकड़ी के जाले लगे है—बिल्कुल देहात के गुसलखाने की तरह।"

"इससे ज्यादा आरामदेह और न्यायोचित स्थान की कल्पना तुम क्यो नही कर सकते ?" रास्कोलनिकोव ने पीडित स्वर मे कहा।

"न्यायोचित ? हम कैसे कह सकते है कि यह न्यायोचित नही है ? कम से कम मेरे बस मे होता तो ा हाँ करता।" स्वीद्रीगाईलोव ने मुस्करा कर कहा।

यह सुनकर रास्कोलनिकोव को ठडी कँपकँपी आने लगी। स्वीद्री-गाईलोव उसकी तरफ देखकर हँसने लगा, "जरा सोचो तो सही। आध घटे पहले हम एक-दूसरे के लिये अपरिचित थे और एक दूसरे को दुश्मन समझते थे। अभी एक बहुत बडी समस्या सुलझाने को पडी है और उसे भूलकर हम आध्यात्मिक चर्चा मे लग गये है। मैने कहा था न कि हम दोनो एक ही थैली के चट्टे-बट्टे है।"

रास्कोलनिकोव ने खीजकर कहा, "कृपा कर के यह बताइये कि आपने यहाँ आने का कष्ट क्यो उठाया है ? मेरे पास फालतू वक्त नही है। मुझे जल्दी ही कही जाना है।"

"जरूर जरूर। लेकिन यह बताओ कि क्या तुम्हारी बहन अवदोत्या रोमानोव्ना की शादी मिस्टर लूजिन से होने वाली है ?"

"मै तुम्हारे मुँह से अपनी बहन का नाम नही सुनना चाहता। उसके बारे मे मुझसे पूछताछ करने का तुम्हे साहस कैसे हुआ ? तुम स्वीद्रीगाईलोव हो न ?"

"जब मै तुम्हारी बहन के बारे मे बातचीत करने आया हूँ तो भला उसका नाम कैसे न लूँ ?"

"अच्छी बात है, जो कहना है जल्दी कह डालो।"

"लूजिन मेरी पत्नी का रिश्तेदार है। तुमने भी देख ही लिया होगा कि वह कैसा आदमी है। वह अवदोत्या रोमानोव्ना का पति

बनने योग्य नही है। वह बेचारी शायद· शायद अपने परिवार की खातिर इतनी बडी कुर्बानी कर रही है। मेरा ख्याल था कि इस रिश्ते के टूट जाने से तुम्हे खुशी ही होगी। तुम्हे मिलने के बाद अब मेरा ख्याल और भी पक्का हो गया है।"

"ये सब मूर्खतापूर्ण बाते है · अगर तुम बुरा न मानो तो मै कहूँगा कि यह तुम्हारी गुस्ताखी है।"

"तुम कहना चाहते हो कि मै स्वार्थवश यह बाते कह रहा हूँ ? रोदियोन रोमनोविच, अगर इस मामले मे मेरा कुछ स्वार्थ होता तो मै खुले आम ऐसी बात न कहता। मै इतना मूर्ख नही हूँ। इसका एक विचित्र मनोवैज्ञानिक कारण है। मैने अभी कहा कि मै खुद अवदोत्या रोमानोव्ना से प्रेम करता था। लेकिन तुम्हे मालूम होना चाहिए कि अब मेरे मन मे प्रेम की भावना नही रही। मुझे स्वय भी इस बात पर आश्चर्य होता है। क्योकि तब मेरी भावना कितनी गहरी "

"निकम्मेपन और लम्पटता ने तुम्हे ऐसा बना दिया है," रास्कोल-निकोव ने कहा।

"मै निश्चय ही निकम्मा और लम्पट हूँ, लेकिन तुम्हारी बहन मे कुछ ऐसे गुण है जिन्हे देखकर मै प्रभावित हुए बिना नही रह सका। खैर, अब उसमे मुझे दिलचस्पी नही रही।"

"कब से ?"

"इसका आभास तो मुझे पहले ही हो गया था, लेकिन परसो पीटर्स-बर्ग पहुँचते ही मैने इस बारे मे फैसला कर लिया है। वैसे मास्को मे मैने सोचा था कि मै लूजिन को खदेड कर खुद अवदोत्या रोमानोव्ना से शादी कर लूँगा।"

"कृपा करके सक्षेप में अपने आने का असली उद्देश्य बता दे। मै जल्दी मे हूँ, मुझे कही बाहर जाना है · "

"बडी खुशी से। यहाँ आने से पहले मुझे कई जरूरी इन्तजाम

करने थे। मै अपने बच्चो को उनकी मौसी के पास छोड कर आया हूँ। उन्हे अब मेरी देख-रेख की जरूरत नही। और फिर मै पिता के रूप मे कैसा जचूँगा ? पिछले साल मार्फा पैत्रोव्ना से मुझे जो पैसा मिला था, उतना ही बहुत है। माफ करना, मै अभी असली बात पर आ रहा हूँ। यात्रा शुरू करने से पहले मिस्टर लूजिन का मामला साफ करना भी जरूरी था, लेकिन जब मुझे पता चला कि यह शादी मार्फा पैत्रोव्ना के दिमाग की उपज है तभी से मेरा उससे झगडा हुआ। अब मै तुम्हारे जरिये और तुम्हारी इच्छा हो तो तुम्हारी मौजूदगी मे अवदोत्या रोमानोव्ना से मिलकर उसे समझाऊँ कि मिस्टर लूजिन से शादी करने मे उसे सिवा नुकसान के और कुछ हाथ नही लगेगा। मै पिछले सब अप्रिय प्रसगो के लिए उसमे माफी मागूँगा और लूजिन से रिश्ता तोड्ने के लिए दस हजार रूबल उपहार मे दूँगा। मुझे विश्वास है कि तुम्हारी बहन भी यह रिश्ता तोड़ना चाहती है, सिर्फ उसे मदद की जरूरत है।"

"तुम निश्चय ही पागल हो गये हो। ऐसी बाते करने की तुम्हे हिम्मत कैसे हुई ?" रास्कोलनिकोव को गुस्से की बजाय विस्मय अधिक हुआ।

"मै जानता था कि तुम मुझ पर बिगडोगे। मै अमीर आदमी नही हूँ फिर भी यह रकम मेरे पास फालतू है। अगर अवदोत्या रोमानोव्ना ने इसे स्वीकार न किया तो मै किसी मूर्ख काम मे इसे गँवा दूँगा। मै किसी स्वार्थवश ऐसा नही कर रहा, इसलिए मेरा अन्त करण साफ है। तुम्हे विश्वास नही हो रहा, लेकिन भविष्य मे तुम और तुम्हारी बहन, दोनो को इस सच्चाई का पता चल जायगा। बात यह है कि मेरी वजह से तुम्हारी बहन को सचमुच मुसीबत और अप्रियता झेलनी पडी है, इसलिए हरजाने के रूप मे नही, बल्कि अपनी सद्भावना प्रकट करने के लिए, मै यह रकम भेट करना चाहता हूँ। अगर मेरे मन मे

स्वार्थ की गंध भी होती तो मैं खुल्लम खुल्ला यह प्रस्ताव न रखता। पांच हफ्ते पहले, मैंने उसे इससे भी बड़ी रकम देने का वचन दिया था। इसके अलावा जल्द ही हो सकता है कि मैं किसी और लड़की से शादी कर लूँ, जिससे अवदोत्या रोमानोव्ना को मेरी नीयत पर शक करने का मौका नहीं रहेगा। अन्त मे मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि लूजिन से भी तो वह पैसे की वजह से ही शादी कर रही है। रोदियोन रोमनोविच क्रोध की बजाय ठंडे दिमाग से सोचो।" स्वीद्रीगाईलोव के स्वर मे आवेश बिल्कुल नही था।

"बस करो, तुम्हारी इस गुस्ताखी को मैं कभी माफ नही कर सकता।"

"बेशक न करो, लेकिन तब तो झूठे तकल्लुफ की वजह से दुनिया मे कोई आदमी अपने पड़ौसी की कभी रत्ती भर मदद नही कर पायेगा। यह फिजूल बात है। मैं अगर तुम्हारी बहन के नाम यह रकम वसीयत कर जाऊँ तो क्या वह लेने से इन्कार करेगी ?"

"मुझे तो यही उम्मीद है कि वह साफ इन्कार कर देगी।"

"नही, नही, खैर तुम दस हजार रूबल ठुकराना चाहते हो तो शौक से ठुकरा दो, नही तो वह रकम तुम्हारे काम आती। मेहरबानी करके मेरी कही बाते अवदोत्या रोमानोव्ना तक पहुँचा देना।"

"नही, मै ऐसा नही करूँगा।"

"तब तो मुझे तुम्हारी बहन से खुद मिलना पड़ेगा।"

"अगर मै उससे सारी बाते कह दूँ तो क्या तुम उससे मिलने का इरादा छोड़ दोगे ?"

"इसका ठीक ठीक जवाब मै नही दे सकूँगा। मै उससे एक बार ज़रूर मिलना चाहूँगा।"

"इसकी उम्मीद छोड़ दो।"

"तुम मुझे नही जानते। हो सकता है कि भविष्य मे हम दोनो

दोस्त बन जाये ।"

"तुम सोचते हो कि कभी हम दोनो मे दोस्ती हो सकेगी ।"

"क्यो नही ?" स्वीद्रीगाईलोव मुस्कराता हुआ उठ खडा हुआ । "मै तुम्हारे एकान्त मे दखल देना नही चाहता और बिना सोचे समझे यहाँ चला आया ' हालाँकि आज सुबह मुझे तुम्हारा चेहरा अजब-सा दिखाई दे रहा था ।"

"तुमने आज सुबह मुझे कहाँ दखा था ?" रास्कोलनिकोव ने घबराकर पूछा ।

"अचानक ही तुम मुझे दिखाई दे गये मै भी सोच रहा था कि तुममे और मुझमे कोई समानता जरूर है । घबराओ नही । मै किसी के मामले मे दखल नही देता । याद रखो, कभी पत्तेबाजो के साथ मेरी खूब छनती थी, प्रिस स्वीरवी मेरे दूर के रिश्तेदार है, मैने कभी उन्हे तग नही किया, यह दूसरी बात है । मैडम प्रीलूकोव की एलबम मे मै रफियल की 'मैडोना' के बारे मे लेख लिख सकता हूँ । सात बरस मैने मार्फा पैत्रोव्ना के पास रह कर गुजारे है लेकिन किसी जमाने मे मै भूसे की मडी मे वियाजेम्सकी के मकान मे रहता था—हो सकता है ब्रर्ग के साथ गुब्बारे मे बैठकर मै आकाश की सैर करूँ ।"

"क्या मै पूछ सकता हूँ कि आप कब यात्रा पर जा रहे है ?"

"कौनसी यात्रा ?"

"अभी आपने जिसका जिक्र किया था ।"

"यात्रा ? हाँ मैने किसी यात्रा का जिक्र तो किया था । खैर यह बडा लबा चौडा विषय है । इस समय तुम बिना सोचे समझे ही बोल रहे हो । हो सकता है, मै जल्द ही शादी कर लूँ । मेरा एक जगह रिश्ता तय हो रहा है ।"

"यहाँ ।"

"हाँ"

"लेकिन इन सब बातो की फुर्सत तुम्हे कब मिली ?"

"मै एक बार अवदोत्या रोमानोव्ना से जरूर मिलना चाहता हूँ। अच्छा फिर मिलेगे। अरे ! एक बात तो मै भूल ही गया। अपनी बहन से कह देना, कि मार्फा पैत्रोवना उसके नाम तीन हजार रूबल छोड गई है। मरने के एक हफ्ते पहले उसने अपना वसीयतनामा तैयार किया था और मेरे सामने उस पर दस्तखत किए थे। दो या तीन हफ्ते बाद तुम्हारी बहन को पूरी रकम मिल जायेगी।"

"तुम सच बोल रहे हो ?"

"हाँ, उससे जरूर कह देना। मै तुम्हारे नज़दीक ही रहता हूँ। जब चाहो सेवा मे हाजिर हो जाऊँगा।"

बाहर निकलते वक्त स्वीद्रीगाईलोव राजुमिहीन से टकरा गया।

२

आठ बजने ही वाले थे। दोनो नवयुवक बेकालेव के घर की तरफ जा रहे थे, ताकि लूजिन के आने से पहले ही वहाँ पहुँच जाये।

राजुमिहीन ने सडक पर पहुँचते ही पूछा, "यह कौन था ?"

"यही था वह जमीदार स्वीद्रीगाईलोव जिसके यहाँ मेरी बहन गवर्नेस थी। इस आदमी ने मेरी बहन पर डोरे डालने की कोशिश की और उसकी पत्नी मार्फा पैत्रोवना ने मेरी बहन को घर से निकाल दिया। बाद में मार्फा पैत्रोवना को पश्चाताप हुआ और उसने दूनिया से माफी माँग ली। सहसा मार्फा पैत्रोवना की मृत्यु हो गई। आज सुबह हम उसकी चर्चा कर रहे थे। न जाने क्यो मुझे इस आदमी से डर लगता है। वह अपनी पत्नी को दफनाते ही क्यो यहाँ चला आया ? मुझे तो दाल में कुछ काला नजर आता है। हमे दूनिया को उसके पजो मे जाने से बचाना होगा। सुना तुमने ?"

"लेकिन वह तुम्हारी बहन का भला क्या बिगाड सकता है ? खैर तुमने यह बात मुझे बताकर अच्छा किया। हम जरूर उसकी रक्षा करेगे। यह आदमी रहता कहाँ है ?"

"मुझे नही मालूम।"

"तुमने पूछा क्यो नही ? खैर मै मालूम कर लूँगा।"

"तुमने उसे देखा है ?"

"हाँ बहुत गौर से।"

"क्या सचमुच गौर से देखा था ?"

"हा मै हजार आदमियो की भीड मे भी इसे पहचान सकूँगा। मुझे लोगो के चेहरे हमेशा याद रहते है।"

दोनो चुप हो गये।

रास्कोलनिकोव ने बडबडाना शुरू किया, "हूँ · सब ठीक है। जानते हो, मुझे लगा शायद यह मेरा भ्रम हो।"

"क्या मतलब ?"

"तुम सब कहते हो कि मै पागल हूँ। मै अभी सोच रहा था कि शायद मै सचमुच पागल हो गया हूँ और मैने अभी प्रेत देखा है।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि मै पागल हूँ और पिछले दिन की सारी घटनाये मेरा भ्रम थीं।"

"छि रोद्या तुम फिर असतुलित होने लगे। · लेकिन इस आदमी से तुम्हारी क्या बात-चीत हुई ? वह किसलिए यहाँ आया था ?"

रास्कोलनिकोव चुप रहा। राजुमिहीन ने कुछ सोच कर कहा।

"अब मेरी कहानी सुनो। जब मै तुम्हारे यहाँ आया, तब तुम सो रहे थे। खाना खाने के बाद मै पोरफेरी के घर गया। जेमेतोफ वही मौजूद था। मैने बात शुरू करनी चाही लेकिन समझ मे न आया कि कैसे शुरू करू। लेकिन वे लोग इस बात को समझना ही नही चाहते। मैने पोरफेरी को खिडकी के पास बुलाकर बातचीत शुरू की लेकिन वह भी व्यर्थ गई। हम दोनो बगले झाँकने लगे। फिर मैने चचेरे भाई की हैसियत से कहा कि मै मुक्का मार कर उसका भेजा निकाल दूँगा। वह चुप रहा और मै गालियाँ बकता हुआ वहाँ से

चला आया। कैसी मूर्खता थी। जेमेतोफ से मैने एक भी शब्द नही कहा मेरा ख्याल था कि मैने सारा मामला चौपट कर डाला है, लेकिन सीढियाँ उतरते वक्त मुझे सूझा कि आखिर हम किसलिए परेशान हो? जब तुम्हे कोई खतरा नही है तो फिर तुम उनकी परवाह क्यो करो? अगर मै तुम्हारी जगह होता तो उन्हे खूब चक्कर मे डालता और बाद मे वे शर्मिंदा होते। तब कितना मजा आता। जहन्नुम मे जाये ये लोग—बाद मे चाहे हम उनकी मरम्मत करे लेकिन अब तो उन पर हँस ले।'

"ये सब ठीक है, लेकिन कल तुम क्या करोगे?" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन सोचा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसे अभी तक यह ख्याल ही नही आया था कि अगर राजुमिहीन को सच्ची बात मालूम हो गई तो वह क्या सोचेगा। उसने राजुमिहीन की बातो मे बहुत कम दिलचस्पी ली थी, क्योकि इस बीच बहुत सी नई घटनायें घट चुकी थी।

बरामदे मे उनका लूजिन से सामना हो गया। लूजिन ठीक आठ बजे वहाँ पहुँच गया था और कमरे का नंबर तलाश कर रहा था। तीनो जने बिना एक दूसरे की तरफ देखे, कमरे की ओर बढे। लूजिन जान-बूझ कर पीछे रह गया और उसने अपना कोट उतार दिया। रास्कोल-निकोव की वृद्धा माँ लूजिन का स्वागत करने के लिये आगे बढी। दूनिया अपने भाई से बाते करने लगी। लूजिन ने अत्यधिक शिष्टता से दोनो महिलाओ का अभिवादन किया लेकिन वह घबराया सा मालूम होता था। वृद्धा ने झेप मिटाने के लिये सबको एक मेज के गिर्द बिठा दिया जहाँ एक समावार खौल रहा था। लूजिन और दूनिया ठीक एक दूसरे के सामने बैठे थे। लूजिन की बगल में राजुमिहीन था और रास्कोलनिकोव अपनी बहन के पास बैठा था।

क्षण भर के लिये कमरे मे चुप्पी छाई रही, लूजिन ने जानबूझ कर

जेब मे से इत्र मे बसा रूमाल निकालकर अपनी नाक पोछी। वह दिखाना चाहता था कि उन सबको उसके अपमान के लिये जवाबदेह होना पडेगा। बरामदे मे आकर उसने सोचा था कि वह वापिस लौट जाये ताकि वह दोनो स्त्रियो को सबक सिखा सके, लेकिन वह ऐसा नही कर सका था। उसे अनिश्चितता से चिढ थी और वह जानना चाहता था कि उसकी चेतावनी का उल्लघन करने का साहस दोनो स्त्रियो मे कैसे हुआ ? वह इस धृष्टता के लिये उन्हे सजा भी देना चाहता था।

"मुझे उम्मीद है, आपको सफर मे कोई तकलीफ नही हुई," उसने अफसराना ढग से पूछा।

"हम दोनो आराम से आई है," वृद्धा ने उत्तर दिया।

"मुझे यह जानकर खुशी हुई। अवदोत्या रोमानोव्ना को ज्यादा थकान तो नही हुई ?"

"मै अभी जवान और तन्दुरुस्त हूँ, इसलिये जल्दी नही थकती। लेकिन माँ बहुत थक गई थी," दूनिया ने जवाब दिया।

"थकान से बचने का कोई रास्ता नही। हमारे देश की रेल यात्रा बहुत लबी होती है। कहते है मा—रूस बहुत विस्तृत है · कल चाहने पर भी मै आप से नही मिल पाया। आपको कोई तकलीफ तो नही हुई ?"

"नही, नही प्योत्र पैत्रोविच, कल अगर ईश्वर ने दिमित्री प्रोकोफिच को हमारी मदद के लिये न भेजा होता तो हमारी न जाने क्या हालत होती। ये है दिमित्री प्रोकोफिच राजुमिहीन," वृद्धा ने परिचय करवाया।

"कल मुझे इनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था," कहकर लूजिन ने राजुमिहीन की तरफ एक विषाक्त दृष्टि डाली।

लूजिन उन लोगो मे से था जो समाज में शालीनता का अभिनय तो करते है, लेकिन उनका यदि जरा भी विरोध किया जाये तो उनकी सारी शालीनता गायब हो जाती है। इसके बाद फिर कमरे मे खामोशी

छा गई। रास्कोलनिकोव जानबूझ कर चुप्पी साधे बैठा था। दूनिया फौरन उस प्रसग को नही उठाना चाहती थी। राजुमिहीन के पास कहने को शब्द नही थे, और वृद्धा फिर आशकिन हो उठी थी। उसने बातचीत शुरू करने के लिये कहा, "मार्फा पैत्रोवना का देहान्त हो गया है। क्या तुम्हे यह खबर मालूम है ?"

"हॉ, और मै तुम्हे बताने आया हूँ कि अपनी पत्नी को दफनाने के फौरन बाद ही मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव पीटर्सबर्ग चले आये। मुझे विश्वस्त सूत्र से यह मालूम हुआ है," लूजिन बोला।

दूनिया ने चकित दृष्टि से अपनी मॉ की तरफ देखा और पूछा, "अच्छा, वे पीटर्सबर्ग मे है ?"

"हाँ, इसके पीछे जरूर कोई न कोई चाल है, वरना यहॉ आने की इतनी जल्दी क्या थी ?"

"हे ईश्वर! क्या वह आदमी यहॉ भी दूनिया को चैन से नहीं रहने देगा ?" वृद्धा चिल्लाई।

"लेकिन मेरे ख्याल में आपको और अवदोत्या रोमैनोव्ना को बिल्कुल नही घबराना चाहिये। अगर आप खुद उससे मिलना चाहती हैं तो बात दूसरी है। मै इस मामले मे पूरा सावधान हूँ और यह पता लगा रहा हूँ कि वह कहाँ ठहरा है।"

"ओह पैत्रोविच, तुम नही जानते मै उस आदमी को कितना खतरनाक समझती हूँ। मुझे विश्वास है कि उसी के कारण मार्फा पैत्रोवना की मृत्यु हुई।"

"खैर इस बात को साबित करना नामुमकिन है। हो सकता है, उसने अपने व्यवहार से पत्नी का अपमान किया हो। जहॉ तक उसके चरित्र और व्यक्तित्व का सबध है, मैं आपसे सहमत हूॅ। मै ठीक से नही कह सकता कि उसकी आर्थिक स्थिति क्या है और मार्फा पैत्रोवना उसके नाम कितनी रकम छोड गई है, खैर यह तो कुछ दिनो मे ही

पता चल जायेगा, लेकिन अगर पीटर्सबर्ग मे उसके पास आमदनी का कोई जरिया हुआ तो वह फिर पहले जैसी हरकते शुरू कर देगा। वह अत्यत नीच और लपट आदमी है। मै जानता हूँ कि अगर मार्फा पैत्रोवना उससे प्रेम न करती और उसका कर्ज न चुकाती तो इस वक्त वह साईबेरिया मे कैदी होता। उस पर हत्या का अभियोग लगा था, मार्फा पैत्रोवना ने किसी तरह उसे छुडा लिया। अब आप जान गई कि वह कैसा आदमी है।"

"हे ईश्वर!" वृद्धा जोर से चिल्लाई। रास्कोलनिकोव चुपचाप सुनता रहा।

"क्या आपके पास इसका कोई सबूत है?" दूनिया ने दृढ स्वर मे पूछा।

"मुझे मार्फा पेत्रोवना ने जो बात बताई थी, मै वही कह रहा हूँ। यह सही है कि उस केस मे कई कानूनी पेचीदगियाँ थी, रेसलिग नाम की एक विदेशी औरत जो सूद पर रुपया कर्ज देती है, उसके साथ स्वीद्रीगाईलोव के रहस्यमय सबध थे। रेसलिश की चौदह या पद्रह बरस की गूगी और बहरी भतीजी भी उसके साथ रहती थी। उसके साथ वह बुरा सलूक करती थी और उसे बेरहमी से पीटती थी। एक दिन उस लडकी ने गले मे रस्सी लटका कर आत्म-हत्या कर ली। कुछ दिनो के बाद खबर फैली कि स्वीद्रीगाईलोव ने उस लडकी के साथ बलात्कार किया था। लेकिन यह बात एक जर्मन औरत ने फैलाई थी जो स्वय दुराचारिणी थी। इसलिये इस पर विश्वास करना कठिन है। मार्फा पैत्रोवना ने पैसो से सबका मुँह बद कर दिया और पुलिस तक रिपोर्ट भी नही पहुँची। लेकिन यह बात बडी महत्वपूर्ण है। अवदोत्या रोमानोव्ना तुमने भी सुना होगा कि छ बरस हुए जब फिलिप नाम के एक नौकर की दुर्व्यवहार के कारण मृत्यु हो गई थी। यह दास प्रथा उन्मूलन के पहले की घटना है।"

"लेकिन मैंने तो सुना था कि फिलिप ने आत्महत्या की थी।"

"हाँ, लेकिन मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव की सख्ती और पाशविकता के कारण ही तो उस बेचारे ने आत्महत्या की थी।"

"पता नही, मैंने तो यही सुना था कि फिलिप पढ पढ कर पागल हो गया था। वह किताबकीड़ा-सा था। नौकरों का कहना है कि मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव ने सिर्फ उसका मजाक उड़ाया था, उसे मारापीटा बिल्कुल नहीं था। जब मैं वहाँ थी, तो वे नौकरों से अच्छा सलूक करते थे और नौकर उन्हे बहुत पसद करते थे। लेकिन उन्हे फिलिप की मृत्यु का कारण जरूर ठहराते थे।"

"देखता हूँ अवदोत्या रोमानोव्ना, कि तुम अकस्मात् मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव का समर्थन करने लगी हो। इसमे सन्देह नही कि उसे स्त्रियों को प्रसन्न करने की कला आती है, वरना मार्फा पेत्रोवना उससे शादी कैसे करती! हो सकता है वह फिर तुमसे सपर्क स्थापित करने की कोशिश करे, इसीलिये मै तुम्हे और तुम्हारी माँ को सलाह देने आया हूँ। मुझे विश्वास है कि वह आदमी फिर सर पर क़र्ज़ चढा लेगा और जेल की हवा खायेगा। मार्फा पैत्रोवना उसके लिये अपनी वसीयत मे कुछ नही छोडना चाहती थी, शायद उसने मामूली सी रकम छोडी भी हो, जिसे ऐसा लपट आदमी एक साल के भीतर ही उडा देगा।"

"प्योत्र पेत्रोविच, मेहरबानी करके स्वीद्रीगाईलोव की चर्चा बद करो। इसे सुनकर मुझे कोफ्त होती है।" दूनिया ने कहा।

"वह अभी मुझसे मिलने आया था," रास्कोलनिकोव ने आखिर अपनी चुप्पी तोडी।

सब लोग चकित दृष्टि से रास्कोलनिकोव का मुँह ताकने लगे।

"डेढ घटा पहले जब मै सो रहा था, तब उसने आकर मुझे जगा दिया और अपना परिचय दिया। उसे उम्मीद है कि भविष्य मे उसकी

मुझसे दोस्ती हो जायगी। और सुनो दूनिया, वह तुमसे मिलने के लिये बहुत उत्सुक है और चाहता है कि इस काम मे मै उसकी मदद करूँ। वह तुम्हारे सामने एक प्रस्ताव रखना चाहता है। उसने मुझे बताया कि मरने से एक हफ्ते पहले मार्फा पैत्रोवना ने अपने वसीयतनामे मे तुम्हारे लिये तीन हजार रूबल छोडे है। जल्द ही तुम्हे यह रकम मिल सकती है।"

"ईश्वर को लाख धन्यवाद" वृद्धा ने अपने शरीर पर क्रास का चिन्ह बनाते हुए कहा, "दूनिया, तुम स्वर्गीय आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करो।"

"क्या यह सच है ?" लूजिन ने पूछा।

"उसने और क्या कहा था ?" दूनिया ने पूछा।

"इसके बाद उसने कहा, कि अपनी सारी जायदाद मार्फा पैत्रोवना ने उसके बच्चो के नाम कर दी है। बच्चे अपनी मौसी के पास रह रहे है। उसने यह भी बताया कि वह कही नजदीक ही ठहरा हुआ है, मैने उससे पूछा नही • •"

"लेकिन वह दूनिया के सामने कौनसा प्रस्ताव रखना चाहता है ? क्या उसने तुम्हे बताया ?" वृद्धा ने भयभीत स्वर मे पूछा।

"हॉ"

"कौनसा प्रस्ताव ?"

"यह मै बाद मे बताऊँगा" कहकर रास्कोलनिकोव चाय पीने लगा।

लूजिन ने अपनी घडी की तरफ देखकर कहा, "मुझे जरूरी काम से कही जाना है इसलिये मै आप लोगो की बातचीत मे विघ्न नही डालूँगा," और वह जाने के लिये तैय्यार हो गया।

दूनिया ने कहा, "प्योत्र पैत्रोविच यही रुको। तुम शाम यहाँ गुजारना चाहते थे। तुमने मा को यह भी लिखा था कि तुम उससे

जवाब तलब करना चाहते हो।"

लूजिन ने रौब से वैठते हुए कहा, "तुम ठीक कहती हो, अवदोत्या रोमानोव्ना, मैं एक जरूरी बात पर तुमसे और तुम्हारी आदरणीय मा से जवाब तलब करना चाहता था, लेकिन चूंकि तुम्हारा भाई मेरी मौजूदगी मे मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव के प्रस्ताव के बारे मे बात करने को तैयार नही है, इसलिये मै भी सब लोगो के सामने इन जरूरी मामलो की चर्चा नही करना चाहता। इसके अलावा मेरी अत्यावश्यक प्रार्थना को ठुकरा दिया गया है ··" वह शालीनतापूर्वक बैठकर अपने आहत स्वाभिमान का प्रदर्शन करने लगा।

"मेरे आग्रह से ही तुम्हारी प्रार्थना ठुकराई गई है। तुमने लिखा था कि मेरे भाई ने तुम्हारा अपमान किया है इसलिये वह हमारी मुलाकात के समय मौजूद न रहे। मेरा ख्याल है कि पहले इस मामले की सफाई हो जानी चाहिये। अगर रोद्या ने सचमुच तुम्हारा अपमान किया है तो उसे तुमसे माफी मागनी चाहिये और वह जरूर मागेगा।"

लूजिन ने सख्ती बरतते हुए कहा, 'अवदोत्या रोमानोव्ना, कई अपमानो को इन्सान कभी नही भूल सकता, चाहे कितनी ही सद्भावना क्यो न हो। हर चीज की एक सीमा होती है जिसका उल्लघन करने पर वापिस लौटना असभव होता है।"

"मेरा इशारा इस बात की तरफ नही था।" दूनिया ने अधीर होकर कहा, "इस मामले के सुलझने पर ही हमारा सारा भविष्य निर्भर करता है। अगर तुम्हारे मन मे मेरे लिये जरा सी भी इज्जत है तो तुम्हे आज इस झगडे को निपटाना ही होगा। मै फिर कहती हूं कि अगर मेरा भाई कसूरवार साबित होगा तो वह तुमसे माफी मॉग लेगा।"

लूजिन ने चिढकर उत्तर दिया, "मुझे तुम्हारे सवाल पर हैरानी हो रही है। तुम्हारी इज्जत मै जरूर करता हूँ, तुम्हे सुखी बनाना

चाहता हूं लेकिन तुम्हारे परिवार के किसी सदस्य को पसन्द-नापसन्द करने का अधिकार मुझे है। फर्ज का मतलब ”

दूनिया ने आवेश से बात काटकर कहा, “प्योत्र पैत्रोविच, इतनी जल्दी गुस्से में आना ठीक नही। मै तुम्हे सदा से सहृदय समझती आई हूं। मैने तुम्हे बहुत बड़ा वचन दिया है। मै तुम्हारी मगेतर हूँ। तुम्हे मेरी निष्पक्षता पर भरोसा रखना चाहिये। मेरे भाई को भी तुम्हारी तरह मेरी निष्पक्षता पर आश्चर्य हो रहा है। मैने उससे आग्रह किया था कि वह इस मुलाकात मे जरूर शरीक हो, लेकिन मैने उसे अपना असली उद्देश्य नही बताया था। याद रखो, अगर तुम दोनो मे सुलह न हुई तो मुझे तुम दोनो मे से एक को चुनना पडेगा। मै नही चाहती कि मै अपने चुनाव मे गलती करूं। तुम्हारी खातिर मै अपने भाई से रिश्ता तोड सकती हूं, और अपने भाई की खातिर तुमसे भी नाता तोड सकती हूँ। मै यह जानना चाहती हूँ कि मेरे भाई का प्रेम सच्चा है या नही। और तुम मेरी इज्जत करते हो और मेरे पति बनने के काबिल हो यह भी मुझे देखना है।”

“अवदोत्या रोमानोव्ना, तुम्हारा और मेरा जो रिश्ता है, उसे देखते हुए तुम्हारे शब्द अत्यत अपमानपूर्ण है। तुमने न सिर्फ एक मुंहफट छोकरे से मेरी बराबरी की बल्कि तुमने मुझसे नाता तोडना भी स्वीकार कर लिया। तुम कहती हो कि तुम दोनो मे से एक को चुनोगी। इससे स्पष्ट हो गया कि तुम मुझे अत्यन्त क्षुद्र समझती हो। मै यह सब बर्दाश्त नही करूंगा। आखिर हमारे रिश्ते के प्रति भी तो तुम्हारा कोई फर्ज है।”

“क्या कहा? मै तुम्हे अपने जीवन के अमूल्य रिश्तो के बराबर समझूं, जो मेरे लिये सब कुछ है, और तुम यह समझो कि मै तुम्हे क्षुद्र समझती हूँ? • ” दूनिया का चेहरा आवेश से लाल हो गया।

रास्कोलिनिकोव व्यगपूर्ण ढग से मुस्करा रहा था। राजुमिहीन

अपनी जगह पर हिलने डुलने लगा, लेकिन लूजिन पहले से भी ज्यादा चिढ गया।

"अपने भाई से ज्यादा तुम्हे अपने जीवन साथी, भावी पति से प्रेम होना चाहिये। किसी भी हालत मे मुझसे उसकी बराबरी नही की जा सकती। मैने अभी कहा कि मै तुम्हारे भाई के सामने कोई चर्चा नह करूँगा, लेकिन अब मेरे सम्मान का प्रश्न है।" लूजिन ने वृद्धा को सबोधित करके कहा, "आपके बेटे ने कल मिस्टर राजुदिकन (मै इनका नाम भूल गया) के सामने मेरी बेइज्जती की। मैने एक बार बातचीत के दौरान मे कहा था कि विलास मे पली हुइ लडकियो की अपेक्षा गरीबी मे पली हुई लड़कियो का चरित्र अधिक अच्छा होता है और ऐसी ही लडकियो से शादी करने में फायदा रहता है। आपके बेटे ने मेरी नीयत पर शक किया और मेरे इस वाक्य को तोड-मरोड कर पेश किया, और आप के पत्र का भी शायद हवाला दिया। अगर आप मेरे सामने अपनी स्थिति स्पष्ट कर सके कि आपने किस प्रसग मे यह बात अपने बेटे को लिखी थी, तो मै आश्वस्त हो सकूँगा।"

"मुझे ठीक से याद नही, लेकिन मै तुम्हारी बात का जो अर्थ समझ सकी वही मैने रोद्या को लिख दिया। हो सकता है, रोद्या ने आपके सामने बढा-चढा कर यह बात कही हो।" वृद्धा ने अटक कर कहा।

"आपके सिखाये बगैर आपका बेटा बात को कैसे बढा-चढा कर कह सकता था!"

वृद्धा ने स्वाभिमान पूर्वक कहा, "प्योत्र पैत्रोविच अगर मैने और दूनिया ने तुम्हारी बात पर अविश्वास किया होता तो हम यहाँ मौजूद न होती।"

"ठीक कहती हो मा" दूनिया ने समर्थन किया।

"तो फिर इसमें भी मेरी ही गलती होगी," लूजिन ने आहत स्वर

मे कहा ।

"देखो प्योत्र पैत्रोविच तुम लगातार रोद्या पर लाछन लगाते आ रहे हो, लेकिन तुमने भी तो उसके बारे मे झूठी बात लिखी थी," वृद्धा ने साहस बाधकर कहा ।

"ऐसी कोई झूठी बात तो मुझे याद नही आ रही ।"

"तुमने लिखा था कि जख्मी आदमी की बेटी को पैसे दिये थे, जबकि मैने पैसे उसकी विधवा पत्नी को दिये थे (इससे पहले बेटी को तो मैने देखा तक नही था) । तुमने जानबूझकर हमारे परिवार मे झगडा डालने के लिये एक अपरिचित लडकी के बारे मे बेहूदे शब्द इस्तेमाल किये । ऐसी बदनामी फैलाना नीचतापूर्ण है ।"

लूजिन ने क्रोध से कापती हुई आवाज मे कहा, "क्षमा करे श्रीमान जी, आपकी मा और बहन ने मुझसे आग्रह किया था कि मै उन्हे आपका हाल-चाल लिखू, इसीलिये मैने आपके व्यवहार का जिक्र किया था । रही झूठ की बात, तो मेहरबानी करके यह बताइये कि क्या आपने अपना पैसा बर्बाद नही किया ? क्या उस परिवार मे निकम्मे लोग नही है ?"

"मेरे विचार मे अपनी तमाम अच्छाइयो के बावजूद तुम उस अभागी लडकी के कदमो की धूल के बराबर भी नही हो, जिसकी तुम इतनी निंदा कर रहे हो ।"

"क्या तुम उस लडकी का अपनी मा और बहन से परिचय कराओगे ?"

"वह तो मै आज ही करवा चुका हूँ ।"

"रोद्या !" वृद्धा बोली । दूनिया का चेहरा लाल हो गया । राजुमिहीन के माथे पर त्यौरियाँ पड गई, और लूजिन व्यग्य भरे ढग से मुस्कराया । उसने दूनिया से कहा, "अब तुमने देख लिया कि हमारी सुलह हो सकती है या नही । बस मामला यही खत्म हुआ ।

मै तुम्हारे परिवार की निजी बातचीत मे बाधा नही डालना चाहता। आप लोगो को एक-दूसरे से बहुत सी राज की बाते करनी होगी," यह कह कर लूजिन उठ खडा हुआ और उसने अपना हैट हाथ मे ले लिया। "जाने से पहले मेरी फिर प्रार्थना है कि भविष्य मे मुझे ऐसी मुलाकातो से दूर ही रखा जाय ताकि मेरा अपमान न हो। श्रीमतीजी यह प्रार्थना विशेष रूप से मैं आप मे कर रहा हूँ, क्योकि वह पत्र मैने आपको ही लिखा था।"

यह बात वृद्धा को बुरी लगी। उसने उत्तर दिया। "प्योत्र पैत्रोविच तुम सोचते हो कि हम तुम्हारे अनुशासन मे है। दूनिया ने तुम्हे साफ साफ सारी स्थिति समझा दी, फिर भी तुम्हे विश्वास नही हुआ। तुम इस तरह खत लिखते हो, जैसे तुम्हारा हर हुक्म मानना हमारा फर्ज है। मै तुम्हे साफ बता दू कि अब तुम्हे हम लोगो से खास लिहाज और शिष्टता से पेश आना चाहिए क्योकि तुम्हारी खातिर ही हम सब कुछ छोड कर यहा आये है।"

"मार्फा पैत्रोवना के वसीयतनामे की खबर सुनने के बाद आपने मेरे प्रति जो रुख अपनाया है, उससे तो आपकी बात सच नही मालूम देती," लूजिन ने ताना दिया।

"मालूम होता है कि आप हमे आश्रयहीन समझ कर ही अपमानित कर रहे थे," दूनिया ने तमतमा कर कहा।

"खैर अब तो आप आश्रयहीन नही है। आपके भाई आपको मिस्टर स्वीद्रीगाईलोव के प्रस्ताव के विषय मे बताना चाहते है, जिसमे आपका फायदा ही फायदा है। इसलिए मै आपकी बातचीत मे और बाधा नही डालना चाहता।"

"हे ईश्वर!" वृद्धा चिल्लाई। राजुमिहीन कुर्सी छोड कर खडा हो गया।

"कहो बहन, अब भी शर्मिन्दा हो या नही?" रास्कोलनिकोव ने पूछा।

"मै सचमुच बहुत शर्मिन्दा हूँ। प्योत्र पैत्रोविच, तुम यहाँ से चले जाओ," दूनिया ने क्रोध से तडप कर कहा।

लूजिन को इस बात की उम्मीद न थी। वह अपने को बहुत शक्तिशाली और अपने ऊपर आश्रित लोगो को निरीह समझता था। उसे अभी भी अपने कानो पर विश्वास न हुआ। उसका चेहरा पीला पड गया और ओठ कॉपने लगे।

"अवदोत्या रोमानोव्ना, तुम मुझे जाने के लिए कह रही हो। याद रखो, मै फिर कभी नही वापस आऊँगा। जरा सोच समझ कर बात करो। मै अपनी बात का पक्का आदमी हूँ।"

"कैसी बद्तमीजी है ?" कह कर दूनिया कुरसी से उठ खडी हुई। "मै नही चाहती, तुम कभी वापस आओ।"

"अच्छा यह बात है ?" लूजिन अप्रतिभ हो गया था। "लेकिन जानती हो कि मै इसका विरोध भी कर सकता हूँ।"

"तुम क्या विरोध कर सकते हो ?" वृद्धा ने बीच मे टोककर कहा, "तुम्हे इस ढग से बोलने का क्या अधिकार है ? क्या मै तुम्हारे जैसे आदमी के हाथ अपनी दूनिया को सौप सकती हूँ ? चले जाओ यहाँ से। दरअसल गलती हमारी ही है, खासकर मेरी . . "

"श्रीमतीजी, आप ही ने मुझे वचन दिया था और अब आप ही मुकर रही है। इसके अलावा . . मुझे आपकी वजह से कई खर्च उठाने पडे है . . . . ."

लूज़िन की आखिरी बात सुनकर रास्कोलनिकोव का क्रोध हसी मे फूट निकला, लेकिन वृद्धा अब भी गुस्से से तमतमा रही थी।

"खर्च ? कैसे खर्च ? कही हमारे सन्दूक की बात तो नही कह रहे ? लेकिन उस पर तो तुम्हे कोई भाडा नही खर्चना पडा। ईश्वर हम पर दया रखे, प्योत्र पैत्रोविच तुम हो किस अकड़ में ? तुमने हमे वचन मे बाँधा था या हमने ?"

"बस मा, बस करो। प्योत्र पैत्रोविच मेहरबानी करके यहाँ से चले जाओ," दूनिया ने बीच बिचाव किया।

"जाने से पहले एक बात जरूर कहूँगा। तुम्हारी मा इस बात को शायद भूल गई है कि जब सारे शहर मे तुम्हारी बदनामी हो रही थी, तब मैने तुम से शादी करना स्वीकार कर लिया था। तुम्हारी इज्जत रखने और लोगो की परवाह न करने के बदले मे मुझे तुमसे कृतज्ञता की उम्मीद थी, लेकिन अब मेरी आँखे खुल गई है। मेरी समझ मे आ गया है कि लोकमत का विरोध करके मै बहुत बडी गलती करने जा रहा था।"

"कही इस आदमी की खोपडी खुजला तो नही रही ?" राज्मिहीन ने उछल कर कहा।

"तुम कमीने और नीच हो," दूनिया चिल्लाई।

"खबरदार जो अपनी जगह से ज़रा भी हिले, या मुँह से एक भी शब्द निकाला। यहाँ से फौरन चले जाओ, नही तो "

लूजिन का चेहरा क्रोध और घृणा से पीला पड गया। उसके हृदय मे रास्कोलनिकोव के प्रति अपार घृणा और प्रतिशोध की आग जल रही थी। उसे लगा कि रास्कोलनिकोव ही सब बातो के लिए ज़िम्मेदार है। उसका अब भी ख्याल था कि जहाँ तक दोनो स्त्रियो का सबध है, 'मामला बिल्कुल ठीक हो जायगा।'

३

दरअसल लूजिन ने कल्पना मे भी न सोचा था कि दो निराश्रय और अनाथ औरते इस तरह उसके काबू से बाहर जा सकती है। उसके मिथ्याभिमान और आडबर ने उसकी इस धारणा को और भी पुष्ट कर दिया था। लूजिन हीनावस्था से तरक्की करके सम्पन्न हुआ था, इसलिये उसकी आत्मश्लाघा का ठिकाना नही था। उसे अपनी प्रतिभा और क्षमताओ मे पूरा विश्वास था, और वह एकान्त मे अक्सर अपना चेहरा देखकर फूला न समाता था। सबसे अधिक मोह था उसे पैसे से, जो उसने अपनी मेहनत से और हर तरह के उचित-अनुचित तरीको से जमा किया था। पैसे ने उसे अपने से ऊँचे लोगो की श्रेणी मे लाकर खड़ा कर दिया था।

जब उसने दूनिया को याद दिलाया था कि लोकनिदा के बावजूद भी उसने दूनिया पर अनुग्रह किया था, तो सचमुच वह दूनिया की अकृतज्ञता और नीचता पर मन ही मन क्रोध से जल रहा था। लेकिन दूनिया से शादी का प्रस्ताव करते समय उसे मालूम था कि दूनिया निर्दोष है, मार्फा पैत्रोवना ने स्वय आकर इन अफवाहो का खडन किया था और शहर के सब लोग दूनिया का पक्ष ले रहे थे।

यह जानते हुए भी न जाने क्यो वह सोचता था कि उसने दूनिया का उद्धार किया है और यही भावना उसने अनजाने मे दूनिया के सामने प्रकट भी कर दी थी। दूसरे लोग इस भावना से सहमत नही होगे, यह उसकी समझ से परे की बात थी। इसी भावना से प्रेरित होकर वह रास्कोलनिकोव से मिलने गया था और उसे आशा थी कि रास्कोलनिकोव अपने परिवार के उद्धारक को देखते ही श्रद्धा से गदगद् हो उठेगा और उसकी प्रससा करेगा। सीढियो से नीचे उतरते वक्त उसे लगा कि उसके साथ बडी ज्यादती की गई है।

दूनिया के बगैर वह नही रह सकता था। कई बरसो से वह शादी के रगीन सपने देखता आया था, लेकिन पैसा जोडने से उसे फुर्सत ही नही मिलती थी। एकात क्षणो मे वह एक ऐसी लडकी की कल्पना किया करता था जो शरीफ, सु दर, पढी-लिखी और अच्छे खान्दान की हो, लेकिन जिसने गरीबी की मार सही हो, ताकि वह लूजिन को अपना उद्धारक समझकर उसकी पूजा करे और उमके आगे दबी रहे। फुर्सत के समय उसने न जाने कितने प्रणय प्रसगो और वार्तालापो की कल्पना भी कर ली थी। उसकी यह साध पूरी भी हो गई थी। अवदोत्या रोमानोव्ना की सुन्दरता, शिक्षा और असहायता मे महान आकर्षण था। बल्कि वह उसकी कल्पना से कही बढ चढ कर थी। उसे यह देख कर बडा सतोष हुआ कि एक स्वाभिमानो, सच्चरित्र और सुशिक्षित लडकी, जो उससे कही अधिक ऊचे खानदान की है (वह जानता था) जीवन भर उसकी गुलाम रहेगी और वह उसके साथ मनमानी कर सकेगा ''हाल ही मे उसने व्यापार की दुनिया मे तरक्की की थी, उच्च समाज मे शामिल होने के स्वप्न पूरे होने वाले थे'' वह पीटर्स बर्ग मे अपनी किस्मत आजमाना चाहता था। वह जानता था कि एक सुन्दर, सच्चरित्र और सुशिक्षित पत्नी से समाज मे पति का सम्मान बढ जाता है। लेकिन अब उसके सपने चकनाचूर हो गये थे। पर इस

आकस्मिक घटना से जैसे उसके सर पर गाज टूट पडी थी, उसे लग रहा था कि उसके साथ कोई बेहूदा मजाक किया गया है। उसे अच्छी तरह अपनी बात कहने का मौका भी नही दिया गया था। उसके मामूली से मजाक से ही मामले ने इतना गभीर रूप धारण कर लिया था। वह दूनिया से प्रेम करता था। सपनो मे कई बार उसने दूनिया से प्यार भी किया था—इतनी जल्दी सब खत्म हो गया। नही कल ही सारा मामला तय होना चाहिये। सबसे पहले वह उस बेहूदे छोकरे से समझेगा, जो सारी शरारत की जड है। राजुमिहीन का ध्यान आते ही उसका मन अरुचि से भर उठा। अगले ही क्षण उसने सोचा, भला ऐसा आदमी उसका मुकाबिला करेगा ? लेकिन दरअसल खतरा तो स्वीद्रीगाईलोव से है · ·· उसे बहुत से मामले तय करने है।"

दूनिया ने अपनी माँ को चूमकर गले लगा लिया और कहा, "मुझे लूजिन के पैसे का लालच हो गया था, लेकिन मै कसम खाकर कहती हूँ, मै नही जानती थी कि वह इतना नीच आदमी है। अगर मुझे पहले मालूम हो जाता तो मै कभी लालच मे न आती। मुझे दोष मत देना भाई।"

"ईश्वर ने हमारी रक्षा कर ली।" वृद्धा माँ बुदबुदायी, लेकिन वह सारी घटना के महत्व को अभी तक नही समझ पाई थी।

सबके मन का बोझ हल्का हो गया था और सब हँस रहे थे सिर्फ दूनिया के माथे पर त्योरिया पड गई थी। वृद्धा सुबह लूजिन से सबधविच्छेद की कल्पना से ही भयभीत हो रही थी। वह अब अपनी आकस्मिक प्रसन्नता पर चकित हो रही थी। राजुमिहीन को अभी अपनी प्रसन्नता प्रकट करने का साहस नही हुआ था, लेकिन उसे लग रहा था जैसे उसके दिल पर से मनो बोझ उतर गया हो। उसकी उत्तेजना की सीमा न थी। उसे अब अपने दोस्त के परिवार की सेवा करने का मौका मिल गया था, क्या पता आगे क्या हो। इससे आगे की

कल्पना करने मे उसे डर लग रहा था। लेकिन रास्कोलनिकोव उदासीन भाव से अपनी जगह पर बैठा रहा। लूजिन से रिश्ता तोडने मे उसी ने सबसे बढकर हिस्सा लिया था, लेकिन अब उसे इस मामले मे बिल्कुल दिलचस्पी नही रही थी। दूनिया सोचने लगी कि उसका भाई अभी तक उससे नाराज है। वृद्धा मा भयभीत दृष्टि से बेटे की तरफ देखने लगी।

"स्वीद्रीगाईलोव ने तुमसे क्या कहा था ?" दूनिया ने भाई के पास आ कर पूछा।

"हाँ, हाँ बताओ।"

रास्कोलनिकोव ने सर ऊपर उठा कर उत्तर दिया "वह तुम्हे दस हजार रूवल भेट करना चाहता है और मेरी मौजूदगी मे सिर्फ एक बार तुम्हे मिलना चाहता है।"

"दूनिया से भेट करना चाहता है। ऐसा नही होगा। पैसे देने की हिम्मत उसे कैसे हुई ?" वृद्धा चिल्लाई।

इसके बाद रास्कोलनिकोव ने शुष्क स्वर मे स्वीद्रीगाईलोव से अपनी भेट का किस्सा सुनाया। अनावश्यक चर्चा से बचने के लिये उसने मार्फा पैत्रोवना और भूतप्रेतो का प्रसग छोड दिया।

"तुमने उसे क्या जवाब दिया ?" दूनिया ने पूछा।

"मैने उसका सदेश पहुँचाने से इन्कार कर दिया, इस पर उसने कहा कि वह बिना मेरी मदद के ही तुमसे मिलने की कोशिश करेगा। उसने मुझे आश्वासन दिया कि तुम्हारे प्रति उसका प्रेम आवेश मात्र था। वह नही चाहता कि तुम लूजिन से शादी करो वह बे सिर पैर की बाते कर रहा था।"

"तुमने उसकी बातो का क्या अर्थ लगाया, रोद्या ? उसके बारे मे तुम्हारी क्या राय है ?"

"मेरी समझ मे तो कुछ नही आया। वह कहता है कि वह गरीब

है। साथ ही तुम्हे दस हजार रूबल भी देना चाहता है। एक तरफ वह कहता है कि वह सब छोडछाड कर कही जा रहा है, लेकिन दस मिनट बाद ही उसने बताया कि वह शादी करेगा और उसका रिश्ता कही पक्का भी हो गया है। जरूर वह किसी दुष्टतापूर्ण इरादे से यह सब कर रहा है ''ताज्जुब तो यह है कि उसने तुम पर डोरे डालने के लिए इतना फूहड ढग क्यो अपनाया। मैने तुम्हारी ओर से उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया। मुझे वह बडा विचित्र आदमी मालूम होता है लोग उसे पागल कहेगे, लेकिन हो सकता है वह पागलपन का अभिनय कर रहा हो। मार्फा पैत्रोवना की मौत ने उसके दिल पर गहरा असर किया है।"

"ईश्वर उस बेचारी की आत्मा को शान्ति दे। मैं तो सदा उसके लिए प्रार्थना करती रहूँगी। ये तीन हजार रूबल न छोड जाती तो हमारी क्या दशा होती ? लगता है, भगवान ने छप्पर फाड कर दिया है। जानते हो रोद्या, आज सुबह हमारे पास सिर्फ तीन रूबल बचे थे और हमँ दोनो ने सोचा था कि दूनिया की घडी गिरवी रख कर कुछ इन्तजाम करेंगे, ताकि उस आदमी के आगे हाथ न पसारने पडे," मा ने कहा।

दूनिया स्वीद्रीगाईलोव के प्रस्ताव से प्रभावित होकर किसी गहरी सोच मे डूबी थी।

"इस आदमी ने कोई भयकर योजना बना रखी है," वह अस्फुट स्वर मे फुसफुसायी।

रास्कोलनिकोव भाप गया कि दूनिया अकारण ही भयभीत हो रही है। वह बोला, "लगता है मुझे उस आदमी से कई बार मिलना होगा।"

"हम उस पर कडी नजर रखेगे ! मै उसका पता लगाऊँगा !" राजुमिहीन आवेश मे बोला, "मैं उसे नजरो से गायब नहीं होने दू गा।

रोद्या ने मुझे खुद कहा है, मेरी बहन का ध्यान रखना। अवदोत्या रोमानोव्ना आप भी मुझे इजाजत देगी ?"

दूनिया ने मुस्करा कर अपना हाथ आगे बढा दिया लेकिन उसके चेहरे से अभी भी परेशानी झलक रही थी। वृद्धा आशकित दृष्टि से बेटी का मुँह ताकने लगी, लेकिन तीन हजार रूबल मिलने की खबर ने उसे आश्वस्त कर दिया था, यह साफ जाहिर हो रहा था।

पद्रह मिनट तक सबसे बहस होती रही, यहाँ तक कि रास्कोल-निकोव भी गौर से सारी बाते सुन रहा था। राजुमिहीन बोल रहा था,

"आप यहाँ से क्यो चली जाये ? छोटे शहर मे रह कर आप क्या करेगी ? आप सबको एक-दूसरे की जरूरत है मेरी बात पर विश्वास कीजिये। 'अगर आप मुझे साझीदार बनाये तो हम सब मिलकर एक शानदार योजना बना सकते है। सुनिये—मै इस योजना का ब्योरा आपको बताऊँगा। आज सुबह इन सारी घटनाओ से पहले, यह बात मेरे दिमाग मे आई थी। मेरे एक चचा है जो बडे शरीफ आदमी है। उन्हे पेन्शन मिलती है, उनके पास एक हजार रूबल की पूजी है, जिस की उन्हे कोई जरूरत नही है। पिछले दो साल से वे मेरे पीछे पडे हुए है कि मै छ प्रतिशत सूद पर वह रकम उनसे ले लूँ। मै जानता हूँ कि वे सिर्फ मेरी मदद करने के लिए ही ऐसा कह रहे है। पिछले साल मुझे पैसे की जरूरत नही थी, लेकिन इस साल मैने सोचा है कि उनके यहाँ आते ही उनसे कर्ज ले लूगा। अगर आप तीन हजार मे से एक हजार रूबल दे दे तो हमारे पास कारोबार के लिए काफी रकम हो जायेगी।"

इसके बाद राजुमिहीन ने बताया कि अधिकाश प्रकाशको और पुस्तकविक्रेताओ को इस बात की तमीज नही होती कि वे कैसी किताबे छाप और बेच रहे है। अगर अच्छी किताबे छापी जाये तो उनसे

अच्छा मुनाफा हो सकता है। राजुमिहीन प्रकाशक बनने का इच्छुक था। पिछले दो बरसो से वह प्रकाशको के यहाँ काम करता रहा है। उसे तीन यूरोपीय भाषाओ का ज्ञान है, हालाकि सिर्फ छ दिन पहले उसने रास्कोलनिकोव से कहा था कि वह जर्मन मे बिल्कुल शून्य है, उसने आधे अनुवाद के लिए रास्कोलनिकोव को किताब का आधा पारिश्रमिक स्वीकार करने का आग्रह किया था। रास्कोलनिकोव जान गया था कि वह उसकी मदद करने के बहाने झूठ बोल रहा है।

राजुमिहीन ने उत्साहपूर्वक पूछा, "जब हमारे पास सफलता का मुख्य साधन पैसा मौजूद है तो हम क्यो इस मौके को हाथ से जाने दे ? मेहनत तो बहुत करनी पडेगी, लेकिन हम मिलकर काम करेगे। प्रकाशन के अलावा हम अनुवाद का काम भी करेगे। मुझे इसका खासा अनुभव है। दो बरस तक मै प्रकाशको के यहाँ धक्के खाता रहा हूँ। मुझे उनके कारोबार का पूरा ज्ञान हो गया है। पैसा पैदा करने के लिए विद्वता की कोई जरूरत नही पडती। फिर हम यह मौका किस लिए गँवाये ? मुझे दो या तीन ऐसी किताबे मालूम है, जिनके अनुवाद और प्रकाशन के सुझाव मात्र से सौ रूबल तो क्या पाँच सौ मिलने चाहिए। अगर मै किसी को बताऊँगा, तो वह हिचकिचायेगा। ये लोग इतने बौडम होते है। रही कागज खरीदने, छपवाने और बेचने की बात, वह मै सभाल लू गा, आप चिन्ता न करे। पहले हम छोटे पैमाने से कारोबार शुरू करेगे.. जो बढकर बाद मे फैल जायेगा। हर हालत मे हमारा गुजारा तो चल ही जायेगा और हमारी पूँजी भी वापस आ जायेगी।"

दूनिया की आँखे खुशी से चमकने लगी। वह बोली। "दिमित्री प्रोकोफ़िच, मुझे आपकी योजना बहुत पसद आयी।"

"विचार तो अच्छा है, आगे की ईश्वर जाने। मुझे इन बातो का कोई अनुभव नही। यह स्कीम बिल्कुल नयी है, जो भी हो, कुछ दिन

हमे अभी और यहाँ रुकना चाहिये।" वृद्धा ने रोद्या की ओर देखते हुए कहा।

"क्यो भाई तुम्हारा क्या ख्याल है ?" दूनिया ने उससे पूछा।

'विचार तो बहुत अच्छा है, इतनी जल्दी प्रकाशन व्यवसाय के चल निकलने का सपना देखना बेकार है। लेकिन निश्चय ही हम पाँच छ ऐसी किताबे छाप सकते है जिनमे सफलता मिलेगी। मै भी एक ऐसी किताब का नाम जानता हू जो खूब बिकेगी। रही राजुमिहीन की योग्यता की बात, तो मैं उस बारे मे निश्चिन्त हूँ। वह इस कारोबार को समझता है • लेकिन हम यह बाते बाद मे क्यो न तै करे।"

"हुर्रा !" राजुमिहीन खुशी से चिल्लाया।" इसी मकान मे एक स्वतन्त्र फ्लैट खाली है, जिसमे तीन कमरे है, साथ मे फर्नीचर भी है और किराया भी मुनासिब है। शुरू शुरू मे वहाँ रहने मे कोई हर्ज नही। मै कल जाकर आपकी घडी गिरवी रखकर कुछ रकम ले आऊँगा। आप तीनो एक साथ रह सकते है। रोद्या तुम कहाँ चल दिए ?"

"इतनी जल्दी जा रहे हो ?" वृद्धा ने विस्मित स्वर मे पूछा।

"इसी वक्त ?"

रास्कोलनिकोव अपनी टोपी उठाकर चलने की तैयारी कर रहा था। दूनिया चकित दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगी।

रास्कोलनिकोव ने विचित्र ढँग से कहा, "लगता है जैसे तुम सब लोग मुझे दफना कर सदा के लिए बिदा ले रहे हो क्या पता यह हमारी आखिरी मुलाकात ही हो•••" उसके मुह से मन की सच्ची बात निकल गई और उसने मुस्कराने का विफल प्रयत्न किया।

"तुम्हे क्या हो गया है ?" वृद्धा ने पूछा।

"रोद्या, तुम कहाँ जा रहे हो।" दूनिया ने विचित्र स्वर मे पूछा।

रास्कोलनिकोव के सफेद चेहरे पर दृढ निश्चय की छाप थी।

उसने अस्पष्ट स्वर मे कहा, "नही मुझे जाना ही पडेगा मेरा मतलब है • मै तुम्हे और दूनिया को बताना चाहता था कि अच्छा हो अगर मै कुछ दिन तुम लोगो से अलग रहूँ। मै बीमार हूँ । मेरा मन अशात है। जब मेरी तबियत सुधर जायेगी तब मै खुद ही आ जाऊगा अगर यह सम्भव हुआ। मै आप लोगो को बहुत चाहता हूँ और हर वक्त याद रखता हूँ। मुझे अकेला रहने दो ! मैने पहले ही यह फैसला कर लिया था • मै तबाह हो जाऊ या न हो जाऊ, रहूगा अकेला ही। तुम लोग मुझे बिल्कुल भूल जाओ। इसी मे भलाई है। मेरा पता लगाने की कोशिश न करना। अगर मै आ सका तो जरूर आऊँगा • वरना तुम लोगो को बुला लूगा। शायद पहले की सी जिन्दगी फिर लौट आये, लेकिन अगर तुम लोगो को मुझसे प्यार है तो मुझे त्याग दो नही तो मै तुमसे नफरत करने लगूगा—सच कहता हूँ • 'गुड बाई।"

"हे ईश्वर !" वृद्धा चिल्लाई। दूनिया और राजुमिहीन भी सहम गये।

"रोद्या ! रोद्या, आकर हमसे सुलह कर लो। हम पहले की तरह ही रहेगे।" वृद्धा ने कहा।

रास्कोलनिकोव आहिस्ता से बाहर निकल गया। दूनिया ने दौड कर उसे पकड लिया।

"भाई, तुम मा की क्या हालत कर रहे हो ?" दूनिया की आँखे आक्रोश से जल रही थी।

रास्कोलनिकोव उदासीनभाव से उसकी तरफ देखकर बडबडाया "कोई बात नही, मै जाऊगा मै जा रहा हूँ।" और वहाँ से चला गया।

"स्वार्थी ! हृदयहीन, दुष्ट।" दुनिया चिल्लाई।

"वह पागल है, हृदय-हीन नही। आपको उसका पागलपन दिखाई नही देता।" राजुमिहीन ने दूनिया का हाथ पकडकर उसके कानो मे

तग नही करना चाहिये । उसने आश्वासन दिया कि वह किसी अच्छे डाक्टर से रोद्या का इलाज करवायेगा और उस पर निगरानी रखेगा · दरअसल उसी शाम से राजुमिहीन ने उस परिवार मे पुत्र और भाई का स्थान ग्रहण कर लिया था ।

४

रास्कोलनिकोव सीधा नहर के किनारे सोनिया के घर पहुँचा। वह हरे रग के एक पुराने तिमजले मकान मे रहती थी। चौकीदार से उसने दर्जी कापरनोमोव का पता मालूम कर लिया, और तग, अधेरे ज़ीने से वह दूसरी मज़िल की गैलरी में जा पहुँचा। वह अभी अधेरे मे कापरनोमोव का फ्लैट तलाश कर ही रहा था कि एक दरवाज़ा खुला और एक लडकी की आवाज आई,

"कौन है ?"

"मैं हूँ···मैं तुम से मिलने आया हूँ," रास्कोलनिकोव खुले दरवाज़े के भीतर दाखिल हुआ। एक टूटी कुर्सी पर पिचके हुए ताबे के शमादान में एक मोमबत्ती जल रही थी।

"आप ! हे मेरे ईश्वर !" सोनिया क्षीण स्वर मे बोली।

"तुम्हारा कमरा किस तरफ है ? इधर !" रास्कोलनिकोव ने उसकी बात अनसुनी कर दी, और आगे बढ गया।

एक मिनट बाद सोनिया भी मोमबत्ती लेकर भीतर आ गई। वह रास्कोलनिकोव के आकस्मिक आगमन से भयभीत हो गई थी। उसके पीले गालो पर सुर्खी दौड गई और आँखो में आँसू छलछला आये।···

वह मन ही मन लज्जित हो रही थी। साथ ही उसे ख़ुशी भी थी। रास्कोलनिकोव मेज के पास रखी कुर्सी पर जाकर बैठ गया और कमरे मे चारो तरफ निगाह डालने लगा।

कमरा आकार मे बडा था लेकिन उसकी छत बहुत नीची थी, कापरनोमोव के परिवार ने सिर्फ यही कमरा किराये पर उठा रखा था। बाई ओर की दीवार मे एक दरवाजा था, जो साथ वाले फ्लैट मे खुलता था, इस पर हमेशा ताला लगा रहता था। सोनिया का कमरा खलिहान-सा मालूम होता था, दीवार की तीन खिडकिया नहर की ओर खुलती थी। उनका कोरा इतना तिरछा था कि तेज रोशनी मे कुछ भी नजर नही आता था। दूसरा कोना भी बेढब था। इतने बडे कमरे मे फर्नीचर के नाम पर सिर्फ एक पलग, एक कुर्सी, और एक सादी मेज थी, जिस पर नीले रग का मेजपोश बिछा था। मेज के पास दो बेंत वाली कुर्सियाँ पडी थी। सामने की दीवार के आगे एक दराज़ो वाली अलमारी थी, जो जगल मे खोई खोई-सी मालूम देती थी। दीवार पर चिपका पीला कागज कई स्थानो से फट गया था और काला पड गया था। सर्दियो मे जरूर उसमे से सीलन की बू आती होगी। दरिद्रता के सभी लक्षरा वहाँ मौजूद थे, यहाँ तक कि पलग पर मसहरी तक न थी।

सोनिया ने चुपचाप आगतुक की ओर देखा जो उसके कमरे का निरीक्षरा करने मे व्यस्त था। सोनिया भय और आशका से कापने लगी। उसे लगा कि वह अपने भाग्य विधाता के आगे खडी है।

"बहुत देर हो गई है। ग्यारह का वक्त होगा न !" रास्कोलनिकोव ने बिना आखे ऊपर उठाये पूछा।

"हाँ देर हो गई है। अभी मेरी मकान मालकिन की घडी मे ग्यारह बजे है · मैंने खुद सुना।" सोनिया को जैसे पलायन का रास्ता मिल गया हो। "मै आखिरी बार तुमसे मिलने आया हूँ—शायद फिर

कभी हमारी मुलाकात न हो ।" उसके स्वर मे उदासी थी ।

"आप यहा से जा रहे है ?"

"पता नही · शायद कल · · "

"तो आप कल कैटेरीना इवानोव्ना के यहाँ नही आयेगे ?" सोनिया की आवाज काँप रही थी ।

"पता नही · · कल सुबह पता चलेगा · · खैर उसकी कोई परवाह नही · मैं सिर्फ एक शब्द कहने के लिये आया हूँ ।"

रास्कोलनिकोव ने अपनी चिन्ताग्रस्त आँखे ऊपर उठाकर देखा कि वह बैठा हुआ है और सोनिया उसके सामने खडी है । उसने मृदु और शिष्ट स्वर में कहा, "खडी क्यो हो ? बैठ जाओ ।"

सोनिया बैठ गई । रास्कोलनिकोव ने स्नेहभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा और उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया, "तुम कितनी दुबली हो । तुम्हारे हाथ के आर पार दिखाई देता है । बिल्कुल मुर्दे जैसा हाथ है ।"

सोनिया ने मुस्कराने की कोशिश की और उत्तर दिया, "मै हमेशा से इसी तरह हूँ ।"

"जब अपने घर में थी तब भी ?"

"हाँ"

"जरूर ऐसी ही रही होगी," सहसा उसकी आवाज बदल गई । उसने एक बार फिर कमरे मे नजर दौडाई ।

"तुमने यह कमरा कापरनोमोव से किराये पर लिया है ?"

"हाँ · · · · "

"और वे लोग साथ वाले कमरे मे रहते है ?"

"हाँ · · उनका कमरा भी इतना ही बडा है ।"

"इतने जने एक ही कमरे मे रहते है ?"

"हाँ ।"

"तुम्हे अकेले यहाँ डर नही लगता ?"

"वे लोग बडे अच्छे है···यह सारा फर्नीचर भी उन्ही का है। वे बडे उदार है। उनके बच्चे भी मुझ से मिलने आते है।"

"वे सबके सब हकलाते है न ?"

"हाँ · उनका पिता हकलाता है और वह लगडा भी है। उसकी पत्नी हकलाती तो नही लेकिन वह साफ नही बोल सकती। वह बडी नेक औरत है। कापरनोमोव पहले किसी जमीदार का गुलाम था। उसके सात बच्चे है। सिर्फ बडा हकलाता है, बाकी बच्चे बीमार रहते है। लेकिन आपको ये सब बाते कहाँ से मालूम हुई ?"

"तुम्हारे पिता ने मुझे बताया था। उन्होने मुझे तुम्हारी सब बाते भी बतायी थी। एक रोज तुम छै बजे की गयी हुई रात को नौ बजे लौटी थी और कैटेरीना इवानोव्ना घुटने टेक कर तुम्हारे पास बैठी रही थी।"

सोनिया घबरा गयी।

"आज मैने उन्हे देखा था," वह हिचकिचाकर बोली।

"किन्हे ?"

"पिताजी को। दस बजे के करीब जब मै गली मे घूम रही थी, उस समय वे मेरे आगे आगे चल रहे थे। बिल्कुल उनकी-सी शक्ल थी। मै कैटेरीना इवानोव्ना के पास जाना चाहती थी···"

"तुम गलियो मे चक्कर काट रही थी ?"

"हाँ," सोनिया ने आँखे नीची करली।

"कैटेरीना इवानोव्ना छोटेपन मे तुम्हारी पिटायी करती थी ?"

"नही तो ! यह आप क्या कह रहे है ?" सोनिया ने हताश दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"तुम उन्हे चाहती हो ?"

"चाहती हूँ ? ज़रूर चाहती हूँ, ज़रूर चाहती हूँ," उसने कातर

होकर अपने दोनो हाथ जोड लिए। "आह, आप नही जानते, वे निरी बच्ची है। दु ख से उनके मन का सन्तुलन बिगड गया है। पहले वे कितनी होशियार और सहृदय थी · कितनी दयालु · आप नही जानते," सोनिया शोक से व्याकुल होकर हाथ मलने लगी। उसके पीले गालो पर लाली दौड गई और आँखो मे वेदना छा गई। वह अपने को व्यक्त करने के लिये आकुल हो रही थी। उसके चेहरे की हर भगिमा मे अपार स्नेह और समवेदना झलक रही थी।

"वे मुझे पीटती थी ? यह आपने कैसे कह दिया ? हे ईश्वर, वे और मुझे पीटेगी ? अगर कभी पीटा भी होगा तो क्या हुआ ? आप उन्हे बिल्कुल नही जानते। आह, वे कितनी दुखी और बीमार है। उनका दिल पवित्र है। वे न्याय चाहती है। उनका विश्वास है कि ससार मे सब जगह न्याय होना चाहिए · अगर कोई उन्हे चोट पहुँचाये तो भी वे प्रतिवाद नही करेगी। उन्हे नही मालूम कि दुनियाँ मे अच्छा बनना असभव है। वे निरी बच्ची है। और नेक भी,।"

"अब तुम्हारा क्या होगा ?"

सोनिया ने प्रश्नसूचक दृष्टि से रास्कोलनिकोव की ओर देखा।

"अब सबका बोझ तुम्हारे ऊपर आ पडा है। पहले भी था · तुम्हारे पिता आकर तुमसे शराब के लिए पैसे मागते थे। अब क्या होगा ?"

"मै नही जानती," सोनिया ने दु ख भरी आवाज मे उत्तर दिया।

"वे लोग उसी कोठरी मे रहेगे ?"

"मालूम नही' · 'उन पर पिछला किराया भी बाकी है। मैने आज ही सुना है कि मकान मालिकन उन्हे वहाँ से निकालना चाहती है और कैटेरीना इवानोव्ना ने कहा है कि अब वे एक मिनट भी वहाँ नही रुकेगी।"

"यह कहने का साहस उनमें कैसे हुआ ? तुम्हारी वजह से ?"

"नही नही, ऐसी बात मत कहे' · 'हम एक है और एक ही परि-

वार की तरह रहते है।" सोनिया फिर आवेश मे आ गयी, जैसे नन्ही चिड़िया गुस्से मे आ गयी हो। "यह जवाब न देती और क्या करती ? वे बेचारी आज कितना रोयी है। आपने देखा नही कि उनके दिमाग का सन्तुलन बिगड गया है ? एक तरफ उन्हे कल के भोज की चिन्ता है • वे बार बार अपने हाथ मलती है, रोती है और निराश होकर दीवार पर अपना सिर पटकने लगती है। उन्हे खून की उल्टियाँ आती है। अगले ही क्षण वे आश्वस्त हो जाती है। उन्हे आपसे बडी उम्मीदे है। उन्हे विश्वास है कि आप उनकी मदद करेगे और वे कही से थोडा-सा कर्ज लेकर मुझे भी अपने साथ अपने शहर मे लेजायेगी। वहाँ जा कर वे धनी परिवारो की लडकियो के लिए एक बोर्डिंग स्कूल खोलेगी, मै उसकी देखभाल करूँगी और हमारी नयी जिन्दगी शुरू होगी। फिर वे मुझे गले लगाकर चूमती है और तसल्ली देती है। उन्हे अपने दिवा-स्वप्नो मे बडा विश्वास है। उनके सपनो को तोडने का साहस किसी मे नही है। आज वे दिन भर घर की सफाई, कपडो की मरम्मत और धुलाई मे लगी रही है। अपने कमजोर हाथो से वे टब को कमरे मे घसीट कर ले गयी जिससे उनकी साँस फूल गयी। आज सुबह हम पोलेन्का और लिदा के लिए जूते खरीदने बाजार गये थे। वहाँ हमारे पास पैसे कम पड गये। उन्होने छाँटकर नन्हे, बढिया से जूते पसन्द किये थे। आप नही जानते उनकी पसन्द कितनी बढिया है। और वे दुकानदार के सामने फूट फूटकर रोने लगी क्योकि उनके पास प्रर्याप्त पैसे नही थे • •। उन्हे देख कर कलेजा मुँह को आता था•• "

"खैर यह सब सुनकर मै समझ गया हूँ कि तुम किस लिए ऐसी जिन्दगी बसर कर रही हो।" रास्कोलनिकोव ने एक कटु मुस्कान के साथ कहा।

'आपको उन पर दया नही आती ? मै जानती हूँ आपने अपनी आखिरी पाई तक उन्हे दे दी थी। काश आप उनका दुख देखते !

कितनी बार मेरी वजह से वे रोई है । पिछले हफ्ते पिता जी की मृत्यु से कुछ दिन पहले ही वे फूट फूट कर रोयी थी । मैं कितनी ज़ालिम हूँ ! सारे दिन इस बात को सोचकर मै दु खी रहती हू ।"

इस घटना की स्मृति से सोनिया फिर वेदना से हाथ मलने लगी ।

"तुम जालिम कैसे हो ?"

सोनिया ने रोकर बताया, "मै उन्हे मिलने गयी थी । पिता जी ने कहा, "सोनिया मेरे सर मे दर्द है, जरा यह किताब पढकर सुनाओ ।" पिता जी आन्द्री सेम्योनोविच लेब्जियालीकोव से अक्सर ऐसी अजब किताबे पढने के लिए ले आते थे । मैंने फेरीवाली लिजावेता से कुछ कढे हुए कालर और कफ खरीदे थे, मै उन्हे कैटरीना इवानोव्ना को दिखाने ले गई थी । मैंने पिता जी से कह दिया, "मेरे पास समय नही," क्योकि मै वहा रुकना नही चाहती थी, कैटेरीना इवानोव्ना को वे चीजे बडी पसन्द आई और वे शीशे मे अपनी शक्ल देखकर कहने लगी, "सोनिया, ये चीजे मुझे भेट कर दो ।" बेचारी ने बरसो से अच्छे कपडे नही पहने । वे बड़ी स्वाभिमानी है, उन्होने कभी किसी से कोई चीज नही मागी । लेकिन वे कालर उन्हे बहुत पसन्द थे । मैंने पूछा, "आप इन कालरो को लेकर क्या करेगी ?" मुझे यह बात नही कहनी चाहिए थी । उन्होने करुणा भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा, उनके दिल को चोट लगी थी । मुझे मन ही मन पश्चाताप हुआ, काश कहे हुए शब्द फिर लौट सकते·· ! लेकिन आपको इन बातो मे भला क्या दिल-चस्पी हो सकती है ?"

"तुम फेरीवाली लिजावेता को जानती हो ?"

"हाँ ··आप भी उसे जानते है ?" सोनिया ने चकित स्वर मे पूछा ।

रास्कोलनिकोव ने सोनिया की बात अनसुनी करके कहा, "कैटे-

रीना इवानोव्ना तपेदिक मे घुल रही है, जल्द ही वे चल बसेगी ।"

"नही, नही, ऐसा मत कहिये सोनिया ने अनजाने मे ही रास्कोल-निकोव के हाथ पकड लिए जैसे वह कैटेरीना इवानोव्ना की जिन्दगी के लिए प्रार्थना कर रही हो ।

"लेकिन उसके मर जाने मे ही बेहतरी है ।"

"नही, नही, !"

"और बच्चो का क्या होगा ? तुम्हे उन्हे अपने साथ ले जाना पडेगा, इसके सिवा और चारा भी क्या है ?"

"मै नही जानती," कहकर सोनिया ने दोनो हाथो से अपना मुँह ढाप लिया ।

साफ ज़ाहिर था कि वह पहले भी इस समस्या के बारे में सोच चुकी थी । रास्कोलनिकोव ने उसके दिल को दोबारा कुरेद दिया था ।

"मान लो अगर कैटेरीना इवानोव्ना जिन्दा भी रही और तुम बीमार हो कर हस्पताल चली गई, तब क्या होगा ?" रास्कोलनिकोव के स्वर में निर्ममता थी ।

"नही, ऐसा नही हो सकता ।" सोनिया के चेहरे पर आतंक छा गया ।

"नही हो सकता ?" रास्कोलनिकोव ने कटु मुस्कान से कहा, "क्या तुमने बीमारी का बीमा करवा रखा है ? तुम्हे कुछ हो गया तो वे लोग गलियो की खाक छानेगे । कैटेरीना इवानोवना खाँसती हुई दीवार से अपना सर पटकेगी···उसे लोग पुलिस थाने मे ले जायेगे— वहाँ से हस्पताल—वहा उसकी मौत हो जायेगी—और बच्चे··"

'नही ईश्वर ऐसा नहीं होने देगा ।"

सोनिया का भग्न हृदय चीत्कार कर उठा । वह याचना भरी दृष्टि से रास्कोलनिकोव की तरफ देखने लगी जैसे सब कुछ उसी पर निर्भर करता हो ।

रास्कोलनिकोव उठकर कमरे मे टहलने लगा। सोनिया निराशा से सर लटका कर खडी थी।

"तुम मुसीबत के दिनो के लिए कुछ बचा नही सकती ?" रास्कोल-निकोव ने सहसा सोनिया के आगे रुक कर पूछा।

"नही।"

"नही ? तुमने कभी कोशिश की है ?" उसके स्वर मे व्यग्य था।

"हा।"

"लेकिन तुम्हारी योजना पूरी न हो सकी—यही कहना चाहती हो न !"

वह फिर टहलने लगा। क्षरण भर के लिए खामोशी छा गई।

"तुम्हे रोज़ पैसे नही मिलते ?"

इस सवाल से सोनिया का मुँह लाल हो गया।

"नही" उसने फुसफुसा कर उत्तर दिया।

"पोलेन्का की भी यही दशा होगी।"

"नही, नही, ऐसा नही हो सकता ! ईश्वर ऐसा नहीं होने देगा !" सोनिया ज़ोर से चिल्लाई, उसे लगा जैसे किसी से उसे छुरा भोक दिया हो।

"ईश्वर ने अनेको को ऐसा होने दिया है।"

"नही नही ! ईश्वर जरूर उसकी रक्षा करेगा। हे ईश्वर !"

"शायद ईश्वर नाम की कोई चीज नही है।" रास्कोलनिकोव के चेहरे पर एक कुटिल हँसी फैल गई।

सोनिया का चेहरा काँपने लगा, वह भर्त्सनाभरी नजरो से रास्कोल-निकोव की तरफ देखने लगी। वह कुछ कहना चाहती थी लेकिन आवेग के कारण उसकी आवाज बद हो गई और वह हाथो से मुँह ढापकर रोने लगी।

"तुम कहती हो कैटेरीना इवानोव्ना का मानसिक सन्तुलन बिगड

गया है। तुम खुद भी तो अपना सन्तुलन खो बैठी हो।"

- इसके बाद वह फिर कमरे मे चहलकदमी करने लगा। कुछ देर बाद उसने अपने दोनो हाथ सोनिया के कधो पर रख दिये और उसकी आसूभरी आखो मे आँखे डालकर देखने लगा। उसकी दृष्टि कठोर, ज्वलन्त और तीक्ष्ण थी। सहसा उसने फर्श पर झुककर सोनिया के पैर चूम लिये। सोनिया उसे पागल समझकर एक तरफ हट गई। सच-मुच वह उस वक्त पागल दिखाई दे रहा था।

"आप यह क्या कर रहे है!"

रास्कोलनिकोव उठकर खडा हो गया और बोला, 'मैने तुम्हारे आगे नही बल्कि समस्त पीडित मानवता के आगे सर झुकाया था," यह कहकर वह खिडकी के पास जाकर खडा हो गया। फिर वह मुडकर बोला, "सुनो मैने अभी एक गुस्ताख आदमी से कहा था कि वह तुम्हारे कदमो की धूल के बरांबर भी नहीं है और तुम्हारे साथ बैठकर मेरी बहन धन्य हो गई है।"

"आह! आपने क्या सच यह कहा था। मेरे साथ बैठकर आपकी बहन धन्य हो गई? ... छि· मै तो इतनी ... बदनाम·· हूँ। आपने यह क्यो कहा?" सोनिया भयभीत हो उठी।

"तुम्हारी बदनामी और पाप की वजह से नही, बल्कि तुम्हारी महान वेदना के कारण मैने यह कहा था। यह भी सच है कि तुम पापी हो। तुमने अकारण ही अपने साथ धोखा किया है और अपने को नबाह कर डाला है। क्या यह पाप नही है? ·· तुम इस गन्दगी से नफरत करती हो, फिर भी यही रहती हो। यह जानती हो कि इससे तुम किसी को फायदा नही पहुँचा रही। (ज़रा आखे खोलकर देखो!) मुझे यह बताओ कि तुम्हारे मन में पवित्र भावनाओ के साथ ऐसे पतन और लज्जाजनक विचारो को कैसे स्थान मिला? इससे तो हजार गुना बेहतर था कि तम पानी मे कूद पडती।"

"लेकिन उन लोगो का क्या होगा ?" सोनिया ने क्षीण स्वर मे पूछा। उसे रास्कोलनिकोव के प्रस्ताव से रत्ती भर आश्चर्य नही हुआ था।

रास्कोलनिकोव सोनिया के चेहरे से भाप गया कि अपनी मुसीबतो से बचने के लिए उस बेचारी के मन मे कई बार पहले भी यह विचार आया था, तभी तो उसे रास्कोलनिकोव के अपमानजनक शब्दो पर क्षोभ नही हुआ था। वह समझ गया कि सोनिया को अपने लज्जा-जनक जीवन के विचार से अपार यत्रणा हो रही है। "लेकिन इसने पहले ही इस जीवन को खत्म क्यो नही कर दिया ?" वह सोचने लगा, सहसा उसकी आँखो के आगे सोनिया के अनाथ भाई बहनो का और शोक से सर पटकती हुई, क्षय-ग्रस्त कैटेरीना इवानोव्ना का चित्र आ गया। वह जानता था, सोनियाँ को इनसे कितना मोह था।

लेकिन यह स्पष्ट था कि सोनिया जैसी शिक्षित और सुशील लडकी और अधिक उस अपमानजनक जीवन को नही बर्दाश्त करेगी। लेकिन वह सोच रहा था कि कैसे सोनिया अभी तक यह सब बर्दाश्त करती रही, उसका दिमाग पागल क्यो नही हो गया ? वह जानता था कि सोनिया एक अपवाद है, लेकिन फिर इस रास्ते पर आते ही उसका सवेदनशील मन क्यो न टूटा। क्या वह दुश्चरित्रा थी ! नही, उसे अपने पेशे का यत्रवत अभिनय तो करना ही था। अनैतिकता की एक बूँद भी उसकी आत्मा तक नही पहुँच पाई है, यह वह जानता था। उसने सामने खडी सोनिया की आत्मा के आरपार देख लिया था।...

"सोनिया के आगे तीन ही रास्ते है...आत्महत्या, पागलखाना या पतन का वह गढा जिसमे गिरकर विवेक मिट जाता है और दिल पत्थर बन जाता है।"

अतिम रास्ता अत्यन्त अपमानजनक था, लेकिन रास्कोलनिकोव

अभी तरुण अनास्थावादी था, इसलिए वह निर्मम भी था। उसका अनुमान था कि सोनिया तीसरे रास्ते पर ही चलेगी।

"लेकिन क्या ऐसा सम्भव हो सकता है ? क्या एक लडकी जिसने अभी तक अपनी आत्मा को पवित्र रखा है, जानबूझकर गन्दगी के गढे मे कूद सकेगी ? क्या उसने इस दिशा मे कदम तो नही बढा लिये ? क्या उसे पाप इतना घृणित नही मालूम होता जिससे वह यह सब सह रही है ? नही, नही, ऐसा नही हो सकता। बच्चो की वजह से वह आत्महत्या नही कर सकी · लेकिन कौन कहता है कि वह पागल नही है ?·· भला कौन स्वस्थ व्यक्ति गन्दगी की खाई मे जानबूझ कर गिरने को तैयार होता है ? क्या वह सोचती है कि किसी चमत्कार की शक्ति से वह बच जायेगी ? निश्चय ही वह यही सोचती होगी। क्या यह पागलपन नही है ?"

रास्कोलनिकोव को इस विचार ने बहुत प्रभावित किया। वह और अधिक गौर से सोनिया की तरफ देखने लगा।

"सोनिया तुम बहुत ईश्वर भक्त हो ?"

सोनिया चुप रही। रास्कोलनिकोव उत्तर की प्रतीक्षा मे खडा रहा।

सहसा सोनिया की आँखे चमक उठी। उसने रास्कोलनिकोव का हाथ मरोडकर कहा।

"तो क्या मै बिना ईश्वर के जिदा रहूँ।"

"अच्छा तो यह मामला है।" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन सोचा और सोनिया की आत्मा को कुरेदने के लिए पूछा,

"ईश्वर तुम्हारे किस काम आता है ?"

सोनिया चुप रही। भावावेश से उसका क्षीण वक्ष काप रहा था।

"चुप रहिये ! आप इस सवाल को पूछने के काबिल नही हैं।" उसने क्षोभ भरे स्वर मे कहा।

"समझ गया, समझ गया," रास्कोलनिकोव बडबडाया।

"ईश्वर सब कुछ करता है।" सोनिया ने आँखे नीची करके कहा।

"यही पलायन का मार्ग है। मै समझ गया।" रास्कोलनिकोव ने विचित्र ढग से सोनिया के पीले, क्षीण चेहरे का निरीक्षण किया। उसकी नीली आँखो मे शक्ति की चमक थी और उसका नन्हा शरीर क्रोध से काँप रहा था। रास्कोलनिकोव को यह सब बडा विचित्र लगा। उसने मन ही मन कहा, "इस लडकी पर धर्म का पागलपन सवार है।"

कमरे मे चहलकदमी करते वक्त रास्कोलनिकोव ने दराज मे एक किताब रखी देखी थी। उसने उठाकर देखा कि वह पुराने चमडे की जिल्द मे मढा न्यू टेस्टामेंट (इजील) का रूसी भाषा मे अनुवाद था।

"यह किताब तुम्हे कहाँ से मिली ?"

सोनिया ने नीची नजर किये उत्तर दिया। "किसी ने मुझे लाकर दी थी।"

"किसने ?"

"लिजावेता ने। मैंने उससे माँगी थी।

"लिजावेता! कैसा विचित्र सयोग है!" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन कहा। उसे सोनिया का व्यक्तित्व अत्यत रहस्यमय और शानदार मालूम हो रहा था। उसने मोमबत्ती के नजदीक किताव लेजाकर पन्ने पलटते हुए पूछा,

"लजारस की कहानी कहाँ है ?"

सोनिया चुपचाप नीची नज़रे किये खडी रही।

"मै कहता हूँ लजारस के उत्थान की कहानी ढूँढ दो सोनिया !"

सोनिया ने कनखियों से रास्कोलनिकोव की तरफ देखकर जवाब दिया, "आप ठीक स्थान पर तलाश नही कर रहे। वह कहानी चौथे अध्याय मे है।"

"जरा मुझे पढकर सुनाओ।" वह कोहनियाँ मेज़ पर टेक कर बैठ गया और मन ही मन कहने लगा, "तीन हफ्ते बाद लगता है मुझे पागलखाने जाना पडेगा, बशर्ते उससे पहले मै उससे भी बदतर जगह न पहुँच गया तो।"

सोनिया ने हिचकिचा कर मेज पर से किताब उठाई और पूछा,

"आपने यह पुस्तक अभी तक नही पढी ?" उसकी आवाज मे कठोरता थी।

"पढी थी—बहुत दिन पहले—जब मै स्कूल मे था। पढो !"

"आपने गिर्जे मे इसका पाठ नही सुना ?"

"मै · गिर्जे नही जाता। तुम अक्सर जाती हो ?"

"न नही।"

रास्कोलनिकोव मुस्कराया, "मै समझ गया···तो कल तुम अपने पिता के जनाज़े मे शामिल नही होओगी ?"

"मै जाऊगी। मै पिछले हफ्ते भी गिर्जाघर गई थी—मैने किसी की आत्मा की शाति के लिये प्रार्थना करवाई थी।"

"किसके लिये ?"

"लिजावेता के लिये। किसी ने उसे कुल्हाडी से मार डाला था।"

रास्कोलनिकोव का सर चकराने लगा। उसने पूछा,

"लिजावेता तुम्हारी सहेली थी ?"

"हाँ · वह अच्छी औरत थी···कभी कभी मुझसे मिलने भी आती थी···हम एक साथ बाईबल पढती थी···और बाते करती थी। उसे जरूर ईश्वर के दर्शन होगे।"

अतिम वाक्य रास्कोलनिकोव को विचित्र लगा, लिज़ावेता के साथ सोनिया की रहस्यपूर्ण मुलाकाते—दोनो धर्म की दीवानी थी।

"लगता है, मै जल्द ही धर्म का दीवाना बनने वाला हूँ। यह छूत की बीमारी है।"

उसने चिढकर कहा, "पढो ।"

सोनिया अभी तक हिचकिचा रही थी । उसका दिल भय से धडक रहा था । रास्कोलनिकोव क्रुद्ध दृष्टि से उस 'दुखी पगली' की ओर देखने लगा ।

"आप ईश्वर मे क्यो नही विश्वास करते ?" सोनिया ने मृदु कठ से पूछा ।

"मै चाहता हू तुम मुझे पढकर सुनाओ । तुम लिजावेता को भी तो सुनाती थी ।"

सोनिया ने लजारस वाला अध्याय खोला । उसके हाथ काप रहे थे और कठ से आवाज नही निकल रही थी ।

"बेथेनी मे लज़ारस नामक आदमी बीमार था · "सोनिया ने पढना शुरू किया लेकिन वह वही रुक गई ।

रास्कोलनिकोव सोनिया की घबराहट का कारण जानते हुए भी उससे बार बार पढने का अनुरोध कर रहा था । उसे मालूम था कि अपनी आत्मा को निरावरण करना सोनिया के लिये अत्यन्त बेदनापूर्ण था । दुखी पिता, विक्षिप्त सौतेली माँ, भूखे भाई-बहनो और गलियो के बीच रहकर बचपन की जिन स्मृतियो को उसने सचित किया था वे उसकी अमूल्य निधि बन गई थी । वह यह भी जानता था कि सोनिया अपने समस्त भय और मानसिक यत्रणा के बावजूद उस दुखदाई प्रसग को पढकर सुनाना चाहती है· · उसने सोनिया की आखो से और उसके भावावेश से यह अनुमान लगा लिया था । सोनिया ने अपने आवेश पर काबू पाकर सत जौन का ग्यारहवाँ अध्याय पढना शुरू किया, उन्नीसवाँ पद्य इस प्रकार था,

"बहुत से यहूदी मार्था और मेरी को सान्त्वना देने आये ।"

"जब मार्था ने सुना कि यीसू आ रहे है, वह उनसे मिलने गई । लेकिन मेरी घर में ही बैठी रही ।"

"मार्था ने यीसू से कहा, प्रभु यदि आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।"

"मै जानती हूँ, यदि अभी भी आप ईश्वर से कुछ मागेगे, तो आपको मिल जायेगा।"

यहाँ आकर सोनिया रुक गई। उसे डर था कि उसकी आवाज फिर न काँपने लगे।

"यीसू ने कहा—तुम्हारा भाई फिर ज़िन्दा हो जायेगा।"

"मार्था ने उत्तर दिया, "यह तो मै भी जानती हूँ कि प्रलय के बाद सब मृतक ज़िन्दा होगे।"

यीसू ने कहा, मै ही जीवन हूँ। जो मुझमे विश्वास रखता है, वह मरकर भी जिन्दा हो जाता है।

जो मुझमें विश्वास रखता है और मुझमे ज़िन्दा रहता है उसकी कभी मृत्यु नही होती। तुम विश्वास करती हो ?

मार्था ने प्रभु से कहा, "...(एक ठडी साँस लेकर सोनिया ने ओजपूर्ण-स्वर मे पढना शुरू किया, जैसे वह अपनी आस्था की घोषणा करना चाहती हो।)

"हाँ प्रभु मुझे विश्वास है कि आप ईश्वर के पुत्र यीसू है।"

सोनिया ने रुककर फिर कनखियो से रास्कोलनिकोव की ओर देखा। रास्कोलनिकोव ने नजरे दूसरी तरफ फेर ली। सोनिया ने बत्तीसवा पद्य पढा।

"जब मेरी ने आकर यीसू को देखा तो वह उसके चरणो मे गिर पडी और बोली, प्रभु यदि आप यहाँ होते तो मेरे भाई की मृत्यु न होती।

मेरी का और उसके साथी यहूदियो का रोदन सुनकर यीसू की आत्मा पीडित हो उठी।

वे बोले, तुम्हारे भाई की कब्र किधर है ? लोगो ने कहा प्रभु इधर

आकर देखो।

यीसू भी रोने लगे।

यहूदियो ने कहा, "देखो यीसू उसे कितना चाहते थे ?"

कुछ लोगो ने कहा, जिसने अधो को दृष्टि प्रदान की उसने इस आदमी को मरने से क्यो नही बचा लिया ?"

रास्कोलनिकोव ने भावावेश मे आकर सोनिया की तरफ देखा। वह काप रही थी, महान चमत्कार की प्रतीक्षा से उसे विजय की अनुभूति हो रही थी—विजयोल्लास से उसके स्वर मे घटे का नाद आ गया था। उसे यह सारा प्रसग मुहजबानी याद था। "जिसने अधो को दृष्टि प्रदान की ··" पद्य पढते समय सोनिया ने यहूदियो के सदेह अविवेक और अनास्था का खाका खीचा। वह सोच रही थी, "जिस तरह यहूदी यीसू के चरणो मे गिरकर रोने लगे थे और उनको आस्था लौट आई थी, उसी तरह रास्कोलनिकोव की अनास्था भी दूर हो जायेगी और वह आस्तिक बन जायेगा। अभी—इसी क्षण!" वह आतुरता से उस सुखमय क्षण की प्रतीक्षा करने लगी।

"यीसू स्वय दुखी मन से एक गुफा के पास आये जिस पर एक पत्थर था।

यीसू ने कहा—मार्था इस पत्थर को हटाओ। मार्था ने कहा प्रभु मेरे भाई को मरे चार दिन हो चुके है। उसके शरीर से दुर्गन्ध उठ रही है।

सोनिया ने 'चार' शब्द पर जोर दिया।

यीसू बोले, 'मैने तुम्हे कहा था, यदि तुममे आस्था होगी तभी तुम ईश्वर का चमत्कार देख सकोगी।"

सबने मिलकर गुफा का पत्थर उठा दिया। यीसू ने आँखे ऊपर उठाकर कहा, 'पिता तुमने मेरी प्रार्थना सुनली। तुम्हे अनेको धन्यवाद! मैं जानता था तुम सदा मेरी प्रार्थना सुनोगे, लेकिन मै पास खडे

लोगो को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि तुम्ही ने मुझे धरती पर भेजा है।'

यह कहकर यीसू ने जोर से आवाज दी, "लजारस! उठो!"

लजारस जिन्दा हो गया।

(सोनिया गद्‌गद् हो रही थी, जैसे वह प्रत्यक्ष यह चमत्कार देख रही हो।)

'उसके हाथ-पैर बधे हुए थे और मुँह पर भी एक रुमाल बधा था। यीसू ने कहा, 'इसके हाथ पैर खोल दो और आजाद कर दो।"

इसके बाद यहूदियो को यीसू मे आस्था हो गई।

सोनिया ने किताब बद कर दी और उठकर खडी हो गई। उसने आँखे ऊपर उठाये बगैर कहा, "यही लजारस की कहानी है।" मोमबत्ती के मद्धम प्रकाश मे एक हत्यारे और वेश्या ने एक साथ बाईबल पढी थी। पाँच मिनट तक दोनो खामोश रहे।

सहसा रास्कोलनिकोव उठकर सोनिया के पास जा खडा हुआ, उसके चेहरे पर एक पाशविक कठोरता थी। उसने ऊँची आवाज में कहा, 'मै कुछ कहने आया था। आज मैने अपनी माँ और बहन से सदा के लिये नाता तोड लिया है।"

"किस लिये!" सोनिया ने आतकित स्वर मे पूछा, वह रास्कोलनिकोव की मा और बहन से मिलकर बडी प्रभावित हुई थी।

"अब सिर्फ तुम रह गई हो' आओ चले "मै तुम्हे लेने आया हूँ, हम दोनो अभिशप्त है।"

सोनियाँ सोच रही थी इस आदमी की आँखो मे पागलों सी-चमक है।" उसने भय से पीछे हट कर पूछा, "कहाँ चले?"

"मैं क्या जानू? लेकिन हम दोनो की मजिल एक है, रास्ता एक है।

सोनिया चुपचाप रास्कोलनिकोव का मुह ताकने लगी। उसे सिर्फ

इतना मालूम था कि वह बडा दुखी है ।

"वे लोग मेरी बात नही समझेंगे, लेकिन मुझे तुम्हारी ज़रूरत है । इसी लिये मै तुम्हारे पास आया हूँ ।"

"मै कुछ समझी नही ।"

"तुम्हे सब कुछ समझ मे आ जायेगा । तुमने भी क्या समाज के विधान को नही तोंडा ? तुमने भी एक जिन्दगी खत्म कर दी है अपनी जिन्दगी (बात एक ही है ।) तुम यह सब बर्दाश्त नही कर सकोगी । अगर तुम अकेली रही तो मेरी तरह पागल हो जाओगी । अपने दिमाग का सतुलन तो पहले से ही खो बैठी हो । हम एक ही पथ के राही है, आओ चले ।"

"किसलिये ? ये बाते आप किसलिये कह रहे है ?" सोनिया ने भावावेश मे आकर पूछा ।

"किसलिये ? क्योकि तुम इस हालत मे नही रह सकती, कभी तो तुम्हे यथार्थ से आँखे मिलानी ही पडेगी । बच्चो की तरह रोने से और ईश्वर की दयालुता पर भरोसा रखनें से काम नही चलेगा । अगर सचमुच तुम्हे कल हस्पताल मे भरती होना पडा तो क्या होगा ? कैटेरीना इवानोव्ना क्षय ग्रस्त और विक्षिप्त है, वे जल्द ही चल बसेंगी । फिर बच्चो की देखभाल कौन करेगा ? तुम कैसे कह सकती हो कि पोलेन्का पर आँच नही आयेगी ? क्या माँएँ अपने नन्हे बच्चो को गलियो मे भीख माँगने नही भेजती ? इन गलियों मे बच्चे बच्चे नही रह जाते । सात बरस की उम्र मे ही वे चोर और पापी बन जाते है । तुम जानती हो कि बच्चे यीसू के अवतार है "स्वर्ग का साम्राज्य बच्चो के लिये ही है," यीसू ने कहा है कि हमें बच्चो से प्रेम करना चाहिये, वे भविष्य की मानवजाति है ।"

"मै क्या करूँ । मै क्या करूँ !" सोनिया फूट फूट कर रोने लगी ।

"क्या करो! इन बधनो को सदा के लिये तोड दो और स्वय सारी यातना सहो ? ··तुम नही समझी ?·· बाद मे समझोगी। स्वतन्त्रता और शक्ति !·· यही आखिरी मजिल है। यही मेरा अतिम सदेश है। शायद यह हमारी अतिम मुलाकात है। अगर मै कल न आया तो तुम सब सुन लोगी और तुम्हे मेरे शब्द याद आयेंगे, फिर बहुत सालो बाद शायद तुम मेरे शब्दो का मतलब भी समझोगी·· ··· अगर मै कल यहाँ आया तो तुम्हे बताऊगा कि लिजावेता का हत्यारा कौन है ··· गुडबाई।"

सोनिया का शरीर आतक से ठडा पड गया। उसने पूछा, "आपको मालूम है, लिजावेता का हत्यारा कौन है ?"

"हाँ, मै तुम्हे बताऊगा—सिर्फ तुम्ही को। मै तुमसे क्षमा याचना करने नही बल्कि तुम्हे बताने आऊगा, यह बताने के लिये मैने बहुत पहले से सिर्फ तुम्ही को चुना था, जब लिजावेता जिन्दा थी, और तुम्हारे पिता मुझसे तुम्हारी चर्चा किया करते थे। मैने तभी यह निश्चय कर लिया था। गुडबाई ! मुझसे हाथ मत मिलाओ। कल ! ·"

राकोलनिकोव बाहर चला गया। सोनिया उसे पागल समझ कर उसकी तरफ ताकती रही लेकिन इस वक्त वह खुद भी पागल हो रही थी। उसका सर चकरा रहा था।

"हे ईश्वर ! इसे लिजावेता के हत्यारे का कैसे पता चला ! कैसी भयंकर बात है !" लेकिन क्षणभर के लिये भी सोनिया के मन में संदेह नही पैदा हुआ "ओह ! शायद वह बेचारा दुखी है। लेकिन उसने अपनी माँ और बहन से नाता क्यो तोड लिया ? आखिर वह उससे क्या कहने आया था·· उसने सोनिया के पैर चूमे थे और कहा था कि वह सोनिया के बगैर जिदा नही रह सकता (हाँ उसने यह कहा था) ·· "हे, ईश्वर !"

सोनियां को रात भर सरसाम रहा। वह बीच बीच मे उठकर

अपने हाथ मलती और रोती थी। फिर उसे सपने मे पोलेन्का, कैटेरीना इवानोव्ना और लिजावेता दिखाई दी ''उसने देखा कि वह रास्कोलनिकोव को बाईबिल पढ कर सुना रही है ''रास्कोलनिकोव उसके पैर चूम रहा है।

, सोनिया के साथ वाला कमरा इन दिनो खाली पडा था। मकान मालकिन ने बाहर मकान किराये पर खाली है की तख्ती भी लगा छोडी थी। इस कमरे के दरवाजे पर खडे स्वीद्रीगाईलोव ने रास्कोलनिकोव और सोनिया की सारी बाते सुन ली थी। रास्कोलनिकोव के आने के बाद वह पजो के बल चलकर अपने कमरे मे लौट गया था, जो खाली कमरे की बगल मे था। फिर वह सोनिया के दरवाजे के पास एक कुर्सी डाल कर बैठ गया। उसे दोनो की बातचीत बडी दिलचस्प मालूम हुई थी, इसी लिये उसने आराम से बैठकर सारी बाते सुनने के लिये कुर्सी का प्रबध कर लिया था।

५

अगले दिन सुबह ग्यारह बजे रास्कोलनिकोव ने पुलिस के दफ्तर जाकर पोर्फिरी पैत्रोविच को अपने आने की खबर भिजवाई। दस मिनिट बाद उसे भीतर बुलाया गया। उसका ख्याल था कि उसे देखते ही लोग उस पर झपटेंगे, लेकिन वह चुपचाप वेटिंग रूम मे खडा रहा, जहाँ बहुत से अपरिचित लोग आ-जा रहे थे। साथ के कमरे मे क्लर्क बैठे काम कर रहे थे, जिन्हे रास्कोलनिकोव से कोई दिलचस्पी नही थी। उसने सदिग्ध दृष्टि से चारो ओर देखा कि कही कोई सतरी नजर आ जाये, लेकिन वहाँ कोई सतरी न था। किसी को उसकी तरफ देखने की फुर्सत न थी। वह अगर घर लौट जाता, तब भी वे उससे कुछ न कहते। उसका यह विश्वास पक्का हो गया कि कल जिस रहस्यमय आदमी को उसने देखा था वह उसकी कोरी कल्पना थी, अगर उस आदमी ने सब कुछ अपनी आखो से देखा होता तो क्या पुलिस इस इन्तजार मे बैठी रहती कि वह खुद ग्यारह बजे दफ्तर मे आये? या उस आदमी ने अभी तक पुलिस को खबर नही की, या उसे इस घटना का कुछ पता नही था (और भला उसे पता होता भी कैसे?) हो सकता है कल वाली घटना उसके रुग्ण मन की कल्पना

हो। सहसा उसे आभास हुआ कि वह काँप रहा है। उसे अपने भय पर मन ही मन खीज हुई। उसे पोरफेरी पैत्रोविच से सख्त नफरत थी, और उसे डर था कि कही इस नफरत की वजह से ही सारा भडा न फूट जाये। गुस्सा आने से उसकी कँपकपी बद हो गई। उसने निश्चय किया कि वह वहाँ जाकर जहा तक हो सका चुप रहेगा, और गुस्ताखी से पेश आयेगा, जिससे उसे अपने थके हुए स्नायुओ पर सयम रखने का मौका मिलेगा। इसी समय उसे भीतर से बुलावा आया।

पोरफेरी पैत्रोविच अपने अध्ययन कक्षा मे अकेला बैठा था। कमरे मे एक बडी लिखने की मेज़, चारखानी गद्दियो वाला एक सोफा, एक दराजो वाली अलमारी, बुककेस और कई कुर्सिया रखी थी—सारा फर्नीचर सरकारी था। उस पर पीले रग का पालिश किया गया था। सामने की दीवार के बीच मे एक दरवाज़ा था, जिसके पीछे और कमरे भी थे। रास्कोलनिकोव के आते ही पोरफेरी पैत्रोविच ने कमरे का दरवाजा बद कर दिया। वैसे पोरफेरी उसे बडे तपाक से मिला था, लेकिन थोडी देर बाद रास्कोलनिकोव को पोरफेरी के व्यवहार मे विचित्रता नजर आने लगी।

पोरफेरी ने उसके दोनो हाथ पकड कर कहा, "प्यारे दोस्त, आखिर तुम हमारी दुनियाँ मे पहुँच ही गये। बैठो न यार ! क्या तुम्हें ये शब्द पसद नही है ? यह मत समझना कि मै तुम्हारे मुँह लग रहा हूँ। सोफे पर बैठ जाओ।"

रास्कोलनिकोव बैठ गया। पुलिस की दुनियाँ में यही भाषा चलती है। वह सोच रहा था, "पोरफेरी ने हाथ आगे बढाये थे, फिर अचानक पीछे खीच लिये, आखिर माजरा क्या है।" दोनो सदिग्ध नज़रो से एक-दूसरे को देख रहे थे, लेकिन आँखे चार होते ही मुँह दूसरी तरफ फेर लेते थे। रास्कोलनिकोव ने कहा, "मै···यह अर्जी लेकर आया

हूँ···घडी के बारे में यह लीजिये। यह ठीक है या और नकल करके ले आऊँ ?"

"दरखास्त ! अरे हाँ, चिता न करो। यह ठीक है।" पोरफेरी ने कागज पर नजर दौडाई और उसे मेज पर रख दिया।

एक मिनट बाद बातचीत के दौरान मे पोरफेरी ने दरखास्त उठाकर दराज मे रख दी।

रास्कोलनिकोव ने बात शुरू की, "मेरा ख्याल है कि आपने कल मुझ से कहा था कि आप उस बुढिया के बारे मे मुझ से पूछताछ करेगे ?" उसे अपने शब्दो पर गुस्सा आया, "मैंने यह क्यो कहा ?" पोरफेरी की मौजूदगी मे उसकी घबराहट कई गुना बढ गई थी और यह खतरे की निशानी थी। वह सोचने लगा, "इस तरह तो मै फिर बहुत कुछ बक डालूँगा। यह ठीक नही है।"

पोरफेरी पैत्रोविच अकारण ही मेज पर रखी चीजो को छेड रहा था, और कभी वह रास्कोलनिकोव की सदिग्ध नजर से बचने की कोशिश करता था, और अगले ही क्षण उसकी आँखो मे आँखे डालकर देखने लगता था।

वह अपनी मोटी गोल उँगली गेद की तरह मेज पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक फिरा रहा था।

"हमारे पास बहुत समय है। तुम सिगरेट पीते हो ? अपनी डिब्बी लाये हो ? यह लो," उसने रास्कोलनिकोव को एक सिगरेट देते हुए कहा, "मै तुम्हे दफ्तर मे मिल रहा हूँ। मेरा सरकारी क्वार्टर भी पास ही मे है, लेकिन इन दिनों मै बाहर रह रहा हूँ। मुझे यहाँ मरम्मत करवानी थी, सो पूरी हो गई है। तुम जानते हो सरकारी क्वार्टर कितने शानदार होते है ? क्यो तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"हाँ होते तो शानदार है।" रास्कोलनिकोव ने व्यगभरी दृष्टि

से पोरफेरी की तरफ देखा।

"शानदार, हाँ सचमुच शानदार," कहकर वह रास्कोलनिकोव के नजदीक आकर उसे घूरने लगा। उसका यह व्यवहार सचमुच बडा असगतिपूर्ण था, क्योकि अभी तक वह कनखियो से रास्कोलनिकोव की ओर देखता रहा था।

रास्कोलनिकोव को ताव आ गया, उसने गुस्ताखी भरे स्वर मे चुनौती दी, "मैने सुना है कि कानून की परपरा मे, वकीलो द्वारा मुजरिम का ध्यान बँटाने के लिये और उसकी चेतना को खत्म करने के लिये क्षुद्र बाते करना और फिर सहसा कोई अप्रत्याशित सवाल पूछना, जिससे मुजरिम चारो खाने चित्त हो जाये, अच्छा नही समझा जाता। क्यो यह ठीक है न ? मेरा ख्याल है कि हर कानूनी किताब मे यही नियम लिखा है • "

"हा हा ••लेकिन तुमने कैसे सोच लिया कि मै इसी नीयत से सरकारी क्वार्टरो की बात कर रहा था ?• क्यो ?"

यह कह कर पोरफेरी पैत्रोविच ने अपनी आँखे सिकोड ली और उसके चेहरे पर एक चालाकीभरी मुस्कान फैल गई। उसके माथे की त्योरियाँ ढीली पड गई और वह रास्कोलनिकोव की आखो में आँखें डाल कर विचित्र ढग से हँसने लगा। रास्कोलनिकोव ने भी हँसने की कोशिश की, यह देखकर पोरफेरी पैत्रोविच ने जोर से ठहाका भरा। हँसते हँसते उसका मुह लाल हो गया। रास्कोलनिकोव के मन मे अपार घृणा जागृत हुई, जिससे उसकी सावधानी का बाँध टूट गया। वह जानबूझ कर पोरफेरी की तरफ घूरने लगा, दोनो पक्ष असावधानी बरत रहे थे, लेकिन पोरफेरी पेत्रोविच तो रास्कोलनिकोव के मुँह पर हँस रहा था, उसे रास्कोलनिकोव की नाराजगी की रत्तीभर परवाह न थी। रास्कोलनिकोव की आँखो से क्षोभ टपक रहा था, वह समझ गया था कि पोरफेरी पैत्रोविच ने बडी चालाकी से उसके लिये जाल

बिछाया है, और किसी भी क्षरण वह उसमे फ़सने वाला है ··

वह टोपी उठाकर खडा हो गया और उसने दृढ स्वर मे कहा, "पोरफेरी पैत्रोविच, आपने कल कहा था कि आप मुझे पूछताछ के लिये बुलाना चाहते है (उसने 'पूछताछ' शब्द पर जानबूझ कर जोर दिया) मै इसीलिये यहाँ आया हूँ अगर आप कुछ पूछना चाहते है तो पूछे, वरना मुझे जाने की इजाजत दे। मेरे पास फालतू वक्त नही,··· मुझे किसी के जनाजे मे शामिल होना है · आप भी उस आदमी को जानते है।" उसे इस व्यर्थ की बात पर और विशेषकर अपने गुस्से पर बडी खीज आई। उसने चिल्ला कर कहा, "सुनते हो ! मै इस मामले से तग आ गया हूँ। मेरी बीमारी का यही कारण है।" उसे लगा कि उसने बेकार ही बीमारी का जिक्र कर दिया। "अगर आप मुझसे पूछताछ करना चाहते है तो ठीक ढग से करे। वरना मुझे जाने दे। इधर-उधर की और कोई बात मैं बर्दाश्त नही करूगा। अच्छा गुडबाई। अब मेरे यहाँ रुकने का कोई फायदा नही।"

"हे ईश्वर ! यह तुम क्या कह रहे हो ? मै किस सिलसिले मे तुमसे पूछताछ करूँ ?" पोरफेरी पैत्रोविच ने सहसा सजीदा होकर पूछा, और उसने रास्कोलनिकोव से बैठने के लिये आग्रह किया, "घबराओ नही, इतनी जल्दी भी क्या है ? तुम खुराफात बक रहे हो। आओ बैठो। मुझे खुशी है कि तुम मुझसे मिलने आये हो। मै तुम्हे अपना अतिथि समझता हूँ। तुम्हारी मजेदार टिप्पणी सुनकर मुझे हँसी आ गई। इसके लिये माफी चाहता हूँ, रोदियोन रोमनोविच तुम्हारा यही नाम है न ! कई बार मै आधे आधे घटे तक रबर की गेद की तरह हँसी से फूल जाता हूँ · मुझे डर लगता है, कही मुझे लकवा न हो जाये · मेहरबानी करके बैठ जाओ, वरना मै समझूँगा तुम मुझसे नाराज हो।"

रास्कोलनिकोव पूर्ववत खडा रहा और क्रोधभरी नजरो से पोरफेरी

पैत्रोविच को देखने लगा। पोरफेरी ने कमरे मे चहलकदमी शुरू कर दी, "मेरे प्यारे रोदियोन रोमनोविच, मै तुम्हे बताना चाहता हूँ कि मै अविवाहित हूँ। पकने लगा हूँ और सभा सोसाइटियो मे अधिक नही जाता। इसके अलावा तुमने देखा होगा कि हमारे पीटर्सबर्ग के समाज मे जब मेरे और तुम्हारे जैसे दो चतुर आदमी कही मिलते है तो बात-चीत का विषय ढूँढने मे ही उन्हे आधा घटा लग जाता है। दोनो झेप जाते है और खामोश बैठे रहते है। स्त्रियो के पास हमेशा बातचीत करने के लिये कोई न कोई विषय रहता है · ऊँचे वर्ग के लोगो की भी यह समस्या नही है। लेकिन हमारे जैसे मध्यवर्ग के बुद्धिजीवी हमेशा झेप मे रहते है। इसका क्या कारण है ? क्या हम इतने ईमानदार है कि एक-दूसरे को धोखा नही देना चाहते, या सार्वजनिक मामलो मे हमे कोई दिलचस्पी नही ? तुम्हारी क्या राय है ? मेरी समझ मे तो कुछ नही आता। अरे दोस्त, अपनी टोपी उतार दो, लगता है तुम फिर जाने की जल्दी मे हो···बैठो न !"

रास्कोलनिकोव ने अपनी टोपी सर से उतार दी और वह संजीदगी से पोरफेरी पैत्रोविच की अनर्गल बातो को सुनने लगा, "यह अपनी बकवास से मेरा ध्यान तो नही बँटाना चाहता !" उसने मन ही मन सोचा।

"मुझे अफसोस है कि मै यहा तुम्हे कॉफी नहीं पिला सकता। तुम सरकारी दफ्तरो के काम को तो जानते ही हो ··· माफ करना मै कमरे मे चहलकदमी कर रहा हूँ, लेकिन मेरे लिए व्यायाम करना बहुत ज़रूरी है। मुझे हर वक्त बैठे रहना पडता है, इसलिये मुझे चहलकदमी करना अच्छा लगता है · मै सोचता हूँ किसी व्यायामशाला मे भर्ती हो जाऊँ। सुनते है वहाँ बहुत बडे अफसर, और यहा तक कि प्रिवी काउन्सलर भी व्यायाम करने जाते है आधुनिक विज्ञान का ज़माना जो ठहरा · हाँ हाँ · लेकिन मुझे यहाँ बड़ा काम रहता है, तहकीकात

वगरह करना'' तुमने अभी खुद ही तहकीकात का जिक्र किया था। सच पूछो तो तहकीकात करने वाले की स्थिति कई बार मुजरिम से अधिक विचित्र हो जाती है'' तुमने खुद इस बारे मे मजेदार टिप्पणी की थी। (रास्कोलनिकोव ने कोई टिप्पणी नही की थी)। कई बार मामला बडा टेढा हो जाता है ! हम लोगो को बार बार एक ही रट लगानी पडती है। सुनते है अब तो सुधार होने वाले है और हमारे महकमे का नाम बदल जायेगा। ही ही, रही कानूनी परपरा की बात, तो मै तुम्हारी राय से बिल्कुल सहमत हूँ। एक गवार से गवार आदमी भी जानता है कि पुलिसवाले ऊलजलूल सवाल पूछकर मुजरिम का ध्यान बँटाने की कोशिश करते है फिर अचानक टेढा सवाल पूछकर उसे हतप्रभ कर देते है। ही ! ही ! तुम्हारा ख्याल था कि मै इसीलिये सरकारी क्वार्टरो की चर्चा कर रहा था '' ' ही-ही ' तुम बडा मजाक करते हो ' अच्छा मै अब चुप रहूँगा : लेकिन इस बात से मुझे याद आया, तुमने कहा था बाकायदा तहकीकात होनी चाहिये। लेकिन उसकी क्या जरूरत है ? कई केसो में तो सिर्फ दोस्ताना बातचीत मे ही काम की सारी बाते मालूम हो जाती है। फिर तहकीकात करना एक स्वतत्र कला है उसमें औपचारिक ढगो की हर वक्त जरूरत नही ' ही-ही ''।"

यह कहकर पोरफेरी पैत्रोविच चुप हो गया। उसने दो-चार रहस्यमय सकेत छोड कर फिर अनर्गल बाते शुरू कर दी थी। वह और भी तेज चाल से चहलकदमी कर रहा था उसका दाया हाथ पीठ के पीछे था, और बाये हाथ को वह हिला-डुला रहा था। रास्कोलनिकोव ने देखा कि वह सहसा दरवाजे के पास ठिठक गया था।

"यह किसी की इन्तजार तो नही कर रहा ?" उसने मन ही मन सोचा।

पोरफेरी ने रास्कोलनिकोव को मासूम नजरो से देखा, (रास्कोल-

निकोव फौरन चौककर सावधान हो गया) और प्रफुल्लित स्वर मे कहा, "तुम हमारी कानूनी परपराओ की हँसी उडाकर अच्छा ही करते हो। तहकीकात के कई मनोवैज्ञानिक ढग बडे पेचीदा और हास्यास्पद है। ऐसे तरीको पर चलना फिजूल है—मै फिर तरीको की बात कर रहा हूँ · अगर मुझे किसी आदमी पर शक हो जाये कि वह अपराधी है तो मै · तुम कानून के विद्यार्थी हो न !"

"किसी जमाने मे था ··"

"तब तो भविष्य मे यह मिसाल तुम्हारे काम आयेगी। तुम खुद अपराध के विषय पर लेख लिखते हो, मै तुम्हे भला क्या शिक्षा दे सकता हूँ ? लेकिन अगर मुझे किसी आदमी पर शक हो जाये, और मेरे पास उसके खिलाफ सबूत भी हो, तो भला मै उसको नाहक क्यो परेशान करूँ ! कई बार तो मुजरिम को फौरन गिरफ्तार करने मे बेहतरी है। लेकिन कई मुजरिमो को मै खुली छूट देना पसद करता हूँ, ताकि वे शहर मे खूब मटरगश्ती करते फिरें ··ही-ही ! तुम समझे नही ··तो एक दूसरी मिसाल सुनो, मै किसी मुजरिम को जल्द ही जेल भेज कर भला उसे नैतिक सहारा क्यो दूँ ? ही-ही ! तुम हँस रहे हो ?"

रास्कोलनिकोव हँसने की बजाये ओठ भीच कर पोरफेरी पैत्रोविच की तरफ देख रहा था।

"कई मुजरिमो के साथ हम यही तरीका बरतते है। क्योकि दुनियाँ में हर किस्म के लोग है। तुम कहोगे सबूत है तो उसे क्यो न पकडा जाये ? मै कहता हूँ कि सबूत भी गणित की तरह स्पष्ट और शृ खला-बद्ध होना चाहिये, ताकि कोई उसका खडन न कर सके। अगर मै फौरन ही मुजरिम को क़ैद करलूँ तो फिर और सबूत नही मिल सकते, क्योकि उसका मन निश्चिन्त हो जायेगा और वह अपने मन के घोघे मे घुस जायेगा। कहते है कि सेबस्टापोल के लोगो को डर था कि कही दुश्मन फौरन हमला करके सेबस्टापोल पर अधिकार न कर ले। लेकिन यह

सुनकर कि दुश्मन बाकायदा घेरा डालने की योजना बना रहा है, वे निश्चिन्त हो गये क्योकि मुसीबत कम से कम दो महीने के लिये तो टल ही गई थी। अरे, तुम फिर हँस रहे हो ? तुम्हे मेरी बात पर विश्वास नही होता। खैर, तुम्हारी राय भी ठीक है। लेकिन मेरे दोस्त, याद रखो कि कानूनी किताबो मे चाहे जो लिखा हो, हर अपराध असाधारण होता है। कई बार तो उसकी मिसाल ही नही मिलती। अक्सर बडे मजेदार केस देखने मे आते है। अगर मै मुजरिम को बिल्कुल तग न करूँ, लेकिन सिर्फ उसे यह बता दूँ कि मै उसकी हर गति-विधि पर नजर रख रहा हूँ—तो आतक से वह विक्षिप्त हो उठेगा, और खुद-बखुद कोई ऐसी बात कर बैठेगा, जिससे उसका जुर्म साबित हो जायेगा—ठीक गणित के सवाल की तरह—जिसमे दो और दो चार होते है। है न मजेदार बात ! मुजरिम चाहे देहाती हो या पढा-लिखा वह इसी तरह पकडा जाता है, विशेषकर पढा-लिखा आदमी। इसीलिये यह अध्ययन करना जरूरी है कि मुजरिम की बुद्धि का विकास किस दिशा मे हुआ है, फिर इन्सान के स्नायु भी तो है ! ऐसे लोग बहुत चिडचिडे होते है और बीमार पड जाते है ! बापरे ! उनके भीतर कितना गुस्सा होता है !

सच पूछो तो हमारे पौ बारह है। अगर मुजरिम शहर मे जूते चटखाता फिरता है तो शौक से फिरे, जब मैने उसे एक बार पकड लिया है तो वह भागकर कहाँ जायेगा ? विदेश ? ही-ही ! पोलेड मे मुजरिम भले ही भाग जाते हो, लेकिन मेरे यहाँ रहते कोई नहीं भाग सकता। क्या वह भागकर देहात मे छिपेगा ? लेकिन वहाँ उजड्ड रूसी देहाती रहते है। पढा-लिखा मुजरिम देहातियो के साथ रहने की बजाय जेल मे रहना अधिक पसद करेगा। ही-ही ! लेकिन यह निरी बकवास है, दरअसल बात तो यह है कि मुजरिम भागने मे असमर्थ होता है—ही-ही ! प्रकृति के नियमानुसार मुजरिम मुझसे बचकर कही नही जा

सकता। तुमने पतगे को मोमबत्ती के गिर्द चक्कर लगाते देखा है ? मुजरिम भी उसी तरह मेरे गिर्द मडराता रहेगा। आज़ादी का मोह उसे नही रहेगा। ज्यादा सोचने से चिन्ता बढेगी और वह खुद अपने गिर्द जाल बुन लेगा--अगर मै उसे छूट दिये रखू तो मुझे पक्का सबूत मिल जायेगा—वह मेरे गिर्द चक्कर काटता हुआ मेरे नज़दीक आता जायेगा और फिर झट से मेरे मुँह में आ गिरेगा, मै फौरन उसे निगल जाऊँगा—कैसा मजा रहेगा। ही-ही ही तुम्हे विश्वास नही होता ?"

रास्कोलनिकोव चुप रहा। उसका चेहरा पीला पड गया था। वह आतुर दृष्टि से पोरफेरी की ओर देख रहा था। उसने मन ही मन सोचा, "यह निरा बिल्ली-चूहे का खेल नही, इसके पीछे कोई राज़ छिपा है वह अकारण ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन नही कर रहा, लेकिन आखिर उसका इरादा क्या है ? मेरे दोस्त तुम मुझे झूठ मूठ डराने का ढोग रच रहे हो, तुम्हारे पास कोई सबूत नही। जिस आदमी को मैंने कल देखा था, वह मेरा भ्रम मात्र था। तुम मुझे आतकित करके कुचलना चाहते हो, लेकिन तुम ऐसा नही कर सकोगे। लेकिन इन सकेतो का आखिर क्या रहस्य है। क्या वह मेरे थके हुए स्नायुओं का फायदा उठाना चाहता है ? मेरे दोस्त तुम गलती पर हो, तुम कभी मुझे जाल मे नही फसा सकते ज़रा देखूँ तुमने मेरे खिलाफ कौन से हथियार जमा कर रखे है।"

वह आनेवाली अज्ञात यत्रणा को झेलने के लिये तैयार हो गया। उसके मन मे आया कि वह पोरफेरी का गला घोट दे। उसे जिस बात का डर था वही हुई। उसे लगा कि उसके सूखे ओठो पर झाग आ गई है और उसका दिल जोरो से धडक रहा है। उसने मन ही मन चुप रहने का निश्चय किया, क्योकि चुप्पी से वह अपने दुश्मन को दिल की बात कहने के लिये प्रेरित कर सकता है।

पोरफेरी ने फिर कमरे मे चहलकदमी शुरू कर दी और चटखारे लेकर हँसते हुए कहा, "तुम सोचते हो मै फिर तुमसे मजाक कर रहा हूँ। तुम्हारा सोचना ठीक है। ईश्वर ने मुझे विदूषक जैसा शरीर दिया है जिसे देखकर सब लोगो को हँसी आती है, लेकिन रोदियोन रोमनोविच एक बूढे की बात पल्ले बाँध लो, तुम अभी जवान हो। सब नौजवान बुद्धि को सबसे अधिक महत्व देते है। तुम लोग लच्छेदार शब्दो और बहसो के प्रति आकर्षित होते हो—बिल्कुल आस्ट्रिया के हाफक्रीगस्रैथ की तरह, जिसने कागज के नक्शे पर नैपोलियन को हराकर बदी बना लिया था। लेकिन तुमने देखा, जनरल मैक और उसकी फौज ने हथियार डाल दिये। ही, ही, ही। देखता हूँ रोदियोन रोमनोविच, मुझ जैसे शहरी के मुँह से सेना की बाते सुनकर तुम हँस रहे हो लेकिन क्या करूं यह मेरी कमजोरी है। मुझे सैन्य विज्ञान पढने का बडा शौक है। मुझ जैसे आदमी को सेना मे भरती होना चाहिये था। मैंने नाहक ही मौका गँवा दिया। मैं नैपोलियन बनने का दावा तो नहीं करता, लेकिन सेना में मेजर जरूर हो जाता, ही, ही। तो दोस्त, इस स्पेशल केस की सच्चाई सुनो। तथ्य और मनुष्य का स्वभाव बहुत महत्वपूर्ण चीज़े है जनाब, लेकिन कई बार वे तीक्ष्ण से तीक्ष्ण बुद्धि को भी धोखा दे जाते है। मै सजीदगी से बाते कह रहा हूँ, रोदियोन रोमनोविच, एक बूढे की बाते गौर से सुनो (पोरफेरी पैत्रोविच जो अभी सिर्फ पैतीस बरस का था, क्षण भर मे बूढा नज़र आने लगा, उसकी आवाज भी बदल गयी और वह सिकुडा सा दीखने लगा)। वैसे आदमी मै शानदार हूँ। तुम्हारी क्या राय है ? मै इस सलाह के बदले मे तुमसे कोई इनाम नही चाहता। ही ही। अच्छा तो मेरे ख्याल मे बुद्धि बहुत बडी चीज़ है, लेकिन कई बार वह कितना ख्वार करती है। कई बार तहकीकात करने वाले अफसर भी चकरा जाते है, उनकी कल्पना उन्हे न जाने कहाँ कहाँ ले जाती है। आखिर

वे बेचारे इन्सान ही तो है—अगर मुजरिम का स्वभाव अच्छा हो तो बेचारे मुसीबत से बच जाते है, लेकिन जवानी मे इन्सान बुद्धि के पखो पर चढकर 'सब बाधाओ को दूर करने' मे भी नही हिचकिचाता, जैसा कि कल तुमने कहा था। ऐसा काल्पनिक मुजरिम चतुराई से झूठ बोलेगा। तुम सोचते हो कि बुद्धि के बल पर वह जीत जायेगा, लेकिन किसी भी महत्वपूर्ण प्रसग के आते ही वह बेहोश होकर गिर पडेगा। हो सकता है वह पहले से बीमार हो और कमरे मे भीड रहने की वजह से उसे बेहोशी आ गई हो, लेकिन एक मिसाल तो कायम हो गई। उसने बढचढकर झूठ बोला, लेकिन उसकी प्रकृति उसे धोखा दे गई। ऐसा हमेशा होता है। कई बार वह अपनी तेज बुद्धि का प्रदर्शन करने के लिये पुलिसवाले का मजाक उडाता है और इस तरह अभिनय करता है जैसे उसका चेहरा सचमुच पीला पड गया हो, लेकिन वह पीलापन स्वाभाविक होता है। एक मिसाल और मिल गई। उसकी तहकीकात करने वाला धोखे मे आ जाता है लेकिन अगर वह मूर्ख नही है तो अगले दिन वह नये ढग से सोचता है। पग पग पर यही सघर्ष चलता है। इसके बाद मुजरिम जानबूझ कर पुलिस के पास आता है और अनर्गल बातो द्वारा अपने जुर्म की ओर सकेत करता है। कहता है तुम लोगो ने मुझे पहले क्यो नही पकडा ? ही,ही, ही। तुम जानते हो कि कोई चतुर साहित्यिक या मनोवैज्ञानिक ही इतनी चालाकी दिखा सकता है। मनुष्य का स्वभाव शीशे की तरह है, उसमे झाककर आप अपना वास्तविक स्वरूप देख सकते है। लेकिन तुम्हारा चेहरा एक दम पीला क्यो पड गया ? क्या कमरे मे उमस है ? खिडकी खोल दूँ ?"

"नही रहने दीजिये, तक़लीफ करने की ज़रूरत नही है," रास्कोलनिकोव को सहसा हँसी आ गई।

पोरफेरी उसके सामने आकर खडा हो गया, और हँसने लगा। रास्कोलनिकोव सयत भाव से सोफे पर से उठकर खडा हो गया और

ऊँची आवाज मे बोला (हालाकि उसकी टाँगे आवेश से काप रही थी) "पोरफेरी पैत्रोविच, मैं समझ गया हूँ कि तुम्हे मुझ पर शक है कि मैने ही बुढिया और उसकी बहन लिजावेता की हत्या की है। मै इस आँख-मिचौनी से तग आ गया हूँ--अगर तुम मुझको मुजरिम समझते हो तो मुझे गिरफ्तार करके मुझ पर बाकायदा अभियोग लगाओ। लेकिन मेरे मुह पर तुम मेरी हसी उडाओ और मुझे दिक करो, यह मै नही बर्दाश्त करूँगा "

उसकी आवाज काप रही थी, और आँखे अगारो की तरह चमक रही थी। उसने जोर से मेज पर मुक्का मारा और कहा, "सुनते हो पोरफेरी पैत्रोविच ! मैं यह सब नही बर्दाश्त करूँगा।"

"हे ईश्वर ! इसका क्या मतलब है। रोदियोन रोमनोविच, मेरे दोस्त, तुम्हे क्या हो गया है ?" पोरफेरी पैत्रोविच ने भय का अभिनय करते हुए पूछा।

"मै नही बर्दाश्त करूँगा" रास्कोलनिकोव फिर चिल्लाया।

"हुश ! लोग सुन लेगे तो भीतर आजायेगे, हम उन्हे क्या जवाब देगे ?" पोरफेरी ने रास्कोलनिकोव के कान मे कहा।

"मै बर्दाश्त नही करूँगा। नही करूँगा।" रास्कोलनिकोव फुस-फुसाया।

पोरफेरी ने भागकर खिडकी खोल दी, "ताजी हवा आने दो। तुम्हे पानी पीना चाहिए तुम बीमार हो।" पोरफेरी दरवाज़े पर जा कर किसी को आवाज़ देने लगा। लेकिन उसे कमरे मे हो पानी का गिलास रखा हुआ मिल गया। उसने गिलास रास्कोलनिकोव के मुँह के पास ले जाकर कहा, "इसे पीओ ! तुम्हे फायदा होगा।"

पोरफेरी पैत्रोविच की सहानुभूति इतनी स्वाभाविक थी कि रास्कोलनिकोव भौचक्का हो गया। उसने पानी नही पीया।

"रोदियोन रोमनोविच, तुम इस तरह पागल हो जाओगे। छि

छि लो थोडा सा पानी पी लो।"

पोरफेरी के आग्रह पर रास्कोलनिकोव ने यन्त्रवत गिलास ओठो से लगाया, लेकिन ग्लानिपूर्वक उसे मेज पर रख दिया।

पोरफेरी पैत्रोविच ने हमदर्दी जताते हुए कहा, हालाकि उसके चेहरे से लापरवाही झलक रही थी, "तुम्हे फिर दौरा पड गया। मालूम होता है तुम जानबूझ कर बीमारी को बुला लोगे। तुम्हे अपनी सेहत का ख्याल रखना चाहिए। दिमित्री प्रोकोफिच कल तुम्हारे जाने के बाद मुझसे मिलने आया था मैं जानता हूँ, मेरा स्वभाव झक्की है, लेकिन उन लोगो ने मेरी बात का न जाने क्या ऊटपटाग अर्थ लगा लिया है। खाने के वक्त वह लगातार बोलता रहा। क्या तुमने उसे भेजा था ? बैठ जाओ, मेहरबानी करके बैठ जाओ।'

"मैने उसे नही भेजा था, लेकिन मै जानता हूँ, वह किस लिए तुमसे मिलने आया था।" रास्कोलनिकोव ने तेज़ आवाज़ मे कहा।

"तुम जानते हो ?"

"हाँ, लेकिन इससे क्या हुआ ?"

"रोदियोन रोमनोविच, मै तुम्हारी नस नस पहचानता हू। मुझे मालूम है, तुम एक रात को एक फ्लैट किराये पर लेने गए थे और तुमने मजदूरो से खून के धब्बो के बारे मे पूछा था—वे बेचारे कुछ नही समझ पाये थे। मै कल्पना कर सकता हूँ, उस वक्त तुम्हारे मन की क्या दशा रही होगी। लेकिन इस तरह तो तुम पागल हो जाओगे। तुम्हारा मन क्षोभ और शिकायतो से भरा है, तुम्हे लगता है कि भाग्य ने, और पुलिस ने तुम्हारे साथ भारी अन्याय किया है, इसलिए तुम विक्षिप्त हो गए हो और चाहते हो कि पुलिस वाले तुम्हारे इस सदेह और मूर्खता का अत कर दे क्योकि तुम इससे तग आ गये हो। यही बात है न ! मैने तुम्हारे मन की बात भाप ली है न ! मुझे डर है कि तुम खुद पागल हो जाओगे और साथ मे राजुमिहीन को भी पागल

कर दोगे । वह बडा शरीफ आदमी है । तुम बीमार हो, वह स्वस्थ है । तुम्हारी छूत उसे भी लग सकती है ··जब तुम स्वस्थ हो जाओगे, तब मैं तुम्हे यह सब बाते समझाऊँगा ··लेकिन मेहरबानी करके बैठ तो जाओ ! तुम्हारी हालत खराब नजर आ रही है ।"

रास्कोलनिकोव बैठ गया । उसे कपकपी की बजाय गर्मी महसूस हो रही थी और वह गौर से पोरफेरी की बाते सुन रहा था, जो अभी तक चिन्ता और हमदर्दी का अभिनय कर रहा था । रास्कोल-निकोव पोरफेरी के मुह से फ्लैट का जिक्र सुनकर आतकित हो उठा था, उसने सोचा, "इसे फ्लैट का पता कैसे चला । वह मेरे मुह पर यह बात क्यो कर रहा है ?"

पोरफेरी ने फिर कहना शुरू किया "हमारे यहाँ ऐसी रुग्ण मनो-वृत्ति वाला केस पहले भी आया था । एक आदमी को बहम हो गया था कि उसने हत्या की थी, हालाकि हत्या से उसका दूर का ही सम्बन्ध था, उसने सिर्फ हत्यारो की मदद की थी । न जाने क्यो उसके दिमाग पर यह बात छा गई कि वही हत्यारा है । अन्त मे हाईकोर्ट ने पूरी तहकीकात की और उस बेचारे को बरी कर दिया । छि छि मेरे दोस्त, अगर तुम इसी तरह रात को लोगो के घरो की घटियाँ बजाते रहे और खून के दागो के बारे मे पूछते रहे तो पागल हो जाओगे । मैने भी रुग्ण —मानस का अध्ययन किया है । कई बार आदमी गिर्जे की छत से या खिडकी से कूद कर प्राण देना चाहते है··इसी तरह घटी बजाना भी एक रोग है । रोदियोन रोमनोविच ! तुम अपनी बीमारी के प्रति उदासीन हो, तुम्हे किसी अच्छे डाक्टर का इलाज कराना चाहिए । उस मुटल्ले का क्या फायदा, कही उस वक्त तुम विक्षिप्त तो नही थे ?"

रास्कोलनिकोव को लगा जैसे धरती घूम रही है । "क्या यह अब भी झूठ बोल रहा है ? नही नही ,ऐसा नही हो सकता ।" उसे डर

लगा कि कही वह गुस्से से पागल न हो जाये।

"नही मै विक्षिप्त नही था, मै होश-हवास मे था, सुना तुमने।" वह पोरफेरी की चाल को तोडने के लिए जोर से चिल्लाया।

"हाँ सुन लिया, मैं समझ गया तुमने कल भी यही कहा था। तुम क्या कहना चाहते हो। मै पहले से बता सकता हूँ। सुनो रोदियोन रोमनोविच, अगर तुम सचमुच हत्यारे होते या इस हत्या से तुम्हारा कोई भी सम्बन्ध होता तो क्या तुम खुलेआम यह कहने फिरते कि तुम विक्षिप्त नही थे। मेरे ख्याल मे तो ऐसा होना असभव है। अगर तुम्हारे मन मे चोर होता तो तुम जोर देकर कहते कि तुम उस समय होश मे नही थे। ठीक है न।"

इस सवाल मे बडी चालाकी छिपी थी। रास्कोलनिकोव सोफे की पीठ से सटकर बैठ गया। पोरफेरी उसके पास आकर चकित दृष्टि से उसे घूरने लगा।

"रही राजुमिहीन की बात, अगर तुम अपराधी होते तो कहते कि राजुमिहीन खुद बखुद आया था, लेकिन तुम खुल्लमखुल्ला कहते हो कि तुम्ही ने उसे भेजा था।"

रास्कोलनिकोव ने यह बात नही कही थी। उसकी रीढ मे ठडी कपकपी दौड गई। उसने क्षीण स्वर मे कहा, "तुम लगातार झूठ बोल रहे हो, और दिखाना चाहते हो, कि तुम्हे मेरी सब चाले मालूम है, और मै क्या कहना चाहता हूँ यह तुम्हे पहले से ही मालूम है। तुम मुझे डराना चाहते हो · या सिर्फ मुझे बुद्धू बना रहे हो ?"

उसकी आखे फिर घृणा से चमकने लगी और वह बोला, "तुम झूठ बोल रहे हो। तुम जानते हो कि मुजरिम की भलाई इसी मे है कि वह सच्ची बात कह दे, और कुछ न छिपाये। मुझे तुम्हारी बातो पर रत्ती भर विश्वास नही है।"

पोरफेरी खीसे निपोर कर बोला, 'तुम भी कितने जिद्दी आदमी

हो। किसी तरह पकड मे ही नही आते। तुम्हे बहम हो गया है। तुम मेरी बातो पर विश्वास नही करते। एक चौथाई तो करते ही हो, जल्द ही तुम्हे सारी बातो पर विश्वास हो जायेगा, क्योकि मुझे तुमसे हार्दिक स्नेह है और मै तुम्हारी भलाई चाहता हूँ।"

रास्कोलनिकोव के ओठ कापने लगे। पोरफेरी ने स्नेहपूर्वक उसकी बाह थपथपाते हुए कहा, "सचमुच मै तुम्हारा शुभचिन्तक हूँ। तुम्हे अपना इलाज करवाना चाहिए, जरा अपनी माँ और बहन का तो ख्याल करो, तुम उन्हे तसल्ली देने की बजाए उन्हे डराते हो ···।"

"तुम्हे इससे क्या मतलब ? तुम्हे ये बाते कैसे मालूम हुई। तुम दिन रात मेरी निगरानी करते हो, यही बताना चाहते हो न।"

"भाई वाह ! तुम्ही से तो मुझे ये बाते मालूम हुई। उत्तेजना मे तुम लोगो को सब कुछ बता देते हो। राजुमिहीन से भी मुझे कल बहुत सी दिलचस्प बाते मालूम हुई। मै तुम्हे बताना चाहता हूँ कि तुम सन्देहशील प्रकृति के आदमी हो, इसीलिए साधारण ज्ञान से काम नही ले सकते। इसी घन्टी वाली बात को ही लो, अगर मुझे तुम पर जरा सा भी शक होता तो क्या मै तुम्हे बता देता कि मुझे सब कुछ मालूम है ? (मै तुम्हे यह भेद बता रहा हूँ) मै तुम्हारा ध्यान इधर उधर की बातो मे लगाता और फिर अचानक तुम्हे चारो खाने चित्त करने के लिए पूछता, "जनाब आप रात के दस बजे बुढिया के फ्लैट मे क्या करने गए थे ? आपने घन्टी क्यो बजाई थी और खून के धब्बो के बारे मे क्यो पूछा था ? आपने चौकीदार से पुलिस थाने चलने के लिए क्यो कहा था ?" अगर मुझे तुम पर शक होता तो मै बाकायदा तुम्हारे कमरे की तलाशी लेता, तुम्हे गिरफ्तार भी करता और सरकारी ढग से तुमसे सवाल भी पूछता···लेकिन मैने यह सब नही किया, क्योकि मुझे तुम पर शक नही है। मै फिर कहता हूँ कि तुम इस मामले को स्वस्थ दृष्टि से नही देखते।"

रास्कोलनिकोव चौक गया, पोरफेरी भी उसकी घबराहट भाप गया था।

"तुम लगातार झूठ बोल रहे हो। तुम्हारी मशा क्या है, यह तो मै नही जानना।"

"मै झूठ बोल रहा हूँ ?" पोरफेरी ने उदासीन स्वर मे पूछा, "लेकिन अभी मैने तुम्हे कितनी नेक सलाह दी है। बीमारी, विक्षिप्ति, उदासी और पुलिस अफसरो का व्यवहार··ही-ही-ही हालाँकि आत्मरक्षा के ये मनोवैज्ञानिक हथियार बडे खतरनाक है क्योकि ये दुधारे होते है। माना कि आप बीमार थे, लेकिन जनाब बीमारी मे भी आपको यही भूत क्यो दिखाई दिया ? हो सकता है और भूत भी दिखाई दिये हो, ही-ही-···।"

रास्कोलनिकोव ने अहकार और नफरत भरी नजरो से देखा। वह आवेश मे उठ खडा हुआ और पोरफेरी को धकेलते हुए बोला, "मै यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हे मुझ पर शक है या नही। जल्दी बताओ पोरोफेरी पैत्रोविच, मै हमेशा के लिये इस बात को साफ कर लेना चाहता हूँ।"

"तुम भी खूब हो ! तुम्हे पुलिस ने क्या तग किया है ? फिर यह सब किसलिये जानना चाहते हो ? तुम इस तरह जिद कर रहे हो जिस तरह बच्चे दियासलाई माँगने के लिये ज़िद करते है। इतने बेचैन किस लिये हो, और जबरदस्ती अपने को हमारे ऊपर क्यो लादना चाहते हो ? ही-ही-ही।" पोरफेरी ने चालाकी से पूछा।

"मै फिर कहता हूँ, मै यह सब बर्दाश्त नही करूँगा" रास्कोल-निकोव खीजकर बोला।

"क्या अनिश्चितता"·

"मुझे उल्लू मत बनाओ ! मै यह सब बर्दाश्त नही करूँगा। सुन लिया ?" रास्कोलनिकोव ने आवेश मे मेज पर मुक्का मारकर कहा।

"हुश ! लोग सुन लेगे। मै तुम्हे फिर चेतावनी देता हूँ—जरा सोच समझ कर बोलो। मै मजाक नही कर रहा।" इस बार पोरफेरी की रहस्यमयी मुस्कान गायब हो गई थी और आवाज कठोर हो गई थी।

यह सुनते ही रास्कोलनिकोव गुस्से से पागल हो उठा, लेकिन अगले ही क्षण उसने अपने को सभाल लिया, वह धीमे स्वर मे बोला, "मै यह यत्रणा बर्दाश्त नही करूँगा। बेशक मुझे गिरफ्तार करके मेरी तलाशी ले लो, लेकिन मेहरबानी करके कायदे से तहकीकात करो। खबरदार जो मुझे और सताया।" रास्कोलनिकोव अपने को सचमुच पोरफेरी के सामने असहाय पा रहा था।

पोरफेरी ने फिर चालाकी भरे स्वर मे कहा, "तुम्हे तहकीकात के ढग से क्या मतलब ? मैने तो तुम्हे दोस्त की हैसियत से यहा बुलाया था।"

"मुझे तुम्हारी दोस्ती नही चाहिये। मैं उस पर थूकता हूँ—सुना तुमने ! यह लो मै चला। क्या तुम मुझे गिरफ्तार करना चाहते हो ?"

वह टोपी उठाकर दरवाजे की तरफ बढा।

पोरफेरी ने उसकी बाँह पकड ली और हँस कर कहा, "मैने एक अजब चीज रख छोडी है, उसे नही देखोगे ?"

"कौनसी अजब चीज ?" रास्कोलनिकोव ठिठक कर खडा हो गया और आतकित दृष्टि से पोरफेरी की ओर देखने लगा।

"मैंने उस चीज़ को इस कमरे मे बन्द रख छोडा है ताकि वह भाग न जाये। ही-ही-ही"

'क्या चीज ! कौन ! ..."

'यह लो चाबी" पोरफेरी ने जेब से एक चाबी निकाली।

"तुम झूठ बोल रहे हो, झूठे, बदमाश ! दगाबाज !" रास्कोलनिकोव पोरफेरी पर झपटा, "मै सब समझता हूँ। तुम जानबूझ कर

मेरा मजाक उडा रहे हो, ताकि मै अपना रहस्य तुम्हे बता दूँ ।"

"मेरे प्यारे रोदियोन रोमनोविच·· इससे अधिक अपना रहस्य भला तुम क्या बताओगे ? तुम्हारे सर पर पागलपन सवार है, अगर चिल्लाये तो मुझे क्लर्कों को बुलाना पडेगा ।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। बुला लो क्लर्कों को। तुम जानते थे कि मै बीमार हूँ इसीलिए मेरा रहस्य जानने के लिये तुमने मुझे इतना उत्तेजित किया । मेरे खिलाफ कोई मबूत पेश करो तो जानूँ। जमेतोफ की तरह शक्की होने से ही क्या होता है ? तुम मेरे स्वभाव से परिचित हो, इसलिये मुझे उत्तेजित करके चारो खाने चित्त करना चाहते हो। तुम किन पुरोहितो और अफसरो की इन्तिजार कर रहे हो ? वे कहा है ? उन्हे बुलाओ ।"

"कौन से अफसर, मेरे दोस्त ! तुम्हारे वहम भी विचित्र है। तुम्हारा अभिनय ठीक नही हो रहा, जब कि तुम कहते हो कि तुम्हे कुछ पता ही नही · मेरे दोस्त इस चक्कर से निकलना मुश्किल है।" पोरफेरी ने दरवाज़े से कान लगाते हुए कहा। भीतर से शोर सुनाई दे रहा था।

"वे आ गये। तुमने उन्हे बुला लिया, अपने गवाहो और अफसरो को·· मै तैयार हूँ।"

इसी समय एक अप्रत्याशित घटना घटी, जिसकी उम्मीद पोरफेरी को भी नही थी।

६

बाद मे रास्कोलनिकोव को यह घटना इस तरह याद आई,

दरवाजे के पीछे शोर बढता जा रहा था, सहसा दरवाजा धीरे से खुला।

"कौन है ? मैने तो हुक्म दिया था···" पोरफेरी खीज कर बोला।

क्षरण भर के लिये खामोशी छाई रही। बहुत से लोग मिलकर किसी व्यक्ति को पीछे धकेलने की कोशिश कर रहे थे।

"क्या माजरा है ?" पोरफेरी ने फिर पूछा।

"कैदी निकोलाई लाया गया है" किसी ने उत्तर दिया।

"उसे ले जाओ ! यहा क्यो लाये हो ? कैसी बेकायदगी है ?" पोरफेरी ने दरवाजे के पास जाकर कहा।

"लेकिन वह···"

दो सैकिड बाद एक पीले चेहरे वाला आदमी आकर कमरे मे खडा हो गया। उसका हुलिया बडा विचित्र था—वह इस तरह आँखे फाड-फाड कर देख रहा था जैसे उसे कुछ दिखाई नही दे रहा था। उसकी आँखो मे निश्चय भरी चमक थी, लेकिन चेहरे से ऐसा मालूम होता था जैसे उसे फाँसी मिलने वाली है। उसके सफेद ओठ काप रहे थे।

उसका कद मझला था और वह मजदूरो की-सी पोशाक पहने था। एक वार्डर ने आकर निकोलाई की बाँह पकड ली।

बहुत से लोग कौतूहलवश दरवाजे मे जमा हो गये और धक्कम-धक्का शुरू हो गया।

"इसे इतनी जल्दी यहा क्यो ले आये ? चले जाओ यहाँ से।" पोरफेरी गुस्से मे बडबडाया। मालूम होता था उसकी सारी योजना गडबड हो गई थी।

लेकिन निकोलाई घुटने टेककर बैठ गया। "क्या बात है ?" पोरफेरी ने चकित स्वर मे पूछा।

"मुजरिम मै हूँ, मैने हत्या की है !" निकोलाई बोला।

दस मिनट तक कमरे मे खामोशी छाई रही, वार्डर भी पीछे हटकर खडा हो गया।

"आखिर माजरा क्या है ?" पोरफेरी अपने को सभालता हुआ बोला।

"मै ... हत्यारा हूँ।" निकोलाई ने कहा।

"तुम . तुमने किसकी हत्या की ?" पोरफेरी के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था।

निकोलाई ने एक क्षण रुककर उत्तर दिया, मैने अल्योना इवानोवना और उसकी बहन लिजावेता इवानोवना को कुल्हाडी से मार दिया। उस वक्त मेरा दिमाग पागल हो गया था।"

निकोलाई अभी भी घुटने टेककर बैठा था। पोरफेरी कुछ क्षण तक किसी गहरी सोच मे पड गया फिर उसने हाथ के इशारे से सब लोगो से चले जाने के लिये कहा। दरवाजा फिर बद हो गया। पोरफेरी ने चकित दृष्टि से बारी बारी रास्कोलनिकोव और निकोलाई के चेहरे की तरफ देखा और निकोलाई के पास आकर गुस्से मे कहा, "आखिर तुम्हे जल्दी किस बात की है ! मैंने तुम्हे नही पूछा कि तुम्हारा दिमाग

खराब था या नही। बोलो, तुम्ही ने हत्या की थी ?"

"मै ही हत्यारा हूँ मै बयान देना चाहता हूँ।" निकोलाई बोला।

"अच्छा ! किस चीज से मारा ?"

"कुल्हाडी से—मैने पहले से ही तैयार करली थी।"

"अकेले ही ?"

निकोलाई सवाल को अच्छी तरह नही समझ सका।

"तुम अकेले ही थे या तुम्हारा और कोई साथी भी था ?"

"हाँ—मै अकेला ही था—मिल्का बेकसूर है।"

"मिल्का के बारे मे इतनी जल्दी करने की कोई जरूरत नही। अच्छा यह बताओ तुम उस वक्त सीढियो से नीचे क्यो भागे थे ? चौकीदार ने तुम दोनो को देखा था ?"

"चौकीदारो को शक न हो इसीलिये मैं मिल्का के पीछे भागा था।" निकोलाई ने फौरन जवाब दिया। मालूम होता था वह रटी रटाई बात कह रहा है।

"मै जानता हूँ—तुम अपनी बात नही कह रहे" पोरफेरी बड-बडाया। सहसा उसकी दृष्टि रास्कोलनिकोव पर पडी। निकोलाई की बातो मे वह रास्कोलनिकोव को भूल गया था। उसने चौककर कहा,

"मेरे प्यारे रोदियोन रोमनोविच, माफ करना, तुम्हारा यहाँ रुकना ठीक नही · अजब करिश्मा देख लिया न ! गुडबाई !" वह रास्कोलनिकोव की बाँह पकड कर उसे दरवाजे तक ले गया।

"तुम्हे आश्चर्य हो रहा होगा ! क्यो ?" रास्कोलनिकोव ने व्यग्य किया। उसे स्थिति पूरी तरह समझ मे नही आई थी।

'तुम्हे भी तो इसकी उम्मीद नही थी। मेरे दोस्त जरा देखो तो तुम्हारे हाथ कैसे काप रहे है ! ही ही-ही !"

"तुम भी तो काँप रहे हो पोरफेरी पैत्रोविच !"

"हाँ—मुझे इस घटना की उम्मीद नही थी !"

पोरफेरी रास्कोलनिकोव को जल्द ही रुखसत करना चाहता था।

"अपना करिश्मा मुझे नही दिखाओगे ?" रास्कोलनिकोव ने ताना दिया।

"तुम भी खूब आदमी हो ! तुम्हारे दात किटकिटा रहे है—अच्छा गुडबाई !"

"काश यह हमारी आखिरी मुलाकात हो !"

"वह तो ईश्वर के हाथो मे है।" पोरफेरी ने वक्र मुस्कान के साथ उत्तर दिया।

दफ्तर से बाहर निकलते वक्त रास्कोलनिकोव ने देखा कि बहुत से लोग उसकी तरफ देख रहे है, उनमे वे दोनो चोकीदार भी थे, जिनसे उसने पुलिस थाने चलने के लिये कहा था। वह अभी सीढियो पर पहुँचा ही था कि पीछे से पोरफेरी भागा आया।

"जरा ठहरो रोदियोन रोमनोविच, बाकी सब तो ईश्वर के हाथ मे है, लेकिन कायदे के मुताबिक मुझे तुमसे कुछ सवाल पूछने होगे •• फिर मुलाकात होगी न !"

वह कुछ और भी कहना चाहता था लेकिन रुक गया।

रास्कोलनिकोव ने सयतभाव से कहा, "माफ करना पोरफेरी पैत्रोविच मुझे गुस्सा आ गया था।"

"कोई हर्ज नही, कोई हर्ज नही•• मै भी गुस्सैल आदमी हूँ ! अच्छा ईश्वर ने चाहा तो अक्सर मुलाकात होती रहेगी !"

"और हम एक दूसरे को अच्छी तरह जान जायेगे ?" रास्कोल-निकोव ने कहा।

"हाँ अच्छी तरह, • तुम किसी के जन्मदिन की दावत मे जा रहे हो ?" पोरफेरी ने आँखे सिकोडकर पूछा।

"नही जनाजे मे।"

"हाँ जनाजे मे• •अपना ध्यान रखा करो और स्वस्थ

हो जाओ।"

"अगर आपका ओहदा विचित्र न होता तो शायद मै भी आपकी सफलता की कामना करता !" रास्कोलनिकोव ने सीढियो पर से उतरते हुए कहा।

पोरफेरी के कान खडे हो गये। "विचित्र कैसे ?"

"तुमने जरूर बेचारे निकोलाई को दिन रात तग किया होगा और उसे यह कहने पर मजबूर कर दिया होगा कि वही हत्यारा है। अब बेचारे ने अपना जुर्म स्वीकार लिया तो तुम कहोगे, "तुम झूठ बोलते हो, तुम हत्यारे नही हो ! तुम अपनी बात नही कह रहे !" कसा विचित्र ओहदा है।"

"ही-ही तो तुमने यह बात सुनी थी,"

"भला सुनता कैसे न !"

"ही-ही, तुम्हारा दिमाग बडा तेज है—कोई चीज तुम्हारी नजरो से ओझल नही होती · विलक्षणता से तुम्हे विशेष मोह है। कहते है कि गोगोल के साहित्य मे भी यही विशेषता है।"

"गोगोल मे ?"

"हा गोगोल मे· · अच्छा मै तुम्हारा इन्तिजार करूँगा।"

"मै भी इन्तिजार करूँगा।"

रास्कोलनिकोव सीधा घर पहुँचा। वह इतना घबराया था कि पद्रह मिनिट तक सोफे पर बैठकर वह बीती घटनाओ को याद करने लगा। निकोलाई के बयान का रहस्य उसकी समझ मे बिल्कुल नही आया, लेकिन निकोलाई ने यह बयान तो दिया था ? वह जानता था कि पुलिस इस बयान पर विश्वास नही करेगी और फिर उसे तग करेगी। लेकिन तब तक रास्कोलनिकोव को आत्मरक्षा के उपाय सोचने का मौका मिल जायेगा—लेकिन खतरा करीब ही था।

करीब कैसे ? उसे अपनी सही स्थिति का ज्ञान हो गया। पोरफेरी

से हुई अपनी बातचीत की स्मृति से ही वह काप उठा। उसे पोरफेरी की सारी चाले अभी तक नही मालूम हुई थी, लेकिन पोरफेरी की 'शुरू की चालो' ने ही रास्कोलनिकोव को आतकित कर दिया था। बस जरा सी कसर रह गई थी, वरना वह सब कुछ बक देता। पोरफेरी उसकी नस नस पहिचानता था, इसीलिये वह इतनी लापरवाही से चाले चल रहा था। लेकिन अत मे जीत तो पोरफेरी की ही होनी थी। निस्सदेह रास्कोलनिकोव अपनी स्थिति खराब कर बैठा था, लेकिन अभी तक पुलिस को कोई निश्चित सबूत नही मिले थे। तो क्या उसका अनुमान सही है ? पोरफेरी आखिर उससे क्या बात निकलवाना चाहता था ? क्या सचमुच उसे निकोलाई से इसी बयान की उम्मीद थी ? क्या निकोलाई के अचानक आने से ही पोरफेरी ने उसे विदा कर दिया था ?

पोरफेरी ने अपने सारे पत्ते उसे दिखा दिये थे, हालाँकि इसमे खतरा भी था, अगर सचमुच उसके मन मे शक होता तो वह जरूर उसे भी प्रकट कर देता। लेकिन वह अजूबा क्या था ? वह मजाक तो नही कर रहा था ? क्या उस मजाक के पीछे कोई रहस्य तो नही छिपा था ! उस कल वाले आदमी का क्या हुआ ? पोरफेरी को जरूर उसी से खबर मालूम हुई होगी ''

वह घुटनो पर कुहनियाँ टेक कर बैठ गया, और उसने हाथो से चेहरा ढाप लिया। वह अब भी काप रहा था। कुछ देर बाद उसने टोपी उठाई और दरवाजे की तरफ चल दिया।

न जाने क्यो उसे पूर्वाभास हुआ कि आज के दिन वह आजाद है और उसे कोई खतरा नही। उसका मन प्रफुल्लित हो उठा। वह जल्द ही कैटेरीना इवानोव्ना के घर जाकर दावत मे शामिल होना चाहता था। जनाजे का वक्त तो गुजर गया था—वहा सोनिया से मुलाकात होगी।

क्षणभर के लिये वह ठिठक गया, एक वेदनाभरी मुस्कान उसके ओठो पर खेलने लगी।

"आज ! आज ही······" वह बुदबुदाया ।

लेकिन जब वह दरवाजा खोलने के लिये आगे बढा तो दरवाजा अपने आप ही खुल गया और कल वाला आदमी जैसे धरती फाड कर बाहर निकल आया । वही चेहरा-मोहरा, वही पोशाक ! वह दहलीज पर खडा रास्कोलनिकोव की तरफ देख रहा था । लेकिन आज वह उदास था और ठडी सासे ले रहा था । अगर वह अपना हाथ गाल पर रख कर सर एक ओर झुका लेता तो उसकी शक्ल एक देहाती औरत की सी दिखाई देती ।

"तुम क्या चाहते हो ?" रास्कोलनिकोव से पूछा । भय से उसका शरीर सुन्न पड गया था ।

आगतुक खामोश रहा, सहसा उसने झुककर उ गलियो से फर्श को छू लिया ।

"यह तुम क्या कर रहे हो ?" रास्कोलनिकोव चिल्लाया ।

"मैने पाप किया है," आगतुक ने कहा ।

"कैसे ?"

"बुरे विचारो से ।"

दोनो जने एक दूसरे का मु ह ताकने लगे ।

"मै चिढ गया था । जब तुमने उस रोज़ आकर चौकीदारो से खून के धब्बो के बारे मे पूछा था और पुलिस थाने चलने के लिये कहा था, तो उन्होने तुम्हे शराबी समझ कर छोड दिया था, इस पर मारे खीज के मेरी नीद भी हराम हो गई थी । कल मैने यहाँ आकर तुम्हारे बारे मे पूछा था ।···

"कल यहाँ कौन आया था ?" रास्कोलनिकोव को कल की बात याद हो आई ।

"मै आया था, मैनें तुम्हे नुकसान पहुँचाया ।"

"तुम सामने वाले घर से आये थे ?"

"मैं फाटक पर खडा था तुम्हे याद नही है ? हम पिछले कई बरसो से जानवरो की खालो का व्यापार करते आ रहे है • सबसे ज्यादा खीज मुझे इस बात पर आई थी • "

कल वाला सारा दृष्य रास्कोलनिकोव की आँखो के आगे आ गया। उसे याद आया कि फाटक के आगे बहुत से लोग जमा थे जिनमे एक औरत भी थी, उसे याद आया कि एक आदमी ने कहा था, "इसे सीधे पुलिस थाने ले जाओ" उसे उस आदमी की शक्ल तो याद नही रही थी, लेकिन इतना जरूर याद था कि उसने मुडकर कुछ जवाब जरूर दिया था। ••

तो कल के वहम का यही कारण था। इसी क्षुद्र घटना की वजह से उसने अपने लिये इतनी बडी आफत खडी कर ली थी। इस आदमी को खून के धब्बो और फ्लैट वाली घटना के अलावा कुछ मालूम नही था। पोरफेरी के पास भी सिवा मनोविज्ञान के जो 'दोधारी तलवार है' कोई सबूत नही ••इसलिये अगर और तथ्य सामने न आये तो •• पुलिस उसका क्या बिगाड सकेगी ? वे अगर उसे गिरफ्तार भी कर ले तो सजा कैसे दे सकेंगे ? पोरफेरी को भी फ्लैट वाली घटना अभी मालूम हुई है।

"तुमने ही पोरफेरी को बताया था कि मै••उस फ्लैट मे गया था ?" रास्कोलनिकोव ने पूछा।

"कौन पोरफेरी ?"

"खुफिया विभाग का इन्चार्ज"

"हाँ—चौकीदार वहाँ नही गये • मै गया था।"

"आज गये थे ?"

"हाँ तुम्हारे आने के दो मिनिट पहले मै वहा पहुँच गया था—मैने तुम लोगो की सारी बाते सुनी • पोरफेरी ने तुम्हे खूब तग किया था।"

"कब ? कहा देखा था ?"

"मै पोरफेरी के पास वाले कमरे मे बैठा था।"

"अच्छा तो तुम्ही वह अजूबा थे। लेकिन यह कैसे सभव है ?"

"जब चौकीदारो ने कहा कि अब देर हो गई है पुलिस नाराज होगी, तो मैने पूछताछ करनी शुरू कर दी। मेरी नीद जो हराम हो गई थी। मैने पुलिस अफसर का पता किया। आज मै वहा गया था। वह वहा नही था। दूसरी बार गया तो उसे फुर्सत नही थी। तीसरी बार जाने पर मुझे भीतर बुलाया गया। मैने जाकर सारी आखो देखी घटना सुना दी। उसने कमरे मे चक्कर काटने शुरू कर दिये और अपनी छाती नोच कर कहा, "तुम बदमाशो ने उसे गिरफ्तार क्यो नही करवाया ?" इसके बाद वह भागा भागा बाहर गया और एक आदमी को कोने मे ले जाकर घुसुर फुसुर करने लगा। लौट कर उसने फिर मुझ मे सवाल पूछे और मुझे डाँटा। मैने उसे सारी घटना फिर सुनाई और बताया कि कल तुम्हे मेरे सामने जवाब तक देने की हिम्मत नही पडी और तुम मुझे नही पहचानते। यह सुनकर उसने फिर कमरे मे चक्कर काटने और अपनी छाती नोचना शुरू कर दिया। जब तुम आये तो उसने कहा "जाकर पास वाले कमरे मे बैठो, हिलना-डुलना बिल्कुल नही।" उसने मुझे कुर्सी पर बिठा कर बाहर से ताला लगा दिया और कहा "शायद तुम्हे बुलाने की जरूरत पडे।" जब निकोलाई को लाया गया तो उसने मुझे बाहर निकाल दिया। "मै तुम्हे फिर बुलाऊँगा और सवाल पूछूँगा।"

"क्या उसने तुम्हारी मौजूदगी मे निकोलाई से सवाल पूछे थे ?

"नही, निकोलाई के आते ही उसने मुझे बाहर निकाल दिया था।'

आगतुक ने फिर झुककर फर्श को छुआ और कहा, "मेरे पापपूर्ण विचारो को माफ कर दो।"

"ईश्वर तुम्हे माफ करे !" रास्कोलनिकोव ने उत्तर दिया।

आगतुक ने फिर अभिवादन किया और कमरे से चला गया।

"अब दो धारी तलवार दोनो तरफ काट रही है।" रास्कोल-निकोव बडबडाया और आश्वस्त होकर घर से बाहर निकला।

जीने पर उतरते वक्त उसने एक कुटिल मुस्कान के साथ कहा, "अब जूझना होगा।" उसे अपनी भीरुता पर मन ही मन ग्लानि हुई।

पांचवां भाग

१

दूनिया और उसकी माँ से मिलने के बाद लूजिन का दिमाग सजीदा हो गया था। कल जो बात उसे अद्भुत और अविश्वसनीय मालूम होती थी, अब वह उसे असलियत समझने पर मजबूर हो गया था। रात भर अपमान की व्यथा के कारण उसे नीद नही आई थी। सुबह बिस्तर पर से उठते ही उसने शीशे मे अपनी शक्ल देखी। उसे डर था कि कही उसे पीलिया न हो जाये, लेकिन शीशे में अपने गोरे, मोटे-ताज़े चेहरे को देखकर उसकी चिताये दूर हो गई और उसे विश्वास हो गया कि वह दूनिया से भी बेहतर लडकी पा सकता है। लेकिन जब उसे अपनी मौजूदा स्थिति का ख्याल आया तो उसने जोर से फर्श पर थूक दिया, आन्द्री सेम्योनोविच लेब्जियात्नीकोव व्यग्यपूर्ण ढग से मुस्कराया। यह देखकर लूजिन ने अपने दोस्त के खिलाफ एक और शिकायत मन मे दर्ज कर ली। पिछले कई दिनो से वह अपने दोस्त से चिढा हुआ था। उसे अफसोस हुआ कि उसने कल वाली घटना आन्द्री सेम्योनोविच को क्यो बताई। यह उसकी भारी गलती थी।

इसके अलावा सुबह के वक्त बहुत-सी अप्रिय बाते एक साथ हुई। उसके मुकद्दमे मे भी एक अडचन पड गई। लूजिन ने अपनी शादी के लिये एक फ्लैट की सजावट का आर्डर दिया था। फ्लैट के मालिक ने जो एक धनी जर्मन व्यापारी था, जमानत की रकम लौटाने से इन्कार कर दिया, हालाकि उसे बदले मे सजा सजाया फ्लैट मिल रहा था। इसी तरह फर्नीचर वालो ने भी पेशगी किश्त नही लौटाई, हालाकि फर्नीचर अभी दुकान मे ही रखा था।

लूजिन ने दाँत पीस कर कहा, "क्या मुझे सिर्फ फर्नीचर की खातिर शादी करनी पडेगी ?" सहसा दूनिया की स्मृति उसके मन को कचोटने लगी। और उसके मन मे आशा की एक किरन फूटी, "क्या सारा मामला एकदम खत्म हो गया ? फिर से कोशिश करके नही देखना चाहिये।" अगर सिर्फ चाहने मात्र से ही लूजिन रास्कोल-निकोव को कत्ल कर सकता तो फौरन कर देता।

वह निराशभाव से लेब्जियात्नीकोव के कमरे मे लौट आया और सोचने लगा, "मेरी गलती थी, जो मैने उन लोगो को पैसे नही दिये। मैने यहूदियो की तरह कजूसी क्यो दिखाई ? ऐसी बचत से क्या फायदा। मैने जानबूझ कर उन्हे पैसो से वचित रखा, ताकि वे मुझ पर आश्रित रहे। लेकिन उन्होने क्या किया। छि अगर मै तोहफो, ज़ेवरो और कपडो पर पन्द्रह सौ रूबल खर्च कर देता तो मेरी यह स्थिति न होती। फिर वे इतनी आसानी से मुझे धता न बता सकती। वे लोग इस तरह के है कि रिश्ता तोडने से पहले सारी रकम और तोहफे लौटा देते। ऐसा करने मे उनकी अन्तर्रात्मा उन्हे कितना कचोटती ? आप उस आदमी को भला कैसे ठुकरा सकते है जिसने आपके प्रति सहृदयता दिखाई हो !·· हूँ ! मैने बहुत बडी गलती की है।"

लूजिन ने दात पीस कर फिर अपने को मूर्ख कहा—लेकिन ऊँची आवाज मे नही।

वह जब घर लौटा तो पहले से दुगुना चिढा हुआ था। रास्ते मे कैंटेरीना इवानोव्ना की दावत की ओर उसका ध्यान आकर्षित हुआ। उसे परसो ही इसकी सूचना मिल गई थी। उसका ख्याल था कि उसे भी बुलाया गया है। कैटेरीना इवानोव्ना कब्रिस्तान गई हुई थी। मैडम लिपवेरोल मेज सजा रही थी। उसने लूजिन को बताया कि दावत मे बहुत से लोग आ रहे है। यहाँ तक कि लेब्जियात्नीकोव को भी, जिससे पहले कैटेरीना इवानोव्ना का झगडा हो चुका था, विशेष रूप से निमत्रित किया गया है, क्योकि वह किरायेदारो मे सबसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति है। अमेलिया इवानोव्ना भी नये काले सिल्क के कपडे पहनकर आ रही है। यह सुनकर लूजिन गहरी सोच मे पड गया। उसे मालूम हुआ था कि रास्कोलनिकोव भी दावत मे शरीक होगा।

आद्री सेम्योनोविच सुबह के वक्त घर मे ही था। उसके प्रति लूजिन का व्यवहार विचित्र था। लूज़िन जिस दिन से उसके साथ आकर ठहरा था, उसी दिन से उसे आद्री सेम्योनोविच से चिढ हो गई थी। मन ही मन वह उससे डरता भी था। वह सिर्फ पैसे बचाने की खातिर आद्री सेम्योनोविच के घर नही ठहरा था। उसने सुना था कि आद्री प्रगतिशील युवक समाज मे बढ-चढ कर हिस्सा ले रहा है। लूजिन उन लोगो से बहुत प्रभावित होता था जो सारे समाज को हिकारत की नजरो से देखते है और सबकी पोल खोलते है। आद्री और उसके साथियो के विचारो का वह रत्तीभर अनुमान नही लगा सका था। लेकिन उसने सुना था कि पीटर्सबर्ग मे निहिलिस्टो का एक वर्ग है—अन्य साधारण लोगो की तरह वह भी इन शब्दो के महत्व को बढाचढा कर देखता था। पिछले कई बरसो से उसे डर था कि कही उसकी पोल न खुल जाये, इसीलिये वह अपने कारोबार को पीटर्सबर्ग मे लाने से डरता था, जिस तरह बच्चे आतकित हो जाते है। कुछ बरस पहले जब उसने अपना कारोबार शुरू किया था, प्रान्त के दो मशहूर

आदमियो की कलई खोली गई थी—वे दोनो लूजिन के सरक्षक थे और उन्हे बडी मुसीबत और बदनामी झेलनी पडी थी । इसीलिये लूजिन ने पीटर्सबर्ग मे आते ही आत्मरक्षा के लिये "देश के युवक-वर्ग" की हमदर्दी पाने की कोशिशे शुरू कर दी थी । इस काम के लिये उसने आद्री सेम्योनोविच को चुना था । रास्कोलनिकोव के यहाँ जाने से पहले उसने कुछ प्रचलित मुहावरे रट लिये थे । जल्द ही उसे पता चल गया कि आद्री सेम्योनोविच निरा भोदू है । लेकिन अगर लूज़िन को मालूम हो जाता कि सारे प्रगतिशील लोग आद्री की ही तरह भोदू है तब भी उसकी घबराहट बनी रहती । उसे आद्री के सिद्धान्तो, विचारो और तरीको मे रत्तीभर दिलचस्पी नही थी—वह तो सिर्फ यह जानना चाहता था कि पीटर्सबर्ग मे क्या हो रहा है ? इन लोगो के हाथ मे कोई ताकत हे या नही । लूज़िन को उनसे डरना चाहिये या नही । क्या वे लोग उसकी कलई खोलेगे ? आखिर वे लोग किस चीज़ के खिलाफ है ? अगर सचमुच उनके हाथो मे ताकत है तो क्या वह उनसे दोस्ती कर सकता है ? उनके ज़रिये वह कोई फायदा उठा सकता है ? इसी तरह के सैंकडो सवाल उसके दिमाग मे चक्कर काट रहे थे ।

आद्री सेम्योनोविच छोटे कद का पीला आदमी था । उसे अपनी रेशमी मटन चाप मूछो पर बडा नाज था । पेशे से वह क्लर्क था और उसकी आँखे हमेशा मे कमजोर थी । वह बडा बातूनी था, और उसकी लबी-चौडी बाते उसके कद को देखते हुए हास्यास्पद मालूम होती थी । अमेलिया इवानोव्ना उसे सब किरायेदारो मे से अच्छा समझती थी क्योकि वह कभी शराब के नशे मे चूर नही रहता था और ठीक समय पर किराया चुका देता था । आद्री सेम्योनोविच सचमुच बुद्धू था । वह उन असख्य मूढ, अर्ध शिक्षित, दभी, अर्ध मानवो मे से था, जो 'प्रगति' 'तरुण वर्ग' या किसी भी सामयिक आदोलन मे शौकिया शामिल होकर उसकी मिट्टी पलीद कर देते है । वे जिस उद्देश्य मे दिलचस्पी लेते है ।

उसी को विकृत कर देते है । चाहे वे कितने ही उत्साही और स्वार्थहीन क्यो न हो ।

आन्द्री वैसे तो खुशमिजाज था, लेकिन उसे भी लूजिन से चिढ हो गई थी । वह भाप गया था कि लूजिन उसे क्षुद्र समझता है । एक बार उसने लूजिन को फूरियर के विचार और डार्विन का विकासवाद का सिद्धान्त समझाना चाहा था, लेकिन लूजिन ने उसका मजाक उडाया था । इन दिनो वह बदतमीज भी हो गया था । दरअसल लूजिन को आभास हो गया था कि आन्द्री बुद्धू होने के साथ झूठा भी है और अपने वर्ग मे भी उसका विशेष महत्व नही है, वह सिर्फ रटी रटायी बाते सुनाकर रौब गाठना चाहता है । उसके विचार असतुलित थे, क्योकि उसे शायद अपने उद्देश्य के प्रचार का ढग नही आता था । भला ऐसा आदमी किसी पर क्या कीचड उछालेगा ? पिछले दस दिनो से लूजिन ने आन्द्री की सारी अनर्गल बाते सुनी और सही थी । मिसाल के लिए उसने लूजिन से कहा था कि उसे भावी 'कम्यून' की स्थापना के लिये चदा देना चाहिये, अपने होने वाले बच्चो का नामकरण नही करना चाहिये और शादी के एक महीने बाद ही अगर दुनिया किसी और से प्रेम करने लगे तो लूजिन को आपत्ति नही करनी चाहिये । लूजिन ने चुपचाप यह बाते सुन ली थी ।

लूजिन ने आज सुबह पाँच प्रतिशत बौन्ड्स वसूल किए थे और वह मेज पर रखी नोटो की गड्डियाँ गिन रहा था । आन्द्री सेम्योनोविच, जिसने इतना पैसा कभी नही देखा था नोटो की ओर उदासीनतापूर्वक देखने लगा । लूजिन कभी विश्वास नही कर सकता था कि आन्द्री को रुपये पैसे से वितृष्णा है । आन्द्री लूजिन के विचारो को भाप गया और समझ गया कि लूजिन उसको नीचा दिखाने का मौका देख रहा है ताकि वह आन्द्री की गरीबी का मजाक उड़ा सके ।

आन्द्री ने अपने प्रिय विषय, नये 'कम्यून' की स्थापना की चर्चा

शुरू कर दी, लेकिन लूजिन ने बडी बेरुखी दिखाई और सक्षिप्त व्यग्य भरी टिप्पणियो के सिवा एक शब्द मुँह से न बोला। 'मानववादी' आद्री सेम्योनोविच ने सोचा कि लूजिन दूनिया मे हुए झगडे की वजह से चिडचिड़ा हो गया है और शायद इसी विषय पर चर्चा करना चाहता है। आद्री ने अपने दोस्त को सान्त्वना देने के लिये, और उसके बौद्धिक 'विकास के लिये' प्रगतिशील दृष्टिकोण से एक भाषण भी तैयार कर रखा था।

"उस विधवा के यहाँ किसी दावत की तैयारी हो रही है न।" लूजिन ने आद्री से पूछा।

"तुम्हे नही मालूम। कल रात ही तो मै तुम्हे इन रीति रिवाजो पर अपने विचार बता रहा था। मैने सुना है कि तुम्हे भी निमत्रण मिला है। कल तुम विधवा से बाते तो कर रहे थे "

"मुझे यह उम्मीद नही थी कि वह मूर्ख औरत मूर्ख रास्कोलनिकोव से मिला पैसा दावत मे बर्बाद कर देगी। मै तो आज दावत की तैयारियाँ देखकर दग रह गया। शराबें मगवाई गई है—बहुत से लोग आयेगे। बस हद हो गई!" लूजिन ने किसी विशेष प्रयोजन से यह प्रसग छेडा था "क्या कहते हो, मुझे भी बुलाया है? कब निमत्रण आया था? मुझे तो याद नही, मै वहा क्यो जाऊँ? मैने तो कल सिर्फ़ चलते-चलते विधवा को तसल्ली दी थी कि शायद सरकारी क्लर्क की पत्नी होने के कारण उसे सरकार से एक साल की तनख्वाह मिल सकती है। उसने इसी कारण से मुझे दावत मे बुलाया है न! हीं-ही-ही।"

"मै भी दावत मे नही जाना चाहता" आद्री ने कहा।

"उस बेचारी को पीटने के बाद तुम भला वहाँ किस मुँह से जाओगे?"

"पीटने के बाद? • मैने किसे पीटा?" लेब्जियात्नीकोव का मुँह

क्रोध से लाल हो गया ।

"तुमने पिछले महीने कैटेरीना इवानोव्ना को पीटा था, यह मुझे कल पता चला • अच्छा तो इसी बूते पर तुम औरतो की आजादी और प्रगतिशीलता का दावा करते हो ! ही-ही !" लूजिन का मन हल्का हो गया और वह फिर नोट गिनने लगा ।

"यह सब बकवास है ! तुमने गलत बात सुनी है । वे लोग झूठमूठ मुझे बदनाम कर रहे है । पहले उसने अपने नाखूनो से मेरा चेहरा नोचा, मेरी मू छो के बाल उखाड दिये ••मैने जवाब मे उसे धक्का दिया । आत्मरक्षा करने का सबको अधिकार है मै किसी को अपने ऊपर बल प्रयोग नही करने दू गा, यह सरासर तानाशाही है—मैने सिर्फ उसे पीछे की तरफ धकेला था ।"

"ही-ही-ही" लूजिन कुटिल हसी हसने लगा ।

"तुम्हारा मिजाज आज चिडचिडा हो गया है इसीलिये तुम ऐसी बाते कह रहे हो, लेकिन इस घटना का औरतो की आजादी के सवाल से कोई सबध नही । मै सोचा करता था कि अगर औरते सब बातो मे पुरुषो के बराबर है तो शारीरिक बल के प्रयोग का भी उन्हे समान अवसर मिलना चाहिये, लेकिन बाद मे मै इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह सवाल उठाना बेकार है, क्योकि भावी समाज मे लडाई झगडा नही होगा इसके अलावा झगडने मे बराबरी की माग करना विचित्र होगा । मै इतना मूर्ख नही हूँ ••भविष्य मे लडाई-झगडा चाहे न हो, आजकल तो होता ही है गोली मारो इस किस्से को । तुम्हारे साथ रहकर मेरा दिमाग गडबडा जाता है । मै असूल की खातिर वहाँ नही जा रहा । मै ऐसी सामाजिक कुरीतियो से नफ़रत करता हूँ । हाँ—ऐसे मौको पर जाकर उन कुरीतियो का मजाक उडाना दूसरी बात है • अफसोस है कि इस मौके पर कोई पादरी नही होगा, अगर होता तो मै ज़रूर दावत मे शामिल होता ।"

'तब तुम सिर्फ अपने मेजबानो का अपमान करने वहाँ जाते ? जिस थाली मे खाओगे उसी मे छेद भी करोगे ?"

"नही मै वहाँ प्रोटेस्ट करने के लिये जाता और ज्ञान के प्रचार मे सहायक सिद्ध होता। हर आदमी का फर्ज है कि वह कठोर से कठोर शब्दो मे ज्ञान का प्रचार करे। हो सकता हे इस विचार के बीज से किसी विशाल आँदोलन का जन्म हो। इसमे उनकी बेइज्जती कैसे होगी ? शुरू में उन्हे बुरा जरूर लगेगा, लेकिन बाद मे वे कहेगे कि मैंने उनकी बहुत बडी सेवा की है। जानते हो तेरेबेवा (जो अब हमारे सगठन मे आ गई है) का कितना विरोध हुआ था ! उसने अपने परिवार को छोडछाड कर ज्ञान के प्रचार मे अपना जीवन समर्पित कर दिया। उसने अपने माँ बाप को लिखा कि वह दकियानूसी जिन्दगी बसर नही करेगी और वह स्वाधीन विवाह करने जा रही है। लोगो ने कहा कि उसे अपने माँ बाप को इतने कठोर शब्द नही लिखने चाहिये थे। यही बात कोमल ढग से भी लिखी जा सकती थी। मै कहता हूँ यह बकवास है। हमे कोमलता नही, धृष्टता से काम लेना चाहिये। वेरेन्स को देखो। शादी के सात साल बाद वह अपने दो बच्चो को छोड कर चली गयी और उसने अपने पति को खत लिखा, "मै जान गई हूँ कि तुम्हारे साथ रहकर कभी सुखी नही हो सकती। तुमने मुझे कभी नही बताया कि समाज मे आजाद ख्याल लोगो का दल भी है—मैं तुम्हे कभी माफ नही कर सकती—यह बात हाल ही मे मुझे एक आजाद ख्यालो वाले मित्र से मालूम हुई जिसके साथ मैं अपना रिश्ता जोड रही हू। मै तुम्हे धोखे मे नही रखना चाहती इसीलिये साफ बात कह रही हूँ। तुम जो उचित समझो करो। मैं लौट कर नही आऊँगी—उसका समय बीत गया। आशा है तुम सुखी रहोगे।" इस तरह खत लिखे जाने चाहिये !

"क्या यही तेरेबीवा है जिसके बारे मे तुमने बताया था यह उसकी

तीसरी आजाद शादी है !"

"नही, यह तो दूसरी शादी है, मान लो अगर चौथी या पद्रहवी भी होती तो क्या हर्ज था ! मुझे अब अपने माता-पिता के मरने पर दुख होता है। अगर वे जिन्दा होते तो मै उनके होश ठिकाने लगाता। मै उन्हे दिखा देता ! · वे हैरान रह जाते ! अफसोस तो यही है कि उनमे से कोई जिन्दा नही है !"

"उन्हे हैरानी होती ! ही-ही · खैर जैसा मन मे आये करो। लेकिन यह बताओ तुम विधवा की उस नाजुक सी लडकी को जानते हो ? उसके बारे मे लोग जो कहते है क्या वह सच है ?"

"उससे क्या हुआ, मेरी निजी राय हे कि यह औरतो के लिये स्वाभाविक है। मेरा मतलब मौजूदा समाज से नही हे, क्योकि यहाँ यह स्थिति मजबूरी से पैदा होती है, लेकिन भावी ममाज मे यह स्वाभाविक होगी क्योकि उसमे स्वेच्छा रहेगी। सोनिया ने जो किया, ठीक किया। वह मुसीबत मे थी, उसे अपनी पू जी इस्तेमाल करने का हक था। भावी समाज मे पू जी की जरूरत नही रहेगी लेकिन इसका सामाजिक महत्व बढ जायेगा। मेरी निजी राय मे सोफिया सेम्योनोव्ना ने सामाजिक सगठन के विरूद्ध विद्रोह किया है, इसलिये मेरे मन मे उसके प्रति श्रद्धा है उसे देखकर मेरा मन उल्लास से भर जाता है।

"मैने सुना है कि तुम्ही ने उसे इस मकान से निकलवाया है !"

लेब्जियात्नीकोव क्रोध से आग बबूला हो गया।

"यह लॉछन झूठा है ! यह कटेरीना इवानोव्ना के दिमाग की खुराफात है। सोनिया के साथ मेरा कोई ताल्लुक नही था, मै तो सिर्फ अनासक्त भाव से उसे विद्रोह करने के लिये उत्साहित कर रहा था मै चाहता था वह विद्रोह करे ! वैसे भी किसी हालत मे वह यहाँ नही रह सकती थी।"

"तुमने उसे अपने सगठन मे शामिल होने को कहा है ?"

"तुम भी अजब मजाक करते हो ! तुम नही जानते हमारे सगठन मे ऐसा पार्ट नही है । सगठन की स्थापना ही इसीलिये हुई है ताकि ऐसे पार्ट समाज से मिट जाये । जो बाते समाज मे निन्दनीय और मूर्खतापूर्ण समझी जाती है, हमारे सगठन मे आकर वे स्वाभाविक बन जाती है । यह सब तो वातावरण पर निर्भर करता है । वातावरण ही सब कुछ है, इन्सान की कुछ हस्ती नही । सोनिया के साथ आज भी मेरे अच्छे सबध है, जिससे साबित हो जाता है कि वह मुझे अपना दुश्मन नही समझती । मै आजकल उसे सगठन मे लाने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन उसका दर्जा बिल्कुल अलग होगा । तुम्हे हसी क्यो आ रही है ! हम विस्तृत आधार पर अपना एक अलग सगठन बनाने की कोशिश कर रहे है, क्योकि हमारे विचार अधिक प्रगतिशील है । हम बहुत सी चीजो को रद्दी समझते है । मै अभी तो सोनिया को तैयार कर रहा हूँ—उसका चरित्र बडा ही सुन्दर है ।"

"तुम उसके सुन्दर चरित्र का फायदा उठा रहे हो । क्यो ? ही-ही !"

"नही नही —स्थिति बिल्कुल उलटी है !"

"उल्टी है ! ही-ही—खूब कहा !"

"मै भला क्यो सच्ची बात छिपाऊँ ? दर असल मुझे खुद हैरानी होती है कि वह मेरे सामने इतनी भीरु, सकोचशील और आधुनिक कैसे बन जाती है!"

"और तुम उसे तैयार कर रहे हो ···ही-ही- उसे समझाना चाहते हो कि उसका सकोच निरा ढोग है ।"

"बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नही, तुमने मेरे शब्दो का कितना बेहूदा मतलब लगाया है-—माफ करना, तुम अभी तक निरे गवार ही हो । हम लोग औरतो को आजाद करवाना चाहते है, लेकिन तुम्हारे दिमाग मे एक ही बात चक्कर काट रही है । सतीत्व और पवित्रता

के सवाल को छोड दो, वे व्यर्थ की धारणाये मात्र है। लेकिन मै उसके सकोच, शील की कद्र करता हूँ, क्योकि अगर वह मुझसे कहती कि वह मुझे पसन्द करती है तो मै अपने को बडा खुशकिस्मत सम-झता, क्योकि मुझे वह लडकी बहुत पसन्द है। लेकिन मुझसे अधिक शिष्टता किसी ने उसके प्रति नही दिखाई, मुझे उसके सम्मान का पूरा ख्याल है। मै उम्मीद लगाये बैठा हू, बस।'

"तुम उसे कोई तोहफा क्यो नही देते, मै शर्त लगाकर कहता हूँ कि तुम्हे कभी इस बात का ख्याल तक नही आया होगा।"

"तुम नही समझते, मै तुम्हे पहले भी बता चुका हू। उसकी आर्थिक स्थिति को देखकर तुम उससे नफरत करते हो, तुम किसी इन्सान को इन्सान नही समझते। तुम नही जानते वह कितनी सच्चरित्र लडकी है। मुझे अफसोस है इन दिनो उसने किताबे पढना बन्द कर दिया है। पहले मै उसे पढने के लिये बहुत सी किताबे दिया करता था। उसमे प्रोटेस्ट करने की जबरदस्त शक्ति है लेकिन मुझे अफसोस है कि उसमे इतना आत्मविश्वास और स्वतन्त्रता नही आ पाई कि वह कई दकियानूसी विचारो के घेरे को तोड सके। लेकिन कई समस्याओ को वह अच्छी तरह से समझती है, मिसाल के लिए हाथो को चूमना। वह जानती है कि मर्दो को औरतो के हाथ नही चूमने चाहिये, क्योकि यह असमानता का प्रतीक है। एक बार हम दोनो मे इस विषय पर बहस छिड गई थी, और मैने उसे यह बात समझाई थी। मैने उसे फ्रास के मजदूरो की सस्थाओ के बारे मे भी बताया और वह बडे गौर से सुनती रही। आजकल मै उसे भावी समाज मे कमरे मे प्रवेश करने के सवाल पर समझा रहा हू।"

"उसका क्या मतलब है जनाब?"

"कुछ दिन हुए यह बहस छिडी थी क्या सगठन के किसी सदस्य को दूसरे सदस्य के कमरे मे किसी समय भी जाने का

अधिकार है ? ·· · ·चाहे वह सदस्य मर्द हो या औरत   हम इस फैसले पर पहुँचे थे कि यह अधिकार होना चाहिए ।"

"मानलो कोई सदस्य किसी ऐसे-वैसे मौके पर पहुँचे ही-ही ।"

लेबिजयात्नीकोव गुस्से से आग बबूला हो गया, उसने चिढ़कर कहा, "तुम हमेशा ऊटपटाग बाते सोचते हो, छि मैने बेकार ही निजी एकात की चर्चा छेड़ दी ! तुम्हारे जैसे लोग बिना समझे ही उसका मजाक उडाने लगते है। लोगो को एकात पर कितना अहकार होता है ? छि मेरी हमेशा से यह राय रही है कि किसी नौसिखिया के आगे इस सवाल पर बहस नही करनी चाहिए, जब तक उसे सगठन मे पूर्ण आस्था नही हो जाती। मेहरबानी करके यह बताइये कि आपको नाबदान मे भी कौनसी आपत्तिजनक बात नजर आती है ? मै तो जिस नाबदान को कहिये, साफ कर दूँ, यह आत्मत्याग नही बल्कि उपयोगी और सम्मानपूर्ण काम है, रफेयल* और पुश्किन से भी अधिक उपयोगी।"

"और अधिक सम्मानपूर्ण भी है, ही-ही-ही !"

"अधिक सम्मानपूर्ण से क्या मतलब ? मै मानव कार्यो को 'सम्मानपूर्ण' और 'नेक' श्रेणियो मे नही बाँटता। ये सब दकियानूसी बाते है। जो चीज़ मानवजाति के लिए उपयोगी है, सम्मानपूर्ण है। 'उपयोगी' इस शब्द को बस याद रखो ! तुम चाहे नाक-भौ सिकोडो, यही सच है।"

लूजिन ठहाका मारकर हँसा। वह नोटो की गड्डियाँ गिन चुका था और एक ओर रख रहा था, लेकिन कुछ नोट अभी भी मेज पर पड़े थे। नाबदान वाली बात पर उनमे पहले भी बहस हो चुकी थी। लूजिन को लेबिजयात्नीकोव को चिढाने मे बडा मजा आ रहा

---

*विख्यात चित्रकार

था। उधर लेब्ज़ियात्नीकोव भी खूब चिढ रहा था।

"कल की घटना ने तुम्हे इतना चिडचिडा बना दिया है।" लेब्जियात्नीकोव 'प्रोटेस्ट' और 'आजादी' की डीगे मारते हुये भी अभी तक अपनी आदत के मुताबिक लूजिन के प्रति आदरभाव प्रदर्शित करता था।

लूजिन ने बीच मे टोककर धृष्टता पूर्वक पूछा,

"मुझे यह बताओ · अगर सचमुच उस लडकी से तुम्हारी इतनी दोस्ती है, तो तुम कुछ देर के लिये उसे यहा बुला सकते हो? मेरा ख्याल है वे सब कब्रिस्तान से लौट आये है· उनके कदमो की आहट सुनाई दे रही है मै उस लडकी को देखना चाहता हूँ।"

"किस लिये?" लेब्जियात्नीकोव ने चकित स्वर मे पूछा।

"मै आज या कल यहाँ से जा रहा हूँ और उस लडकी से कुछ बाते करना चाहता हूँ· · तुम भी मौजूद रहना, वरना तुम न जाने कैसी कैसी कल्पनाएँ करते फिरोगे।"

"मै क्यो कल्पना करूँगा? तुम उससे मिलना चाहते हो तो मै उसे अभी यहाँ भेज देता हूँ। उसे बुलाना भी कोई मुश्किल काम है। निश्चिन्त रहो मै तुम्हारे रास्ते मे बाधा नही बनूँगा।"

पाच मिनिट बाद ही लेब्जियात्नीकोव सोनिया को लेकर आ गया। सोनिया सदा की तरह घबराई हुई थी और शरमा रही थी। बचपन से ही उसे अजनबियो से मिलने मे डर लगता था, विशेष रूप से अब तो · ·। लूजिन उससे 'शिष्ट और मैत्रीपूर्ण, ढग से मिला। लेकिन उसके व्यवहार मे एक अजब बेतकल्लुफी थी, क्योंकि उसका ख्याल था कि ऐसी 'दिलचस्प' और कमसीन लडकी से उसके जैसे सम्मानित व्यक्ति को बेतकल्लुफ होना उचित ही था। उसने सोनिया की 'घबराहट दूर करने के लिये' उसे अपने सामने बैठाया। सोनिया बारी बारी से लेब्ज़ियात्नीकोव, मेज पर पडे नोटो के पुलिन्दे और लूज़िन को

देख रही थी। लेब्जियात्नीकोव बाहर जाने लगा। लूजिन ने सोनिया से बैठे रहने का इशारा किया और लेब्जियात्नीकोव को रोक कर पूछा,

"क्या रास्कोलनिकोव आया हुआ है ?"

"रास्कोलनिकोव ? हा वह नीचे बैठा है, मैने उसे अभी आते देखा है। क्यो ?"

"मेरी तुमसे प्रार्थना है कि यही रहो—मुझे इस···लडकी के साथ अकेला छोडकर न जाओ। मै इससे कुछ शब्द कहना चाहता हूँ, मेरे शब्दो का न जाने क्या अर्थ लगाया जायेगा, यह ईश्वर ही जाने ! मै नही चाहता कि रास्कोलनिकोव उन बातो को दुहराये तुम समझ गये न !"

"मै समझता हूँ ! तुम ठीक कहते हो ! मेरी निजी राय है कि तुम्हे बिल्कुल चिता नही करनी चाहिये—अच्छा मै भी यही रहूँगा—मै खिडकी के पास खडा रहूँगा—तुम्हारी बातचीत मे कोई विघ्न नही आयेगा ··तुम ठीक सोचते हो।"

लूजिन आकर सोनिया के सामने सोफे पर रौब से बैठ गया और सोनिया को प्रभावित करने के लिये उसने शालीन मुद्रा बना ली, मानो कहना चाहता हो "श्रीमती जी देखना कोई गलती न कर बैठना !" सोनिया सकपका गई।

"सोफिया सेम्योनोवना, सबसे पहले मै तुम्हारी आदरणीय मा से माफी मागना चाहता हूँ। कैटेरीना इवानोव्ना तुम्हारी माँ की तरह है न !" उसके स्वर मे मैत्रीभाव था।

"हाँ वे बिल्कुल मेरी माँ की तरह है," सोनिया ने भीरु स्वर मे उत्तर दिया।

"तुम मेरी तरफ से उनसे माफी माँग लोगी ? मै दावत मे नही आ सकूँगा—उन्होने निमत्रण भेजकर मुझ पर कृपा की है। परि-

स्थितियाँ ही ऐसी है।"

"मै—उन्हे बता दूँगी" कह कर सोनिया कुर्सी छोड कर खडी हो गई।

लूजिन उसके भोलेपन और अशिष्टता पर मुस्करा दिया और बोला, "ठहरो, मेरी बात अभी पूरी नही हुई। तुम मुझे नही जानती सोफिया सेम्योनोवना, यह मत सोचना कि मैने तुम्हे अपने किसी काम के लिये बुलाया है।"

सोनिया जल्दी से बैठ गई। क्षण भर के लिये उसकी नजर भूरे और इन्द्रधनुष जैसे रगो के नोटो पर पडी, लेकिन उसने अपनी आँखे वहा से हटा ली, और वह लूजिन की तरफ देखने लगी। उसे पराये धन की तरफ देखने पर आत्मग्लानि हुई। वह लूजिन के सुनहरी फ्रेम वाले चश्मे और उसके बाएँ हाथ की उँगली मे पडी पीले नगीने वाली अँगूठी को देखने लगी। घबरा कर आखिर वह लूजिन का चेहरा ताकने लगी। कुछ देर रुक कर लूजिन ने कहा,

"कल अचानक रास्ते मे कैटेरीना इवानोव्ना से मुलाकात हो गई। मेरा ख्याल है कि उनकी हालत अजब है।"

"हा अजब हालत है··" सोनिया ने हामी भरी।

"या उन्हे बीमार कहना बेहतर होगा।"

"हाँ बीमार··कहना बेहतर होगा।"

"ठीक, इन्सानियत और हमदर्दी के नाते अगर मै उनकी कुछ सेवा कर सकू तो मुझे खुशी होगी। मेरा ख्याल है, इस गरीबी के सताये परिवार का सारा भार अब तुम्हारे ऊपर आ पडा है?"

"क्या कल आपने कैटेरीना इवानोव्ना से पेशन का ज़िक्र किया था? उन्होने मुझे बताया था कि आपने उन्हे पेन्शन दिलाने का वादा किया है। क्या यह सच है?"

"बिल्कुल नही। यह झूठ है! मैने तो सिर्फ कहा था कि

सम्भवत सरकारी नौकर की विधवा को पेन्शन मिल सकती है अगर उसकी पहुच हो तो लेकिन शायद आपके पिताजी ने नौकरी की मियाद पूरी नही की और मरने से पहले वे बेकार थे। मेरे ख्याल म पेन्शन मिलने की कोई उम्मीद नही, और सरकारी सहायता के लिये प्रार्थना करना बेकार होगा लेकिन कैटेरीना इवानोव्ना अभी से पेन्शन के सपने देखने लगी ही-ही—बडी कल्पनाशील है ''

"हाँ, क्योंकि उनका दिल साफ है और इसलिये वे हर बात पर विश्वास कर लेती है • वे ऐसी ही है आप उन्हे माफ कर दे।"

कह कर सोनिया उठ कर जाने के लिये तैय्यार हो गई।

"लेकिन तुमने अभी तक मेरी बात तो सुनी ही नही।"

"नही अभी नही सुनी," सोनिया बुदबुदाई।

"तो फिर बैठ जाओ।" सोनिया हतप्रभ हो गई, और उसे तीसरी बार बैठना पडा।

"कैटेरीना इवानोव्ना और उनके अभागे बच्चो की अगर मै कुछ सेवा कर सकू तो मुझे खुशी होगी। ऐसी परिस्थितियो मे मित्र या शुभचिन्तक चदा जमा करते है या लॉटरी का आयोजन करते है। मैं यही तुमसे कहना चाहता था। इस तरह का कोई प्रबन्ध किया जा सकता है।"

"हा हा ईश्वर आपको इस नेकी का बदला देगा।" सोनिया हकलाकर बोली।

"इसकी चर्चा हम बाद मे करेगे, शायद आज ही इस काम की शुरूआत हो जाये। तुम सात बजे मुझसे मिलने आना। मुझे उम्मीद है कि मिस्टर लेब्जियात्नीकोव भी हमारी मदद करेगे। लेकिन एक बात की चेतावनी मै तुम्हे पहले से ही देना चाहता हूँ सोफिया सेम्योनोवना, इसीलिये मैने तुम्हे यहाँ आने की तकलीफ दी है। मेरी राय मे कैटेरीना इवानोव्ना के हाथो मे पैसे रखना ठीक नही होगा।

आज की दावत ही उसका सबूत है, जब बेचारी के पास खाने के लिये रोटी का एक भी टुकडा नही है, पैरो मे पहनने के लिये जूते नही है, वे जमेका रम* यहा तक कि मदीरा* * और काफी लाई है। मैने खुद अपनी आखो से ये चीजे देखी है। कल वे लोग फिर दाने दाने को मुहताज हो जायेगे और सारा बोझ तुम्ही को सभालना पडेगा। इसलिये मेरा ख्याल है कि हम लोग जो चदा जमा करे, कैटेरीना इवानोव्ना को उसकी खबर नही मिलनी चाहिये—सिर्फ तुम्हे इस बात का पता रहना चाहिये। मै ठीक कह रहा हूँ न !"

"मै नही जानती सिर्फ आज ही, जिन्दगी मे एक बार वह पिता की स्मृति मे वैसे वे बडी अक्लमद है * लेकिन जैसा आप कहे मै वे लोग आपके कृतज्ञ रहेगे * ईश्वर आपको इस भलाई का बदला देगा• •अनाथ बच्चे "

सोनिया फूट फूट कर रोने लगी। "अच्छा इस बात को याद रखना। यह छोटी सी रकम मेरी तरफ से स्वीकार करो। मै चाहता हूँ मेरा नाम किसी के सामने जाहिर न हो अपने खर्चों मे से मै सिर्फ इतना ही बचा पाया हूँ "

लूजिन ने दस रूबल का नोट अच्छी तरह खोलकर सोनिया के आगे बढा दिया।

सोनियाँ का मुह लाल हो गया और वह नोट लेकर जाने लगी। लूजिन उसे दरवाजे तक छोडने आया। सोनिया घबराई हुई, कैटेरीना इवानोव्ना के पास लौट गई।

लेब्जियात्नीकोव इस बीच खिडकी के पास खडा रहा था, या कमरे मे चहलकदमी करता रहा था, ताकि बातचीत मे विघ्न न पडे। सोनिया के जाते ही उसने लूजिन से हाथ मिलाने के लिये आगे हाथ बढाया ।

*शराबे

"मैंने सब देखा और सुना। तुमने बहुत नेक काम किया और मनुष्यता दिखाई। तुम उसकी कृतज्ञता से बचना चाहते थे, यह भी मैने देखा। वैसे असूलन मै दान को अच्छा नही समझता क्योकि इससे पाप दूर होने की बजाय बढता है, लेकिन मुझे तुम्हारा दान देखकर खुशी हुई—सचमुच मुझे यह बात बहुत पसन्द आई।"

"यह सब बकवास है।" लूजिन ने गौर से लेब्जियात्नीकोव की तरफ देखा।

"नही यह बकवास नही है। जिस आदमी ने खुद निराशा देखी हो, जैसी कल तुम्हे हुई, वह अगर दूसरो से हमदर्दी दिखाता है तो वह आदमी श्रद्धा का पात्र है, माना वह दान देकर गलती करता है। सच प्योत्र पैत्रोविच मुझे तुमसे यह आशा नही थी, क्योकि तुम्हारे विचार तुम्हारे विचार ही तो तुम्हे आगे नही बढने देते। मिसाल के लिये कल तुम अपनी बदक़िस्मती पर कितने हताश हो गये थे।" सीधे-सादे लेब्जियात्नीकोव के मन मे फिर लूजिन के प्रति स्नेह उमड आया था "मेरे प्यारे नेक प्योत्र पैत्रोविच यह बताओ तुम्हे कानूनी शादी मे इतनी दिलचस्पी क्यो है ? शादी के कानूनी पहलू से क्यो चिपके हुए हो ? तुम बेशक मुझे पीटो, लेकिन मुझे खुशी है कि तुम्हारी शादी नही हो सकी। तुम आजाद हो और मानवता के लिये अब भी उपयोगी हो खो नही गये। देखा, मैने अपने दिल की बात साफ कह दी।"

"मै तुम लोगो की तरह मुक्त-विवाह करके बेवकूफ नही बनना चाहता, न ही दूसरे आदमी के बच्चे पालना चाहता हूँ, इसीलिये मै विधिवत् शादी करना चाहता हूँ।" लूजिन ने जवाब देने की खातिर जवाब दिया।

वह किसी सोच मे डूबा मालूम होता था।

लेब्जियात्नीकोव भडक उठा, जैसे शातिर घोडा नगाडे की आवाज

सुनकर भडकता है, "बच्चे ? तुमने अभी बच्चों का जिक्र किया ? माना कि यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न है, लेकिन इसका एक और समाधान भी है। कई लोग कतई बच्चे नही पैदा करना चाहते, क्योकि बच्चो का मतलब है परिवार-व्यवस्था। खैर बच्चो की समस्या पर बाद मे बहस करेगे। पहले आत्मसम्मान की बात लो। मै मानता हू कि यह मेरी कमजोरी है। भावी समाज के शब्दकोश मे पुश्किन जैसे इस खौफनाक सैनिक-शब्द के लिये कोई स्थान नही होगा। आखिर यह है क्या बला ? आजाद शादियो मे कोई धोकाधडी नही चलेगी। ऐसे शब्द कानूनी शादियो का नतीजा होते है इसमे अपमान की कौनसी बात है ? मान लो अगर मैने कभी कानूनी शादी जैसी बेहूदगी की भी तो मै अपनी बीबी से कहूंगा, "अभी तक मैने तुम्हे प्यार किया है, लेकिन अब मै तुम्हारी इज्जत करता हूँ क्योकि तुमने दिखा दिया है कि तुममे प्रोटेस्ट करने का साहस है।" तुम हँस रहे हो। इसलिये कि तुम अपने पूर्वाग्रहो से मुक्ति नही पा सकते। खैर गोली मारो इस किस्से को। मै अब जान गया हूँ कि कानूनी शादी मे कहा धोका मिलता है और उससे मन मे कितनी कटुता भर जाती है। पति-पत्नी दोनो के लिये वह स्थिति ग्लानिपूर्ण है। लेकिन आजाद शादियो मे धोखा खुलमखुल्ला होता है इसलिये ग्लानि का सवाल ही नही उठता। आपकी पत्नी यह दिखाने के लिये कि वह आपकी कितनी इज्जत करती है, एक नया प्रेमी ढूँढ लेगी, क्योकि उसे मालूम रहेगा कि आप उसके सुख मे बाधा नही डालेगे। गोली मारो इस किस्से को। कई बार मै सोचता हूँ कि अगर कभी मैने कानूनी या आजाद शादी की—बात तो एक ही है, तो मै अपनी पत्नी को जरूर एक प्रेमी भेट करूगा अगर वह अपने लियें प्रेमी न तलाश कर सकी। मै कहूँगा, "प्रिये, मै तुमसे प्रेम करता हूँ लेकिन उससे भी ज्यादा मै चाहता हूँ कि तुम मेरी इज्जत करो, देखो ! "मै ठीक कहता हूँ न।"

प्योत्र पेत्रोविच अन्यमनस्क भाव से हँसने लगा। वह किसी दूसरी सोच मे पडा हुआ था। वह बार बार उत्तेजना मे अपने दोनो हाथ मल रहा था। लेब्जियात्नीकोव ने बाद मे इस घटना पर काफी गौर किया।

२

कैटेरीना इवानोव्ना के असतुलित दिमाग मे उस बेतुकी दावत का विचार कैसे उठा, यह बताना मुश्किल है । रास्कोलनिकोव ने जो बीस रूबल मारमेलेदोव के जनाजे के लिये दिये थे, उनमे से दस रूबल दावत पर बर्बाद हो गये । शायद कैटेरीना इवानोव्ना मृतक की स्मृति 'विधिपूर्वक' मनाना चाहती थी । वह अपने सब पडौसियो को, विशेषकर अमेलिया इवानोवना को दिखा देना चाहती थी कि वह उनसे किसी प्रकार भी हीन नही है और किसी को मारमेलेदोव का मजाक उडाने का अधिकार नही है । शायद इसका कारण 'गरीबी का अहकार' था, जिसके कारण कई गरीब लोग सिर्फ यह दिखाने के लिये कि वे भी 'और लोगो की तरह है' और 'कोई उनका मजाक नही उडा सकता,' अपनी बची खुची पूँजी भी सामाजिक उत्सवो मे लुटा देते है । सभव है कि इस मौके पर कैटेरीना इवानोव्ना, जो ससार मे अकेली रह गई थी, उन 'बेहूदे किरायेदारो' को दिखा देना चाहती थी कि वह 'एक कर्नल के परिवार मे अभिजात ढग से पली है' उसे 'दावते देना आता है' और वह फर्श साफ करने और रातो मे बच्चो के चिथडे धोने के लिये ससार मे नही आई । गरीब से गरीव और भग्नहृदय लोगो मे भी यह अहकार होता

है जो ऐसी आकाक्षाओ का रूप धारण कर लेता है। कैटेरीना इवानोव्ना की इच्छाशक्ति को प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी नही कुचल सकती थी, वह खत्म भले ही हो जाती। इसीलिये सोनिया ने उसके बारे मे कहा था कि वे पागल नही है। पिछले साल से मुसीबतो के कारण उनका मन क्लान्त जरूर हो गया था। डाक्टरो का कहना है कि तपेदिक के अतिम दौर मे मरीज की विवेक शक्ति पर भी असर पडता है।

दावत मे न बढिया किस्म की शराबे थी, न मदीरा ही थी, लेकिन मामूली शराब जरूर थी। सस्ते किस्म की वोद्का, रम और लिसबन वाईन मगाई गई थी। पुराने रिवाज के मुताबिक चावल और शहद के अलावा मीठी टिकिया भी अमेलिया इवानोवना के रसोई घर मे तैय्यार की गई थी। दावत के बाद मेहमानो के लिये चाय और पच* के समावार खौल रहे थे। कैटेरीना इवानोव्ना एक पोलिश किरायेदार को साथ लेकर बाजार से सारी चीजे खरीद लाई थी। वह बेचारा खुद मुसीबतजदा था और कल से ही कैटेरीना इवानोव्ना के साथ मारा मारा घूम रहा था। जरा-जरा सी वात पर वह कैटेरीना इवानोवना के पास भागा आता था, और बार बार उसे 'देवीजी' कहकर पुकार रहा था। कैटेरीना जल्द ही इस 'सहृदय और उपयोगी' आदमी से तग आ गई। वह हर आदमी की अच्छाइयो-बुराइयो को बढा-चढा कर देखती थी। किसी की तारीफ के पुल बाँधती तो सुनने वाले घबरा जाते। हर नये परिचित मे उसे विश्वास हो जाता था और वह उसकी हर बात का समर्थन करती, फिर अचानक उसका सारा उत्साह खत्म हो जाता और वह उसी आदमी से नफरत करने लगती, और उसकी निंदा करते न थकती। वैसे वह हँसमुख, जिन्दादिल और शान्त स्वभाव की थी। लेकिन दुर्भाग्य और असफलताओ ने उसे इतना सवेदनशील

*शराब

कि वह कभी न कभी अमेलिया इवानोवना का दिमाग जरूर दुरुस्त करेगी। वह आखिर अपने को समझती क्या है ? कैटेरीना इवानोव्ना इस बात से भी चिढी बैठी थी, कि सिवा पोलिश किरायेदार के बहुत कम लोग कब्रिस्तान मे पहुँचे थे, जबकि दावत के समय गरीब से गरीब और क्षुद्र लोग भी मौजूद थे, जिनमे से कुछ नशे की हालत मे थे। बुजुर्ग और प्रतिष्ठित लोगो ने शायद मिलकर साजिश की थी, और वे दावत मे शामिल नही हुए थे। मिसाल के लिये लूजिन जो सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति था, वहाँ मौजूद नही था, जबकि कल शाम कटेरीना इवानोव्ना सारी दुनिया को, अर्थात सोनिया, पोलेका, अमेलिया इवानोवना और पोलिश किरायेदार को, बता चुकी थी कि लूजिन अत्यन्त सहृदय और धनवान व्यक्ति है। वह कैटेरीना इवानोव्ना के पहले पति का मित्र रह चुका है और उसके पिता के घर भी अक्सर आया जाया करता था। उसने कैटेरीना इवानोव्ना को सरकार से काफी पेन्शन दिलाने का वायदा किया है। स्मरण रहे कि कैटेरीना इवानोव्ना बिना किसी स्वार्थ के दूसरो के धन और हैसियत की प्रशसा करती थी, क्योकि ऐसा करने मे उसे आनद का अनुभव होता था। शायद लूजिन की 'देखादेखी' कम्बख्त लेब्जियात्नीकोव भी नही आया। "आखिर वह अपने को समझता क्या है ? वह लूजिन के कमरे मे रहता है इसी लिहाज के मारे उसे निमत्रण दिया गया था, वरना उसकी हैसियत ही क्या है ?"

इसके अलावा किरायेदारो मे से पडौसवाली 'बुढिया और उसकी बेटी जो अधेड होने पर भी क्वारी थी' नही आई थी। ये लोग सिर्फ पद्रह दिन से वहाँ आये थे और कई बार मकान मालकिन से कैटेरीना इवानोव्ना की शिकायत कर चुके थे। जब मारमेलेदोव नशे मे चूर होकर घर लौटता था तो सचमुच उनके यहाँ बडा शोरगुल मचता था। अमेलिया इवानोवना ने एक बार झगडे के दौरान मे कैटेरीना इवानोवना

को मकान खाली करने की धमकी दी थी और कहा था कि वह प्रतिष्ठित पडौसियो की शान्ति मे खलल डालती है और उनके 'पैरो की धूल के बराबर' भी नही है। एक बार अचानक उन मा-बेटी से जब कैटेरीना इवानोव्ना की मुलाकात हो गई तो उन्होने मुँह दूसरी तरफ फेर लिया था। कैटेरीना इवानोव्ना ने जान बूझकर उन्हे दावत मे बुलाया था ताकि उन्हे मालूम हो जाये, "कि उसके विचार उनसे कही ऊँचे है और वह किसी से द्वेष नही करती, और उसने कभी अच्छे दिन भी देखे है।" उसने सोचा था कि वह बातचीत मे अपने पिता के ओहदे का जिक्र करेगी, और सकेत से बता देगी कि उनका मुँह फेरना मूर्खता-पूर्ण था। मोटा कर्नल-मेजर (वह रिटायर हो चुका था और उसका ओहदा ही क्या था !) भी दावत मे नही आया था, शायद पिछले दो दिनो से वह 'आपे मे नही था।' दावत मे पोलिश किरायेदार और चेचक के दागो वाला और चिकनाहट भरे कोट वाला क्लर्क जिसके चेहरे से मनहूसियत बरसती थी और कपडो मे से गदी बदबू आती थी और एक बहरा और अधा आदमी आया था जो कभी डाकघर मे नौकरी करता था और जिसे अमेलिया इवानोवना के मकान मे रहते एक जमाना बीत गया था।

कमिसेरियट विभाग का एक क्लर्क भी आया था जो नशे मे चूर था, उसकी हँसी बेहूदी थी, और जरा सोचिये तो सही—उसने कपडो पर वास्कट नही पहनी थी। एक मेहमान तो कैटेरीना इवानोव्ना को अभिवादन किये बगैर ही सीधा मेज के आगे जाकर बैठ गया था। अन्त मे एक आदमी ऐसा आया जिसने सूट की बजाय सिर्फ ड्रेसिग गाऊन पहन रखा था। यह गुस्ताखी कैसे कोई बर्दाश्त कर सकता था। अमेलिया इवानोवना और पोलिश किरायेदार ने उसे वहाँ से निकाल दिया। पोलिश किरायेदार अपने साथ अपने दो दोस्तो को लाया था, जो किसी दूसरे मकान मे रहते थे और उन्हे कभी किसी ने देखा तक न था। इन

सब बातो से कैटेरीना इवानोव्ना चिढकर सोच रही थी, "आखिर ये सब तैयारियाँ किस लिये की गई थी ?" मेहमानो को असुविधा न हो इसलिये बच्चो तक को दूर बैठाकर एक सदूक के ऊपर उनका खाना परसा गया था, और उन्हे खिलाने-पिलाने और उनकी नाके साफ करने का जिम्मा पोलेका को दिया गया था, बिल्कुल भद्र लोगो के बच्चो की तरह।

कैटेरीना इवानोव्ना ने शालीनतापूर्वक अपने मेहमानो की तरफ देखा, और औपचारिक ढग से उन्हे अपनी जगह पर बैटने के लिए कहा। उसने अनुमान लगाया कि अमेलिया इवानोवना ही लोगो के न आने के लिए जिम्मेदार है। इसलिए वह अमेलिया इवानोवना से रूखा बर्ताव करती रही। अमेलिया इवानोवना इस बात से चिढ गई। इस अप्रिय शुरूआत के साथ सब लोग खाने के लिए बैठ गए।

जब सब लोग कब्रिस्तान से लौटे थे, उसी वक्त रास्कोलनिकोव भी आ गया था। कैटेरीना इवानोव्ना उसे देखकर बडी खुश हुई क्योकि वही 'एकमात्र शिक्षित मेहमान था और यह सर्वविदित था कि वह दो बरस मे ही युनिवर्सिटी का प्रोफेसर बनने वाला है।' उसने आते ही कैटेरीना इवानोव्ना से कब्रिस्तान न पहुँचने के लिये आदरपूर्वक क्षमा माँगी। कैटेरीना इवानोवना ने झपटकर उसे अपनी बाई तरफ बिठा लिया (अमेलिया इवानोवना उसकी दाई तरफ बैठी थी।) कैटेरीना इवानोव्ना चाहती थी कि खाने की चीजे सबको मिले, और वह बार-बार खाँस रही थी, क्योकि पिछले कई दिनो से उसकी हालत बिगड गई थी। उसने रास्कोलनिकोव के सामने अपने मन की सारी व्यथा रखी और खुले आम दावत की असफलता के लिये अमेलिया इवानोवना को दोषी ठहराया और फिर विक्षिप्त ढग से हँसकर मेहमानो का मजाक उडाने लगी।

"यह सब इसी औरत की मेहरबानी है, तुम मेरा मतलब समझ

गये न ।" कैटेरीना इवानोवना ने मकान मालकिन की ओर इशारा किया, "जरा देखो तो कैसे आँखे मटका रही है, जैसे इसे कुछ पता ही न हो। छि यह निरी उल्लू है। हा हा। (खो खो खो) और उसने यह टोपी किसलिये पहनी है ? (खो खो खो) तुमने देखा, यह हरेक को दिखाना चाहती है कि यहाँ आकर इसने मुझ पर भारी अहसान किया है। मैने इसे कहा था कि वह मेरे स्वर्गीय पति के परिचित लोगो को ही निमन्त्रित करे। लेकिन जरा देखो, तो इसने कैसी मूर्ख मडली जमा की है। कमीन कही के। जरा उस चेचक वाले मुँह की ओर तो देखो। और ये कमबख्त पोलिश लोग हा हा। (खो खो खो)। इन लोगो की मैने कभी सूरत भी नही देखी। मै पूछती हूँ ये लोग यहाँ किसलिये आये है ? वह देखो तीनो कतार मे बैठे है।" उसने एक को आवाज लगाई, "अरे! तुम्हे टिकियाँ मिली या नही। थोडो सी और ले लो। बीअर पीओ न। वोद्का नही पीओगे ? देखो वह उठकर सलाम कर रहा है, बेचारे भूखे होगे, कोई हर्ज नही, इन्हे खाने दो। खैर ये लोग शोरगुल नही मचा रहे, लेकिन मुझे डर है कि कही हमारी मकान मालकिन के चाँदी के चम्मच · अमेलिया इवानोवना! अगर तुम्हारे चाँदी के चम्मच किसी ने चुरा लिये तो मेरी कोई जिम्मेदारी नही होगी। मै तुम्हे पहले से ही सावधान कर रही हूँ। हा हा।" वह रास्कोलनिकोव की तरफ देखकर खुद अपने मजाक पर ठहाका मारकर हँस पडी। "देखा! उसकी समझ मे कुछ नही आया। जरा देखो तो कैसे मुँह बाए बैठी है। उल्लू है, निरी उल्लू। नये उल्लू ने नये फीते पहने है। हा हा हा।"

इसके बाद पाँच मिनिट तक उसे जोर से खाँसी का दौरा पडा—उसके माथे पर पसीना आ गया और रूमाल मे खून के दाग लग गये। उसने खामोशी से यह रूमाल रास्कोलनिकोव को दिखाया और फिर साँस आते ही उत्तेजना मे बाते करने लगी। उसके गालो पर लालिमा

दौड गई थी।

"जानते हो मैने उसे खास तौर पर उस भद्र महिला और उसकी लड़की को बुलाने की हिदायत की थी। तुम जानते हो न मै किसकी बात कह रही हूँ। इस काम मे बडे सलीके की जरूरत थी, लेकिन इसने सारा खेल बिगाड दिया। और वह मूर्ख गवार, अहमक औरत जिसे कोई पूछता भी नही, सिर्फ इसलिये कि वह एक मेजर की विधवा है और यहाँ पेन्शन के सिलसिले मे सरकारी दफ्तरो मे जूते चटखाने आई है, (सारी दुनियाँ जानती है कि वह पचास बरस की है फिर भी अपने चेहरे पर रग पोतती है) उसने यहाँ आना अपनी शान के खिलाफ समझा, यहाँ तक कि उसे इतनी तमीज भी नही कि निमत्रण का जवाब देती। मेरी समझ मे नही आता कि प्योत्र पैत्रोविच क्यो नही आये ? लेकिन सोनिया कहाँ गई ? लो वह आ गई। सोनिया, तुम कहा गई थी ? कैसी अजब बात है, अपने पिता के जनाजे के दिन भी तुम ठीक वक्त पर नही पहुँच सकती। रोदियोन् रोमनोविच, अपने पास सोनिया के लिए जगह कर दो, आओ सोनिया बैठो जो मन मे आये लाओ, ठडी ऐट्री और जैली जरूर लेना, अभी पैनकेक्स भी आती होगी। बच्चो को कुछ मिला या नही ? पोलेका ! तुम्हे सब चीजे मिल गई ? (खो खो खो) ठीक है, लिदा, अच्छी लडकी बनो। कोल्या, भले आदमी की तरह बैठो, अपने पैर मत हिलाओ डुलाओ। तुम क्या कह रही हो ?"

सोनिया ने ऊँची आवाज मे आदर पूर्वक लूजिन का सदेश सुना दिया उसने साथ मे यह भी कह दिया कि लूजिन ने कहा था कि वक्त मिलते ही वह फौरन आयेगे और कैटेरीना इवानोव्ना के साथ 'काम-काज की बाते' करेगे, और सोचेगे कि किस तरह उनकी मदद की जा सकती है आदि, आदि।

सोनिया जानती थी कि इससे कैटेरीना इवानोव्ना के अहकार को

तुष्टि मिलेगी। उसने रास्कोलनिकोव को अभिवादन किया और कौतूहल भरी नजरो से उसकी तरफ देखती हुई उसकी बगल मे आकर बैठ गई। वह आज खामोश और खोई खोई थी। वह कैटेरीना इवानोव्ना को गौर से देख रही थी और उसे खुश करने की कोशिश कर रही थी। माँ-बेटी दोनो को मातमी पोशाक नही नसीब हुई थी। सोनिया ने गहरे ब्राऊन रग की पोशाक पहनी थी और कैटेरीना इवानोव्ना के पास एक ही गहरे रग की सूती धारीदार पोशाक थी, जिसे वह इस वक्त भी पहने थी।

लूजिन का सदेश बहुत कामयाब रहा। सोनिया की बात शालीनता पूर्वक सुनकर कैटेरीना इवानोव्ना ने लूजिन का हाल चाल पूछा और ऊँची आवाज मे फुसफुसाई कि लूजिन जैसा प्रतिष्ठित व्यक्ति ऐसे 'विलक्षण जमघट' मे आकर परेशान होता, हालाकि वह कैटेरीना इवानोव्ना के पिता का पुराना दोस्त था और मारमेलेदोव परिवार का शुभचितक है।

"रोदियोन रोमनोविच तुमने इन परिस्थितियो मे भी मेरे निमत्रण को नही ठुकराया इसके लिये मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ। तुम्हे मेरे पति से विशेष स्नेह था इसीलिये तुमने अपना वादा पूरा किया है।"

इसके बाद कैटेरीना इवानोव्ना ने फिर गर्वभरी दृष्टि से अपने अतिथियो को देखा और बहरे आदमी को लक्ष्य कर के कहा, "इन्हे और गोश्त दो, क्या इन्हे शराब मिली है?" बूढा बहुत देर तक कुछ समझ ही नही सका, उसके साथ बैठे लोग उसे हिलाकर अपना मनोरजन कर रहे थे। बूढे को अवाक् देखकर लोगो को और भी जोर की हँसी आ गई।

कैटेरीना इवानोव्ना कह रही थी, "कितना निकम्मा आदमी है। देखा! इसे लोग यहा क्यो लाये? प्योत्र पैत्रोविच मे मुझे पूरा भरोसा है...वह उन लोगो की तरह नही है," कठोर दृष्टि से उसने अमेलिया

इवानोव्ना की तरफ देखा, "वह तुम्हारे सजे हुए गलीज कीडो की तरह नही है, जिन्हे मेरे पिता बावर्ची भी न रखते, और मेरे स्वर्गीय पति उन्हे खाने पर बुलाकर उन पर अहसान करते।"

"हा वे पीने के बडे शौकीन थे! खूब शराब पीते थे!" कमिसेरियट के क्लर्क ने वोद्का का बारहवा गिलास खाली करते हुए कहा।

कैटेरीना इवानोव्ना फौरन उस पर बरस पडी, "मेरे पति मे यह कमजोरी थी सब लोग इस बात को जानते है। लेकिन वे सहृदय थे और उन्हे अपने परिवार से गहरा प्रेम था। दुर्भाग्य से वे अपनी सहृदयता के कारण सब तरह के बदनाम लोगो पर भी विश्वास कर लेते थे, और उन लोगो के साथ बैठ कर शराब पीते थे जो उनके जूते के तले के बराबर भी नही थे। रोदियोन रोमनोविच तुम्हे विश्वास नही होगा कि दुर्घटना के समय लोगो को उनकी जेब मे एक चीनी का मुर्गा मिला था—उस समय वे नशे मे चूर थे, लेकिन उन्हे बच्चो का पूरा ध्यान था।"

"क्या कहा? खिलौना? मुर्गा?" कमिसेरियट का क्लर्क चिल्लाया।

कैटेरीना इवानोव्ना ने कोई उत्तर नही दिया। वह एक गहरी सास लेकर किसी सोच मे डूब गई।

कुछ देर बाद वह रास्कोलनिकोव से बोली, "शायद तुम भी सब लोगो की तरह समझते हो कि मै अपने पति से सख्ती करती थी। उनका दिल बडा कोमल था। कई बार मुझे उन पर बहुत तरस आता था! वे एक कोने मे बैठकर टुकुर टुकुर मेरी ओर ताकते थे तो मुझे उन पर बडा तरस आता था। मै उनसे हमदर्दी करना चाहती थी और सोचती, "अगर हमदर्दी करूँगी तो ये फिर शराब पीने लगेगे।" सिर्फ सख्ती से ही वे क़ाबू में रह सकते थे।"

"हा कई बार उनके बाल नोचे जाते थे।" कमिसेरियट के क्लर्क ने वोद्का का एक और गिलास खाली किया और चिल्लाया।

कैटेरीना इवानोव्ना ने उसे फटकारा, "कई अहमको को सुधारने का यही तरीका है कि उनके बाल नोचे जाये और अच्छी तरह पिटाई हो, लेकिन इस वक्त मै अपने स्वर्गीय पति की बात कर रही हू।"

उसके गाल और भी सुर्ख हो गये और आवेश से सास भारी हो गई। वह झगडे के लिये उतारू हो गई थी। बहुत से मेहमान प्रसन्नता से 'ही ही' करने लगे और उन्होने कमिसेरियट के क्लर्क के कान मे कुछ कह कर और उसे झगडे के लिये प्रोत्साहित किया।

"क्या मै पूछ सकता हू आप किसकी · अर्थात··मेरा मतलब है·· आपने अभी कहा था··लेकिन मुझे उसकी कोई परवाह नही··यह बकवास है··जाओ विधवा, मैने तुम्हे माफ किया··जाओ!" कहकर क्लर्क एक वोद्का का और गिलास पी गया।

रास्कोलनिकोव ग्लानिपूर्वक यह सब सुनता रहा। वह सिर्फ कैटेरीना इवानोव्ना का मन रखने के लिये खाने की चीजो को चख रहा था। उसने देखा कि सोनिया चिन्तित और दुखी हो रही है क्योकि कैटेरीना इवानोव्ना की चिडचिडाहट बढती ही जा रही थी और सोनिया समझ गई थी कि दावत कभी शान्तिपूर्वक खत्म नही हो सकती। वह यह भी जानती थी कि उसी की वजह से प्रतिष्ठित महिलाओ ने कैटेरीना इवानोव्ना के निमत्रण को ठुकरा दिया था। सोनिया ने अमेलिया इवानोवना से सुना था कि उसकी मा ने कहा था, "भला मै अपनी बेटी को 'उस छोकरी' के साथ कैसे बैठने दू गी!" सोनिया का अनुमान था कि कैटेरीना इवानोव्ना ने भी जरूर यह बात कही से सुन ली है और अब खैरियत नही है क्योकि सोनिया का अपमान, अपन पति और अपने बच्चो के अपमान से भी अधिक असह्य था। वह जानती थी कि कैटेरीना उन दोनो "गलीज़ कीडो

को मजा चखा कर ही छोडेगी।" इसी वक्त किसी ने तीर से बिधे दो दिलो की शक्ल का रोटी का टुकडा सोनिया को पेश किया। कैटेरीना इवानोव्ना का मुँह फौरन लाल हो उठा और वह जोर से चिल्लाई, "किस गधे ने यह भेजा है ?"

अमेलिया इवानोवना जो कैटेरीना इवानोव्ना की धृष्टता से नाराज थी, समझ गई कि अब कोई न कोई काड होकर रहेगा। उसने लोगो का मनोरजन करने के लिये कैमिस्ट के नौकर कार्ल की कहानी सुनाई जो एक रात गाडी मे कही जा रहा था। गाडीवान उसे किसी हत्या मे शामिल करना चाहता था, कार्ल बहुत रोया धोया और उसने गाडीवान से मिन्नत की कि वह हत्या न करे। अत मे डर के मारे कार्ल ने खुद अपने सीने मे चाकू भोक लिया। कैटेरीना इवानोव्ना इस कहानी को सुनकर मुस्कराई, लेकिन उसने फौरन अमेलिया इवानोवना को ताना दिया कि उसे रूसी भाषा मे कहानी कहने की कोशिश नही करनी चाहिये, इस पर अमेलिया इवानोवना ने बहुत बुरा मनाया और जबाव दिया, "कि उसका बर्लिन वासी पिता बहुत बडा आदमी था और उसके हाथ हमेशा दूसरो की जेबो मे रहते थे।" यह सुनकर कैटेरीना इवानोव्ना अपनी हसी न रोक सकी और बोली, "जरा इस उल्लू की बात सुनो! यह कहती है कि इसके बाप के हाथ दूसरो की जेबो मे रहने थे (खो–खो) रोदियोन रोमनोविच क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है कि पीटर्सबर्ग मे रहने वाले विदेशी खासतौर से जर्मन हम लोगो से कितने ज्यादा मूर्ख होते है। क्या कभी कोई रूसी कह सकता है कि "कैमिस्ट के छोकरे कार्ल ने डर के मारे अपने सीने मे चाकू भोक लिया! और गाडीवान को सजा देने की बजाये रोने-धोने लगा ?" यह औरत कितनी बेवकूफ है। इसका ख्याल है कि यह बडा मार्मिक प्रसग है। मेरे ख्याल मे कमिसेरियट का क्लर्क नशे मे भी इस औरत से ज्यादा अक्लमद है। उसे मालूम है कि शराब की वजह से उसका

दिमाग गडबडा गया है'''लेकिन ये विदेशी लोग होश हवाश मे ऐसी बाते करते है ''जरा देखो तो सही वह औरत किस तरह आखे फाड कर देख रही है। वह गुस्से मे है, हा ! हा !" (खो खो।)

कैटेरीना इवानोवना की जिन्दादिली लौट आई थी और वह रास्कोलनिकोव को बता रही थी, कि पेशन मिलते ही वह अपने शहर मे जाकर भद्रलोगो की लडकियो का स्कूल खोलेगी—उसने पहली बार रास्कोलनिकोव से इस स्कीम की चर्चा की थी और वह अब उसका पूरा ब्यौरा बता रही थी। उसके हाथ मे एक सर्टिफिकेट था, जिसका मारमेलेदोव ने शराबखाने में ज़िक्र किया था और बताया था, कि उसकी पत्नी ने स्कूल में गवर्नर और अन्य सम्मानित व्यक्तियो के सामने दोशाले का नृत्य किया था। इस सर्टिफिकेट से कैटेरीना इवानोव्ना साबित करना चाहती थी कि वह बोर्डिंग स्कूल खोलने की अधिकारिणी है। लेकिन उसका असली उद्देश्य 'उन दोनो गलीज़ औरतो' को यह बताना था कि वह अत्यन्त प्रतिष्ठित और आभिजात परिवार की लडकी है, एक कर्नल की बेटी है और उन औरतो से कही ऊची है जो समाज मे भटकती फिरती है। बारी बारी से वह सर्टिफिकेट नशे में धुत मेहमानो के हाथो मे पहुचा, जिसमे लिखा था कि उसके पिता मेजर के ओहदे पर थे, और यह कहा जा सकता है कि वह कर्नल की बेटी है।

इसके बाद उत्साह में आकर वह बताने लगी कि अपने शहर में जाकर वह कितनी शान्त और सुखी जिन्दगी बसर करेगी, और व्यायामशाला में किन अध्यापको को नियुक्त करेगी। उस शहर मे कैटेरीना इवानोव्ना के बूढे अध्यापक मैन्गौट रहते है, वे कम तनख्वाह पर भी स्कूल मे काम करने के लिये राजी हो जायेगे। सोनिया भी उनके साथ जायेगी और उसकी मदद करेगी। इस पर दूर बैठे हुए किसी मेहमान ने जोर से ठहाका लगाया।

कैटेरीना इवानोव्ना ने उदासीनता का अभिनय तो किया लेकिन उसने ऊँची आवाज मे सोनिया के 'शील धैर्य, सेवाभाव, सहृदयता और शिक्षा' का बखान भी शुरू कर दिया और उसके गालो को गुदगुदा कर उसे दो बार चूमा। सोनिया का चेहरा लाल हो गया। कैटेरीना इवानोव्ना रोने लगी और कहने लगी "मै भी बडी मूर्ख हूँ जो जरा जरा सी बात पर परेशान हो जाती हूँ। खाने के बाद अब चाय का वक्त हो गया है।"

उधर अमेलिया इवानोवना को बातचीत मे हिस्सा लेने का कोई वक्त नही मिला था, न ही किसी ने उसकी बात पर ध्यान ही दिया था, इसलिए वह सख्त नाराज थी। उसने फौरन टिप्पणी की, "भविष्य मे जब तुम बोर्डिंग स्कूल खोलो, तो तुम्हे कपडो की सफाई की देखभाल के लिये एक औरत रखनी पडेगी, और यह भी ध्यान रखना होगा कि लडकियाँ रात के समय उपन्यास न पढे।"

कैटेरीना इवानोव्ना जो बहुत थकी हुई थी और दावत की वजह से सख्त परेशान थी, फौरन बीच मे टोककर बोली, "तुम्हे इस विषय का कोई ज्ञान नही है, व्यर्थ ही बकवास कर रही हो। कपडो की धुलाई, सफाई धोबिन का काम है न कि बोर्डिंग हाऊस की सचालिका का। रही उपन्यास पढने की बात तो यह निरी गुस्ताखी है। मेहरबानी करके चुप रहो!" इस पर अमेलिया इवानोवना के गुस्से का पारा चढ गया और उसने कहा, "मैने तुम्हारी भलाई के लिए ही यह बात कही थी। तुम्हे तो किराया दिये बहुत दिन हो गए है।"

कैटेरीना इवानोव्ना ने उसके 'होश दुरुस्त करते हुए' कहा, कि वह झूठ बोल रही है, कल जब कैटेरीना इवानोव्ना का पति मृत्यु शैय्या पर था तब अमेलिया इवानोवना ने उसे किराये के लिए तग किया था। इस पर अमेलिया इवानोवना ने मुहतोड जवाब दिया "भद्र महिलाओ ने तुम्हारा निमत्रण इसलिए स्वीकार नही किया,

क्योंकि तुम भद्र महिला नही हो।" कैटेरीना इवानोव्ना बोली, "तुम्हारे जैसी फूहड औरत भद्रता को क्या जाने ?" इस पर अमेलिया इवनोवना ने कहा कि उसका बर्लिनवासी पिता बहुत बडा आदमी था, वह हर वक्त जेबो मे हाथ डाले रहता था और कहता था, फू-फू।" अमेलिया इवानोवना ने खडे होकर अपने पिता का अभिनय किया। सब किरायेदार जोर से हँस पडे। वे जानबूझ कर अमेलिया इवानोव्ना को झगडे के लिए उकसाना चाहते थे।

लेकिन यह बात कैटेरीना इवानोवना से न सही गई, उसने ऊँची आवाज मे कहा कि अमेलिया इवानोवना का शायद बाप ही नही था। वह शराबी औरत है, जरूर कभी वह बावर्चिन रह चुकी है या इससे भी बुरा काम करती रही है। यह सुन अमेलिया इवानोवना का मुँह केकडे की तरह लाल हो गया और वह बोली कि शायद कैटेरीना इवानोवना का बाप नही था, जबकि अमेलिया इवानोवना का बर्लिन वासी पिता लबा कोट पहनता था और सदा फूँ-फू करता था।

कैटेरीना इवानोवना ने नफरत से जवाब दिया कि सब लोग उसके खानदान से परिचित है, उसके सर्टिफिकेट पर भी छपा है कि वह कर्नल की बेटी है जबकि अमेलिया इवानोवना का बाप--अव्वल तो उसका कोई बाप था ही नही, क्योंकि अभी तक यह नही मालूम हुआ कि उसका नाम अमेलिया इवानोवना है या अमेलिया लुद्विगोवना। अगर कोई बाप था भी तो वह जरूर फिनलैंड का कोई ग्वाला रहा होगा।

अमेलिया इवानोवना ने गुस्से में आकर मेज पर घूसा मारा और कहा कि उसका नाम अमेलिया इवानोवना है, लुद्विगोव्ना हरगिज नही—उसका पिता बर्गो मास्टर था, कैटेरीना इवानोवना का पिता कभी बर्गोमास्टर नही रहा। इस पर कैटेरीना इवानोवना उठकर खडी हो गई और सख्त आवाज़ मे बोली (हालाकि उसका चेहरा पीला पड गया था और साँस फूल गई थी), "अगर तुमने अपने क्षुद्र

पिता का मेरे पापा से मुकाबिला करने का साहस किया तो मै तुम्हारी टोपी उतार कर पैरो तले रौद दूँगी।" अमेलिया इवानोवना कमरे मे भागती हुई बोली और जोर से चिल्लाई कि वह घर की मालकिन है। उसने कैटेरीना इवानोवना से फौरन कोठरी खाली करने को कहा और जल्दी जल्दी मेज पर से चाँदी के चम्मच उठाने लगी। इस पर बडा शोरगुल मचा और बच्चे रो पडे। सोनिया कैटेरीना को शान्त करने के लिये दौडी लेकिन जब अमेलिया इवानोवना ने 'पीले टिकट'* का ताना दिया तो कैटेरीना इवानोवना सोनिया को एक ओर धकेल कर मकान मालकिन पर झपटी।

इसी वक्त दरवाजा खुला और लूजिन आकर दहलीज़ मे खडा हो गया। वह सब लोगो को सतर्क और कठोर नजरो से देख रहा था। कैटेरीना इवानोवना भागती हुई उसके पास पहुँची।

---

* वेश्याओं को कानून के मुताबिक़ पीला टिकट रखना पड़ता है।

३

"प्यात्र पैत्रोविच तुम तो मुझे बचाओ ··इस बेवकूफ औरत को समझा दो कि वह एक मुसीबतजदा शरीफ औरत को इस तरह नही सता सकती··· ऐसी बातो के लिये कानून भी है ·····मै सीधे गवर्नर जनरल के पास जाऊँगी · इस औरत को जवाबदेही करनी होगी······ गवर्नर जनरल मेरे पिता के यहाँ अक्सर मेहमान बनकर आते थे। वे ज़रूर इन यतीम बच्चो की रक्षा करेगे।"

लूज़िन ने उसे इशारे से दूर हटाते हुए कहा, "श्रीमती जी माफ करे, आप जानती है कि मुझे आपके पापा को जानने का सौभाग्य नही प्राप्त हुआ था (इस पर कोई जोर से हँस पडा) न ही मै आपके और अमेलिया इवानोवना के शाश्वत झगडो मे पडना चाहता हूँ · मै अपने किसी काम से आया हूँ · मै आपकी सौतेली लडकी सोफिया· · वह इवानोव्ना कहलाती है न। मुझे उससे कुछ कहना है रास्ता दो · "

लूज़िन उसे एक ओर धकेल कर आगे चला गया जहाँ एक कोने में सोनिया बैठी थी।

कैटेरीना इवानोवना के सर पर जैसे गाज गिर पडी। वह जहाँ की तहाँ खड़ी रही। उसकी समझ में नही आया कि भला लूज़िन

उसके पिता के आतिथ्य से कैसे वंचित रहा। हालाकि यह निरी मनगढ़त बात थी, लेकिन वह खुद अपनी कल्पना मे विश्वास करने लगी थी। लूजिन के शुष्क और अहकार पूर्ण उत्तर से वह स्तब्ध रह गई थी। लूजिन के आते ही धीरे-धीरे शोरगुल बद हो गया। उन लोगो मे लूजिन जैसे 'सजीदा व्यापारी' की उपस्थिति एक अद्भुत घटना थी। निश्चय ही वह किसी महत्वपूर्ण काम से वहा आया था, कोई न कोई घटना ज़रूर घटकर रहेगी। रास्कोलनिकोव लूजिन को रास्ता देने के लिए एक ओर हट गया। लूज़िन ने उसकी तरफ देखा तक नही। कुछ देर बाद लेब्ज़ियात्नीकोव भी दरवाजे मे आकर खडा हो गया— वह चकित भाव से सब कुछ देख रहा था— इस तरह जैसे उसकी समझ में कुछ नही आया हो।

लूज़िन ने मेहमानो को सम्बोधित करके कहा, "माफ करे, मैने दावत में विघ्न डाला, लेकिन मुझे जरूरी काम है। अमेलिया इवानोवना, इस मकान की मालकिन होने के नाते मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी बात पर ध्यान दे बात सबके सामने हो जाये तो और भी अच्छा है। सुनो सोफिया इवानोवना, तुम्हारे कमरे से आने के बाद ही मैने देखा कि मेज पर से सौ रूबल का नोट गायब था। अगर तुम्हे नोट का पता हो तो फौरन बता दो। मैं अपनी कसम खाकर कहता हूँ कि मामला यही रफा-दफा हो जायेगा। सब लोग इसके साक्षी रहेगे। वरना मुझे सख्ती से काम लेना पडेगा' इसमे तुम्हारा कसूर होगा।"

कमरे मे सन्नाटा छा गया। यहाँ तक कि रोते हुए बच्चे भी चुप हो गये। सोनिया, जो पहले से ही आतकित थी, चुपचाप चकित दृष्टि से लूज़िन का मुह ताकने लगी, उसका चेहरा पीला पड गया था।

"अच्छा तो तुम क्या कहती हो ?" लूज़िन ने सोनिया की तरफ घूरते हुए पूछा।

"मै नही जानती · मुझे कुछ पता नही" सोनिया ने क्षीण स्वर मे उत्तर दिया।

"नही जानती ? कुमारी जी ज़रा सोच समझ कर जवाब दो।" लूजिन ने सख्त आवाज मे कहा, "सोचो ! मै तुम्हे सोचने का वक्त देने को तैयार हूँ। याद रखो, अगर मुझे विश्वास न होता तो मै सबके सामने तुम पर हरगिज़ लाँछन न लगाता। मै जानता हूँ कि इतने गवाहो के सामने झूठा लाछन लगाना बडी ज़िम्मेदारी का काम है। आज सुबह मैने पाँच प्रतिशत सूद की सिक्योरिटियो के बदले मे तीन हजार रूबल हासिल किए थे। मेरी पाकिट बुक मे पूरा हिसाब लिखा है। घर लौट कर मैने रकम गिनी—मिस्टर लेब्जियात्नीकोव इसके साक्षी है, दो हजार तीन सौ रूबल गिनकर मैने जेब मे रख लिए। मेज पर करीब पाँच सौ रूबल थे, जिनमें सौ सौ रूबल के तीन नोट थे, जब तुम कमरे मे आई थी (मेरे बुलाने पर) तब तुम बहुत घबराई हुई थी, और तुमने बीच मे तीन बार उठ कर भागने की कोशिश की। मिस्टर लेब्ज़ियात्नीकोव इसके साक्षी है। कुमारी जी, तुम इस बात से इन्कार नही कर सकती कि मिस्टर लेब्ज़ियात्नीकोव के ज़रिए ही मैंने तुम्हे बुलाया था, ताकि तुम्हारी रिश्तेदार कैटेरीना इवानोव्ना की, जो बुरी हालत मे है, चदे या लाटरी के जरिए कुछ सहायता की जा सके। (मैं उनकी दावत मे शामिल नही हो सका।) तुमने मुझे इस सहृदयता के लिए धन्यवाद दिया था और आँसू भी बहाए थे। मै यह सब इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुम्हे मालूम हो जाए कि मुझे सारी घटना याद है। इसके बाद सहायता की पहली किश्त के रूप मे मैने तुम्हे दस रूबल का एक नोट दिया। मिस्टर लेब्ज़ियात्नीकोव ने यह सब अपनी आँखो से देखा था। फिर मैं तुम्हे दरवाजे तक छोडने आया, उस वक्त भी तुम घबराई हुई थी। मिस्टर लेब्ज़ियात्नीकोव से दस मिनिट तक मेरी बातचीत हुई, इसके बाद वे बाहर चले गये

और मै मेज़ पर रखे नोट गिनने लगा। सौ रूबल का एक नोट गायब था। अब जरा सारी स्थिति पर गौर करो। मै मिस्टर लेब्जियात्नीकोव पर शक नही कर सकता, ऐसा करना शर्मनाक बात होगी। मेरी गिनती मे भी गलती नही हो सकती, क्योकि तुम्हारे आने से पहले मैंने सारी रकम अच्छी तरह गिनी थी। अब तुम्हे यह मानना पडेगा, कि तुम्हारी घबराहट, आने के लिये उतावलापन, बार बार मेज पर हाथ रखना, तुम्हारी सामाजिक स्थिति और आदतो को देखते हुए ही मुझे तुम पर शक करना पडा, हालाकि मेरा दिल नही चाहता। मै फिर कहूँगा, कि मै जानता हूँ कि यह इल्जाम लगाना खतरे से खाली नही, फिर भी मै चुप नही रह सकता। जानती हो मैने यह कार्यवाही किसलिये की है ? सिर्फ तुम्हारी अकृतज्ञता की काली करतूत की वजह से। मैने तुम्हे बुलाकर तुम्हारी मुसीबतजदा सौतेली माँ के लिए दस रूबल भेंट किये, और तुमने मुझे फौरन उसका यह बदला दिया। तुम्हे भी सबक मिलना चाहिए। फिर सोचो ! मुझ से बडा तुम्हारा हितैषी इस समय कोई नही है, मै कहता हूँ फिर सोचो तुम क्या कर रही हो, वरना मै टस से मस नही होऊँगा। बोलो क्या कहती हो ?"

"मैने आपकी कोई चीज नही ली। आपने मुझे दस रूबल दिए थे—इन्हे वापिस लीजिए," सोनिया ने आतंकित स्वर मे कहा—फिर जेब मे से रुमाल निकाल कर दस रूबल का नोट लूजिन के आगे बढा दिया।

"तुम कहती हो कि तुमने सौ रूबल नही उठाये ?" लूज़िन ने नोट वापिस लेने से इन्कार कर दिया।

सोनिया ने अपने चारो ओर देखा, सब उसकी तरफ खौफनाक, कठोर और शत्रुताभरी नजरो से देख रहे थे "रास्कोलनिकोव दीवार के सहारे दोनो बाहे सीने पर लपेटे ज्वलंत आखो से सोनिया को

देख रहा था।

"हे ईश्वर !" सोनिया के मुह से निकला।

"अमेलिया इवानोव्ना, हमे पुलिस मे खबर करनी पडेगी, मेरी प्रार्थना है कि आप चौकीदार को अभी बुलवा ले।" लूज़िन ने कोमल स्वर मे कहा।

"हे ईश्वर ! मैं जानती थी, यह लडकी चोर है।" अमेलिया इवानोवना ने कहा।

"तुम्हे मालूम था ? तब तो जरूर कोई न कोई कारण रहा होगा। श्रीमती अमेलिया इवानोव्ना, इन शब्दो को याद रखियेगा जो आपने इतने लोगो के सामने कहे है," लूज़िन बोला।

फिर वहाँ शोरगुल मच गया।

कैटेरीना इवानोव्ना को ज्योही स्थिति का आभास हुआ वह लूजिन पर झपट कर बोली, क्या कहा ! तुम उस पर चोरी का इल्जाम लगा रहे हो ? सोनिया पर ? हाय रे कमीने लोग।" उसने भाग कर सोनिया को अपनी क्षीण बाहो मे जकड लिया और कहा,

"सोनिया ! तुमने इस आदमी से दस रूबल क्यो लिए ? बेवकूफ लडकी ! इधर लाओ वह नोट।"

सोनिया से नोट लेकर कैटेरीना इवानोव्ना ने लूजिन के मुह पर दे मारा। नोट सीधा जाकर उसकी आख मे लगा और ज़मीन पर गिर पडा। अमेलिया इवानोव्ना ने भागकर नोट उठा लिया। लूजिन गुस्से मे चिल्लाया।

"इस पागल औरत को पकडो ?"

इसी वक्त लेब्जियात्नीकोव और बहुत से और लोग भी दरवाजे में आकर खडे हो गए, जिनमें दो महिलाएँ भी थी।

कैटेरीना इवानोव्ना चिल्लाई, "पागल ! क्या मै पागल हूँ ? तुम खुद अहमक हो, बकवासी क्षुद्र वकील, कमीने नीच आदमी ! भला

सोनिया तुम्हारी चोरी करेगी ? वह तो लोगो को अपनी आखिरी कौडी तक दे डालेगी।" कैटेरीना इवानोव्ना घूम घूम कर विक्षिप्त हँसी हँसने लगी। "तुमने कभी ऐसा अहमक देखा है ?" मकान मालकिन को देखकर वह बोली, "और तुम, सूअर का मास खानेवाली, तुम भी कहती हो कि सोनिया चोर है ? तुम कपडो मे ढँकी जर्मन मुर्गी की टाग हो। सोनिया बेचारी तुम्हारे कमरे से आकर सीधी, मेरे पास बैठी रही है। रोदियोन रोमनोविच भी यही था। तुम सोनिया की तलाशी लेलो। वह कही गई ही नही, फिर नोट उसके पास ही होगा। जल्द उसकी तलाशी लो ? लेकिन अगर तुम्हारा नोट न मिला तो तुम्हे उसका बदला चुकाना होगा ? मै अपने सम्राट, कृपालु जार के पास जाकर आज ही, इसी वक्त उनके कदमो मे गिर पडूँगी। मुझ असहाय विधवा को जरूर महल के भीतर जाने की इजाजत मिल जायगी। तुम सोचते हो, नहीं मिलेगी ? तुम्हारा ख्याल गलत है, मैं भीतर जाऊँगी, जाऊँगी। तुमने सोनिया की विनयशीलता का फायदा उठाया है। लेकिन मै तुम्हे साफ साफ बतादू कि मै इतनी दब्बू नही हूँ ? तुम खुद शराफत की सीमा का उल्लघन कर चुके हो। तलाशी लो ! तलाशी लो !"

आवेश मे आकर कैटेरीना इवानोवना लूज़िन को सोनिया की ओर धकेलने लगी।

लूज़िन बडबडाया, "मै तैयार हूँ— इसकी पूरी ज़िम्मेदारी लूँगा ········लेकिन श्रीमती जी, शाति से काम लो·········मै भी देख रहा हूँ कि तुम दब्बू नही हो·········लेकिन····· तलाशी पुलिस के सामने होनी चाहिये········हालाकि गवाह काफी मौजूद हैं ····· मुझे कोई ऐतराज़ नहीं······एक मर्द औरत की तलाशी नही ले सकता ·····हाँ, अमेलिया इवानोवना की मदद से········लेकिन यह भी उचित नही होगा ··फिर क्या किया जाये।"

कैटेरीना इवानोवना फिर चिल्लाई, "जो चाहे आकर तलाशी ले ले ! सोनिया अपनी जेब उलट कर दिखाओ ! देखा रे राक्षस, इसकी जेब खाली है • सिर्फ इसमे रूमाल था। दूसरी जेब भी देख लो देखोगे !"

कैटेरीना इवानोवना ने दोनो जेबे उलट कर दिखाई, लेकिन दूसरी जेब मे कागज का एक टुकडा निकल कर लूजिन के पैरो मे आ गिरा। लूज़िन ने झुक कर वह टुकडा उठा लिया और खोल कर सबको दिखाया। वह सौ रूबल का नोट था जिसे आठ बार मोडा गया था।

"चोर ! निकलो मेरे मकान से ! पुलिस, पुलिस ! इन लोगो को फौरन साइबेरिया भेज देना चाहिये।" अमेलिया इवानोवना चीख़ उठी।

फिर शोरगुल होने लगा। रास्कोलनिकोव चुपचाप बारी बारी से सोनिया और लूजिन को देख रहा था। सोनिया इस तरह खडी थी, जैसे अचेत हो गई हो, उसे इस घटना पर रत्ती भर आश्चर्य नही हुआ था। सहसा उसके गाल सुर्ख हो गये और उसने दोनो हाथो से अपना चेहरा ढाँप लिया और भाग कर कैटेरीना इवानोवना से लिपट गई।

"नही, मैने यह नोट नही चुराया, मुझे कुछ मालूम नही !" कैटेरीना इवानोवना ने उसे कस कर इस तरह अपनी बाँहो मे बाँध लिया जैसे वह सारी दुनिया से उसकी रक्षा कर सकती है।

"सोनिया, सोनिया, मुझे इस बात पर रत्ती भर विश्वास नही—" वह सोनिया को बच्चे की तरह हिलाडुलाकर बार बार उसका मुँह और हाथ चूमने लगी, "भला तुम ऐसा काम कर सकती हो ! ये लोग कितने बेवकूफ है ! अरे बेवकूफो ! तुम नही जानते यह कैसी लडकी है, इसका दिल कितना बडा है ? अगर कभी तुम्हे

मदद की जरूरत पडेगी तो यह अपने पैरो के जूते और बदन के कपडे तक बेच डालेगी।

मेरे बच्चे भूखो मर रहे थे, इसीलिए इस बेचारी को पीला टिकट लेना पडा। हमारी खातिर इसने अपने को बेचा। आह मेरे पति, देख रहे हो तुम्हारी स्मृति मे कैसी दावत हो रही है! हे ईश्वर! सोनिया को बचाओ! तुम सब लोग चुप क्यो खडे हो? रोदियोन रोमनोविच, तुम सोनिया का पक्ष क्यो नही लेते? क्या तुम भी इस घटना पर विश्वास करने लगे हो? तुम सारे लोग सोनिया की ऊँगली के बराबर भी नही हो! हे ईश्वर कम से कम इस वक्त तो इसकी रक्षा करो!"

उस तपेदिक की मारी असहाय औरत के क्रदन का श्रोताओ पर बहुत असर पडा। उसके पीडित, रुग्ण चेहरे, खून से सने खुश्क ओठ, भर्राये कण्ठ और अविरल अश्रुधारा और बच्चो की सी पुकार से सबके दिल पिघल गये। कम से कम लूजिन तो जरूर 'दयालु' हो गया था। उसने प्रभावशाली स्वर मे कहा,

"श्रीमती जी, इस घटना मे आपका क्या दोष है? कोई नही कह सकता कि आपका भी इसमे कोई हाथ था, विशेषकर जब आपने स्वय अपनी बेटी की जेबे उलट कर उसका कसूर साबित कर दिया है! अगर गरीबी की वजह से सोफिया सेम्योनोवना ने यह काम किया है तो मै दया दिखाने के लिये हरदम तैयार हूँ। लेकिन कुमारी जी, तुमने पहले क्यो नही बताया? तुम्हे अपनी बेइज्जती का डर था! शायद तुम घबरा गई थी! खैर यह बात समझ मे आ सकती है···लेकिन तुम मे इतनी गिरावट कैसे आ गई?" फिर लूज़िन ने उपस्थित लोगो से कहा, "सज्जनो! मेरा सख्त व्यक्तिगत अपमान हुआ है, फिर भी मै दयावश सारी घटना को भूलने के लिये तैयार हूँ।" फिर उसने सोनिया को लक्ष्य करके

कहा, "चलो भविष्य मे यह बेइज्जती तुम्हारे लिए सबक साबित होगी। बस मै अब मामला और ज्यादा नही बढाना चाहता।"

लूजिन ने कनखियो से रास्कोलनिकोव की तरफ देखा। रास्कोलनिकोव की आँखो मे शोले दहक रहे थे जो लूजिन को भस्म करने पर तुले हुए थे। उधर कैटेरीना इवानोवना पागलो की तरह सोनिया को चूम रही थी। बच्चे भी सोनिया के गले लिपट रहे थे। पोलेका, जो अभी तक सारी घटना को नही समझ सकी थी, ज़ोर ज़ोर से सिसक रही थी। उसका सुन्दर चेहरा रोने से सूज गया था, और वह सोनिया के कधे से सटकर आसू बहा रही थी।

"कितनी नीचता है!" दरवाज़े मे से सहसा किसी की आवाज़ सुनाई दी।

लूज़िन ने सर घुमा कर देखा। लेब्ज़ियात्नीकोव ने फिर दुहराया, "कितनी नीचता है।"

लूज़िन चौक उठा। लेब्ज़ियात्नीकोव ने कमरे में आकर पूछा, "तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम इस मामले में मुझे साक्षी बनाना चाहते थे?"

"क्या मतलब? तुम क्या कह रहे हो?" लूज़िन बडबडाया।

"मेरे कहने का मतलब यह है कि तुम दूसरो को झूठमूठ बदनाम करते हो।" लेब्ज़ियात्नीकोव ने जिसकी नज़र कमज़ोर थी, लूजिन को घूरते हुए सख्त आवाज़ में उत्तर दिया। वह बेहद नाराज़ था।

रास्कोलनिकोव गौर से उसके हर शब्द को सुन रहा था। कमरे मे फिर सन्नाटा छा गया। लूज़िन पहली बार सकपका गया। वह हकलाने लगा "तुम्हारा मतलब है"··"लेकिन तुम्हे क्या हो गया है"··"तुम पागल तो नही हो गये?"

"मेरा दिमाग दुरुस्त है। लेकिन तुम पक्के बदमाश हो! छिः

छि कैसी नीचता है ! मै जान बूझ कर सारी बाते सुन रहा था ‥ ‥अभी तक मुझे तुम्हारी बात मे कोई तर्क नही दिखाई दिया ‥ ‥तुम यह सब किस लिये कर रहे हो ?"

"मैने क्या किया है ? अपनी बे सिर पैर की पहेलियाँ न बको। शायद तुम नशे मे हो !"

"नशे मे तुम होगे, नीच आदमी, मै कभी वोद्का नही छूता, यह मेरे असूलो के खिलाफ है। आप लोगो को विश्वास नही होगा, लेकिन इस आदमी ने खुद अपने हाथो से सोफिया सेम्योनोवना को यह सौ रूबल का नोट दिया था—मै वहाँ मौजूद था, मैने अपनी आँखो से सब कुछ देखा। मै कसम खाकर कहता हूँ ‥ ‥इसी आदमी की यह करतूत है।"

"तुम पागल तो नही हो गए, अहमक कही के! इस लडकी ने खुद अभी सब के सामने कहा था कि मैंने उसे सिर्फ दस रूबल दिये थे। मै भला यह नोट उसे क्यो देता ?"

"मैने खुद देखा था, मैने खुद देखा था, वैसे कसमें खाना मेरे असूलो के खिलाफ है, लेकिन अदालत के सामने मै इसी वक्त जो कसम कहो खाने के लिए तैयार हूँ। मैंने अपनी आँखो से तुम्हे सोनिया की जेब मे नोट रखते देखा। मै बेवकूफ समझा कि तुम दया से द्रवित होकर ऐसा कर रहे हो। जब तुम उसे दरवाज़े तक छोडने गये थे तो उससे हाथ मिलाते वक्त तुमने अपने बाँए हाथ से नोट उसकी जेब मे डाल दिया था। मैने देखा था—देखा था।"

लूज़िन का चेहरा पीला पड गया था, लेकिन उसने धृष्ट स्वर में कहा, "कैसा झूठ है ! खिडकी के पास खडे होकर तुम्हे नोट कैसे दिखाई दे गया ! तुम्हे वैसे ही दूर की चीजे कम नज़र आती है। यह तुम्हारी कल्पना होगी। क्या बकवास कर रहे हो ?"

"नही यह मेरी कल्पना नही है। दूर खडे होकर भी मैंने वह

नोट देख लिया था। यह सच है कि मेरी नजर कमजोर है, लेकिन सोफिया सेम्योनोवना को दस रूबल देने से पहले तुमने सौ का नोट निकाला था। उस वक्त मै तुम्हारे नजदीक खडा था। उसी वक्त मेरे दिमाग मे एक बात आई थी, इसलिए मुझे यह बात याद रही। तुमने नोट मोड कर अपने हाथ मे रख लिया। उठते वक्त तुमने नोट दाँए हाथ मे से बाँए हाथ मे पकड लिया। वह बात फिर मेरी दिमाग मे आई, मेरा अनुमान था कि तुम उसकी मदद करना चाहते हो और नही चाहते कि यह सब बात मुझे मालूम हो। मैंने तुम्हे उसके जेब मे नोट डालते खुद देखा--- मै कसम खा कर कहता हूँ।"

लेब्जियात्नीकोव की सास फूल गई थी। चारो तरफ से आश्चर्य भरी आवाजे सुनाई देने लगी—सब लोग लूजिन के गिर्द जमा हो गये। कैटेरीना इवानोव्ना भागकर लेब्जियात्नीकोव के पास पहुँची।

"तुम्हारे बारे मे अभी तक मेरी धारणा गलत थी! सोनिया को बचाओ! सिर्फ तुम्ही उसका पक्ष ले रहे हो! वह यतीम लडकी है! ईश्वर ने तुम्हें हमारी रक्षा के लिये भेजा है!" कैटेरीना इवानोव्ना अनजाने में ही घुटने टेककर बैठ गई।

लूजिन ने क्रुद्ध होकर कहा, "यह निरी बकवास है! तुम कहते हो तुम्हारे दिमाग में एक विचार आया। विचार से क्या होता है? अच्छा तो तुम्हारा ख्याल है कि मैंने जानबूझ कर उसके साथ चालाकी की है? भला किस लिये? किस उद्देश्य से? इस लडकी से भला मेरा क्या•••?"

"किसलिये? यही तो मै भी नही समझ पा रहा, लेकिन मैंने तुम्हे जो बताया है वह सच है। गलती मुझे नही हुई, बदनाम, लफंगे आदमी, तुमसे हाथ मिलाते वक्त ही मैने अनुमान लगा लिया था। तुमने नोट चुपके से क्यो उसकी जेब मे डाला? क्या तुमने मेरे

सिद्धान्तो को जानते हुए कि मै व्यक्तिगत दान के खिलाफ हूँ मुझसे यह बात छिपाई थी ? मेरा ख्याल है कि इस तरह दान क्रान्ति के मार्ग मे रुकावट डालता है। मै समझा कि तुम मेरी मौजूदगी मे इतनी बडी रकम नही देना चाहते, क्योकि तुम चाहते हो कि उस लडकी को जेब मे सौ रूबल का नोट पाकर अचभा हो। (मै जानता हूँ, कई परोपकारी लोग इसी ढग से दूसरो की सहायता करने के शौकीन होते है)। मैने सोचा कि शायद तुम यह देखना चाहते हो कि नोट पाने के बाद वह तुम्हे धन्यवाद देने के लिये आती है या नही। मैने सोचा कि तुम फौरन उसकी कृतज्ञता के पात्र नही बनना चाहते, जैसी एक कहावत भी हैं, "अगर आप बाये हाथ से दान देते है तो आपके दाये हाथ को भी इसका पता नही चलना चाहिये ..." इसी तरह के कई विचार मेरे मन मे आये। मैं तुम्हे यह भी नही बताना चाहता था कि मुझे तुम्हारा भेद मालूम है। सहसा मैने सोचा कि कही मालूम होने से पहले ही सोफिया सेम्योनोवना से नोट गुम न हो जाये, इस लिये उसे सावधान करने के लिये मै अपने कमरे से निकला लेकिन पहले मै मैडम कोब्लियात्नीकोव के यहाँ "निश्चयात्मक ढग का साधारण ज्ञान' नामक पुस्तक देने चला गया, विशेष रूप से पिद्रित और वैगनर के लेख पढने का आग्रह करने भी। यहाँ आकर मैने देखा कि बडा शोर गुल मच रहा है · अगर मैने तुम्हे अपनी आँखो से उसकी जेब मे नोट डालते न देखा होता, तो भला कैसे ये सारे विचार मेरे दिमाग मे आते ?"

इस लबे-चौडे तर्क के बाद लेब्जियात्नीकोव थक गया और उसके चेहरे पर पसीना आ गया। दुर्भाग्य से वह रूसी भाषा मे भी अपने विचारो को व्यक्त नही कर सकता था, हालाकि उसे अन्य दूसरी किसी भाषा का भी ज्ञान नही था, इसलिये इतन बडे साहसी कारनामे के बाद वह थकान से चूर हो गया था। उसके शब्द इतने ओजस्वी और प्रभावशाली थे कि सब सुनने वालो को फौरन उसकी बातो पर

विश्वास हो गया। लूजिन को लगा कि अब वह मुसीबत मे फँस गया है। वह चिल्लाया,

"तुम्हारे दिमाग मे अगर मूर्खता भरे विचार आते है तो मै क्या करूँ ? यह कोई सबूत नही। हो सकता है, सपने मे तुमने यह बाते देखी हो। जनाब आप झूठ बोल रहे है, जान बूझकर मुझे बदनाम करना चाहते है क्योकि आपके बेलगाम, नास्तिक विचारो से मै सहमत नही हो सका। इसी लिये आप मुझसे चिढे हुए है।"

लेकिन लूजिन की इस बात का सुनने वालो पर कोई असर नही पडा। चारो तरफ से अस्वीकृति सूचक आवाजे आने लगी।

"अच्छा तो तुमने बचने के लिये यह रास्ता पकडा है ! यह सब खुराफात है ! बुलाओ पुलिस को ! मै उनके सामने गवाही दूँगा। मेरी समझ में नही आता इस आदमी ने किस उद्देश्य से इतना नीचता पूर्ण काम किया ! छि. छि कैसी घृणित बात है !" लेब्जियात्नीकोव बोला।

"मैं बता सकता हूँ कि इसने ऐसा क्यो किया, अगर ज़रूरत पडी तो मै भी गवाही दूँगा," रास्कोलनिकोव ने आगे बढ कर कहा।

उसकी दृढ और स्पष्ट आवाज से सब लोगो को निश्चय हो गया कि हो न हो वह सब कुछ जानता है और सारे रहस्य का भडा फोड कर रख देगा।

रास्कोलनिकोव ने लेब्जियात्नीकोव को सबोधित करते हुए कहा, "मुझे पहले भी शक था कि इस इल्जाम के पीछे कोई न कोई लपटता और चालाकी छिपी हुई है। अब मै सारी चाल को समझ गया हूँ। सिर्फ मुझी को कई बातो का पता है, जिन्हे मै सबके सामने खोलकर रखूगा, इसी से सारा मामला साफ हो जायेगा। आपकी गवाही से मेरे दिमाग में स्थिति बिल्कुल साफ हो गई है। मेहरबानी करके सब लोग सुने। यह सज्जन (लूज़िन को लक्ष्य करके) मेरी बहन अवदोत्या रोमा-

नोवना रास्कोलनिकोव से शादी करने वाले थे। लेकिन परसो पीटर्सबर्ग मे आते ही, पहली मुलाकात ही मे इनका मुझसे झगडा हो गया और मैने इन्हे अपने कमरे से निकाल दिया। यह बडी नीच प्रकृति का आदमी है। मुझे परसो नही मालूम था कि यह इसी मकान मे ठहरा हुआ है। स्वर्गीय मिस्टर मारमेलेदोव का दोस्त होने के नाते मैने कैटेरीना इवानोव्ना को जनाजे के लिये कुछ मदद दी थी, मुझे नही पता था कि इस आदमी ने मुझे देख लिया है। इसने फौरन मेरी मा को एक खत लिखा और कहा कि मैने अपना सारा धन कैटेरीना इवानोव्ना को नही बल्कि सोफिया सेम्योनोवना को दे डाला है। इसने सोफिया इवानोवना के चरित्र पर गदे आक्षेप किये ' जिसका मतलब था कि सोफिया सेम्योवना से मेरा ' यह चाल मुझमे और मेरी मा और बहन मे झगडा पैदा करने की नीयत से चली गई थी, ताकि वे लोग यह समझे कि मैने उसका भेजा हुआ सारा पैसा ऐश मे बर्बाद कर दिया है। कल मैने सब के सामने बताया कि मैने वह रकम कैटेरीना इवानोवना को दी थी, तब तक सोफिया सेम्योनोवना को तो मैने देखा तक नही था जो सच है। मैने यह भी कहा कि वह सोफिया इवानोवना के पैरो की धूल के बराबर भी नही है। इसने सवाल किया, क्या मै सोफिया इवानोवना को अपनी मा और बहन के साथ बिठा सकता हूँ मैने जबाव दिया कि यह तो मै आज ही कर चुका हूँ। यह देख कर कि उसके भडकाने के बावजूद भी मेरी मा और बहन मुझसे नही झगडी, इस आदमी ने उनके प्रति गुस्ताखी दिखानी शुरु कर दी। इसपर हमारा इससे सबधविच्छेद हो गया, और इसे घर से बाहर निकाल दिया गया। यह कल शाम की घटना है। अब जरा गौर कीजिये, सोफिया सेम्योनोवना पर चोरी का इलज़ाम लगा कर यह आदमी मेरी मा और बहन के सामने सच्चा बनना चाहता था, और यह जाहिर करना चाहता था कि सोफिया सेम्योनोवना के बारे मे उसकी धारणा सही थी, और वह मेरी बहन के सम्मान की

रक्षा करना चाहता था। सभव था कि मेरे परिवार से मेरा नाता टूट जाता, और यह फिर उनका विश्वास प्राप्त कर लेता। यह मुझसे भी बदला लेना चाहता है क्योकि इसे मालूम है कि मै सोफिया सेम्योनोवना की कितनी इज्जत करता हू। इसीलिये इसने यह चाल चली थी। मै समझ गया, इसके पीछे और कोई कारण नही था!"

बीच बीच मे लोग रास्कोलनिकोव को टोकते रहे, लेकिन वह शान्त और गभीर स्वर मे बोलता गया—उसकी सजीदगी का और चेहरे के हाव भावो का सब लोगो पर गहरा असर पडा।

"ठीक है-ठीक है" लेब्जियात्नीकोव ने सम्मति प्रकट की। "सोफिया इवानोवना के कमरे मे आते ही लूजिन ने मुझसे तुम्हारे बारे मे पूछा था। वह चाहता था तुम भी इस मौके पर मौजूद रहो, इसीलिये उसने मुझे एकान्त मे खिडकी के पास बुलाकर पूछा था कि तुम कैटेरीना इवानोवना की दावत मे शामिल हो रहे हो या नही। मै समझ गया। समझ गया—"

लूजिन चुप रहा— उसके चेहरे पर घृणा भरी मुस्कान थी, लेकिन उसका रग पीला पड गया था। वह बचाव का कोई रास्ता सोच रहा था। उसका बस चलता तो सारा किस्सा छोड कर वहाँ से भाग जाता, लेकिन अब यह सभव न था—इससे उस पर लगाये गये इलजाम सच्चे साबित हो जाते। इसके अलावा सब लोग नशे मे थे। कमिसेरियट का क्लर्क सबसे ज्यादा चिल्ला रहा था। उसे पूरी तरह से स्थिति समझ मे नही आई थी, फिर भी वह ऊँची आवाज मे अपने सुझाव दे रहा था जो लूजिन को सख्त नापसद थे। आसपास के कमरो के लोग भी वहाँ आ पहुँचे थे जो नशे मे नही थे। तीनो पोलिश मेहमान उत्तेजित स्वर मे चिल्ला रहे थे 'यह पक्का बदमाश है!' और लूजिन को अपनी भाषा मे धमका रहे थे। सोनिया भी ध्यान से सारी बाते सुन रही थी, लगता था जैसे उसकी चेतना लौट आई है। वह टकटकी लगा

कर रास्कोलनिकोव की ओर देख रही थी। उसे आभास हुआ कि रास्कोलनिकोव ही उसे सुरक्षा दे सकता है। कैटेरीना इवानोव्ना की सास फूलने लगी थी और वह बुरी तरह थक गई थी। अमेलिया इवानोव्ना मूर्खो की तरह मुँह बाए खडी थी, उसकी समझ मे सिवा इस के कुछ न आया था कि लूज़िन मुसीबत मे पड गया है।

रास्कोलनिकोव ने फिर कुछ कहना चाहा, लेकिन लोगो ने उसे न बोलने दिया। सब लोग लूजिन के गिर्द इकट्ठे हो गए थे और उसे गालियाँ और धमकियाँ दे रहे थे। लूज़िन ने अभी भी हार नही मानी थी। सोनिया पर लगाए गए इलज़ाम को विफल देख कर उसने धृष्टता से काम लिया, और भीड को धकेलता हुआ बोला,

"सज्जनो! आगे से हट जाओ! मुझे निकलने दो! मेहरबानी कर के गाली-गलौज बद करो। आप लोगो की धमकियाँ बेकार है—आपको कानून के रास्ते मे रोडा अटकाने के लिए जवाबदेही करनी होगी। चोर का जुर्म साबित हो गया है, मै दावा करूँगा। हमारे न्यायाधीश आप लोगो की तरह अधे··और पियक्कड नही है जो दो बदनाम नास्तिक आदोलनकारियो की बातो पर विश्वास कर लेगे। ये दोनो मुझ से बदला लेना चाहते है। यह बात उन्होने मान भी ली है··मुझे निकलने का रास्ता चाहिए···"

"खबरदार जो मेरे कमरे मे तुम्हारा नामोनिशान भी रहा! हमारी दोस्ती आज से खत्म समझो! मै सोचता हूँ, मैने व्यर्थ ही तुम पर पन्द्रह दिन बर्बाद कर दिए··तुम्हे समझाने मे ''

"मैंने तो आज खुद ही तुमसे कहा था कि मै जा रहा हूँ—लेकिन तुमने मुझे रोक लिया। मै सिर्फ इतना ही कहूँगा कि तुम बेवकूफ हो—तुम्हे अपनी आखे और दिमाग की जाँच करवानी चाहिए। सज्जनो मुझे बाहर निकलने दो!"

लूज़िन ने लोगो को धकेलने की कोशिश की, लेकिन कमिसेरियट

का क्लर्क उसे इतनी आसानी से कैसे जाने देता ? उसने मेज पर से एक गिलास उठा कर लूजिन पर फेका। गिलास जाकर सीधा अमेलिया इवानोव्ना को लगा, वह चीख पडी— क्लर्क लडखडाकर मेज के नीचे गिर गया। लूजिन निकल कर कमरे मे चला गया और आध घटे बाद उसने मकान छोड दिया। सोनिया को जो स्वभाव से ही भीरू थी आज लगा कि कोई भी आसानी से उसका अपमान कर सकता है, और वह सावधानी और नम्रता से ही मुसीबतो का सामना कर सकती है। उसकी निराशा का कोई ठिकाना न था। वह बिना शिकायत किए धैर्यपूर्वक सब कुछ बर्दाश्त कर सकती थी—अपनी जीत के बावजूद भी—लेकिन आज पहली बार उसके मन मे कटुता आई थी— जब उसका आतक और विस्मय दूर हो गया तो अपनी असहाय स्थिति और अपने प्रति हुए दुर्व्यवहार की स्मृति से उसके मन मे घोर यन्त्रणा पैदा हुई और वह विक्षिप्त होकर रोने लगी। जब उससे और अधिक न सहा गया तो वह भागकर अपने घर मे चली गई। उधर जब अमेलिया इवानोव्ना पर गिलास आ गिरा और लोग जोर से हँस पडे तो उसके गुस्से का पारा चढ गया। वह चीखती हुई कैटेरीना इवानोव्ना पर झपटी,

"मेरा मकान छोड दो ! फौरन ! क्विक मार्च !" यह कहकर उसने कैटेरीना इवानोव्ना का सारा सारा सामान उठाकर फर्श पर फेंक दिया। कैटेरीना इवानोव्ना, जो कमजोरी के मारे बेसुध हुई जा रही थी, बिस्तर मे से उठकर अमेलिया इवानोव्ना से गुँथ गई— लेकिन दोनो पक्ष बराबर नही थे— मकान मालकिन ने कैटेरीना इवानोव्ना को पख की तरह उठाकर दूर धकेल दिया।

कैटेरीना इवानोव्ना सिसकियाँ भर कर विलाप करने लगी, "क्या पहली आफत ही कम थी जो यह दुष्ट औरत मुझपर टूट पडी ! क्या मेरे पति की मौत के दिन मुझे इस तरह मकान से निकाला जाएगा ?

मेरा नमक खाकर यह औरत मुझे और मेरे अनाथ बच्चो को सडक पर धकेल रही है ! मै कहाँ जाऊँ ! हे ईश्वर ! क्या इस धरती पर कोई इन्साफ नही रहा ? अगर तुम अनाथो की रक्षा नही करोगे तो किस की करोगे ? अच्छा है, मै भी देखती हूँ, धरती पर इन्साफ रहा है या नही। ठहरो पापी औरत ! पोलेका तुम बच्चो के पास रहना, मै अभी वापिस आती हूँ। बेशक तुम्हे गली मे ही क्यो न रुकना पडे। मै देखती हूँ धरती पर इन्साफ है या नही !"

अपने सर पर हरा शाल ओढ कर (जिस शाल का जिक्र मारमेले-दोव ने रास्कोलनिकोव से किया था) कैटेरीना इवानोव्ना रोती-बिलखती हुई शराबियो की भीड को चीरकर सडक पर भाग आई— कही पर इन्साफ तलाश करने के लिए। पोलेका दो छोटे बच्चो को गले से चिपकाकर काँपती हुई अपनी माँ के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। अमेलिया इवानोव्ना गुस्से मे आकर चीखने-चिल्लाने लगी और कमरे की हर चीज को फर्श पर पटकने लगी। किरायेदार अट-सट बक रहे थे, और आज की घटना पर टिप्पणी कर रहे थे। कुछ लड-झगड रहे थे और एक दूसरे को गालियाँ दे रहे थे— कुछ ने गाने की धुन छेड दी…"

"अब मुझे यहाँ से चलना चाहिए। देखे सोफिया सेम्योनोवना क्या कहती है ?" रास्कोलनिकोव ने मन ही मन सोचा और वह सोनिया के घर की तरफ चल पडा।

४

रास्कोलनिकोव के दिल मे पहले से यत्रणा और आतक का बोझ था, फिर भी उसने लूज़िन के खिलाफ सोनिया का ज़ोरदार पक्ष लिया था। इससे उसके क्लान्त मन को शान्ति मिली थी। वह सोनिया से अपनी मुलाकात की कल्पना से ही सिहर रहा था। उसे सोनिया को बताना पडेगा, लिजावेता का हत्यारा कौन है। इस बात से होने वाली यत्रणा का अदाज लगाते ही, उसने इस विचार को मन से निकालने की कोशिश की। कैटेरीना इवानोव्‌ना के घर से निकलते वक्त वह जीत के नशे मे था, लेकिन सोनिया के घर के नजदीक पहुँचकर उसने अपने को अशक्त और भयभीत अनुभव किया। वह दरवाज़े मे ठिठक गया और अपने आप से पूछने लगा, "क्या मुझे सोनिया को बताना चाहिए कि लिजावेता की किसने हत्या की ?" यह सवाल विचित्र था क्योंकि रास्कोलनिकोव को आभास हो रहा था कि उसे फौरन सोनिया को सब कुछ बता देना चाहिए। इसका कारण उसे खुद भी नही मालूम था। लेकिन उसे इस बात का तीव्र 'आभास' हो रहा था। होनहार के सामने उसने अपने को पराजित और अशक्त अनुभव किया। अपनी हिचकिचाहट और मानसिक यत्रणा को कम करने के लिए उसने सीधे

सोनिया का दरवाजा खोल दिया। सोनिया मेज पर कुहनियाँ टिकाकर बैठी थी। उसने अपना चेहरा हाथो से ढाँप रखा था। रास्कोलनिकोव को देखते ही वह उठ खडी हुई, जैसे वह उसके आने की प्रतीक्षा ही कर रही थी।

"आप न होते तो आज न जाने मेरी क्या हालत होती!" सोनिया ने कहा।

निश्चय ही ये शब्द कहने के लिए वह रास्कोलनिकोव के आने की राह देख रही थी।

रास्कोलनिकोव जाकर मेज के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया जिस पर से सोनिया उठी थी। सोनिया उससे दो कदम दूर खडी थी—बिल्कुल कल की तरह।

रास्कोलनिकोव ने कापती आवाज मे कहा, "कहो सोनिया, 'तुम्हारी सामाजिक स्थिति और पेशे को देखते हुए मैंने यह सोचा था' कहो अब समझी?"

सोनिया के चेहरे पर गहरा विषाद था। वह बीच मे टोक कर बोली, "मेहरबानी करके कल जैसी बातें न कीजिए—आगे जिन्दगी मे क्या कम मुसीबत है।" उसने मुस्कराने की कोशिश की ताकि रास्कोल-निकोव इस डाट से चिढ न जाए।

"मै बडी बेवकूफ हूँ जो वहाँ से चली आई। अब वहाँ क्या हो रहा है? मै फौरन वापिस जाना चाहती थी, लेकिन मै सोच रही थी··· कि आप यहाँ आयेगे।"

रास्कोलनिकोव ने बताया कि अमेलिया इवानोवना उसके परिवार को मकान से निकाल रही थी और कैटेरीना इवानोवना 'इन्साफ की तलाश' मे कही भाग गई है।

"हे ईश्वर! आओ फौरन चले···" सोनिया बोली। उसने अपनी टोपी उठा ली।

"फिर वही बात ! उन लोगो के सिवा तुम्हारे दिमाग मे कोई ख्याल नही आता। कुछ देर मेरे पास ठहरो।" रास्कोलनिकोव चिढ कर बोला।

"लेकिन · कैटेरीना इवानोवना का क्या होगा ?"

"कैटेरीना इवानोवना कही खो नही जाएगी, निश्चित रहो। वह खुद बखुद यहाँ आएगी। अगर तुम उसे यहॉ न मिली तो तुम्हे दोष दिया जाएगा ··"रास्कोलनिकोव की आवाज मे कटुता थी।

सोनिया चकित भाव से बैठ गई। रास्कोलनिकोव चुपचाप फर्श की ओर देखकर कुछ सोच रहा था। उसने सोनिया की तरफ देखे बगैर कहा,

"इस बार लूजिन ने तुम पर दावा नही किया, लेकिन अगर वह चाहता तो तुम्हे जेल भिजवा सकता था। अगर लेब्जियात्नीकोव और मै न मौजूद होते·· क्यो ?"

"हा" सोनिया ने क्षीण स्वर मे समर्थन किया। वह किसी सोच मे डूबी थी।

"हो सकता है मै वहॉं न आता। लेब्जियात्नीकोव का आना भी एक सयोग मात्र था।"

सोनिया खामोश रही।

"अगर तुम्हे जेल होती तो फिर ? याद है कल मैने क्या कहा था ?"

सोनिया ने फिर कोई उत्तर न दिया। रास्कोलनिकोव ने जबर-दस्ती हँसने की कोशिश की और बोला, "फिर चुप हो गई ? मेरा ख्याल था तुम कहोगी "चुप रहो ! यह प्रसग मत छेडो !"···हमे एक जरूरी बात करनी है। मै लेब्जियात्नीकोव के शब्दो में, एक 'समस्या' पर तुम्हारे विचार जानना चाहता हूँ। (फिर उसके विचार सूत्र बिखर गये)। नही सोनिया, क्षण भर के लिए मान लो कि तुम्हें लूजिन के

इरादो का पहले से पता था और तुम यह भी जानती थी कि इससे कैटेरीना इवानोवना और उसके बच्चे बर्बाद हो जायेंगे,···खैर अपने को तो तुम इन्सानो मे शुमार ही नही करती। पोलेका भी · क्योकि उसे भी तुम्हारे ही रास्ते पर चलना है। मानलो तुम्हे लूज़िन और कैटेरीना इवानोवना दोनो मे से एक की मौत का फैसला करना पडता तो तुम किसकी मौत चाहती ? मेरे सवाल का जवाब दो।"

सोनिया ने घबराकर उसकी ओर देखा। इस सवाल मे एक विचित्र सकेत छिपा था।

"मै जानती थी कि आप इसी तरह का कोई सवाल मुझसे पूछेंगे।" सोनिया की आखो में जिज्ञासा थी।

"अच्छा तो इस सवाल का जवाब क्या होगा ?"

"जो नही सभव है, आप उसकी बात क्यो पूछते हैं ?" सोनिया ने हिचकिचा कर उत्तर दिया।

"इसका मतलब यह हुआ कि तुम चाहती हो कि लूज़िन इसी तरह जिन्दा रहे और बदमाशी करता रहे ?"

"लेकिन मुझे क्या पता, ईश्वर की क्या मर्जी है ?"

"···आप ऐसे व्यर्थ के सवाल क्यो पूछ रहे है जिनका जवाब नहीं दिया जा सकता। भला मैं फैसला करने वाली कौन होती हूँ ? मुझे किसने न्यायाधीश बनाया है जो मै लोगो की ज़िन्दगी-मौत का फैसला कर सकू ?"

"खैर तुम ईश्वर की मर्ज़ी की बात ले आई, अब और कुछ पूछना बेकार है।" रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा।

"आप साफ साफ अपने मन की बात क्यो नही कहते ? आप फिर किसी बात की ओर इशारा कर रहे है· ·आप क्या सिर्फ मुझे सताने के लिए यहाँ आए है ?" सोनिया ने व्यथित स्वर मे कहा और वह फूट फूट कर रोने लगी। रास्कोलनिकोव खामोशी से उसकी व्यथा

देखता रहा। इसी तरह पाँच मिनट गुजर गये।

सहसा रास्कोलनिकोव की धृष्टता न जाने कहाँ चली गई। उसने क्षीण मृदु स्वर मे कहा, "सोनिया तुम ठीक कहती हो। मैने कल तुमसे कहा था कि मै माफी माँगने नही आऊँगा, लेकिन आज मैने आते ही माफी माँगी थी ' लूजिन का प्रसग मैने अपनी खतिर उठाया था। मै माँफी माग रहा था सोनिया ' "

रास्कोलनिकोव ने मुस्कराने की कोशिश की लेकिन उसके पीले चेहरे पर बेबसी थी। उसने अपने दोनो हाथो से अपना मुँह छिपा लिया।

सहसा सोनिया के प्रति तीव्र घृणा की लहर उसके रोम-रोम मे फैल गई--भयभीत होकर उसने सर ऊपर उठाया और गौर से सोनिया की तरफ देखने लगा—उसकी नजर सोनिया की घबराहट और आतक भरी नजरो से मिली—उन आखो मे प्रेम था—रास्कोलनिकोव की घृणा काफूर हो गई। वह असली भावना न थी, रास्कोलनिकोव ने समझने मे गलती की थी। वह समझ गया कि अब वह 'क्षण' आ गया है।

उसने फिर अपना चेहरा दोनो हाथो मे छिपा लिया। उसका रग पीला पड गया। सहसा उसने उठकर सोनिया की तरफ देखा और यत्रवत उसके पलग पर बैठ गया।

जब बुढिया के सिरहाने कुल्हाडी लिए वह खडा हुआ था, तब उसे लगा था कि उसे 'एक मिनट भी बर्बाद नहीं करना चाहिये।' ठीक वैसे ही विचार इस वक्त भी उसके मन मे आ रहे थे।

"क्या माजरा है ?" सोनिया ने भयभीत होकर पूछा।

रास्कोलनिकोव की ज़बान से एक भी शब्द न निकला। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि आखिर उसे हो क्या गया है। निश्चय ही बात बताने के इस ढग की उसने कल्पना भी न की थी। सोनिया

आहिस्ते से जाकर उसके पलग पर बैठ गई और टकटकी लगाकर उसे देखने लगी, उसका दिल जोर से धडकने लगा। रास्कोलनिकोव ने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाया। उसके ओठ कुछ कहने के लिये हिले—सोनिया का हृदय किसी अज्ञात आतक से सिहर उठा।

"क्या बात है ?" सोनिया ने पूछा और वह भय से पीछे हट गई।

"कुछ नही सोनिया, डरो मत • अगर सोचा जाये तो यह सब खुराफात है" रास्कोलनिकोव जैसे सरसाम मे बोल रहा था। उसने सोनिया की तरफ देखकर कहा, "मै तुम्हे किसलिये यत्रणा देने आया हूँ ? यह सवाल मै खुद अपने से भी पूछ रहा हूँ, सोनिया • "

पद्रह मिनट पहले शायद यह सवाल उसके मन मे उठा था, लेकिन इस वक्त वह असगत बाते कर रहा था, उसके शरीर मे कपकपी दौड रही थी।

"आह ! आपको कितनी तकलीफ हो रही है।" सोनिया ने व्यथित स्वर मे कहा।

"यह सब खुराफात है • •सुनो सोनिया" रास्कोलनिकोव के चेहरे पर क्षण भर के लिये एक असहाय रुग्ण मुस्कान फैल गई, उसने पूछा "तुम्हे याद है, मै कल तुम्हे क्या बताने वाला था ?"

सोनिया अधीर होकर सुन रही थी।

"मैने कहा था कि शायद मै सदा के लिये तुमसे विदा ले रहा हूँ—मैने यह भी कहा था कि अगर मै कल तुमसे मिलने आया तो मै बताऊगा कि लिजावेता का हत्यारा कौन है।"

सोनिया कापने लगी।

"लो मै तुम्हे यही बताने आया हू।"

"तो कल आप सच•कह रहे थे ? आपको कैसे पता है ?" सोनिया की खोई चेतना जैसे लौट आई थी। उसका चेहरा पीला पडता गया और साँस भारी हो गई।

"मुझे मालूम है।"

"क्या हत्यारा पकडा गया है ?"

नही।"

"फिर आपको कैसे पता चला ?" सोनिया की आवाज बहुत धीमी पड गई।

रास्कोलनिकोव ने सोनिया को गौर से देखकर कहा,

"अनुमान लगा सकती हो" उसके चेहरे पर वही असहाय विकृत मुस्कान खेल रही थी।

सोनिया काप उठी। "लेकिन आप · आप इस तरह मुझे क्यो डरा रहे हो ?" सोनिया भोले ढग से मुस्कराई।

रास्कोलनिकोव ने सोनिया की आँखो मे आँखे डालकर कहा, "वह आदमी मेरा दोस्त है · तभी तो मुझे सब मालूम है· · उसका इरादा लिजावेता की हत्या करने का नही था · वह अचानक मारी गई ·· हत्यारा सिर्फ बुढिया की हत्या करने गया था · · उसी वक्त लिजावेता भी आ गई, हत्यारे ने उसे भी मार डाला।"

क्षणभर के लिए आतकपूर्ण खामोशी छाई रही। दोनो चुपचाप एक दूसरे का मुह ताकने लगे।

"क्यो ? अदाज नही लगा सकी ?" रास्कोलनिकोव ने इस तरह पूछा जैसे वह किसी मीनार पर से छलाँग लगा रहा हो।

"नही-नही · ·" सोनिया फुसफुसाई।

"जरा गौर से देखो ?" यह कहते ही फिर उसका हृदय घृणा से जम गया। उसे सोनिया के चेहरे मे लिजावेता की छवि दिखाई देने लगी। उसे याद आया, जब वह कुल्हाडी देखकर दीवार के पास सरक गई थी, उसके चेहरे पर बच्चो जैसा खौफ था, बिल्कुल छोटे बच्चो जैसा जब वे कोई डरावनी चीज को देखकर सहम जाते है और रुंआसे हो जाते है। सोनिया के चेहरे पर भी वैसा ही आतंक और निरीहता

थी। वह पलग से उठकर आहिस्ते आहिस्ते दूर चली गई थी, और टकटकी बाध कर रास्कोलनिकोव की तरफ देख रही थी। सोनिया को भयभीत देखकर रास्कोलनिकोव भी भयभीत हो उठा, वह भी उसी तरह सोनिया की तरफ देखने लगा, उसके चेहरे पर भी बिल्कुल वैसी-शिशुसुलभ मुस्कान थी।

"अब तुमने अदाज लगा लिया ?"

"हे ईश्वर !" सोनिया क्रदन कर उठी। उसने बिस्तर के तकियो मे अपना सर छिपा लिया, लेकिन अगले ही क्षण उसने उठकर अपनी पतली उगलियो मे रास्कोलनिकोव के दोनो हाथो को कस कर पकड लिया और कातर दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी, ताकि कही आशा की कोई किरण दिखाई दे जाये। लेकिन वहा आशा की कोई गुजायश नही थी। तो यह बात सच थी ? बाद में सोनिया को खुद अपने ऊपर ताज्जुब हुआ कि उसने इस बात पर विश्वास कैसे कर लिया, लेकिन सोनिया को आभास हुआ जैसे उसे पहले से ही इस बात की उम्मीद थी, लेकिन वह यह कैसे कहती ?

"बस सोनिया बहुत हो चुका ! मुझे मत सताओ ?" रास्कोलनिकोव ने मिन्नत की। उसने कभी कल्पना भी न की थी, कि वह इस ढग से सोनिया को सारी बात बतायेगा, लेकिन जो होना था वही हुआ।

सोनिया उछल कर खडी हो गई और अपने हाथ मलती हुई कमरे के बीचोबीच जाकर रुक गई। अगले ही क्षण वह आकर फिर रास्कोलनिकोव के पास बैठ गई, उसका कधा रास्कोलनिकोव के कधे से छू रहा था। सहसा वह इस तरह चौक पडी जैसे किसी ने उसे छुरा मार दिया हो और चीख कर रोस्कोलनिकोव के सामने घुटनो के बल बैठ ई। इसका कारण वह खुद भी नही जानती थी।

"आपने क्या किया—आपने अपने साथ यह क्या किया ?" वह

दुखी होकर बोली और रास्कोलनिकोव के गले से लिपट गई।

रास्कोलनिकोव पीछे हट गया और शोकपूर्ण मुस्कान के साथ सोनिया की तरफ देखने लगा।

"तुम भी अजब लडकी हो सोनिया 'ऐसी बात सुनकर भी तुम मुझे चूम रही हो और गले लग रही हो, तुम नही जानती तुम क्या कर रही हो।"

सोनिया ने रास्कोलनिकोव की बात अनसुनी कर दी, "ससार मे आप जैसा दुखी व्यक्ति कोई नही है" कहकर वह विक्षिप्त होकर रोने लगी।

सहसा एक अपूर्व अनुभूति से रास्कोलनिकोव का हृदय मृदु हो उठा। उसने भी इस अनुभूति के विरुद्ध सघर्ष नही किया। उसकी आँखो से दो आँसू निकल कर पलको मे आ गये।

"सोनिया तुम मेरा साथ नही छोड़ोगी न ?" उसकी आँखो मे आशा की किरण थी।

"नही, नही, कभी नही ! जहा आप जायेगे, मै भी जाऊँगी। हे ईश्वर ! मै कितनी अभागी हू ?· आपसे मेरा पहले परिचय क्यो नही हुआ ? आप पहले मेरी जिन्दगी मे क्यो नही आये ? हाय !"

"लो अब तो आ गया हूँ ?"

"हाँ, लेकिन अब हमे क्या करना चाहिए ?·· हम एक साथ रहेगे।" सोनिया फिर रास्कोलनिकोव से लिपट गई और बोली, "मै आपके साथ साईबेरिया चलूगी।"

यह सुनकर रास्कोलनिकोव चौक उठा। फिर उसके ओठो पर पहले की सी धृष्ट दुर्भावना भरी मुस्कान आ गई।

"शायद मै इतनी जल्दी साईबेरिया नही जाना चाहता सोनिया।"

सोनिया ने फौरन रास्कोलनिकोव की तरफ देखा, भावुकतापूर्ण सहानुभूति के बाद अब हत्या की कल्पना से उसका हृदय काप उठा।

रास्कोलनिकोव की आवाज मे उसे हत्यारे की आवाज सुनाई दी। वह चकित दृष्टि से रास्कोलनिकोव का मुँह ताकने लगी। बहुत से सवाल एक साथ उसके दिमाग मे चक्कर काटने लगे। वह सोच रही थी, "क्या यह व्यक्ति हत्यारा हो सकता है ? क्या यह सच है ?" उसे विश्वास न हुआ।

वह चकित स्वर मे बोली, "इसका क्या अर्थ हो सकता ? मैं कहाँ हूँ ? आप, आप जैसा आदमी · आपने भला ऐसा काम कैसे किया · इसका क्या अर्थ है ?

"लूटने के लिए · खैर जाने दो इस प्रसग को सोनिया · " रास्कोलनिकोव ने खीज कर जवाब दिया।

सोनिया स्तभित खडी रही, सहसा वह चिल्लाई, "आप भूखे थे ? · · अपनी मा की सहायता करने के लिए आपने ऐसा किया था न ? मैं समझ गई।"

"नही सोनिया नही · मै भूखा नही था · · मै मा की सहायता जरूर करना चाहता था · लेकिन असली बात यह नही है · · मुझे मत यत्रणा दो सोनिया · ·"

सोनिया ने अपनी मुट्ठिया भीच ली। "क्या यह सब सच हो सकता है ? इन बातो पर कौन विश्वास करेगा ? आप, जिन्होने अपनी आखिरी पाई तक दूसरो को दे दी, भला कैसे हत्या और लूटमार कर सकते है ? आह ! आपने जो रकम कैटेरीना इवानोव्ना को दी थी, क्या वह भी · वह रकम भी !"

"नही सोनिया, जब मैं बीमार था तो मेरी मा ने वह रकम मुझे भेजी थी। उसी दिन मैंने वह दे दी · राजुमिहीन इसका साक्षी है · वह मेरी अपनी रकम थी · तुम चिन्ता न करो।"

सोनिया विस्मितभाव से रास्कोलनिकोव की बातो को समझने की कोशिश करती रही।

रास्कोलनिकोव ने कुछ सोचते हुए कहा, "वह रकम • मै नही जानता वहाँ से कोई रकम मिली भी थी या नही मैंने उसके गले मे से चमडे का एक बटुआ उतारा था • •लेकिन उसके भीतर क्या था, यह मैंने नही देखा • मेरे पास समय नही था • बाकी चीजे, हार और गहनें मैंने अगले रोज सुबह व—के मैदान के पास एक पत्थर के नीचे दबा दिए—जो अभी भी वही पडे है • •"

सोनिया ने ध्यान से सुनने की कोशिश की और पूछा, "क्या इसीलिए आपने कहा था कि आपने किसी चीज को हाथ नही लगाया।" यह डूबते को तिनका के सहारा वाली बात थी।

"मालूम नही • मैंने अभी फैसला नही किया कि मै उस रकम को रखू गा या नही।" वह फिर किसी गहरी सोच मे डूब गया। अकस्मात वह चौक उठा और व्यग्यभरी मुस्कान के साथ बोला, "मै भी अजब बकवास कर रहा हूँ। क्यो ?"

सोनिया सोचने लगी, कही वह पागल तो नही हो गया ? लेकिन अगले ही क्षरण उसने यह विचार मन से निकाल दिया। "नही यह बात नही है।" वह ठीक से कुछ समझ नही पाई थी।

"जानती हो सोनिया, अगर भूख से मजबूर होकर मैंने हत्या की होती तो शायद इस वक्त मैं सुखी होता ! विश्वास करो !" रास्कोलनिकोव ने भेद भरी दृष्टि से सोनिया की तरफ देखा और अगले ही क्षरण निराश स्वर मे कहा, "लेकिन अगर मै अपनी गलती मान भी लूँ तो उससे तुम्हे क्या सरोकार ! इस मूर्खतापूर्ण जीत से तुम्हे क्या हासिल होगा ? आह सोनिया, क्या इसीलिए आज मैं तुम्हारे पास आया हूँ ?"

सोनिया ने फिर कुछ कहना चाहा लेकिन वह खामोश रही।

"कल मैंने तुम्हे अपने साथ चलने का आग्रह किया था, क्योकि ससार में अब केवल तुम ही ऐसी हो जिसे मै अपना कह सकता हूँ।"

"कहाँ चलेगे ?" सोनिया ने भीरु स्वर मे पूछा ।

"घबराओ नही । हम चोरी और हत्या नही करेगे ।" रास्कोलनिकोव ने कटु मुस्कान के साथ कहा, "हम दोनो कितने भिन्न है ··· जानती हो सोनिया, मुझे अभी इसी क्षण आभास हुआ है कि मै कल तुम्हे कहाँ ले जाना चाहता था ! मै कल तुम्हे सिर्फ एक ही बात कहने आया था, मुझे छोडना नही । सोनिया तुम मेरा साथ तो नही छोड दोगी ?"

सोनिया ने कसकर रास्कोलनिकोव का हाथ पकड लिया ।

रास्कोलनिकोव ने आहत स्वर मे कहा, "आह ! मैने यह बात तुम्हे क्यो बताई ? सोनिया, मै जागता हूँ तुम मुझसे जबावदेही करना चाहती हो, लेकिन मै तुम्हे क्या जवाब दूँ ? तुम समझ नही सकोगी, तुम्हे दु ख होगा·· मेरी वजह से ! लो तुम फिर रो रही हो और मुझे गले लगा रही हो ? किसलिए ? शायद इसलिये, क्योकि मै अपनी वेदना के भार को नही उठा सका और अपना भार तुम्हे सौपकर हल्का होना चाहता हूँ ? तुम मुझ जैसे नीच व्यक्ति से प्रेम कर सकोगी ।"

"लेकिन आप भी तो इतनी यत्रणा झेल रहे है ।"

फिर उसी अनुभूति ने आकर रास्कोलनिकोव के हृदय को जकड लिया और कोमल बना दिया ।

"सोनिया मै दिल का बुरा आदमी हूँ, इस बात को याद रखना ! मै बुरा हूँ इसीलिए मै तुम्हारे पास आया हू । मेरी जगह कोई और होता तो न आता । लेकिन मै बुजदिल हूँ· नीच और कमीना । लेकिन··जाने दो इस बात को । मै तुम से कुछ कहना चाहता हूँ, समझ मे नही आता बात कैसे शुरू करूँ ।"

यह कह कर वह फिर सोच में डूब गया और कुछ देर बाद बोला, "आह ! हम दोनो मे कितनी असमानता है— :फिर मै तुम्हारे

पास क्यो आया ? मै अपने को कभी माफ नही कर सकूँगा ।"

"आपने आकर अच्छा ही किया। मेरे लिए यह सब जानना बेहतर होगा ।"

रास्कोलनिकोव ने वेदना भरी आँखो से सोनिया की तरफ देखा और जैसे किसी नतीजे पर पहुँचते हुये कहा, "हाँ दरअसल बात यही थी · मै नैपोलियन बनना चाहता था। इसीलिए मैने हत्या की, अब तुम्हारी समझ मे आया ? · "

"नही", सोनिया ने भोलेपन से उत्तर दिया, "आप मुझे बताइये, मै समझ जाऊँगी। अपने मन के भीतर सब समझ जाऊँगी ।"

"समझ जाओगी ? अच्छा, देखेगे ।" वह फिर सोच मे डूब गया।

"बात यूँ हुई— एक दिन मैने अपने आप से सवाल किया कि मान लो अगर नैपोलियन मेरी जगह होता तो क्या करता ? तूलो, मिश्र और मोत ब्लाक और अन्य वैभवशाली चीजो की बजाय अगर उसे अपने भविष्य की सफलता के लिए किसी हास्यास्पद, खूसट, सुदखोर बुढिया की हत्या करके उसके सदूक मे से धन लूटना पडता, और इसके सिवाय दूसरा कोई चारा भी न होता तो क्या वह ऐसा कर सकता था ? ऐसे पापपूर्ण और क्षुद्र काम से क्या उसकी अन्तर्रात्मा न कापती ? सच पूछो तो मैने इस 'सवाल' पर इतना सोचा कि मुझे अपने ऊपर शर्म आने लगी। आखिर (सहसा) मुझे आभास हुआ कि ऐसा करने मे नैपोलियन को रत्तीभर सकोच न होता ··यह काम स्मरणीय है या नही, शायद यह ख्याल तक उस के दिमाग मे न आता— अगर नैपोलियन के सामने कोई दूसरा रास्ता न होता तो वह बिना सोचे समझे एक क्षण में बुढिया का गला घोट डालता। मैने भी नैपोलियन का अनुसरण किया और सोचे समझे बगैर ही बुढिया की हत्या कर डाली। बिल्कुल यही हुआ ! तुम्हे यह बात विचित्र लग रही है ? हाँ सोनिया, सबसे बडी

विचित्रता तो यही है ।"

सोनिया को इस बात मे कोई विचित्रता नही दिखाई दी थी। उसने धीमे और भीरु स्वर मे कहा, "आप मुझे साफ साफ बताइए बिना मिसाल दिए।"

रास्कोलनिकोव ने उदास नजरो से सोनिया को देखा और उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया।

"तुम ठीक कहती हो सोनिया। यह सब निरी बकवास है। तुम्हे मालूम ही होगा कि मेरी माँ कितनी गरीब है। मेरी बहिन ने सयोगवश ऊँची शिक्षा पाई है फिर भी उसे गवर्नेस का काम करना पडा। मै ही उन दोनो की उम्मीदो का सहारा हूँ। मै यूनिवर्सिटी मे पढता था, लेकिन मुझे पढाई छोडनी पडी। मान लो अगर मै इसी तरह गुजारा करता रहता तो दस बारह साल मे शायद एक हजार रूबल सालाना पाने वाला अध्यापक या क्लर्क बन जाता, (यह बात उसने इस तरह कही जैसे कोई सबक दुहरा रहा हो) तब तक मेरी माँ दु ख और चिता से घुल कर मर जाती, मै उसे कोई भी आराम नही दे सकता था···और मेरी बहन की हालत शायद और भी बदतर होती। जिन्दगी भर उदासीनता बरतना मुश्किल है, कोई कैसे अपनी माँ को भूल सकता है ? बहन की बेइज्जती कैसे बर्दाश्त कर सकता है ? और करे भी क्यो ? क्या आदमी उनको असहाय छोडकर सर पर बीवी बच्चो का बोझ उठाये ? वे बेचारी फिर कौडी कौडी की मुहताज हो जाये ? इसलिए मैने सोचा कि बुढिया के धन से कुछ साल तक अपनी पढाई का खर्च चलाऊँगा और उसके बाद नया स्वतन्त्र जीवन शुरू करूँगा। मैने अपने भविष्य की विस्तृत योजना बनाई थी। बस ··इतना ही · निश्चय ही बुढिया की हत्या करके मैनें भारी गलती की···बस बहुत हो चुका।"

अन्तिम पक्तिया बोलते बोलते वह थक गया और सर झुका

कर बैठ गया ।

सोनिया आकुल होकर बोली, "नही नही यह बात नही है । कोई भला कैसे नही यह ठीक नही, यह ठीक नही ।'

"तुमने खुद देख लिया कि यह ठीक नही है । लेकिन मैंने सच्ची बात कह दी है ।"

"क्या यही सच हो सकता है ? हे ईश्वर !"

"सोनिया मैने सिर्फ एक जूँ को मारा है—बेकार नुकसान पहु-चाने वाली घृणित जूँ को ।"

"एक इन्सान कभी जूँ हो सकता है ?"

"मै भी जानता हूँ कि वह जूँ नही थी" रास्कोलनिकोव ने विचित्र ढग से सोनिया की तरफ देखा । "लेकिन सोनिया मै बडी देर से बकवास कर रहा हूँ · तुम ठीक कहती हो । इसके पीछे और ही कारण थे । मैने किसी से इतनी देर बाते नही की··सोनिया··· मेरा सर बुरी तरह से दुख रहा है ।"

उसकी आखे ज्वर की गर्मी मे चमक रही थी । वह फिर सरसाम की सी हालत मे था । उसके कांपते हुए ओठो और चेहरे की उत्तेजना से उसकी थकान का आभास मिल रहा था । सोनिया उसकी मानसिक वेदना को समझती थी । सोनिया का सर भी चकराने लगा था । रास्कोलनिकोव बडी विचित्र बाते कर रहा था । सोनिया को सारी स्थिति मालूम हो गई थी, लेकिन··· "हे ईश्वर ! यह सब कैसे हो सकता है ।" कहकर वह दुःख से अपने हाथ मलने लगी ।

सहसा एक नये विचार ने रास्कोलनिकोव के मन को उत्तेजित कर दिया । वह बोला, "नही सोनिया यह नही, यह नही ··· बेहतर होगा अगर तुम कल्पना करो कि मैं दभी, ईर्ष्यालु, दुष्ट और नीच आदमी हूँ · करीब-करीब पागल भी हूँ (बात खुलकर क्यों न की जाये । लोग अभी से कह रहे है कि मै पागल हूँ) मैने तुम्हे अभी

बताया कि मैं अपनी पढाई जारी नही रख सका। शायद मै रख भी सकता। मा मुझे फीस की रकम भेज देती और मै अपनी कमाई से खाने, कपडो और जूतो का खर्च निकाल लेता। ट्यूशनें भी मिलती थी तो आधे रूबल की।, राजुमिहीन भी तो काम करता है। लेकिन मै चिडचिडा हो गया और यह सब मुझ से न हुआ (चिडाचिडापन ही उपयुक्त शब्द है) मै मकडे की तरह अपने कमरे मे बैठा रहता था, तुम मेरी माद मे जाकर खुद यह सब देख आई हो ' ' जानती हो सोनिया, नीची छते और छोटे कमरे मनुष्य के मन और आत्मा को सकीर्ण बना देते है। आह मुझे उस कोठरी से कितनी नफरत थी। फिर भी मै उसे नही छोडता था। जानबूझकर कई-कई दिनो तक मै घर से बाहर नही निकलता था, न ही कोई काम करता था। यहाँ तक कि मैने खाना-पीना भी छोड रखा था और निकम्मा लेटा रहता था। अगर नस्तास्या खाने की कोई चीज ले आती थी तो मै खा लेता था, वरना दिन भर भूखा पडा रहता था। जानबूझ कर चिडचिडेपन की वजह से मै खाना नही माँगता था। रात को मेरी कोठरी मे अधेरा रहता था और मै मोमबत्तियो तक का प्रबन्ध नही करता था। मुझे पढाई जारी रखनी चाहिए थी, लेकिन मैने अपनी किताबे तक बेच डाली। मेरी मेज पर रखी कॉपियो पर एक इच मोटी मिट्टी की तहे जमी हुई है। मुझे चुपचाप लेटना और सोचना अधिक पसद था। मै लगातार सोचता रहता ' हर वक्त मै अजब सपने देखता रहता था। वे सपने क्या थे यह बताने की जरूरत नही। तभी मुझे लगा कि ' नहीं-नही, मै फिर गलत कह रहा हूँ। मैने अपने से पूछा, (यह जानते हुए भी कि और लोग इतने बेवकूफ है) कि मै उनसे ज्यादा अक्लमद क्यो नही हूँ ? मैनें देखा सोनिया, कि अगर कोई व्यक्ति इस इन्तजार मे रहे कि समाज के सभी प्राणी अक्लमद हो जाये तो उसमे बहुत समय लगेगा ' 'बाद मे मेरी समझ मे आ गया कि ऐसा

कभी नही होगा, लोग कभी नही बदलेगे, न कोई मानव-स्वभाव को बदल ही सकता है। इस पर समय नष्ट करने से कोई लाभ नही। हा यह सच है। यह मानवप्रकृति का नियम है सोनिया बिल्कुल यही है · अब मै जान गया हू सोनिया कि जिसका मन और आत्मा शक्तिशाली है, उसी का बाकी लोगो पर बस चलता है। जो साहसी है, वह लोगो की नजरो मे सही भी है। जो आदमी जितनी चीजो को क्षुद्र समझता है, समाज उसी को न्यायकर्ता बनाता है और जो साहसी होता है, वही सभी होता है। सदा से यही होता आया है और सदा होता रहेगा। जो इस सत्य को नही देखता, वह अन्धा है !"

सोनिया उसकी बात समझ पाई या नही, इसकी परवाह रास्कोलनिकोव को अब नही रही थी। वह फिर बुखार मे बहक रहा था। उस पर एक अवसाद पूर्ण उन्माद छा गया था (बहुत अर्से से उसने किसी से बाते नही की थी) सोनिया को लगा जैसे अवसाद ही रास्कोलनिकोव के जीवन का सिद्धान्त और विश्वास बन गया था।

वह अधीर स्वर मे सोनिया को समझाने लगा, "मै इस रहस्य को समझ गया हूँ सोनिया, ताकत उन्ही को मिलती है जो झुककर उसे हाथो में उठा लेते है। जरूरत सिर्फ एक ही बात की है, व्यक्ति मे साहस होना चाहिए। जिन्दगी मे पहली बार मेरे मन मे एक विचार आया जो कभी किसी ने नही सोचा था। मैने सोचा कितनी विचित्र बात है कि इस पागल ससार मे एक भी ऐसा व्यक्ति नही जो साहस से सब चीजो पर लात जमा सके। मै···मै साहसी बनना चाहता था, इसलिए मैने बुढिया को मार डाला। मै केवल साहस चाहता था सोनिया। यही एकमात्र कारण था।"

"चुप चुप ! आपने ईश्वर को छोड दिया है इसलिए ईश्वर ने आपको शैतान के हवाले कर दिया है, और आपको पीडा झेलनी पड रही है।" सोनिया ने मुट्ठियाँ भीचते हुए कहा।

"तो सोनिया, कोठरी मे रात के अन्धेरे मे मै जो सोचा करता था, उसके पीछे शैतान की प्रेरणा थी, क्यो ?

"हँसो नही ! नास्तिक ! आप नही समझते ! हे ईश्वर ये क्यो नही समझते ।"

"हुश सोनिया ! मैं हँस नही रहा । मै खुद जानना हूँ कि शैतान मुझे गुमराह कर रहा था । चुप, सोनिया चुप मै सब कुछ जानता हूँ । अधेरे मे लेटकर मैने ये सारी बाते सोची थी · मैने हर बात पर अपने से बहस की है, सवाल जवाब किया है । मुझ से क्या छिपा है ? इन सारी बातो की पुनरावृत्ति करते समय मुझे कितनी ग्लानि होती थी । मै इस सारे प्रसग को भूलकर जिन्दगी को नये सिरे से शुरू करना चाहता हूँ सोनिया, सोचने से मुक्ति पाना चाहता हूँ । तुम यह तो नही समझती कि मैने बेवकूफो की तरह बिना सोचे विचारे यह सब किया । मैने अक्लमन्दी से सोच समझकर ये सब किया, यही तो मेरी तबाही का कारण बना । यह मत सोचना कि मैने अपने से यह सवाल नही पूछा कि मुझे शक्ति हासिल करने का अधिकार है या नही । निश्चय ही यह अधिकार मेरे पास नही था— या यह कि इन्सान जू है या नही कम-से-कम मेरे लिये तो नही है यह साबित हो गया है— लेकिन हो सकता है, जो आदमी बिना सवाल पूछे सीधा अपनी मजिल तक पहुँच जाता है उसको यह सब नही सोचना पडता · इस बीच मै यही सोचता रहा था कि नैपोलियन अगर मेरी जगह होता तो वह ऐसा करता या नही । मै अच्छी तरह जानता था कि मै नैपोलियन नही हूँ । सोनिया विचारो के अन्तर्द्वन्द मे मुझे बडी पीडा सहनी पडी, मै इन कारणवाद की झझटो से मुक्ति पाकर अपनी खातिर हत्या करना चाहता था । मै अपने से भी झूठ नही बोलना चाहता था । माँ की मदद के लिये मैने हत्या नही की थी, न मैने धन जमा करने और मानवता की भलाई के लिए ही ऐसा किया था । यह सब खुराफात है ।

मैंने सिर्फ अपने लिये हत्या की थी। "मै इससे दूसरो की भलाई करूंगा, या मकडे की तरह दूसरे लोगो को अपने जाले मे फसाकर उनका शोषण करूँगा, ये बाते उस समय मेरे मन मे नही आ सकती थी ·· और सोनिया उस वक्त मुझे पैसा नही बल्कि कुछ और ही चाहिये था अब मै सब जान गया हूं मुझे समझने की कोशिश करो। शायद मै कभी भी दोबारा हत्या न कर सकता। मै कुछ और ही मालूम करना चाहता था। इसी बात ने मुझे प्रेरणा दी थी। मै तब फोरन ही यह जानना चाहता था कि मै इन्सान हू या सब लोगो की तरह सिर्फ एक जूँ हूँ ? मै बाधाओ को हटा सकता हूँ, सफलता को हाथो मे उठा सकता हूँ--डरपोक हूँ या मुझे अधिकार है · ?"

"मारने का? हत्या का अधिकार !" सोनिया ने मुट्ठियाँ भीच कर पूछा।

"छिः सोनिया, मुझे बीच मे मत टोको। मै सिर्फ एक बात साबित करना चाहता हूँ—वह यह है कि उस वक्त शैतान ने मुझे प्रेरित किया था, लेकिन अब मै जान गया हूँ कि मुझे उस रास्ते पर जाने का कोई अधिकार नही था, क्योकि मै भी सब लोगो की तरह सिर्फ जूँ हूँ। शैतान मेरी हसी उडा रहा था, इसलिये मै तुम्हारे पास आया हूँ। अपने मेहमान का स्वागत करो। अगर मै जूँ न होता तो क्या तुम्हारे पास आता। सुनो, जब मै बुढिया के यहाँ गया था, उस वक्त मेरा इरादा सिर्फ 'आजमाने' का था ··यकीन करो।"

"आपने उसकी हत्या तो की थी।"

"लेकिन वह हत्या मैंने कैसे की ? क्या लोग इसी तरह हत्या करते है ? जिस तरह मै हत्या करने गया था क्या उस तरह जाया जाता है। किसी दिन मै तुम्हे बताऊँगा कि मै कैसे गया था। मैने बुढिया की नही बल्कि अपनी हत्या की है, अपने आपको सदा के लिए खत्म कर दिया है ··लेकिन बुढिया की हत्या शैतान ने की, मैने नही। बस, बस

सोनिया, मुझे इसी तरह रहने दो, इसी तरह रहने दो।" रास्कोलनिकोव के स्वर मे गहरी वेदना थी। उसने कुहनियाँ घुटनो पर टिकाकर अपना चेहरा हाथो से ढक लिया जैसे उसे अपने पाप पर पश्चाताप हो रहा हो।

"कितनी यन्त्रणा हो रही है आपको।" सोनिया ने विलाप किया।

"तुम बताओ अब मै क्या करूँ?" सहसा रास्कोलनिकोव ने सर ऊपर उठाकर पूछा। विषाद से उसका चेहरा विकृत और कुरूप हो उठा था।

सोनिया की आसूभरी आखो मे एक चमक आ गई और वह फुर्ती से उठ खडी हुई। "आपको क्या करना चाहिये। उठिये!" (सोनिया ने जाकर उसका कधा पकड लिया—रास्कोलनिकोव उठ खडा हुआ और चकित दृष्टि से सोनिया को देखने लगा) "फौरन इसी क्षण चौराहे पर जाकर धरती को चूमिये जिसकी पवित्रता आपने नष्ट की है और ऊँची आवाज मे सारी दुनिया के आगे सर झुकाकर कहिये, "मै हत्यारा हूँ।" ईश्वर फिर आपको नई जिन्दगी देगा। आप जायेगे? आप जायेगे न!" सोनिया ने अपने कापते हुए हाथो मे रास्कोलनिकोव के हाथो को लेकर दबाया और ज्वलत दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगी।

रास्कोलनिकोव सोनिया के इस आकस्मिक उन्माद पर भौचक्का रह गया।

"तुम चाहती हो मै साइबेरिया जाऊँ? अपने को पुलिस के हवाले कर दूँ?"

"पीडा सहकर ही आप अपने पाप को धो सकते है—"

"नही मै पुलिस के पास नही जाऊँगा, सोनिया।"

"लेकिन आप इस तरह कैसे ज़िन्दा रह सकेगे? किसलिये जियेगे? यह अब कैसे सभव है? आप अपनी माँ से कैसे बात कर सकते है? हाय उन लोगो का अब क्या होगा? लेकिन मै क्या कह

रही हूँ ? आपने अपनी मा और बहन का साथ तो पहले ही छोड दिया है। हे ईश्वर ! आपको सब कुछ मालूम है। अब आप अपने से कैसे जिन्दा रहेगे ? अब आपका क्या होगा ?"

"बच्ची मत बनो सोनिया, मैने पुलिस का क्या बिगाडा है जो मै उसके पास जाऊँ ? जा कर मै क्या कहू ? यह केवल भ्रम हे • वे खुद लाखो इन्सानो को बर्बाद करते है और इसे नेक काम समझते है। वे भी तो लपट और बदमाश है सोनिया, मै भला उनसे क्या कहूँ ? यह कि मैने बुढिया की हत्या की है और डर के मारे चीजे किसी पत्थर के नीचे छिपा दी है ?" रास्कोलनिकोव ने कटु मुस्कान के साथ पूछा "तब पुलिस मेरा मजाक उडायेगी और मुझे बेवकूफ कहेगी। डरपोक और उसके ऊपर बेवकूफ ! वे लोग असलियत को कभी नही समझेगे, न ही वे इस काबिल है कि समझे। मै उनके पास क्यो जाऊ ? मै नही जाऊगा। बच्ची मत बनो सोनिया • "

सोनिया ने हाथ फैलाकर मिन्नत की, "आप यह सब बर्दाश्त नही कर पायेगे।"

रास्कोलनिकोव ने कुछ सोचकर कहा, "शायद मैने अपने से अन्याय किया है, शायद मै इन्सान हूँ, जूँ नही, मैने जल्दबाजी में अपने को दोषी ठहराया है। मै फिर संघर्ष करूँगा।" उसके ओठो पर अहकार भरी मुस्कान छा गई।

"जिन्दगी भर इतना भारी बोझ आप उठायेगे ?"

'मुझे इसकी आदत पड जायेगी। रोना बद करो। यह काम की बाते करने का समय है। मै तुम्हे बताने आया हूँ कि पुलिस मेरा पीछा कर रही है • •"

"हाय !" सोनिया भय से चिल्लाई।

"तुम चिल्लाई क्यो ? तुम मुझे साइबेरिया भेजना चाहती थी न ! फिर खुद क्यो डर गई। मै साफ साफ बता दूँ कि मै अपने को पुलिस

के हवाले नही करूँगा। पुलिस मेरा कुछ नही बिगाड सकती। उसके पास कोई सबूत नही है। कल मै खतरे मे था और मुझे लगा था कि मै पकडा जाऊँगा लेकिन आज स्थिति बेहतर है। पुलिस की सारी दलीलो और अभियोगो को मै अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर सकता हूँ। समझी ! मै यह जरूर करूँगा क्योकि मैने हत्या से सबक सीखा लिया है। लेकिन पुलिस मुझे गिरफ्तार जरूर करेगी। किसी कारणवश आज मै बच गया हूँ लेकिन हो सकता है कि आज ही मै गिरफ्तार हो जाऊँ···इसमे चिता की कोई बात नही सोनिया, मे फिर छूट जाऊँगा ·· मेरे खिलाफ कोई सबूत नही, न ही हो सकता है मै कसम खाकर कहता हूँ। किसी आदमी को मामूली शक पर सजा नही दी जा सकती। बस · मैने सिर्फ तुम्ही को यह बात बताई है · मै किसी तरह अपनी माँ और बहन को भी यह बताने की कोशिश करूँगा ताकि वे भयभीत न हो जाये मेरी बहन का भविष्य सुरक्षित है। जहाँ तक मेरा ख्याल है मा का भी होना चाहिये · बस यही कहना था। लेकिन सावधान रहना। जब मै जेल मे रहूँगा तो तुम मुझसे मिलने आओगी ?"

"मै आऊँगी, जरूर आऊँगी।"

दोनो उदासभाव से पास-पास बैठे थे। लगता था किसी तूफान ने उन्हे किसी निर्जन किनारे पर खडा कर दिया है। रास्कोलनिकोव को महसूस हुआ कि सोनिया उससे बहुत प्रेम करती है, सहसा उसे यह लगा कि वह इस प्रेम की पीडा और बोझ को नही बर्दाश्त कर सकेगा। प्रेम मे कितना विचित्र और भयकर सवेदन था। सोनिया के घर आने से पहले उसने महसूस किया था कि अब सब कुछ सोनिया पर ही निर्भर करता है। उसे उम्मीद थी कि उसकी यत्रणा कुछ हल्की हो जायेगी, लेकिन अब सोनिया के हृदय का सारा प्रेम पाकर उसे लगा जैसे वह पहले से कही अधिक दुखी है। उसने कहा,

"सोनिया, बेहतर होगा अगर तुम जेल मे मुझसे न मिलो ।"

सोनिया ने कोई उत्तर न दिया । वह रो रही थी । इसी तरह कई मिनिट गुजर गये ।

सहसा सोनिया ने पूछा, "आपके पास कोई सलीब है ?"

रास्कोलनिकोव इस सवाल को नही समझ सका ।

"होगा कैसे ? लीजिये यह लकडी का सलीब । मेरे पास लिजावेता का तॉबे का सलीब है। मैंने उसे ईसा मसीह की मूर्ति दी थी और उसने मुझे अपना सलीब दिया था। मै अब लिजावेता का सलीब पहनूँगी । आप इसे ले ले । यह मेरा है ' ले लीजिये हम दोनो पीडा सहेगे और सलीब का भार उठायेगे ।"

"लाओ" रास्कोलनिकोव ने कहा । वह सोनिया के दिल को चोट नही पहुँचाना चाहता था । लेकिन उसने फौरन अपना हाथ पीछे हटा लिया और सोनिया का मन रखने के लिये कहा, "अभी नही—फिर कभी ले लूगा ।"

"हॉ, बेहतर होगा जब आप पीडा का सामना करने जाये, तब इस सलीब को पहन कर जाये । आप मेरे पास आइयेगा, मै अपने हाथो से आपके गले मे यह सलीब पहना दूँगी । फिर हम एक साथ प्रार्थना करेगे और इकट्ठे चलेगे ।"

इसी समय किसी ने तीन बार दरवाजा खटखटाया ।

"मै भीतर आ सकता हूँ सोफिया सेम्योनोवना ?" किसी की परिचित, शिष्ट आवाज सुनाई दी ।

सोनिया भयभीत होकर दरवाजे की तरफ भागी । बाहर लेब्जियात्नीकोव खडा था ।

५

लेब्जियात्नीकोव घबराया सा मालूम होता था। उसने कहा, "मै तुम्हारे पास आया हूँ ··माफ करना," सहसा उसने रास्कोलनिकोव को सबोधित करके कहा, "मेरा कोई ऐसा···वैसा मतलब नही था ·· मैने सोचा कैटेरीना इवानोव्ना पागल हो गई है।"

सोनिया चीख पडी।

"मालूम तो ऐसा ही होता है। लेकिन · हम खुद परेशान है कि क्या करना चाहिये। तुम समझ गई न ! कैटेरीना इवानोव्ना वापिस आ गई थी—शायद उन्हे मारापीटा गया था और उनके साथ दुर्व्यवहार भी हुआ था।··· वे भाग कर तुम्हारे पिता के अफसर के पास गई थी। वे उस समय घर मे नही थे, बल्कि किसी दूसरे जेनरल के यहाँ खाना खा रहे थे।··· कैटेरीना इवानोव्ना जेनरल के घर पहुँच गई और जिद करके उन्होने अफसर को बाहर भी बुलवा लिया। इसके बाद क्या हुआ तुम कल्पना कर सकती हो। वे खुद कहतीं है कि उन्होने अफसर को गालियाँ दी थी और उसपर कोई चीज़ फेंकी भी थीं ·· इस पर सहज ही विश्वास किया जा सकता है। ताज्जुब है कि वे गिरफ्तार क्यो नही की गई ? मेरी समझ मे नही आता ! अब

वे सबको, यहाँ तक कि अमेलिया इवानोव्ना को भी यह सारी घटना सुना रही है। लेकिन वह बार बार चीख रही है और फर्श पर लोट रही है · उनका कहना है कि सबने उनका साथ छोड दिया है इसलिये वे एक बाजा लेकर अपने बच्चो समेत गली मे निकल जायेगी और बच्चो को नचा और गवा कर चदा जमा करेगी। और हर रोज जेनरल की खिडकी के नीचे जाकर खडी होगी, ताकि 'सब लोग देख ले कि एक भद्र परिवार के बच्चे, जिनका पिता अफसर था, भीख माँग रहे है।' कैटेरीना इवानोव्ना ने बच्चो को वहुत पीटा है और वे सब के सब रो रहे है। वे लिदा को 'मेरा गाव' गीत गाना सिखा रही है, और लडके को और पोलेका को नाचना। घर के कपडो को फाडकर उन्होने बच्चो के लिये अभिनेताओ की सी छोटी छोटी टोपिया सी दी है और वे बाजे की जगह टीन का बर्तन लेकर बाहर निकलना चाहती है··· वे किसी की बात नही सुनती ··जरा सारी स्थिति की कल्पना करो ! हद हो गई !"

लेब्जियात्नीकोव शायद बात जारी रखता— लेकिन सोनिया अपना हैट और लबादा उठाकर बाहर भागी। रास्कोलनिकोव और लेब्जियात्नीकोव भी उसके पीछे पीछे चले गये।

सडक पर पहुँच कर लेब्जियात्नीकोव बोला, "कैटेरीना इवानोव्ना सचमुच पागल हो गई है। मै सोनिया को डराना नही चाहता था, इसलिये मैने कह दिया कि वे पागलों की सी बाते कर रही है। सुना है कि तपेदिक मे कई बार दिमाग मे भी ग्रथियाँ निकल आती है। दुर्भाग्य से मुझे डाक्टरी का कोई ज्ञान नही है। मैने उन्हे बहुत समझाया लेकिन वे सुनती ही नही थी।"

"क्या तुमने उनसे ग्रथियो की चर्चा की थी ?" रास्कोलनिकोव ने पूछा।

"नही, यह बात उन्हे हरगिज समझ मे न आती ! लेकिन मै

कहता हूँ कि अगर आप किसी व्यक्ति को विश्वास दिला दे कि वह अकारण ही रो रहा है तो वह चुप हो जायेगा। यह मानी हुई बात है। क्यो तुम्हारी क्या राय है ?"

"अगर ऐसा होता तो जिन्दगी जरूरत से ज्यादा आसान हो जाती।"

"माफ करना, कैटेरीना इवानोव्ना तो इस बात को नही समझ सकेगी, लेकिन जानते हो पैरिस मे डाक्टर लोग अनुसधान कर रहे है कि तर्क की शक्ति से पागलपन का इलाज किया जा सकता है। एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक को, जिसकी मृत्यु हो चुकी है, इस सिद्धान्त मे पूरा विश्वास था। उसका ख्याल था कि पागलपन कोई शारीरिक व्याधि नही है, बल्कि विवेक और तर्क शक्ति का असतुलित हो जाना है। उसने पागलो को उनकी गलती समझाई और वे ठीक हो गये। लेकिन उसने नली से उनके शरीर मे पानी पहुँचाया था। मरीज तर्क शक्ति से ठीक हुए य। दूसरे इलाज से यह बताना कठिन है · "

रास्कोलनिकोव का ध्यान बातो मे नही था। ज्योही उसके घर का फाटक नजदीक आया वह लेब्जियात्नीकोव से विदा लेकर भीतर चला गया। लेब्जीयात्नीकोव चौंक पडा और आगे चला गया।

रास्कोलनिकोव अपनी कोठरी के बीचो बीच खडा हो गया। वह वापिस किसलिये आया था ? उसने दीवार के फटे हुए पीले कागज को, फर्श पर जमी धूल को और अपने सोफे को देखा · आगन मे लगातार खटखट की आवाज सुनाई दे रही थी, जैसे कोई हथौडी चला रहा हो··· उसने खिडकी के पास पजो के बल खडे होकर गौर से देखा लेकिन आँगन खाली था। बॉई तरफ के घर मे कुछ खिडकियाँ खुली थी, जिनपर मुझाये हुए जिरेनियम के फूलो के गमले रखे थे · ये सारी चीजे उसे याद थी ··· वह फिर सोफे पर आकर बैठ गया।

जिन्दगी मे उसे इतना भयकर अकेलापन कभी महसूस नही

हुआ था ।

फिर उसे लगा कि उसे सोनिया से नफरत होती जा रही है क्योकि उसने सोनिया को दुख दिया था ।

"मै सोनिया के पास उसके आँसुओ की भीख माँगने किसलिये गया था ? भला सोनिया की जिन्दगी मे जहर घोलने की क्या जरूरत थी ! ओह कैसा कमीनापन है !"

"मै अकेला रहूँगा, वह जेल मे साथ नही आयेगी" उसने निश्चय किया।

पाँच मिनट के बाद उसने मुस्करा कर सर ऊपर उठाया। एक विचित्र ख्याल उसके दिमाग में आया था।

"शायद साईबेरिया जाना ही बेहतर होगा।"

न जाने वह सोच मे डूबा कितनी देर तक वहाँ बैठा रहा। सहसा दरवाजा खुला और दूनिया भीतर आई। पहले तो वह दरवाजे के पास ठिठक कर भीतर देखती रही, जैसा रास्कोलनिकोव ने सोनिया के दरवाजे पर खडे होकर किया था; फिर वह आकर सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई। रास्कोलनिकोव शून्य दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगा।

"नाराज न होना भाई। मै सिर्फ एक मिनट के लिये यहाँ आई हूँ" दूनिया बोली।

उसका चेहरा सजीदा था, आँखो मे कोमलता और चमक थी। रास्कोलनिकोव समझ गया कि दूनिया भी स्नेहवश उसके पास आई है।

"भाई, अब मै सब कुछ जान गई हूँ। दिमित्री प्रोकोफिच ने मुझे सारी बात बता दी है। पुलिस क्षुद्र सदेह के कारण तुम्हे सता रही है। दिमित्री प्रोकोफिच का कहना है कि खतरे की कोई बात नही है और तुम व्यर्थ ही आतकित हो रहे हो। मै जानती हूँ तुम्हे इस सारी बात पर कितना गुस्सा है। कही यह गुस्सा तुम्हारे मन पर स्थायी प्रभाव

न छोड जाये, मुझे सिर्फ इसी बात का डर है। तुमने हमसे रिश्ता तोड लिया है, मुझमे इतना साहस नही कि तुम्हारी बुराइयो की तरफ देखूँ। मैंने तुम्हे दोष दिया, इसके लिये मै माफी चाहता हूँ। मुझे लगता है कि अगर मुझे भी तुम्हारे जितनी बडी तकलीफ होती तो मै भी सबसे अलग अलग रहती। मै माँ से इसकी चर्चा कभी नही करूँगी और लगातार उसे समझाती रहूँगी कि तुमने कहा है कि तुम जल्द ही आओगे। माँ की चिन्ता मत करना। मैं उसे तसल्ली दूँगी लेकिन देखना कही माँ का धीरज न टूट जाये। कम से कम एकबार जरूर आना। याद रखना वह तुम्हारी माँ है। मैं सिर्फ यह कहने आई हूँ (यह कहकर दूनिया उठने लगी) कि अगर तुम्हे कभी मेरी जरूरत पडे ·· मेरी जिन्दगी की या किसी और चीज की ·· तो मुझे बुला लेना, मै आऊँगी। गुड बाई।"

वह दरवाजे की ओर बढी।

"दूनिया!" रास्कोलनिकोव ने बहन को रोककर कहा, "यह आदमी राजुमिहीन, दिमित्री प्रोकोफिच बडा अच्छा आदमी है।"

दूनिया के गाल लाल हो गये। उसने पूछा, "फिर?"

"वह योग्य, मेहनती और ईमानदार है·— वह सच्चा प्रेम दे सकता है · गुड बाई दूनिया!"

दूनिया का चेहरा सुर्ख हो गया और वह चौककर बोली, "लेकिन इसका क्या मतलब है भाई? क्या हम सचमुच हमेशा के लिये अलग हो रहे है जो तुम मुझे इस तरह का विदाई का सदेश दे रहे हो?"

"कोई हर्ज नही · गुड बाई।"

वह जाकर खिडकी के आगे खडा हो गया। दूनिया क्षणभर के लिये चिन्तातुर दृष्टि से भाई को देखती रही, फिर दुखी होकर वहा से चली गई।

नही, उसन बहन से कठोरता नही बरती थी। क्षणभर के लिये

(दूनिया के जाने से पहले) उसके जी मे आया था कि दूनिया को गले लगाकर विदा ले, लेकिन उसे दूनिया का हाथ तक छूने की हिम्मत नही पडी थी ।

"बाद मे जब उसे याद आयेगा कि मैने गले लगाकर उसे चूमा था तो वह काप उठेगी और उसे लगेगा जैसे मैने उसके साथ ज्यादती की थी ।

"क्या वह इस कसौटी को बर्दाश्त कर सकेगी ? नही, ऐसी लडकिया कभी नही बर्दाश्त कर सकती । कभी नही ?" उसने मन ही मन सोचा ।

और उसे सोनिया का ख्याल आ गया । खिडकी मे से ताजी हवा का एक झोका आया । दिन की रोशनी मद पड रही थी । रास्कोल-निकोव ने अपनी टोपी उठाई और बाहर चला गया ।

उसकी तबियत कितनी खराब है इसका आभास उसे न तो हो सकता था, न वह इस बारे मे सोचना ही चाहता था । अविरत चिता और मानसिक यत्रणा ने उस पर कोई प्रभाव न छोडा हो, यह बात नही थी । मानसिक थकान के कारण उसकी चेतना और क्षमताये अभी तक बनी हुई थी और वह तेज बुखार से अचेत नही हुआ था । लेकिन यह कृत्रिम उत्तेजना बहुत देर तक न चल सकी ।

वह निष्प्रयोजन भटकने लगा । सूरज छिप रहा था । पिछले कुछ दिनो से एक विशेष प्रकार की पीडा उसके मन पर छाई थी जो तीखी न होते हुए भी स्थायी थी, उसमे शाश्वतता थी । इस पीडा में आगामी विषादपूर्ण वर्षों का आभास था 'एक गज जमीन' पर अनन्त-काल गुजारने का आभास ! शाम के समय यह पीडा और भी अधिक बढ गई ।

सूर्यास्त के समय कैसी मूर्खतापूर्ण कमज़ोरी आती है, भला कैसे कोई बेवक़ूफी न कर बैठे !

"तुम दूनिया के पास भी जाओगे और सोनिया के पास भी" वह बुडबुडाया।

पीछे से किसी ने उसका नाम लेकर पुकारा। लेब्ज़ियात्नीकोव भागा आ रहा था।

"ज़रा सोचो तो सही, मै अभी तुम्हारे कमरे मे तलाश करने गया था। तुमने सुना, कैटेरीना इवानोव्ना अपनी स्कीम पर अमल कर रही है और बच्चो को अपने साथ ले गई है। मैने और सोफिया सेम्योवनोना ने बडी मुश्किल से उन्हे ढूढा। वे कढाही बजा बजा कर बच्चो को नचा रही है। बच्चे रो रहे है। वे चौराहो और दुकानो पर रुकते हुए आगे जा रहे है। उनके पीछे बेवकूफो की पूरी भीड है। आओ चले।"

"और सोनिया ?" रास्कोलनिकोव ने चिंतित स्वर मे पूछा। वह भी लेब्ज़ियात्नीकोव के पीछे पीछे भागने लगा।

"बिल्कुल पागल हो रही है, मेरा मतलब कैटेरीना इवानोव्ना से है, वैसे तो सोफिया सेम्योनोवना भी विक्षिप्त हालत मे है, लेकिन मै सच कहता हू कैटेरीना इवानोव्ना एक दम पागल हो गई है। उन सब को पुलिस थाने पहुँचाया जायेगा—ज़रा सोचो तो सही ··इस वक्त वे लोग नहर के किनारे पुल के पास है, सोफिया सेम्योनोवना के घर के करीब ही"—

पुल के पास लोगो की भीड जमा थी, जिसमें बहुत से गरीब गली कूचो के बच्चे थे। दूर से ही कैटेरीना की भर्राई आवाज सुनाई दे रही थी, ऐसे विचित्र दृश्य को देखकर अक्सर बाजारू लोगो की भीड इकट्ठी हो जाती है। पुराने हरे शाल और टूटे हुए तिनको के हैट मे कैटेरीना इवानोव्ना सचमुच विक्षिप्त दिखाई दे रही थी। थकान के मारे उसकी सास फूल रही थी। उसका तपेदिक से मुर्झाया चेहरा पहले से भी ज्यादा वेदनापूर्ण हो गया था। धूप मे आकर तपेदिक के मरीज ज्यादा

बीमार नजर आते है। लेकिन उसके उत्साह मे कमी नही आई थी, उसका चिडचिडापन प्रतिक्षण बढता ही जाता था। वह चिल्लाती हुई बच्चो की तरफ भागी और भीड के सामने उन्हे गाना और नाचना सिखाने लगी। उसने बच्चो को पुचकारकर नाचने और गानें की जरूरत समझाई, जब वे न समझ सके तो चिढकर उन्हे पीटने लगी फिर वह भीड की तरफ झपटने लगी और भीड मे खडे सफेदपोशो से 'उन शरीफ और अभिजात कुल के बच्चो' की दुर्दशा की तरफ देखने का आग्रह करने लगी। अगर कोई आदमी हसने लगता या उसका मजाक उडाता तो वह जाकर उससे तू-तू-मै-मै करने लगती। कुछ लोग हस रहे थे। कुछ सर हिला रहे थे लेकिन हर व्यक्ति उस पागल औरत और उसके भयभीत बच्चो को कौतूहलभरी दृष्टि से देख रहा था। लेब्जियात्नीकोव ने जिस कढाही का जिक्र किया था, वह कही नजर नही आ रही थी बल्कि कैटेरीना इवानोव्ना अपने दुर्बल हाथो से ताली बजा कर लिदा और कोल्या को नाचने का और पोलेका को गाने का आदेश दे रही थी। उसने खुद भी गाने मे हिस्सा लिया लेकिन दूसरे स्वर तक पहुँचते पहुँचते उसे जोर से खासी आ गई और वह रो रो कर गालियाँ देने लगी। कोल्या और लिदा को भयभीत होकर रोते हुए देखकर वह गुस्से से आग बबूला हो गई। उसने बडी मुश्किल से बच्चो के लिये बाजारू गवैय्यो की पोशाक तैयार की थी। कोल्या ने लाल और सफेद कपडे की तुर्की पगडी सी पहनी थी। लिदा की कोई खास पोशाक नही थी, उसने सर पर मारमेलेदोव की लाल ऊनी टोपी पहन रखी थी, जिसमे एक टूटा हुआ शुतुरमुर्ग का पख लगा था। यह टोपी कैटेरीना इवानोव्ना की दादी की यादगार थी, जिसे मारमेलेदोव रात को सोते वक्त पहना करता था। पोलेका अपनी रोजमर्रा की पोशाक मे थी और मा की तरफ चकित दृष्टि से देखती हुई अपने आसुओ को छिपाने की कोशिश कर रही थी। उसे सडक और भीड से बडा डर

लग रहा था। सोनिया रोती हुई मा से घर लौटने की मिन्नत कर रही थी लेकिन कैटेरीना इवानोव्ना ने एक न सुनी।

उसने खासकर हाफती आवाज मे कहा, "छोड दो सोनिया, छोड दो! तुम निरी बच्ची हो, तुम नही जानती कि तुम क्या कह रही हो? मैने तुमसे पहले भी कहा था कि मै उस शराबी जर्मन औरत के घर नही वापिस जाऊँगी। अच्छा है, पीटर्सबर्ग के सब लोग इन बच्चो को भीख माँगते हुए देखेगे, जिनका बाप एक निहायत शरीफ आदमी था, जिसने सच्चाई और ईमानदारी से जिन्दगी भर नौकरी की और जो आखिरी दम तक नौकरी करते रहे। (कैटेरीना इवानोव्ना को अपनी इस मनगढत कहानी पर स्वय भी विश्वास होने लगा था।) वह मनहूस जेनरल भी आकर देखे। तुम बेवकूफ हो सोनिया! हमारे पास खाने को क्या है? जरा यह बताओ! जरा यह बताओ! हम लोगो ने तुम्हे बहुत सताया है। अब और नही सतायेगे। आह, रोदियोन रोमनोविच आप!" वह रास्कोलनिकोव के पास भागती हुई गई। "मेहरबानी करके इस बेवकूफ लडकी को समझाइए कि इसके सिवाय और कोई चारा नही। तुरही बजाकर भीख माँगने वाले भी अपनी रोजी कमा लेते है। फिर लोग समझ जायेगे कि हम औरो से अलग है और यह सम्मानित परिवार दुखो के कारण ही भीख मागने पर मजबूर हुआ है। जेनरल की नौकरी छूट जायगी, तुम देख लेना हम उसकी खिडकी के नीचे जाकर रोज गीत गायेगे और अगर कभी जार इधर से निकले तो मै बच्चो को आगे करके घुटनो के बल उनके आगे बैठ जाऊँगी और कहूँगी, 'रक्षा करो पिता, हमारी रक्षा करो पिता?' वे सब अनाथो के पिता है और दयावान् है। वे जरूर हमारी रक्षा करेगे तुम देख लेना। और वह मनहूस जेनरल · । लिदा! सडक के दाहिनी ओर रहो?··· कोल्या, तुम्हे फिर नाचना पडेगा। तुम कुड-कुडा क्यो रहे हो? फिर वही कुडकुडाना! तुम्हे डर किस बात का

है, बेवकूफ ! मैं इन बच्चो का क्या करूँ, रोदियोन रोमनोविच ? तुम नही जानते ये बच्चे कितने बेवकूफ है । ऐसे बच्चो का कोई करे तो क्या करे ?"

यह कह कर कैटेरीना इवानोव्ना ने रुआँसी आवाज मे रोते हुए बच्चो की तरफ इशारा किया । रुआँसी होने के बावजूद भी उसकी बातो का ताँता नही टूटा था । रास्कोलनिकोव ने उसका स्वाभिमान जाग्रत करने के लिए कहा कि गलियो मे तुरही बजाने वालो की तरह घूमना उसे शोभा नही देता, जबकि वह एक बोर्डिंग स्कूल की प्रिंसिपल बनने वाली है ।

"बोर्डिंग स्कूल, हा, हा, हा ! वह हवाई किला है !" हँसते-हँसते कैटेरीना इवानोव्ना खाँसने लगी । "नही, रोदियोन रोमनोविच, वह सपना खत्म हो गया । सब लोगो ने हमारा साथ छोड दिया ···और वह जेनरल···जानते हो, मैने उस पर एक दवात फेकी थी ! वेटिंग रूम मे जहाँ लोग अपने दस्तखत करते है । मैने रजिस्टर मे अपना नाम लिखा और उस पर दवात फेक कर चली आई । ओह, कितने बदमाश लोग है ! बस, उन्हे बहुत देख लिया । अब मै अपने बच्चो के लिए खुद कमाऊँगी । मै किसी के आगे नही झुकूँगी । इस बेचारी को हमारी खातिर क्या क्या नही सहना पडा ।" उसने सोनिया की तरफ इशारा किया । "पोलेन्का, तुम्हे क्या मिला ? मुझे दिखाओ । क्या सिर्फ दो फार्दिग ? आह, ये कमीने लोग हमे कुछ नही देते । सिर्फ जीभ निकाल कर हमारे पीछे भागते है । जरा देखना, वह अहमक किस बात पर हँस रहा है ? (उसने भीड मे खडे एक आदमी की ओर इशारा किया) कोल्या की बेवकूफी की वजह से ही यह सब होता है । मुझे उससे इतनी मग़ज़पच्ची करनी पडती है । तुम्हे क्या चाहिए पोलेन्का ? मुझे फ्रेंच मे बताओ । अरी मैने तुम्हे कुछ फ्रेच मुहावरे तो सिखाये है, वरना लोगो को

कैसे पता चलेगा कि तुम भले घर की बच्ची हो और तुरही बजाने वालो की तरह नही हो। हम सडको पर कोई बाजारू नाटक नही दिखायेगे बल्कि भले लोगो के गाने गाने आये है··हाँ· तो हम कौनसा गाना गायेगे ? आप मुझे निरुत्साह कर रहे है रोदियोन रोमनोविच ··लेकिन मै किसी गाने की तलाश मे हूँ जिसकी धुन पर कोल्या नाच सके और हम कुछ पैसे इकट्ठे कर सके ··आप जानते है कि हम बिना तैयारी के यह कला प्रदर्शन कर रहे है···हमे एक बार अच्छी तरह रिहर्सल कर लेनी चाहिए, फिर हम नेवस्की चले जायेगे, जहाँ भद्र लोगो की सख्या यहा से बहुत ज्यादा है। लोगो का ध्यान फौरन हमारी तरफ आकर्षित होगा। लिदा को सिर्फ 'मेरा गाव' गीत आता है, सारे बच्चे यही गीत गाते है। हमे इससे अच्छा कोई गीत गाना चाहिये, भद्र लोगो जैसा ···क्यो पोलेका तुम्हे और कोई गीत याद आया ? काश तुम अपनी माँ की मदद कर सकती ! मेरी याददाश्त बिल्कुल बेकार हो गई है, नही तो, मैं कोई न कोई गीत जरूर तलाश कर लेती। भला हम 'एक घुडसवार' गीत तो नही गा सकते। आओ फ्रेच मे 'Cinq Sous, Cinq Sous' गाये। मैने यह गीत तुम्हे सिखाया है। फ्रेच गीत सुनकर भद्र लोग फौरन समझ जायेगे कि तुम अच्छे परिवार के बच्चे हो, इससे वे और भी द्रवित हो जायेगे · तुम 'Marlborough S'en Vat-en guerre' भी गा सकते हो यह बच्चो का गीत है और सब भद्र परिवारो मे यह लोरी सुनाई जाती है।

Marlborough S'en va-t-en guerre
No sait quand reviendra
(मालब्रो युद्ध मे गया है, न जाने कब लौटेगा।)

उसने गाना शुरू किया, "नही" 'Cinq Sous, Cinq Sous' ही गाओ। लो कोल्या, जल्दी से अपनी कमर पर हाथ रखो, और तुम

लिदा दूसरी तरफ मुडती रहना, पोलेका और मै दोनो ताली बजा कर गायेगे

Cınq Sous, Cınq Sous
Pour monter notre m'enage

(खो-खो-खो)— पोलेका, अपनी पोशाक ठीक करो, कधो से नीचे फिसल गई है।" खासते खासते उसका दम फूल गया था। "देखो, तुम्हे इस वक्त खास तौर से तमीज दिखानी चाहिये ताकि सब लोग देख सके कि तुम खानदानी बच्चे हो। मैने उसी वक्त कहा था सोनिया की बच्ची के फ्रॉक का ऊपरी हिस्सा जरा लबा होना चाहिये लेकिन तुमने इसको छोटा काटने की सलाह दी। यह तुम्हारी गलती थी, देखो बच्ची का हूलिया इस फ्रॉक से कितना बिगड गया है।···अरे तुम सब फिर रो रहे हो ? क्या बात है बेवकूफो ? चलो कोल्या शुरू करो ! जल्दी, जल्दी ! आह कैसा ढीठ बच्चा है !

Cınq Sous, Cınq Sous.
.. ..

पुलिसमैन फिर आ गया ? कहो तुम क्या चाहते हो ?"

सचमुच एक पुलिसमैन भीड को चीर कर आगे आ रहा था। लेकिन इसी वक्त एक वर्दीधारी अफसर ने जिस के कोट पर तमगा भी लगा था (जिसे देखकर कैटेरीना इवानोव्ना प्रसन्न हुई और पुलिसमैन भी प्रभावित हुआ) आकर चुपचाप तीन रूबल्न का एक हरा नोट कैटेरीना इवानोव्ना के हाथ में थमा दिया। उसके चेहरे पर सच्ची हमदर्दी थी। कैटेरीना इवानोव्ना ने नोट लेकर शिष्टतापूर्वक अभिवादन किया और उदात्त स्वर मे बोली,

"आपका बहुत बहुत धन्यवाद श्रीमान (पोलेका नोट ले लो। तुम ने देख लिया कि ससार मे गरीब मुसीबतजदा भद्र महिला की

सहायता करने वाले प्रतिष्ठित और सहृदय लोग भी है) श्रीमान, आप इन यतीम बच्चो को देख रहे है, ये भद्र परिवार के या यो कहे अभिजातकुल के है—और यह मनहूस जेनरल बैठा मुर्गा खा रहा था मुझे देखकर तैश मे आ गया। मैने कहा, "योर एक्सिलेंसी, इन अनाथ बच्चो को आश्रय दीजिये। आप मेरे स्वर्गीय पति सेम्योन जहारोविच को जानते थे, उनकी मृत्यु के दिन ही एक कमीने बदमाश आदमी ने उनकी इकलौती बेटी को बदनाम किया "पुलिसमैन फिर आ गया! मुझे बचाओ! मुझे बचाओ!" उसने अफसर से कहा, "यह पुलिसमैन मुझ पर क्यो झपट रहा है? हम अभी एक पुलिसमैन से बच कर आये है। अरे बेवकूफ तू क्या चाहता है?"

"गलियो मे ऊधम मचाने की मनाही है।"

"ऊधम तो तुम मचा रहे हो। मान लो मै तुरही बजाकर पैसे इकट्ठे कर रही हू। तुम्हे इससे मतलब?"

"तुरही बजाने के लिये तुम्हे लाईसेस लेना पडेगा, लेकिन तुमने बिना लाईसेस के ही भीड इकट्ठी कर ली है। तुम्हारा घर कहाँ है?"

"क्या कहा! लाईसेस?" कैटेरीना इवानोव्ना दुखी स्वर में चिल्लाई। "मैने आज ही अपने पति को दफनाया है। लाईसेस की क्या जरूरत है?"

अफसर ने समझाया, "श्रीमती जी, शात रहिये। आइये आप जहाँ कहेगी मै आपको पहुचा आऊँगा। भीड मे खडा होना आपको शोभा नही देता। आप बीमार है।"

"जनाब, जनाब, आप नही जानते! हम लोग नेवस्की जा रहे है 'सोनिया, सोनिया, किधर गई?'

"वह भी रो रही है? तुम सबको क्या हो गया है? कोल्या, लिदा, तुम कहाँ जा रहे हो? ओह ये बच्चे कितने बेवकूफ है!

कोल्या, लिदा कहाँ जा रहे हो ?" कैटेरीना इवानोव्ना भयभीत स्वर मे चिल्लाई ।

कोल्या और लिदा जो भीड को और अपनी माँ की पागल हरकतो को देखकर घबरा गये थे, पुलिसमैन को देखते ही एक दूसरे का हाथ पकड कर भाग गये थे । कैटेरीना इवानोव्ना भी रोती हुई उनके पीछे भागी । यह बडा हृदयविदारक और अशोभनीय दृश्य था । रोते रोते कैटेरीना का दम फूल गया था । सोनिया और पोलेका भी बच्चो के पीछे भागी ।

"उन्हे वापिस लाओ ! उन्हे वापिस लाओ सोनिया ! ये बेवकूफ हरामखोर बच्चे ! उन्हे पकडो पोलेका ! • तुम्हारी खातिर ही तो मैने "

कैटेरीना इवानोव्ना ठोकर खाकर गिर पडी ।

"उन्हे चोट आई है ! खून निकल रहा है ! हाय !" सोनिया ने कहा ।

भीड भागती हुई वहाँ पहुँची । लेब्ज़ियात्नीकोव और रास्कोलनिकोव सबसे पहले भागे, उनके बाद अफसर भी आ गया, पुलिसमैन अधीरतापूर्वक बडबडाया, 'लो आफत आ गई !" उसे लगा जैसे अब मामला बिगडने वाला है । उसने भीड से कहा,

"दूर हट जाओ ! दूर हट जाओ !"

"यह कुछ देर में मर जायेगी ।" किसी ने ऊची आवाज़ मे कहा ।

"पागल हो गई है ।" दूसरी आवाज़ आई ।

एक औरत ने अपने शरीर पर सलीब का चिन्ह बनाते हुये कहा, "यीसू हमारी रक्षा करो ! वे दोनो बच्चे पकडे गये या नही ? लो बडी लडकी उन्हे पकड कर ला रही है 'शैतान' कही के !"

जब लोगो ने गौर से कैटेरीना इवानोव्ना की जाच की तो मालूम हुआ कि उसे चोट नही लगी थी, जैसा कि सोनिया का अनुमान था, बल्कि

खून उसकी छाती मे से निकल कर फुटपाथ को रग रहा था।

अफसर ने रास्कोलनिकोव और लेब्जियात्नीकोव को बताया, "मैने तपेदिक के मरीजो की ऐसी हालत पहले भी देखी है। सीने से खून निकल कर गला घोट देता है · अभी कुछ दिन पहले मेरे एक रिश्तेदार का भी यही हाल हुआ था। एक मिनिट के भीतर ही आध सेर खून · लेकिन अब क्या हो सक्ता है ? ये दम तोड रही है।"

"इधर, इधर, मेरे कमरे मे वह सामने के दूसरे मकान मे मै रहती हूँ · इन्हे वहाँ ले आइये कोई डाक्टर को बुला लाये ! हाय !" सोनिया भीड मे खडे लोगो की मिन्नत करने लगी।

अफसर की बजह से पुलिसमैन तक ने कैटेरीना इवानोव्ना को उठाने मे मदद की। उसे बेहोशी की हालत मे सोनिया के कमरे मे लेजाकर बिस्तर पर लिटाया गया। खून अब भी बह रहा था, लेकिन कैटेरीना इवानोव्ना की चेतना धीरे धीरे लौटने लगी। रास्कोलनिकोव लेब्जियात्नीकोव और अफसर सोनिया के साथ कमर मे आये पुलिसमैन ने दरवाज़े के आगे जमा हुई भीड को तितर बितर कर दिया। पोलेका, कोल्या और लिदा के हाथ पकड कर वहाँ पहुँच गई। दोनो बच्चे काप रहे थे और रो रहे थे। कापर्नोमोव के कमरे मे से भी कई लोग निकल आये। मकान मालिक की एक आख कानी थी, वह लगडा भी था और उसके बाल और मूछे ब्रश की तरह अकडी रहती थी। उसका सारा हुलिया अजब था। उसकी बीवी के चेहरे पर स्थायी भय का भाव था। बहुत से बच्चे आश्चर्य से अवाक खडे थे। सहसा स्वीद्री-गाईलोव भी आ पहुँचा। रास्कोलनिकोव ने चकित दृष्टि से उसकी तरफ देखा, क्योकि पहले वह भीड मे नही था। लोगो ने डाक्टर और पादरी को बुलाने का सुझाव दिया। अफसर रास्कोलनिकोव के कान मे फुसफुसाया कि उसकी राय मे डाक्टर को बुलाने का अब कोई फायदा नही है। फिर भी अफसर ने डाक्टर बुलाने का आदेश दिया।

कापर्नौमोव खुद भागा गया।

उधर कैटेरीना इवानोव्ना को होश आने लगी थी। खून बहना भी कुछ देर के लिये रुक गया था। वह बीमार लेकिन तेज नजरो से सोनिया की तरफ देख रही थी। सोनिया का चेहरा पीला पड गया था और वह रुमाल से अपने माथे का पसीना पोछ रही थी। लोगो ने कैटेरीना इवानोव्ना को बाहो का सहारा देकर बिठा दिया।

"बच्चे कहाँ है ? तुम उन्हे ले आई, पोलेका ? हाय ये बेवकूफ बच्चे तुम भाग क्यो गये थे ! छि !" उसने क्षीण स्वर मे पूछा। सहसा उसके खुश्क ओठ खून से रग गये। उसने चारो तरफ नजर दौड़ाई।

"सोनिया, तुम इस तरह रहती हो ! मै एक बार भी तुम्हारे कमरे मे नही आई।" उसने वेदनाभरी दृष्टि से सोनिया की तरफ देखा।

"हमी लोगो ने तुम्हे तबाह कर दिया सोनिया। पोलेका, लिदा, कोल्या इधर आओ ! लो सोनिया इन सब को सभालो ! मै इन्हे तुम्हारे सुपुर्द करती हूँ। मैने बहुत झेला ! अब यह किस्सा खत्म हुआ (खाँसी) मुझे लिटा दो—शान्ति से मरने दो।"

उसका सर तकिये पर रख दिया गया।

"क्या ? पादरी ? मुझे पादरी नही चाहिये ! आपके पास एक भी फालतू रूबल नही है। मैने कोई पाप नही किया। ईश्वर मुझे वैसे भी माफ कर देगा। वह जानता है, मैने कैसे दुख झेले है···अगर ईश्वर माफ न करे तो भी मुझे कोई परवाह नही !"

इसके बाद वह प्रलाप करने लगी। बीच बीच में उसे कपकपी आने लगती थी और वह क्षण भर के लिये आँखे खोल कर सब लोगो को पहचान लेती थी और फिर प्रलाप करने लगती थी। उसके गले मे से घर्र घर्र की आवाज आ रही थी और उसे सास लेने मे दिक्कत हो

रही थी।

उसने रुक रुक कर कहा, "मैने उसे कहा था योर एक्सेलेसी, अमेलिया लुदविगोवना · आह ! लिदा, कोल्या, जल्दी से कूल्हो पर हाथ रखो, फिसलो, बास्क नही करो · और अपनी एडियो से ताल दो अदा के साथ !

Dıamanten and Perlen Du hast

आगे क्या ? यह गाना चाहिये

Du hast dıe schonsten Augen

Madcheu, was wıllst du mehre ?

कैसा विचार है ? Was wıllst du mehre बेवकूफ कैसी इजादें करता है ! अरे हाँ

दागिस्तान की घाटी की गर्म दुपहरिया मे· ·

आह मुझे यह गीत कितना पसद था ! हद से ज्यादा ! जानती हो पोलेका, जब हमारी सगाई हुई थी तो तुम्हारे पिता यह गीत गाया करते थे आह वे दिन ! यही गीत हमे गाना चाहिये ! मुझे तर्ज़ भूल गई। ज़रा बताना तो ! भला कैसी तर्ज़ है !

उत्तेजना मे आकर कैटेरीना इवानोव्ना ने उठ कर बैठने की कोशिश की और अत्यत टूटी फूटी आवाज मे चीखकर गाने लगी। हर शब्द के बाद उसकी साँस फूलने लगती थी और उसके चेहरे पर आतक छाता जा रहा था

· ·दोपहर की गर्मी मे · ·दागिस्तान की · घाटी मे · मेरे सीने मे सीसा भरा है !"

उसकी आँखो से आँसू गिरने लगे ! उसने एक हृदय विदारक चीख निकाली और कहा, "य़ोर एक्सेलेसी, इन यतीमो की रक्षा करे ! आप इनके पिता के यहाँ मेहमान रह चुके है · ·यह कुलीन परिवार के बच्चे " इसके बाद उसे जरा सी होश आई और उसने भयभीत

दृष्टि से चारो तरफ देखा । फौरन उसने सोनिया को पहचान लिया और स्नेह भरे मृदुस्वर मे बोली,

"सोनिया, सोनिया ! तुम भी यही हो सोनिया बेटी मेरी !

लोगो ने फिर उसे सहारा देकर बिठा दिया ।

"बस ! सारा खेल खत्म हो गया । अलविदा, बेचारी लडकी ! मै अब खत्म होने को हूँ ! टूट गई हूँ" यह कह कर वह प्रतिशोध भरी वेदना से रोने लगी और उसका सर धम्म से तकिये पर गिर पडा ।

इसके बाद वह बेहोश हो गई लेकिन जल्द ही उसका मुर्झाया हुआ पीला चेहरा ढीला पड गया, मु ह खुल गया और टॉगे काँपने लगी । उसने एक लबी सास ली और वह चल बसी ।

सोनिया ने अपना सर कैटेरीना इवानोव्ना के वक्ष में छिपा लिया और निश्चल बैठी रही । पोलेका मा के पैरो से लिपट कर उन्हे चूमने लगी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी । कोल्या और लिदा को अभी तक स्थिति का पूर्ण ज्ञान नही हुआ था, फिर भी वे समझ गये थे कि कोई खौफनाक घटना घटी है । दोनो ने एक दूसरे के नन्हे कधो पर हाथ रख कर आपस मे नजरे मिलाई और एक साथ मु ह फाड कर रो पडे । दोनो ने स्वाँग की पोशाक पहन रखी थी, एक के सर पर पगडी थी, दूसरे के सर पर शुतुरमुर्ग के पखवाली टोपी थी ।

लेकिन कैटेरीना इवानोव्ना के तकिये के पास वह 'प्रमाण पत्र' कहाँ से से आया ? रास्कोलनिकोव की नज़र उस पर पडी ।

वह उठ कर खिड़की के पास चला गया । लेब्जियात्नीकोव उसके पीछे पीछे गया ।

"वह चल बसी है" वह बोला

"रोदियोन रोमनोविच, मै तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ ।"

स्वीद्रीगाईलोव ने उनके पास आकर कहा ।

लेब्ज़ियात्नीकोव जानबूझ कर पीछे हट गया । स्वीद्रीगाईलोव

रास्कोलनिकोव को एकान्त मे लेजाकर बोला,

"जनाज़े का सारा इन्तिजाम मै करूगा। तुम जानते हो कि इसमे काफी रकम खर्च होगी। मेरे पास फालतू धन बहुत है, जैसा कि मै पहले भी तुम्हे बता चुका हूँ। मै दोनो छोटे बच्चो और पोलेका को किसी अच्छे यतीमखाने मे दाखिल करवा दूगा और हर बच्चे के नाम पद्रह सौ रूबल करवा दूँगा। जब वे बालिग होगे तब उन्हे यह रकम मिल जायेगी। सोफिया सेम्योनोवना को उनकी चिन्ता नही करनी पडेगी। मै उसे भी इस कीचड मे से निकालूँगा, क्योकि वह नेक लडकी है। है न ! जाकर अवदोत्या रोमानोवना से कह देना कि इसी तरह मै उसके दस हजार रूबल खर्च कर रहा हूँ।"

"आप किसलिये इतनी सहृदयता दिखा रहे है ?" रास्कोलनिकोव ने पूछा।

"आह ! सिडी आदमी !" स्वीद्रीगाईलोव हँस पडा। "मैने तुम्हे बताया था कि मुझे उस रकम की कोई जरूरत नही। मै इन्सानियत के नाते ऐसा कर रहा हूँ इस पर तुम्हे विश्वास क्यो नही होता ? तुम जानते हो कि वह 'जू' नही थी। (उसने मृत स्त्री की ओर इशारा किया) "क्या वह कोई सूदखोर बुढिया थी ? मै जानता हूँ तुम इस बात से सहमत हो। क्या लूजिन इसी तरह जिन्दा रहेगा और नीच हरकते करता रहेगा, या वह लडकी मर जाये ? अगर मै इस परिवार की मदद नही करूगा तो पोलेका भी उसी रास्ते पर चली जायेगी।"

यह बात उसने चालाकी से कही और रास्कोलनिकोव की तरफ देखकर उसने इस ढग से आँख मारी कि रास्कोलनिकोव का चेहरा सफेद और ठडा पड गया। यह तो उसकी अपनी भाषा थी। वह फौरन पीछे हट गया और बहशतभरी आवाज मे बोला,

"तुम्हे कैसे पता है ?" उसकी सास तक बद हो रही थी।

"वाह ! मै मेडम रैसलिश के मकान मे ही तो रहता हूँ, मेरी एक

तरफ कापरनोमोव का कमरा है, दूसरी तरफ मैडम गैसलिश का जो मेरी बहुत पुरानी और गहरी मित्र हे। मै सोनिया का पडौसी हूँ।"

"तुम ?"

"हाँ" स्वीद्रीगाईलोव को जोर से हँसी आ रही थी, "प्यारे रोदियोन रोमनोविच, मै अपनी कसम खाकर कहता हूँ कि तुम मुझे बहुत दिलचस्प आदमी मालूम होते हो। मैंने तुम से पहले ही कहा था कि हम दोनो मे दोस्ती हो जानी चाहिये। लो अब तो हो गई। तुम देखोगे मैं कितने खुले दिल का आदमी हूँ और हम दोनो मे कैसी पटेगी!"

मन मे शून्यता छाई रही थी, जो कि शायद उसके पूर्व आतंक की प्रतिक्रिया थी। ऐसी असाधारण उदासीनता कई बार मरणासन्न व्यक्तियो मे भी देखी जाती है। आखिरी दिनो मे तो वह अपनी असली स्थिति की चेतना से बचने की पूरी कोशिश करता रहा था। कई जरूरी तथ्यो से, जिन पर फौरन ध्यान देने की जरूरत था, वह बहुत चिढता था। चिताओ मे तो वह फौरन मुक्ति पा लेना चाहता था, लेकिन जरा सी लापरवाही से वह बिल्कुल तबाह हो जाता।

उसे स्वीद्रीगाईलोव की विशेष रूप से चिता थी। हर वक्त स्वीद्रीगाईलोव ही उसके मन पर छाया रहता था। कैटेरीना इवानोव्ना की मृत्यु के दिन स्वीद्रीगाईलोव ने जो शब्द कहे थे, उनसे रास्कोलनिकोव का दिमागी सतुलन बिगड गया था। इस परेशानी के बावजूद भी रास्कोलनिकोव ने इस नये तथ्य की ओर कोई ध्यान नही दिया था। कई बार शहर के उजाड इलाको मे या किसी रद्दी ढाबे मे बैठकर जब वह चितामग्न हो जाता था, (उसे खुद भी वहाँ आने का कारण मालूम नही रहता था) सहसा स्वीद्रीगाईलोव का ख्याल आते ही उसे आभास होता कि उसे फौरन ही उस आदमी से किसी भी कीमत पर सुलह कर लेनी चाहिये। एक दिन शहर के बाहर घूमते हुए न जाने उसे क्यो लगा कि वह स्वीद्रीगाईलोव से भेट करने जा रहा है—पहले से ही उनके मिलने का स्थान पक्का हो गया है ' कई बार तडके ही वह झाडियो मे से उठकर बाहर निकल आता था, इन सब बातो का कारण उसे खुद भी मालूम नही था।

लेकिन कैटेरीना इवानोव्ना की मृत्यु के बाद दो या तीन बार जब वह निरुद्देश्य भटकता हुआ सोनिया के घर पर गया था, तो स्वीद्रीगाईलोव से उसकी मुलाकात हुई थी। दोनो ने इस महत्वपूर्ण विषय पर चुप्पी साध रखी थी, जैसे दोनो के बीच कोई मौन सधि हुई हो।

कैटेरीना इवानोव्ना की लाश अभी तक ताबूत मे पडी थी, स्वीद्री-

गाईलोव जनाज़े की इन्तिजाम कर रहा था। सोनिया भी व्यस्त थी। पिछली मुलाकात मे स्वीद्रीगाईलोव ने रास्कोलनिकोव को बताया था कि उसने कैटेरीना इवानोव्ना के बच्चो की परवरिश के लिये बहुत अच्छा इन्तिजाम किया है, कई बडे लोगो की सिफारिश से वह तीनो बच्चो को अच्छी सस्थाओ मे भरती करवा देगा। उसने बच्चो के नाम कुछ रकम भी करदी है, जिससे उन्हे यतीमखाने मे जल्दी ही दाखिला मिल जायेगा। असहाय बच्चो की अपेक्षा जायदादवाले बच्चो को आसानी से दाख़िला मिल जाता है। उसने सोनिया के बारे मे भी कुछ कहा था और वादा किया था कि वह एक या दो दिनो के भीतर ही "कुछ जरूरी बातो मे राय लेने और उन्हे तय करने के लिये:" रास्कोलनिकोव के पास आयेगा।

यह बातचीत जीने मे हुई। स्वीद्रीगाईलोव ने गौर से रास्कोलनिकोव की तरफ देखा और आवाज धीमी करके पूछा, "लेकिन क्या माजरा है, रोदियोन रोमनोविच, तुम आजकल खोए खोए से रहते हो! तुम सब कुछ देखते हो सुनते हो लेकिन मालूम होता है तुम्हारी समझ मे कुछ नही आता, घबराओ नही! हम सारी बातो पर गौर करेंगे, मुझे अफसोस है कि अपने कामो के साथ साथ मुझे दूसरे लोगो के भी बहुत से काम निपटाने पडते है। आह! रोदियोन रोमनोविच, लोगो को जरूरत है, ताजी हवा की —सिर्फ ताज़ी हवा की!"

यह कहकर वह एक ओर हट गया। पादरी और उसका सहकारी सीढियो के रास्ते ऊपर आ रहे थे। स्वीद्रीगाईलोव की आज्ञा से दिन मे दो बार ठीक समय पर पादरी मृतक की आत्मा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता था। स्वीद्रीगाईलोव चला गया। रास्कोलनिकोव कुछ देर तक वही खडा रहा, फिर कुछ सोचकर पादरी के पीछे पीछे सोनिया के कमरे मे गया। शान्त, धीमे और शोक भरे स्वर मे प्रार्थना शुरू हुई। बचपन से ही मृत्यु की कल्पना उसके लिये आतकपूर्ण और रहस्यमय

रही थी। शोक प्रार्थना सुने उसे बरसो बीत गये थे। इसके अलावा वातावरण और भी खौफनाक हो उठा था। उसने बच्चो की ओर देखा, वे घुटने टेक कर ताबूत के सिरहाने बैठे थे। पोलेंका रो रही थी। उनके पीछे सोनिया मृदुस्वर मे प्रार्थना कर रही थी, लगता था जैसे वह भीरु स्वर मे रो रही थी।

सहसा रास्कोलनिकोव को ख्याल आया, "पिछले दो दिनो से सोनिया ने न मेरी तरफ देखा है न वह मुझ से एक भी शब्द बोली है।" कमरे में धूप चमक रही थी। अगरबत्तियो के धुएं के बादल उठ रहे थे। पादरी ने पढा, "विश्राम दो शाति दो प्रभु..." रास्कोलनिकोव ने पूरी प्रार्थना सुनी। जाने से पहले पादरी ने सबको आशीर्वाद दिया और विचित्र ढग मे चारो तरफ देखा। प्रार्थना के बाद रास्कोलनिकोव सोनिया के पास गया। सोनिया ने उसके दोनो हाथो को पकड कर उसके कधे पर अपना सिर टिका दिया। आत्मीयता के इस प्रदर्शन से रास्कोलनिकोव चौक गया। उसे ताज्जुब हो रहा था कि सोनिया के स्पर्श मे ग्लानि, वितृष्णा या कपन तक न था। उसे लगा कि यह त्याग और अपरिग्रह की सीमा है।

सोनिया खामोश थी। रास्कोलनिकोव ने उसका हाथ दबाया और बाहर चला गया। उसे बडी कोफ्त हो रही थी। अगर उसे कही एकात और मानसिक शान्ति मिल सकती तो वह सारी जिन्दगी वहीं गुजारने के लिए तैयार हो जाता, और अपने को सौभाग्यशाली समझता। लेकिन इस बीच बिल्कुल अकेला रहते हुए भी उसे एकात का अनुभव नहीं हुआ था। कई बार तो वह शहर के दूर जगल मे भी पहुंच जाता था, लेकिन जहाँ निर्जनता होती वहाँ उसे किसी की उपस्थिति का अनुभव होता। इस बात से चिढकर वह वापिस शहर मे लौट आता, भीड़भाड में शामिल होने के लिए, रेस्त्राँ और शराबखानो में जाने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर उसे एकात का अनुभव होता

और उसकी बेचैनी दूर हो जाती। एक बार सध्या के ममय वह पूरे एक घटे तक किसी शराबखाने मे बैठा गाने सुनता रहा, और उसे अच्छी तरह याद था कि उसे मजा भी आया था। लेकिन फिर सहसा वही बेचैनी आकर उसे घेर लेती थी, जैसे उसकी अतरात्मा उसे कचोट रही हो, उसने सोचा, "मै यहाँ बैठा गाने सुन रहा हूँ। क्या यह उचित है ?" उसे आभास हुआ कि बेचैनी का कारण इसके अलावा कुछ और भी है, ऐसी कोई बात है जिसका फैसला फौरन ही होना चाहिए, लेकिन वह बात क्या थी, यह न तो वह समझ पाया था न ही उसे शब्दो मे व्यक्त कर सका था। अजब भूलभुलैयाँ थी। उसने सोचा "फिर सघर्ष करना ठीक होगा फिर पोरफेरी से • या स्वीद्रीगाईलोव से • • फिर नया चैलेंज देना चाहिए • •हमला ! हाँ, हाँ !" शराबखाने से निकलकर वह भागता हुआ सडक पर आया। सहसा मा और दूनिया का ख्याल आते ही उसे फिर घबराहट हुई। अगले दिन तडके जब उसकी नीद खुली तो उसने अपने आपको क्रेस्तोवेस्की द्वीप की झाडियो मे पाया। वह बुखार से काँप रहा था। घर आकर वह सो गया, और दोपहर को दो बजे तक सोता रहा। उसका बुखार उतर गया था।

उसे याद आया कि आज ही कैटेरीना इवानोव्ना को दफनाया जाने वाला था। उसे खुशी हुई कि वह उसमे शामिल नही हो सका। नस्तास्या उसके लिए खाना ले आई। उसने खूब छककर खाया पिया। उसका दिमाग ताजा हो गया। ऐसी शान्ति और ताजगी उसने पिछले तीन दिनो से नही महसूस की थी। बल्कि उसे अपनी घबराहट पर खुद ताज्जुब हुआ।

इसी समय राजुमिहीन दरवाजा खोलकर भीतर आया।

"अहा ! खाना खाया जा रहा है ! तब तो तुम बीमार नही हो !" राजुमिहीन ने एक कुर्सी सरकाई और रास्कोलनिकोव के पास आकर बैठ गया।

उसके चेहरे से परेशानी झलक रही थी। मालूम होता था कि वह किसी खास इरादे से वहा आया था। उसने खीज भरे किन्तु धीमे स्वर मे कहा,

"सुनो, जहा तक मेरा ताल्लुक है तुम सब जने बेशक जहन्नुम मे चले जाओ। लेकिन मेरी समझ मे तुम्हारी सनक बेसिर पैर की मालूम होती है। यह मत समझ बैठना कि मै तुमसे सवाल पूछने आया हूँ। चूल्हे मे जाये सारे सवाल, मै कुछ नही जानना चाहता। अगर तुम मुझे अपने राज बताने भी लगो तब भी मै सुनने के लिए नही रुकूँगा और तुम्हे कोसता हुआ यहा से चला जाऊँगा। मै हमेशा के लिए सिर्फ यह मालूम करना चाहता हूँ कि क्या तुम सचमुच पागल हो ? लोगो मे यह अफवाह फैली हुई है कि तुम पागल हो गये हो या पागल होने वाले हो। सच पूछो तो मेरी भी यही राय है। तुम्हारी मूर्खतापूर्ण, घृणित और असगत हरकतो से यही जाहिर होता है, खास तौर पर अपनी माँ और बहन के प्रति तुम्हारे व्यवहार से, कोई पागल व्यक्ति या राक्षस ही इतनी निर्दयता दिखा सकता है। जरूर तुम पागल हो।"

"वे दोनो तुम्हे कब मिली ?"

"अभी क्या उस घटना के बाद से तुम उनसे नही मिले ? मेहरबानी करके मुझे यह बताओ कि आखिर तुम क्या करते रहे हो ? मै इससे पहले तीन बार यहाँ आ चुका हूँ। कल से तुम्हारी मा सख्त बीमार है। वे तुम्हारे पास आ रही थी, अवदोत्या रोमानोवना ने उन्हे रोकना चाहा लेकिन उन्होने एक न सुनी और कहा, "अगर रोद्या बीमार है, उसका दिमाग खराब हो गया है तो माँ से अच्छी उसकी देखभाल कौन करेगा ?" हम उन्हें अकेली नही आने देना चाहते थे, इसलिए तीनो चले आए। रास्ते भर हमने उन्हे शान्त करने की कोशिश की। जब हम यहाँ पहुँचे तो तुम यहा नही थे, तुम्हारी

माँ दस मिनट तक बैठी तुम्हारी इन्तजार करती रही, हम चुपचाप खडे रहे। वे उठकर बोली, "अगर रोद्या की तबियत ठीक है और वह माँ को भूल गया है तो यहाँ खडे होकर दया की भीख माँगना मा को शोभा नही देता।" घर लौटकर वे बिस्तर मे सो गई। अब वे बुखार मे है। उनका कहना है, "अच्छा मै समझ गयी। रोद्या के पास अपनी 'सहेली' के लिए वक्त है। उसका मतलब सोफिया सेम्योनोवना से है। वह तुम्हारी मगेतर है या रखेल, यह मै नही जानता। इसके बाद मै सोफिया सेम्योनोवना के यहाँ पहुँचा, मै जानना चाहता था कि आखिर माजरा क्या है। वहा मैने देखा, ताबूत के पास बैठे बच्चे रो रहे थे और सोफिया सेम्योनोवना उन्हे मातमी पोशाके पहना कर देख रही थी। तुम्हारा वहाँ नामोनिशान तक न था। मै माफी मागकर वहा से चला आया और लौट कर मैने अवदोत्या रोमानोवना को सारा किस्सा सुना दिया। तो यह सहेली वाली बात निरी बकवास है। दरअसल तुम पागल हो गये हो। लेकिन यहाँ तुम उबला हुआ गोश्त इस तरह से निगल रहे हो जैसे तीन दिनो से खाने का एक कौर तक न खाया हो। लेकिन जहा तक खाने का ताल्लुक है, पागल भी खाना खाते है अभी तक तुमने एक भी शब्द नही कहा ··लेकिन मै कसम खाकर कह सकता हूँ कि तुम पागल नही हो, बिल्कुल नही। तो जाओ सब के सब जहन्नुम मे, जरूर इसके पीछे कोई रहस्य है, तुम्हारे रहस्यो से मै क्यो माथापच्ची करू मै सिर्फ तुम्हे कोसने आया हूँ—अपने दिल का बोझ हलका करने। अब आगे क्या करना चाहिए वह मै जानता हूं।" राजुमिहीन उठ खडा हुआ।

"अब तुम क्या करना चाहते हो ?"

"तुम से मतलब ?"

"तुम पियक्कड मडली मे जा रहे हो न !"

"तुम्हे · तुम्हे कैसे पता चला ?"

"वाह ! यह तो साफ जाहिर है।"

राजुमिहीन क्षणभर रुक कर बोला, "तुम सदा से तार्किक मति रहे हो, इसलिए तुम कभी पागल नही हो सकते, न कभी थे। तुम ठीक कहते हो, मै पीने जा रहा हूँ। गुड बाई।"

यह कहकर वह बाहर जाने लगा।

"मै अपनी बहन मे तुम्हारे बारे मे बाते कर रहा था—परसो—हाँ शायद परसो ही।"

"मेरे बारे मे ? लेकिन· परसो वह तुम्हे भला कहा मिली ?" राजुमिहीन का चेहरा पीला पड गया, और उसका दिल जोर से धडकने लगा।

"वह खुद यहाँ आयी थी और मुझसे बाते करती रही थी ?"

"सच ?"

"हाँ।"

"तुमने उससे क्या कहा · मेरे बारे मे क्या कहा ?"

"मैने उसे बताया कि तुम बडे नेक, ईमानदार और मेहनती आदमी हो, क्योकि यह बात तो उसे पहले से भी मालूम है।"

"उसे मालूम है।"

"वह ! यह तो साफ जाहिर है। मै चाहे कही भी चला जाऊँ, या मुझे कुछ भी हो जाए, तुम उन दोनो की देख-भाल जरूर करोगे। राजुमिहीन, मै उन्हे तुम्हारे सपुर्द करता हूँ, क्योकि मै अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम दुनिया को प्यार करते हो। मुझे तुम्हारे हृदय की पवित्रता मे विश्वास है। मुझे यह भी मालूम है कि वह भी तुम्हे प्यार करेगी, शायद वह पहले से ही तुम्हे चाहती हो। अब तुम खुद ही फैसला कर लो, तुम्हे पियक्कडो की मडली में जाना चाहिये या नही · ·।"

"रोद्या···खैर· · जाने दो ! लेकिन तुम किधर जाने की सोच

रहे हो ? अगर उसमे कोई भेद है तो रहने दो · लेकिन · मै· · मै तुम्हारा भेद मालूम कर लूगा। जरूर तुम्हारे दिमाग मे कोई खुराफात पैदा हुई है, कोई कल्पना की ईजाद होगी। · · ·वैसे आदमी तुम शानदार हो शानदार !"

"यही तो मै भी कहने वाला था, तुमने बीच मे ही मुझे टोक दिया। तुम मेरे भेद को नही जानना चाहते, यह बडी अच्छी बात है। इसकी चिता न करो। सब समय पर छोड दो। ठीक समय आने पर तुम्हे सब मालूम हो जायेगा। कल एक आदमी ने मुझसे कहा कि इन्सान को जरूरत है सिर्फ ताजी हवा की। मै फौरन जाकर उससे इस बात का अर्थ पूछूँगा।"

राज़ुमिहीन उत्तेजना और गहरी सोच मे खडा इन सब बातो से कोई नतीजा निकालने की कोशिश कर रहा था।

सहसा उसे ख्याल आया, "हो न हो यह राजनैतिक षड्यन्त्र-कारी है—और निश्चय ही यह कोई भयकर कदम उठाने वाला है। और · दुनिया को यह मालूम है।"

"अच्छा तो अवदोत्या इवानोव्ना तुमसे मिलने आती है ?" राज़ुमिहीन ने एक एक शब्द तोलते हुए कहा, "और तुम एक ऐसे आदमी को मिलने जा रहे हो जो कहता है कि हमे ताजी हवा की जरूरत है— तब तो वह खत ·· उसका भी ज़रूर इससे कोई ताल्लुक होगा।"

कौनसा खत ?"

"आज अवदोत्या रोमानोवना को एक खत मिला। वह हद से ज्यादा परेशान है। जब मैने तुम्हारी चर्चा छेडी तो उसने मुझे मना कर दिया। और · ·और कहा कि शायद हमे जल्द ही जुदा होना पडेगा 'इस के बाद उसने मुझे हार्दिक धन्यवाद दिया और फिर अपने कमरे मे जाकर भीतर से दरवाजा बद कर लिया।

"उसे कोई खत आया था ?" रास्कोलनिकोव ने कुछ सोचते हुए पूछा।

"हा, भला तुम्हे नही पता था ? हूँ ..."

दोनो खामोश रहे।

"गुडबाई, रोदियोन। एक वक्त था भाई जब मै खैर जाने दो इस बात को, गुडबाई। जानते हो एक वक्त था' अच्छा गुडबाई। मुझे भी चलना चाहिये। मै शराब नही पीऊँगा। अब उसकी कोई ज़रूरत नही रह गई · यह सब खुराफात है !"

वह जल्दी से बाहर निकल गया। लेकिन दरवाजा बद करने मे पहले सहसा उसने अपनी नजर फेर कर पूछा,

"मै यूँ ही पूछ रहा हूँ, तुम्हे उस बुढिया की हत्या की बात याद है ? जानते हो हत्यारा पकडा गया है, उसने मय सबूतो के अपना जुर्म कबूल कर लिया है। हत्यारा उन पेन्टरो मे से एक है। तुम्हे याद है। मैने उनका कितना पक्ष लिया था ! जरा सोचो तो सही कि पुलिस के शक से बचने के लिये ही उसने अपने साथी से लडने झगडने और ठिठोली करने का नाटक किया था। जरा इस कुत्ते की चालाकी और दु साहस तो देखो ! इस बात पर विश्वास ही नही होता, लेकिन उसने खुद सारा जुर्म कबूल कर लिया है। मैने इस मामले मे कितना बुद्धूपन दिखाया ! वकीलो का शक दूर करने के लिए उसने इतनी चालाकी से पाखड रचाया। ऐसे आदमी पर कौन अचरज करेगा ! ऐसे लोग जो न कर दिखाये, थोडा है ! लेकिन वह अपनी बात पर कायम न रह सका और उसने जुर्म कबूल कर लिया। मै भी कितना बुद्धू था जो मैने उनका इतना पक्ष लिया।"

"मेहरबानी करके यह बताओ कि तुम्हे यह खबर किसने बताई, और तुम इसमे इतनी दिलचस्पी क्यो ले रहे हो ?" रास्कोलनिकोव

अपनी उत्तेजना न छिपा सका।

"भाई वाह! हद हो गई? तुम पूछते हो कि मुझे इसमे क्यो दिलचस्पी है? · मैने औरो के अलावा पोरफेरी से यह सुना है उसी से मुझे सब कुछ पता चला।"

"पोरफेरी से?"

"हाँ पोरफेरी से।"

"क्या · उसने क्या कहा था?" रास्कोलनिकोव के स्वर मे खिन्नता थी।

"उसने मुझे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सारी घटना समझाई। तुम जानते हो वह किस शैली मे बाते करता है।"

"समझाई? उसने खुद यह सारी बात समझाई?"

"हाँ, हाँ, गुडबाई। फिर किसी वक्त मै तुम्हे सारी बाते बताऊगा, अब मुझे काम है। एक वक्त था जब मै सोचता था · खैर फिर किसी वक्त। · 'अब मुझे शराब की क्या जरूरत है? तुम्हारी बातो से मुझे वैसे ही सरूर हो गया है। मै नशे मे हूँ रोद्या! गुडबाई, मै जा रहा हूँ। जल्द ही फिर आऊँगा।"

वह बाहर चला गया। सीढिया उतरते वक्त उसने सोचा, "इसमे कोई शक नही कि वह षड्यन्त्रकारी है। उसने अपनी बहन को भी शामिल कर लिया है। अवदोत्या रोमानोवना के स्वभाव को देखते हुए यह सभव मालूम होता है। दोनो मे मुलाकाते होती है · 'उसकी बहन ने भी इस ओर इशारा किया था · उसके शब्दो ·· सकेतो से · यह साफ जाहिर है! इसके सिवा इस गोरखधन्धे को कैसे सुलझाया जा सकता है? हूँ! मै तो सोच रहा था हे ईश्वर मेरे दिमाग मे न जाने कैसी कैसी बाते आई थी। मेरा भी दिमाग खराब हो गया था। उस दिन बरामदे मे लैप के नीचे उसने ही यह बात सुझाई थी। छि कैसे बेहूदे और पाप भरे विचार मेरे

दिमाग मे आये थे। निकोलाई ने जुर्म कबूल कर लिया वडा अच्छा हुआ, सारा मामला साफ हो गया। उसकी बीमारी, उसकी अजब आदते यूनिवर्सिटी मे भी वह कितना उदास और मनहूस रहता था।··लेकिन इस खत का क्या मतलब है ? शायद इसमे भी कोई राज़ है। लेकिन यह खत किसने भेजा ? मुझे शक है । नही मै जाकर मालूम करूँगा।"

उसे दूनिया का ख्याल आया और वह तेजी से भागने लगा। इन सारी बातो को सुनकर उसका दिल धडक रहा था।

राजुमिहीन के जाते ही रास्कोलनिकोव उठ कर खिडकी के पास जा खडा हुआ और एक कोने से दूसरे कोने मे चक्कर काटने लगा। उसकी कोठरी कितनी तग है, यह बात उसे शायद भूल गई थी। वह फिर आकर सोफे पर बैठ गया। उसे अपने भीतर नई ताजगी महसूस हो रही थी। उसे मुक्ति के लिए सघर्ष करने का नया रास्ता सूझा था।

"हाँ, मुक्ति का नया रास्ता।" उसके दिल पर इतना बोझा था कि उसका दम घुटा जा रहा था। कई बार उसे अजब सुस्ती और थकान महसूस होती थी। पोरफेरी के दफ्तर में निकोलाई को देखने के बाद से उसकी घुटन और भी बढ गई थी और उसे मुक्ति का कोई रास्ता नज़र नही आता था। उसी दिन सोनिया से उसकी मुलाकात हुई थी। उसका व्यवहार और अन्तिम शब्द एक दम उसकी आशा के विपरीत थे। उसमे कमजोरी आ गई थी और उसकी जडे हिल गई थी। उस वक्त मन ही मन उसने सोनिया के विचार के साथ सहमति प्रकट की थी। इस पाप को मन मे छिपाये वह सारी जिदगी अकेलेपन मे नही काट सकता था।

"और स्वीद्रीगाईलोव भी अजब पहेली था···उसकी वजह से भी उसे बडी परेशानी हुई थी। हो सकता है, उसे स्वीद्रीगाईलोव

से सघर्ष करना पडे। सभव है, स्वीद्रीगाईलोव मुक्ति का साधन बने लेकिन पोरफेरी• • •?"

"अच्छा तो पोरफेरी ने मनोवैज्ञानिक ढग से राजुमिहीन को समझाया था। उसका कम्बख्त मनोविज्ञान फिर आ गया। क्या पोरफेरी निकोलाई को अपराधी समझता है? उस दिन की मुलाकात के बाद भी? इसका एक ही 'कारण' हो सकता है।" (इस बीच रास्कोलनिकोव को पोरफेरी से हुई अपनी बातचीत के शब्द अक्सर याद आते थे और वह हरदम परेशान रहता था।) उन दोनो मे ऐसी बाते हुई थी, इस ढग से नजरे मिलाई गई थी, बातो का लहजा कुछ ऐसा था कि पोरफेरी ने निकोलाई की असलियत फौरन भाप ली थी और उसकी पहली धारणा टस से मस नही हो सकी होगी।

"जरा सोचो तो अब राजुमिहीन भी शक करने लगा! उस दिन बरामदे मे लैप के नीचे हुई बातचीत ने गहरा असर छोडा था•• वह भागा हुआ पोरफेरी के पास गया था। लेकिन पोरफेरी उसे इस तरह क्यो मिला था? पोरफेरी ने राजुमिहीन को यह क्यो बताया है कि निकोलाई असली मुजरिम है? जरूर इसमे कोई चाल छिपी है। लेकिन कौनसी चाल? यह ठीक है कि उस मुलाकात के बाद काफी अरसा गुजर गया है— काफी से ज्यादा— लेकिन पोरफ़ेरी का नामो-निशान नही। वह अपशकुन था••"

रास्कोलनिकोव ने टोपी उठाई और कुछ सोचता हुआ बाहर निकला। कई दिनो के बाद आज पहली बार उसने दिमाग मे साफ ढग से सोचा था, "पहले मुझे स्वीद्रीगाईलोव से निपट लेना चाहिये। जल्द से जल्द ही। वह भी इस इन्तिजार मे है कि मै खुद उसके पास जाऊँ।" उस समय उसके क्लात हृदय मे नफरत का चश्मा फूट पडा, वह उसी क्षण पोरफेरी और स्वीद्रीगाईलोव दोनो मे से एक की हत्या

कर सकता था। कमसे कम उसे यह आभास तो हुआ कि वह फौरन नही तो बाद मे जरूर हत्या करने मे समर्थ होगा।

"अच्छा देखी जायेगी, देखी जायेगी" वह बुदबुडाया।

लेकिन दरवाजे से निकलते ही उसकी मुठभेड पोरफेरी से हो गई। पोरफेरी खुद ही उससे मिलने आ रहा था। क्षणभर के लिये रास्कोलनिकोव स्तब्ध रह गया। लेकिन अगले ही क्षण उसका आश्चर्य और भय काफूर हो गया। फौरन वह बचाव के लिये तैयार हो गया और सोचने लगा, "क्या सब खत्म होने वाला है? लेकिन पोरफेरी क्या बिल्ली की तरह दबे कदमो से आया है कि मुझे मालूम ही नही हुआ? या उसने दरवाजे के पीछे छिपकर सारी बाते सुन ली है?"

"रोदियोन रोमनोविच, देखता हूं तुम्हे किसी मिलने वाले के आने की उम्मीद नही थी" पोरफेरी ने हँसकर कहा, "बहुत दिनो से मै तुम्हारे यहा आने की सोच रहा था। आज इधर से गुजरते वक्त सोचा क्यो न पॉच मिनट के लिये तुम्हारे यहाँ होता जाऊँ! क्या तुम कही बाहर जा रहे हो? मै तुम्हे ज्यादा देर नही रोकूँगा। मुझे सिर्फ एक सिगरेट पिलाओ।'

"बैठिये पोरफेरी पैत्रोविच बैठिये!" रास्कोलनिकोव ने इस दोस्ताना ढग से अपने मेहमान को बिठाया कि अगर वह अपनी शक्ल देख सकता तो उसे खुद ताज्जुब होता।

अतिम घडी आ पहुँची थी! आखिरी बूँदें निचोडी जाने वाली थी। इसलिये इन्सान कई बार आध घटे तक किसी डकैत से आतकित रहने और यत्रणा सहने पर भी छुरे को अपनी गर्दन के नजदीक देखकर भी नहीं डरता।

रास्कोलनिकोव आकर पोरफेरी के ऐन सामने बेझिझक बैठ गया। पोरफेरी ने ऑखे सिकोड ली और वह सिगरेट सुलगाने लगा।

रास्कोलनिकोव का दिल जैसे कहने के लिये आतुर हो उठा, "बोलो-बोलो! तुम बोलते क्यो नहीं?"

२

पोरफेरी ने सिगरेट सुलगा कर कहा, "सिगरेट कितनी नुक्सान-देह चीज है, फिर भी मै इसे नही छोड सकता ! मुझे खाँसी आती है, गले मे खुजली मचती है और साँस लेने मे दिक्कत होती है। तुम जानते ही हो मै कितना बुजदिल हूँ। अभी उस दिन मै डाक्टर द— के पास गया था। वे हमेशा हर मरीज पर आधा घटा खर्च करते है। लेकिन मुझे देखते ही वे हँस पडे और उन्होने मुझे चेतावनी दी, "तम्बाकू तुम्हारे लिये नुक्सानदेह है, तुम्हारे फेफडे पहले से खराब है।" लेकिन मै सिगरेट भला कैसे छोड दूँ ? इसे छोड दूँ तो फिर क्या पीऊँ ? शराब मै पीता नही, यही सारी आफत की जड है, ही-ही-ही ! दुनियाँ मे हर चीज सापेक्ष हे रोदियोन रोमनोविच ! हर चीज !"

"लो यह फिर अपनी पेशेवर चाले खेल रहा है।" रास्कोलनिकोव ने चिढ कर सोचा। उसे पहले वाली मुलाकात की बाते याद हो आई, और उसकी खीज और भी बढ गई।

पोरफेरी ने कमरे मे नजर दौडाते हुए कहा, "मै परसो शाम को भी तुमसे मिलने आया था। तुम्हे नही मालूम ? परसो भी मै इधर से

गुजर रहा था, मैंने सोचा तुम से मिलता चलूँ। तुम्हारे कमरे का दरवाजा खुला था। मैं कुछ देर इन्तजार करता रहा, फिर अपना नाम और पता बिना बताये ही लौट गया। तुम दरवाज़े मे ताला नही लगाते क्या ?"

रास्कोलनिकोव के चेहर पर निराशा छा गई। पोरफेरी ने उसकी मनोदशा को भाँप लिया।

"मेरे प्यारे दोस्त रोदियोन रोमनोविच, मै आज सारा मामला निपटाने आया हूँ। मुझे तुम्हारी एक बात का जवाब देना है, और मै ज़रूर दूँगा," उसने रास्कोलनिकोव के घुटने को थपथपाते हुए कहा।

सहसा पोरफेरी का चेहरा सजीदा हो गया और उस पर चिता और उदासी की रेखाये खिच गई। रास्कोलनिकोव हैरान हो गया। उसने पोरफेरी के चेहरे पर ऐसे भाव पहले कभी नही देखे थे।

"पिछली बार जब हमारी मुलाकात हुई थी तब हमारे बीच एक विचित्र दृश्य हुआ था, रोदियोन रोमनोविच। हमारी पहली मुलाकात भी विचित्र थी लेकिन · एक के बाद दूसरी बाते होती रही। मुझे लगता है कि शायद मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है। तुम्हे याद है हम एक दूसरे से कैसे रुखसत हुए थे। तुम्हारा मन विक्षिप्त था और आवेश से हम दोनो के घुटने काँप रहे थे। हम दोनो का व्यवहार अशोभनीय और अभद्रतापूर्ण था। जो भी हो हम है तो शरीफ आदमी ही। यह बात याद रखनी चाहिये। तुम्हे याद है कि हम·· ? कैसी अशोभनीय बात है !"

"आख़िर यह कौनसी चाल खेलना चाहता है ? मुझे इसने क्या समझ रखा है ?" रास्कोलनिकोव मन ही मन हैरान हो रहा था। उसने सर उठा कर विस्फरित नेत्रो से पोरफेरी की तरफ देखा।

पोरफेरी ने अपनी निगाह नीची कर ली, जैसे वह अपने शिकार को और अधिक नही सताना चाहता था, और उसे अपनी ज़्यादती पर

अफसोस हो रहा था। "मैंने तय किया है कि हम दोनो को आपस मे खुलकर बाते करनी चाहिये। हॉ, ऐसे शक और यह नाटक ज्यादा दिनो तक नही चलेगे। निकोलाई ने आकर मेरे शक को दूर कर दिया वरना हम दोनो के बीच न जाने और क्या क्या होता! जरा सोचो तो सही वह कबख्त पेन्टर पास के कमरे मे बैठा सारी बाते सुन रहा था—शायद तुम्हे यह पहले ही मालूम होगा, मै जानता हूँ बाद मे वह तुम्हारे पास भी आया था। लेकिन उस वक्त तुमने जो अदाज लगाया था, वह गलत था। मैंने पहले से किसी किस्म की तैयारी नही कर रखी थी, न ही मैंने किसी को बुलवा भेजा था। तुम पूछ सकते हो, मैंने इन्तजाम क्यो नही किया? मै तुम्हे बताऊँगा— यह सब अचानक हो गया। मैंने अभी पहरेदारो को बुलवाया ही था (तुमने खुद बाहर निकलते वक्त उन्हे देखा होगा) कि उसी वक्त मेरे दिमाग मे एक विचार आया। उस वक्त मुझे पक्का यकीन था रोदियोन रोमनोविच। मैंने सोचा—अगर एक चीज को मै कुछ देर के लिये हाथ से जाने भी देता हूँ— तो बदले मे दूसरी चीज हाथ आ जायेगी। किसी भी हालत मे मै कुछ खोऊँगा नही। तुम्हारा मिजाज चिडचिडा है रोदियोन रोमनोविच, जो तुम्हारी सहृदयता और सच्चरित्रता के साथ मेल नही खाता। कुछ हद तक मैंने तुम्हारे चरित्र को समझा है। उस वक्त भी मैंने सोचा था कि आदमी उठकर सब कुछ कबूल कर ले— ऐसा कम ही होता है। लेकिन कई बार अगर धैर्य खो दे तो ऐसा कर भी सकता है, लेकिन फिर भी यह मुश्किल काम है। इस बात का ऐहसास मुझे पूरी तरह था। मेरा ख्याल था कि अगर मेरे पास जरा सा भी कोई तथ्य है, ठोस दिखाई देने वाला तथ्य, मनोवैज्ञानिक तथ्य नहीं, तो मै अपराधी से बहुत कुछ कबूल करवा सकता हूँ, बशर्ते आदमी ने अपराध किया हो। सचमुच यह तरीका अपनाने से बडे सनसनीखेज नतीजे निकलते है। मुझे तुम्हारे स्वभाव पर भरोसा था रोदियोन

रोमनोविच, सबसे ज्यादा तुम्हारे स्वभाव पर ! उस वक्त मुझे तुमसे बडी उम्मीदे थी ।"

"लेकिन आपके कहने का मशा क्या है ?" हठात् रास्कोल्निकोव के मुह से निकल पडा। वह सोच रहा था "पोरफेरी क्या कह रहा है ? क्या वह सचमुच मुझे बेकसूर समझता है ?"

"मेरी मशा क्या है ? मै अपनी स्थिति साफ करने आया हूँ। यह मेरा फर्ज है। मै तुम्हे बताना चाहता हूँ कि सारी गलतफहमी कैसे शुरू हुई। मैने तुम्हे बडी यत्रणा दी है रोदियोन रोमनोविच। मै राक्षस नही हूँ, मै समझ सकता हूँ कि एक दुर्भाग्यग्रस्त-स्वाभिमानी, जोशीले और अधीर आदमी के लिये ऐसा दुर्व्यवहार सहना कितना कठिन होता है। जो भी हो मै तुम्हे सच्चरित्र और सहृदय समझता हूँ हालाँकि मै तुम्हारे सारे विचारो से सहमत नही। यह बात मै तुम्हे पहले भी सच्चे दिल से साफ साफ बताना चाहता था क्योकि मै तुम्हे धोखा नही देना चाहता। तुम्हारा परिचय पाकर मै तुम्हारी तरफ आकर्षित हुआ था। शायद तुम्हे यह सुनकर हँसी आयेगी, खैर तुम्हे हँसने का अधिकार भी है। मै जानता हूँ, तुम मुझे शुरू से ही नापसद करते रहे हो। फिर तुम्हारा मुझे पसद करने का कोई विशेष कारण भी तो नहीं। तुम चाहे जो सोचो, लेकिन मै पहली कटुता मिटाने के लिये कुछ भी करने को तैय्यार हूं। मै यह साबित करना चाहता हूँ कि मेरे पास भी दिल और अन्तर्रात्मा है। मै सच्चे दिल से कह रहा हूँ।"

यह कहकर पोरफेरी पैत्रोविच ने खामोशी अख्तियार कर ली। रास्कोल्निकोव को फिर घबराहट महसूस हुई, यह सोचकर कि पोरफेरी उसे बेकसूर समझता है।

पोरफेरी बोला, "इन सारी बातो मे ब्योरेवार जाने की जरूरत नही है। कम से कम मै तो इस प्रसग को नही छेडना चाहता।

शुरूआत अफवाहो से हुई, ये अफवाहे कब, कहाँ से मेरे पास पहुँची, • इनका तुम पर क्या असर हुआ इसकी गहराई मे जाना व्यर्थ होगा। एक अप्रत्याशित घटना ने आकर मेरे मन मे शक पैदा कर दिया। वह घटना क्या थी ? हू ! छोडो इस किस्से को भी। उन अफवाहो ने और उस घटना से मेरे मन मे एक विचार उठा—मैं साफ मानता हू, क्यो न मामले की सफाई हो जाये, पुलिस महकमे मे सिर्फ मै ही ऐसा था, जिसने सबसे पहले तुम्ही पर शक किया। बुढिया के पास रखी गिरवी की चीजो की फेहरिस्त से कुछ पता नही चला। सैकडो गिरवी रखने वालो मे से तुम भी एक थे। मैने एक आदमी से दफ्तर-वाली पूरी घटना भी सुनी थी। इसी तरह एक के बाद दूसरी बात होती गई, रोदियोन रोमनोविच मेरे अजीज ! फिर भला मै कैसे किसी नतीजे पर पहुचता। अग्रेजी मे कहावत है सौ खरगोशो का एक घोडा नही बनता, न ही सौ शको का एक सबूत बनता है, लेकिन यह तो हुआ तर्क का दृष्टिकोण। इन्सान को पक्षपात करना ही पडता है। जो भी हो एक वकील आखिर है तो इन्सान ही। फिर मुझे तुम्हारे पत्रिका मे छपे लेख का ख्याल आया। तुम्हे याद है पहली मुलाकात मे हमारे बीच उस लेख की चर्चा छिड गई थी। उस वक्त मैने तुम्हारा मजाक उडाया था, सिर्फ तुम्हे बढावा देने के लिये। मै फिर कहता हू रोदियोन रोमनोविच, तुम बीमार हो और अधीर स्वभाव के हो। तुम दुस्साहसी, जिद्दी, सजीदा और . . ये बाते मै पहले से ही जानता था इसलिये तुम्हारा लेख मुझे परिचित सा लगा। उनीदी रातो मे, दबे भावावेश और धडकते दिल से इस लेख ने तुम्हारे दिमाग मे जन्म लिया था। और नौजवानो मे यह दबा हुआ भावावेश कितना खतर-नाक होता है। उस वक्त मैने तुम्हारा मजाक उडाया था लेकिन सच पूछो तो एक साहित्य प्रेमी होने के नाते मुझे ऐसे लेख बहुत पसद आते है, जो जवानी के पहले जोश मे लिखे जाते है। इस लेख मे एक

धु धलापन है जिसमे एक विचित्र स्पदन है। तुम्हारा लेख अयुक्तिसगत और विलक्षण है लेकिन उसमे एक पारदर्शी ईमानदारी और युवावस्था का अदम्य स्वाभिमान है और हताश व्यक्ति का दु साहस है। लेख नैराश्यपूर्ण है इसीलिये इतना बढिया है। तुम्हारा लेख पढकर मैने सोचा, "यह आदमी साधारण लोगो के रास्ते पर नही चलेगा।" इस भूमिका के बाद मै पूछता हूँ क्या मेरा ख्याल गलत था ? मेरे दोस्त, मै कुछ कह नही रहा, न ही कोई बयान दे रहा हूँ। मैने सिर्फ यह बात उस वक्त मन मे नोट कर ली थी। मैने सोचा, आखिर इस लेख मे है क्या ? कुछ भी नही, शायद बिलकुल कुछ नही। फिर सरकारी वकील मिथ्या धारणाओ से गुमराह नही होता। मेरे पास निकोलाई मय सबूतो के मौजूद है। तुम चाहे जो कहो, लेकिन वे है तो सबूत ही। फिर उसकी मनोवृत्तियो पर भी गौर करना पडेगा, क्योकि यह जिन्दगी मौत का सवाल है। ये सब बाते मै तुम्हे क्यो बता रहा हूँ ? ताकि तुम स्थिति को समझ सको और उस दिन की गुस्ताखी के लिये मुझे दोष न दो। सच मानो मैने गुस्ताखी नही की थी, ही-ही ! तुम सोचते हो कि उस वक्त मैने तुम्हारे कमरे की तलाशी क्यो नही ली थी ? ली थी, ही ही ! जब तुम बीमार पडे थे तो मै यहाँ आया था, जाती और सरकारी तौर पर नही, लेकिन मै यहाँ मौजूद जरूर था। पहला शक दूर करने के लिये तुम्हारे कमरे के हर कोने की छानबीन की गई थी। लेकिन . मैने सोचा अगर आदमी मुजरिम है तो वह जरूर आयेगा। जल्द आयेगा और चाहे कोई आये या न आये, लेकिन मुजरिम जरूर आयेगा। तुम्हे याद है राजुमिहीन ने किस तरह तुमसे इस विषय की चर्चा छेडी थी ? तुम्हे उत्तेजित करने के लिये हमने जानबूझकर कई अफवाहे फैलाई ताकि राजुमिहीन तुमसे इस केस पर बहस कर सके। लेकिन वह अपने गुस्से पर काबू नही पा सकता। ज़ेमेतोफ तुम्हारा चिडचिडापन और दु साहस देखकर दग रह

गया था। रेस्त्राँ मे बैठकर यह कहना, "मैने उस औरत की हत्या की।" यह लापरवाही और दु साहस की सीमा थी। मैने मन ही मन सोचा, अगर यह आदमी मुजरिम है तो हमे ताकतवर दुश्मन से सामना करना पडेगा। उस वक्त मेरा यही अनुमान था। मै तुम्हारी इन्तजार कर रहा था। लेकिन तुमने जेमेतोफ को चारोखाने चित्त कर दिया ·· और दरअसल मुसीबत यह है कि यह कम्बख्त मनोविज्ञान भी दोधारी तलवार है। खैर मै तुम्हारी इन्तजार करता रहा और लो तुम सचमुच आ गये। उस वक्त मेरे दिल मे धुकुर-पुकुर हो रही थी।

"लेकिन तुम्हे आने की क्या जरूरत थी? तुम्हारी हसी भी कितनी विचित्र थी। तुम्हे याद है! मै तो साफ सारी स्थिति समझ गया था, लेकिन अगर मै पहले से तुम्हारी इन्तजार मे न बैठा होता तो शायद तुम्हारी हसी मे मुझे कोई विचित्रता न नजर आती। देखा 'मूड' का कितना असर होता है। फिर राजुमिहीन ने—अरे हाँ वह पत्थर, जिसके नीचे सारी चीजे दबी हुई थी। मेरा ख्याल है वह किसी रसोई घर के पिछवाडे मे है। तुमने जेमेतोफ को, और बाद मे मेरे दफ्तर मे आकर भी यही बात बताई थी। फिर जब हम तुम्हारी चीजो की छानबीन करने लगे तो तुमने सफाई पेश की। तुम्हारे हर शब्द के पीछे दोहरा अर्थ रहता है जैसे इनमे कोई राज छिपा हो।

"इस तरह सोचते-सोचते मै कल्पना के आखिरी छोर तक पहुँच गया और एक खभे से जा टकराया। तब जाकर मुझे होश आया कि मै कितनी दूर तक बहक गया हूँ। जैसा मैने अभी कहा, हर बात का दूसरा अर्थ भी निकाला जा सकता है, जो बिल्कुल स्वाभाविक है। मै परेशान हो उठा। मैने सोचा, 'इससे तो बेहतर होता अगर छोटा सा तथ्य मेरी पकड़ मे आ जाये।' इसलिये जब मैने यह सुना कि बुढिया के फ्लैट मे जाकर किसी ने घटी बजाई थी तो मेरी साँस रुक गई और मेरा रोम रोम कापने लगा। "लो यह आ गया मेरा नन्हा

सा तथ्य ।" बस उसके बाद से मैं निश्चिन्त हो गया । मैं उस दृश्य को देखने की खातिर हजार रूबल लुटा देता जब एक मजदूर ने तुम्हारे मुँह पर तुम्हे हत्यारा कहा था, और तुम भीगी बिल्ली की तरह चुपचाप उसके पीछे चल पडे थे । उससे जवाबतलबी करने की हिम्मत तुममे नही थी । फिर सरसाम की हालत मे तुम्हारी कपकपी और तुम्हारे घटी बजाने का क्या अर्थ था ।

"रोदियोन रोमनोविच, अब तुम्हे पता चल गया होगा कि मैंने तुमने ऐसी चाले क्यो खेली थी ? और तुम ऐन उसी वक्त मेरे दफ्तर मे आ पहुचे थे ? खुदा कसम, लगता है जरूर किसी ने तुम्हे भेजा था । अगर निकोलाई आकर हमे अलहदा होने के लिये मजबूर न कर देता तो तुम्हे निकोलाई की याद है ? उसका बयान ऐसा था जैसे गाज गिरी हो । लेकिन उस गाज का मुझ पर क्षणभर के लिये भी असर नही हुआ । यह तो तुमने भी देख लिया, और असर होता भी कैसे ? तुम्हारे जाने के बाद भी निकोलाई ऐसी बाते नही करता रहा जो देखने मे युक्तिसगत थी, मुझे खुद उस पर ताज्जुब हुआ, हालाकि मुझे उसके एक भी शब्द मे सच्चाई नही नजर आई थी । अब समझ गये, आदमी चट्टान की तरह कैसे सख्त हो सकता है ? मैंने सोचा, भला निकोलाई का इस मामले से क्या ताल्लुक है ।"

"राजुमिहीन ने मुझे अभी बताया कि तुम निकोलाई को असली मुजरिम समझते हो और तुमने खुद यह बात राजुमिहीन से कही थी ..." रास्कोलनिकोव ने कहा और उसकी आवाज गले मे रुंध गई । वह बडी देर से उत्तेजित भाव से पोरफेरी की सारी बाते सुन रहा था, जिसने उसके आरपार देख लिया था । उसे डर था कि कही वह इन बातो पर विश्वास न कर बैठे, इसलिये वह पोरफेरी के सदिग्ध शब्दो मे किसी निश्चित और पक्के सबूत को तलाश कर रहा था ।

रास्कोलनिकोव की चुप्पी को टूटते देखकर पोरफेरी पैत्रोविच ने

प्रसन्नता से कहा, "मिस्टर राजुमिहीन ! ही-ही-ही मुझे किसी तरह राजुमिहीन से पीछा जो छुडाना था। दो आदमियो की सगति मे तीसरे का मेल नही बैठता। फिर राजुमिहीन इसके लिये माकूल आदमी नही है, फिर वह बाहर वाला ठहरा। वह भागता हुआ मेरे पास आया था, उसका चेहरा पीला जर्द था ' छोडो उसे क्यो इस मामले मे घसीटा जाये। हा तो मैं निकोलाई की बात कर रहा था। जानना चाहते हो वह किस किस्म का आदमी है, और उसके बारे मे मेरी क्या राय है ? अव्वल तो वह निरा बच्चा है। डरपोक तो नही है लेकिन कुछ आर्टिस्ट किस्म का आदमी है। हँसो नही, वह बडा मासूम और लोगो के बहकावे मे आने वाला है। उसका दिल विशाल है और उसका स्वभाव विलक्षण है। सुनते है कि उसे सगीत और नाचने का भी शौक है। आस पास के गावो से लोग उसका गाना सुनने आते है। वह पढने भी जाता है और बेहद हँसता है। अगर आप उसे चुप होने को कहे तो फौरन रोने लगता है। कई बार जब लोग उसे बच्चा समझने लगते है तो वह शराब के नशे मे धुत हो जाता है। अनजाने मे ही उसने चोरी भी की है, क्योकि उसका कहना है, "कही कोई चीज पडी देख कर उठा लेने को चोरी थोडे ही कहते है।" जानते हो धर्म मे उसकी गहरी आस्था है ? उसके परिवार के कई सदस्य 'घुम्मकड'* रह चुके है। दो साल तक अपने गाव मे उसने एक बुजुर्ग की शागिर्दी की थी। यह बाते मुझे खुद निकोलाई से और उसके गाव वालो से मालूम हुई। और यह आदमी भाग कर जगल मे जाना चाहता था। वह बडा जोशीला था, रात को प्रार्थना करता था, 'सच्ची' प्राचीन पुस्तको का अध्ययन करता था, और पढते पढते उसने अपना दिमाग विक्षिप्त कर लिया था।

"पीटर्सबर्ग के जीवन का उस पर गहरा असर पडा है, खासतौर

*एक धार्मिक सम्प्रदाय।

पर शराब और औरतो की उसे बुरी लत पड गई है। यहाँ आकर वह पूरी तरह से यही के रग मे रग गया है और अपने आध्यात्मिक गुरू वगैरह सब को भूल बैठा है। मैने सुना है कि एक आर्टिस्ट उससे स्नेह करने लगा है और अक्सर उससे मिलने आया करता है—अब बेचारे के ऊपर यह मुसीबत आ पडी।

"निकोलाई इस घटना से इतना डर गया कि उसने अपने गले मे फदा डालकर आत्महत्या करनी चाही, वह घर से निकल भागा। आम लोगो के मन मे रूसी कानूनी कार्यवाही के बारे मे जो गलतफहमियाँ है, उन्हे कैसे दूर किया जाये। कुछ लोग तो 'मुकद्मा' शब्द ही सुनकर भयभीत हो उठते है। इसमे किसका दोष है ? अब देखना है कि नये ज्यूरी क्या करते है ? ईश्वर करे वे नेकी ही करे। जेल मे आकर निकोलाई को अपने गुरू की याद आई और वह फिर बाईबिल पढने लगा। जानते हो रोदियोन रोमनोविच, कुछ लोगो के लिये 'पीडा' शब्द कितना शक्तिशाली होता है ? इनका ख्याल है कि इन्सान को पीडा भुगतनी ही है। अगर यह पीडा उन्हे सरकार देती है तो और भी अच्छा है। मुझे याद है, जेल मे एक बडा ही नम्र और शरीफ कैदी हुआ करता था। वह सालभर तक जेल मे रहा। हर रोज रात को वह नियमपूर्वक अगीठी के पास बैठ कर बाईबिल पढा करता था। पढते पढते उसका दिमाग इतना विक्षिप्त हो गया कि एक दिन उसने बिना सोचे समझे गवर्नर के सर पर एक ईट दे मारी, और मारी भी इस तरह कि वह गवर्नर को न लग कर आँगन मे गिरी। उसे डर था कि कही गवर्नर को सचमुच चोट न लग जाये। तुम जानते ही हो कि जो कैदी किसी अफसर पर हमला करता है उसकी सजा क्या होती है। बस उसने अपनी पीडा को गले लगा लिया।

"मुझे अब लगता है कि निकोलाई भी पीडा को आमन्त्रित करना चाहता है। इस बात के कई सबूत भी मेरे पास है। लेकिन निकोलाई

को नही मालूम कि मुझे सब पता है। क्या तुम नही मानते कि किसानो मे ऐसे विलक्षण लोग भी होते है ? अजी ऐसे बेशुमार लोग होते है। आजकल, खासतौर पर जब से उसने आत्महत्या करने की कोशिश की थी, उस पर गुरू का प्रभाव बढ रहा है। देख लेना वह खुद ही आकर मेरे आगे सब कुछ उगल देगा। तुम्हारा ख्याल है वह अपने बयान पर कायम रहेगा ? देखते जाओ, वह अपने शब्द वापिस ले लेगा। मै हर क्षण इस इन्तजार मे हूँ कि वह आकर अपना बयान वापिस ले ले। मुझे उसमे बडी दिलचस्पी पैदा हो गई है और मै उसका गौर से अध्ययन कर रहा हूँ। तुम्हारा क्या ख्याल है ? ही-ही ! कई सवालो के तो उसने मुझे बडे तर्कसगत जवाब दिये थे। ज़ाहिर है कि उसने कुछ सबूत इकट्ठे करके बडी होशियारी से अपना बयान तैयार किया था। लेकिन कई सवालो पर वह एक दम घबरा जाता है, उसे कुछ नही मालूम, न ही उसे शक है कि वह कुछ नही जानता।

"नही रोदियोन रोमनोविच, निकोलाई का इस केस से कोई ताल्लुक नही ! यह एक विलक्षण, आधुनिक, विषादमय घटना है। आज के जमाने मे इन्सान परेशान रहता है, कहा जाता है कि खून 'फिर से ताजा हो जाता है' आज के जमाने मे ऐशोआराम ही जीवन का उद्देश्य समझा जाता है। यहाँ बहुत से लोग किताबी सपने देखते है, सिद्धातो से उनका मन असतुलित हो गया है। इस केस के मुजरिम मे निश्चय तो नजर आता है लेकिन खास किस्म का। उसका ख्याल था कि वह इस तरह हत्या कर डालेगा जैसे लोग किसी मीनार या चोटी से कूद जाते है, लेकिन जुर्म करते वक्त उसकी टाँगे काप उठी। वह अपने पीछे दरवाजा बद करना भूल गया, कोरे सिद्धान्त की ख़ातिर उसने दो कत्ल किये। कत्ल करने के बाद वह नकदी नही ले जा सका, जो कुछ उसके हाथ आया, उसने एक पत्थर के नीचे दबा दिया। जब लोग बाहर घटी बजा रहे थे और दरवाजा पीट रहे थे, उतनी ही

मानसिक पीडा से उसे सतोष नहीं हुआ, विक्षिप्त हालत मे दोबारा उसी फ्लैट मे जाकर घटी बजाकर वह फिर से उस कपकपी को महसूस करना चाहता था···माना बीमारी के कारण यह सब हुआ, लेकिन यह भी तो सोचिये कि वह एक हत्यारा है। फिर भी वह अपने आप को ईमानदार समझता है और दूसरो को क्षुद्र समझता है, उसके भोलेपन को देखकर लगता है जैसे उसके साथ भारी ज्यादती की गई है। नही मेरे प्यारे रोदियोन रोमनोविच, यह निकोलाई जैसे आदमी का काम नही है।"

पहली बातो से रास्कोलनिकोव इतना निश्चित हो गया था, कि इन शब्दो से उसे बडा धक्का लगा। वह इस तरह काप उठा जैसे किसी ने उसे छुरा भोंक दिया हो।

"फिर·· फिर कौन·· हत्यारा है ?" बरबस उसके मुँह से निकल पडा। उसकी आवाज भर्रा गई थी।

पोरफेरी पैत्रोविच कुर्सी से सटकर बैठ गया, जैसे उसे इस सवाल से बडा आश्चर्य हुआ हो।

"हत्यारा कौन है ? भई वाह, रोदियोन रोमनोविच तुम ही तो हत्यारे हो।" पोरफेरी विश्वास भरे स्वर मे फुसफुसाया।

रास्कोलनिकोव सोफे से उछलकर खडा हो गया और कुछ सैकिड खडे रहने के बाद चुपचाप अपनी जगह पर बैठ गया। उसका चेहरा हृतकम्प से फडक रहा था।

पोरफेरी पैत्रोविच ने हमदर्दी भरी आवाज़ मे कहा, "तुम्हारे ओठ पहले की तरह काप रहे है। रोदियोन रोमनोविच देखता हू तुम मेरी बातो का गलत मतलब लगाते रहे हो। इसीलिए तुम्हे इतनी हैरानी हो रही है। मै जान बूझ कर तुमसे सारी बाते तय करने के इरादे से ही तो यहाँ आया हू।"

"बुढिया की हत्या मैने नही की", रास्कोलनिकोव उस भयभीत

बच्चे की तरह फुसफुसाया जो रगे हाथो पकडा गया हो।

"नही यह तुम्हारे सिवा और किसी का काम नही है।" पोरफेरी ने दृढ आवाज मे कहा।

दोनो दस मिनिट तक खामोश रहे। रास्कोलनिकोव मेज पर कुहनियाँ टिका कर अपने बालो मे ऊँगलियाँ फेरने लगा। पोरफेरी पैत्रोविच शाति पूर्वक इन्तजार कर रहा था। सहसा रास्कोलनिकोव ने घृणाभरी नजरो से पोरफेरी की तरफ देखा और कहा,

"तुम फिर अपनी पुरानी चालो पर आ गए! मालूम होता है अभी तक तुम्हारा मन नही भरा!"

"बस रहने दो, अब इन बातो से क्या फर्क पडता है? अगर कोई गवाह मौजूद होता तो कोई बात भी थी, लेकिन हम दोनो एकात मे बात कर रहे है। तुमने देख लिया कि मै तुम्हे खरगोश समझ कर तुम्हारा पीछा करने और पकडने के लिए नही आया। तुम चाहे अपना जुर्म कबूल करो या न करो, इससे मुझे कोई सरो-कार नही। मुझे पहले से पूरा यकीन है कि तुम्ही मुजरिम हो।"

"ऐसी बात है तो आप यहा किस लिए आये है? मैं फिर वही सवाल पूछूँगा। अगर आप मुझे मुजरिम समझते है तो फिर जेल में क्यो नही कैद कर देते?"

"अच्छा तो तुम यह सवाल पूछना चाहते थे? मै तुम्हे हर बात का जवाब दूँगा। अव्वल तो तुम्हे सीधा गिरफ्तार करना मेरे लिए ठीक नही।"

"क्यो अगर आपको यकीन है तो फिर आपको चाहिए कि··

"ओफ ओ! मेरे यकीन करने से क्या? फिलहाल मै तुम्हे जेलखाने की सुरक्षा क्यो दूँ? तुमने खुद गिरफ्तार होने की इच्छा प्रकट की है क्योकि तुम जानते हो कि जेल मे जाकर तुम्हे सुरक्षा मिलेगी। अगर मै तुम्हे उस पेन्टर के सामने खडा कर दूँ और तुम

उससे पूछो, "तुम नशे मे थे या नही ? तुम्हारे साथ मुझे किसने देखा था ? मै तो तुम्हे नशे मे धुत समझता था !" तो फिर मेरे पास क्या जवाब रहेगा ! तुम्हारी कहानी मे ज्यादा सच्चाई नजर आयेगी। उसकी गवाही मे सिवा मनोवैज्ञानिक तथ्यो के कुछ नही है—तुम प्रतिभाशाली हो इसलिए तुम्हारी बात ऐन निशाने पर जाकर बैठती है लेकिन वह बदसूरत थूथनी वाला आदमी बदनाम पियक्कड है। मैने कई बार खुलेआम तुम्हारे सामने भी स्वीकार किया है, कि मनोविज्ञान दुधारी तलवार है। दूसरे पहलू मे ज्यादा जोर है और वह युक्तिसगत मालूम होता है। इसके अलावा अभी तक मेरे पास तुम्हारे खिलाफ कोई सबूत नही है। वैसे मै तुम्हे जेल तो भेजूँगा ही, लेकिन मै तुम्हे पहले से ही चेतावनी देने आया हूँ जो शिष्टाचार के विरुद्ध है। फिर भी मै तुम्हे साफ साफ बता रहा हूँ कि तुम्हे जेल मे रखना मेरे लिए अहितकारी होगा। मेरे आने का दूसरा कारण••• ।"

"हाँ हाँ दूसरा कारण बताइये न !" रास्कोलनिकोव ने अधीर होकर पूछा।

"मैने तुम्हे अभी बताया कि मैं तुम्हारे आगे अपने को जवाबदेह समझता हूँ। मैं नही चाहता कि तुम मुझे राक्षस समझो। क्योकि शायद तुम्हे यह सुनकर विश्वास नही होगा कि मै तुम्हे सच्चे दिल से पसन्द करता हूँ। इसके अलावा मै तुम्हारे सामने एक सीधा प्रस्ताव रखने आया हूँ—तुम अपने को पुलिस के हवाले कर दो और सारा जुर्म कबूल कर लो। इसमे तुम्हे ही फायदा होगा, और मेरा फर्ज अदा हो जायेगा। कहो मैने अपनी तरफ से साफ बात की है या नही ?"

रास्कोलनिकोव ने कुछ सोचकर जवाब दिया, "सुनो पोरफेरी पैत्रोविच, आपने अभी कहा कि सिवा मनोवैज्ञानिक तथ्यो के आप

के पास कोई सबूत नही है। लेकिन अब आपने गणित की बाते शुरू कर दी। मान लो आपको गलतफहमी हो गई हो फिर ?"

"नही रोदियोन रोमनोविच। मुझे गलतफहमी नही हुई। खुश-किस्मती से एक छोटा सा सबूत अब भी मेरे पास है।"

"कौनसा सबूत ?"

"यह मै तुम्हे नही बताऊँगा, रोदियोन रोमनोविच। और फिर किसी भी सूरत मे तुम्हारी गिरफ्तारी रोकने का अधिकार मुझे नही है इसलिये तुम्हे गिरफ्तार तो होना ही पडेगा। फिर से सारे मामले पर सोच लो। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मुझे 'अब' कोई फर्क नही पडेगा। मै सिर्फ तुम्हारी खातिर ही यह कह रहा हूँ। विश्वास करो रोदियोन रोमनोविच तुम्हारी बेहतरी इसी मे है।"

रास्कोलनिकोव दुर्भावनापूर्ण मुस्कान के साथ बोला, "कैसी हास्यास्पद और बेहूदा बात है! मान लो कि मै मुजरिम हूँ जो मै नही मानता, तो मै जुर्म क्यो कबूल कर लूँ, जबकि तुमने खुद ही मुझे बताया है कि जेल मे रह कर मुझे बडी सुरक्षा मिलेगी ?"

"आह शब्दो मे बहुत ज्यादा विश्वास करना ठीक नही रोदियोन रोमनोविच! शायद जेल मे भी तुम्हें आराम नही मिलेगा। वह तो सिर्फ मेरा एक सिद्धात था। मेरे सिद्धातो में तुम्हे इतनी आस्था क्यो हो ? कौन जानता है कि अभी भी मै तुम से कोई बात छिपा रहा हूँ। भला मै सारी बाते कैसे खोल के रख दूँ ? ही-ही! फायदा क्या होगा ? जानते नही, जुर्म कबूल करने से तुम्हारी सजा कितनी कम हो जायेगी ? ऐसे क्षरण में जबकि एक दूसरे आदमी ने अपने को मुजरिम घोषित करके सारे केस को गडबड कर दिया है, अगर तुम अपना जुर्म कबूल करोगे तो सोचो यह तुम्हारे हक मै कितना अच्छा होगा ? मै ईश्वर के सामने कसम खाकर कहता हूँ कि मै इस तरह का इन्तजाम कर दूँगा कि तुम्हारा बयान सुन कर सब दग रह

जायेंगे। इन सारे मनोवैज्ञानिक तथ्यो का सफाया कर देंगे, ताकि तुम्हारे जुर्म का कारण मानसिक विकृति माना जायेगा, तुम्हारे खिलाफ सारे शक खत्म हो जायेंगे। सच पूछो तो यह हत्या तुम्हारी मानसिक विकृति ही थी। मै ईमानदार आदमी हूँ, रोदियोन रोमनोविच, अपना दिया वचन पूरा करूँगा।"

रास्कोलनिकोव की अवसादभरी खामोशी बनी रही और उसने निराश भाव से सर झुका लिया। बहुत लम्बी सोच के बाद वह फिर मुस्कराया। लेकिन यह मुस्कान बडी कोमल और उदास थी।

"नही, मुझे सज़ा कम हो या ज्यादा इसकी परवाह नही। मै जुर्म क़बूल नही करूँगा।"

"यही डर तो मुझे भी था!" पोरफेरी के मुँह से अनायास ही निकल गया। "मै भी डरता था कि तुम्हे सज़ा घटवाने मे कोई दिलचस्पी नही होगी।"

रास्कोलनिकोव ने उदास और भावुक आँखो से पोरफेरी की तरफ देखा।

"आह! जिन्दगी को यूं न फेको! अभी भी तुम्हारे आगे काफी ज़िन्दगी पडी है। तुम कैसे कह सकते हो कि तुम सज़ा को कम नहीं कराना चाहते! बड़े अधीर आदमी हो तुम!"

"मेरे आगे क्या पडा है?"

"ज़िन्दगी! तुम कैसे पैगंबर हो जी? तुम्हे कुछ मालूम भी है? बाईबिल मे लिखा है कि जो ढूंढता है वह पाता है, हो सकता है ईश्वर ने तुम्हे अपने नज़दीक लाने के लिये ही यह सब किया हो। लेकिन दासता के बंधन सदा के लिये नही......"

"दासता की अवधि कम जो हो जायेंगी।" रास्कोलनिकोव ने हँस कर टिप्पणी की।

"क्या तुम्हे बूर्जुआ 'बदनामी' से डर लगता है? हो सकता है, तुम

नही जानते यह क्या चीज है, फिर भी डरते हो, आखिर नौजवान जो ठहरे ! लेकिन तुम्हे पुलिस के आगे आत्मसमर्पण करने और जुर्म कबूल करने मे डर नही लगना चाहिये।"

"छि गोली मारो इस किस्से को" रास्कोलनिकोव ग्लानि भरे स्वर मे फुसफुसाया। शायद वह ऊचे स्वर मे बात नही करना चाहता था।

वह बाहर जाने के लिये उठ खडा हुआ, लेकिन फिर निराश-भाव से बैठ गया।

"गोली मारना चाहते हो तो मारो ! तुम अपनी आस्था खो बैठे हो, इसलिये तुम्हे लगता है कि मै तुम्हारी चापलूसी कर रहा हूँ। लेकिन अभी तुमने कितनी ज़िन्दगी देखी है ? तुम जिन्दगी को कितना समझ सके हो ? तुमने बैठे बिठाये एक सिद्धान्त गढ लिया और उसकी असफलता को देख कर तुम्हे शर्म आई और तुम्हे लगा कि वह सिद्धान्त कतई मौलिक नही था ! यह सच है कि उसकी नीचता प्रमाणित हो गई है, लेकिन तुम इतने नीच नही कि सुधर न सको ! बिलकुल नही ! तुमने कम से कम ज्यादा देर तक अपने को धोखा नही दिया बल्कि सीधे कूद कर अतिम सीमा तक पहुँच गये। जानते हो तुम्हारे बारे में मेरी क्या राय है ? मेरी राय मे तुम उन लोगो में से हो, जिनकी आँते नोच कर बाहर निकाली जा रही हो, तब भी जो यत्रणा देने वाले को देखकर मुस्कराते है, बशर्ते उन्हे ईश्वर मे या किसी और चीज़ मे आस्था हो। तुम भी आस्था पा लो तो ज़िन्दा रह सकोगे। तुम्हे मुद्दत से नये वातावरण की ज़रूरत है। पीडा भी अच्छी चीज़ है। पीडा सहो ! शायद निकलोई ने भी पीडा की कामना करके अच्छा ही किया है। मैं जानता हूँ, तुम इन बातो मे विश्वास नही करते, लेकिन जरूरत से ज्यादा अक्लमद न बनो। बिना तर्क—वितर्क के सीधे ज़िन्दगी की धार मे कूद पडो। डरो मत—धार तुम्हे सुरक्षित किनारे पर पहुचा देगी और तुम फिर अपने पैरो पर खडे हो सकोगे। कौनसा किनारा ?

यह मै कैसे बता सकता हू ? लेकिन मेरा विश्वास है कि तुम्हारे आगे अभी बडी लम्बी जिन्दगी पडी है। तुम समझते हो कि मै तुम्हारे सामने रटा रटाया भाषण दे रहा हू, लेकिन बाद मे तुम्हे ये बाते याद आयेगी और शायद किसी दिन तुम्हारे काम भी आयेगी। इसीलिये मै यह सब कह रहा हूँ। एक माने मे अच्छा हुआ कि तुमने सिर्फ बुढिया की हत्या की। अगर तुम्हारे दिमाग ने किसी दूसरे सिद्धान्त की ईजाद की होती तो शायद तुम इससे हजार गुना घृणित कोई काम कर बैठते। तुम्हे ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये। कौन जाने ईश्वर किसी और काम के लिए तुम्हे जिन्दा रखना चाहता हो! दिल को पक्का रखो और डर छोड दो। क्या तुम्हे आने वाले महान प्रायश्चित से डर लगता है ? नही यह तो शर्मनाक बात होगी। चूँकि तुमने एक ऐसा कदम उठाया है, इसलिए तुम्हे अपने दिल को कडा करना चाहिए। इसी मे न्याय है। न्याय तुमसे जो माग करता है, तुम्हे पूरी करनी चाहिए। मै जानता हू, तुम्हे इन बातो मे विश्वास नही है, लेकिन जिन्दगी तुम्हे पार लगा देगी। और यह वक्त भी बीत जायेगा। तुम्हे इस वक्त जरूरत है सिर्फ ताजी हवा की, ताजी हवा की, ताजी हवा की।"

रास्कोलनिकोव चौक उठा। "लेकिन आप कौन है ? कौनसे पैगम्बर है ? शान्ति और ज्ञान के किस ऊँचे दिव्य शिखर पर खडे हो कर आप ये घोषणायें कर रहे है ?"

"मै कौन हूँ ? मै एक ऐसा आदमी हू जिसकी जिन्दगी मे कोई आशा नही, मेरे दिल मे भावुकता और हमदर्दी है। शायद जिन्दगी का कुछ ज्ञान भी। लेकिन मेरा जमाना बीत चुका है। लेकिन तुम्हारी बात दूसरी है, तुम्हारे सामने अब भी बहुत जिन्दगी बाकी है। क्या पता तुम्हारी जिन्दगी भी धुए की तरह शून्य मे गायब हो जाए, लेकिन तुम नये क़िस्म के लोगो मे शामिल हो जाओगे। इससे क्या फर्क पडता है ? तुम्हे आराम से तो डर नही लगता ? लबे अर्से तक शायद तुमसे

किसी की मुलाकात नही होगी, इससे क्या ? वक्त नही, तुम खद ही इसका फैसला करोगे। लेकिन सूरज और सारे नक्षत्र तो तुम्हे देखेंगे। सूरज तो सूरज ही रहता है। तुम फिर क्यो मुस्करा रहे हो ? इसलिए कि मै शिलर की सी कविता कर रहा हूँ। मैं शर्त लगाता हूँ कि तुम्हारा ख्याल है कि मैं तुम्हारी तारीफ के जरिए तुम्हे काबू मे लाना चाहता हूँ ? हो सकता है, ही-ही-ही ! शायद तुम्हे मेरी किसी बात पर यकीन नही करना चाहिए, बेहतर हो कि कभी भी यकीन न करो। मैं इसी साचे मे ढला हूँ—यह मैं मानता हूँ। लेकिन तुम यह खुद सोच कर देख लो कि मैं किस हद तक नीच हूँ या ईमानदार हूँ।"

"आप मुझे कब गिरफ्तार कर रहे है ?"

"शहर मे घूमने की तुम्हे दो दिन की छूट और दे सकता हू। मेरे दोस्त सारे मामले पर गम्भीरता से सोचना और ईश्वर से प्रार्थना करना। इसमे तुम्हारा ही फायदा है, यकीन करो।"

"और मैं कही भाग गया तो ?" रास्कोलनिकोल ने विचित्र मुस्कान के साथ कहा।

"नही तुम भागोगे नही, तुम्हारी जगह कोई देहाती होता तो भाग जाता। दूसरो के विचारो पर पलने वाला कोई फैशनेबल अनास्थाशील व्यक्ति भी भाग सकता था, क्योकि उसे तो आप तर्जनी दिखाकर ही धमका सकते है और वह जिन्दगी भर किसी भी सिद्धान्त मे आस्था रखने के लिए तैयार हो जायेगा। लेकिन तुम तो पहले से ही अपने सिद्धान्त मे आस्था खो बैठे हो। तुम किस बूते पर भागोगे ? छिपकर क्या करोगे ? तुम खुद एकात से तग आ जाओगे। तुम्हे चाहिए निश्चित निश्चितता और अनुकूल वातावरण। भागने पर तुम्हे कैसा वातावरण मिलेगा ? तुम घूम फिर कर अपने दायरे में लौट आओगे। हमारे बिना तुम्हारी गति नही है। अगर मैं तुम्हे जेल में भेज दूँ—तो याद रखना, एक-दो या तीन महीने मे तुम अपना जुर्म कबूल कर

लोगे, तुम्हे ख़ुद इस बात पर ताज्जुब होगा। एक घटा पहले तुम्हे आभास तक न होगा कि तुम जुर्म कबूल करने जा रहे हो। मुझे पक्का यकीन है कि तुम अपनी 'पीडा का बोझ उठाने' का फैसला करोगे। इस वक्त तुम्हे मेरी बात पर यकीन नही होता लेकिन बाद मे तुम खुद भी इसी नतीजे पर पहुँचोगे पीडा एक महान चीज है। रोदियोन रोमनोविच। मै मोटा जरूर हो गया हू लेकिन मै इस सत्य को जानता हू। हसो नहीं। पीडा मे कोई प्रयोजन जरूर रहता है निकोलाई ठीक ही कर रहा है। तुम भागोगे नही रोदियोन रोमनोविच।"

रास्कोलनिकोव ने उठकर अपनी टोपी हाथ मे ले ली। पोरफेरी भी उठ खडा हुआ।

"घूमने जा रहे हो? अगर आँधी न आई तो शाम को मौसम सुहावना रहेगा। खैर ताजी हवा मे जाना तो अच्छी बात है।"

पोरफेरी ने भी अपनी टोपी उठा ली।

रास्कोलनिकोव ने चिढ कर जिद की, "पौरफरी पैत्रोविच, मेहरबानी करके यह मत समझ बैटियेगा कि मैने आपके आगे जुर्म कबूल कर लिया है। आप भी विचित्र आदमी है। सिर्फ कौतूहलवश मैने आपकी बाते सुनी। याद राखिए, मैंने कुछ कबूल नही किया।"

"मैने जानता हू। याद रखू गा। जरा देखो तो सही तुम किस तरह काँप रहे हो। घबराओ नही मेरे दोस्त जो जी में आये करो। थोडा घूम आओ, अधिक दूर तो तुमसे चला ही नही जायेगा अगर कोई ऐसी-वैसी बात हो जाये, तो मेरी एक प्रार्थना है," पोरफेरी की आवाज सहसा धीमी पड गई "बात तो कुछ बेहूदी सी है लेकिन है जरूरी। अगर कोई ऐसी स्थिति आये (मुझे इसमे यक़ीन नही, मेरे ख्याल मे यह तुम्हारे बस की बात नही) फिर भी अगर आने वाले दो दिनो मे तुम्हारे दिमाग मे कोई फितूर आया और तुमने किसी दूसरे, विलक्षण तरीके से यह मामला सुलझाना चाहा, अपने हाथो अपनी जान लेने

की कोशिश की, (विचार तो बेहूदा है—माफ करना) तो कागज के एक छोटे से पुर्जे पर उस पत्थर का हुलिया जरूर लिखकर छोड जाना इससे तुम्हारी सहृदयता प्रमाणित होगी, अच्छा फिर मिलेगें। मै कामना करता हू कि तुम्हारे दिमाग मे अच्छे विचार और अक्लमदी के फैसलें आये।"

पोरफेरी कमर झुका कर, रास्कोलनिकोव से नज़रे चुराता हुआ बाहर निकल गया। रास्कोलनिकोव जाकर खिडकी के पास खडा हो गया और अधीरतापूर्वक पोरफेरी के सडक पर पहुँचने का इन्तज़ार करने लगा। फिर वह भी कमरे से बाहर चला गया।

३

वह भागता हुआ स्वीद्रीगाईलोव के घर गया। किसलिये, वह वहाँ जा रहा है, यह उसे खुद भी मालूम नही था। लेकिन स्वीद्रीगाईलोव के पास कोई अज्ञात शक्ति थी, जिसका असर उस पर पडा था। जब से उसे यह आभास हुआ था वह हर वक्त बेचैन रहता था। अब जरूरत की घडी आ पहुँची थी।

रास्ते भर वह चिन्ता करता रहा, क्या स्वीद्रीगाईलोव पोरफेरी के यहाँ हो आया है?

जहाँ तक उसका अनुमान था, उसे इस बात पर विश्वास नही होता था। वह बार बार पोरफेरी से हुई अपनी मुलाकात को मन मे दुहरा रहा था, नही स्वीद्रीगाईलोव वहाँ नही गया।

"नही गया तो क्या अब जायेगा?" रास्कोलनिकोव को न जाने क्यो लगा कि भविष्य में भी ऐसा नही होगा। इसका कारण उसे खुद भी मालूम नही था वरना वह इसमे अपना वक्त बर्बाद न करता। उसे चिंता भी हो रही थी, लेकिन वह अपना ध्यान उस तरफ नही केन्द्रित कर पा रहा था। शायद किसी को विश्वास नही होगा कि अपने तत्का-लिक भविष्य के बारे मे उसके मन मे सिर्फ एक मद अस्पष्ट सी बेचैनी

हो रही थी। असली चिता तो उसे दूसरी थी, जो पहली से कही अधिक महत्वपूर्ण थी। उसे अतिशय नैतिक थकान का अनुभव हो रहा था, हालाकि आज उसका दिमाग पहले दिनो की बनिस्बत ज्यादा तेजी से काम कर रहा था।

क्या इतना सब होने के बाद क्षुद्र बाधाओ से डरने की जरूरत है ? मिसाल के लिये स्वीद्रीगाईलोव को पोरफ़ेरी के यहाँ जाने मे रोकने की तिकडम मे भला कोई फायदा है ? स्वीद्रीगाईलोव जैसे आदमी से पूछताछ करने और जाच पडताल मे वक्त बर्बाद करने की कोई जरूरत है ?

ओह ! वह इन बातो से कितना तग आ गया था।

फिर भी वह स्वीद्रीगाईलोव के घर की ओर जा रहा था। क्या वह किसी 'नई' बात की, खबर की या मुक्ति-साधन की आशा लेकर वहाँ जा रहा था ? क्या भाग्य या कोई सहजवृत्ति दोनो को एक दूसरे के करीब ला रहे थे ? डूबते को तिनके का सहारा ! शायद इसका कारण थकान और अवसाद था। शायद उसे स्वीद्रीगाईलोव का ख्याल अचानक ही आ गया था, और उसे जरूरत किसी दूसरे व्यक्ति की थी। सोनिया की ? लेकिन अब वह सोनिया के पास किसलिए जायेगा ? फिर उसके आसुओ की भीख माँगने ? उसे सोनिया से भी डर लगने लगा था, वह उसके लिये अमिट सजा की प्रतीक थी। वह या तो सोनिया के रास्ते पर चल सकता था या अपने रास्ते पर। विशेषकर उस वक्त तो सोनिया से मिलने का उसके मन मे कतई विचार नही आया था। क्या स्वीद्रीगाईलोद के पास जाना बेहतर नही होगा ? उसे आभास हुआ कि बहुत दिनो से वह किसी जरूरी काम के लिये स्वीद्रीगाईलोव से मिलना चाहता था।

लेकिन उन दोनो मे कौन सी समानता हो सकती थी ? यहाँ तक उनके पाप भी एक जैसे नही थे। इसके अलावा स्वीद्रीगाईलोव कर्कश,

लपट, चालाक, धोखेबाज और अनिष्टकारी भी तो था। उसकी यही शोहरत थी। इसमे सदेह नही कि वह कैटेरीना इवानोव्ना के बच्चो की बडी मदद कर रहा था लेकिन उसकी नीयत का क्या पता ? वह आदमी हर वक्त कोई न कोई साजिश करता रहता है।

एक और विचार भी लगातार रास्कोलनिकोव के मन मे मडरा रहा था और उसे परेशान कर रहा था। यह विचार इतना वेदनापूर्ण था कि उसने उसे भूलने की बडी कोशिश की। कई बार उसे महसूस हुआ कि स्वीद्रीगाईलोव शिकारी कुत्ते की तरह उसका पीछा कर रहा है। दूनिया को वह अपने चगुल मे फसाना चाहता है और उसे रास्कोलनिकोव के भेद का पता चल गया है। लेकिन उसके इरादे क्या पहले से ही ऐसे नही थे ? मानलो दूनिया को अपने चगुल मे फसाने के लिये उसने इन बातो का इस्तेमाल किया तो क्या होगा ?

कई बार सपने मे भी उसे इस विचार से परेशानी हुई थी, लेकिन स्वीद्रीगाईलोव के यहाँ जाने से पहले यह विचार कभी इतने साफ ढग से उसके दिमाग मे नही आया था। इस बात की कल्पना से ही उसके मन मे अवसाद भरा क्षोभ भर गया। अगर ऐसी बात हुई तो सारी स्थिति बदल जायेगी। उसे दूनिया को अपना राज बताना पडेगा। क्या पता दूनिया उत्तेजना मे कोई ऐसा वैसा कदम न उठाले, इस डर से उसे पुलिस के आगे आत्मसमर्पण न करना पडे। और वह खत ? आज सुबह दूनिया को कोई ख़त मिला है। पीटर्सबर्ग मे भला उसे खत लिखने वाला कौन है ? लूजिन ? यह ठीक है कि दूनिया की रक्षा के लिये राजुमिहीन वहाँ मौजूद था, लेकिन उसे स्थिति का कुछ ज्ञान नहीं। तो क्या राज़ुमिहीन को सारी बाते बताना उसका फर्ज है ? यह विचार आते ही उसका मन वितृष्णा से भर गया।

उसने अत मे तय किया, जो भी हो उसे जल्द से जल्द स्वीद्रीगाई-लोव से मिलना चाहिये। उस मुलाकात के ब्यौरे की उसे परवाह न

थी। काश वह मामले की जड तक पहुँच सकता। लेकिन अगर स्वीद्रीगाईलोव··मानलो वह दुनिया के खिलाफ साज़िश कर रहा हो तब ··?

रास्कोलनिकोव पिछले महीने की घटनाओ से इतना थक गया था कि ऐसे प्रश्नो को हल करने का उसे एक ही मार्ग सूझता था—"मै उसे मार डालूँगा।" उसने निराशभाव से सोचा।

सहसा आकस्मिक वेदना के बोझ से उसका दम घुटने लगा। वह सडक के बीचो बीच खडा हो कर देखने लगा कि वह किधर जा रहा है। उसने अपने को घाममडी से तीस या चालीस कदम दूर क-दृश्य के पास खडे देखा। बाई तरफ की इमारत की दूसरी मजिल पर एक सराय थी, जिसकी सारी खिडकियाँ खुली थी। खिडकियो के पास आते जाते लोगो को देखकर रास्कोलनिकोव ने अनुमान लगाया कि कमरो मे बहुत भीड जमा है। भीतर से गाने, क्लेरिनेट, वायलिन और तुर्की ढोल के स्वर सुनाई दे रहे थे। औरते चिल्ला रही थी। उसे आश्चर्य हुआ कि वह क—दृश्य की तरफ कैसे आ निकला। वह वापिस लौटने ही वाला था कि सहसा उसकी नजर एक खिडकी पर जा पडी, जहाँ चाय की मेज के आगे स्वीद्रीगाईलोव बैठा पाइप पी रहा था। रास्कोलनिकोव के पैरो तले से जमीन खिसक गई। स्वीद्रीगाईलोव भी खामोशी से उसका मुआयना कर रहा था और उठने वाला था। रास्कोलनिकोव ने यह जाहिर किया जैसे उसने किसी को देखा ही नही, और वह इधर उधर शून्यभाव से ताकने लगा, लेकिन वह कनखियो से स्वीद्रीगाईलोव को देख रहा था। उसका दिल जोरो से धडक रहा था। साफ़ जाहिर था कि स्वीद्रीगाईलोव भी नही चाहता था कि किसी की नजर उस पर पडे। वह मुँह से पाइप निकाल कर छिपने ही वाला था, लेकिन कुर्सी पीछे सरकाते ही उसे आभास हुआ कि रास्कोलनिकोव ने उसे देख लिया है। इसके बाद

वही हुआ जो पहली मुलाकात मे हुआ था । स्वीद्रीगाईलोव के चेहरे पर चालाकी भरी मुस्कान फैल गई । दोनो को मालूम था कि उन्होने एक दूसरे को देख लिया है । आखिरकार स्वीद्रीगाईलोव जोर से हँस पडा और उसने खिडकी मे से आवाज दी ।

"अच्छा, अच्छा, मुझसे मिलना चाहते हो तो भीतर आ जाओ । मै यहाँ हूँ ।"

रास्कोलनिकोव सराय के भीतर चला गया । उसने पिछवाडे के एक कमरे मे, जिसके साथ वाले हाल मे व्यापारी, क्लर्क और सब किस्म के लोग चाय पी रहे थे और कोरस वाले गला फाडकर गा रहे थे स्वीद्रीगाईलोव को बैठे देखा । दूर किसी कमरे से बिलियर्ड के गेंदो की आवाज़ सुनाई दे रही थी । स्वीद्रीगाईलोव के सामने वाली मेज पर आधा शेम्पेन का गिलास पडा था, कमरे मे एक लडका छोटा आॅर्गन बजा रहा था । पास मे लाल गालो वाली एक तदरुस्त लडकी गीत गा रही थी, जिसने मुडी हुई धारीदार स्कर्ट और फीतो वाली देहाती टोपी पहन रखी थी । साथ के कमरे मे कोरस चल रहा था । फिर भी यह लडकी आॅर्गन की धुन पर भारी आवाज से नौकरो का कोई गीत गा रही थी ।

रास्कोलनिकोव के कमरे मे दाखिल होते ही स्वीद्रीगाईलोव ने लडकी से कहा, "बस अब गाना बन्द करो ।" लडकी ने फौरन गाना बद कर दिया और आदरपूर्वक खडी हुक्म का इन्तजार करने लगी । उसने अपने गीत भी सजीदगी और आदर भाव से गला दबा कर गाए थे ।

"अरे फिलिप एक ग्लास और लाओ," स्वीद्रीगाईलोव चिल्लाया ।

"मै कुछ नही पीऊगा ।" रास्कोलनिकोव बोला "जैसी तुम्हारी मर्जी । वैसे भी यह मैने तुम्हारे लिए नही मगवाया था । पीओ कात्या ! आज मुझे और कुछ नही चाहिए । तुम जा सकती हो ।" उसने गिलास

शराब से भर दिया और मेज पर एक पीले रग का नोट रख दिया।

कात्या ने ग्लास हाथ मे लेकर बीस घूँटो मे खत्म किया, जो औरतो का कायदा है। फिर उसने नोट उठा लिया और स्वीद्रीगाईलोव का हाथ चूमकर बाहर चली गई। स्वीद्रीगाईलोव ने भी सजीदा भाव से उसे अपना हाथ चूमने की इजाजत दे दी थी। लडका भी ऑर्गन उठाकर लडकी के पीछे-पीछे चला गया। दोनो सडक से भीतर बुलाए गए थे। अभी स्वीद्रीगाईलोव को पीटर्सबर्ग मे आये एक हफ्ता भी नही हुआ था, कि उसने सब तरफ अपना रौब जमा लिया था। सराय का वेटर फिलिप उसका दोस्त और आज्ञाकारी सेवक बन गया था।

हॉल की तरफ खुलने वाले दरवाज़े पर ताला लगा हुआ था। स्वीद्रीगाईलोव बडी बेतकल्लुफी से इस कमरे मे रह रहा था और शायद कई दिनो तक बाहर नही निकला था। बहुत रद्दी किस्म की सराय होने के कारण चारो तरफ कूडाकर्कट फैला था।

रास्कोलनिकोव ने कहना शुरू किया, "मै तुम्हारी तलाश मे बाहर निकला था, लेकिन पता नही मै घासमडी से निकलकर अभी क-दृश्य के पास कैसे पहुँच गया। मै कभी इस तरफ नही मुडता, बल्कि घास-मडी से सीधा दाई ओर मुड जाता हूँ। फिर तुम्हारे घर पहुँचने का यह कोई रास्ता भी तो नही है। मै इधर चला आया और तुम यहा मिल गए। कैसी अजब बात है।"

"यह क्यो नही कहते कि यह चमत्कार है।"

"नही, हो सकता है यह सयोग ही हो।"

स्वीद्रीगाईलोव हँस पडा, "तुम सब लोगो की यही तो मुसीबत है कि अगर तुम्हे चमत्कार मे मन ही मन विश्वास हो जाए तब भी उसे स्वीकार नही करोगे। तुम कहते हो कि हमारी मुलाकात सिर्फ

एक सयोग है। रोदियोन रोमनोविच तुम नही जानते कि यहा के लोग अपनी राय कायम करने से कितना डरते है। मेरा मतलब तुमसे नही है, क्योकि तुम अपनी राय रखते हो और इस बात से डरते नही। इसीलिए तो तुम्हे देखकर मेरा कौतूहल जगा था।"

"सिर्फ इसी कारण से ?"

"तुम जानते हो इतना ही कारण काफी है।" स्वीद्रीगाईलोव सरूर मे था, हालाकि उसने शैम्पेन का सिर्फ अन्धा ग्लास ही पिया था।

"मेरा ख्याल है कि तुम यह जानने से पहले ही कि मै अपनी राय रखता हूँ—मुझसे मिलने आए थे।" रास्कोलनिकोव ने टिप्पणी की।

"खैर वह और बात थी। हर आदमी के अपने इरादे होते है। रही चमत्कार की बात सो मेरा ख्याल है कि पिछले दो तीन दिनो से तुम सोते रहे हो। मैंने खुद तुम्हे इस सराय का पता बताया था, इसलिए तुम यहाँ सीधे चले आए। इसमे कौनसा चमत्कार है ? मैंने तुम्हे सारा रास्ता समझाया था और यह भी बताया था कि मै यहाँ किस वक्त मिल सकता हूँ। याद है ?"

"मुझे तो कुछ याद नही," रास्कोलनिकोब ने चकित भाव से उत्तर दिया।

"यह मै मानता हूँ। मैंने तुम्हे दो बार अपना पता बताया था। मालूम होता है, तुम्हारी स्मृति मे ये सारी बाते यत्रवत अकित हो गई और तुम्हारे कदम अनजाने में ही, यत्रवत इधर मुड गए। उस वक्त भी तुम्हारी समझ में मेरी एक बात नही आई थी। तुम अपने दिल की बात फौरन बक डालते हो, रोदियोन रोमनोविच मेरा ख्याल है कि पीटर्सबर्ग मे बहुत से ऐसे लोग हैं जो चलते चलते अपने से बाते करते रहते है। यह सनकियो का शहर है। यहाँ वैज्ञानिको, डाक्टरो, वकीलो और फिलासफरों को अपने-अपने विषयो के अनुसधान का बडा अच्छा

मौका मिल सकता है । पीटर्सवर्ग के अलावा शायद ही कोई ऐसी जगह होगी जहाँ इसान की आत्मा पर इतने विषादमय, गहरे और विलक्षण प्रभाव पडते हो। अकेला वातावरण ही इतना महत्वपूर्ण होता है। सरकारी केन्द्र होने के नाते इसके वातावरण का प्रभाव सारे देश पर पडता है, लेकिन बात यह नही है, दरअसल मैने बहुत दफा तुम्हे गौर से देखा है। तुम घर से निकलते हो तो तुम्हारा सर ऊँचा रहता है—बीस कदम चलकर तुम सर झुका लेते हो और दोनो हाथ पीठ के पीछे रखकर चलते हो। उस वक्त तुम्हे आगे—पीछे का कोई ध्यान नही रहता। फिर तुम्हारे ओठ हिलने लगते है और तुम बडबडाने लगते हो, कई बार हाथ हिलाकर भर्त्सना करते हो और सडक के बीचोबीच खडे हो जाते हो। खैर इसमे भी कोई हर्ज नही है। लेकिन हो सकता है मेरे सिवा कोई और आदमी भी तुम्हे देख ले, जिससे तुम्हे नुक्सान पहुँच सकता है। खैर इस बात का मुझ से ज्यादा ताल्लुक नही, न ही मै तुम्हारी आदते सुधार सकता हूँ। लेकिन तुम मेरा मततलब समझ गए न।"

"तुम्हे मालूम है कि कोई मेरा पीछा कर रहा है?" रास्कोलनिकोव ने उत्सुक स्वर मे पूछा।

"नही, मैं इस बारे मे कुछ नही जानता," स्वीद्रीगाईलोव चकित दिखाई दे रहा था।

"अच्छी बात है। तब तो मुझे इसी तरह रहने दिया जाए," रास्कोलनिकोव ने चिढकर कहा। उसके माथे पर त्योरिया पड गई थी।

"अच्छा ऐसा ही सही।"

"यह बताओ, अगर तुम यहा सिर्फ शराब पीने आये थे और तुमने दो बार मुझे यहा आने की हिदायतें दी थीं, तो फिर तुमने मुझे देखकर खिडकी के पीछे छिपने की कोशिश किस लिए की थी?

मैन तुम्हे छिपते देख लिया था।"

"ही-ही ! तुमने मुझे देखकर आँखे मूदकर सोने का बहाना क्यो किया था ? मैने दरवाजे पर खडे होकर देखा था कि तुम चगे भले जाग रहे थे ? मैने भी तुम्हे आँख मूदते देख लिया था।"

"इसका कोई .. कारण हो सकता है।"

"हो सकता है कि मैने भी किन्ही कारणो से ही ऐसा किया हो—ये कारण तुम्हे मालूम नही है।

रास्कोलनिकोव ने दायी कोहनी मेज पर टिका कर हाथ से ठुड्डी पकड ली और गौर से स्वीद्रीगाईलोब की तरफ देखने लगा। इस चेहरे से वह पहले भी प्रभावित हुआ था। सफेद और लाल लकीरो वाला चेहरा, जिस पर सुनहरी दाढी और घने सुनहरे बाल थे, देखने मे नकाब जैसा मालूम होता था। उसकी नीली आँखे हद से ज्यादा नीली थी, और उनमे भारीपन था। उम्र के मुकाबिले मे स्वीद्रीगाईलोव का चेहरा बहुत तरुण था, लेकिन उसमे एक अज्ञात अप्रियता थी। उसने चुस्त, हल्के गरमी के कपडे पहन रखे थे। उसकी बनयान और रूमाल विशेष साफ-सुथरे थे। हाथ मे एक अँगूठी थी जिसमे कीमती पत्थर जडा था।

रास्कोलनिकोव ने अधीरता पूर्वक असली बात छेडी, "क्या अब मुझे तुम्हारे कारण भी परेशानी झेलनी पडेगी ? हालाँकि अगर तुम चाहो तो सबसे अधिक नुकसान पहुँचा सकते हो। लेकिन अब मैं अपना बचाव नही करना चाहता। मै साबित कर सकता हूँ कि मुझे अपने से विशेष मोह नही है जैसा कि शायद तुम समझते हो। मैं तुम्हे बताने आया हूँ कि मेरी बहन के बारे में अगर तुम्हारी नीयत पहले जैसी ही है और तुम हाल की घटनाओ से फायदा उठाना चाहते हो तो इससे पहले कि तुम मुझे जेल भिजवा सको मै तुम्हे मार डालूँगा। तुम जानते हो कि मै अपने निश्चय का कितना पक्का हूँ। अगर तुम मुझे

कोई बात बताना चाहते हो···मुझे हर समय लगता है कि तुम मुझ से कुछ कहना चाहते हो—तो जल्दी से कह डालो, क्योकि वक्त बडा कीमती है। हो सकता है कि यह वक्त फिर न मिले।"

"जल्दी किस बात की है," स्वीद्रीगाईलोव ने कौतूहल भरी दृष्टि से देखा।

"हर आदमी की अपनी स्कीमे होती है," रास्कोलनिकोव ने निराश और अधीर स्वर मे उत्तर दिया।

स्वीद्रीगाईलोव मुस्कराया, "तुमने ख़ुद ही तो मुझसे खुलकर बात कहने का आग्रह किया था, और अब तुम खुद मेरे पहले सवाल का जवाब तक नही देना चाहते। तुम्हारा ख़्याल है कि इसमे मेरा अपना कोई स्वार्थ है, इसीलिए तुम्हे मुझ पर शक है। ख़ैर तुम्हारी स्थिति मे यह सब कुछ स्वाभाविक ही है। मै तुमसे दोस्ती जरूर करना चाहता हूँ, लेकिन बहस करके तुम्हे कायल नही करना चाहता, क्योकि यह मगजपच्ची बेकार होगी। इसके अलावा तुम से मुझे कोई खास बात नही कहनी है।"

"फिर तुमने मुझे क्यो बुलाया था ? किस लिए तुम भागे भागे मेरे यहाँ आये थे ?"

"मैं तुम्हे अध्ययन की दिलचस्प सामग्री समझता हूँ, इसलिए आया था। तुम्हारी स्थिति की विलक्षणता मुझे पसन्द आयी—बस यही कारण है। फिर तुम ऐसी लडकी के भाई हो, जिसमें मुझे बडी दिलचस्पी रही है और जिसके मुँह से मैने तुम्हारे बारे मे बडी बडी बाते सुनी थी। मुझे यह भी मालूम था कि तुम्हारी बहन पर तुम्हारा बडा असर था—क्या इतना कारण ही काफी नही है, हा, हा, हा ! फिर भी मै मानता हूँ कि ·तुम्हारा सवाल बहुत पेचीदा है, मेरे लिए इसका जवाब देना मुश्किल है। मिसाल के लिए तुम न सिर्फ एक ख़ास इरादे से ही बल्कि कोई नई बात सुनने के लिए भी आये हो। क्यो

ठीक है न ?" स्वीद्रीगाईलोव चालाकी से मुस्कराया । "लेकिन तुमने यह क्यो नही सोचा कि मै पीटर्सबर्ग आते हुए ट्रेन में बिल्कुल यही सोच रहा था । मुझे उम्मीद थी कि तुम कोई नई बात सुनाओगे और मै तुम से कोई न कोई फायदा उठा सकूँगा । तुम देख ही रहे हो, हम दोनो कितने धनी है ।"

"तुम मुझसे भला क्या फायदा उठा सकते थे ?"

"यह मै कैसे बता सकता हूँ, मुझे क्या मालूम ? तुम देख तो रहे हो, मैं कैसी रद्दी सराय मे ठहरा हूँ । तुमने कात्या को देखा काश मै भी पेटू होता, क्लब के भुक्खड़ो की तरह । लेकिन यह सब खाना मेरे बस की बात नही है ।"

उसने कोने मे रखी तिपाई की ओर इशारा किया जिस पर टीन की तश्तरी मे गोश्त और आलू के बचे-खुचे टुकडे पडे थे ।

"और सुनो तुमने खाना खा लिया है क्या ?

"हाँ, मै खा चुका हूँ । मेरा पेट भरा है ।"

"मैं शराब बिल्कुल नही पीता, शैम्पेन के सिवा, और वह भी शाम भर में सिर्फ एक गिलास । इतनी मेरे सिर मे दर्द पैदा करने के लिए काफी है । मैंने अपने को गर्माने के लिये शैम्पेन मँगवाई थी । मै कही बाहर जारहा हूँ, इसीलिए इस हालत मे हूँ । मेरा ख्याल था कि तुम मेरे जाने में बाधा डालोगे, इसीलिए मैं स्कूल के विद्यार्थी की तरह छिप गया था । लेकिन मेरा ख्याल है···" उसने जेब से घडी निकाली, "मै एक घटा और ठहर सकता हूँ । साढ़े चार बजे है । काश मैं कोई ज़मीदार या पादरी, घुडसवार फौज का अफसर, फोटोग्राफर या पत्रकार होता·· मै एक नाचीज़ हूँ । मुझ मे कोई विशेषता नही है । कई बार मै ज़िन्दगी से ऊब जाता हूँ । मेरा ख्याल था कि तुमसे कोई नई बात सुनने को मिलेगी ।"

'लेकिन तुम काम क्या करते हो और यहाँ किस लिए आये हो?"

"क्या करता हूँ ? जानते हो कि मै एक शरीफ आदमी हूँ। दो साल मैने घुडसवार फौज मे नौकरी की, फिर पीटर्सबर्ग मे आवारा-गर्दी की। उसके बाद मैंने मार्फा पैत्रोव्ना से शादी करली और दिहात मे रहने लगा, यही मेरे जीवन का इतिहास है।"

"मेरे ख्याल मे तुम जुआरी हो, क्यो ?"

"ऐसा-वैसा मामूली जुआरी नही, बल्कि पक्का पत्तेबाज हूँ।"

"तुम पत्तेबाजी भी करते रहे हो ?"

"हाँ, पत्तेबाजी भी करता रहा हूँ।"

"कभी तुम्हारी पिटाई नही हुई ?"

"हुई थी क्यो ?"

"तुमने शायद दूसरो को ललकारा होगा ··सचमुच बडा लुत्फ आया होगा।"

"मै इस बात से इन्कार नही करता, न ही मै फिलाँसफर हूँ। सच कहूँ तो मै औरतो की खातिर भी यहाँ आया हूँ।"

"मार्फा पैत्रोव्ना को दफनाने के बाद इतनी जल्दी ?"

"और नही तो क्या ?" स्वीद्रीगाईलोव गर्व से मुस्कराया। "इसमें हर्ज क्या है ? क्यो, तुम्हे औरतो के बारे मे मेरा इस तरह बात करना बुरा मालूम देता है ?"

"तुम पूछ रहे हो कि मुझे पाप मे क्या बुराई नजर आती है ?"

"पाप ! तो तुम्हारे दिमाग मे यह फितूर समाया है। लेकिन मै बारी बारी से तुम्हारे एतराजो का जवाब दूगा। पहले औरतो की बात सुनो। तुम जानते हो कि मै कितना बातूनी हूँ। यह बताओ कि मै किसलिये सयम करूँ ? मै औरतो का दीवाना हू फिर उनका पीछा क्यो छोड दू ? जो भी हो, यह भी एक पेशा है।"

"तो फिर सिर्फ पाप के लिये यहाँ आये हो ?"

"हाँ ऐसा ही समझ लो। तुम मेरे व्यसनो को पाप कहने पर तुले

हुए हो। लेकिन मुझे सीधे सवाल पसद है। इस पाप मे कोई न कोई स्थाईपन तो है। इसका आधार प्राकृतिक है, जो कि जलते हुए अगारो की तरह इन्सान के खून मे मिला रहता है, यह आग बुढापे मे भी नही बुझती, इसका आधार कोरी कल्पना नही है। तुम्हे मानना पडेगा कि यह एक किस्म का पेशा है।"

"यह खुशी की बात नही यह एक बीमारी है, खौफनाक बीमारी।"

"अच्छा तो तुम्हारा यह ख्याल है ? माना, यह बीमारी है। जा चीज़ औचित्य की सीमा को पार कर जाती है, वही बीमारी बन जाती है। इस मामले मे तो सीमा को लाघना स्वाभाविक ही है। अव्वल तो हर आदमी किसी न किसी ढग से यह काम जरूर करता है, फिर इन्सान को संयम और अक्लमदी तो हर हालत मे बरतनी हा चाहिये, चाहे वह क्षुद्रतापूर्ण ही क्यो न हो, लेकिन मै क्या करूँ ? अगर मेरे पास यह शुगल न हो तो मै अपने को गोली मार लूगा। माना कि एक सभ्य आदमी को ज़िन्दगी मे ऊबना नही चाहिये, लेकिन…"

"तुम अपने को गोली मार सकोगे ?"

स्वीद्रीगाईलोव ने वितृष्णापूर्वक कहा, "बस बस, यह चर्चा बद करो," उसके चेहरे का भाव बदल गया था और पहले वाली डीग गायब हो गई थी। "मै मानता हूँ कि यह एक अक्षम्य कमज़ोरी है, लेकिन मै बेबस हूँ। मुझे मौत से, सख्त नफरत है, और मौत का जिक्र भी मुझे नापसद है, जानते हो, मै भी एक तरह का अध्यात्मवादी हू ?"

"आह, मार्फा पैत्रोवना का भूत अभी तक तुम्हारा पीछा कर रहा है ?"

"इसका ज़िक्र मत छेड़ो। पीटर्सबर्ग आने के बाद वे भूत नही

दिखाई दिये।" स्वीद्रीगाईलोव ने चिढकर कहा, "बेहतर हो कि हम कोई और चर्चा शुरू करे · हालाँकि . हूँ ! मेरे पास वक्त ज्यादा नही है, मुझे अफसोस है कि मै ज्यादा देर तक तुम्हारे पास नही रुक सकता। वरना तुम्हे बताने के लिये मेरे पास काफी बाते थी।"

"किसी औरत से मिलने जा रहे हो ?"

"हाँ एक औरत से। चलते फिरते उससे जान पहिचान हो गई·· नही मै इस बारे मे कुछ नही कहना चाहता।"

"तुम्हारे आसपास का वातावरण कितना गदा और कुत्सित है, इसका असर तुम पर नही पडता ? तुममे अपने ऊपर सयय रखने की ताकत नही रही ?"

"अच्छा तुम भी ताकत का दावा करने लगे ? ही-ही-ही ! मुझे तुम्हारी बाते सुनकर ताज्जुब हो रहा है रोदियोन रोमनोविच, हालाकि मै पहले से तुम्हारे स्वभाव को जानता था। तुम मुझे पाप-पुण्य और सौदर्यशास्त्र पर भाषण देने चले हो ! तुम—एक आदर्शवादी—शिलर जैसे भावुक आदमी ! खैर तुम्हारे जैसे लोगो से और उम्मीद ही क्या की जा सकती है · हालाँकि ये बाते बडी विलक्षण है · काश मेरे पास फालतू वक्त होता, तुम बडे—दिलचस्प किस्म के आदमी हो ! और सुनो तुम्हे शिलर पसद है ? मैं तो शिलर का दीवाना हूँ।"

"लेकिन तुम कितनी डीग हाकते हो !" रास्कोलनिकोव ने ग्लानि-भरे स्वर मे कहा।

स्वीद्रीगाईलोव हँस पडा, "अपनी कसम, मै डीग नही हाँकता। खैर ऐसा ही सही, डीग मारने मे क्या हर्ज है ? उससे किसी को नुक्सान तो नही पहुँचता ! मैने मार्फा पैत्रोवना के साथ सात बरस देहात मे गुज़ारे है इसलिये तुम्हारे जैसे प्रतिभाशाली और दिलचस्प लोगो से बाते करने मे मुझे बडी खुशी मिलती है। फिर मैने आधा ग्लास शैम्पेन भी पी है, इसलिये मै कुछ नशे में भी हूँ। इसके अलावा

एक खास बात ने मुझे बहुत उत्तेजित कर दिया है ··उसके बारे मे मै चुप·· ही रहूँगा। तुम किधर जा रहे हो ?" उसने चौककर पूछा।

रास्कोलनिकोव उठ खडा हुआ था। इस वातावरण मे उसका दम घुटा जा रहा था। उसे विश्वास हो गया कि स्वीद्रीगाईलोव से बडा लपट और निकम्मा आदमी ससार भर मे नही मिलेगा।

स्वीद्रीगाईलोव ने मिन्नत की, "ओफ्फो ! थोडी देर तो रुको ! अभी मै तुम्हारे लिये चाय मगवाता हूँ। चलो अपने बारे मे मै अब ज्यादा बकवास नही करूँगा। अगर तुम सुनना चाहते हो तो मै तुम्हे बताऊँ कि किस तरह एक लडकी ने तुम्हारे शब्दो मे मेरा 'उद्धार' करने की कोशिश की। इससे तुम्हे अपने पहले सवाल का जवाब मिल जायगा क्योकि वह लडकी तुम्हारी बहन थी। सुनोगे ? बातो मे वक्त कट जायेगा।"

"सुनाओ लेकिन मुझे यकीन है कि तुम·"

"घबराओ नही। मुझ जैसे नीच निकम्मे आदमी मे भी अवदोत्या रोमानोवना के प्रति सिर्फ आदरभाव ही पैदा हो सकता है।"

४

"तुम शायद जानते हो, हाँ मैंने तुम्हे खुद बताया था कि मुझे यहाँ कर्ज न अदा कर सकने की वजह से जेल की हवा खानी पडी थी। कर्ज़ की रकम इतनी ज्यादा थी कि उसे अदा करना मेरे बूते से बाहर था। मार्फा पैत्रोवना ने मुझे किस तरह पैसे से खरीदा, इसका ब्यौरा बताने की यहाँ ज़रूरत नही। जानते हो औरत प्रेम मे कितनी पागल हो जाती है? मार्फा पैत्रोवना अनपढ होते हुए भी अक्लमद और ईमानदार थी। क्या तुम विश्वास कर सकते हो कि यह ईमानदार और ईर्ष्यालु औरत, जो मुझे अक्सर डॉटती फटकारती थी, जिसे ईर्ष्या से हिस्टीरिया के दौरे पड जाते थे, मेरे साथ एक समझौता करने पर राजी हो गई थी, जो वह आखिरी दम तक निभाती रही। वह उम्र मे मुझ से काफी बडी थी और हर वक्त मुँह में लौग या कोई और चीज रखा करती थी। मेरी आत्मा मे इतनी ईमानदारी और सुअरपन था कि मैंने उसे साफ साफ कह दिया कि मेरे लिये उसके साथ पूरी वफादारी बरतना मुमकिन नही होगा। इस बात से उसकी विक्षिप्ति और भी बढ गई। लेकिन उसे मेरी यह वहशियाना खुली बात एक तरह से पसद भी आई। उसका ख्याल था कि मैं उसे धोखा नही देना

चाहता इसीलिये पहले से चेतावनी दे रहा हूँ। तुम जानते ही हो कि ईर्ष्यालु औरतो के लिये यह बात कितनी जरूरी होती है। वह बहुत रोई-धोई। उसके बाद हम दोनो ने एक अलिखित सधिपत्र पर दस्तखत किए, जिसकी पहली शर्त यह थी कि मै हमेशा मार्फा पैत्रोवना का पति रहूँगा और उसे छोड़ूगा नही। दूसरी यह कि मै उसकी इजाजत लिये बगैर कभी बाहर नही जाऊँगा। तीसरी यह कि मै स्थायी रूप से कभी कोई रखेल नही रखूँगा। इसके बदले मे मार्फा पैत्रोवना ने मुझे घर की नौकरानियो से मनमानी करने की छूट दे दी थी। पाँचवी शर्त यह थी कि मै अपने वर्ग की किसी औरत से प्रेम न करूँ। खुदा-न-खास्ता अगर कभी मेरे सर पर इश्क का भूत सवार हो भी जाये तो मुझे मार्फा पैत्रोवना को सब कुछ बताना पडेगा। इस अतिम शर्त की वजह से मार्फा पैत्रोवना का मन निश्चिन्त रहता था। वह अक्लमद औरत थी, इसलिये मुझे आवारा और दुराचारी समझती थी जिसका किसी से सच्चा प्रेम नही हो सकता। लेकिन अक्लमद होना और ईर्ष्यालु होना अलग अलग बाते होती है, इसी से सारा झगडा शुरू हुआ। कुछ लोगो को निष्पक्षभाव से परखने के लिये हमे साधारण लोगो के बारे मे बनाई गई अपनी पूर्वनिश्चित धारणाओ को तिलाजलि देनी पडती है। मुझे तुम्हारी बुद्धि पर सबसे ज्यादा भरोसा है। शायद तुमने मार्फा पैत्रोवना के बारे में बहुत सी बेहूदा और हास्यास्पद बाते सुन रखी होगी। सचमुच उसकी कई आदतें बडी हास्यास्पद थी, लेकिन मुझे अफसोस है कि मेरी वजह से उसे असख्य बार दुख झेलना पडा। खैर स्नेहशील दपत्ति के बीच यह सब स्वाभाविक ही है। जब हम दोनो में झगडा होता था तभी मै अक्सर चुप रहता था। इस सौजन्यपूर्ण व्यवहार से उसकी खीज फौरन दूर हो जाती थी और उसे बडी खुशी होती थी। कई बार तो उसे मुझ पर बडा गर्व होता था, लेकिन तुम्हारी बहन से उसकी बिल्कुल नही पटती थी। फिर भी उसने इतनी सुन्दर लडकी

को अपने घर मे गवर्नेस रखने का खतरा मोल ले ही लिया। मार्फा पैत्रोवना भावुक थी और जल्द ही दूसरो के व्यक्तित्व से प्रभावित हो जाती थी। मेरा ख्याल है कि उसे खुद तुम्हारी बहन से प्रेम हो गया था। कोई ताज्जुब नही कि लोग अवदोत्या रोमानोवना को देखते ही उसे चाहने लगे! मै फौरन इस खतरे को भॉप गया था, इसलिये मैने फैसला किया कि मै अवदोत्या रोमानोवना की तरफ देखूँगा भी नही! लेकिन तुम यकीन करोगे, कि पहल उसी की तरफ से हुई? तुम्हे यकीन होगा कि मार्फा पैत्रोवना के मुँह से अवदोत्या रोमानोवना की तारीफ सुनकर भी जब मैने खामोशी और उदासीनता दिखाई तो वह मुझ से बडी नाराज हुई! मालूम नही आखिर वह चाहती क्या थी! और तो और मार्फा पेत्रोवना ने मेरी हर बात अवदोत्या रोमानोवना को बता दी थी। यह उसकी बडी बुरी आदत थी कि वह हमारे परिवार के सारे भेद अक्षरश लोगो को बता देती थी और हर वक्त दूसरो से मेरी शिकायते करती रहती थी। भला वह अपनी नई मधुर सहेली को सारी बाते बताने से कैसे चूकती? मेरा ख्याल है कि दोनो मे हर वक्त मेरी चर्चा होती रहती थी। जरूर अवदोत्या रोमानोवना ने मेरे बारे मे फैली हुई भयकर, रहस्यमयी अफवाहे सुन ली होगी ··मै शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि तुम भी ऐसी कोई न कोई अफवाह सुन चुके हो।"

"हा सुन चुका हूँ। लूजिन ने तुम पर एक बच्चे की हत्या का इल्जाम लगाया है। क्या यह सच है?"

स्वीद्रीगाईलोव चिढ गया, उसने ग्लानि से नाक-भौ सिकोडकर कहा "मेहरबानी करके ऐसी बेहूदी कहानियो का जिक्र न करो। अगर तुम इस मूर्खतापूर्ण किस्से के बारे मे जानना ही चाहते हो तो मै किसी दिन तुम्हे सब बता दूँगा लेकिन इस वक्त··"

"मैने यह भी सुना है कि तुमने अपने एक देहाती अर्दली के साथ

बहुत बुरा सलूक किया था।"

"मेहरबानी करके यह चर्चा भी बद करो।" स्वीद्रीगाईलोव ने अधीरतापूर्वक कहा।

"क्या मरने के बाद उसी अर्दली ने आकर तुम्हारे पाईप मे तबाकू भरा था ?...तुमने खुद यह बात मुझे बताई थी।" रास्कोलनिकोव की खीज बढती जा रही थी।

स्वीद्रीगाईलोव ने गौर से रास्कोलनिकोव के चेहरे की तरफ देखा। रास्कोलनिकोव को उस दृष्टि मे व्यग्यभरी दुर्भावना नजर आई। लेकिन स्वीद्रीगाईलोव ने सयत और शिष्ट स्वर मे जवाब दिया,

"हा ऐसी बात हुई थी। देखता हूँ तुम्हे भी कौतूहल हो रहा है। मै अभी तुम्हारा कौतूहल शान्त किये देता हूँ। अपनी कसम! कुछ लोग तो मुझे सजमुच रोमान्टिक समझ बैठते है। तुम्ही मोचो मार्फा पैत्रोवना का मै कितना कृतज्ञ हूँ जिसने अवदोत्या रोमानोवना को मेरे बारे मे इतनी रहस्यमयी और दिलचस्प अफवाहे सुनाई। पता नही अवदोत्या रोमानोवना पर इन बातो का क्या असर पडा लेकिन जो भी हो, इससे फायदा मुझे ही पहुँचा। मेरी मनहूस घृणित सूरत और अवदोत्या रोमानोवना की मेरे प्रति स्वाभाविक ग्लानि के बावजूद भी उसे मेरी पतित आत्मा पर तरस आ गया। एक बार किसी लडकी के दिल में तरस आजाये, तो उससे ज्यादा खतरनाक बात कोई नही हो सकती। वह उस आदमी के 'उद्धार' और उसकी अक्ल 'ठिकाने लगाने के लिये' उसे नेक जिन्दगी के ऊचे शिखरो तक पहुँचाने के लिये और उसे समाज का उपयोगी प्राणी बनाने के लिये तत्पर हो जाती है। हम सब जानते है कि ऐसे सपनो की उडान कहाँ तक होती है। मै फौरन भाप गया कि चिडिया खुदबखुद उडकर पिजरे में आना चाहती है। मुझे भी तैयारी करने का मौका मिल गया। तुम नाक-भौ किस लिये सिकोड रहे हो ? यह सब फ़िज़ूल है, तुम जानते ही हो यह

मामला चौपट हो गया (गोली मारो ! मै आजकल कितनी पी रहा हूँ ।) जानते हो, शुरू से ही मुझे इस बात का अफसोस था कि तुम्हारी बहन का जन्म दूसरी या तीसरी शताब्दी मे एशिया माईनर के किसी शाहजादे, गवर्नर या राजदूत को यहा क्यो नही हुआ ? वह उन लोगो मे से है जो हसते हसते शहीद होते है। अगर उसके सीने को गरम सलाखो से दागा जाता, तो वह उस वक्त भी मुस्कराती । वह खुद शहादत को निमत्रण देती । अगर वह चौथी या पाचवी शताब्दी में पैदा हुई होती तो मिश्र के मरुस्थल मे जाकर तीस बरस तक जडीबूटियाँ खाकर हर्षोन्मद से कल्पना लोक मे विचरण करती । उसकी आत्मा किसी की खातिर यत्रणा सहने के लिये तडप रही है, अगर उसे यत्रणा न मिली तो वह खिडकी से कूद पडेगी । मैने मिस्टर राजुमिहीन के बारे मे सुना है कि वह अक्लमद आदमी है । यह तो उसके नाम से ही जाहिर होता है । शायद वह धर्म शास्त्र का विद्यार्थी है । अच्छा हो अगर वही तुम्हारी बहन की देखभाल करे । मुझे गर्व है कि मै अवदोत्या रोमानोवना को अच्छी तरह समझता हूँ । तुम जानते ही हो कि नये नये परिचय मे इन्सान अक्सर बेवकूफिया और लापरवाहिया कर बैठता है, क्योकि उस वक्त उसे ठीक से दिखाई नही देता । गोली मारो इन बातो को । मै पूछता हूँ वह इतनी खूबसूरत क्यो है ? इसमे मेरा कोई दोष नही । दरअसल उसे देखते ही मेरे मन मे एक दुर्दमनीय वासना जागृत हुई थी । वह बडी पवित्र लडकी है। याद रखो मै तुम्हारी बहन के बारे मे सच्ची बात कह रहा हूँ। प्रतिभाशाली होने के बावजूद भी उसकी पवित्रता रुग्णता की सीमा तक पहुँच गई है। यही प्रवृत्ति जिन्दगी मे उसकी बाधक बनेगी, उन दिनो घर मे पराशा नाम की काली आँखो वाली एक छोकरी आई थी, जिसे मैने पहले कभी नही देखा था । वह हाल ही मे किसी दूसरे गाव से आई थी—थी तो बला की खूबसूरत मगर एकदम बेवकूफ । वह इतनी ज़ोर से रोती चिल्लाती थी

कि सारे गाव वाले सुन सके। इस बात से बडी बदनामी हुई। एक दिन रात के खाने के बाद अवदोत्या रोमानोवना मेरे पीछे पीछे बाग मे आई और उसने मुझसे आग्रह किया कि मै बेचारी पराशा को न सताऊँ। तुम्हारी बहन से एकान्त मे यह मेरी पहली बातचीत थी। मैने सहर्ष उसका आज्ञा का पालन किया और बडी चतुराई से निराशा और घबराहट का अभिनय किया। इसके बाद मुलाकातो, गुप्त वार्तालापो, मिन्नतो, मनौतियो का सिलसिला शुरू हुआ, यहाँ तक कि आँसू बहाने की भी नौबत आ गई। प्रचार के आवेश मे औरते क्या कर डालती है। मैने सारा दोष भाग्य के मत्थे मढ दिया और एक ऐसे पतित आदमी का अभिनय किया जो दैवी प्रकाश के लिये भटक रहा है। अत मे मैने सबसे शक्तिशाली हथियार--चापलूसी इस्तेमाल किया जिससे औरत का दिल सहन ही बस मे किया जा सकता है। यह हथियार कभी खाली नही जाता। ससार मे सच बोलने से ज्यादा कठिन कोई काम नही, और चापलूसी से बढकर आसान बात नही। सच्चाई मे अगर एक प्रतिशत झूठ भी होगा तो उससे असामजस्य और उपद्रव पैदा होगा, लेकिन चापलूसी में अगर झूठ ही झूठ होगा तो सुनने वाले को प्रिय लगेगा। चापलूसी मे भी एक स्थूल सतोष है। लेकिन है तो वह सतोष ही। स्थूल से स्थूल चापलूसी मे आधी सच्चाई तो जरूर नजर आयेगी। यह सामाजिक विकास की सब अवस्थाओ और सब श्रेणियो के लोगो पर लागू होती है। एक असूर्यपश्या कुमारी को भी चापलूसी द्वारा भ्रष्ट किया जा सकता है। एक बार मैने एक ऐसी औरत को फुसलाया था जिसे अपने पति, बच्चो और सिद्धान्तो से बडा मोह था। मुझे आज भी उस किस्से को याद करके हँसी आती है। बिना किसी कठिनाई के कैसा बढिया शुगल मिल गया था। उस महिला के सचमुच अपने सिद्धान्त थे। मेरी चाल तो सिर्फ़ यही थी कि मैने उसकी पवित्रता के आगु आत्मसमर्पण कर दिया था। मैने बडी बेहयायी से

उसकी चापलूसी की, और जब मै उसका हाथ छूने मे, और उसे अपनी ओर आकर्षित करने मे सफल हो गया तो मैंने उसके सामने अपनी चरित्रहीनता की निंदा की और अफसोस के साथ जाहिर किया कि मैंने उसके साथ जबरदस्ती की है। मैंने कहा कि वह बडी भोलीभाली है इसलिये वह मेरी चालाकी नही भाप सकी, और अनजाने मे ही मेरे नज़दीक चली आई है। जीत मेरी ही हुई, लेकिन उस महिला को विश्वास हो गया कि वह भोली और पवित्र है और उसका समर्पण एक दुर्घटनामात्र है, इससे उसके नैतिक सिद्धान्तो और दायित्वो मे कोई फर्क नही आया था। अत मे जब मैंने उसे बताया कि मेरे ख्याल मे वह भी उतनी ही प्रेमातुर थी जितना मै था, तो वह मुझसे कितनी नाराज हुई। बेचारी मार्फा पैत्रोवना मे भी यही कमज़ोरी थी। अगर मै चाहता तो उसके जीते जी उसकी सारी जायदाद अपने नाम करवा लेता (आजकल मै शराब पीकर बहुत बकझक करने लगा हू।) मुझे उम्मीद है कि तुम्हे यह जानकर नाराज़गी नही होगी कि मैने अवदोत्या रोमानोव्ना पर भी यह असर डालना शुरू किया था। लेकिन अपनी बेसब्री और बेवकूफी से मैने सारा मामला चौपट कर दिया। अवदोत्या रोमानोव्ना ने कई बार—एक बार तो विशेषरूप से मेरी आखो के भाव को नापसद किया था। उसका कहना था कि मेरी आखो में कभी कभी एक खौफनाक चमक आजाती है जिसे देखकर उसे डर लगता है। उसकी यह घृणा दिन प्रतिदिन बढती गई। ब्यौरे मे जाने की जरूरत नही है। इसके बाद हमारा रिश्ता टूट गया। यहाँ मै फिर एक बेवकूफी कर बैठा। मैने बडे बेहूदे ढग से मेरे 'उद्धार' के लिये किये गये प्रचार और कोशिशो का मजाक उडाना शुरू कर दिया। इसके बाद पराशा का किस्सा फिर से शुरू हुआ और बडी बमचख मची। आह रोदियोन रोमनोविच, काश तुमने अपनी बहन की आँखो की चमक देखी होती? इस वक्त मै नशे में हूँ लेकिन सच बोल रहा हूँ।

उसकी आँखो की इस चमक ने सपनो मे भी मेरा पीछा किया। बाद मे तो हालत यहा तक पहुँच गई कि उसकी पोशाक की जरा सी सरसराहट भी मेरा मन डावाडोल करने लगी। मुझे लगा कि कही सचमुच मुझे मिर्गी के दौरे न आने लगे। मै इतना विक्षिप्त हो जाऊंगा, इसकी मैने कल्पना भी नही की थी। हम दोनो मे फौरन सुलह होनी चाहिये थी, लेकिन सुलह का वक्त कभी का बीत चुका था। विक्षिप्ति मे आदमी कैसी कैसी बेवकूफिया कर बैठता है। जनून मे कभी कोई काम नही करना चाहिये रोदियोन रोमनोविच। मेरा ख्याल था कि जो भी हो आखिर अवदोत्या रोमानोव्ना है तो भिखारी ही, (ओह क्षमा करना · लेकिन अगर यह शब्द मेरे मतलब को व्यक्त करता है तो इसमे क्या हर्ज है ?) वह नौकरी करके अपना, अपनी मा का और तुम्हारा पेट पालती है (छि तुमने फिर त्यौरियाँ चढा ली) मैने उसे अपनी सारी जायदाद देने का फैसला किया। उस वक्त मै सिर्फ तीस हजार रूबल इकट्ठे कर सकता था—बशर्ते वह मेरे साथ भागकर पीटर्सबर्ग चली आती। लेकिन मुझे शाश्वत प्रेम, और उन्माद की बाते करनी चाहिये थी। जानते हो, उस वक्त मै उसके पीछे इतना दीवाना था, कि अगर वह मुझे मार्फा पैत्रोवना का गला काटने या उसे ज़हर देने के लिये उकसाती तो मै फौरन वैसा ही करता और उसी क्षरण उससे शादी कर लेता। लेकिन तुम जानते ही हो कि इस प्रसग को लेकर कितनी आफत मची थी। अब तुम सोच सकते हो कि जब मुझे पता चला कि मार्फा पैत्रोवना ने उस बदमाश वकील लूज़िन के साथ अवदोत्या रोमानोव्ना की शादी पक्की की है, तो मुझे कितना क्षोभ हुआ होगा—तुम्हारी बहन की स्थिति लूजिन के साथ रहने मे भी वही होती जो मेरे साथ रहने मे होती। क्यो ? मै गलत कह रहा हूँ ? देखता हूँ तुम बडे गौर से सुन रहे हो ··दिलचस्प नौजवान···"

स्वीद्रीगाईलोव ने अधीर होकर मेज पर मुक्का मारा। उसका चेहरा लाल हो गया था। रास्कोलनिकोव समझ गया कि यह शैम्पेन का असर है। उसने इस मौके से फायदा उठाने का फैसला किया। उसे स्वीद्रीगाईलोव सदिग्ध आदमी मालूम होता था।

उसने स्वीद्रीगाईलोव को चिढाने के इरादे से कहा, "तुम्हारी बाते सुनकर मुझे पक्का यकीन हो गया है कि तुम मेरी बहन पर डोरे डालने के लिये पीटर्सबर्ग आये हो।"

"यह निरी बकवास है। मैने तुम्हे अभी बताया था• इसके अलावा तुम्हारी बहन मुझे बर्दाश्त नही करेगी।" स्वीद्रीगाईलोव ने उत्तेजित स्वर में कहा।

"हाँ मै जानता हूँ कि वह तुम्हे बर्दाश्त नही करेगी, लेकिन समस्या और ही है।"

"तुम कैसे जानते हो कि नही करेगी ?" स्वीद्रीगाईलोव ने आँखे मिचका कर फबती कसी। "यह सच है कि वह मुझसे प्रेम नही करती, लेकिन पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के बीच क्या गुजरी यह कौन बता सकता है ? इसका रहस्य मर्द-औरत के सिवा किसी को नही मालूम रहता। क्या तुम दावा कर सकते हो कि अवदोत्या रोमानोवना को मुझसे नफरत थी ?"

"तुम्हारी बातो से मुझे यह इशारा मिला कि दुनिया के बारे मे तुम्हारी नीयत अच्छी नहीं है और तुम जल्द ही अपने इरादो को अमल में लाना चाहते हो।"

"क्या सचमुच मैने ऐसा इशारा किया था।" स्वीद्रीगाईलोव ने आशकित स्वर मे पूछा।

"इशारा तो तुम इस•वक्त भी दे रहे हो। तुम डर क्यो रहे हो ? अब किस बात का डर है ?"

"मैं डर रहा हूँ ? और तुमसे ? बल्कि तुम्हे मुझसे डरना चाहिये,

मेरे प्यारे ! हटाओ क्या खुराफात है" देखता हूँ मैने कुछ ज्यादा पी ली है। मै फिर अपने इरादे बक रहा था। लानत है शराब पर। अरे कोई है ? पानी लाओ।"

उसने शैम्पेन की बोतल उठाकर खिडकी से बाहर फेक दी। फिलिप पानी ले आया।

स्वीद्रीगाईलोव ने एक तौलिया पानी मे गीला किया और सर पर रखते हुए बोला, "मेरे एक शब्द से ही तुम्हारे सब सन्देह दूर हो सकते है, जानते हो मेरी शादी होने वाली है ?"

"तुमने मुझे पहले भी बताया था।"

"सच ? मुझे याद नही। लेकिन तुम्हे कैसे बताया होगा ? तब तक तो मैंने अपनी मगेतर को देखा तक नही था। देखने का इरादा जरूर किया था। लेकिन अब मेरी सगाई पक्की हो गई है। अगर मुझे एक जरूरी काम न होता तो मै फौरन तुम्हे उन लोगो से मुलाकात कराने ले जाता। इस मामले में मै तुम्हारी सलाह लेना चाहूँगा। उफ, जरा घडी देखो। सिर्फ दस मिनट बाकी है। लेकिन मेरी इस मगनी का किस्सा बडा दिलचस्प है। तुम फिर चल दिये ? किधर ?"

"मै अब कही नही जाऊँगा।"

"बिल्कुल नही ? अच्छा देखा जायेगा। मै तुम्हे अपनी मगेतर दिखाऊँगा लेकिन इस वक्त नही। तुम्हे जल्दी ही मुझसे रुखसत लेनी पडेगी। तुम्हारा रास्ता दाईं ओर है, मै बाईं दिशा मे जाऊँगा। तुम मैडम रैसलिश को जानते हो, जिसके मकान में मै आजकल ठहरा हूँ ? क्यो ? मुझे मालूम है, तुम सोच रहे हो कि यह वही औरत है जिसकी लडकी के बारे में लोगो का कहना है कि उसने पिछले जाडे मे नदी मे कूदकर आत्महत्या की थी। सुन रहे हो ? इसी औरत की तो यह सारी कारिस्तानी है। वह कहने लगी, "तुम जिन्दगी से ऊबे हुए हो, तुम्हे वक्त काटने के लिये कोई न कोई शुगल चाहिये।" जानते हो मै

मनहूस, उदास रहता हूँ। तुम सोचते हो मै ऐय्याश हूँ ? नही मै उदास रहता हूँ। किसी को नुकसान पहुँचाये बगैर तीन तीन तीन दिन तक कोने मे खामोश बैठा रहता हूँ। मै सच कहता हूँ, यह मैडम रैसलिश बडी छिनाल है। मै उसकी नीयत को जानता हूँ। उसका ख्याल है कि मै जल्दी ही इस शादी से उकता जाऊँगा और अपनी बीबी को छोडकर चला जाऊँगा, और वह उस लडकी के जरिये पैसे कमायेगी। हमारे वर्ग या हमसे ऊँचे वर्ग के लोग उसके ग्राहक बन जायेगे। उसने मुझे बताया कि लडकी का पिता बीमार रिटायर्ड अफसर है, जिसकी टाँगो को लकवा मार गया है। माँ अक्लमन्द औरत है। एक लडका दूर किसी प्रान्त मे नौकरी करता है लेकिन उससे परिवार को कोई मदद नही मिलती। एक ब्याही हुई लडकी है जो कभी उनसे मिलने नही आती। इसके अलावा उनके दो नन्हे भतीजे उनके पास रहते है—भला अपने बच्चो से जी नही भरा था जो भतीजो का भार भी उठा लिया। मेरी मगेतर अगले महीने सोलह बरस की होगी। उसे स्कूल से हटा लिया गया है ताकि उसकी शादी हो जाये। मैडम रैसलिश मुझे लेकर उनके घर गई। कैसा विचित्र दृश्य था—एक धनी, प्रसिद्ध विधुर जमीदार उनके आगे पेश हो। क्या हुआ अगर मैं पचास बरस का हूँ और वह अभी सोलह की भी नही हुई ? इसकी चिता किसे है ? लेकिन यह मज़ेदार बात है न ! हा-हा ! तुम जरा देखते कि मै उसके ममी, पापा से कैसी बाते कर रहा था। लडकी एक ऊँचा फ्रॉक पहने आई और उसने मुझे सादर अभिवादन किया। वह अनखिली कली है। उसका चेहरा सूर्यास्त की बेला की तरह सुर्ख हो गया था। जरूर उसे भी सब कुछ बता दिया गया था। मै नहीं जानता, औरतो के चेहरो के बारे मे तुम्हारी क्या राय है, लेकिन मुझे तो खूबसूरत चेहरो की बजाये सोलह बरस का सिन, बच्चो जैसी आँखे, शर्माना, घबराहट के आसू ज्यादा पसद आते है।

वह है भी निरी गुडिया । सुनहरी घु घराले बाल, बिल्कुल मेमने की तरह, गुलाबी भरपूर ओठ—नन्हे पैर—बडी प्यारी है ' खैर हम दोनो मे दोस्ती हो गई । मैने उन्हे बताया कि कई घरेलू परिस्थितियो की वजह से मै जल्दी शादी करना चाहता हूँ । अगले ही दिन यानी परसो हमारी सगाई हो गई । जब मै उनके यहाँ जाता हूँ तो फौरन उसे अपनी गोद मे बिठा लेता हूँ ''उसका मु ह फिर लाल सुर्ख हो जाता है और मै प्रति क्षण उसे चूमता रहता हू । बडा लुत्फ आता है । शादी से ज्यादा मगनी की स्थिति सुखकर है । जिसे फ्रेंच मे La nature et la verite (प्रकृति और सत्य) कहते है, उसका मजा इस स्थिति मे मिलता है । हा ! हा ! मैने दो बार उससे बातचीत भी की है । बेवकूफी तो उसे छू नही गई । कई बार वह कनखियो से इस तरह मुझे देखती है कि मेरा रोम-रोम जल उठता है । उसका चेहरा रफियल के चित्र की मेडोना जैसा है । तुम जानते हो कि सिस्टीन मेडोना के चेहरे में विलक्षण अवसाद भरा धार्मिक उन्माद है । तुमने कभी गौर किया है ? खैर वह लडकी भी कुछ उसी किस्म की है । सगाई के दूसरे दिन मै उसके लिये पद्रह सौ रूबल के तोहफे खरीदकर लाया, जिनमे एक सैट हीरे के गहनो का, एक मोतियो का और एक इतनी बडी चादी की सदूकची, जिसमे और छोटी-मोटी चीजे थी । इन्हे देखकर मेरी मैडोना का चेहरा खुशी से दमकने लगा । कल मैंने उसे जरा बेतक्कलुफी से अपनी गोद मे लिया—उसका चेहरा लाल सुर्ख हो गया और आँखो मे आँसू आ गये, लेकिन उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ फेर लिया । कमरे मे हम दोनो अकेले थे । सहसा उसने मेरी गर्दन में अपनी नाजुक बाहे डाल दी (उसने पहली बार ऐसा किया था) मुझे चूमा और आज्ञाकारी, वफ़ादार, और नेक पत्नी बनने की कसम खाई । उसने कहा कि "वह मेरी खुशी के लिये अपनी सारी जिन्दगी, सर्वस्व, अर्पण करेगी और बदले मे उसे इज्जत के सिवा कुछ

नही चाहिये, उसे तोहफो की इच्छा नही है।" मलमल का फ्राक पहने घुघराले बालो वाली, लजीली, गीली आँखो वाली, सोलह बरस की अप्सरा के मुह से ये शब्द कितने आकर्षक लगते है। क्यो सच है न ! इसी अदा पर जितना पैसा लुटाया जाये कम है, क्यो ? अच्छा सुनो· मै तुम्हे अपनी मगेतर दिखाऊगा लेकिन इस वक्त नही ।"

"दरअसल तुम दोनो की उम्र और मानसिक विकास मे जो राक्षसी अन्तर है उसने तुम्हारी वासना को भडका दिया है। सचमुच तुम ऐसी शादी करोगे ?"

"क्यो नही, हर आदमी अपना फायदा सोचता है, और जो अपने को धोखा देना जानता है वही जिन्दगी का मजा लूटता है। हा-हा ! लेकिन तुम्हे शराफत से इतना मोह क्यो है ? मुझ पर रहम करो मेरे शरीफ दोस्त ! मैं गुनहगार आदमी हूँ। हा ! हा ! हा !"

"लेकिन तुमने कैटेरीना इवानोवना के बच्चो की मदद की है··· हालाँकि इसमे तुम्हारे अपने स्वार्थ भी थे·· अब मै समझ गया कि माजरा क्या है।"

स्वीद्रीगाईलोव ने हँस कर कहा, "मुझे हमेशा से बच्चे बहुत प्यारे लगते है। मै तुम्हे एक दिलचस्प बात सुनाऊँगा। मै सात बरस बाद पीटर्सबर्ग आया था। आते ही मैने सारे अड्डो के चक्कर काटने शुरू कर दिये। तुमने देखा ही होगा कि मैने अपने पुराने दोस्तो के साथ फिर से दोस्ती करने के लिए बेचैनी नही दिखाई। जब तक सभव होगा मैं उनसे मिले बगैर ही काम चलाऊँगा। जानते हो जब मैं मार्फा पैत्रोवना के साथ देहात मे रहता था तो मुझे इन अड्डो की बडी याद आती थी, जहाँ जानकार आदमी मनमानी चीज पा लेता है। अपनी कसम ! किसानो को वोद्का का चस्का होता है, जीवन की क्रियाशीलता से दूर रहने वाले पढे-लिखे नौजवान विलक्षण सपनो मे अपने को बर्बाद करते है और सिद्धात उन्हे

अपाहिज बना देते है। यहूदी लोग धडाधड धन इकट्ठा करते हैं और बाकी लोग वासना-तृप्ति मे लगे रहते है। यहाँ आते ही मेरे नथुनो में इस शहर की चिरपरिचित गध समा गई। सयोगवश मैं एक गदे अड्डे मे गया था। मुझे गदे अड्डे ही पसन्द है— वहाँ मैंने एक अपूर्व नाच देखा। वैसी जिन्दादिली कभी देखने मे नही आई। प्रगति इसी को कहते है। सहसा मैंने देखा कि एक तेरह बरस की लडकी, जिसने बढिया कपडे पहन रखे थे एक कुशल डासर के साथ नाच रही थी, उसके सामने एक दूसरी लडकी भी इसी तरह नाच रही थी। उनकी माँ सामने कुर्सी पर बैठी थी। तुम नही जानते वह कितना उद्धत था। लडकी ने अपने को अपमानित महसूस किया, उसका चेहरा लाल हो गया और वह रोने लगी। उसके साथी ने उसे पकड कर अपने चारो तरफ घुमाया और उसके सामने नाचने लगा। सब लोग हँस पडे। मुझे तुम्हारे पीटर्सबर्ग की जनता बडी पसन्द है चाहे वह उद्धत ही क्यो न हो। लोग चिल्लाये "खूब मज़ा आया ! खूब मजा आया। छोटी बच्चियो को यहाँ क्यो लाई।" खैर उस सान्त्वना मे कोई युक्ति थी या नही इससे मुझे कोई सरोकार नही। मैंने फौरन अपनी स्कीम बनाई और उस लडकी की माँ के पास जाकर बैठ गया। मैंने कहा कि मै भी पीटर्सबर्ग में नया नया आया हूँ, यहाँ के लोग बडे बदतमीज है, उन्हे शरीफ़ लोगो की कोई पहचान चान नही इसलिए वे उनकी इज्जत नही करते। मैंने उसके सामने अपने को बडा अमीर जतलाया और एक घोडागाडी में बैठाकर अपने घर ले आया। मालूम हुआ कि माँ-बेटी हाल ही मे देहात से आई थी और एक सडी-सी कोठरी मे रह रही थी। उस औरत का कहना था कि मेरा परिचय पाकर वे अपने को सौभाग्यशाली समझती हैं। मुझे पता चल गया कि उनके पास पैसा बिलकुल नही था और वे किसी कानूनी कार्रवाई के सिलसिले में पीटर्सबर्ग आई थी। मैंने उन्हे अपने रसूख और पैसे से मदद

देने का वायदा किया। उन्होने बताया कि वे उस अड्डे को डास सीखने की सस्था समझ कर वहाँ चली गई थी। मैने उस लडकी की फ्रेच भाषा और डास की शिक्षा का खर्च अपने जिम्मे ले लिया। यह प्रस्ताव उन्होने बडे उत्साह और गर्व के साथ मजूर कर लिया—हमारी दोस्ती अभी तक कायम है • अगर चाहो तो हम उनसे मिलने जा सकते है, लेकिन इस वक्त नही।"

"बस ! तुम्हारे नीचतापूर्ण, बेहूदा किस्से बहुत सुन लिए। तुम पतित और लपट आदमी हो।"

"और तुम हो निरे शिलर ! जानते हो, सिर्फ तुम्हारी तिलमिलाहट देखने के लिए ही ये बाते तुम्हे जानबूझ कर बता रहा हूँ।"

रास्कोलनिकोव गुस्से में बडबडाया, "मै देख रहा हूँ कि मै खुद हास्यास्पद स्थिति में हूँ।"

स्वीद्रीगाईलोव दिल खोल कर हँसा। फिर उसने फिलिप को बुलाकर बिल चुकाया और उठ खडा हुआ।

"मै नशे में हूँ। बहुत हो गया !

तुमसे मिलकर बडी खुशी हुई।"

रास्कोलनिकोव ने उठते हुए कहा, "खुशी तो जरूर हुई होगी। एक खूसट लपट आदमी को ऐसे किस्से सुना कर खुशी होती है, जबकि उसके मन मे ऐसी ही पैशाचिक स्कीमे और भी हो। —खासतौर पर ऐसी परिस्थितियो मे मुझ जैसे आदमी को यह सब सुनाने मे •• सरूर आता है।"

स्वीद्रीगाईलोव ने गौर से रास्कोलनिकोव के चेहरे को पढने की कोशिश की, "अगर यही बात है तो तुम मुझसे भी ज्यादा अनास्थाशील हो। तुम्हारे अन्दर अनास्था पैदा करने के लिए कारणो की कमी नही। तुम बहुत कुछ समझते हो••और बहुत कुछ कर भी सकते हो। बस अब चलना चाहिए। मुझे अफसोस है कि मुझे

तुम से ज्यादा बाते करने का मौका नही मिला। लेकिन मै तुम्हे आँख से ओझल नही होने दूँगा। कुछ दिन और इन्तजार करो।"

स्वीद्रीगाईलोव के पीछे पीछे रास्कोलनिकोव सराय से बाहर निकल आया। स्वीद्रीगाईलोव का नशा उतर रहा था। वह किसी गहरी सोच मे डूबा था, उसके माथे पर त्योरियाँ पड रही थी। उसकी उत्तेजना से साफ ज़ाहिर था कि वह बेचैनी से किसी घटना का इन्तजार कर रहा है। रास्कोलनिकोव के प्रति भी उसका व्यवहार अधिक तिरस्कारपूर्ण हो उठा था। रास्कोलनिकोव ने यह सब देखा और उसका मन सदेह से आशकित हो उठा। उसने स्वीद्रीगाईलोव का पीछा करने का निश्चय किया।

दोनो बाहर निकल कर फुटपाथ पर आ गये।

"तुम दायी तरफ जाओ और मै बाई तरफ। अगर चाहो तो हम दिशा की अदला बदली कर सकते है। अच्छा अलविदा। खुदा करे हम फिर मिले।" स्वीद्रीगाईलोव ने कहा और वह सीधा घासमडी की ओर चल पडा।

५

रास्कोलनिकोव ने उसका पीछा किया।

सहसा स्वीद्रीगाईलोव ने पीछे मुडकर कहा, "इसका क्या मतलब है ? मैने तो कहा था···"

"इसका मतलब यह है कि मै तुम्हे आँखो से ओझल नही होने दूँगा।"

"क्या कहा ?"

दोनो वही ठिठक गये और एक दूसरे को घूरने लगे--जैसे दोनों अपनी ताकत अजमा रहे हो।

रास्कोलनिकोव ने कठोर आवाज मे कहा, "नशे की झोक में कही गई तुम्हारी बातो से मुझे यकीन हो गया है कि तुमने मेरी बहन का पीछा अभी तक नही छोडा बल्कि तुम इस मामले मे पहले से भी ज्यादा उत्साह दिखा रहे हो। मैने सुना है कि आज सुबह मेरी बहन को एक खत मिला है। इस बीच तुम क्षण भर के लिये भी आराम से नही बैठे 'तुमने एक बीवी का आविष्कार भले ही कर लिया हो, लेकिन जब तक मै सबूत न पा लूँ, निश्चित नही हो सकता।"

रास्कोलनिकोव को खुद नही मालूम था कि वह कौनसा सबूत

पाना चाहता है।

"अपनी कसम ! मै अभी पुलिस बुलाता हूँ।"

"जाओ बुला लाओ !"

दोनो फिर आपने-सामने खडे थे। जब स्वीद्रीगाईलोव को यकीन हो गया कि रास्कोलनिकोव पुलिस से बिल्कुल नही डरता, उसके चेहरे का भाव बदल गया और उसने हँसमुख, दोस्ती भरे ढग से कहा,

"तुम भी खूब आदमी हो ! मैने तो जानबूझ कर तुम्हारा किस्सा नही छेडा, हालाकि उत्सुकता के मारे मेरा बुरा हाल है। यह किस्सा है भी तो विलक्षण। मै इसकी चर्चा टालना चाहता था लेकिन तुम्हारी बातो के लिये तो मुर्दे भी जाग उठेगे।···आओ चले, मै तुम्हे पहले से चेतावनी देता हूँ कि मै पैसे लेने के लिये घर जा रहा हूँ। फिर फ्लैट मे ताला लगाने के बाद मैं एक घोडा गाडी मे बैठकर 'द्वीपो' मे जाऊँगा और शाम भर वही रहूँगा। अब तो तुम मेरा पीछा नही करोगे ?"

"मै तुमसे मिलने नही, बल्कि सोफिया सेम्योनोवना से मिलने तुम्हारे घर जा रहा हू। मै जनाज़े में शामिल नही हो सका, इस बात की माफी मागू गा।"

"सो तो जो जी में आये करो, लेकिन सोफिया सेम्योनोवना घर पर नही है। वह तीनो बच्चो को लेकर यतीमखानो की सचालिका से मिलने गई है। वह प्रतिष्ठित महिला है। कई बरस पहले से वह मेरी परिचित है। मैने कैटेरीना इवानोवता के बच्चो की परवरिश के लिये उस महिला के पास रकम जमा करवा दी है, सस्था के लिये भी चदा दिया है, जिससे बुढिया बडी प्रसन्न है। मैने उसे सोफिया सेम्योनोवना की स्थिति भी पूरी तरह समझा दी है, जिससे वह अत्यत प्रभावित हुई है। इसीलिये उस महिला ने सोफिया सेम्योनोवना को क—होटल में बुलाया है, जहाँ वे ठहरी हुई हैं।"

"कोई हर्ज नही, मै फिर भी वहाँ जाऊँगा।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी। मुझे इसमे कोई ऐतराज नही, लेकिन मै तुम्हारे साथ नही आऊँगा। लो घर आ गया। मुझे यकीन हो गया है कि तुम मुझे शक की नजर से देखते हो, सिर्फ इसलिये कि मैने तुम्हारे साथ भलमनसी का सलूक किया है और तुमसे टेढे सवाल नही पूछे…क्यो ? मेरी यह बात तुम्हे विलक्षण लगी। खैर इससे भलमनसाहत की शिक्षा तो मिलती है।"

"और दरवाजो के पीछे से छिप कर बाते सुनने की भी।"

"अच्छा यह बात है।" स्वीद्रीगाईलोव हँस पडा। "हाँ इतना सब होने के बाद भी अगर तुम इस घटना का ज़िक्र भूल जाते तो मुझे हैरानी होती। हा-हा तुम्हारी हरकतो का और सोफिया सेम्योनोवना से तुमने जो बाते कही है उनका कुछ कुछ मतलब तो मेरी समझ मे आता है लेकिन आखिर इसका असली अर्थ क्या है ? शायद मैं इस जमाने के लिहाज से बहुत पिछडा हुआ आदमी हूँ, इसलिये ये बाते मेरी समझ से बाहर है। प्यारे बेटे ज़रा इन आधुनिक सिद्धान्तो की व्याख्या तो करो।"

"तुमने हमारी बातचीत नही सुनी। यूँ ही झूठमूठ कह रहे हो।"

"मै उस बात की चर्चा नही कर रहा (हालाकि बातो की भनक मेरे कानो मे भी पडी थी) नही, आजकल तुम जिस तरह ठडी आहे भरते और कराहते रहते हो, मै उसकी बात कह रहा हू। तुम्हारे भीतर का शिलर सदा विद्रोहशील रहता है, और अब तुम मुझे उपदेश दे रहे हो कि दरवाजो के पीछे छिपकर बाते न सुनूँ। अगर ऐसी ही बात है तो जाकर पुलिस को इस दुर्योग बात की खबर दे आओ। तुम अपने सिद्धान्त मे ज़रा सी गलती कर बैठे हो, लेकिन अगर तुम्हारा विश्वास है कि दरवाजो के पीछे छिपकर बाते सुनना अनुचित है और खुशी खुशी बूढी औरतो की हत्या करने मे कोई हर्ज नही तो तुम

फौरन भागकर अमेरिका चले जाओ। नौजवान अभी भी वक्त है भाग जाओ। मै सच्चे दिल से कह रहा हू। तुम्हारे पास पैसे नही है ? किराया मै दूगा।"

"मै यह बात नही सोच रहा।" रास्कोलनिकोव खीज भरे स्वर मे बोला।

"मै समझ गया (निराश मत होओ, अगर तुम इस प्रसग को नही छेडना चाहते तो मै चुप रहूगा)। मेरा ख्याल है कि तुम जिन सवालो की वजह से परेशान हो वे नैतिक सवाल है, क्यो ? नागरिको और इन्सानो के अधिकार ? इन सब सवालो को उठाकर एक तरफ रख दो, वे अब तुम्हारे काम की चीजे नही रही। हा-हा तुम कहोगे कि तुम अभी भी इन्सान हो और एक नागरिक भी हो, फिर तुम्हे इस झमेले मे नही पडना चाहिये था। जो काम तुम्हारे बस का नही, उसमे क्यो हाथ डालो ! अच्छा हो अगर तुम अपने को गोली मार लो या तुम ऐसा नही करना चाहते ?"

"मालूम होता है तुम मुझे उत्तेजित करके मुझ से पीछा छुडाना चाहते हो।"

"तुम भी अजब आदमी हो। लो यह ज़ीना आ पहुँचा। वह देखो सोफिया सेम्योनोवना के घर का रास्ता, कमरे मे कोई नही है। तुम्हे यकीन नही आता ? जाकर कापर्नोमोव से पूछ लो, वह अपनी चाबी उसी के पास छोड जाती है। लो श्रीमती कापर्नोमोव खुद आ पहुँची। क्या कहा ? वे ज़रा बहरी है ? क्या सोफिया सेम्योनोवना कही बाहर गई है ? कहाँ ? सुना तुमने ? वह घर पर नही है और शायद रात को देर से लौटेगी। अच्छा मेरे कमरे मे आओ। तुम मुझसे मिलना चाहती थी न ! लो हम कमरे मे आ गये। मैंडम रैसलिश भी यहॉ नही है, वह हर वक्त काम मे लगी रहने वाली औरत है, और बडी अक्लमद भी··तुम ज़रा अक्ल से काम लेते तो उससे फायदा उठा

सकते थे। यह देखो मै अलमारी मे से पाच प्रतिशत वाला बौड निकाल रहा हूँ। देखा अलमारी मे ढेर के ढेर और बौड भी रखे है। इस बौड को आज मै भुना लूँगा। मुझे ज्यादा वक्त नही बर्बाद करना चाहिये। अलमारी भी बद है और फ्लैट मे भी ताला लगा दिया, लो हम फिर जीने मे पहुँच गये। गाडी मँगवाऊँ ? मै 'द्वीपो' की तरफ जा रहा हूँ। तुम भी चलोगे। लो यह गाडी आ गई। अरे तुम इन्कार कर रहे हो। मन ऊब गया ? आओ गाडी मे सैर कर आओ। शायद बारिश होगी। कोई हर्ज नही हम छत का कपडा नीचे गिरा लेगे। • "

स्वीद्रीगाईलोव जाकर गाडी मे बैठ गया। रास्कोलनिकोव को लगा कि उसके शक बेबुनियाद है, वह बिना उत्तर दिये चुपचाप घास-मडी की तरफ वापिस चला गया। रास्ते मे अगर उसने मुडकर देखा होता तो वह देखता कि सौ कदम जाने के बाद ही स्वीद्रीगाईलोव गाडी वाले का भाडा चुकाकर वापिस आ रहा था। लेकिन रास्कोल-निकोव मोड से आगे निकल गया था, इसलिये यह सब उसे दिखाई नही दिया। अतिशय ग्लानि के कारण वह स्वीद्रीगाईलोव को छोड कर चला आया था।

"जरा सोचो तो सही, मैने उस जगली राक्षस और लम्पट आदमी से मदद लेनी चाही थी।" रास्कोलनिकोव ने ऊँची आवाज मे कहा।

स्वीद्रीगाईलोव के चरित्र मे कुछ ऐसी चीज थी जो उसे रहस्यमय और मौलिक मालूम हुई थी। उसे विश्वास हो गया था कि जहा तक उसकी बहन का सवाल है, स्वीद्रीगाईलोव उसे शान्ति से नही रहने देगा। लेकिन इस विषय मे अधिक सोचने से उसे मानसिक थकान अनुभव हो रही थी।

एकान्त मे बीस कदम• चलने के बाद ही सदा की तरह आज भी वह गहरी सोच मे डूब गया। पुल की रेलिग का सहारा लेकर वह नदी के पानी की तरफ देखने लगा। उसकी बहन भी पास ही मे

खडी थी।

पुल के दरवाजे पर भी उसे दूनिया मिली थी, लेकिन दूनिया की तरफ देखे बगैर ही आगे चला गया था। दूनिया ने भी पहले अपने भाई को इस तरह सडक पर नही देखा था, वह इस दुविधा मे पड गई कि वह भाई को बुलाये या नही। सहसा उसने घासमडी की ओर से स्वीद्रीगाईलोव को तेज कदमो से अपनी तरफ आते देखा।

स्वीद्रीगाईलोव बडी सतर्क नजरो से चारो तरफ देख रहा था। सीधा पुल पर न आकर वह फुटपाथ पर रुक गया, क्योकि वह रास्कोलनिकोव की नज़रो से बचना चाहता था। कुछ देर तक वह दूनिया को देखता रहा और इशारो से कुछ समझाता रहा। दूनिया समझी कि वह उसे भाई से बोलने के लिये मना कर रहा है और अपने पास बुला रहा है।

दूनिया ने ऐसा ही किया। वह भाई की नज़रे बचा कर स्वीद्रीगाईलोव के पास चली गई।

स्वीद्रीगाईलोव फुसफुसाया, "आओ जल्दी से दूर निकल जाये, मै नही चाहता कि रोदियोन रोमनोविच को हमारी इस मुलाकात का पता चले। मै नज़दीक के एक रेस्त्रा में बैठा था, उसने सर ऊपर उठाकर देखा, बडी मुश्किल से मैने उससे पीछा छुडाया है। मैने तुम्हे जो खत लिखा था, उसका पता उसे चल गया है, उसे मुझ पर शक हो गया है। तुमने उसे नही बताया, फिर किससे उसे पता चला ?"

दूनिया ने बीच में टोककर कहा, "लो हम मोड पार करके आ गये। अब मेरा भाई हमें नही देख सकता। तुम्हे जो कहना है, सब यही कह डालो, मै तुम्हारे साथ कही नही जाऊँगी।"

"अव्वल तो मै सडक पर सारी बाते नही बता सकता, दूसरे यह कि तुम्हे सोफिया सेम्योनोवना की बाते भी सुननी चाहिये इसके अलावा मै तुम्हे कुछ कागजात भी दिखाना चाहता हूँ··अच्छी बात है, अगर

तुम मेरे साथ नही आओगी, तो मै बिना कुछ बताये फौरन यहाँ से चला जाऊँगा। मेहरबानी करके यह मत भूल आओ कि तुम्हारे प्यारे भाई का एक भेद पूरी तरह मेरे हाथो मे है।"

दूनिया वही ठिठक गई और स्वीद्रीगाईलोव के चेहरे के भावो को पढने की कोशिश करने लगी।

"तुम्हे आखिर डर किस बात का है ? शहर और देहात मे बडा फर्क होता है। फिर देहात मे भी मैने तुम्हे उतना नुक्सान नही पहुँचाया जितना तुमने मुझे पहुँचाया था।"

"क्या आपने सोफिया सेम्योनोवना को राजी कर लिया है ?"

"नही, अभी तक मैने उससे कोई बात नही की। यह भी निश्चित नही कि वह इस वक्त घर मे ही होगी, लेकिन जरूर होगी, क्योकि आज ही उसने अपनी माँ को दफनाया है, आज के दिन वह बाहर नही जायेगी। अभी तक मैने किसी से यह जिक्र नही छेडा, मुझे मन ही मन अफसोस है कि मैने तुमसे भी यह बात क्यो कही। ऐसे मामलो मे जरा-सी असावधानी भी विश्वासघात के बराबर होती है। मै उस सामने वाले मकान मे रहता हूँ। वह रहा हमारे मकान का चौकीदार जो मुझे अच्छी तरह जानता है और सर झुका कर सलाम कर रहा है। उसने देख लिया है कि मैं एक भद्र महिला के साथ आ रहा हूँ। निश्चित रूप से उसने तुम्हे भी देख लिया है, इसलिये तुम्हारा मुझसे डरना और मुझ पर शक करना व्यर्थ है। मेरी बात के फूहड ढग पर बुरा न मनाना। मेरे पास अलग से कोई फ्लैट नही है। सोफिया सेम्योनोवना मेरे बगल वाले कमरे मे रहती है। सारी मजिल किराये पर उठी हुई है। तुम बच्चो की तरह भयभीत क्यो हो रही हो ? क्या सचमुच मै इतना खौफनाक आदमी हूँ ?"

स्वीद्रीगाईलोव ने मुस्कराने की कोशिश की लेकिन वह मुस्कराने की 'मूड' मे नही था। आवेश से उसका कलेजा धडक रहा था और

साँस बद हुई जा रही थी। आवेश को छिपाने के लिये वह ऊँची आवाज मे बोल रहा था। लेकिन दूनिया ने इस ओर ध्यान नही दिया। वह स्वीद्रीगाईलोव की इस टिप्पणी से बहुत चिढ गई थी कि वह उसे खौफनाक आदमी समझ कर उससे डर रही है।

"मै जानती हूँ कि आप · शरीफ नही है फिर भी मैं आपसे डरती नही। चलिये।" दूनिया ने आत्मविश्वास जतलाते हुए कहा, लेकिन उसका चेहरा पीला पड गया था।

स्वीद्रीगाईलोव सोनिया के कमरे के आगे रुक गया।

"जरा पूछ कर देखूँ वह घर पर है या नही,··नही कमरा बद है। कैसी बदकिस्मती है! लेकिन मुझे मालूम है, वह जल्दी ही लौट आयेगी। वह जरूर अपने अनाथ भाई बहनो के सिलसिले मे एक भद्र महिला से मिलने गई होगी। उनकी माँ मर गई है··मै इस बीच उनके लिये मदद का इन्तिज़ाम करता रहा हूँ। अगर सोफिया सेम्योनोवना दस मिनट तक न लौटी, तो उसे अगर तुम चाहो तो आज ही तुम्हारे पास भेज दूँगा। यह रहा मेरा फ्लैट, इसमें सिर्फ दो कमरे है। मकान मालकिन मैंडम रैसलिश पास वाले कमरे मे रहती है। जरा इधर देखो, मै तुम्हे सबसे बडा सबूत देना चाहता हूँ। मेरे सोने वाले कमरे का दरवाज़ा जहाँ खुलता है उसके आगे के दो कमरे किराये के लिये खाली पडे है। इधर··जरा गौर से इन कमरो को देखो।"

स्वीद्रीगाईलोव के पास मय फर्नीचर के दो बडे कमरे थे। दूनिया ने सदिग्ध दृष्टि से चारो तरफ देखा, लेकिन उसे फर्नीचर या कमरो की स्थिति मे कोई विशेषता नही दिखाई दी। लेकिन एक बात गौर के काबिल थी, वह यह कि स्वीद्रीगाईलोव का फ्लैट दो खाली फ्लैटो के बीच था बरामदे से उसके कमरे मे आने का कोई सीधा रास्ता नही था, बल्कि उसका दरवाजा मकान मालकिन के कमरे मे खुलता था। सोने के कमरे का दरवाज़ा खोलकर स्वीद्रीगाईलोव ने दूनिया को वे

दोनो कमरे दिखाये जो किराये के लिये खाली पडे थे। दूनिया हिच-किचाकर दरवाजे के बीच खडी रही। इन कमरो में आखिर कौन-सी दर्शनीय चीज थी, यह उसकी समझ में न आ सका। स्वीद्रीगाईलोव ने बताया,

"उधर दूसरे बडे वाले कमरे की तरफ देखो। दरवाजे पर ताला लगा है। पास ही एक कुर्सी रखी है। यह कुर्सी मैं अपने कमरे से लाया था, ताकि आराम से उन लोगो की बाते सुन सकूँ। पास वाले कमरे मे सोफिया सेम्योनोवना की मेज़ रखी है, जिस पर बैठ कर वह रोदियोन रोमनोविच से बाते कर रही थी। मैने दोनो दिन दो, दो घटे तक यहाँ बैठ कर उनकी बाते सुनी—मुझे बहुत कुछ मालूम हो गया है। तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"क्या आप सचमुच सुनते रहे थे ?"

"हाँ, यहाँ बैठने की जगह नही है, मेरे कमरे मे आ जाओ।"

वह अवदोत्या रोमानोवना को अपनी बैठक मे ले आया और उसे बैठने के लिये कुर्सी दी। वह मेज के दूसरी तरफ बैठा था। दोनो मे कम से कम सात फीट की दूरी थी, लेकिन स्वीद्रीगाईलोव की आखो मे वही खौफनाक चमक देखकर दूनिया सहम गई। कापते हुए उसने फिर शकित दृष्टि से अपने चारो तरफ देखा, उसकी यह घबराहट अनायास ही प्रकट हो रही थी—हालाकि वह उसे दबाने की पूरी कोशिश कर रही थी। स्वीद्रीगाईलोव के फ्लैट की एकान्त स्थिति से वह चौक उठी थी। वह अपने स्वाभिमान की खातिर इतना भी न पूछ सकी कि मकान मालकिन घर मे है या नही। इसके अलावा उस वक्त उसके दिल में आत्मरक्षा से बडी चिताये भी व्याप रही थी। उसका मन व्यथित था।

उसने खत मेज़ पर रखते हुए कहा, "यह रहा आपका खत। आपने जो लिखा है क्या वह सच हो सकता है ? आपने मेरे भाई द्वारा

की हत्या की है जिसके यहाँ वह चीज़े गिरवी रखा करता था। बुढिया की बहन लिज़ावेता जो फेरी लगाती थी, ऐन मौके पर पहुँच गई, तुम्हारे भाई ने कुल्हाडी से उसकी भी हत्या कर डाली। उन्हे लूटने की खातिर ही उसने उनकी हत्या की थी। वहा से नकदी और बहुत-सी चीजे वह ले गया···यह सारी बात अक्षरश उसने सोफिया सेम्योनोवना को बताई थी, सिर्फ वही इस भेद को जानती है। लेकिन उसका इस हत्या मे कोई हाथ नही था। तुम्हारी तरह उसे भी यह कहानी सुन कर ग्लानि महसूस हुई थी। चिता न करो। वह धोखा नही देगी।"

दूनिया के ओठ सफेद पड गये। उसने रु धे कठ से कहा, "ऐसा नही हो सकता, हत्या का कोई कारण नही हो सकता था···यह झूठ है। झूठ है!"

"उसने बुढिया का माल लूटा—यही असली कारण है। उसका यह कहना सच है कि उसने नकदी को या चीज़ो को इस्तेमाल नही किया, बल्कि एक पत्थर के नीचे छिपा दिया, जहाँ वे अब भी पडी है। शायद उन चीज़ो से फायदा उठाने का साहस उसमे नही था।"

"लेकिन उसने चोरी, लूटमार कैसे की? यह ख्याल कैसे उसके दिमाग मे आ सकता है? आप भी तो उसे जानते है। आपने उसे देखा है, क्या वह चोर हो सकता है?" दूनिया उछलकर कुर्सी से खडी हो गई।

मालूम होता था कि वह स्वीद्रीगाईलोव से मिन्नत-चिरौरी कर रही हो। उसका डर न जाने कैसे गायब हो गया था।

"जिन्दगी मे हजारो लाखो सयोग और सभावनाये होती है, अवदोत्या रोमानोवना। कुछ चोर ऐसे होते है, जो यह जानते हुए चोरी करते है कि वे बदमाश है। लेकिन मैने एक ऐसे भद्र आदमी का किस्सा सुना है जिसने डाकगाडी को तोडा था। शायद उसका ख्याल हो कि वह सज्जनोचित काम कर रहा है। सुनी-सुनाई बात पर तो

मुझे भी यकीन न होता, लेकिन अपने कानो से जो सुना है उस पर मुझे पूरा यकीन है। उसने सोफिया सेम्योनोवना को हत्या के सारे कारण बताये थे, पहले उसे भी अपने कानो पर यकीन नही हुआ लेकिन बाद मे उसने जो देखा, उससे यकीन हो गया।"

"वे कारण···कौन से थे ?"

"यह बहुत लम्बी कहानी है, अवदोत्या रोमनोवना, लो·· मै तुम्हे कैसे बताऊँ ? इसके पीछे वही सिद्धान्त काम कर रहा है, जिसकी वजह से मै सोचता हूँ कि अगर इन्सान का मुख्य उद्देश्य अच्छा हो तो एकाध बुराई करने में कोई हर्ज नही हो सकता। सैकडो नेकियो के सामने एक बदी की क्या हैसियत है ? फिर एक प्रतिभाशाली और स्वाभिमानी नौजवान को यह सोचकर असह्य वेदना होती है कि अगर उसके पास सिर्फ तीन हज़ार रूबल होते तो उसका भविष्य कुछ और भी होता। इस क्षुद्र रकम का अभाव उसे कितना खटकेगा ? इसके अलावा भुखमरी, गली सडी कोठरी मे रहने से, फटे चीथडे पहनने से, अपनी सामाजिक स्थिति से और मा, बहन की दशा के कारण पैदा हुआ चिडचिडापन भी इसका कारण हो सकता है। सबसे बडा कारण अहकार है···हो सकता है उसमें अच्छे गुण भी हो। यह तो ईश्वर ही जानता है। कही यह न सोच बैठना कि मै उसे दोष दे रहा हूँ, मै दोष देने वाला कौन होता हूँ ? इस हत्या के पीछे एक विशेष सिद्धान्त था—मानवजाति दो श्रेणियो में बँटी है, श्रेष्ठ श्रेणी के लोगो पर साधारण कानून लागू नही होते क्योकि वे ही साधारण श्रेणी के लोगो के लिये कायदे—कानून बनाते है। यह विचार केवल सिद्धान्त बना रहे तो इसमे कोई बुराई नही। तुम्हारे भाई को नैपोलियन के व्यक्तित्व के प्रति बडा आकर्षण था। उसने देखा कि ससार के कई प्रतिभाशाली व्यक्तियो ने निसकोच रूप से पाप किया है और वे कानून की सीमाओ को बिना किसी हिचकिचाहट के लाँघ गये है। शायद उसने सोचा होगा

कि वह भी "जीनियस' है—कुछ क्षणो के लिये उसे यकीन हो गया होगा। उसे यह गलतफहमी हो गई थी, और अब भी है कि वह भी नये सिद्धान्तो को जन्म दे सकता है, लेकिन वह कानून की सीमाओ को लाघने का दु साहस करने मे असफल रहा है इसलिये यह साबित हो गया है कि वह जीनियस नही है। एक अहकारी युवक के लिये यह बडी अपमानजनक स्थिति है, विशेषकर आज के जमाने मे ••"

"लेकिन क्या उसे आत्मग्लानि नही हुई होगी ? तुम्हारा ख्याल है कि उसमें नैतिकता बिल्कुल नही है ? क्या वह ऐसा आदमी है ?"

"ओह, अवदोत्या रोमानोवना। आजकल सब जगह अराजकता फैली है। देश मे यह स्थिति शुरू से ही है। रूसवासियो के विचार उदार है अवदोत्या रोमानोवना, उनकी धरती की तरह विशाल, विलक्षण और अराजकता पूर्ण। लेकिन बिना किसी विशेष प्रतिभा के विशाल हृदय होना एक दुर्भाग्य है। तुम्हे याद है, रात के खाने के बाद हम इस विषय पर कितनी बाते किया करते थे ? तुम भी तो खुले दिल से मुझे कोसा करती थी ! क्या पता जब हम ये बाते कर रहे थे उसी वक्त तुम्हारा भाई यहाँ यह स्कीम बना रहा हो। हम रूसी खास कर पढे लिखे लोग किसी भी परम्परा को पवित्र नही मानते। बहुत हुआ तो किताबे पढकर या पुराने विवरणो मे से अपने लिये सिद्धान गढ लेते है, लेकिन ये सिद्धान्त विद्वानो और तमाम बूढे खूसट लोगो के लिये होते है, भद्र समाज मे इन्हे टटपूजिया समझा जाता है। तुम्हे मेरे विचारो का तो पता ही है। मैं किसी को दोष नही देता, और धीरज रखने के सिवा और कुछ नही करता। लेकिन हम इस समस्या पर कई बार बातचीत कर चुके है, तुम्हे मेरे विचारो मे दिलचस्पी है, यह देखकर मै कितना खुश हुआ था•• तुम्हारा मुँह पीला क्यो पड गया है, अवदोत्या रोमानोवना ?"

"मुझे, रोद्या के उस सिद्धान्त का मुझे अच्छी तरह पता है,

राजुमिहीन ने मुझे वह लेख भी लाकर दिया था जिसमें असाधारण लोगो के असीम अधिकारो की चर्चा की गई थी।"

"राजुमिहीन ? लेख ? क्या तुम्हारे भाई का ऐसा कोई लेख किसी पत्रिका मे छपा था ? मुझे नही पता था। जरूर वह लेख बडा दिलचस्प रहा होगा। अरे, तुम किधर जा रही हो अवदोत्या रोमानोवना ?"

दूनिया ने क्षीण मूर्छित स्वर मे कहा, "सोफिया सेम्योनोवना से मिलने। उसके कमरे का रास्ता किधर से है ? शायद वह लौट आई है। मै फौरन उससे मिलना चाहती हूँ। शायद…"

वह अपना वाक्य भी पूरा न कर पाई। उसकी सास बन्द हुई जा रही थी।

"मेरा ख्याल है कि सोफिया सेम्योनोवना रात को देर से आयेगी। वह जल्द ही लौटने वाली थी, लेकिन अगर वह अभी तक नही आई तो अब देर से ही आयेगी।"

"आह ! तो आपने झूठ बोला ! मै समझ गई · आप सारा वक्त झूठ बोल रहे थे · ·मुझे आपकी बात पर यकीन नही है। नही है।" दूनिया एकदम विक्षिप्त होकर चिल्लाई।

बेहोश होकर वह गिरने ही वाली थी कि स्वीद्रीगाईलोव ने उसे सहारा देकर कुर्सी पर बिठाया और कहा,

"अवदोत्या रोमानोवना ! यह क्या कर रही हो। होश मे आओ। यह लो पानी पिओ · "

उसने दूनिया के चेहरे पर पानी के छीटे दिये। दूनिया को कपकपी आई और वह सचेत हो गई।

"देखता हूँ मेरी बात का तीखा असर हुआ है।" स्वीद्रीगाईलोव खीजकर अपने से बुडबुडाया। "अवदोत्या रोमानोवना। शान्ति से काम लो। तुम्हारे भाई के भी दोस्त है। यकीन करो हम उसे बचा

लेंगे। तुम चाहो तो मै उसे विदेश ले जाऊँ ! मेरे पास पैसा है। मै तीन दिन के भीतर उसके जाने का इन्तिजाम कर सकता हूँ। रही हत्या की बात, उसका प्रायश्चित करने के लिये अभी वह बहुत से नेक काम भी करेगा। सब्र करो, वह अभी भी महान व्यक्ति बन सकता है। तुम्हारी तबियत अब कैसी है ?"

"जालिम ! इस बात का मजाक उडा रहे हो। मुझे यहा से जाने दो ••"

"कहा जाओगी ?"

"रोद्या के पास। जानते हो वह कहा है ? अरे ! इस दरवाजे पर ताला कैसे लग गया ? अभी इसी दरवाजे से तो हम भीतर आये थे। आपने ताला किस वक्त लगाया।"

"सारे फ्लैट मे ऊँचा चिल्लाने से क्या फायदा था। मै मजाक नही कर रहा। दरअसल मै ऐसी बाते करते करते तग आ गया हूँ। लेकिन तुम इस हालत मे कहा जाओगी ? तुम उसके साथ विश्वासघात करना चाहती हो ? तुम्हे देखकर वह क्रोध से पागल हो जायेगा और पुलिस के आगे आत्मसर्पण कर देगा। मै तुम्हे यह भी बता दूँ कि पुलिस पहले से ही उसकी निगरानी कर रही है। जरा ठहरो। अभी कुछ देर पहले मेरी उससे बातचीत हुई थी। अभी भी वह बचाया जा सकता है। बैठ जाओ। आओ हम दोनो इस समस्या पर गौर करे। इसीलिए मैंने तुम्हे अकेले बुलाया था। लेकिन बैठो तो सही !"

"आप कैसे उसे बचायेंगे ? क्या अभी भी वह बच सकता है ?"

दूनिया कुर्सी पर बैठ गई। स्वीद्रीगाईलोव भी आकर उसके पास बैठ गया।

"यह सब तुम्ही पर निर्भर करता है।" स्वीद्रीगाईलोव की आँखो मे वही पुरानी चमक आ गई थी और वह भावावेश मे ठीक से बोल भी नही पा रहा था।

दूनिया चौककर पीछे हट गई । स्वीद्रीगाईलोव का सारा शरीर काप रहा था ।

"तुम" तुम्हारे मुँह से सिर्फ एक शब्द निकलने की देर है और वह बच जायेगा" मै उसे बचाऊँगा पैसो और दोस्तो की मदद से मै फौरन उसके लिए एक नही दो पासपोर्ट बनवा लूँगा । एक उसके लिए, एक अपने लिए मेरे दोस्तो मे इतनी सामर्थ्य है" अगर चाहो तो मै तुम्हारा और तुम्हारी मा का पासपोर्ट भी बनवा सकता हूँ राजुमिहीन से तुम्हे क्या मिलेगा ? मै भी तो तुमसे प्यार करता हूँ" मै तुम्हे हद से ज्यादा प्यार करता हूँ "मुझे अपनी पोशाक का छोर चूम लेने दो लाओ, लाओ" तुम्हारी पोशाक की सरसराहट से ही मुझे रोमाच हो जाता है । तुम मुझे जो हुक्म दोगी वही करूँगा । मै तुम्हारे लिए कठिन से कठिन काम करने के लिए तैयार हूँ । तुम्हे जिन बातो मे आस्था होगी, मै भी उन्ही मे आस्था रखूगा । जो कहोगी वही करूँगा । मेरी तरफ इस तरह से मत देखो । तुम्हारी नजरे बडी कातिल है"

न जाने वह किस आवेश में प्रलाप किये जा रहा था । दूनिया भागकर दरवाजे के पास चली गई ।

"खोलो ! खोलो ! क्या यहाँ कोई नही है ।"

स्वीद्रीगाईलोव का दिमाग सुस्थिर हो गया । उसके काँपते ओठो पर क्षोभ और तिरस्कार भरी मुस्कराहट आ गई ।

"घर मे कोई नही है । मकान मालकिन भी बाहर गई है । इस तरह गला फाडने से कोई फायदा नही, बेकार ही अपने को उत्तेजित कर रही हो ।

"चाबी किधर है ? फौरन दरवाजा खोलो ! कमीने आदमी !"

"चाबी कही गुम गई है मिल नही रही ।"

दूनिया का चेहरा मौत की तरह पीला पड गया । वह जोर से

चिल्लाई, "यह कैसी बेहूदगी है !" वह भाग कर एक कोने मे गई जहाँ उसने एक मेज की आड खडी कर ली।

बिना चीखे-चिल्लाये वह अपने उत्पीडक के चेहरे की प्रत्येक गति को गौर से देखने लगी।

स्वीद्रीगाईलोव दूसरे कोने मे खडा था। कम से कम उसके चेहरे से तो घबराहट बिल्कुल जाहिर नही हो रही थी, लेकिन उसका रग अभी भी पीला था। उसकी व्यग्यभरी मुस्कान भी ज्यो की त्यो बनी थी।

"तुमने अभी बेहूदगी का जिक्र किया अवदोत्या रोमानोवना। यह निश्चित रूप से जान लो कि मैने सब इन्तिज़ाम पहले से ही कर रखे है। सोफिया सेम्योनोवना घर पर नही है। कापर्नोमोव का फ्लैट यहाँ से दूर है, बीच मे पॉच बद कमरे है। मुझमे तुमसे दुगनी ताकत है, फिर मुझे डर भी किसका है ? बाद मे तुम शिकायत भी नही कर सकोगी, तुम अपने भाई के साथ विश्वासघात तो नही कर सकोगी न ! इसके अलावा तुम्हारी बात पर कोई विश्वास नही करेगा। भला कोई लडकी अकेले आदमी को उसके फ्लैट मे कैसे मिलने आ सकती है ? अपने भाई की कुर्बानी देकर भी तुम कुछ साबित नही कर सकोगी। बलात्कार साबित करना बडा मुश्किल होता है, अवदोत्या रोमानोवना।"

"बदमाश कही का !" दूनिया क्रोधावेश में फुसफुसाई।

"बदमाश ही सही, लेकिन याद रखो मैने तो एक साधारण, प्रस्ताव मात्र तुम्हारे आगे रखा था। मुझे यकीन है कि तुम्हारा कहना ठीक है···जबरदस्ती करना ग्लानिपूर्ण है। मैने तो सिर्फ यह साबित करना चाहा था कि अगर तुम अपनी इच्छा से · अपने भाई को बचाना चाहो तो बाद मे तुम्हें पछताना नही पडेगा। मेरा यही सुझाव है। दुनियाँ की नजरो मे भी यही साबित होगा कि तुमने परिस्थितियो से, मजबूर हो कर या अगर कहना चाहे, तो ज़बरदस्ती के आगे

आत्मसमर्पण किया। जरा सोच कर देख लो। तुम्हारी माँ का और तुम्हारे भाई का भविष्य तुम्हारे हाथो मे है। मै तुम्हारा गुलाम रहूँगा . ज़िन्दगी भर ' मुझे सोचकर जवाब दो। मै यही बैठा हूँ।"

स्वीद्रीगाईलोव दूनिया से आठ कदम दूर एक सोफे पर बैठ गया। दूनिया उसके चरित्र से अच्छी तरह परिचित थी। वह समझ गई थी कि उसका इरादा पक्का है और वह टस से मस नही हो सकता। दूनिया ने अपनी जेब से एक पिस्तौल निकाला। स्वीद्रीगाईलोव उछल कर खडा हो गया।

"अच्छा! यह बात है!" स्वीद्रीगाईलोव ने चकित स्वर मे कहा। लेकिन उसके चेहरे पर दुर्भावना भरी मुस्कान छा गई। "अब सारी स्थिति एकदम बदल गई है। तुमने मेरा रास्ता बडा आसान बना दिय है अवदोत्या रोमानोवना। लेकिन यह रिवाल्वर तुम्हे कहाँ से मिला? राजुमिहीन से? अरे यह तो मेरा पुराना रिवाल्वर है! मैंने इसकी कितनी तलाश की थी! देखता हूँ देहात मे तुम्हे मैंने चाँदमारी की जो शिक्षा दी थी, वह बेकार नही गई।"

"यह रिवाल्वर तुम्हारा नही, मार्फा पेत्रोवना का है, कमीने आदमी, जिसकी तुमने हत्या कर दी थी! उस घर मे तुम्हारी अपनी कोई चीज़ नही थी। जब मुझे तुम्हारी नीयत पर शक हुआ तो मैंने यह रिवाल्वर उठा लिया था। अगर एक कदम आगे बढने की भी हिम्मत की तो मै गोली से उडा दूंगी।" दूनिया गुस्से मे पागल हो गई थी।

"लेकिन तुम्हारे भाई का क्या होगा? में सिर्फ कौतूहलवश पूछ रहा हूँ।"

"जाओ जाकर पुलिस मे खबर देदो! खबरदार जो हिले-डुले या नज़दीक आने की कोशिश की! मै गोली चलाऊँगी! मैं जानती हूँ, तुमने अपनी बीवी को ज़हर देकर मार डाला था। तुम खुद हत्यारे

हो !" दूनिया ने रिवाल्वर का निशाना साध लिया।

"तुम्हे पक्का यकीन है कि मैने मार्फा पैत्रोवना को जहर दिया था ?"

"हा ! तुमने खुद इस बात का इशारा किया था ! तुमने मुझसे ज़हर की चर्चा की थी'' मुझे पता है तुम किस वक्त जहर लेने गये थे ''सारी तैय्यारी तुमने पहले से ही कर रखी थी ' यह तुम्हारी करतूत थी'''सिर्फ तुम्हारी'''बदमाश !"

"मान लो यह सच है, तो तुम्हारी ख़ातिर ही मैने यह सब किया होगा ' तुम्ही आफत की जड हो।"

"तुम झूठ बक रहे हो, मुझे हमेशा से तुमसे नफरत थी !"

"ओहो, अवदोत्या रोमानोवना शायद तुम भूल गई हो कि मुझे सुधारने के जोश मे तुम्हारा दिल मेरे प्रति कितना नर्म हो गया था। मैने तुम्हारी आखो मे यह भाव पढ लिया था। याद है वह चादनी रात जब बुलबुल गीत गा रही थी !"

"यह झूठ है ! झूठ, तुम झूठा इलजाम लगा कर मुझे बदनाम करना चाहते हो !" दूनिया की आँखे अँगारे की तरह चमक रही थी।

"झूठ है ! अच्छा झूठ ही सही। मान लिया कि यह मेरी मनगढत बात है। औरतो को ऐसे प्रसगो की याद नही दिलानी चाहिये। मै जानता हूँ तुम गोली चलाओगी। ऐ खूबसूरत बला ! चलाओ !" वह मुस्करा दिया।

दूनिया ने रिवाल्वर उठाया, उसका चेहरा एकदम पीला पड गया था। वह स्वीद्रीगाईलोव के हिलने-डुलने की इन्तिजार कर रही थी और फासले का अदाजा लगा रही थी। उसका निचला ओठ सफेद पड गया था और लगातार काँप रहा था। उसकी बडी काली आँखो मे आग की सी चमक थी। स्वीद्रीगाईलोव को दूनिया इतनी सुन्दर कभी नही दिखाई दी थी। उससे आँखे चार होते ही स्वीद्रीगाईलोव के मन मे

एक कसक उठी। उसने एक कदम आगे बढाया। धॉय से गोली की आवाज आई। गोली उसके बालो को छूती हुई दीवार मे चली गई। वह खडा होकर हँसने लगा।

'लगता है बर्र ने मुझे काट खाया। उसने सीधा मेरे सर पर निशाना लगाया था। यह क्या ? खून ?" उसने जेब मे से रूमाल निकाला और अपनी दाईं कनपटी से बहती हुई खून की पतली धार को पोछ लिया। गोली से ज़रा सी चमडी छिल गई थी।

दूनिया ने रिवाल्वर नीचा कर लिया और आश्चर्यभरी दृष्टि से स्वीद्रीगाईलोव की तरफ देखने लगी। उस दृष्टि मे आतक की बजाये विमूढता अधिक थी।

"लो तुम्हारा निशाना चूक गया ! अब मै दूसरी गोली का इन्तजार करूँगा।" स्वीद्रीगाईलोव ने मुस्कराते हुए, धीमी उदास आवाज मे कहा। "अगर तुम्हारी यही हालत रही तो तुम्हारे गोली चलाने से पहले ही मै आकर तुम्हे पकड लूँगा।"

दूनिया ने चौंककर फिर रिवाल्वर ऊपर उठाया।

"मुझे अकेला छोड दो। वरना मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मै गोली चलाऊँगी···मैं···तुम्हे जान से मार डालूँगी।"

"तीन कदमो के फासले से तो तुम निश्चय ही मुझे मार सकती हो। लेकिन अगर ऐसा न हो सका तब···?" स्वीद्रीगाईलोव की आँखे चमक उठी, वह दो कदम आगे बढा। दूनिया ने फिर रिवाल्वर का घोडा दबाया, लेकिन गोली न चल सकी

"तुमने कारतूस ठीक से नही भरे। खैर कोई बात नही। अभी एक गोली और बाकी है। मै इन्तजार कर रहा हूँ।"

वह दूनिया से दो कदम दूर खडा उसकी ओर पाशविक निश्चय, आवेशभरी ढीठ आँखो से देख रहा था। दूनिया समझ गई कि वह अब उसे हाथ से जाने देने की बजाए मरना ज्यादा पसद करेगा। उसे

ख्याल आया कि अब इतनी नजदीक से तो वह उसे ज़रूर मार डालेगी। सहसा उसने रिवाल्वर दूर फेक दिया।

"अरे! रिवाल्वर फेक दिया! स्वीद्रीगाईलोव ने चकित स्वर मे कहा और गहरी साँस ली। उसके दिल पर से एक भारी बोझ उतर गया—वह बोझ मौत का डर नही था, यह उससे भी ज्यादा खौफनाक और कडवी अनुभूति से मुक्ति पाना था। वह अनुभूति क्या थी, वह खुद भी ठीक से नही बता सकता था।

उसने दूनिया के पास जाकर उसकी कमर मे अपनी बाँह डाल दी। दूनिया ने विरोध नही किया, लेकिन पत्ते की तरह काँपती हुई उसकी तरफ याचनाभरी दृष्टि से देखने लगी। स्वीद्रीगाईलोव ने कुछ कहना चाहा लेकिन उसके हिलते हुए ओठो में से कोई आवाज़ नही निकली।

"मुझे जाने दो" दूनिया ने मिन्नत की।

स्वीद्रीगाईलोव काँप उठा, दूनिया की आवाज़ अब बिल्कुल बदल गयी थी।

"इसका मतलब कि तुम मुझे प्यार नही करती?" स्वीद्रीगाईलोव ने मृदु स्वर में पूछा। दूनिया ने सर हिला कर इन्कार कर दिया।

"और तुम कभी नही प्यार कर सकोगी?" स्वीद्रीगाईलोव की आवाज मे निराशा थी।

"कभी नही।"

स्वीद्रीगाईलोव के मन मे क्षण भर के लिए मौन, भयकर सघर्ष छिड गये। उसने अवर्णनीय दृष्टि से दूनिया की तरफ देखा। सहसा उसने अपनी बाह हटा ली और चुपचाप जाकर खिडकी के आगे खडा हो गया, एक क्षण और बीत गया।

"यह लो चाबी" उसनें दूनिया की तरफ देखे वगैर ही कोट की बायी जेब मे से चाबी निकलकर मेज पर रख दी।

"चाबी ले लो! जल्दी करो!" वह अब भी दृढभाव से खिडकी

के बाहर देख रहा था। दूनिया चाबी लेने के लिए आगे बढी।

"जल्दी करो! जल्दी करो!" स्वीद्रीगाईलोव ने बिना हिले डुले कहा, लेकिन इन शब्दो मे खौफनाक रहस्य था।

दूनिया इस रहस्य को ताड गयी। उसने चाबी उठाकर ताला खोला और बदहवास होकर भागने लगी। अगले क्षण उसने अपने आपको नहर के पुल की तरफ जाते देखा।

स्वीद्रीगाईलोव तीन मिनट तक खिडकी के पास खडा रहा फिर उसने आहिस्ता से सर घुमा कर अपने चारो ओर देखा और अपने माथे पर हाथ फेरा। उसका चेहरा एक विचित्र, उदास, क्षीण, दयनीय और नैराश्यपूर्ण मुस्कान से विकृत हो उठा। हाथ माथे के खून से सन गया। उसने क्षोभभरी नजरो से अपने हाथ को देखा, फिर एक तौलिया गीला करके कनपटी पोछ ली। सहसा उसकी नजर उस रिवाल्वर पर पडी जो दूनिया फेक गयी थी। उसने रिवाल्वर उठा कर देखा, यह पुराने ढग का तीन नालियो वाला रिवाल्वर था। अब भी उसमे एक गोली बच रही थी, जिसका इस्तेमाल हो सकता था। उसने कुछ देर सोचने के बाद रिवाल्वर जेब मे रख लिया और अपना हैट उठा कर वहाँ से बाहर चला आया।

२

स्वीद्रीगाईलोव रात के दस बजे तक एक ग्रड्डे से दूसरे ग्रड्डे में चक्कर लगाता रहा। कात्या भी वहाँ पहुच गयी और उसने एक बाजारू गीत गाया, जिसमे बताया गया था, कि किस तरह एक बदमाश और जालिम आदमी ने 'कात्या को चूमा था'।

स्वीद्रीगाईलोव ने कात्या, बाजा बजाने वाले लडके की, कुछ गाने वालो की, वेटरो की और दो क्लर्कों की खातिरदारी की। उसे वे क्लर्क इसलिए पसद आये थे क्योकि दोनो की नाक टेढी थी, एक की नाक बाई तरफ मुडी हुई थी, और दूसरे की दाईं तरफ। वे लोग उसे एक आमोद उद्यान में ले गये जहा उसने सबके लिए टिकट खरीदे। बाग मे देवदार का एक वृक्ष और तीन झाडियाँ थी, जिनके पास एक शराबघर था, जहाँ चाय भी मिलती थी। आप-पास हरे रग की मेजे और कुर्सियाँ पडी थी। लोगो के मनोरजन के लिए एक रद्दी सी गानेवालो की मडली और नशे मे धुत, लेकिन उदास, म्यूनिख का एक जबेकर मौजूद था जिसकी नाक बेहद लाल थी। दोनो क्लर्को की और क्लर्कों से तू-तू-मै-मै हो गई जिससे एक फिसाद खडा हो गया। स्वीद्रीगाईलोव को निपटारे के लिए चुना गया। उसने

पन्द्रह मिनट तक दोनो पक्षो की बाते सुनने की कोशिश की लेकिन वे इतनी ज़ोर से चिल्ला रहे थे कि उनकी कोई बात समझ मे ही नही आती थी। सिर्फ एक तथ्य साफ जाहिर था। वह यह कि उनमे से एक ने चोरी का माल किसी यहूदी के हाथ बेचा था और उसने अपने साथी के हिस्से की रकम मार ली थी। अत मे मालूम हुआ कि वह चोरी का माल शराबखाने का एक चम्मच था इसी पर इतना फ़िसाद उठा था। स्वीद्रीगाईलोव ने चम्मच की कीमत अपनी जेब से अदा कर दी और उठ कर बाग से बाहर चला आया। छ बजने वाले थे। अभी तक उसने शराब का एक घूँट तक नही पिया था, सिर्फ दिखावे के लिए उसने चाय लाने का आर्डर दिया था।

शाम को अधेरा छा गया था और वातावरण मे घुटन थी। दस बजे के करीब आकाश में घने तूफानी बादल गरजने लगे और मूसलाधार बारिश होने लगी। रह रह कर आकाश मे बिजली कौधने लगी।

स्वीद्रीगाईलोव के कपडे एक दम पानी मे भीग गये। वह सीधा घर लौट आया और भीतर से दरवाज़ा बद कर लिया। उसने दराज़ मे से सारी नकदी निकालकर जेब मे डाली और एक दो कागजात फाड दिये। वह कपडे बदलने जा रहा था सहसा खिडकी मे से बिजली और बारिश को देखकर उसने अपना विचार बदल दिया और हैट उठा कर दरवाजे में ताला लगाये बगैर ही सोनिया के कमरे मे चला गया। वह घर मे ही थी।

लेकिन वह अकेली नही थी। कापर्नोमोव के चारो बच्चे वही बैठे थे, वह उन्हे चाय पिला रही थी। उसने आदरपूर्ण खामोशी से स्वीद्रीगाईलोव का स्वागत किया और चकित दृष्टि से उसके गीले कपडो की तरफ देखने लगी। बच्चे भयभीत हो कर वहाँ से भाग गये।

स्वीद्रीगाईलोव मेज के पास आकर बैठ गया और उसने सोनिया को भी अपने नज़दीक बैठाया। सोनिया भी[illegible] से उस[illegible] बाते सुनने

के लिए तैयार हो गयी ।

"मुझे शायद अमेरिका जाना पडे । सोफिया सेमयोनोवना, शायद यह हमारी आखिरी मुलाकात है । मै तुम्हारे इन्तिजाम के सिलसिले मे आया हूँ । तुम उस महिला से आज मिली थी ? मै जानता हूँ उसने तुम्हे क्या कहा है, मुझे बताने की जरूरत नही ।" (सोनियाँ कुछ हिली डुली और उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया)" इन लोगो का काम करने का अपना ढग होता है । रही तुम्हारी बहनो और भाई की बात, उनके लिए मैने सारा इन्तिजाम कर दिया है और उनके नाम सुरक्षित स्थान पर रकम जमा कराकर रसीदे ले ली है । यह लो रसीदे उन्हे सम्भाल कर रखना । लो यह मामला तय हो गया । यह पाँच प्रतिशत सूद वाले तीन हजार रूबल के बौड्स तुम्हारे लिए है, सिर्फ तुम्हारे लिए । किसी को इसकी खबर नही मिलनी चाहिए । तुम्हे पैसो की जरूरत पडेगी । तुम्हे जिन्दगी के पुराने तौर-तरीके छोड देने चाहिये, अब उनकी कोई जरूरत नही ।"

"मैं, मेरी सौतेली माँ और बच्चे आपके बडे कृतज्ञ है· · मै अपनी कृतज्ञता को ठीक से प्रकट नही कर सकी · ·माफ कीजियेगा· · ·।"

"बस ! बस ! इतना ही काफी है !"

"मै इस रकम के लिये आपकी कृतज्ञ हूँ आरकेदी इवानोविच, लेकिन अब मुझे इसकी ज़रूरत नही। मै अपनी रोजी चाहे जब कमा सकती हूँ । मै कृतघ्न नही हूँ । अगर आप इतने दानशील है तो यह रकम ।"

"यह रकम तुम्हारे लिये है, सोफिया सेम्योनोवना । फिजूल की बातो मे समय न बर्बाद करो । मुझे फुर्सत नही है । तुम्हे इस रकम की जरूरत पडेगी । रोदियोन रोमनोविच के सामने सिर्फ दो रास्ते है। सर मे गोली मारकर आत्महत्या करना या साईबेरिया जाना (सोनिया चौक उठी और रोष भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखने

लगी) घबराओ नही। मुझे ये सारी बाते खुद उसी ने बताई है। मै बकवासी आदमी नही हूँ, यह भेद मुझ तक ही रहेगा। तुमने उसे पुलिस के आगे आत्मसमर्पण करने की और अपना जुर्म कबूल करने की नेक सलाह दी थी, अच्छा हो अगर वह इस पर अमल करे। अगर उसके भाग्य मे साईबेरिया जाना बदा हुआ है, तो तुम भी उसके साथ जाओगी। क्यो ? उस वक्त यह रकम तुम्हारे काम आयेगी, उसकी खातिर, समझी। मेरे लिए तुम्हे रकम देना या रोदियोन रोमनोविच को देना एक बराबर है। इसके अलावा तुमने अमेलिया इवानोवना से वादा किया था कि तुम उसका सारा कर्ज चुका दोगी। इतनी लापरवाही मे तुमने यह जिम्मेदारी अपने सर क्यो ले ली ? कर्ज कैटेरीना इवानोवना ने लिया था। तुम्हे उस जर्मन औरत की बातो पर हरगिज ध्यान नही देना चाहिए था। दुनियाँ मे इस तरह तुम्हारा कैसे गुज़ारा चलेगा। अगर कल या परसो तुमसे मेरे बारे मे पूछा जाये तो यह मत बताना कि मै तुमसे मिलने आया था, न ही किसी को यह रकम दिखाना या इसकी चर्चा करना। अच्छा गुडबाई", (वह उठ खडा हुआ)। "रोदियोन रोमनोविच से मेरा नमस्कार कहना। और देखो, फिलहाल यह रक़म मिस्टर राज़ुमिहीन के पास जमा करवाना ठीक रहेगा। तुम राज़ुमिहीन को जानती हो न ! जरूर जानती होगी, वह बुरा आदमी नही है। कल यह रकम उसके पास ·· या जब ठीक समझो तो ले जाना। तब तक इसे सावधानी से कहीं छिपा दो।"

सोनिया भी कुर्सी से उछलकर खडी हो गई और आश्चर्य से स्वीद्रीगाईलोव का मुँह ताकने लगी। वह कुछ कहना चाहती थी, एक सवाल पूछना चाहती थी, लेकिन उसकी हिम्मत न पड़ी, बात कैसे शुरू की जाये, यही उसकी समझ मे न आया।

"आप कैसे··इस बारिश मे आप कैसे जा सकेगे।"

"अमेरिका जाने वाला आदमी बारिश से रुक जायेगा ! हा ! हा ! गुडबाई प्यारी सोफिया सेम्योनोवना ! ईश्वर करे तुम्हारी लबी उम्र हो। तुम औरो की सेवा कर सको। और सुनो मिस्टर राजुमिहीन से कहना कि आरकेदी इवानोविच ने उसे नमस्कार कहा है। देखना भूलना नही।"

वह बाहर चला गया। सोनिया आश्चर्य, कौतूहल और मन मे अज्ञात शकाये लिए वही खडी रही।

बाद मे मालूम हुआ कि उसी रात को ग्यारह बज के बीस मिनिट पर स्वीद्रीगाईलोव ने फिर ऐसी ही विलक्षणता दिखाई थी। इस वक्त भी मूसलाधार बारिश हो रही थी। गीले कपडो मे ही वह वैसोलेव्स्की द्वीप की तीसरी गली मे पहुँचा, जहा उसकी मगेतर के माँ बाप रहते थे। वह बडी देर तक दरवाजा खटकाता रहा था। उसे इस हालत मे देखकर पहले लोग बडे ही चितित हुए, लेकिन स्वीद्रीगाईलोव इच्छानुसार अपने व्यक्तित्व मे आकर्षण पैदा कर लेता था। उसकी मगेतर के मा बाप का यह अनुमान कि वह शराब के नशे मे धुत्त है जल्द ही दूर हो गया। चालाक माँ अपाहिज पिता को पहियो वाली कुर्सी पर बिठाकर स्वीद्रीगाईलोव से मिलाने ले आई, और सदा की तरह उसने इधर उधर के प्रसगो से बातचीत शुरू की। उसने एक भी सीधा सवाल नही पूछा बल्कि मुस्कराती हुई हाथ मलने लगी, और असगत सवाल करने लगी। फिर उसने तहकीकात शुरू की, मिसाल के लिए यह कि स्वीद्रीगाईलोव शादी कब करना चाहता है, इसके बाद उसने पैरिस और राजदरबार के जीवन के प्रति बडी दिलचस्पी दिखाई और फिर धीरे धीरे घुमा फिराकर तीसरी गली की चर्चा छेड दी। और मौको पर तो आरकेदी इवानोविच इस चर्चा से बडा प्रभावित होता था लेकिन इस बार उसने बड़ी बेसब्री दिखाई और अपनी मगेतर से फौरन मिलने की इच्छा प्रकट की, हालाकि उसे शुरू मे

ही बता दिया गया था कि वह सो रही है। लेकिन कहना न होगा कि मगेतर भी फौरन वहाँ आ पहुँची।

स्वीद्रीगाईलोव ने उसे बताया कि वह किसी जरूरी काम से कुछ दिनो के लिये पीटर्सवर्ग से बाहर जा रहा है, और उसे उपहार मे देने के लिये पन्द्रह हजार रूबल लाया है, बहुत दिनो से वह शादी से पहले यह तुच्छ उपहार देना चाहता था। इस उपहार मे और मूसलाधार बारिश मे बिदा लेने के लिए आने मे क्या रहस्य था, यह उसने स्पष्ट नही किया। लेकिन मामला बिगडा नही, यहाँ तक कि आश्चर्य, अफसोस का प्रदर्शन भी बडा सयत रहा, बहुत कम सवाल पूछे गये। दूसरी तरफ कृतज्ञता के प्रदर्शन मे बडी उदारता दिखाई गई और सबसे ज्यादा मक्कार माँ की आखो से भी आँसुओ की धार बहने लगी। स्वीद्रीगाईलोव उठकर जाने लगा। हसकर उसने अपनी मगेतर को चूमा, उसके गाल सहलाये और जल्द ही लौट आने का आश्वासन दिया। उसकी अपनी मगेतर की आँखो मे शैशव भरी उत्सुकता के साथ मौन प्रश्न भी था, स्वीद्रीगाईलोव ने कुछ सोचा और फिर उसे चूम लिया। लेकिन मन ही मन यह सोचकर उसका जी जल रहा था कि उसकी मगेतर की चालाक माँ फौरन उसके दिये हुए उपहार को हथिया लेगी। उसके जाने के बाद स्नेहशील माँ ने सबका कौतूहल और सदेह शात करने के लिए फुसफुसाकर बताया कि स्वीद्रीगाईलोव की आर्थिक और सामाजिक स्थिति बहुत ऊँची है, वह बडा आदमी है, उसके दिल मे कब क्या बात समा जायेगी, यह कौन बता सकता है ? जब मन मे आता है, सफर की तैयारी कर लेता है और धन बाटता फिरता है। इसलिए इस घटना के पीछे कोई रहस्य नही है। उसके कपडे एकदम गीले थे, लेकिन अग्रेज लोग तो और भी ज्यादा सनकी होते है। फिर बडे लोग किसी की परवाह नही करते, उन्हे तकल्लुफ करने की भी कोई ज़रूरत नही। शायद

वह जान बूझ कर यह दिखाने के लिए इस हालत में आया था कि उसे किसी की परवाह नही। इस बात की किसी को कानोकान खबर नही होनी चाहिए। रकम फौरन सदूक मे रख देनी चाहिये। यह खुशकिस्मती है कि बावर्चिन फेदोस्या रसोई से बाहर नही निकली। और देखो उस बूढी बिल्ली मैडस रैसलिश तक यह खबर बिल्कुल नही पहुँचनी चाहिए, इत्यादि, इत्यादि। रात के दो बजे तक फुस-फुसाहट होती रही, लडकी पहले से ही जाकर सो गई थी, उसे बडी हैरानी और दुख हो रहा था।

उधर ऐन आधीरात के वक्त स्वीद्रीगाईलोव पुल पार करके शहर मे आ गया। बारिश खत्म हो गई थी और साय साय करती हवा चल रही थी। उसे कपकपी आने लगी और क्षरण भर के लिये अधेरे मे उसने गौर से नन्ही नेवा नदी के पानी की तरफ देखा। फिर मुडकर वह वाई—दृष्य की तरफ आ गया। आधे घटे तक वह लबी सडक पर ठोकरे खाता हुआ चलता गया, उसकी आँखे लगातार सडक की दाई तरफ किसी चीज को खोज रही थी। पिछले कई दिनो से इधर से गुज़रते वक्त उसने देखा था कि सडक के छोर पर लकडी का बना एक होटल है जिसका नाम शायद एड्रियानोपल था। उसका अनुमान सही निकला। उस उजडे मनहूस इलाके में अधेरे मे भी होटल की इमारत साफ दिखाई दे रही थी। रात काफी बीत चुकी थी फिर भी खिडकियो मे बत्तियाँ जल रही थी, और चहल पहल के लक्षरण दिखाई दे रहे थे। बरामदे मे स्वीद्रीगाईलोव को एक फटेहाल नौकर मिला, जिससे उसने एक कमरा माँगा। नौकर ने गौर से स्वीद्रीगाईलोव का निरीक्षरण किया और उसे बरामदा पार करके दूर एक छोटे से कमरे मे ले गया। उसने बताया कि होटल मे सिर्फ यही कमरा खाली है, और वह प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा।

"चाय मिलेगी ?" स्वीद्रीगाईलोव ने पूछा।

"जी हाँ ।"

"खाने के लिए क्या है ?"

"बछड़े का गोश्त, वोद्का, मिठाइयाँ ।"

"मेरे लिए चाय और गोश्त ले आओ ।"

"और कुछ नही चाहिए ?" उस आदमी ने चकित स्वर मे पूछा ।

"नही, कुछ नही ।"

फटेहाल आदमी निराश होकर चला गया । स्वीद्रीगाईलोव सोचने लगा, "यह अच्छी जगह मालूम होती है । मुझे पहले इसका पता क्यों नही चला ? लगता है कि शायद मेरी आकृति से लग रहा है कि मै किसी सस्ते भटियारखाने से चला आ रहा हूँ और रास्ते मे कोई दुर्घटना हो गई है । यह जानना चाहिए कि इस कमरे मे पहले कौन ठहरा था ।"

उसने मोमबत्ती जलायी और गौर से कमरे का निरीक्षण किया । छत इतनी नीची थी कि वह मुश्किल से तनकर खडा हो सकता था । कमरे में सिर्फ एक ही खिडकी थी । एक गन्दे पलग और गन्दी मेज़ कुर्सी से सारा कमरा भर गया था । लगता था दीवारे लकडी के तख्ते जोड कर बनायी गयी थीं, जिन पर फटा और मटमैला कागज़ चिपका था । उस पर छपे फूल तो नही दिखाई दे रहे थे, लेकिन उसका रग पीला रहा होगा । जीने के नीचे का कमरा होने के कारण उसकी छत ढलवा थी ।

उसने बत्ती एक ओर रख दी और पलग पर बैठकर कुछ सोचने लगा । लेकिन साथ वाले कमरे मे से लगातार किसी की फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी, बीच बीच मे कोई चिल्लाता भी था । उससे कान लगा कर सुना । कोई आदमी दूसरे आदमी को डाँट रहा था ।

स्वीद्रीगाईलोव उठ खडा हुआ । उसने मोमबत्ती को हथेली से ढक कर दीवार की दरार मे से आती हुई रोशनी में झाक कर देखा ।

पास वाले कमरे मे दो आदमी थे। एक घु घराले बालो वाला आदमी, जिसका चेहरा आवेश से लाल हो रहा था, वक्ता की मुद्रा मे खडा था। उसके शरीर पर कोट नही था और वह अपना सतुलन रखने के लिये टाँगे फैला कर खडा था और बार-बार अपनी छाती मे मुक्के मार रहा था। वह दूसरे आदमी पर इलजाम लगा रहा था कि वह भिखारी है और उसे कोई नही पूछता। उसने उस आदमी को नावदान मे से निकाला था और जब चाहे उसे निकाल बाहर करेगा, ईश्वर सब कुछ देखता है। उसके क्रोध का पात्र कुर्सी पर बैठा झिडकियाँ सुन रहा था। लगता था वह छीकना चाहता है, मगर छीक नही आ रही। बीच-बीच मे वह कातर और धु धली नजरो से वक्ता की तरफ देखता जा रहा था, उसे इस भाषण मे कोई दिलचस्पी न थी और वह हर बात के प्रति उदासीनता दिखा रहा था। मेज पर एक मोमबत्ती जल रही थी, जिसके आस पास शराब के ग्लास, वोद्का की करीब करीब खाली बोतले, डबल रोटी, खीरे और बासी चाय रखी थी। दृष्य को देखने के बाद स्वीद्रीगाईलोव ने उदासीनता से मुँह फेर लिया और आकर पलग पर बैठ गया।

फटेहाल नौकर जब चाय लेकर आया तो उसने फिर स्वीद्रीगाईलोव से पूछा, "आपको किसी चीज की जरूरत तो नही है ?" इन्कार सुन कर वह लौट गया। स्वीद्रीगाईलोव ने सर्दी दूर करने के लिये जल्दी से चाय का एक गिलास पी लिया लेकिन उससे कुछ खाया न गया। उसे बुखार-सा महसूस हो रहा था, उसने कोट उतार दिया और कबल ओढ कर लेट गया। उसे खीज आ रही थी, "इस मौके पर अगर मै स्वस्थ होता तो अच्छा रहता।" उसने मुस्करा कर सोचा। कमरा बद था, मोमबत्ती का प्रकाश मद पड गया था। बाहर सनसनाती हुई हवा चल रही थी, कोने मे एक चूहा कुछ कतर रहा था—कमरे मे चूहो की और चमडे की बदबू आ रही थी। वह किसी

गहरी सोच मे डूबा था, एक के बाद दूसरा ख्याल उसके दिमाग मे आ रहा था। वह अपनी कल्पना को किसी विचार पर केन्द्रित करने के लिये आतुर हो रहा था। "जरूर खिडकी के नीचे बाग है, पत्तो की खडखड सुनाई दे रही है। तूफानी रात मे पत्तो की खडखड सुनकर इन्सान को कैसा भयानक अनुभव होता है। उसे याद आया कि अभी कुछ देर पहले पेत्रोवस्की पार्क से गुजरते वक्त भी उसे ऐसा ही लगा था। इस घटना से उसे नेवा नदी के पुल की याद आ गई और वह ठड से काँपने लगा। पुल पर खडे होकर भी उसे इसी तरह डर लगा था। उसने सोचा, "मुझे पानी कभी भी अच्छा नही लगा। तस्वीर मे भी नही।" सहसा उसके दिमाग मे एक विचित्र बात आई और वह मुस्करा पडा, "अब रुचि और आराम का मेरे लिये कोई महत्व नही होना चाहिये, लेकिन मै तो पहले से भी ज्यादा इस बात का ध्यान रखने लगा हूँ, ठीक उस जानवर की तरह जो अपने लिये खास जगह तलाश करता है···ऐसे मौके के लिये। मुझे पेत्रोवस्की पार्क मे चले जाना चाहिये था। मेरा ख्याल है वहाँ अँधेरा था, हा हा! जैसे मै सुखद सवेदनाओ की तलाश मे था।·· मैं पूछता हूँ मैने मोमबत्ती क्यो नही बुझाई ?" उसने फूक मार कर मोमबत्ती बुझा दी। "शायद साथ वाले कमरे के लोग सो गये है" उसने साथ वाले कमरे मे अधेरा देख कर सोचा। "लो मार्फा पेत्रोवना, अब तुम्हारे प्रकट होने का अच्छा वक्त और मौका है, लेकिन तुम आओगी नही।"

सहसा उसे याद आया कि एक घटा पहले चाल खेलने से पहले उसने रास्कोलनिकोव से कहा था कि वह दूनिया को राजुमिहीन के सुपुर्द कर दे। मैंने सचमुच ये शब्द कहे थे। रास्कोलनिकोव समझ गया होगा कि मै ऐसा क्यो कह रहा हूँ लेकिन वह भी पक्का बदमाश है। उसने बहुत घाटो का पानी पिया है। वक्त आने पर वह कामयाब बदमाश होगा, लेकिन अब वह जिन्दगी के लिये बडा उत्सुक है। इन

नौजवानो मे यही तो बुराई है। गोली मारो साले को। वह जो चाहे करे, मुझसे क्या मतलब।"

उसे नीद नही आई। धीरे धीरे दूनिया की तस्वीर उसकी आँखो के आगे उभरने लगी और वह बेचैन हो उठा। उसने अपने को झकझोर कर कहा "मुझे इन सारी बातो का ख्याल भुला देना चाहिये। अजब बात है। मैंने कभी किसी से सख्त नफरत नही की, यहाँ तक कि किसी से बदला लेने की इच्छा भी मेरे मन मे नही उठी। यह बहुत बुरा लक्षण है, बहुत बुरा। मुझे लडने-झगडने मे भी दिलचस्पी नही रही, न ही कभी मुझे गुस्सा आया है। यह भी बुरी बात है। और अभी मैंने उस लडकी से जो वादे किये।—लानत है मुझे! लेकिन—कौन जानता है? शायद वह मुझे नया आदमी बना देती · "

वह दाँत पीस कर फिर बैठ गया। फिर दूनिया की शक्ल उसकी आँखो के आगे आई, जब पहली गोली चलाने के बाद उसने आतंकित होकर रिवाल्वर नीचा कर लिया था, और शून्य दृष्टि से उसकी तरफ ताकने लगी थी, तब वह अगर चाहता तो फौरन उसे काबू कर लेता और वह आत्मरक्षा के लिये उगली तक न उठाती। उसी ने दूनिया को दूसरी गोली चलाने की सलाह दी थी। उसे याद आया कि उसे दूनिया पर कितना तरस आया था, उसके दिल मे टीस सी उठी थी···

"उफ! लानत! फिर वही ख्याल आ रहे है! मुझे ऐसे ख्यालो को दिमाग से निकाल देना चाहिये।"

उसे झपकी आ रही थी। बुखार की कँपकपी दूर हो गई थी, सहसा उसे लगा जैसे बिस्तर की चादर के नीचे कोई चीज़ रेग रही है। वह चौक उठा। "ओफ़! जाने दो! शायद कोई चूहा होगा!" उसने सोचा। "सामने मेज पर गोश्त पडा है" कबल उतार कर खडे होना और सर्दी मे ठिठरना उसे अच्छा न लगा, लेकिन फिर उसकी टाँग पर कोई गदी चीज रेगने लगी। वह कबल उतार कर उठ खडा हुआ

और उसने मोमबत्ती जलाई। बुखार की हरारत से कॉपते हुए वह बिस्तर के कपडो की छानबीन करने लगा। वहाँ कुछ न था। उसने कबल झाड़ा, सहसा एक चूहा निकल कर बिस्तर पर चक्कर काटने लगा। चूहा बार-बार उसकी पकड मे आकर फिर फिसल जाता था, उसके हाथ पर रेगता था और तकिये के नीचे छिप जाता था। उसने ताकिया फेंक दिया लेकिन उसे लगा जैसे कोई चीज कूदकर उसके सीने पर चढ गई है और कमीज के नीचे पीठ पर फुदक रही है। घबराहट से उसे कपकपी आ गई और वह जाग उठा।

कमरे मे अधेरा था। वह कबल ओढे बिस्तर मे लेटा था। बाहर सनसनाती हुई हवा चल रही थी। उसने खीजकर सोचा, "कैसी बेहूदगी है ?"

उठकर वह खिडकी की तरफ पीठ करके बैठ गया। उसने फैसला किया, "न सोना ही अच्छा है" खिडकी मे से सर्द सीली हवा भीतर आ रही थी। उसने कबल ओढ लिया, इस वक्त वह कुछ नही सोच रहा था, न सोचना ही चाहता था। लेकिन एक के बाद दूसरी असबद्ध तस्वीरो के उलझे धागे उसकी कल्पना के आगे से गुजर रहे थे। वह फिर दिवास्वप्न देखने लगा। पता नही ठड, सीलन और अधेरे ने या हवा के झोको ने उसके मन मे विलक्षरण के लिये आकाक्षा पैदा कर दी। रह रह कर उसकी आँखो के आगे फूलो की तस्वीरे आने लगी। उसने एक फुलवारी की कल्पना की जिसमे धूप खिली हुई है। छुट्टी का दिन है—शायद ट्रिनिटी दिवस है। फुलवारी मे अग्रेजी ढग का एक विशाल काटेज है जिसमे चारो तरफ सुवासित फूलो की क्यारियाँ है। लताओ से ढँके पोर्च के आसपास गुलाब के फूलो की क्यारियाँ है। ठडे जीने मे कीमती कालीन बिछे है। चीनी के गमलो मे दुर्लभ पौधे लगे है। खिडकियो के भीतर अलौकिक सुवास वाले नर्गिस के फूल सुन्दर गुलदस्तो मे सजे है। वह वही खडा रहना चाहता था। लेकिन

जीना पार करके वह एक विशाल ड्राइंग रूम मे पहुँचा। वहाँ भी खिडकियो और बालकनी मे फूल सजे थे। नीचे लान मे ताजी कटी हरी सुगन्धित घास उगी हुई थी। खुली खिडकियो मे से ठडी हवा भीतर आ रही थी। खिडकी के नीचे पक्षी चहचहा रहे थे। कमरे के बीचो-बीच सफेद साटन से ढकी एक मेज पर ताबूत रखा था, जिसपर सफेद झालरदार रेशमी कपडा पडा था। उसके चारो ओर फूलो के हार बिछे थे। फूलो के ढेर मे सफेद मलमल की पोशाक पहने एक लडकी लेटी थी। उसकी दोनो बाहे वक्ष से इस तरह सटी हुई थी जैसे सगमरमर को तराश कर बनायी गयी हो। उसके खुले बाल पानी से भीगे हुए थे। उसके बालो मे गुलाब के फूल लगे थे। उसका कठोर और स्पन्दन-हीन चेहरा भी जैसे सगमरमर तराश कर बनाया गया हो। उसके पीले ओठो पर याचना और अवसाद से भरी मुस्कान थी, जिसमें शैशव की अबोधता नही थी। स्वीद्रीगाईलोव ने उस लडकी को पहचान लिया। उसके सिरहाने न कोई धार्मिक मूर्ति थी न कोई मोमबत्ती जल रही थी, और न ही प्रार्थना का स्वर सुनायी दे रहा था। उस लडकी ने पानी मे कूद कर प्राण दे दिये थे। उसकी उम्र सिर्फ चौदह बरस की थी और उसका दिल टूट गया था। जाडो की एक तूफानी रात मे जब बारिश हो रही थी, उसकी दैवी पवित्रता पर धब्बा लगा दिया गया था और उसकी किशोर आत्मा इस अपमान की यत्रणा से कुचली गई थी। उसके मुँह से आखिरी समय जो चीख निकली थी, उसके प्रति पाशविक निष्ठुरता दिखाई गई थी।

स्वीद्रीगाईलोव होश मे आ गया और उठ कर खिडकी के पास चला गया। अधेरे मे उसने सिटकनी टटोली और खिडकी खोल दी। ठंडी हवा के झोके क्रुद्ध कोडो की तरह उसके चेहरे और सीने पर बरसने लगे। उसके बदन पर सिर्फ एक ही कमीज थी। खिडकी के बाहर जरूर मनोरजन के लिये कोई बाग था। शायद वहाँ चाय की

मेजे थी और दिन मे गाना बजाना होता था। वृक्षो और झाडियो मे से वर्षा की बूँदे खिडकी मे आ रही थी। कमरे मे तहखाने जैसा अधेरा छाया था इसलिये उसे मुश्किल से बाहर की चीजो की रूपरेखा दिखाई दे रही थी। वह खिडकी पर कुहनियाँ टेककर पाँच मिनट तक अधेरे को देखता रहा। सहसा दो बार तोप दागने की आवाज गूँज उठी। उसने सोचा "नदी मे पानी ऊपर चढ रहा है इसी की सूचना दी गई है।" सुबह तक नीची सतहवाली गलियो मे पानी भर जायेगा और मकानो की निचली मजिले और तहखाने सब डूब जायेगे। तहखानो मे बहने वाले चूहे तैर कर बाहर निकल आयेगे और लोग अपने कूडे-कर्कट को ऊपर की मजिलो में ढोते हुए बारिश और आधी को कोसेगे। अब वक्त क्या होगा!" इसी वक्त पडौस की एक घडी ने तीन बजाये।

"अहा! एक घटे बाद ही दिन निकल आयेगा। और किसलिये रुकना चाहिये! मै फौरन पार्क मे जाकर बारिश से भीगी किसी झाडी की तलाश करूँगा जिसे छूते ही करोडो पानी की बूँदे इन्सान के सर पर चू पडती है।"

उसने खिडकी बद कर दी, मोमबत्ती जलाई, और अपनी वास्कट, ओवर कोट और हैट पहन कर बाहर चला आया। आते वक्त वह मोमबत्ती साथ लेता आया ताकि बरामदे मे उसे कूडे-कर्कट मे सोया हुआ फटेहाल नौकर नजर आया तो वह उसे होटल के कमरे का किराया चुका देगा। "यह सबसे अच्छा मौका है, इससे अच्छा वक्त फिर नही मिलेगा।"

वह कुछ देर तक लबे तग बरामदे मे चलता रहा लेकिन उसे कोई आदमी नजर न आया। वह आवाज देने ही वाला था कि सहसा एक पुरानी अलमारी और दरवाज़े के बीच उसे कोई चीज नजर आई जो जिदा मालूम होती थी। उसने झुककर मोमबत्ती के प्रकाश मे देखा, पाँच

बरस की एक बच्ची जाडे मे ठिठुर रही थी और रो रही थी। उसके कपडे पानी मे गीले थे। स्वीद्रीगाईलोव को देखकर वह ज़रा भी नही घबराई, बल्कि अपनी बडी बडी काली आँखो से उसे विस्मयपूर्वक देखने लगी। बीच बीच मे वह सिसकती जाती थी, जैसे बहुत देर रोने के बाद बच्चे सिसकते है। उसके चेहरे पर थकान और पीलापन था। ठड से वह ऐंठ गई थी। "यह यहाँ कैसे आई? इसने यहाँ आकर आश्रय लिया होगा और रातभर इसी तरह जागती रही होगी।" उसने बच्ची से पूछताछ की। बच्ची मे जिन्दा दिली आ गई और वह अपनी तोतली भाषा मे बोली "माँ मुझे मारेगी—मुझसे प्याला टूट गया था" वह बडी बातूनी थी। स्वीद्रीगाईलोव ने अनुमान लगाया कि उस बच्ची की माँ होटल मे बावर्चिन है, और शराब के नशे मे चूर रहने के कारण बच्ची के प्रति लापरवाह है, और उसने बच्ची को मारा है जिससे वह भयभीत हो गई है। बच्ची ने कल शाम कोई प्याला तोडा था, और डर के मारे वह घर से भाग गई थी। बारिश आने पर वह होटल के बरामदे मे लौट आई और अलमारी के पीछे छिपी जाडे मे ठिठुरती रही और रोती रही। उसे डर था कि माँ उसे बहुत पीटेगी। स्वीद्रीगाईलोव बच्ची को गोद मे उठा कर अपने कमरे मे ले आया और बिस्तर पर बिठा कर उसने उसके कपडे उतारने शुरू किये। उसके फटे हुए जूते इतने ज्यादा गीले थे, जैसे वह रात भर पानी मे खडी रही हो। कपडे उतार कर उसने बच्ची को कबल ओढा कर लिटा दिया। वह फौरन सो गई। इसके बाद स्वीद्रीगाईलोव फिर नैराश्यभरे विचारो मे खो गया।

सहसा उसे अपने आप पर गुस्सा आया, "मै भी कितना बेवकूफ हूँ जो इतनी मुसीबत उठा रहा हूँ। कैसा गधापन है!" वह फिर मोमबत्ती उठाकर नौकर की तलाश में जाने लगा। दरवाज़ा खोलते वक्त उसने सोचा, "जहन्नुम मे जाये यह बच्ची।" लेकिन बच्ची सो

रही है या नही, यह देखने के लिये उसने सावधानी से कबल उठाया। बच्ची गर्मी पाकर आराम से सो रही थी और उसके पीले गालो पर सुरखी आ गई थी। लेकिन उस सुर्खी मे शिशु सुलभ गुलाबीपन नही था। "शायद इसे बुखार है।" स्वीद्रीगाईलोव ने सोचा। लगता था जैसे किसी ने बच्ची को शराब का एक पूरा गिलास पिला दिया हो। उसके लाल ओठ भी जल रहे थे। लेकिन यह क्या? स्वीद्रीगाईलोव को सहसा आभास हुआ कि बच्ची की काली पलके काँप रही है और वह लपट ढग से उसे आँख मार रही है। मालूम होता था कि उसने नीद का बहाना किया था, हा, उसके ओठ खुल गये थे और वह मुस्करा रही थी। उसका चेहरा रह रह कर काप रहा था, लगता था वह कपन पर काबू पाने की कोशिश कर रही है। थोडी देर बाद वह खुलकर मुस्कराई। उस बच्ची के चेहरे मे, बचपन के भोलेपन के स्थान पर एक अजब बेहयाई और लपटता थी—वह एक पतित वेश्या का चेहरा था, फ्रासीसी वेश्या का। उसने दोनो आँखे खोलकर हँसती बेहया आखो से स्वीद्रीगाईलोव की तरफ देखा। उन आखो मे निमत्रण था···उस हँसी मे, उन निगाहो और अदाओ मे एक अजब अपवित्रता थी। स्वीद्रीगाईलोव ने ग्लानिपूर्वक सोचा, "पाच बरस की उम्र में ही ये लच्छन! आखिर इसका मतलब क्या है?" अब उस लडकी ने उसकी तरफ देखकर अपनी बाहे आगे फैला दी· "कबख्त लडकी।" स्वीद्रीगाईलोव चिल्लाया। उसने बच्ची को मारने के लिये हाथ ऊपर उठाया। उसी वक्त उसकी नीद खुल गई।

उसने अपने को बिस्तर मे लेटा पाया। अभी तक वह कबल ओढे था। मोमबत्ती बिल्कुल नही जलाई गई थी और खिडकियो मे से छनकर दिन का प्रकाश भीतर आ रहा था।

"मै रात भर दुस्वप्न देखता रहा हूँ।" कहकर वह गुस्से से उठ खडा हुआ। थकान से उसकी हड्डियाँ दुख रही थी। घने कुहरे के

कारण उसे कुछ दिखाई नही दे रहा था। पाच बजने वाले थे। वह बहुत लबी नीद ले चुका था। वह उठा और उसने अपनी सीली जाकेट और ओवरकोट पहना। जेब टटोल कर उसने रिवाल्वर बाहर निकाला, और एक नोटबुक निकालकर उसमे बडे बडे अक्षरो मे कुछ लिखने लगा। फिर अपनी कुहनियाँ मेज पर टिका कर वह किसी गहरी सोच मे डूब गया। रिवाल्वर और नोट बुक अभी भी मेज़ पर पडे थे। कुछ मक्खियाँ आकर गोश्त के टुकडे पर बैठ गई, जो अभी तक ज्यों का त्यो मेज पर रखा था। वह मक्खियो की तरफ शून्य दृष्टि से देखता रहा, फिर उसने दाया हाथ उठाकर एक मक्खी को पकडने की कोशिश की। कोशिश करते-करते वह थक गया, लेकिन मक्खी पकड मे न आई। आखिर उसे ख्याल आया कि वह इस दिल-चस्प मनबहलाव मे अपना समय नष्ट कर रहा है। वह चौक कर उठ खडा हुआ और पक्का निश्चय करके कमरे से बाहर चला आया। एक मिनट बाद वह सडक पर पहुँच गया।

शहर पर घना सफेद कुहरा छाया था। स्वीद्रीगाईलोव गंदे, फिसलने वाले फुटपाथ पर नन्ही नेवा नदी की ओर चल पडा। उसने कल्पना की, कि नेवा नदी में पानी चढ रहा है, पेत्रोवस्की द्वीप, सडके, घास, वृक्ष, झाडियाँ सब वर्षा से गीली है···वह मकानो की तरफ चिढकर देख रहा था और मन मे दूसरे विचार लाने की कोशिश कर रहा था। सडक पर एक भी आदमी या कोचवान नही था। लकडी के बने पीले मकानो के दरवाज़े बद थे और वे बडे गदे और उदास दिखाई दे रहे थे। स्वीद्रीगाईलोव ठड से कापने लगा। वह गौर से हर दुकान के साईनबोर्ड को पढता जा रहा था। लकडी का फुटपाथ पार करके वह पत्थर के बने एक मकान के पास पहुँचा। एक गदे, जाडे से ठिठुरते हुए कुत्ते ने जो दुम दुबकाकर भाग रहा था, उसका रास्ता काटा। फुटपाथ के पार ओवरकोट पहने एक आदमी औंधे मुँह लेटा था। वह

नशे मे धुत्त था। स्वीद्रीगाईलोव ने उसकी तरफ देखा और आगे चल दिया। बाई तरफ एक ऊँची मीनार थी। "लो! माकूल जगह आ गई। पेत्रोवस्की द्वीप जाने से क्या फायदा? यहाँ पर कम से कम एक सरकारी अफसर तो साक्षी रहेगा···"

वह मुस्करा कर उस गली मे मुड गया जिसमें ऊँची मीनार वाला मकान था। मकान के फाटक बद थे। भूरे रग के फौजी लबादे मे एक नाटा आदमी फाटक के सहारे खडा था। उसके सर पर ताँबे का कवचनुमा टोप था, उस आदमी ने नीद से अलसाई, उदासीन आँखो से स्वीद्रीगाईलोव की तरफ देखा। उसके चेहरे पर चिडचिडापन और मनहूसियत छाई थी, जो हर यहूदी के चेहरे पर छाई रहती है। दोनो आदमी एक दूसरे को खामोशी से देखते रहे। अब शायद उस आदमी को स्वीद्रीगाईलोव का, जो नशे में नही था इतनी नजदीक आकर खामोशी से खडे रहना अजब लगा। उसने वही खडे खडे पूछा, "यहाँ तुम्हारा क्या काम है?"

"कुछ नही भाई, गुड मौर्निंग" स्वीद्रीगाईलोव बोला।

"यह माकूल जगह नहीं है।"

"मै विदेश जा रहा हूँ भाई।"

"विदेश?"

"अमरीका"

"अमरीका?"

स्वीद्रीगाईलोव ने रिवाल्वर निकाल कर ठीक किया, सतरी के चेहरे पर त्यौरिया पड गई।

"मै कहता हूँ, ऐसी दिल्लगी कही और जाकर करो।"

"क्यो? यहा करने मे क्या बुराई है?"

"मै जो तुमसे कह रहा हूँ।"

"खैर कोई हर्ज नही, मेरे भाई, यह अच्छी जगह है। जब तुमसे

सवाल पूछे जाये, तो तुम कह देना कि मैंने तुम्हे कहा था मै अमेरिका जा रहा हूँ।"

उसने रिवाल्वर दाहिनी कनपटी से सटा दिया।

"यह सब तुम यहाँ नही कर सकते! ऐसे कामो के लिये यह स्थान नही है!" सतरी चिल्लाया! आश्चर्य से उसकी आखे फटी जा रही थी।

स्वीद्रीगाईलोव ने घोडा दबा दिया।

७

उसी दिन शाम के करीब सात बजे, रास्कोलनिकोव बैकालेव के घर की तरफ जा रहा था, जहाँ राजुमिहीन ने उसकी माँ और बहन के ठहरने का इन्तिज़ाम किया था। हिचकिचाते कदमो से रास्कोलनिकोव जीना चढने लगा। लेकिन अब दुनियाँ की कोई ताकत उसे पीछे नही हटा सकती थी। वह अपनी किस्मत का फैसला कर चुका था।

"उन दोनो को अभी तक कुछ नही मालूम, वे मुझे सनकी समझती है, इसलिये उनके पास जाने मे हर्ज नही।"

उसका हुलिया बिगडा हुआ था। कपडे फटे हुए और गन्दे थे। रात की बारिश मे भीग गये थे। थकान, ठड और पिछले चौबीस घटो के आतरिक सघर्ष से उसका चेहरा विकृत हो गया था। कल रात उसने एकान्त मे, न जाने कहाँ गुजारी थी। खैर उसने फैसला कर लिया था।

उसके खटखटाने पर, मा ने आकर दरवाजा खोला। दूनिया घर मे नही थी। यहा तक कि नौकर भी कही बाहर गया था। पहले तो वृद्धा माँ हर्ष और आश्चर्य से सन्न रह गई। फिर वह रास्कोलनिकोव का हाथ पकडकर भीतर ले गई।

"आखिर तुम आ ही गये ! नाराज न होना रोद्या, मै मूर्खो की तरह आसू बहा रही हूँ, अरे मैं तो हँस रही हूँ ! तुम सोचते हो मै रो रही हूँ। नही, मुझे बडी खुशी है, लेकिन इन दिनो मुझे आँसू बहाने की आदत-सी पड गई है। तुम्हारे पिता के मरने के बाद हर छोटी-सी बात पर मुझे रोना आ जाता है। बैठ जाओ प्यारे बेटे, देखती हूँ तुम थक गये हो। और तुम्हारे कपडे कीचड मे सने है ..."

"कल बारिश मे भीग गये थे माँ .." रास्कोलनिकोव ने बात शुरू की।

वृद्धा ने बीच मे टोक कर कहा, "नही, नही, तुम्हारा ख्याल था कि मै पहले की तरह तुम्हारी तहकीकात करूँगी। चिता न करो, मै सब समझती हू। अब मै यहा के तौर-तरीको को समझ गई हूँ। और उनमे मुझे बेहतरी नजर आती है। मैने हमेशा के लिये मन मे फैसला कर लिया है। भला मुझे तुम्हारे इरादो का क्या पता ! जो तुमसे उम्मीद करूँ कि तुम उनका ब्यौरा मुझे बताओगे। तुम्हारे दिमाग मे कौन कौन सी स्कीमे है, या पैदा हो रही है, यह तो ईश्वर ही जानता है। इसलिए तुम्हे कचोट कर यह पूछना कि तुम क्या सोच रहे हो, मेरा फर्ज नही है। हे ईश्वर ! मै पागलो की तरह इधर उधर भाग क्यो रही हूँ ? ..रोद्या, पत्रिका मे छपा तुम्हारा लेख मै तीसरी बार पढ रही हूँ। दिमित्री प्रोकोफिच ने वह लेख मुझे लाकर दिया था। उसे देखते ही मैने सोचा, बेवकूफ लडका आजकल इन्ही विचारो मे उलझा रहता है। अब मुझे सारा रहस्य समझ मे आगया। पढे लिखे विद्वान लोग ऐसे ही सनकी होते है। मैने सोचा कि तुम्हारे दिमाग मे नये विचार आये है, तुम उन पर गभीरता से सोच रहे हो। मै क्यो तुम्हे नाहक परेशान करूँ। बेटा तुम्हारा लेख मैने पढा है, कई बाते मेरी समझ मे नही आयी। आ भी कैसे सकती थी—यह सब तो स्वाभाविक ही है।"

"माँ, मुझे वह लेख दिखाओ।"

उसने अपने लेख पर एक नजर डाली। परिस्थितियो और 'मूड' से लेख का सामजस्य न होने के कारण, उसे एक अजब खटमिट्ठी-सी अनुभूति हुई, जो हर लेखक को पहली बार अपनी कृति छपी देखकर होती है। फिर वह था तो केवल तेईस ही बरस का। क्षण भर बाद लेख की कुछ पक्तियाँ पढकर वह खीज उठा और उसके हृदय मे टीस-सी उठी। उसे अपना वह मानसिक अन्तर्द्वन्द्व याद हो आया जब उसने यह लेख लिखा था। उसने गुस्से और ग्लानि से पत्रिका मेज पर पटक दी।

"रोद्या मुझ जैसी बेवकूफ औरत भी समझ गयी है कि जल्द ही रूसी विचारधारा की दुनियाँ मे तुम्हे प्रमुख स्थान मिलने वाला है, और लोगो की इतनी हिम्मत कि वे तुम्हे पागल समझ बैठे! तुम नही जानते उन्होने सचमुच यही समझ लिया था। आह! ये नीच लोग प्रतिभा की कद्र करना क्या जाने? और दुनिया को तो विश्वास ही नही हुआ। कहो क्या कहते हो? तुम्हारे पिता ने दो बार पत्रिकाओ में छपने के लिए अपनी रचनाएँ भेजी थी। पहली बार कुछ कवितायें, (मेरे पास उनकी पाण्डुलिपि पडी है, मैं तुम्हे दिखाऊँगी) दूसरी बार एक पूरा उपन्यास, (मैने तुम्हारे पिता से मिन्नत की थी कि वे मुझे उसकी एक नकल कर लेने दे) और हम दोनो उन रचनाओ को छपा हुआ देखने के लिए कितने उत्सुक थे—लेकिन सम्पादको और प्रकाशको ने उन्हे अस्वीकृत कर दिया। हाय रोद्या! छै या सात दिन पहले तुम्हारे खाने और रहने के ढग को देखकर मुझे कितनी चिन्ता हुई थी। लेकिन अब मै जान गयी हूँ कि वह मेरी बेवकूफी थी, क्योकि अपनी प्रतिभा और योग्यता से तुम किसी भी ओहदे पर पहुँच सकते हो। इसमे कोई शक नही कि फिलहाल तुम खाने-पहनने के प्रति उदासीन हो, क्योकि तुम बड़ी बडी समस्याओ पर सोचने मे व्यस्त रहते

हो।"

"दूनिया घर मे नही है, माँ !"

"नही रोद्या, आजकल हम दोनो मे कम ही मुलाकात होती है। वह मेरे एकान्त मे दखल नही देती। राजुमिहीन मुझ से मिलने आता है और हमेशा वह तुम्हारे बारे मे बाते करता है। बेटा, वह तुम्हे चाहता है और वह तुम्हारी इज्जत करता है। मै यह नही कह रही कि दूनिया मेरा ख्याल नही रखती—मै उसकी शिकायत नही कर रही—हम दोनो की अपनी-अपनी आदते है। इस बीच वह मुझसे कुछ छिपाने लगी है। मैंने तुम दोनो से कभी कुछ नही छिपाया। मुझे दूनिया की समझदारी पर विश्वास है, और वह तुम्हे और मुझे बहुत चाहती है ··लेकिन पता नही, इन सब बातो का क्या परिणाम होगा ? मै खुश हूँ कि तुम आगये। लेकिन दूनिया तुमसे नही मिल सकी। जब वह आयेगी तब मै उसे तुम्हारे आने की खबर दूँगी। तुम इतने दिनो से कहाँ थे ? मेरी आदते मत बिगाडो, रोद्या। जब आना चाहो तभी आओ, न आना चाहोगे तो मै बुरा नही मनाऊँगी, तुम्हारी इन्तजार करती रहूँगी, बस इतना जानना ही मेरे लिये काफी है कि तुम मुझे चाहते हो। मै तुम्हारी रचनाओ को पढती रहूगी और लोगो से तुम्हारा हालचाल मालूम करती रहूँगी। कभी कभी तुम खुद मुझसे मिलने आया करोगे, इस से ज्यादा मुझे क्या चाहिये। आज भी तुम अपनी माँ को तसल्ली देने के लिये आये हो, यह मै देख रही हू।"

यह कह कर वृद्धा रो पडी।

"लो, मैंने फिर रोना-धोना शुरू कर दिया। मेरी बेवकूफी पर बुरा मत मनाना। अरे ! मै यहाँ बैठी क्या कर रही हूँ ? घर मे काफी मौजूद है, मैंने तुम्हे बनाकर नही पिलाई। आह ! बुढापे में इन्सान इतना स्वार्थी हो जाता है। मै अभी काफी बना कर लाती हूँ।"

"तकलीफ न उठाओ मा, मै अभी वापिस जा रहा हूँ। मेरी बात तो सुनो।"

वृद्धा भयभीत होकर बेटे के पास आई।

"मा, चाहे कुछ भी हो जाये, तुम्हे लोग मेरे बारे मे चाहे कैसी भी खबर सुनाये, क्या फिर भी तुम मुझे इसी तरह प्यार कर सकोगी, जैसे अब करती हो ?" रास्कोलनिकोव ने हार्दिकता से पूछा।

"रोद्या, रोद्या, क्या माजरा है ? तुम मुझसे ऐसा सवाल क्यो पूछ रहे हो ? तुम्हारे बारे में मुझे कौन बताने वाला है ? फिर मै ऐसी बात सुनूगी ही नही, न ही मुझे कभी विश्वास होगा।"

"मै तुम्हे विश्वास दिलाने आया हूँ कि मैने सदा तुम्हे चाहा है, दूनिया घर मे नही है, यह अच्छा ही है। मै तुम्हे बताने आया हूँ कि तुम्हे मेरी वजह से दुख उठाना पडेगा फिर भी यह विश्वास करना कि तुम्हारा बेटा तुम्हे अपनी जान से भी अधिक चाहता है और तुम्हारा यह सोचना गलत था कि मै निष्ठुर हूँ। मै हमेशा तुमसे प्यार करता रहूँगा···बस इतना ही कहना था, तुम्हे यह बताना मेरा फर्ज था···।"

वृद्धा ने बेटे को छाती से लगा लिया और रोने लगी।

"रोद्या, मालूम नही, तुम्हे क्या हो गया है। इस बीच मै सोचती थी कि हमारी बातो से तुम ऊब जाते हो, लेकिन अब देखती हूँ कि तुम्हारी जिन्दगी अवसादमय होगी, इसलिए तुम इतने बेचैन रहते हो। माफ करना रोद्या, यह बात तो मैने बहुत पहले से ही देख ली थी, मै इसी सोच में रात भर जागती रहती हूँ। कल रात तुम्हारी बहन नीद में तुम्हारी बाते ही करती रही। पूरी बात मेरी समझ मे नही आई, आज सुबह मुझे ऐसा लगा जैसे कोई बुरी घटना होने वाली है, जैसे मुझे फाँसी मिलने वाली है। रोद्या, रोद्या, तुम कही जा रहे हो ?"

"हाँ"।

"मेरा भी यही ख्याल था। अगर तुम्हे मेरी जरूरत हो तो मै तुम्हारे साथ चल सकती हूँ। दूनिया भी चल सकती है, वह तुम्हे बहुत चाहती है। बेशक सोफिया सेम्योनोवना भी हमारे साथ चले। उसे अपनी बेटी बनाने मे मुझे कोई एतराज नही हालाकि ••दिमित्री राजुमिहीन भी हमारी मदद करेगा • लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो ?"

"गुडबाई, माँ।"

"क्या आज ही जा रहे हो ?" माँ इस तरह चिल्लाई जैसे वह सदा के लिए बेटे को खो रही हो।

"मै रुक नही सकता, मुझे अब जाना चाहिये।"

"क्या मै तुम्हारे साथ नही आ सकती ?"

"नही, तुम घुटने टेक कर अभी मेरे लिए प्रार्थना करो। शायद तुम्हारी प्रार्थना ईश्वर तक पहुँच सकेगी।"

"आओ तुम्हारे शरीर पर सलीब का चिन्ह बनाकर तुम्हे आशीर्वाद दे दूँ। ठीक है, ठीक है, हे ईश्वर हम क्या कर रहे है।"

रास्कोलनिकोव खुश था कि घर मे वह माँ के साथ अकेला था। इतने महीनो के बाद पहली बार उसका हृदय द्रवित हुआ था। उसने माँ के पैरो मे गिरकर पैर चूमे और दोनो एक दूसरे की बाहो मे लिपट कर रोने लगे। इस बार वृद्धा माँ न चकित हुई, न ही उसने कोई सवाल पूछा। कई दिन से उसे आभास हो रहा था कि उनके बेटे पर कोई मुसीबत आ गई है और वह भयकर घडी आ पहुँची है।

वृद्धा सिसक कर बोली, "रोद्या, मेरे बेटे, मेरी कोख के पहले बच्चे, इस वक्त तुम बिल्कुल वैसे ही हो जैसे तुम बचपन में थे, जब तुम भागकर मुझसे लिपट जाते थे और मुझे चूम लेते थे। जब तुम्हारे पिता जिदा थे गरीबी मे भी तुम्हे देखकर हम किसी तरह दिन काट लेते थे। तुम्हारे पिता को दफनाने के बाद अक्सर हम उनकी कब्र पर जाकर रोते थे, तब भी तुम मुझ से इसी तरह लिपट जाते थे। पिछले

कई दिनो मे मै अमगल की कल्पना करके रो रही हूँ, आखिर माँ का दिल जो ठहरा। उस दिन शाम को जब हम पीटर्सबर्ग आये थे, तुम्हे देखते ही, तुम्हारी आँखो से मै भाँप गई थी कि दाल मे कुछ काला है। मेरा दिल डूबने लगा और आज जब मैने दरवाजा खोला, तो तुम्हे देखकर मुझे लगा कि खतरे की घडी आ पहुँची है। रोदया, रोद्या, तुम आज ही तो नही चले जाओगे ?"

"नही।"

"फिर आओगे ?"

"हाँ आऊँगा।"

"रोद्या, नाराज मत होना, तुमसे सवाल पूछने का साहस मुझ मे नही है, न ही मुझे सवाल पूछने चाहिएँ, यह भी जानती हूँ—लेकिन सिर्फ इतना बताओ—क्या तुम कही दूर जा रहे हो ?"

"हाँ, बहुत दूर।"

"वहाँ तुम्हे कोई नौकरी मिलने वाली है ?"

"जो ईश्वर भेजेगा··तुम मेरे लिए प्रार्थना करती रहना।" रास्कोलनिकोव दरवाजे की तरफ जाने लगा। वृद्धा ने उसे पकड लिया और निराश भाव से उसकी आँखो में झाकने लगी। वृद्धा के चेहरे पर आतक छा गया।

"बस, माँ बस करो," रास्कोलनिकोव ने कहा। उसे अफसोस हुआ कि वह माँ से मिलने क्यो आया।

"तुम हमेशा के लिए तो नही जा रहे हो न ! कल आओगे न !"

"आऊँगा, आऊँगा, गुडबाई," आखिरकार उसने बिदा ली।

सुबह बादल हट गये थे, इसलिए शाम बडी सुहावनी थी। रास्कोलनिकोव, अपनी कोठरी मे गया। सूरज डूबने से पहले वह सारे काम खत्म करना चाहता था। तब तक वह किसी से भी नही मिलना चाहता था। जीने मे चढते वक्त उसने देखा कि नस्तास्या समावार*

छोड कर उसे देखने भागी आई थी। वह सोचने लगा, "कही कोई मुझ से मिलने तो नही आया ?" उसके सामने पोरफेरी की तस्वीर आ गई। लेकिन दरवाजा खोलते ही उसकी नजर दूनिया पर गई। वह अकेली बैठी, किसी गहरी सोच मे मग्न थी। मालूम होता था, वह बहुत देर से इन्तजार कर रही थी। रास्कोलनिकोव दहलीज मे ठिठक गया। दूनिया सोफे से उठकर उसके सामने आ खडी हुई। दूनिया की आँखो मे असीम आतक और अवसाद था। उन आँखो से वह फौरन समझ गया कि दूनिया को सब मालूम हो गया है।

"मैं भीतर आऊँ या यहाँ से चला जाऊँ ?" रास्कोलनिकोव ने झिझकते हुए पूछा।

"मै दिन भर सोफिया सेम्योनोवना के यहाँ थी। हम दोनो तुम्हारा इन्तजार कर रही थी। हमारा ख्याल था कि तुम वहाँ ज़रूर आओगे।"

रास्कोलनिकोव कमरे मे आते ही कुर्सी पर लुढक गया।

"मै थक गया हूँ दूनिया, मुझे कमजोरी महसूस हो रही है। मैं ऐसे क्षण मे अपने मन पर काबू पाना चाहता था।' उसने फिर सदेह-भरी दृष्टि से दूनियाँ की तरफ देखा।

"रात भर तुम कहाँ रहे ?"

"मुझे ठीक से याद नही बहन। मैं आखिरी बार फैसला करना चाहता था, इसलिये कई बार मै नेवा नदी की तरफ गया, मै वही इस सारे मामले को खत्म करना चाहता था, लेकिन मै अपना मन पक्का न कर सका।" उसने फिर सदेह भरी दृष्टि से दूनिया को देखा।

"ईश्वर को लाख लाख धन्यवाद है ! मुझे और सोफिया सेम्योनोवना को भी यही डर था। लेकिन देखती हूँ अब भी तुम्हे जीवन में आस्था है। ईश्वर को लाख लाख धन्यवाद।"

रास्कोलनिकोब के चेहरे पर एक कटु मुस्कान आ गई ।

"मुझ मे आस्था नही है, लेकिन अभी कुछ देर पहले मै मा की गोद मे रो रहा था। मुझ मे आस्था नही है फिर भी मैने मा से कहा था कि वह मेरे लिए प्रार्थना करे । समझ मे नही आता दूनिया कुछ समझ मे नही आता ।"

"तुम माँ के पास गये थे ? कही तुमने मा को सब कुछ बता तो नही दिया ।" दूनियाँ भय से चिल्लाई ।

"नही मैने अपनी ज़बान से कुछ नही कहा···लेकिन वह बहुत कुछ जान गई है । मा ने तुम्हे नीद मे बडबडाते हुए सुना था । मुझे विश्वास है कि आधी बात उन्हे मालूम हो गई है । शायद मुझे माँ से मिलने नही जाना चाहिए था । न जाने क्यो मैं वहाँ चला गया । मै घृणित जीव हूँ, दूनिया ।"

"तुम घृणित हो ! लेकिन तुम तो पीडा का आह्वान करने के लिए तैयार हो । क्यो ठीक है न !"

"हा, मै जा रहा हूँ । फौरन इसी वक्त । अपमान से बचने के लिए मैने नदी मे कूद कर प्राण देने की बात सोची थी दूनिया, लेकिन जब मैने पानी मे झाँककर देखा तो मुझे ख्याल आया, अगर अब तक मेरी आत्मा सबल रही है तो मुझे अपमान से नही डरना चाहिए । शायद यह मेरा अहकार हो दूनिया ।"

"यह अहकार है, रोद्या ।"

रास्कोलनिकोव की बुझी हुई आँखो में चमक आ गई । उसे यह सोचकर खुशी हो रही थी कि उसका अहकार अभी तक ज्यो का त्यो है ।

"बहन, कही तुम यह तो नही सोचती कि मै पानी से डर गया था ?" उसके चेहरे पर कुटिल मुस्कान थी ।

"चुप, रोद्या !" दूनिया ने कटु स्वर मे डाँटा । दो मिनिट तक

खामोशी छाई रही। रास्कोलनिकोव नीची नजरो से फर्श की तरफ ताक रहा था। दूनिया मेज के दूसरी तरफ खडी शोक भरी आँखो से भाई को देख रही थी। सहसा रास्कोलनिकोव उठ खडा हुआ।

"देर हो गई है, अब मुझे फौरन चल देना चाहिये। मै फौरन जाकर आत्मसमर्पण करूँगा। लेकिन मै किस लिए ऐसा कर रहा हूँ, यह मै खुद भी नही जानता।"

दूनिया की आँखो से बडे-बडे आँसू ढुलक बडे।

"तुम रो रही हो बहन, लेकिन क्या तुम मुझ से हाथ मिलाने को तैयार हो ?"

दूनिया ने भाई के गले मे बाहे डालकर कहा, "तुम्हे इसमे शक था ! क्या पीडा का आवाहन करके तुम अपने अपराध का प्रायश्चित नही कर रहे ?" दूनिया ने उसका माथा चूम लिया।

"अपराध ? कैसा अपराध ?" रास्कोलनिकोव गुस्से मे फुफकार कर बोला "क्या एक नीच, कीडे के समान एक सूदखोर बुढिया की हत्या करना अपराध है ? उसकी जिन्दगी किस काम की थी ! उसे मारना तो एक तरह से चालीस पापो का प्रायश्चित करना था। वह गरीबो का खून चूसती थी। मैने अपराध कब किया है ? यह विचार न मेरे दिमाग मे कभी आया है, न ही मै उसका प्रायश्चित करना चाहता हूँ। तुम लोग बार बार क्यो "जुर्म ! जुर्म !" चिल्ला रहे हो ? अब मेरी समझ मे आ गया कि इस अनावश्यक अपमान को सहने का फैसला करके मैने कितनी भीरुता और बुद्धूपन दिखाया है। यह मैने इसलिए किया क्योकि मै घृणित जीव हूँ, भीतर से मै खोखला हूँ, शायद अपने फायदे के लिए भी.. जैसा कि पोरफैरी ने कहा था।"

"भाई, भाई यह तुम क्या कह रहे हो ? क्या तुमने खून नही बहाया ?"

"सब आदमी खून बहाते है, खून की नदियाँ आदिकाल से बहती आई है। शेम्पेन की तरह खून बहाने के पुरस्कार स्वरूप लोगो के सर पर ताज पहनाये जाते है और उन्हे मानवता का हितैषी कहा जाता है। जरा गौर से इस प्रश्न पर सोचो, तुम्हारी समझ मे सब आ जायेगा। मै भी मानवता की भलाई करना चाहता था, और उस एक बेवकूफी के बदले मे सैकडो हजारो नेक काम कर सकता था। खैर मै उस बात को बेवकूफी भी मानने को तैयार नही, वह सिर्फ फूहडपन था। मेरी स्कीम सफल नही हुई इसीलिए उसमे बेवकूफी नजर आती है। (नाकामयाब होने पर हर चीज मे बेवकूफी दिखाई देती है) उस बेवकूफी से मै स्वावलम्बी बनना चाहता था। वह तो सिर्फ पहला कदम था, साधन मात्र था, उसके मुकाबिले मे असख्य फायदे होते लेकिन मै···मै तो पहला कदम भी नही उठा सका, क्योकि मै घृणित जीव हूँ। बस असली बात यही है। फिर भी मेरा दृष्टिकोण तुम लोगो से अलग है। अगर मै कामयाब हो जाता तो मुझे शोहरत मिलती। लेकिन अब मै फदे मे फँस गया हूँ।"

"ऐसी बात नही है भाई, यह तुम क्या कह रहे हो ?"

"आह ! इसमे लालित्य और सौन्दर्य का आकर्षण नही है। मेरी समझ में नही आता कि दूसरो पर बाकायदा घेरा डाल कर बमबारी करना क्यो सम्मानजनक समझा जाता है ? बाहरी औपचारिकता का भय नपुसकता का पहला लक्षण है। मैने जो किया वह जुर्म था, यह मानने के लिये मै हरगिज तैयार नही हू। मुझ मे जितनी सबलता और आत्मविश्वास अब है, वैसा कभी नही था।"

उसके पीले क्लात चेहरे पर आवेश की लालिमा छा गई थी, सहसा उसकी आँखे दूनिया की शोकाकुल आँखो से मिली और उसका आवेश वही थम गया। उसे लगा कि उसकी वजह से उसकी मा और बहन को बडा दुःख पहुँचा है।"

"दूनिया, प्यारी बहन, अगर मेरा कसूर है तो मुझे माफ कर दो (वैसे कसूरवार को माफी कैसे मिल सकती है !) गुडबाई ! हम बहस नही करेंगे, मेरे जाने का वक्त हो गया है, मेहरबानी करके मेरा पीछा न करना · मुझे किसी दूसरी जगह जाना है · तुम माँ के पास जाकर बैठो। यह मेरी आखिरी मिन्नत है। मा को बिल्कुल अकेला मत छोडना, मैं उसे चिता की हालत मे छोडकर आया था। उसे यह सदमा बर्दाश्त नही होगा। वह या तो मर जायेगी या पागल हो जायेगी। उसके पास रहना, राजुमिहीन भी तुम लोगो के साथ रहेगा। मैंने उससे बातचीत की थी · मेरी याद मे आँसू मत बहाना। मै चाहे हत्यारा ही होऊँ, लेकिन जिन्दगी भर ईमानदारी और पौरुष दिखाने की कोशिश करूँगा। शायद किसी दिन दुनियाँ मे मेरा नाम हो। देख लेना मेरी वजह से तुम्हे अपमान नही सहना पडेगा। मै अभी दिखा दूँगा · 'अच्छा, गुडबाई, फिर मिलेगे।" उसने फिर दूनिया की आँखो मे एक विचित्र भाव देखा और कहा, "तुम किसलिए रो रही हो ? रोओ मत। हम सदा के लिए जुदा नही हो रहे। अरे हाँ, मैं भूल गया था, एक मिनिट ठहरो।"

उसने मेज पर से एक मोटी, धूल से सनी पुस्तक उठाई, उसमे से हाथी दाँत पर बनी एक तस्वीर निकाली, यह मकान मालकिन की लडकी की तस्वीर थी जो बुखार से मरी थी। बडी अजब लडकी थी, वह सन्यासिनी बनना चाहती थी। एक मिनट तक रास्कोलनिकोव तस्वीर मे अपनी मगेतर के नाजुक चेहरे की तरफ देखता रहा, फिर उसने तस्वीर चूमकर दूनिया के हाथो मे दे दी।

"मैं इस बात की चर्चा अक्सर उससे किया करता था। सिर्फ उसी से। मैंने अपने सारे राज उसे बताए थे। यह खौफनाक स्कीम उस वक्त भी मेरे दिमाग में थी। तुम्हारी तरह वह भी इसका विरोध करती थी। घबराओ नही। मुझे खुशी है कि वह अब इस दुनियाँ मे

नही है। दरअसल अब सब कुछ बदलने वाला है, हर चीज के दो टुकडे होने वाले है।" सहसा उसे अवसाद ने आ घेरा और वह क्षोभ से चिल्लाया, "हर चीज टूटने वाली है। क्या मै इस परिवर्तन के लिए तैयार हूँ ! क्या मैने इसकी कामना की है ? लोग कहते है कि मेरे लिए पीडा झेलना आवश्यक है। इन निरर्थक पीडाओ को झेलने से क्या होगा ? जब मै बीस साल के कालेपानी के बाद बूढा, अशक्त हो जाऊंगा, जब मुसीबते सहकर मेरी मति भ्रष्ट हो जायेगी, तब क्या मैं पीडा के फायदे को समझ सकूंगा ? तब मै भला किसलिए जीना चाहूँगा ? फिर मै ऐसी जिन्दगी झेलने के लिए क्यो राजी हो गया हूँ। ओह, मै जानता हूँ कि आज सुबह नेवा नदी के किनारे खडा होकर भी मै क्यो कोई फैसला नही कर पाया था, मै घृणित जीव जो ठहरा।"

दोनो बाहर आ गये। भाई से बिछुडना दूनिया के लिए कष्टदायक था, लेकिन वह भाई से प्यार करती थी, इसलिए मन मसोसकर रह गई। पचास कदम चलने के बाद उसने फिर पीछे की तरफ मुडकर देखा, रास्कोलनिकोव अभी नजरो से ओझल नही हुआ था। रास्कोल-निकोव अगले मोड पर मुडने लगा। आखिरी बार दोनो की नजरे मिली, दूनिया को अपनी तरफ ताकते देखकर वह खीज उठा और दूनिया को हाथ से चले जाने का इशारा करके वह जल्दी से दूसरी गली मे मुड गया।

बाद में उसे अपने गुस्से पर मन ही मन अफसोस हुआ, और वह सोचने लगा, "माना कि मै नीच हूँ, लेकिन ये लोग मुझे इतना क्यो चाहती है, जबकि मै इनके प्यार के काबिल नही हूं। काश मै ससार मे अकेला होता। न मै किसी से प्रेम करता, न ही मुझे कोई चाहता। फिर ये सारी घटनाये हरगिज न होती। क्या आने वाले पन्द्रह बीस बरस मे मै इतना भीरू हो जाऊँगा कि लोगो के सामने रिरिया कर

कहता फिरूँगा 'मैं हत्यारा हूँ।' हरगिज नही। अब समझ मे आया, इसीलिए ये लोग मुझे साइबेरिया भेज रहे है। जरा सडक पर चलते इन लोगो को तो देखो! इनमे से हर आदमी लुच्चा, बदमाश और अहमक है, सबके सब मुजरिम है लेकिन अगर किसी ने मुझे छुडाने की कोशिश की तो ये सबके सब नैतिक आक्रोश से आगबबूला हो उठेगे। इन लोगो से मुझे कितनी नफ़रत है।"

इसके बाद वह कल्पना करने लगा कि कैसे वह सबके प्रति विनम्र हो जायेगा। क्या ऐसा नही हो सकता? यह तो स्वाभाविक ही है। क्या बीस बरस का कारावास उसे कुचल नही देगा? पानी की धार से पत्थर तक घिस जाते है। इसके बाद फिर जीने का आखिर क्या प्रयोजन रह जायेगा? यह सब जानते हुए भी वह किसलिए आत्म-समर्पण कर रहा है? कल शाम से सैकडो बार यह सवाल वह अपने से पूछ चुका था। फिर भी वह आगे बढा।

८

जब वह सोनिया के यहाँ पहुँचा तो करीब करीब अँधेरा हो गया था। दिनभर सोनिया और दूनिया बेचैनी से उसका इन्तिजार करती रही थी। दूनिया को स्वीद्रीगाईलोव की यह बात याद थी कि सोनिया को सब कुछ मालूम है। दोनो लडकियो में क्या बातचीत हुई, दोनो एक साथ मिलकर कैसे रोई, इसका जिक्र हम यहाँ नही करेंगे। दूनिया को कम से कम यह तसल्ली हो गई कि उसका भाई अकेला नहीं रहेगा। इन्सानी हमदर्दी पाने के लिए वह सबसे पहले सोनिया के पास ही गया था, उसी के सामने उसने अपना जुर्म कबूल किया था, जहाँ उसे किस्मत ले जायेगी, सोनिया उसके साथ जायेगी। यह बात सोनिया से पूछे बगैर ही दूनिया ने जान ली थी। उसका आदरपूर्ण व्यवहार देखकर सोनिया झेंप गयी थी। उसकी आँखो में आँसू छलक आये थे। सोनिया अपने को इस काबिल भी नही समझती थी कि वह दूनिया से आँखे मिला सके। पहली बार रास्कोलनिकोव के यहाँ दूनियाँ ने जब शालीनतापूर्वक आदरभाव से सोनिया का अभिवादन किया था, तभी से दूनिया की मनोहर छवि उसके दिल मे बस गई थी।

इन्तिजार करते-करते दूनिया अधीर हो उठी और सोनिया को छोडकर अपने भाई के यहाँ चली गयी। उसका ख्याल था कि उसका भाई पहले वही जायेगा। दूनिया के जाते ही सोनिया को डर लगने लगा कि कही रास्कोलनिकोव आत्महत्या न कर बैठे। दूनिया को भी यही डर था। दिनभर दोनो एक दूसरे को सान्त्वना देती रही थी, कि ऐसा नही हो सकता। लेकिन एकान्त पाकर दोनो के मन पर यही भय छा गया था। सोनिया को याद आया, स्वीद्रीगाईलोव ने कहा था कि रास्कोलनिकोव के सामने दो रास्ते है, साईबेरिया ''या '''इसके अलावा वह रास्कोलनिकोव के अहकार और अवस्था से भी परिचित थी।

"क्या यह सभव है कि सिर्फ भीरुता और मौत के डर से ही वह जिन्दा है ?" सोनिया ने हताश होकर सोचा।

सूरज अस्त हो रहा था। सोनिया उदास नजरो से खिडकी के बाहर झाँक रही थी, जहाँ सिर्फ बगल वाले मकान की कोरी दीवार नजर आती थी। आखिरकार जब उसे विश्वास हो गया कि हो न हो रास्कोलनिकोव ने जरूर आत्महत्या कर ली है, उसी समय रास्कोलनिकोव कमरे मे दाखिल हुआ।

सोनिया उसे देखकर खुशी से चिल्लाई लेकिन अगले क्षण ही उसका चेहरा पीला पड गया।

रास्कोलनिकोव मुस्कराया, "मै तुमसे सलीब माँगने आया हूँ सोनिया। तुम्ही ने मुझे कहा था कि मुझे चौराहे पर जाकर अपना जुर्म कबूल कर लेना चाहिए। अब वह क्षण आ पहुँचा है, तो तुम डरती क्यो हो ?"

सोनिया चकित होकर रास्कोलनिकोव के चेहरे की तरफ देखने लगी। उसे रास्कोलनिकोव की आवाज विचित्र सी लगी। उसके शरीर मे सर्द कपकपी दौड गई। क्षण भर मे उसने जान लिया कि उन शब्दो

और आवाज मे बनावट है। रास्कोलनिकोव सोनिया से नजरे चुरा रहा था।

"देखो सोनिया मैने फैसला कर लिया है · लेकिन एक बात है·· जाने दो यह बहुत लम्बी कहानी है। जानती हो मुझे गुस्सा किस बात पर आ रहा है ? सारे वहशी और अहमक लोग मेरी तरफ आँखे फाड कर देखेगे, बेवकूफी भरे सवाल पूछेगे, मुझे उन सवालो का जवाब देना पडेगा—वे मेरी तरफ उगलियाँ उठायेगे · छिः जानती हो, मै पोरफेरी के पास नही जाऊगा। मै उससे तग आ गया हूँ। इससे अच्छा तो है कि अपने दोस्त लैफ्टीनेन्ट के पास चला जाऊ। उसे कितनी हैरानी होगी। मेरी वजह से कितनी सनसनी फैलेगी। लेकिन कुछ दिनो से मेरा मिजाज चिडचिडा हो गया है। मुझे ठडे दिमाग से काम लेना चाहिए। जानती हो, अभी अभी मै अपनी बहन की तरफ घूसा तान रहा था, क्योकि वह आखिरी बार मुझे देखने के लिये ठिठक गयी थी। कैसी बहशत है। ओह ! मेरी अब यह हालत हो रही है। अच्छा सलीब कहाँ है।"

वह क्या कर रहा है इसका उसे खुद भी ज्ञान नही था। वह किसी चीज पर ध्यान को केन्द्रित नही कर पा रहा था। उसके विचार सरपट चाल से भागे जा रहे थे। वह असगत बाते कर रहा था और उसके हाथ काँप रहे थे।

सोनिया ने चुपचाप दराज मे से दो सलीब निकाले। एक लकडी का, दूसरा ताँबे का। उसने अपने और रास्कोलनिकोव के शरीर पर सलीब का चिन्ह बनाया और लकडी का सलीब रास्कोलनिकोव के गले मे पहना दिया।

"यह मेरे सूली पर चढने का प्रतीक है।" रास्कोलनिकोव हंसा, "अभी तक मैने जो पीडा सही है वह काफी नही है। यह लकडी का सलीब बिल्कुल गँवारू है। ताँबे वाला सलीब लिज़ावेता का है, तुम्ही उसको पहनना, जरा दिखाओ। अच्छा तो उस वक्त भी यह सलीब

उसके गले मे था। मुझे याद है, एक चादी का सलीब और एक छोटी मूर्ति तो मैने देखी थी, जिन्हे मैने बुढिया की गर्दन पर फेक दिया था। इस मौके पर दरअसल मुझे वही चीजे पहननी चाहिये · लेकिन मै फिजूल की बकबास मे अपना वक्त बरबाद कर रहा हूँ। न जाने मै इतना भुलक्कड क्यो हूँ ?···सोनिया मै तुम्हे चेतावनी देने आया हूँ, ताकि तुम जान जाओ···बस इसीलिये आया था। लेकिन मेरा ख्याल था कि मुझे तुमसे कुछ और भी कहना है। तुम्ही ने मुझे आत्मसमर्पण करने की सलाह दी थी। लो अब मै जेल जा रहा हूँ, तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी। अरे ! तुम रो किसलिये रही हो ? तुम भी रोती हो ? रोना बद करो, मुझे रोने-धोने से बडी नफरत है।"

लेकिन रास्कोलनिकोव की भावुकता जाग उठी थी। सोनिया को देखकर उसका दिल दुखने लगा था। वह मन ही मन सोच रहा था, "सोनिया को किसलिये दुख हो रहा है ? मै उसका क्या लगता हूँ ? वह किसलिये रो रही है ? वह माँ और दूनिया की तरह मेरी देखभाल क्यो करती है ? यही मेरी परिचर्या करेगी ?"

"कम से कम एक बार तो अपने शरीर पर सलीब का चिन्ह बनाकर प्रार्थना करो !" सोनिया ने भीरु, शोकाकुल आवाज मे कहा।

"जरूर ! जरूर ! जितनी बार कहो सोनिया ! सच्चे दिल से ··"

लेकिन वह कहना कुछ और ही चाहता था।

उसने कई बार अपने शरीर पर सलीब का चिन्ह बनाया। सोनिया ने शाल से अपना सर ढक लिया। यह वही हरा 'खानदानी' शाल था जिसका जिक्र मारमेलेदोव ने किया था। रास्कोलनिकोव के जी मे आया कि शाल को अच्छी तरह देखे, लेकिन वह चुप रहा। उसे अपने भुलक्कडपन पर गुस्सा आ रहा था। वह अपनी उत्तेजना से डरता भी था। सहसा उसे आभास हुआ कि सोनिया का इरादा

उसके साथ जाने का है।

"यह क्या कर रही हो ? किधर जा रही हो ? यही रुको !" उसने भीरुता भरे क्षोभ से कहा और दरवाजे की तरफ बढा। "जलूस बना कर चलने से क्या फायदा है ?"

सोनिया कमरे के बीचोबीच खडी रही। रास्कोलनिकोव ने उसे गुडबाई तक नही कहा था। वह उसे भूल गया था।

सीढियाँ उतरते वक्त उसने सोचा, "क्या मैने यह सब ठीक किया ! क्या यह फैसला वापिस नही हो सकता ! · क्या मै रुक नही सकता ?"

फिर भी वह चला गया। सहसा उसने निश्चय कर लिया कि अब वह अपने आप से सवाल नही पूछेगा। सडक पर पहुच कर उसे याद आया कि उसने सोनिया से विदाई नही ली। वह हरा शाल लपेटे उसके आदेश पर चुपचाप कमरे मे खडी रही थी, और उसे हिलने-डुलने तक का साहस नही हुआ था। इसी क्षण उसके दिमाग मे एक दूसरा विचार आया, जो शायद इसी क्षण का इन्तिजार कर रहा था।

"मै अभी सोनिया के पास किस लिये गया था ? काम से--किस काम से ? मुझे उससे कोई काम नही था। उसे यह बताने कि मै जा रहा हू। इसकी क्या जरूरत थी ? क्या मै उससे प्यार करता हू ? नही, नही, अभी अभी तो मैने उसे कुत्ते की तरह दुत्कार दिया था। क्या मै उसका सलीब चाहता था, ओह, मै कितना पतित हो गया हू। नही मै उसके आँसू चाहता था, मै देखना चाहता था, शोक से उसका दिल कैसे दुखता है। मुझे कोई सहारा चाहिये था, जो कुछ देर के लिये मुझे रोक ले। हमदर्दी भरा किसी का चेहरा ! और मुझमे कल्पना करने का दु.साहस पैदा हो गया था। मै सचमुच घृणित मनहूस जीव हू। घृणा के योग्य।"

वह नहर के किनारे किनारे चलने लगा। उसे बहुत दूर नही जाना

था। लेकिन पुल पर पहुँच कर वह रुक गया और बेमतलब ही घास मडी की तरफ चला गया।

वह बडे गौर से अपने चारो ओर की हर चीज को देख रहा था और अपना ध्यान किसी एक विचार पर केन्द्रित नही कर पा रहा था। हर चीज दिमाग मे फिसलती चली जा रही थी। वह सोचने लगा, "शायद एक हफ्ते या एक महीने मे मै पुलिस की बद गाडी मे इसी पुल पर मे गुजरूगा। तब मै पानी की तरफ कैसे देखूँगा। इस बात का मुझे खास ध्यान रखना चाहिये। और सामने वाले साईनबोर्ड पर लिखे अक्षरो को कैसे पढूगा ? वहाँ लिखा हुआ है 'कपनी'। एक महीने बाद जब मैं इन अक्षरो को देखूगा तो मेरे मन मे कैसे विचार उठेगे ? · कैसी क्षुद्र बातो पर इस वक्त मै चिढ रहा हूँ ?···निश्चय ही सारी बाते बडी दिलचस्प रहेगी। (हा-हा मै क्या सोच रहा हूँ ?) मै निरा बच्चा बन गया हूँ और अपने ही आगे शान दिखा रहा हू ? मै शर्मिदा किसलिये हू ? उफ ! लोग कितनी धक्कामुक्की कर रहे है। यह मोटा आदमी—जरूर जर्मन है, क्या मालूम है कि मैं कौन हू ! बच्चे को गोद मे लिये एक देहातिन बार बार मुझसे एक ओर हटने की मिन्नत कर रही है। उसका ख्याल है कि मैं उससे ज्यादा सुखी हू। कितनी अजब बात है, क्यो न इसी विलक्षणता के लिये उसे कुछ दे डालूँ। मेरी जेब मे सिर्फ पाँच कोपेक का एक सिक्का बच रहा है, यह कहाँ से मिला ? यह लो, यह लो भलीमानस।"

"ईश्वर तुम पर रहम करे।" भिखारिन ने रूँआसी आवाज मे कहा।

रास्कोलनिकोव घास मडी पहुँच गया। उसे भीड मे जाना बहुत बुरा लग रहा था, फिर भी जहाँ उसे सबसे ज्यादा भीड नजर आती, वही जा पहुचता। वह किसी भी कीमत पर एकान्त चाहता था, लेकिन उसे यह भी मालूम था कि वह क्षणभर के लिये भी अकेला नही रह

सकता था। भीड मे एक हुल्लडबाज शराबी भी था। वह बार-बार नाचने की कोशिश करता और गिर जाता। उसके इर्द गिर्द भीड इकट्ठी हो गई थी। रास्कोलनिकोव भीड को धकेलता हुआ वहाँ पहुच गया और शराबी को देख कर हस पडा। एक मिनिट बाद उसका ध्यान उधर से हट कर कही और चला गया और वहाँ से चलकर चौक मे पहुँच गया। अचानक एक अज्ञात भावना आकर उसके मन और शरीर पर छा गई।

उसे सोनिया के शब्द याद आये, "चौराहे पर जाकर लोगो के आगे सर झुकाओ, जमीन को चूमो, क्योकि तुमने जमीन के विरुद्ध भी पाप किया है। फिर ऊँचे स्वर में दुनियाँ को बताओ "मैं हत्यारा हूँ।" रास्कोलनिकोव काँप उठा और अपनी बेचैनी और अवसाद से मुक्ति पाने की खातिर इस नये, सपूर्ण सवेदन के लिए उसकी आत्मा तडप उठी। उसके सर पर एक जनून-सा चढ गया,जैसे उसकी आत्मा में किसी चिन्गारी ने आकर आग सुलगा दी हो। उसका सपूर्ण व्यक्तित्व द्रवित हो उठा और आँखो मे आँसू आ गये। वह वही घुटने टेककर बैठ गया।...

चौराहे के बीचोबीच उसने गन्दी मिट्टी को पुलकित होकर चूमा। वह उठ कर खडा हो गया, फिर दोबारा घुटने टेक कर बैठ गया।

"नशे मे धुत्त है।" पास खडे एक युवक ने कहा।

इस पर लोग ठहाका मार कर हँस पडे।

"भाइयो! यह आदमी जेरुसलम जा रहा है और अपने बच्चो और देश से विदाई ले रहा है। वह धरती के सारे वासियो का और सेन्ट पीटर्सबर्ग के महान नगर का अभिवादन कर रहा है!" एक मजदूर जिसने शराब पी रखी थी, बोला।

"देखने मे नौजवान मालूम होता है।"

"शरीफ भी।"

'आजकल कौन शरीफ है, कौन बदमाश है, यह जानना मुश्किल है।"

"मै हत्यारा हूँ!" रास्कोलनिकोव के ओठो पर ये शब्द आते आते खत्म हो गये। उसने चुपचाप लोगो की टिप्पणियाँ सुन ली। और बिना इधर-उधर देखे सीधा पुलिस के दफ्तर की ओर चल पडा। दूसरी बार जब उसने घास मडी के आगे सर नवाया, तो उसे पचास गज की दूरी पर सोनिया खडी दिखाई दी। सोनिया एक दूकान के पीछे छिपने की कोशिश कर रही थी। उसे देखकर रास्कोलनिकोव को जरा भी ताज्जुब नही हुआ। वह जानता था कि सोनिया ऐसा करेगी। उसे विश्वास हो गया कि जहाँ भी किस्मत ले जायेगी, सोनिया सदा उसका साथ देगी। उसके दिल मे टीस उठी · लेकिन वह यमपुरी मे पहुँच गया था।

दिल मजबूत करके वह दालान मे घुसा। उसे तीसरी मजिल पर पहुँचना था। "ऊपर पहुँचने मे मुझे कुछ वक्त लगेगा," उसने सोचा। उसे लगा जैसे कयामत अभी दूर है और उसके पास सोचने के लिये काफी वक्त है।

फिर वही कूडे के ढेर, जीने मे बिखरे हुए अण्डो के छिलके, फ्लैटो के खुले हुए दरवाजे, रसोइयो मे से आती हुई गन्ध। उस दिन के बाद रास्कोलनिकोव इस ओर नही आया था। उस की टागे सुन्न हो गई थी, फिर भी वह सीढियाँ चढता गया। क्षण भर वह सास लेने के लिए रुका ताकि वह 'मर्दानगी' से पुलिस दफ्तर मे दाखिल हो सके। "लेकिन इसकी क्या जरूरत है? अगर जहर का प्याला पीना ही है तो, क्या फर्क पडता है? मन में जितनी ग्लानि पैदा हो, उतना ही अच्छा है।" उसने 'विस्फोटक लैफ्टीनेण्ट' इल्या पैत्रोविच की कल्पना की। क्या वह उसी के पास जा रहा है! किसी और के पास नही जा सकता? क्या वह लौटकर सीधा निकोदिम फोमिच के घर

नही जा सकता ? कम से कम वहाँ सारा मामला प्राइवेट रहेगा ·· नही, नही 'विस्फोटक लैफ्टीनेण्ट' के पास ही सही ! अगर जहर पीना ही है तो क्यो न फौरन ही पी लिया जाये !"

उसका शरीर सर्द हो गया और उसने बिना सोचे दफ्तर का दरवाजा खोल दिया। उस वक्त चौकीदार और एक देहाती के सिवा वहाँ कोई न था। चौकीदार ने पर्दे के पीछे से उसे झाँककर भी नही देखा। रास्कोलनिकोव अगले कमरे मे चला गया, "शायद मुझे अभी भी जुर्म कबूल नही करना चाहिए," उसके मन मे आया। एक आदमी जो देखने मे क्लर्क मालूम होता था, मेज पर बैठा कुछ लिख रहा कोने मे एक दूसरा क्लर्क बैठा था। जेमेतोफ और निकोदिम फोमिच वहाँ नही थे।

"दफ्तर मे कोई नही है ?" रास्कोलनिकोव ने मेज के आगे बैठे क्लर्क से पूछा।

"तुम किसे चाहते हो ?"

"अहा ! न किसी की आवाज सुनाई दी न कोई नजर आया लेकिन मैने रूसी·· को पहचान लिया। परियो की वह कहानी मुझे याद नही रही जिसमे यह वाक्य आता है। हुक्म करो !" सहसा एक परिचित आवाज सुनाई दी।

रास्कोलनिकोव काँप उठा। 'विस्फोटक लैफ्टीनेन्ट' उसके सामने खडा था। वह अभी साथ वाले कमरे से निकल कर आया था। रास्कोलनिकोव ने सोचा, "जरूर इसमे भाग्य का हाथ है, वरना यह आदमी यहाँ क्यो होता ?"

इल्या पैत्रोविच खुशमिजाज और उत्साह पूर्ण नज़र आता था। उसने पूछा, "तुम हमे मिलने आये हो ? किस सिलसिले मे ? अगर काम के सिलसिले मे आये हो, तो अभी जल्दी है। मेरा इस वक्त यहाँ होना तो सिर्फ सयोग है···खैर मै तुम्हारा कोई काम कर सका तो

जरूर करूँगा · माफ करना मुझे तुम्हारा नाम भूल गया है।"

"रास्कोलनिकोव ।"

"अरे हाँ रास्कोलनिकोव। तुम्हारा ख्याल है मै तुम्हारा नान भूल गया हूँ · मै ऐसा आदमी नही हूँ · रोदियोन··रो··रोदियोनोविच यही नाम है न ?"

"रोदियोन रोमनोविच ।"

"हाँ, हाँ, रोदियोन रोमनोविच ! मै अभी यही कहने वाला था। मैने तुम्हारे बारे मे काफी पूछताछ की है। यकीन करो, मुझे अपने दुर्व्यवहार पर सख्त अफसोस है · बाद मे मुझे बताया गया कि तुम साहित्यिक और विद्वान आदमी हो · और पहले कदम ··ईश्वर हम पर रहम करे ! किस साहित्यिक या वैज्ञानिक के व्यवहार मे मौलिकता नही होती ! मेरी पत्नी और मै दोनो साहित्य के पुजारी है ! मेरी पत्नी तो साहित्य के पीछे पागल है ! कला और साहित्य ! बस अगर इन्सान शरीफ हो तो प्रतिभा, योग्यता, अक्लमन्दी और जीनियस से बाकी सारी उपलब्धियाँ मिल सकती है। रही हैट की बात ? उससे क्या फर्क पडता है ? मिठाई की तरह हैट भी बाजार से खरीदा जा सकता है। लेकिन हैट के नीचे इन्सान का जो दिमाग है, वह नही खरीदा जा सकता। मै तो यहाँ तक सोच रहा था कि तुम्हारे पास आकर तुमसे माफी मागूँ। फिर सोचा कि शायद तुम · लेकिन मै यह पूछना तो भूल ही गया कि तुम्हे काम क्या है ? मैने सुना है कि तुम्हारे घर के लोग भी आ गये है। क्यो ?

"हाँ, मेरी माँ और बहिन आ गई है।"

"मुझे तुम्हारी बहन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है—बडा सुसंस्कृत और आकर्षक व्यक्तित्व है उनका। मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हारे साथ बदतमीज़ी की। जहाँ तक तुम्हारी बेहोशी का सवाल है, मेरा शक, बिल्कुल रफा दफा हो चुका-है। अन्ध विश्वास और विचारो

की सकीर्णता के कारण ही ऐसा हुआ था । मै तुम्हारे क्षोभ को समझ सकता हूँ । शायद तुम्हारे परिवार के लोग आ गये है, इसलिये तुम मकान बदल रहे हो ?"

"नही, मै तो यूँ ही चला आया था ' मै पूछना चाहता था ' मेरा ख्याल था कि मिस्टर ज़ेमेतोफ यही होगे ।"

"अरे हा, मैने सुना है कि तुम्हारी ज़ेमेतोफ से दोस्ती हो गई है । ज़ेमेतोफ यहाँ नही है, कल से ही न जाने वह कहाँ गया है ' जाने से पहले उसने सब लोगो से झगडा किया था । वह बद्‌दिमाग नौजवान है । हमे उससे बडी उम्मीदे थी, लेकिन आजकल के प्रतिभाशाली नौजवान कैसे होते है, यह तो तुम जानते ही हो । उसका कहना था कि वह किसी इम्तहान मे बैठने जा रहा है, लेकिन यह कोरी गप्प थी । तुम्हारी और तुम्हारे दोस्त राजुमिहीन की बात दूसरी है । तुम पेशे से बुद्धिजीवी हो । इसलिये असफलताये तुम्हारे रास्ते मे रोडा नही अटका सकती । तुम्हारे लिये जिन्दगी के आकर्षण बेमानी है—तुम एकान्तवासी, त्यागी, सन्यासी हो ! ' ' 'तुम्हारी आत्मा पुस्तको, लेखन और विद्वतापूर्ण खोजो की ऊँचाइयो पर उडती है । मेरा भी यही हाल है' ' 'तुमने 'लिविगस्टन की यात्राये' पुस्तक पढी है ?"

"नही ।"

"मैने पढी है । आजकल निहिलिस्टो की सख्या बहुत बढ गई है, इसे देखकर ताज्जुब नही होता । मै पूछता हूँ यह जमाना कैसा है ? लेकिन हमारा ख्याल था ' 'तुम निहिलिस्ट तो नही हो न ! मुझे खुल कर जवाब दो ।"

"नही ' '"

"सच मानो, तुम खुले ढग से बात कर सकते हो, सरकारी ड्यूटी अलग वात है लेकिन ' 'दोस्ती दूसरी वात है, तुम यही सोच रहे हो न ! नही तुम्हारा ख्याल ग़लत है । दोस्ती नही, वल्कि मानवता,

नागरिकता की भावना ग्रौर ईश्वर प्रेम ग्रसली महत्व की चीजे है। मै सरकारी ग्रफसर तो जरूर हूँ लेकिन उससे पहले एक इन्सान ग्रौर एक नागरिक हूँ · तुम जेमेतोफ के बारे मे पूछ रहे थे। जेमेतोफ किसी भी बदनाम ग्रड्डे मे शेम्पेन पीकर फ्रासीसी ढग से ग्रपने को बदनाम कर सकता है। 'तुम्हारे जेमेतोफ को बस यही ग्राता है। मेरे दिल मे शायद सेवा की भावना है, मेरा ग्रोहदा भी उससे ऊँचा है। मै बीवी बच्चेदार ग्रादमी हूँ, इन्सानी ग्रौर नागरिक कर्त्तव्यो का पालन करता हूँ, लेकिन जेमेतोफ क्या है मै पूछता हू ? एक सुशिक्षित ग्रादमी के नाते मै तुमसे ग्रपील कर रहा हू ·· फिर इन मिडवाइफो की तादाद भी हद से ज्यादा बढ गई है।"

रास्कोलनिकोव ने प्रश्नसूचक दृष्टि से इल्या पैत्रोविच की तरफ देखा। उसके शब्द रास्कोलनिकोव के लिये बिल्कुल कोरे ग्रौर निरर्थक थे। लेकिन कुछ शब्द उसकी समझ मे ग्रा गये थे। बातचीत का ग्रत कहाँ होगा—यह वह नही जानता था।

बातूनी इल्या पैत्रोविच ने कहा, "मेरा मतलब कटे बालो वाली ग्रौरतो से है। मै उन्हे मिडवाईफे कहता हूँ। कैसा माकूल नाम है हा-हा ! वे ग्रकेडमी मे जाकर शरीर रचना का ग्रध्ययन करती है। मान लो ग्रगर मै कभी बीमार हो जाऊँ, तो क्या एक जवान छोकरी को बुलाकर इलाज करवाऊँगा ? कहो तुम्हारी क्या राय है ? हा—हा !" इल्या पैत्रोविच ग्रपने मजाक से बडा खुश हुग्रा। "यह भी शिक्षा का ग्रतिवाद है, एक बार पढ लिख लिया—बस काफी हो गया। शिक्षा का दुरुपयोग क्यो करो, ? शरीफ लोगो की बेइज्जती क्यो करो ? जैसी कि बदमाश जेमेतोफ करता है ? मै पूछता हूँ उसने मुझे किसलिये बेइज्जत किया ? तुमने कभी सोचा है कि ग्राजकल ग्रात्महत्या करना कितनी साधारण बात हो गई है ? लोग ग्रपनी सारी कमाई लुटा कर ग्रात्म-हत्या कर लेते है। लडके लडकियाँ,

बूढे आदमी सभी को यह मर्ज है । आज सुबह ही हमे खबर मिली कि एक आदमी ने, जो हाल ही मे पीटर्सबर्ग आया था, अपने को गोली मार ली । निल पैवलिच, जरा बताना उस आदमी का नाम क्या था ?"

"स्वीद्रीगाईलोव" पास वाले कमरे में किसी ने नीदभरी आवाज मे जवाब दिया ।

रास्कोलनिकोव चौककर चिल्लाया, "स्वीद्रीगाईलोव ! स्वीद्री-गाईलोव ने अपने को गोली मार ली ?"

"तुम स्वीद्रीगाईलोव को जानते हो ?"

"हा ··जानता था · उसे यहाँ आये कुछ ही दिन हुए थे ।"

"हा, वही आदमी है । उसकी बीवी मर गई थी । वह बडा विक्षिप्त आदमी था—अचानक ही उसने अपने को गोली मार ली ·· अपनी नोटबुक मे वह लिखकर छोड गया है कि वह होशहवास में मर रहा है । अपनी मौत के लिये वह खुद जिम्मेदार है । सुनते है वह पैसेवाला आदमी था । उससे तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?"

"मै उसे जानता था ··मेरी बहन कभी उसके यहाँ गवर्नेस थी ।"

"वाह ! तब तो तुम उसके बारे में बहुत-सी बाते बता सकते हो । तुम्हे शक नही हुआ ?"

"मैंने उसे कल देखा था·· वह ··शराब पी रहा था । मुझे कुछ मालूम नही था ।"

रास्कोलनिकोव को लगा जैसे कोई भारी चीज़ उसके ऊपर आकर गिरी है और उसका दम घुटा जा रहा है ।

"तुम्हारा चेहरा फिर पीला पड गया है । यहाँ बडी गर्मी है···"

"हा मुझे चलना चाहिये । माफ कीजियेगा मैने आपको तकलीफ दी ।' रास्कोलनिकोव बडबडाया ।

"तकलीफ की कोई बात नही, तुम शौक से यहाँ आओ। तुमसे मिलकर बडी खुशी हुई।"

इल्या पैत्रोविच ने अपना हाथ आगे बढाया।

"मै सिर्फ ··जेमेतोफ से मिलने आया था।"

"मै समझ गया, समझ गया। तुमसे मिलकर बडी ख़ुशी हुई।"

"मै · मुझे भी बडी खुशी हुई·· गुड बाई।"

रास्कोलनिकोव मुस्कराया।

जब वह बाहर निकला तो उसका मर बुरी तरह चकरा रहा था। वह क्या कर रहा है, इसका उसे कोई ध्यान नही था। दाये हाथ से दीवार का सहारा लेकर वह सीढियो से नीचे उतरने लगा। उसे लगा कि चौकीदार उसे धकेल कर ऊपर दफ्तर की तरफ गया है, निचली मजिल में एक कुत्ता ज़ोर से भूक रहा था और एक औरत ने चिल्लाकर कुत्ते की तरफ बेलन फेंका। वह सीढिया उतर कर दालान मे पहुँचा। सामने फाटक के पास सोनिया खडी थी। भय और आतक से उसका चेहरा पीला पड गया था। वह शोकाकुल दृष्टि से रास्कोलनिकोव को ताक रही थी। रास्कोलनिकोव खामोश खडा रहा। सोनिया के चेहरे पर गहरी मानसिक व्यथा छाई थी। उसने अपने दोनो हाथ कसकर भीच लिए। रास्कोलनिकोव के ओठ कुरूप, निरर्थक मुस्कान से फडकने लगे। क्षण भर खामोश रहने के बाद वह मुस्कराया और वापिस पुलिस दफ्तर मे चला गया।

इल्या पैत्रोविच बैठा कागज़ात के ढेर में कुछ तलाश कर रहा था। उसके सामने वही देहाती बैठा था जो उससे सीढियो मे टकराया था।

"कहो! लौट आये? कोई चीज भूल गये हो? क्या मामला है?"

रास्कोलनिकोव के ओठ सफेद पड गये थे। वह धीरे-धीरे इल्या

पैत्रोविच के नजदीक आया। मेज पर कुहनिया टेककर उसने कुछ कहने की कोशिश की लेकिन उसके गले से अस्पष्ट आवाजे निकली।

"तुम्हारी तबियत खराब है ? लो इस कुर्सी पर बैठ जाओ ! अरे कोई पानी लाना !"

रास्कोलनिकोव धम्म से कुर्सी पर बैठ गया, लेकिन उसकी नजरे इल्या पैत्रोविच के क्षुब्ध और विस्मित चेहरे पर टिकी थी। दोनो ने क्षण भर के लिये एक दूसरे की तरफ देखा और खामोश हो गये। रास्कोलनिकोव को पीने के लिये पानी दिया गया।

"मैंने ही ·" रास्कोलनिकोव ने कहना शुरू कर दिया।

"पहले पानी पी लो।"

रास्कोलनिकोव ने हाथ के इशारे से पानी पीने से इन्कार कर दिया और धीमी, टूटी फूटी, लेकिन स्पष्ट आवाज मे कहा,

"मैने ही सूदखोर बुढिया और उसकी बहन लिजावेता की कुल्हाडी से हत्या की थी और उन्हे लूटा था।"

इल्या पैत्रोविच अवाक रह गया। लोग चारो तरफ भागने लगे।

रास्कोलनिकोव ने फिर वही बात दुहराई।

उपसंहार

१

साईबेरिया। एक विशाल, सुदूर प्रदेश मे नदी के किनारे स्थित एक शहर है जो रूसी सरकार के शासन के केन्द्रो मे से है। शहर में एक किला है, किले के भीतर एक कारागृह है। कारागृह में रोदियोन रोमनोविच नाम का बी-क्लास का कैदी नौ महीने से बद है, उसके जुर्म को डेढ साल हो गया।

उसके मुकद्दमे मे कोई दिक्कत नही हुई। मुजरिम अपने बयान पर कायम रहा। उसने न तो तथ्यो को गलत ढग से पेश किया, न ही अपने स्वार्थ के रग मे रगा। उसने जुर्म का पूरा ब्यौरा, गिरवी के लिये ले जाये गये लकडी के बनावटी पुलिदे का रहस्य भी बताया जो बुढिया के हाथ मे पाया गया था। उसने यह भी बताया कि कैसे उसने बुढिया की चाबियो का गुच्छा उठाया, था और सदूक मे कौन कौन सी चीजे थी। कैसे कोश और उसके एक दूसरे विद्यार्थी ने बुढिया के फ़्लैट का दरवाज़ा खटखटाया था, दोनो दोस्तो की आपस में क्या बातचीत हुई थी, कैसे वह सीढियाँ उतर कर नीचे आया था, और खाली फ्लैट मे छिप गया था। उसने निकोलाई

और दिमित्री की चिल्लाहट भी सुनी थी। अत मे उसने वोजनेसेन्स्की के पत्थर की निशानी भी बताई, जिसके नीचे से पुलिस ने बटुआ और जेबर बरामद किये। सारा मामला एकदम साफ हो गया था। वकीलो और जजो को इस बात पर बडा ताज्जुब हुआ था कि उसने बटुए और जेबरो को ज्यो का त्यो पत्थर के नीचे छिपा दिया था, और उसे जेबरो की शक्ल और सख्या के बारे मे कुछ पता न था। उसने बटुए को खोला तक नही था, और उसके भीतर कितनी रकम है, यह भी उसे मालूम नही था। इस बात पर लोगो को विश्वास ही नही होता था। बटुए मे से तीन सौ सत्रह रूबल और साठ कोपेक निकले। इतने दिनो तक पत्थर के नीचे दबे रहने के कारण कुछ नोट सीलन से खराब हो गये थे। पुलिस बहुत दिनो तक तो यह मालूम करने की कोशिश करती रही कि जब मुजरिम ने बाकी बाते कबूल करली है तो इस मामले मे वह झूठ क्यो बोल रहा है। अत मे कुछ वकीलो ने, जिन्हे मनोविज्ञान का अधिक ज्ञान था मान लिया कि सभव है, रास्कोलनिकोव ने सचमुच ही बटुआ खोलकर न देखा हो। वकीलो ने फौरन यह नतीजा निकाला कि मुजरिम ने अस्थाई पागलपन के आवेश मे आकर हत्या की है। इस हत्या के पीछे कोई विशेष प्रयोजन नही था। उन दिनो अस्थाई पागलपन के सिद्धान्त का बडा प्रचार था। आजकल भी हत्या के मुकद्दमो में यह सिद्धान्त लागू किया जाता है। इसके अलावा बहुत से लोगो ने, जिनमे डाक्टर जोसीमोव, रास्कोलनिकोव के विद्यार्थी मित्र, मकान मालकिन और नौकरानी भी थी, आकर गवाही दी कि वह पागलपन की हालत मे था। इससे यह नतीजा निकाला गया कि रास्कोलनिकोव साधारण हत्यारो और डाकुओ की श्रेणी का व्यक्ति नही है। इस मामले मे, कुछ और तथ्य भी है। मुजरिम को आत्मरक्षा के लिये तत्पर न देखकर इस सिद्धान्त के हामी बहुत खफा हुए। जब उससे हत्या का कारण पूछा गया तो उसने बडे

भोडे पन से साफ साफ कहा कि इसका कारण उसकी गरीबी और फटे-हाली थी। हत्या के ज़रिये उसे तीन हजार रूबल मिलने की उम्मीद थी, जिससे वह अपना भविष्य सुरक्षित बनाना चाहता था। हत्या का कारण भुखमरी के अलावा उसकी प्रकृति का ओछापन और कायरता भी थी। जब उससे पूछा गया कि उसने जुर्म कैसे कबूल किया तो उसने जवाब दिया कि वह सच्चे दिल से अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता था। ये सब निरा भोडापन था • ”

जजो ने उम्मीद से ज्यादा दयालुता दिखाई। एक तो इसलिए कि मुजरिम ने अपने जुर्म को सही ठहराने की कोशिश नही की, और इसलिये भी कि उसने अपने जुर्म को बढा-चढा कर पेश किया था। इसके अलावा मुजरिम की गरीबी और दुर्दशा का भी लिहाज किया गया। उसने चोरी की चीजो को इस्तेमाल नही किया, इसका कारण उसकी मानसिक विक्षिप्ति थी। उसे अपने पाप पर ग्लानि भी हुई थी। लिजावेता की हत्या से इस सिद्धान्त की और भी पुष्टि हो गई। एक आदमी दो हत्याएँ करता है, फिर भी उसे याद नही रहता कि फ्लैट का दरवाजा खुला है। फिर जब निकोलाई ने उन्माद और मानसिक अवसाद की अवस्था मे झूठा बयान देकर केस को गडबडा दिया था, खासतौर पर जब असली मुजरिम के खिलाफ कोई सबूत नही थे, यहा तक कि पुलिस को उस पर शक तक न था (पोरफेरी पैत्रोविच ने अपना वायदा निभाया था) ऐसे क्षण मे मुजरिम ने आकर अपना जुर्म कबूल कर लिया इसलिये उसे कम सजा दी गई। मुजरिम के पक्ष मे और भी कई अप्रत्याशित परिस्थितियो ने योग दिया। राजुमिहीन ने इस बात के सबूत दिये कि जब रास्कोलनिकोव यूनिवर्सिटी मे पढता था तो उसने छ महीने तक एक यक्ष्माग्रस्त गरीब विद्यार्थी की मदद की थी। जब वह विद्यार्थी चल बसा तो रास्कोलनिकोव ने उसके बूढे पिता को हस्पताल मे भरती करवाया था, और बूढे के मरने पर

उसके जनाजे का खर्च भी दिया था। रास्कोलनिकोव की मकान मालकिन ने अपनी गवाही मे कहा कि जब वह फाईव कौर्नर्ज़ के एक दूसरे मकान मे रहती थी तो दो बच्चो को जलते हुए मकान की लपटो मे से निकालने के प्रयास मे रास्कोलनिकोव का शरीर जल गया था। इस घटना की तहकीकात की गई और बहुत से लोगो ने गवाही दी। इन बातो से जज बडे प्रभावित हुए।

मुजरिम को सिर्फ आठ साल की सख्त सजा मिली और उसे बी क्लास दी गई।

मुकदमे के शुरू मे ही रास्कोलनिकोव की वृद्धा माँ बीमार पड गई थी। राजुमिहीन उसे नज़दीक के ही एक शहर मे छोड आया था, ताकि वह वहाँ से आकर मुकद्दमे की कार्रवाई मे पूरा हिस्सा ले सके और अवदोत्या रोमनोवना से भी मिल सके। वृद्धा का रोग स्नायुविक था और उसका दिमाग आधा पागल हो गया था।

जब दूनिया अपने भाई से आखिरी बार मिलकर आई तो उसने मा को बीमारी की हालत में प्रलाप करते हुए पाया। उसने राजु-मिहीन के साथ मिलकर माँ को बताने के लिये यह कहानी गढ ली कि रास्कोलनिकोव कारोबार के सिलमिले मे किसी दूर प्रदेश मे गया है, जिससे उसे धन और शोहरत मिलने वाली है।

लेकिन ताज्जुब तो यह था कि वृद्धा ने इस बारे में कभी कुछ नही पूछा। न अब, न बाद मे ही। बल्कि उसका कहना था कि रोद्या उससे विदा लेने आया था, दुश्मनो से बचने के लिये उसका कही छिपना ज़रूरी है। रोद्या के कई रहस्यो का सिर्फ उसी को पता है। उसे विश्वास था कि उसके बेटे के मुसीबत के दिन कभी ज़रूर दूर होगे और उसका भविष्य बडा उज्जवल होगा। वृद्धा ने राजुमिहीन को बताया कि उसका बेटा एक दिन महान राजनीतिज्ञ बनेगा। यह उसकी साहित्यिक प्रतिभा और उसके लेख से ही स्पष्ट है। वृद्धा हर वक्त

ऊँची आवाज मे वह लेख पढती रहती थी और रात को लेख को तकिये के नीचे रखकर सोती थी। लेकिन उसने एक बार भी यह नही पूछा कि रोद्या कहाँ है ? दूनिया और राजुमिहीन ने कभी रोद्या की चर्चा नही की थी, इस पर भी वृद्धा के मन मे किसी प्रकार का सदेह नही उठा था।

वृद्धा ने कभी रास्कोलनिकोव का खत न आने की शिकायत नही की थी, हालाकि उसने अपनी सारी जिन्दगी अपने लाडले बेटे के खतो के सहारे ही काट दी थी। इस बात से दूनिया बडी चितित हुई। उसे आभास हुआ कि शायद माँ को रोद्या के अमगल की आशका है, इसीलिये वह उसके बारे मे कोई सवाल नही पूछती। उसे डर है कि कही रोद्या के बारे मे इससे भी ज्यादा बुरी कोई खबर न सुनने को मिले। दूनिया देख रही थी कि उसकी माँ का दिमाग विक्षिप्त हो गया है।

एक दो बार तो ऐसा हुआ कि वृद्धा ने जान बूझकर ऐसा प्रसग छेड दिया जिसमे रोद्या कहाँ है, यह बताना आवश्यक हो गया। असतोषजनक और सदिग्ध उत्तर सुनकर वृद्धा फौरन खामोश और उदास हो गई। उसकी यह हालत बहुत दिनो तक रही। दूनिया समझ गई कि माँ को धोखा देना बडी निष्ठुरता होगी इसलिये कई सवालो के जवाब में खामोश रहना ही ठीक है। लेकिन दिन-प्रतिदिन यह साफ जाहिर होता गया कि माँ के मन मे ज़रूर किसी अमगल की आशका है। दूनिया को उसके भाई ने बताया था कि माँ ने दूनिया को नीद मे बडबडाते सुन लिया था। क्या माँ को शक नही हुआ होगा ? कई बार तो हफ्तो तक खामोश रहने और आँसू बहाने के बाद माँ मे असाधारण जिदादिली आ जाती थी, और वह भावावेश मे अपने बेटे के आशामय भविष्य की बाते करते थकती ही न थी·· कई बार तो उसकी बाते बहुत ही विलक्षण होती थी। दूनिया और राजुमिहीन वृद्धा का मन

बहलाने की कोशिश करते, उसकी हर बात का समर्थन करते (शायद वृद्धा समझ गई थी कि उसके साथ नाटक रचा जा रहा है) फिर भी वह बाते करती रहती।

पाँच महीने तक मुकद्दमा चलता रहा था। इस बीच सोनिया और राजुमिहीन अक्सर रास्कोलनिकोव से मिलने से लिए जेल मे जाते थे। आखिर जुदाई की घडी आ पहुँची। दूनिया और राजुमिहीन ने उसे वचन दिया कि उनकी जुदाई बहुत लबी नही होगी। जवानी के जोश मे राजुमिहीन ने फैसला कर लिया था कि वह अगले तीन या चार वर्षो मे कमाई के साधन जुटायेगा और साईबेरिया जाने के लिये काफी रकम जमा कर लेगा। साईबेरिया मे प्राकृतिक साधनो की कमी नही है और वहाँ मेहनती आदमियो और पूजी की जरूरत है। जहाँ रोद्या रहेगा, वही जाकर वे भी बस जायेगे और सब एक साथ मिलकर नई जिन्दगी का निर्माण करेंगे। विदाई के वक्त सब रो पडे।

साईबेरिया जाने से कुछ दिन पहले रास्कोलनिकोव स्वप्निल हो गया था। वह बार-बार माँ के कुशल-समाचार पूछता था। उसकी चिन्ता देख कर दूनिया आशकित हो उठी। माँ की बीमारी का समाचार पाकर वह बडा उदास हो गया। सोनिया से वह खुलकर कोई बात नही कहता था। लेकिन सोनिया ने पहले से ही फैसला कर लिया था कि वह स्वीद्रीगाईलोव की दी हुई रकम की मदद से कैदियो की टोली के पीछे-पीछे साईबेरिया जायेगी। रास्कोलनिकोव से कभी इस विषय में उसकी कोई चर्चा नही हुई थी, लेकिन दोनो इस बात को जानते थे।। विदाई के वक्त जब दूनिया और राजुमिहीन ने रास्कोलनिकोव के जेल से छूट आने के बाद सुखमय भविष्य की कामना की तो रास्कोलनिकोव मुस्करा दिया। उसने भविष्यवाणी की कि माँ अब कुछ ही दिनो की मेहमान है। इसके बाद वह साईबेरिया चला गया। सोनिया भी उसके साथ गई।

दो महीने के बाद दूनिया की शादी राजुमिहीन से हो गयी। शादी का वातावरण बडा खामोश और उदास था। पोरफेरी पेत्रोविच और जोसीमोव को निमन्त्रित किया गया था। इन दिनो राजुमिहीन के चेहरे पर दृढ निश्चय की छाप थी। दूनिया को उसकी योजनाओ मे पूरी आस्था थी, जो कि स्वाभाविक ही थी। राजुमिहीन ने अपनी प्रबल-इच्छा शक्ति का सबूत दिया और कामो के साथ साथ उसने डिग्री लेने के लिये युनिवर्सिटी में नाम लिखवा लिया। दोनो जने हर समय भविष्य की योजनाये बनाते रहते थे। उनका विश्वास था कि पाँच साल बाद वे जरूर साईबेरिया जाकर बस सकेंगे, तब तक सोनिया उनकी आशाओ का सहारा थी।

वृद्धा माँ ने दूनिया और राजुमिहीन की शादी के लिये अपना आशीर्वाद दिया था, लेकिन उनकी शादी के बाद वह पहले से भी ज्यादा उदास और बेचैन रहने लगी। उसका मन बहलाने के लिये राजुमिहीन बताता कि रास्कोलनिकोव ने कैसे एक गरीब विद्यार्थी और उसके असहाय पिता की देखभाल की थी, कैसे दो नन्हे बच्चो को आग से बचाने मे उसका शरीर झुलस गया था। वृद्धा की असतुलित कल्पनाशक्ति इन खबरो को सुनकर आनन्द से विह्वल हो जाती, वह हमेशा सडक पर आने जाने वाले लोगो से दूनिया और राजु-मिहीन की चर्चा करती रहती थी, हालाँकि दूनिया भी उसके साथ ही रहती थी। घोडागाडियो और दूकानो मे, जहाँ भी उसे कोई श्रोता मिल सकता, वह अपने बेटे के बारे मे, उसके लेख के बारे में और उस की परोपकारिता के बारे मे भाषण शुरू कर देती। दूनिया की समझ में नही आता था कि माँ पर कैसे नियत्रण रखे। उसे डर था कि माँ फिर उत्तेजना से विक्षिप्त न हो उठे, या रास्कोलनिकोव का नाम सुनकर कोई आदमी मुकदमे का जिक्र न कर बैठे। वृद्धा ने उन दोनो बच्चो की माँ का पता मालूम कर लिया, जिन्हे रास्कोलनिकोव ने

बचाया था और वह उससे मिलने की जिद करने लगी।

आखिर उसकी बेचैनी हद को पार कर गयी। कई बार अचानक बैठे बैठे वह रोने लगती, और अक्सर बीमारी की हालत मे प्रलाप किया करती थी। एक दिन सुबह उसने घोषित किया कि उसके हिसाब से रोद्या जल्द ही घर लौटने वाला है। उसे अच्छी तरह याद है, रोद्या ने कहा था कि वह नौ महीने बाद लौटेगा। उसने रोद्या के स्वागत की तैयारियाँ शुरू कर दी। कमरे और फर्नीचर की सफाई की, पर्दे धोकर टाँगे। दूनिया यह देखकर चिन्तित हो उठी लेकिन उसने माँ से कुछ नही कहा, बल्कि कमरा सजाने मे मदद देने लगी। दिनभर की मेहनत थकान, कल्पनाओ, आनन्ददायक दिवा स्वप्नो और आँसू बहाने के बाद रात को वृद्धा बीमार पड गयी और सुबह उसे सरसाम हो गया। वह दिमागी बुखार था। पन्द्रह दिन के भीतर ही वह चल बसी। बेहोशी की हालत मे उसने प्रलाप मे जो बाते कही, उनसे जाहिर होता था कि वृद्धा को अपने बेटे के दुर्भाग्य के बारे मे काफी कुछ पता था।

बहुत दिनो तक रास्कोलनिकोव को माँ की मृत्यु की खबर नही मिली, हालाँकि जब से वह साईबेरिया पहुचा था, उसका पत्र व्यवहार अपने बहन और बहनोई से होता रहा था। सोनिया हर महीने दूनिया और राजुमिहीन को खत लिखती थी, और उसका उसे अविलम्ब जवाब भी मिलता था। शुरू शुरू मे तो दूनिया और राजुमिहीन को सोनिया के खत खुश्क और असतोषजनक मालूम हुए। बाद मे वे इस नतीजे पर पहुँचे कि जिन खतो मे दुर्भाग्य का वर्णन हो वे सरस कैसे हो सकते है। सोनिया के खतो मे रास्कोलनिकोव के बदी जीवन का ब्यौरेवार जिक्र रहता था। खतो मे सोनिया ने कभी अपनी आशाओ, भविष्य की योजनाओ, अपनी भावनाओ के बारे मे नही लिखा। रास्कोलनिकोव की मानसिक स्थिति पर टिप्पणी करने की बजाय वह उसकी सेहत का हाल, मुलाकात के दौरान मे वह सोनिया से क्या कहता, क्या काम

बताता, ये सब बाते ही विस्तारपूर्वक लिखती थी, । जिससे दूनिया के सामने अपने दुखी भाई की सही तस्वीर आ जाती थी । सोनिया के खतो मे तथ्यो के सिवा और कुछ नही रहता था इसलिए गलतफहमी की कोई गुन्जाइश नही थी ।

लेकिन दूनिया और राजुमिहीन को इन खतो से तसल्ली नही होती थी । सोनिया ने लिखा था कि रास्कोलनिकोव हमेशा चिढा चिढा और खामोश रहता है, सोनिया जब उसे दूनिया की खबरे सुनाती है तो वह उदासीनता दिखाता है । कई बार वह माँ के बारे मे पूछता है । सोनिया ने जब उसे माँ की मौत की खबर सुनाई तो वह जरा भी विचलित नही हुआ । कम से कम उसने अपना शोक जाहिर नही होने दिया । शायद उसे पहले से ही यह बात मालूम थी । ससार से दूर वह अपने विचारो की दुनियाँ मे खोया रहता है । लेकिन स्थिति का उसे पूरा अहसास है । उसे न कोई शिकवा-शिकायत है न ही झूठी आशाओ का सहारा है (उसकी स्थिति मे लोग अक्सर झूठी आशाओ का सहारा लेते है) वह पहले से बहुत बदल गया है । सोनिया ने लिखा कि रास्कोलनिकोव की सेहत बिल्कुल ठीक है, वह काम से जी नही चुराता न जरूरत से ज्यादा मेहनत ही करता है । खाने पीने मे उसे कोई दिलचस्पी नही, लेकिन सिवा इतवार और छुट्टी के दिन, कैदियो को बडा बुरा खाना मिलता है । इसलिए उसने चाय के लिए सोनिया से कुछ रकम लेना मजूर कर लिया है । उसका कहना है कि उसे और किसी चीज की जरूरत नही और कोई उसके आराम का ख्याल रखे, यह उसे सख्त नापसद है । वह बैरक मे अन्य सब कैदियो के साथ रहता है । सोनिया ने भीतर जाकर बैरक तो नही देखी, लेकिन उसका अनुमान है कि बैरक मे बडी भीड है और वहाँ का वातावरण मनहूस और अस्वास्थ्यजनक है । रास्कोलनिकोव लकडी के तख्ते पर कबल बिछाकर सोता है, सोने का दूसरा कोई इन्तिजाम करने

के लिए वह राजी नही। यह सोचना गलत ही होगा कि वह जानबूझ कर इतनी कठोर जिन्दगी बसर कर रहा है, दर असल उसने कभी इस ओर ध्यान ही नही दिया।

सोनिया ने यह भी लिखा कि शुरू शुरू मे जब वह जेल मे रास्कोल-निकोव से मिलने गयी तो रास्कोलनिकोव ने सख्त नाराजगी दिखाई और उससे बदतमीजी से पेश आया। लेकिन धीरे-धीरे वह इन मुलाकातो का आदी हो गया है। एक बार जब बीमारी के कारण सोनिया उससे मिलने नही गई तो वह बडा परेशान हुआ। छुट्टी के दिनो मे वह उसे जेल के फाटक पर या गारद के कमरे मे मिलती है, जहॉ रास्कोलनिकोव को सिर्फ चन्द मिनिटो के लिए लाया जाता है। बाकी दिनि रास्कोलनिकोव वर्कशापो मे, ईटो के भट्टो मे या नदी किनारे बने शैडो में काम करता है और वह उसे वहॉ जाकर मिलती है।

सोनिया ने लिखा कि उसने शहर मे काफी वाकफियत पैदा करली है, वह कपडे सीने का काम करती है। शहर मे कोई अच्छा दर्जी नही है, इसलिए बहुत से परिवार सिलाई के लिए उस पर निर्भर करने लगे है। लेकिन उसने यह नही लिखा कि जेल के अधिकारी उसके जरिए रास्कोलनिकोव की गति-विधि का पता रखते है, और रास्कोल-निकोव के काम का बोझ हल्का हो गया है, आदि आदि।

आखिरकार दूनिया को खबर मिली (वह पहले से ही आशकित थी) कि उसका भाई सब कैदियो से अलग रहने लगा है। उसके साथी उसे नापसद करते है और वह कई कई दिन तक खामोश रहता है। उसका चेहरा पीला पड गया है। अब की बार खत में सोनिया ने लिखा कि रास्कोलनिकोव सख्त बीमार हो गया है और उसे जेल के हस्पताल में भेज दिया गया है।

२

रास्कोलनिकोव बहुत दिनो तक बीमार रहा। लेकिन जेल के आतकपूर्ण जीवन, कठोर परिश्रम, रद्दी खुराक, मुँडे हुए सर और पैंबद लगे कपडो ने उसकी आत्मा को नही कुचला था। फिर उसे इन तकलीफो और परीक्षाओ की क्या परवाह थी ? बल्कि कठोर परिश्रम करने मे तो उसे खुशी ही होती थी। दिन भर की थकान के बाद कम से कम रात को तो वह आराम की नीद सो सकता था। और पतले करमकल्ले के शोरबे से, जिसमे कीडे तैरते थे, उसे क्या ऐतराज होता ? विद्यार्थी काल मे तो उसे ऐसा शोरबा भी अक्सर नसीब नही होता था। उसके कपडे ऊनी और आरामदेह थे। उसे हथकडी-बेडी तो महसूस भी नही होती थी। क्या उसे अपने मुँडे हुए सर और पैंबद लगे कोट की वजह से शर्म आती थी ? किसके सामने ? सोनिया के सामने ? सोनिया तो उससे डरती थी, फिर वह शर्मिन्दा क्यो होता ? फिर भी, उसे सोनिया के सामने शर्म आती थी, इसलिये वह उसकी बेइज्जती करता था और उसे यत्रणा देता था लेकिन उसे अपनी बेडियो या मुँडे हुए सर की वजह से शर्म नही आती थी। उसकी बीमारी की वजह उसका आहत स्वाभिमान था। काश वह अपने आप को दोष दे

सकता ! तब वह खुशी खुशी अपमान और जलालत भी बर्दाश्त कर लेता ! लेकिन अपने को सख्ती से जाचने पर भी उसकी अतरात्मा को अपने अतीत मे सिवा एक गलती के कुछ नजर न आता। यह गलती किसी से भी हो सकती थी। उसे अधे भाग्यचक्र की वजह से सब के आगे झुकना पड रहा है। और 'मूर्खताभरी' सजा भुगतनी पड रही है, इसलिये वह शर्मिन्दा था।

वर्तमान मे निरुद्देश्य पीडा, बेचैनी और भविष्य मे निरर्थक कुर्बानी, इसके सिवा उसके सामने और कुछ नही था। आठ बरस के बाद वह सिर्फ बत्तीस बरस का होगा और नये सिरे से अपनी जिन्दगी शुरू कर सकेगा, इस विचार से उसे कोई सान्त्वना नही मिलती थी। वह आखिर किस उम्मीद के लिये जिन्दा रहे ? किसलिये जीने की कोशिश करे ? पहले तो वह सिर्फ एक विचार, एक आशा या कल्पना के लिये सैकडो बार अपनी ज़िन्दगी न्यौछावर करने के लिये तैयार रहता था। जीने की खातिर जीने मे उसे कभी दिलचस्पी नही रही थी। वह जिन्दगी से बहुत कुछ चाहता था। शायद इन प्रबल आकाक्षाओ की वजह से ही वह सोचता था कि उसे औरो से ज्यादा पाने का हक है।

काश ! उसके भाग्य मे पश्चाताप ही लिखा होता, जिसकी जलन से उसका हृदय फट जाता और आँखो की नीद उड जाती; जिसकी यत्रणा से लोग फाँसी और डूबने की कल्पना करते है। पश्चाताप के आँसुओ और यत्रणाओ से कम से कम उसे सान्त्वना तो मिलती, लेकिन उसके मन मे अपने जुर्म के लिये कतई अफसोस नही था।

उसे अपनी बेवकूफी पर अगर गुस्सा आता तो कम से कम उसका दिल तो हल्का हो जाता ! जेल मे आने से पहले वह अपनी गलतियो पर मन ही मन कुढा करता था। लेकिन जेल के आजाद वातावरण मे जब वह अपने कामो की नुक्ताचीनी करता तो उसे उनमे कोई गलती या हास्यास्पद बात न नजर आती।

"आदि काल से दुनिया मे जिन सिद्धान्तो का बोलबाला रहा है, उनसे मेरा सिद्धान्त किस मानी मे मूर्खतापूर्ण था ? अगर कोई स्वतन्त्र, उदार और क्षुद्रता के स्तर से ऊँचे दृष्टिकोण से देखे तो मेरे सिद्धान्त मे कोई विलक्षणता नही दिखाई देगी। ओह ! अनास्थावादियो और तीन कौडी के दार्शनिको तुम आधे रास्ते मे ही क्यो रुक जाते हो ?"

"मेरा काम दुनिया को ग्लानिपूर्ण क्यो लगता है ? इसलिये कि वह जुर्म था ? जुर्म किसे कहते है ? मेरी अन्तरात्मा शान्त है। माना कि कानून की नजरो मे यह जुर्म था, क्योकि कानून की धाराओ का उल्लघन करके मैंने खून बहाया था। अच्छी बात है, कानून के नाम पर मुझे सजा दो ··लेकिन तब तो मानवता के बहुत से ज्ञाताओ को, जिन्होने विरासत मे पाने की बजाय सत्ता हथियाई, सजा मिलनी चाहिये। लेकिन ये लोग अपने उद्देश्य मे कामयाब हो गये, इसीलिये वे सही है, मै कामयाब नही हो सका इसलिये मुझे वैसा कदम उठाने का अधिकार नही था।"

रास्कोलनिकोव सिर्फ इसी अर्थ मे अपने को मुजरिम समझता था, कि वह अपने उद्देश्य मे कामयाब नही हुआ और उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया है।

एक और सवाल उसे परेशान करता था उसने आत्महत्या क्यो नही की ? नदी के किनारे खडा होकर वह क्यो पानी की तरफ ताकता रहा, और बाद मे उसने जुर्म क्यो कबूल कर लिया ? क्या जिन्दगी के मोह पर काबू पाना इतना कठिन था ? स्वीद्रीगाईलोव भी तो मौत से डरता था ? उसने क्या मौत के डर को नही जीता ?

बेचैनी की हालत मे बार-बार अपना मन टटोलने पर भी उसे यह आभास नही हुआ कि जब वह नदी किनारे खडा पानी की धारा को देख रहा था तो मन ही मन उसे अपने मे और अपने सिद्धान्तो मे अनास्था होने लगी थी। वह यह भी नही समझ सका कि ऐसी चेतना

नये जीवन और पुनरुत्थान की प्रतीक हो सकती है।

लेकिन रास्कोलनिकोव ने उस चेतना को अपनी कमजोरी और क्षुद्रता समझा। उसका ख्याल था कि वह जन्मजात भीरुता के कारण इस बाधा को पार नही कर सकता। उसे यह देखकर हैरानी होती कि दूसरे कैदी जिन्दगी की कितनी कद्र करते है और उन्हे जिन्दगी से कितना प्रेम है। उसे लगा कि वे लोग जेल मे आकर जिन्दगी की कीमत समझने लगे है। उनमे से कुछ लोगो ने मिसाल के लिये खानाबदोशो ने, जिन्दगी मे कितने अभाव और यत्रणाये झेली थी! क्या उन्हे सूरज की किरणो की, घने जगल की, दूर अज्ञात स्थान मे छिपे झरने को देखने की चाह थी, क्या उनमे अपनी प्रेमिका को देखने की, हरी घास और झाडी मे चहचहाते पक्षी की कल्पना की चाह थी? रास्कोलनिकोव ने अपने बदी जीवन मे ऐसी बहुत सी मिसालें देखी।

लेकिन जेल मे बहुत कुछ ऐसा भी था जो उसने नही देखा, न जिसे वह देखना ही चाहता था। वह एक तरह से आँख मूद कर वहाँ रहता था। अपने आसपास की ज़िन्दगी को देखने मे उसे असह्य ग्लानि होती थी। लेकिन धीरे-धीरे उसका कौतूहल बढता गया और उसने कई चीज़े देखी। सबसे ज्यादा हैरानी उसे यह देखकर हुई कि उसके और दूसरे कैदियो के बीच कितनी चौडी खाई है। वह उन्हे भिन्न जाति के जीव समझता था और वे भी उसे अविश्वास और द्वेष की नज़रो से देखते थे। वह इस दूरी का कारण समझता था लेकिन उसने अपने आगे कभी इस बात को स्वीकार नही किया था। जेल मे कई पोलिश राजनैतिक कैदी भी थे जिन्हे देशनिकाला मिला था। वे बाकी सब कैदियो को मूर्ख और गँवार समझ कर नफरत करते थे। लेकिन रास्कोलनिकोव ने देखा कि वे मूर्ख और गवार कैकी पोलिश कैदियों से कई बातो में कही ज्यादा अक्लमन्द थे। कैदियो मे एक भूतपूर्व रूसी अफसर और दो धर्मोपदेशक भी थे, वे सब भी रास्कोलनिकोव

को मिठाइयाँ भेजी थी । धीरे धीरे सोनिया और सब कैदियो के बीच गहरी सद्भावना पैदा हो गई । सोनिया उनके रिश्तेदारो के नाम खत लिखती और डाक मे छोड आती । कैदियो के रिश्तेदार सोनिया के जरिये पैसे और तोहफे भीतर पहुँचाते । कैदियो की पत्नियाँ और प्रेमिकाएँ भी सोनिया से मिलने आती । जब सोनिया रास्कोलनिकोव से मिलने आती, या कभी सडक पर दिखाई दे जाती तो सारे कैदी आदर से अपनी टोपियाँ उतार लेते, "नन्ही सोनिया सेम्योनोवना, तुम हमारी प्यारी दयालु माँ हो !" बदमाश से बदमाश अपराधी उस नन्ही दुबली लडकी से कहता । वह मुस्करा कर सबको अभिवादन करती । उसे मुस्कराता देख कर सबके चेहरे खुशी से खिल उठते । उन्हे सोनिया की चाल बडी पसन्द थी । वह चलते चलते उसकी चाल देखने के लिए रुक जाते थे । वह इतनी नन्ही और नाजुक थी, इसलिये भी वह सबको बडी अच्छी लगती थी । वे उसकी तारीफे करते थकते न थे । अगर कोई कैदी बीमार हो जाता तो सोनिया से मदद माँगता ।

ईस्टर तक रास्कोलनिकोव हस्पताल मे रहा । जब उसकी हालत सुधरी तो उसे वे सपने याद हो आये जो उसने बुखार की हालत मे देखे थे । उसने देखा कि एशिया से आई एक नई महामारी सारी दुनियाँ मे फैल गई है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ इने-गिने व्यक्तियो के सिवा संसार के सब लोग तबाह होने वाले है । इस बीमारी के कीटाणु लोगो के शरीरो मे व्याप गये है, ये कीटाणु चेतनाशील और प्रतिभासम्पन्न है । इनसे पीडित आदमी एक दम गुस्से मे विक्षिप्त हो जाता है । ऐसे मरीज समझते है कि उनका बौद्धिक स्तर सबसे ऊँचा है, उन्हे सत्य की उपलब्धि हो गई है, उन के फैसले, वैज्ञानिक और नैतिक सिद्धान्त कभी गलत साबित नही हो सकते । इस खून से सैकडो गाँव, शहर और कौमे पागल हो गई है । हर आदमी

समझने लगा है कि सिर्फ वही सत्य को जानता है—बाकी सब लोगो को अज्ञान के अधकार मे देखकर हर आदमी अपनी छाती कूट कूट कर रोता और चिल्लाता है। अच्छाई और बुराई का फैसला वे नही कर पाते, किस को दोषी ठहराये किसको सच्चा, यह उनकी समझ मे नही आता। लोग एक निरुद्देश्य द्वेष से एक-दूसरे को मारने लगे। एक दूसरे के खिलाफ सेनाओ का सगठन करने लगे। ये सेनाये एक-दूसरे पर टूट पडी और मार काट शुरू हो गई। दिन भर शहरो मे खतरे की घन्टी बजती रही। लोग झुण्ड बनाकर घरो से बाहर निकल आये। उन्हे किसने बुलाया और किसलिए बुलाया, यह उन्हे मालूम न था। लोगो ने साधारण पेशे त्याग दिये, क्योंकि हर आदमी नई स्कीमे, नये सुधार पेश करता था और किसी भी बात पर लोग सहमत नही हो पाते थे। जमीने भी उजड गई। लोग दल बनाकर किसी एक सिद्धान्त पर अमल करने की शपथ खाते, लेकिन फौरन ही कोई नया सिद्धान्त सामने आकर खडा हो जाता। सब एक दूसरे को दोषी ठहराते, और मारकाट शुरू हो जाती। आग की लपटो मे शहर और गाँव जलने लगे और अकाल पडने लगे। चारो तरफ विनाश का ताडव हो रहा था। सिर्फ कुछ इने-गिने पवित्र लोगो की किस्मत मे नई मानवजाति का निर्माण करना, और धरती को पवित्र करना लिखा था। लेकिन वे आदमी कहाँ है और कैसे है, यह किसी ने नही देखा था। किसी ने उनके शब्द या आवाजे नही सुनी थी।

यह सपना बहुत दिनो तक रास्कोलनिकोव की स्मृति मे मँडराता रहा, इससे उसकी चिता बढ गई। ईस्टर के बाद पद्रह दिन और बीत गये थे। बसन्त के सुखद दिन थे। जेल के वार्ड की सीखचो वाली खिडकिया, जिनके नीचे पहरेदार चहलकदमी करते थे, खोल दी गई थी। बीमारी के दिनो मे सोनिया को सिर्फ दो बार उससे मिलने की

इजाजत मिल सकी थी। लेकिन वह अक्सर शाम के वक्त हस्पताल के अहाते मे आकर खडी हो जाती थी। क्षण भर के लिए सिर्फ वार्ड की खिडकियो की तरफ देखने के लिए।

एक दिन शाम को जब रास्कोलनिकोव सोकर उठा तो उसकी नजर खिडकी की तरफ गई। सोनिया हस्पताल के फाटक के पास खडी थी, शायद वह किसी का इन्तजार कर रही थी। रास्कोलनिकोव के दिल मे जैसे किसी ने छुरी भोक दी। वह कॉप उठा और खिडकी से दूर चला गया। अगले दो दिनो तक सोनिया नही आई। वह बेचैनी से उसका इतजार कर रहा था। हस्पताल से छुट्टी पाकर जब वह बैरक मे आया तो उसे कैदियो से मालूम हुआ कि सोनिया बीमार है, इसलिये घर से बाहर निकलने मे असमर्थ है।

यह सुनकर वह बडा घबराया और उसने सोनिया की हालत का पता मगवाया। मालूम हुआ कि बीमारी खतरनाक नही थी। सोनिया ने रास्कोलनिकोव की घबराहट का हाल सुनकर, उसे कागज के एक पुर्जे पर लिखकर भेजा कि उसे मामूली जुकाम हो गया था, अब उसकी हालत पहले से अच्छी है और वह जल्द ही रास्कोलनिकोव से मिलेगी। रास्कोलनिकोव के दिल मे टीस-सी उठी।

अगले दिन सुबह छ बजे रास्कोलनिकोव काम करने नदी किनारे गया, जहाँ वे लोग सफेद पत्थरो को कूटते थे, फिर शेड मे बने भट्टे में ईटें पकाई जाती थी। उस दिन बडी सुहानी धूप खिली हुई थी। उस दिन सिर्फ तीन कैदियो को काम पर भेजा गया था। एक कैदी सतरी के साथ कोई औजार लेने चला गया। दूसरे ने भट्टे मे ईधन सुलगाना शुरू किया। रास्कोलनिकोव शेड से निकल कर लकडी की शहतीरो के ढेर पर बैठ गया और चौडी सुनसान नदी की तरफ देखने लगा। नदी के पार का दृश्य उसे दिखाई दे रहा था। दूर कही से गाने की आवाज आ रही थी। नदी के उस पार धूप में नहाया

हुआ विशाल स्टेपिज का मैदान था, जहा खानाबदोशो के तबू गडे हुए थे। वहाँ आजादी थी, जिन्दगी थी। समय की गति भी जैसे रुक गई थी। रास्कोलनिकोव को लगा, जैसे अब्राहम और उसकी भेडो का जमाना ज्यो का त्यो कायम है। वह दिवास्वप्न देख रहा था। एक धु धली उत्तेजना और बेचैनी उसके मन मे छाई थी। सहसा उसने देखा, सोनिया उसके पास खडी है। वह चुपचाप आकर उसकी बगल मे बैठ गई थी। अभी दिन पूरी तरह नही निकला था। सुबह की सर्दी बाकी थी। सोनिया पुराने कपडे पहने थी और उसने वही हरा शाल ओढ रखा था। बीमारी से उसका चेहरा पीला और दुबला पड गया था। वह खुशी से मुस्कराई और भीरूता से उसने अपना हाथ आगे बढा दिया। उसे रास्कोलनिकोव के आगे हाथ बढाने मे हमेशा डर लगता था, रास्कोलनिकोव भी हमेशा ग्लानिपूर्वक उसके हाथो को अपने हाथ मे लेता था और उसकी मौजूदगी मे चिढा-चिढा और खामोश रहता था। कई बार सोनिया उसके आगे काप उठती और शोक से विह्वल होकर वहाँ से चली जाती। लेकिन आज उनके हाथ अलग नही हुए। रास्कोलनिकोव ने एक नजर सोनिया पर डाली और खामोशी से जमीन की तरफ ताकने लगा। दोनो अकेले थे, किसी ने उन्हे नही देखा था। सतरी कही चला गया था।

यह कैसे हुआ, वह नही जानता था। लेकिन सहसा उस पर कोई जनून-सा सवार हो गया और वह सोनिया के घुटनो से लिपट कर रोने लगा। पहले तो सोनिया डर से पीली पड गई। वह चौक कर खडी हो गई और पत्ते की तरह कापने लगी। लेकिन उसी क्षण वह सब कुछ समझ गई और उसकी आँखे असीम आनन्द से आलोकित हो उठी। वह जान गई कि रास्कोलनिकोव उसे प्यार करता है और वह क्षण आ पहुँचा है ··"

दोनो कुछ कहना चाहते थे, लेकिन खामोश थे। दोनो की आँखो

मे आँसू छलछला आये थे। दोनो के शरीर दुबले पड गये थे और चेहरो पर पीलापन छाया था, लेकिन वे रुग्ण पीले चेहरे भविष्य के सुनहरी प्रभात के आलोक से आलोकित हो उठे थे—उन्हे नई जिन्दगी मिलने वाली थी—प्रेम ने आकर उन्हे फिर से जिन्दा कर दिया था। दोनो के दिल एक दूसरे के लिये जिन्दगी और आशा से ओत-प्रोत थे।

उन्होने धैर्य से भविष्य का इन्तजार करने का फैसला किया—इन्तजार के अभी सात साल बाकी थे—उनके आगे भयकर यातनाएँ और अनन्त सुख था। रास्कोलनिकोव को मालूम था कि उसका नया जन्म हुआ है, उसके रोम रोम मे इसकी अनुभूति समा गयी थी, और सोनिया—वह उसकी जिन्दगी मे जिन्दा थी।

उसी दिन शाम को बैरक बन्द होने के बाद रास्कोलनिकोव बिस्तर पर लेटा सोनिया के बारे मे सोचने लगा। उसे ऐसा महसूस होरहा था कि वे सब कैदी जो उसे अपना दुश्मन समझते थे, अब उसे दूसरी नजरो से देखने लगे थे। अब वे उससे दोस्ताना अन्दाज मे बात करते थे। उसने सोचा, यह सब तो होना ही था, आखिर अब उसकी जिन्दगी मे सब चीजे क्या बदलने वाली नही थी ?

सोनिया का ध्यान आते ही उसे याद आया कि उसने सोनिया को कितनी यत्रणाये दी है। सोनिया का जर्द, दुबला चेहरा रह रह कर उसकी आँखो के आगे आ रहा था। लेकिन इन स्मृतियो से उसका मन विचलित नही हुआ।

वह जानता था कि वह अपने अनन्त प्रेम से सोनिया के दुखो की कीमत चुकायेगा। फिर अतीत की सारी यत्रणाओ की क्या हैसियत थी ? उसे सब कुछ, यहाँ तक कि अपना जुर्म, सजा और कैद भी बाहरी चीजें मालूम होने लगी, जिनसे उसका कोई सरोकार नही था। लेकिन उस दिन शाम को वह ज़्यादा देर तक नही सोच सका, न ही उसने सचेत रूप से इन बातो का विश्लेषण